सऊदी अरब में सीरत नगारी के आलमी मुक़ाबला में अव्वल आने वाली एवार्ड याफ़्ता किताब

अर-रहीक़ुल मख़्तूम

मौलाना सफ़ीउर रहमान मुबारकपूरी

विषय-सूची

विषय पृष्ठ

विषय	पृष्ठ

विषय पृष्ठ

विषय | पृष्ठ

विषय पृष्ठ

विषय | पृष्ठ

विषय पृष्ठ

विषय	पृष्ठ

विषय पृष्ठ

विषय | पृष्ठ

विषय | पृष्ठ

दुआ व तबरीक

—मुहद्दिसे जलील हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह साहब शैख़ुलहदीस रहमानी हफ़िज़ल्लाहु, लेखक 'मिरआतुल मफ़ातीह', शरह 'मिश्कातुल मसाबीह

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत (जीवन-चर्या) पर किसी फ़ायदेमंद, जामेअ और सही और सच्ची किताब का लिखना बड़ा नाज़ुक काम है, मुझे ख़ुशी है कि हमारे अज़ीज़ सफ़ीउर्रहमान मुबारकपुरी, उस्ताद जामिया सलफ़ीया बनारस ने 'अर-रहीक़ुल मख़्तूम' के नाम से एक ऐसी किताब तर्तीब दी, जो सीरत व तारीख़ के ख़ास माहिरों की नज़र में आलमी मुक़ाबले (विश्व प्रतियोगिता) के अन्दर नम्बर एक की हक़दार क़रार पाई और अब उसका हिन्दी एडीशन छप रहा है।

मेरी दुआ है कि अल्लाह इस किताब को ख़ैर व बरकत का ज़रिया बनाए, आम व ख़ास लोग इससे फ़ायदा उठाएं और यह लिखने वाले के लिए बख़्शिश और अज्र व सवाब की बढ़ोत्तरी की वजह हो।

व मा ज़ालि-क अलल्लाहि बिअज़ीज़०

उबैदुल्लाह रहमानी

14 शाबान सन् 1408 हि०

दो बातें

—शेख मुहम्मद अली अल-हरकान, सिक्रेट्री जनरल राबिता आलमे इस्लामी, मक्का मुकर्रमा

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन, ख़ालिक़िस्समावाति वल अर्ज़ि व जाअिलिज़-ज़ुलुमाति वन्नूरि व सल्लल्लाहु अला सय्यिदिना मुहम्मदिन ख़ातमिल अम्बियाइ वर-रुसुलि अजमईन बश-श-र व अन-ज़-र व व-अ-द व औ-अ-द अन-क़ज़ल्लाहु बिहिल ब-श-र मिनज़-ज़लालतिन व ह-द-न्ना-स इलस्सिरातिल मुस्तक़ीम सिरातिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िलअर्ज़ि अला इलल्लाहि तुसीरुल उमूरि व बादु०

चूंकि अल्लाह ने अपने रसूल को शफ़ाअत का पद और ऊंचा दर्जा अता फ़रमाया है और आपसे हम मुसलमानों को मुहब्बत करने की हिदायत दी है और आपकी पैरवी को अपनी मुहब्बत की निशानी क़रार दिया है, चुनांचे फ़रमाया है –

'(ऐ पैग़म्बर सल्ल० !) कह दो, अगर तुम्हें अल्लाह से मुहब्बत है, तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुम्हें प्रिय रखेगा और तुम्हारे गुनाहों को तुम्हारे लिए बख़्श देगा।'

इसलिए यह भी एक वजह है जो दिलों को आपके प्रेम से भर कर उन साधनों की खोज में डाल देता है जो आपके सम्बन्धों को मज़बूत कर दें, चुनांचे इस्लाम की शुरूआत ही से मुसलमान आपके गुणों के बखान में और आपकी पाक सीरत के प्रचार-प्रसार में एक दूसरे से आगे निकल जाने की कोशिश करते रहे हैं। आपकी पाक सीरत नाम है आपकी बातों, आपके कामों और आपके आदर्श चरित्र व आचरण का। हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं, 'क़ुरआन ही आपका अख़्लाक़ (चरित्र व आचरण) था, और मालूम है कि क़ुरआन, अल्लाह की किताब, कलिमाते ताम्मा (पूर्ण वार्ता) का नाम है, इसलिए जिस पवित्र हस्ती का यह गुण है, वह निश्चित रूप से तमाम इंसानों से बेहतर और पूर्ण है और पूरी दुनिया के इंसानों की मुहब्बत की सबसे ज़्यादा हक़दार है।

यह मूल्यवान प्रेम व आस्था मुसलमानों के दिल व जान की पूंजी सदा ही रही और इसी के क्षितिज से नबी सल्ल० की पहली कान्फ्रेंस का नूर फूटा। यह कांफ्रेंस सन् 1396 हि० में पाकिस्तान के भू-भाग पर आयोजित हुई और राबिता ने इस कान्फ्रेंस में एलान किया कि नीचे की शर्तों पर पूरे उतरने वाले सीरत के

पांच सबसे अच्छे लेखकों पर डेढ़ लाख सऊदी रियाल के आर्थिक पुरस्कार दिए जाएंगे। शर्तें ये हैं—

1. लेख पूर्ण हो और उसमें ऐतिहासिक घटनाएं अपने समय की दृष्टि से क्रमवार लिखी गई हों।

2. लेख बहुत अच्छा हो और इससे पहले प्रकाशित न किया गया हो।

3. लेख की तैयारी में जिन पांडुलिपियों और दस्तावेज़ों पर भरोसा किया गया हो, उन सब के हवाले पूर्ण रूप से दिये गये हों।

4. लेखक अपने जीवन के पूर्ण और विस्तृत हालात लिखे और अपनी सनदों और अपनी लिखी किताबों का—अगर हों तो उल्लेख करे।

5. लेख साफ़-सुथरा और स्पष्ट हो, बल्कि बेहतर होगा कि टाइप किया हुआ हो।

6. लेख अरबी और दूसरी जीवंत भाषाओं में स्वीकार किए जाएंगे।

7. पहली रबीउस्सानी सन् 1396 हि० से लेखों की वसूली शुरू की जाएगी और पहली मुहर्रम सन् 1397 हि० को ख़त्म कर दी जाएगी।

8. लेख राबिता आलमे इस्लामी मक्का मुकर्रमा के सिक्रेट्रियट को मुहरबन्द लिफ़ाफ़े के अन्दर पेश किए जाएं। राबिता उन पर अपना एक ख़ास नम्बर डालेगा।

9. अकाबिर उलेमा (महान विद्वानों) की एक उच्चस्तरीय कमेटी तमाम लेखों की छानबीन और जांच-पड़ताल करेगी।

राबिता के इस एलान ने नबी सल्ल० के प्रेम में डूबे हुए ज्ञानियों को प्रोत्साहित किया और उन्होंने इस मुक़ाबले में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इधर राबिता आलमे इस्लामी भी अरबी, अंग्रेज़ी, उर्दू और अन्य भाषाओं में वसूली और स्वागत के लिए तैयार था।

फिर हमारे माननीय भाइयों ने अनेक भाषाओं में लेख भेजने शुरू किए, जिनकी तायदाद 171 तक जा पहुंची। इनमें 84 लेख अरबी भाषा में थे, 64 उर्दू में, 21 अंग्रेज़ी में, एक फ्रांसीसी में और एक हौसा भाषा में।

राबिता ने इन लेखों को जांचने और विजेताओं की श्रेणी बनाने के लिए महान विद्वानों की एक कमेटी बना दी और पुरस्कार पाने वालों का क्रम इस तरह रहा—

1. पहला पुरस्कार : शेख़ सफ़ीउर्रहमान मुबारकपुरी, जामिया सलफ़ीया हिंद, पचास हज़ार सऊदी रियाल

2. **दूसरा पुरस्कार** : डा० माजिद अली ख़ां, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली, हिंद, चालीस हज़ार सऊदी रियाल

3. **तीसरा पुरस्कार** : डा० नसीर अहमद नासिर, अध्यक्ष जामिया मिल्लिया इस्लामिया, भावलपुर, पाकिस्तान, तीस हज़ार सऊदी रियाल,

4. **चौथा पुरस्कार** : उस्ताद हामिद महमूद, मुहम्मद मंसूर लेमूद, मिस्र, बीस हज़ार सऊदी रियाल,

5. **पांचवां पुरस्कार** : उस्ताद अब्दुस्सलाम हाशिम हाफ़िज़, मदीना मुनव्वरा सऊदी अरब, दस हज़ार सऊदी रियाल।

राबिता ने इन पुरस्कार विजेताओं के नामों का एलान शाबान 1398 हि० के महीने में कराची (पाकिस्तान) में आयोजित पहली एशियाई इस्लामी कान्फ्रेंस में किया और प्रकाशन के लिए तमाम अख़बारों को इसकी सूचना दे दी।

फिर पुरस्कार वितरण के लिए राबिता ने मक्का मुकर्रमा में अपने हेड क्वार्टर पर अमीर सऊद बिन अब्दुल मोहसिन बिन अब्दुल अज़ीज़ की अध्यक्षता में शनिवार 12 रबीउल आख़र सन् 1399 हि० की सुबह में एक भव्य समारोह का आयोजन किया। अमीर सऊद मक्का मुकर्रमा के गवर्नर अमीर फ़वाज़ बिन अब्दुल अज़ीज़ के सिक्रेट्री हैं और इस समारोह में उनके नायब की हैसियत से उन्होंने पुरस्कार वितरित किए।

इस मौक़े पर राबिता के सिक्रेट्रियट की ओर से यह एलान भी किया गया कि इन सफल लेखों को विभिन्न भाषाओं में छपवा कर बांटा जाएगा, चुनांचे इसको व्यवहार रूप देते हुए शेख़ सफ़ीउर्रहमान मुबारकपुरी जामिया सलफ़ीया हिंद का (अरबी) लेख सबसे पहले छपवा कर पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किया गया, क्योंकि उन्होंने ही पहला पुरस्कार प्राप्त किया है। इसके बाद बाक़ी लेख भी क्रमवार छापे जाएंगे।

अल्लाह से दुआ है कि हमारे कामों को अपने लिए ख़ालिस बनाए और उन्हें स्वीकार करे। निश्चित रूप से वह बेहतरीन मौला और बेहतरीन मददगार है। व सल्लल्लाहु अला सय्यिदिना मुहम्मदिन व अला आलिही व सह्बिही व सल्लिम०

मुहम्मद अली अल-हरकान

सिक्रेट्री जनरल राबिता आलमे इस्लामी

मक्का मुकर्रमा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

यह किताब

अल-हम्दु लिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाहि व अला आलिही व सह्बिही व मन वालाहु० अम्मा बाद०

यह रबीउल अव्वल सन् 1396 हि० (मार्च 1976 ई०) की बात है कि कराची में पूरी दुनिया की पहली 'सीरत कान्फ्रेंस' (पवित्र जीवनी कांफ्रेंस) हुई, जिसमें राबिता आलमे इस्लामी मक्का मुकर्रमा ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और इस कान्फ्रेंस के अन्त में सारी दुनिया के क़लमकारों को दावत दी कि वे नबी सल्ल० की सीरत के विषय पर दुनिया की किसी भी ज़िंदा ज़ुबान में लेख लिखें। पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवी पोज़ीशन प्राप्त करने वालों को क्रमवार पचास, चालीस, तीस, बीस और दस हज़ार रियाल के इनाम दिए जाएंगे। यह एलान राबिता के सरकारी अख़बार 'अल-आलमुल इस्लामी' के कई एडीशनों में छपा, लेकिन मुझे इस प्रस्ताव और एलान का समय पर ज्ञान न हो सका, बल्कि कुछ देर से हुआ।

कुछ दिनों बाद जमईयत अहले हदीस हिंद के आर्गन पन्द्रह दिवसीय 'तर्जुमान' दिल्ली में राबिता के इस प्रस्ताव और एलान का उर्दू अनुवाद छपा, तो मेरे लिए एक विचित्र स्थिति पैदा हो गई। जामिआ सलफ़ीया के मध्यम और उच्च श्रेणी के छात्रों में से आम तौर से जिस किसी से सामना होता, वह मुझे इस मुक़ाबले में शरीक होने का मश्विरा देता। ख़्याल हुआ कि शायद 'लोगों की यह ज़ुबान' 'ख़ुदा का नक़्क़ारा' है, फिर भी मुक़ाबले में हिस्सा न लेने के अपनी दिली फ़ैसले पर मैं क़रीब-क़रीब अटल रहा। कुछ दिनों बाद छात्रों के 'मश्विरे' और 'तक़ाज़े' भी लगभग समाप्त हो गये, पर दो एक छात्र अपने तक़ाज़े पर जमे रहे। कुछ ने लेख के प्रारूप (तस्नीफ़ी ख़ाके) को वार्ता का विषय बना रखा था और किसी-किसी का चाव दिलाना आग्रह (इसरार) की आख़िरी हदों को छू रहा था। आख़िरकार मैं अच्छी-भली झिझक और हिचकिचाहट के साथ तैयार हो गया।

काम शुरू किया, लेकिन थोड़ा-थोड़ा, कभी-कभी और धीमे-धीमे।

अभी शुरूआत ही थी कि रमज़ान की बड़ी छुट्टी का वक़्त आ गया। उधर राबिता ने आने वाले मुहर्रमुलहराम की पहली तारीख़ को लेखों की वसूली की आख़िरी तारीख़ क़रार दिया था। इस तरह काम के कोई साढ़े पांच महीने गुज़र चुके थे और अब ज़्यादा से ज़्यादा साढ़े तीन महीने में लेख पूरा करके डाक के

हवाले कर देना ज़रूरी था, ताकि समय पर पहुंच जाए और इधर अभी सारा काम बाक़ी था। मुझे यक़ीन नहीं था कि इस थोड़े से समय में लिखने, दोबारा नज़र डालने, नक़ल करके साफ़ मस्विदा तैयार करने का काम हो सकेगा, पर आग्रह करने वालों ने चलते-चलते ताकीद की कि किसी तरह की ग़फ़लत या बेजा सोच-विचार के बिना काम में जुट जाऊं। रमज़ान बाद 'सहारा' दिया जाएगा। मैंने भी छुट्टी के दिनों को ग़नीमत जाना, क़लम उठाया और कोशिश के अथाह समुद्र में कूद पड़ा। पूरी छुट्टी लुभावने सपने की तरह बीत गई और जब ये लोग वापस पलटे तो लेख का दो तिहाई भाग लिखा जा चुका था। चूंकि दोबारा नज़र डालने और मस्विदा को साफ़-सुथरा बनाने का मौक़ा न था, इसलिए असल मस्विदा ही इन लोगों के हवाले कर दिया कि नक़ल करने और साफ़-सुथरा बनाने का काम कर डालें। बाक़ी हिस्से के लिए कुछ दूसरी ज़रूरी सामग्री के जुटाने और तैयार करने में भी उनसे कुछ मदद ली। जामिया की ड्युटी और घमाघमी शुरू हो चुकी थी, इसलिए छुट्टी के दिनों की तेज़ी को बाक़ी रखना संभव न था, फिर भी डेढ़ महीने के बाद जब ईदे क़ुर्बा का वक़्त आया, तो 'शब बेदारी' (रतजगे) की 'बरकत' से लेख तैयारी के आख़िरी मरहले में था, जिसे सरगर्मी की एक छलांग ने पूर्णता को पहुंचा दिया और मैंने मुहर्रम शुरू होने से बारह-तेरह दिन पहले यह लेख (पुस्तक) डाक के हवाले कर दिया।

महीनों बाद मुझे राबिता के दो रजिस्टर्ड पत्र आठ-दस दिन के आगे-पीछे मिले। सार यह था कि मेरा लेख राबिता की तै की हुई शर्तों के मुताबिक़ है, इसलिए मुक़ाबले (प्रतियोगिता) में शामिल कर लिया गया है। मैंने चैन का सांस लिया।

इसके बाद दिन पर दिन गुज़रते रहे, यहां तक कि डेढ़ साल की मुद्दत बीत गई, पर राबिता चुप था। मैंने दो बार पत्र लिखकर मालूम करना भी चाहा कि इस सिलसिले में क्या हो रहा है, फिर भी चुप्पी न टूटी। फिर मैं ख़ुद भी अपने कामों और समस्याओं में उलझकर यह बात लगभग भूल गया कि मैंने किसी 'मुक़ाबला' में हिस्सा लिया है।

शाबान 1398 हि० के शुरू (तद० 6-7-8 जुलाई 1978) में कराची (पाकिस्तान) में पहली एशियाई इस्लामी कान्फ्रेंस का आयोजन हो रहा था। मुझे उसकी कार्रवाइयों से दिलचस्पी थी, इसलिए उसके बारे में अख़बार के कोनों में दबी हुई ख़बरें भी ढूंढ-ढूंढकर पढ़ता था। एक दिन भदोही स्टेशन पर ट्रेन के इन्तिज़ार में—जो लेट थी—अख़बार देखने बैठ गया। यकायक एक छोटी-सी ख़बर पर नज़र पड़ी कि इस कान्फ्रेंस की किसी मीटिंग में राबिता ने हज़रत मुहम्मद सल्ल०

की जीवनी पर लेख लिखने के मुक़ाबले में सफल होने वाले पांच नामों का एलान कर दिया है और उनमें एक लेख लिखने वाला हिन्दुस्तानी भी है। यह ख़बर पढ़ कर मन में अंदर ही अंदर जानकारी पाने की एक हलचल पैदा हो गई। बनारस वापस आकर सविस्तार जानने की बहुत कोशिश की, पर कोई फ़ायदा न हुआ।

10 जुलाई सन् 1978 ई० को चाश्त के वक़्त—पूरी रात मुनाज़रा बजरडीह की शर्तें तै करने के बाद बेख़बर सो रहा था कि अचानक हुजरे (कमरे) से मिली हुई सीढ़ियों पर छात्रों का शोर व हंगामा सुनाई पड़ा और आंख खुल गई। इतने में छात्रों का रेला कमरे के भीतर था। उनके चेहरों पर अथाह प्रसन्नता के चिह्न और ज़ुबानों पर मुबारकबादी के शब्द।

'क्या हुआ? क्या विरोधी मुनाज़िर ने मुनाज़रा करने से इंकार कर दिया?' मैंने लेटे-लेटे पूछा।

'नहीं, बल्कि आप हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी लिखने के मुक़ाबले में फ़र्स्ट आ गए।'

'अल्लाह, तेरा शुक्र है। आंप लोगों को यह जानकारी कहां से मिली?' मैं उठकर बैठ चुका था।

'मौलवी उज़ैर शम्स यह ख़बर लाये हैं।'

'मौलवी उज़ैर यहां आ चुके हैं?'

'जी हां!'

और कुछ ही क्षणों बाद मौलवी उज़ैर पूरी बात विस्तार में बता रहे थे।

फिर 22 शाबान 1398 हि० (29 जुलाई 1978) को राबिता का रजिस्टर्ड पत्र मिला, जिसमें सफलता की ख़बर के साथ यह शुभ सूचना भी लिखी हुई थी कि मुहर्रम 1399 हि० के महीने में मक्का मुर्करमा के अन्दर राबिता कार्यालय में पुरस्कार-वितरण के लिए एक समारोह आयोजित किया जाएगा और उसमें मुझे शिर्कत करनी है।

यह समारोह मुहर्रम के बजाए 12 रबीउल आख़र 1399 हि० में आयोजित किया गया।

इस समारोह की वजह से मुझे पहली बार हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत नसीब हुई। 10 रबीउल आख़र, वृहस्पतिवार को अस्र से कुछ पहले मक्का मुर्करमा के नूरानी माहौल में दाख़िल हुआ। तीसरे दिन साढ़े आठ बजे राबिता के कार्यालय में हाज़िरी का हुक्म था। यहां ज़रूरी कार्रवाइयों के बाद लगभग दस बजे

क़ुरआन पाक की तिलावत से समारोह आरंभ हुआ। सऊदी उच्चतम न्यायालय के चीफ़ जस्टिस शेख़ अब्दुल्लाह बिन हुमैद अध्यक्षता कर रहे थे। मक्का के नायब गवर्नर अमीर सऊद बिन अब्दुल मोहसिन, जो मरहूम मलिक अब्दुल अज़ीज़ के पोते हैं, पुरस्कार-वितरण के लिए आए हुए थे। उन्होंने संक्षेप में भाषण दिया। उनके बाद राबिता के नायब सिक्रेट्री जनरल शेख़ अली मुख़्तार ने सम्बोधित किया। उन्होंने थोड़े विस्तार में बताया कि यह इनामी मुक़ाबला क्यों आयोजित किया गया और फ़ैसले के लिए क्या तरीक़ा अपनाया गया। उन्होंने स्पष्ट किया कि राबिता को मुक़ाबले के एलान के बाद एक हज़ार से ज़्यादा (अर्थात 1182) लेख मिले, जिनके अलग-अलग पहलुओं का जायज़ा लेने के बाद शुरूआती कमेटी ने एक सौ तिरासी लेखों को मुक़ाबले के लिए चुना और अन्तिम निर्णय के लिए उन्हें शिक्षा मंत्री शेख़ हसन बिन अब्दुल्लाह आले शेख़ के नेतृत्व में बनी विशेषज्ञों की एक आठ सदस्यीय कमेटी के हवाले कर दिया। कमेटी के ये आठों सदस्य मलिक अब्दुल अज़ीज यूनिवर्सिटी, जद्दा की शाखा कुल्लीयतुश-शरीआ (और अब जामिया उम्मुल क़ुरा) मक्का मुर्करमा के प्रोफेसर और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत (जीवन-चर्या) और इस्लामी तारीख़ के माहिर और विशेषज्ञ हैं। उनके नाम ये हैं—

डाक्टर इब्राहीम अली शऊत

डाक्टर अहमद सैयद दर्राज

डाक्टर अब्दुर्रहमान फ़हमी मुहम्मद

डाक्टर फ़ाइक़ बक्र सव्वाफ़

डाक्टर मुहम्मद सईद सिद्दीक़ी

डाक्टर शाकिर महमूद अब्दुल मुनइम

डाक्टर फ़िक्री अहमद उकाज़

डाक्टर अब्दुल फ़त्ताह मंसूर

इन विद्वानों ने लगातार छान-बीन के बाद सर्वसम्मति से पांच लेखों को नीचे लिखे क्रम के साथ पुरस्कार का हक़दार घोषित किया।

1. अर-रहीक़ुल मख़्तूम (अरबी), लेखक, सफ़ीउर्रहमान, मुबारकपुरी, जामिया सलफ़ीया, बनारस, हिंद (प्रथम)

2. ख़ातमुन्नबीयीन (अंग्रेज़ी), लेखक, डा॰ माजिद अली ख़ां, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली, हिंद (द्वितीय)

3. पैग़म्बरे आज़म व आख़र (उर्दू) लेखक, डा॰ नसीर अहमद नासिर वायस

चांसलर जामिया इस्लामिया, भावलपुर, पाकिस्तान (तृतीय)

4. मुन्तक़न-नुकूल फ़ी सीरते आज़म रसूल (अरबी) लेखक, शेख़ हामिद महमूद बिन मुहम्मद मंसूर लेमूद, जीज़ा मिस्र (चतुर्थ)

5. सीरतुन्नबी अल हुदा वर-रहम: (अरबी), उस्ताद अब्दुस्सलाम हाशिम हाफ़िज़, मदीना मुनव्वरा, सऊदी अरब (पंचम)

नायब सिक्रेट्री जनरल मोहतरम शेख़ अली अल-मुख़्तार ने इन विस्तृत विवेचनों के बाद हौसला बढ़ाने, मुबारकबाद देने और दुआ के तौर पर कुछ बातें कहने के बाद अपना भाषण समाप्त किया।

इसके बाद मुझे अपना विचार रखने के लिए बुलाया गया। मैंने अपने संक्षिप्त भाषण में राबिता का ध्यान भारत में दावत व तब्लीग़ के कुछ ज़रूरी और छोड़े हुए पहलुओं की ओर खींचा और उसके प्रभावों और नतीजों पर रोशनी डाली। राबिता की ओर से इसका बड़ा ही हौसला बढ़ाने वाला जवाब दिया गया।

इसके बाद अमीर मोहतरम सऊद बिन अब्दुल मोहसिन ने क्रमवार पांचों पुरस्कार बांटे और क़ुरआन मजीद की तिलावत पर समारोह का अन्त हुआ।

17 रबीउल आख़र, वृहस्पतिवार को हमारे कारवां का रुख़ मदीना मुनव्वरा की ओर था। रास्ते में बद्र की ऐतिहासिक रण-भूमि को देखते हुए आगे बढ़े, तो अस्र से कुछ पहले हरम नबवी सल्ल० के दर व दीवार का जलाल व जमाल निगाहों के सामने था। कुछ दिनों बाद एक सुबह ख़ैबर भी गए और वहां का ऐतिहासिक क़िला अन्दर व बाहर से देखा, फिर कुछ घूम-घाम कर शाम ही को मदीना लौट आए और आख़िरी पैग़म्बर के उस जलवागाह और इस्लामी क्रान्ति-केन्द में दो सप्ताह बिता कर हम फिर हरमे काबा की ओर बढ़ चले। यहां तवाफ़ व सई के 'हंगामे' में एक सप्ताह और गुज़ारने का सौभाग्य मिला। रिश्तेदारों, दोस्तों, बुज़ुर्गों और उलेमा व मशाइख़ ने क्या मक्का, क्या मदीना, हर जगह हाथों-हाथ लिया। यों मेरे सपनों और आरज़ूओं की पवित्र भूमि हिजाज़ के अन्दर एक महीने की मुद्दत आंख झपकते ही बीत गई और मैं फिर भारत वापस आ गया।

हिजाज़ से वापस हुआ तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के उर्दू भाषियों की ओर से किताब को उर्दू रूप देने का तक़ाज़ा शुरू हो गया, जो कई वर्ष गुज़रने के बावजूद बराबर क़ायम रहा। इधर नए-नए काम इस तरह आते गये कि अनुवाद के लिए मौक़ा ही नहीं निकल पा रहा था, फिर भी काम की इसी भीड़ में उर्दू अनुवाद शुरू कर दिया गया और अल्लाह का बार-बार शुक्र अदा करने को जी

चाहता है कि कुछ महीनों की थोड़ी-सी कोशिश से यह काम पूरा हुआ। वलिल्लाहिल अमरु मिन क़ब्लु व मिन बाद०

(अब इस पुस्तक का हिन्दी एडीशन आपके हाथों में है। अनुवाद सरल, सुगम और सुन्दर शब्दों में करने की कोशिश की गई है। अल्लाह हिन्दी अनुवादक अहमद नदीम नदवी की इन कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए।)

अन्त में मैं उन तमाम बुज़ुर्गों, दोस्तों और प्रियजनों के प्रति आभार व्यक्त करना ज़रूरी समझता हूं कि जिन्होंने इस काम में किसी भी तरह का मुझे सहयोग दिया, मुख्य रूप से मोहतरम उस्ताद मौलाना अब्दुर्रहमान रहमानी और प्रियजन शैख़ उज़ैर और हाफ़िज़ मुहम्मद इलयास, मदीना युनिवर्सिटी के फ़ाज़िलों का कि उनके मश्विरे देने और हिम्मत बढ़ाने के कारण इस लेख (पुस्तक) की तैयारी में बड़ी मदद मिली। अल्लाह इन सबको भला बदला दे, हमारी हिमायत करे और हमारी मदद करे, किताब को क़ुबूल करे और लिखने वालों, सहायता करने वालों और फ़ायदा उठाने वालों के लिए लोक-परलोक की कामियाबी का ज़रिया बने। आमीन!

सफ़ीउर्रहमान मुबारकपुरी

18 रमज़ानुल मुबारक 1404 हि०

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुछ किताब के बारे में

(तीसरा एडीशन)

—महामहिम डाक्टर अब्दुल्लाह उमर नसीफ़, सिक्रेट्री जनरल राबिता आलमे इस्लामी, मक्का मुर्करमा

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी बिनिअमतिही ततिम्मुस्सालिहात व अश्हदु अल लाइला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू व सफ़ी-युहू व ख़लीलुहू अद्दर-रिसाल-त व ब-ल-ग़ल अमा-न-त व न-स-हल उम्म-त व त-र-कहा अलल मुहज्जतिल बैज़ा-अ लै-लहा कनहारिहा सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व सह्बिही अजमईन व रज़ि-य अन कुल्लि मन तबि-अ सुन्न-तहू व अमि-ल बिहा इला यौमिद्दीन व अन-ना म-अ-हुम बिअफ़्वि-क व रिज़ा-क या अर-हमर्राहिमीन, अम्मा बअद०

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत, जो रंगारंग उपहार और क़ियामत तक बाक़ी रहने वाला तोशा है और जिसको बयान करने और जिसके अलग-अलग पहलुओं पर पुस्तकें और ग्रन्थ लिखने के लिए लोगों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भेजे जाने के वक़्त से लेकर अब तक मुक़ाबला जारी है और क़ियामत तक जारी रहेगा। यह पावन सुन्नत मुसलमानों के सामने वह अमली नमूना और घटनापरक प्रोग्राम रखती है, जिसके सांचे में ढल कर मुसलमानों के चरित्र और आचरण को निखरना चाहिए और अपने पालनहार से उनका ताल्लुक़ और अपने कुंबे और क़बीले, भाइयों और मिल्लत के लोगों से उनका संपर्क और संबंध ठीक उसी प्रकार का होना चाहिए। अल्लाह का इर्शाद है—

'यक़ीनन तुम्हारे हर उस आदमी के लिए अल्लाह के रसूल सल्ल० में सबसे बेहतर नमूना है, जो अल्लाह और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता हो, और अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करता हो।'

और जब हज़रत आइशा रज़ि० से पूछा गया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़्लाक़ कैसे थे? तो उन्होंने फ़रमाया, 'बस क़ुरआन ही आपका अख़्लाक़ था।'

इसलिए जो आदमी अपनी दुनिया व आख़िरत के तमाम मामलों में रब के बताये रास्ते पर चल कर इस दुनिया से निजात चाहता हो, उसके लिए इसके

सिवा कोई रास्ता नहीं कि वह प्यारे नबी सल्ल० के आचरण की पैरवी करे और ख़ूब अच्छी तरह समझ-बूझ कर इस यक़ीन के साथ नबी सल्ल० की सीरत को अपनाए कि यही पालनहार का सीधा रास्ता है, जिस पर हमारे आक़ा और पेशवा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अमली तौर पर भी और सच में भी ज़िंदगी के तमाम हिस्सों में चल रहे थे। इसलिए इसी में रहनुमाई करने वालों, पैरवी करने वालों, शासकों, शासितों, लीडरों, पीछे चलने वालों और मुजाहिदों के लिए हिदायत है और इसी में राजनीति और शासन, धन और अर्थ, सामाजिक मामले, इंसानी ताल्लुक़ात, लेन-देन, चरित्र-आचरण और अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के तमाम ही मैदानों के लिए सबसे अच्छा आदर्श है।

आज, जबकि मुसलमान रब के बताए उस रास्ते से दूर हट कर अज्ञानता और पिछड़ेपन के खड्डु में जा गिरे हैं, उनके लिए क्या ही बेहतर होगा कि वे होश में आ जाएं और अपने पाठ्यक्रमों और विभिन्न सभाओं और सम्मेलनों में नबी सल्ल० की सीरत को इसलिए सूची में सबसे ऊपर रखें कि यह सिर्फ़ सोच-विचार का मामला ही नहीं है, बल्कि यही अल्लाह की ओर वापसी की राह है और इसी में लोगों का सुधार और सफलता है, क्योंकि यही अख़्लाक़ व अमल के मैदान में अल्लाह की किताब क़ुरआन मजीद को अपनाने का अमली तरीक़ा है, जिसके नतीजे में ईमान वाला अल्लाह की शरीअत का पाबन्द बन जाता है और उसे इंसानी ज़िंदगी के तमाम मामलों में अपना पंच मान लेता है।

यह किताब 'अर-रहीक़ुल मख़्तूम' अपने मान्य लेखक शेख़ सफ़ीउर्रहान मुबारकपुरी की एक सुन्दर कोशिश और शानदार कारनामा है, जिसे उन्होंने राबिता आलमे इस्लामी की ओर से आयोजित सीरत पर लिखने की प्रतियोगिता 1396 हि० के आम एलान पर पूरा किया और प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया, जिसका विवेचन राबिता आलमे इस्लामी के पूर्व जनरल सिक्रेट्री मरहूम मुहम्मद अली अल-हरकान के पहले एडीशन की 'अपनी बात' में मिलता है।

यह किताब बड़ी लोकप्रिय रही और यह उनकी प्रशंसाओं का केन्द्र बन गई। चुनांचे पहले एडीशन की कुल की कुल (दस हज़ार) प्रतियां हाथों हाथ निकल गईं और मुझसे यह इच्छा व्यक्त की गई कि मैं इस तीसरे एडीशन का प्राक्कथन लिख दूं। चुनांचे उनकी इच्छा के सम्मान में मैंने यह संक्षिप्त प्राक्कथन लिख दिया। अल्लाह से दुआ है कि इस काम में ख़ुलूस पैदा करे और इससे मुसलमानों को ऐसा फ़ायदा पहुंचाए कि उनका वर्तमान पिछड़ापन अच्छी स्थिति में बदल जाए, मुस्लिम उम्मत (समुदाय) को उसका खोया हुआ स्थान मिल जाए, विश्व-नेतृत्व का उच्च पद वापस मिल जाए और वह अल्लाह के इस कथन की

साक्षात मूर्ति बन जाए कि 'तुम बेहतरीन उम्मत हो, जो लोगों के लिए उठाए गए हो, भलाई का हुक्म देते हो, बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो।

व सल्लल्लाहु अलल मबऊसि रहमतिल लिल आलमीन, रसूलिल हद्यि व मुर्शदिल इन्सानीयति इला तरीक़िन नजाति वल फ़लाहि व अला आलिही व सह्बिही व सल्लम वल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन०

— डा० अब्दुल्लाह उमर नसीफ़
सिक्रेट्री जनरल राबिता आलमे इस्लामी,
मक्का मुकर्रमा

अपना परिचय

अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला सैयिदिल अव्वलीन वल आख़रीन मुहम्मदिन खातमिन्नबीयीन व अला आलिही व सह्बिही अजमईन अम्मा बाद०

लेखक ने राबिता आलमे इस्लामी की शर्तों की रोशनी में इस पुस्तक के लिखते समय अपने बारे में कुछ पंक्तियां भी लिखी थीं, चूंकि इस पर दो दहाइयां बीत चुकी हैं, इसी बीच हालात ने कई करवट ली है, इसलिए उचित समझा गया कि यह अंश नए सिरे से लिख डाला जाए।

वंश

सफ़ीउर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अकबर बिन मुहम्मद अली बिन अब्दुल मोमिन बिन फ़क़ीरुल्लाह मुबारकपुरी आज़मी

जन्म

मेरा जन्म 1942 ई० के मध्य का है। जन्म-स्थान हुसैनाबाद गांव है जो मुबारकपुर के उत्तर में एक मील की दूरी पर एक छोटी सी आबादी है। उत्तरी भारत में मुबारकपुर, ज़िला आज़मगढ़ का प्रसिद्ध ज्ञानात्मक और औद्योगिक क़स्बा है।

शिक्षा

मैंने बचपन में क़ुरआन का कुछ हिस्सा अपने दादा और चचा से पढ़ा, फिर 1948 ई० में मदरसा अरबीया दारुत्तालीम मुबारकपुर में दाख़िल हुआ। वहां छः साल रह कर प्राइमरी क्लास और मिडिल कोर्स की शिक्षा पूरी की। थोड़ी-सी फ़ारसी भी पढ़ी। इसके बाद जून 1954 ई० में मदरसा एह्याउल उलमू मुबारकपुर में दाख़िल हुआ और वहां अरबी भाषा, व्याकरण और कुछ दूसरे इस्लामी विषयों की शिक्षा लेनी शुरू की। दो साल बाद 1956 ई० में मदरसा फ़ैज़े आम, मऊनाथ भंजन पहुंचा। इस मदरसे को इस क्षेत्र में एक अहम दीनी मदरसे की हैसियत हासिल है और मऊनाथ भंजन, क़स्बा मुबारकपुर से 35 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

फ़ैजे आम में मेरा दाख़िला मई 1956 ई० में हुआ। मैंने वहां पांच साल गुज़ारे और अरबी भाषा और व्याकरण और दीनी विषयों यानी तफ़्सीर, हदीस,

उसूले हदीस, फ़िक़्ह और उसूले फ़िक़्ह आदि की शिक्षा प्राप्त की। जनवरी सन् 1961 ई० में मेरी शिक्षा पूरी हो गई और मुझे विधिवत शहादतुत्तख़र्रुज (तक्मील की सनद) दे दी गई। यह सनदे फ़ज़ीलत फ़िश-शरीअः और फ़ज़ीलत फ़िलउलूम की सनद है और पढ़ाने और फ़त्वा देने की इजाज़त पर आधारित है।

मेरा सौभाग्य है कि मुझे तमाम परीक्षाओं में बहुत अच्छे नम्बरों से कामियाबी हासिल होती रही।

पढ़ाई के ज़माने में मैं इलाहाबाद बोर्ड की परीक्षाओं में भी शामिल हुआ। फरवरी 1959 ई० में मौलवी और फरवरी 1960 ई० में आलिम की परीक्षाएं दीं और दोनों में फ़र्स्ट डिवीज़न से सफल हुआ।

फिर एक लम्बी मुद्दत के बाद अध्यापकों से मुताल्लिक़ नये हालात को देखते हुए मैंने फरवरी सन् 1976 ई० में फ़ाज़िले अदब (और फरवरी 1978 ई० में फ़ाज़िले दीनियात) का इम्तिहान दिया और अल्लाह का शुक्र है (दोनों में) फ़र्स्ट डिवीजन से सफल हुआ।

व्यावहारिक जीवन

सन् 1961 ई० में 'मदरसा फ़ैज़े आम' से फ़ारिग़ होकर मैंने ज़िला इलाहाबाद, फिर शहर नागपुर में पढ़ने-पढ़ाने और भाषण देने का काम शुरू कर दिया। दो साल बाद मार्च 1963 ई० में मदरसा फ़ैज़े आम के नाज़िमे आला (प्रमुख) ने मुझे पढ़ाने के लिए बुलाया, लेकिन मैंने वहां मुश्किल से दो साल बिताए थे कि हालात ने अलग होने पर मजबूर कर दिया। अगला साल 'जामियतुर-रिशाद' आजमगढ़ की भेंट चढ़ गया और फ़रवरी 1966 ई० से मदरसा दारुल हदीस मऊ के बुलाने पर वहां मुदर्रिस (अध्यापक) हो गया। तीन साल यहां बिताए और पढ़ाने के अलावा, नायब सदर मुदर्रिस (उप प्रधानाध्यापक) की हैसियत से पढ़ने-पढ़ाने के मामलों और अन्दरूनी इन्तिज़ामों की निगरानी और देख-भाल में भी शरीक रहा, फिर इस्तीफ़ा देकर मदरसा फ़ैज़ुल उलूम सिवनी की सेवा में जा लगा, जो मऊ नाथ भंजन से कोई सात सौ किलोमीटर दूर मध्य प्रदेश में स्थित है। वहां जनवरी 1969 ई० में मैंने पढ़ने-पढ़ाने का दायित्व निभाने के अलावा प्रधानाध्यापक की हैसियत से मदरसे के तमाम अन्दर-बाहर के प्रबन्ध की ज़िम्मेदारी भी संभालीं और जुमे का ख़ुतबा देना और पास-पड़ोस के देहातों में जा-जाकर दावत-तब्लीग़ (प्रचार-प्रसार) का काम करना भी अपने नित्य-प्रति के कामों में शामिल किया, फिर 1972 ई० के अन्त से मदरसा दारुत्तालीम मुबारकपुर में पढ़ाने की ज़िम्मेदारियां संभालीं और दो साल बाद अक्तूबर 1974 ई० में

जामिया सलफ़िया आ गया। जहां ज़िलहिज्जा 1408 हि० (जुलाई 1988 ई०) तक अनेकानेक सेवाओं में लगा रहा।

इसी बीच सन् 1407 हि० के आरंभ में 'मर्कज़ ख़िदमतुस्सुन्नः वस्सीरः अन-नब्वीया' के नाम से मदीना युनिवर्सिटी, मदीना मुनव्वरा में एक शोध-संस्थान की स्थापना हुई और मुझे उसकी ओर से सीरत के विषय पर सम्मिलित होने के लिए कहा गया। रज़ामंदी के बाद जब दफ्तरी और क़ानूनी मरहले तै हो चुके तो मैं मुहर्रम 1409 हि० (अगस्त 1988 ई०) में मदीना मुनव्वरा आ गया और शाबान के आख़िर 1418 हि० (दिसम्बर 1997 ई०) तक यहां सेवा करता रहा, फिर 24 रबीउल अव्वल 1419 हि० (19 जुलाई 1998 ई०) को अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ जमईयत अहले हदीस का अध्यक्ष चुन लिया गया।

पुस्तकें

लेखक पर यह अल्लाह की विशेष कृपा है कि उसे लिखने-लिखाने की शुरू से ही रुचि रही, चुनांचे शिक्षा पूर्ण करने के बाद मैंने इस लम्बी मुद्दत में लिखने-पढ़ने का कुछ न कुछ काम जारी रखा, और उर्दू और अरबी में कई पुस्तकें तैयार भी हुईं और छपीं भी। कुछ के मस्विदे भी नष्ट हो गए या ठंडे बस्ते में चले गए। कुछ पुस्तकों और अनुवादों के नाम इस तरह हैं—

उर्दू पुस्तकें

(1) तज़्किरा शेख़ुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब रह० (1972 ई०) यह पुस्तक चार बार छप चुकी है।

(2) तारीख़े आले सऊद (उर्दू सन् 1972 ई०) यह किताब दो बार छप चुकी है।

(3) क़ादियानियत अपने आईने में, (उर्दू एडीशन सन् 1976 ई०)

(4) फ़ित्ना-ए-क़ादियानियत और मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी (उर्दू एडीशन 1976)

(5) 'अर-रहीक़ुल मख़्तूम' (जो राबिता आलमे इस्लामी में पेश करने के लिए लिखी गई) बार-बार छप चुकी है।

(6) इंकारे हदीस हक़ या बातिल (उर्दू सन् 1977 ई०) प्रकाशित

(7) रज़्मे हक़ व बातिल (मुनाज़रा बजरडीह की रूदाद) एडीशन 1978 ई०

(8) इस्लाम और अदमे तशद्दुद (उर्दू सन् 1984) प्रकाशित (अंग्रेज़ी और हिन्दी में भी छप चुकी है।)

(9) अहले तसव्वुफ़ की कारस्तानियां (1986 ई० एडीशन)

(10) तजल्लियाते नुबूवत (1415 हि०) अरबी से अनुवाद

(11) मुख़्तसर इज़्हारुल हक़ (1417 हि०) अरबी से अनुवाद

(12) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिन्दू किताबों में (1417 ई०)

(13) क़ब्रों पर क़ुब्बे और मज़ारात की तामीर का शरई जायज़ा (1418 हि०) अरबी से अनुवाद

(14) शेख़ मुहम्मद अब्दुल वह्हाब का सलफ़ी अक़ीदा और दुनिया-ए-इस्लाम पर उसका असर (1420 हि०) अरबी से अनुवाद।

अरबी

(1) बहजतुन्नज़र फ़ी मुस्तलहि अह्लिल असर (1974 हि०) बार-बार छप रही है।

(2) इत्तिहादुल किराम तालीक़ बुलूग़ुल मराम लि इब्ने हजर अस्क़लानी सन् 1974 ई० दो बार छप चुकी है।

(3) अर-रहीक़ुल मख़्तूम (सन् 1976 ई०) बार-बार छप चुकी है। इसका संक्षिप्तीकरण भी तैयार है।

(4) अबराज़ुल हक़ वस्सवाब फ़ी मस्‌अलतिस्सफ़ूर वल हिजाब (1978 ई०) परदे के बारे में डा० मुहम्मद तक़ीउद्दीन हिलाली, मराकशी रह० के एक लेख का खंडन है जो पहले मजल्ला अल-जामियतुस-ल फ़ीया (बनारस) में क़िस्तवार छपी, फिर रियाज़ (सऊदी अरब) से पुस्तक-रूप में प्रकाशित हुई।

(5) तस्तूरुशशआब वद्दयानात फ़िल हिन्द व मजालुद्दावतिल इस्लामिया (1979 ई०) कुछ क़िस्तें मजल्ला अल-जामियतुस्सलफ़ीया (बनारस) में छप चुकी है।

(6) अल-फ़िरक़तुन्नाजिया वल फ़िरक़ुल इस्लामिया अल-उख़रा (1982 ई०)

(7) अल-अह्ज़ाबुस सियासीया फ़िलइस्लाम (1986 ई०)

(8) रौज़तुल अनवार फ़ी सीरतिन्नबीयिल मुख़्तार (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) (1993 ई०)

(9) अल-बशारातु बिमुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

(10) अल-बशारातु बिमुहम्मद सल्ल० इन्दल फ़रस (1415 हि०)

(11) अज़्वाउस्सिराज अल वह्हाज फ़ी शरहे सहीह मुस्लिम (1418 ई०)

इन पुस्तकों के अलावा जब फ़रवरी 1982 ई० से जामिया सलफ़ीया बनारस के तर्जुमान माहनामा मुहद्दिस प्रकाशित हुआ तो उसका सम्पादन का दायित्व भी मुझे सौंपा गया और सितम्बर 1988 ई० यानी मदीना मुनव्वरा के लिए रवानगी

तक मैं यह दायित्व बराबर निभाता रहा। (बीच में एक वर्ष कुछ क़ानूनी पेचीदगियों की वजह से 'मुहद्दिस' का प्रकाशन बन्द रहा। इस छः वर्षीय अवधि में धार्मिक, सामूहिक, ऐतिहासिक, आन्दोलनात्मक, जमाअती और राजनीतिक विषयों पर सम्पादकीयों, लेखों के रूप में कोई दो सौ लेख लिखे गए और अल्लाह की कृपा से उन्हें लोकप्रियता प्राप्त हुई।

व बिल्लाहित्तौफ़ीक़ सल्लल्लाहु अला नबीयिना मुहम्मदिंव-व अला आलिही व सह्बिही व बारिक व सल्लम

अपनी बात

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अर-स-ल रसूलहू बिल हुदा व दीनिल हक़्क़ि लियुज़्हि-रहू अलद्दीनि कुल्लिही फ़-ज-अ लहू शाहिदंव-व मुबश्शि रंव-व नज़ीरा व दाअियन इलल्लाहि बिइज़्निही व सिराजम मुनीरा व ज-अ-ल फ़ीहि उस-वतन ह-स-नतल-लि मन का-न यर्जुल्ला-ह वल यौमल आख-र व ज़-क-रल्ला-ह कसीरा० अल्लाहुम-म सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अला आलिही व सह्बिही व मन तबि-अहुम बिएहसानिन इला यौमिद्दीन व फ़ज-ज-र लहुम मनाबी-अर रह-मति वर-रिज़्वानि तफ़-जीरा० अम्मा बाद०

यह बड़े हर्ष की बात है कि रबीउल अव्वल सन् 1396 हि० में पाकिस्तान के अन्दर आयोजित सीरत कान्फ्रेंस के अन्त पर राबिता आलमे इस्लामी ने सीरत के विषय पर लेखों की एक विश्व-प्रतियोगिता आयोजित करने का एलान किया, जिसका उद्देश्य यह है कि क़लमकारों में एक प्रकार की उमंग और उनकी ज्ञानपरक कोशिशों में एक प्रकार की एकरूपता पैदा हो। मेरे विचार से यह बड़ा मुबारक क़दम है, क्योंकि अगर गहराई से जायज़ा लिया जाए तो मालूम होगा कि हक़ीक़त में नबी की सीरत और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उस्वा ही वह एकमात्र स्रोत है जिससे इस्लामी जगत की ज़िंदगी और इंसानी समाज के सौभाग्य के सोते फूटते हैं। आपकी बरकतों वाली ज़ात पर अनगिनत दरूद व सलाम हो।

फिर यह मेरा सौभाग्य होगा कि मैं भी इस मुबारक मुक़ाबले में शिर्कत करूं। लेकिन मेरी हैसियत ही क्या है कि सैयिदुल अव्वलीन वल आख़रीन की मुबारक ज़िंदगी पर रोशनी डाल सकूं। मैं तो अपने को धन्य इतने भर ही में समझता हूं कि मुझे आपकी रोशनी का कुछ हिस्सा मिल जाए, ताकि मैं अंधेरों में भटक कर हलाक होने के बजाए आपके एक उम्मती की हैसियत में आपके चमचमाते राजमार्ग पर चलता हुआ ज़िंदगी गुज़ारूं और इसी राह में मेरी मौत भी आ जाए और फिर आपकी शफ़ाअत की बरकत से अल्लाह मेरे गुनाहों को माफ़ कर दे।

एक छोटी सी बात अपनी इस किताब की लेखन-शैली के बारे में भी कहने की ज़रूरत महसूस कर रहा हूं और वह यह है कि मैंने किताब लिखने से पहले तो यह बात तै कर ली कि इसे बोझ बन जाने वाले विस्तार और अपनी पूरी बात

अदा न कर पाने वाले संक्षेप, दोनों से बचते हुए औसत दर्जे की मोटी किताब लिखूंगा, लेकिन जब सीरत की किताबों पर निगाह डाली तो देखा कि घटनाओं के क्रम और छोटी-छोटी बातों के विस्तार में बड़ा अन्तर है, इसलिए मैंने फ़ैसला किया कि जहां-जहां ऐसी स्थिति पैदा हो, वहां वार्ता के हर पहलू पर नज़र दौड़ा कर और भरपूर छान-फटक करके जो नतीजा निकालूं, उसे असल किताब में लिख दूं और दलीलों, गवाहियों के विस्तार में न जाकर, मात्र प्रमुखता देने के कारणों का उल्लेख करूं, वरना किताब अनचाहे ही बहुत लम्बी हो जाएगी, अलबत्ता जहां यह डर हो कि मेरी खोज पाठकों के लिए चौंका देने का कारण बनेगी या जिन घटनाओं के सिलसिले में आम क़लमकारों ने कोई ऐसा चित्र प्रस्तुत किया हो, जो मेरे दृष्टिकोण से सही न हो, वहां दलीलों की ओर भी इशारा कर दूं।

ऐ अल्लाह ! मेरे लिए लोक-परलोक की भलाई मुक़द्दर फ़रमा। तू निश्चय ही माफ़ करने वाला, बड़ा मुहब्बती है, अर्श का मालिक है और बुज़ुर्ग व बरतर है।

—सफ़ीउर्रहमान मुबारकपुरी
जामिया सलफ़ीया,
बनारस, हिंद

जुमा
24 रजब 1396 हि०
तद० 23 जुलाई 1976 ई०

अरब, इस्लाम से पहले

- पृथ्वी और जातियां
- राज्य और नीतियां
- दीन और सामूहिकता

अरब, स्थिति और जातियां

नबी सल्ल० की सीरत को, सच तो यह है कि रब के उस पैग़ाम का व्यावहारिक प्रतिबिम्ब समझा जा सकता है, जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तमाम इंसानों के सामने पेश किया था, और जिसके ज़रिए इंसान को अंधेरों से निकाल कर रोशनी में और बन्दों की बन्दगी से निकाल कर अल्लाह की बन्दगी में दाख़िल कर दिया था। चूंकि इस पाक सीरत का पूर्ण चित्र सामने लाया नहीं जा सकता जब तक कि रब के उस पैग़ाम के आने से पहले के हालात और बाद के हालात की तुलना न कर ली जाए, इसलिए असल वार्त्ता से पहले इस अध्याय में इस्लाम से पहले की अरब जातियों और उनके विकास की स्थिति बताते हुए उन हालात का चित्रण किया जा रहा है, जिनमें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भेजे गये थे।

अरब की स्थिति

अरब शब्द का शाब्दिक अर्थ है मरुस्थल और बिना किसी हरियाली का भू-भाग। पुराने समय से यह शब्द अरब प्रायद्वीप और उसमें बसने वाली जातियों के लिए बोला जा रहा है।

अरब के पश्चिम में लाल सागर और सीना प्रायद्वीप है। पूरब में अरब की खाड़ी और दक्षिणी इराक़ का एक बड़ा भाग है। दक्षिण में अरब सागर है जो वास्तव में हिंद महासागर का फैलाव है। उत्तर में सीरिया और कुछ उत्तरी इराक़ है। इनमें से कुछ सीमाओं के बारे में मतभेद भी है। कुल क्षेत्रफल का अन्दाज़ा दस लाख से तेरह लाख वर्ग मील तक किया गया है।

अरब प्रायद्वीप प्राकृतिक और भौगोलिक हैसियत से बड़ा महत्व रखता है। भीतरी तौर पर यह हर चार ओर से मरुस्थल से घिरा हुआ है, जिसके कारण यह एक ऐसा सुरक्षित क़िला बन गया है कि बाहरी जातियों के लिए इस पर क़ब्ज़ा करना और अपना प्रभाव फैलाना अति कठिन है। यही वजह है कि अरब प्रायद्वीप के मध्यवर्ती क्षेत्र के रहने वाले पुराने समय से अपने तमाम मामलों में पूरी तरह स्वतंत्र और स्वशासी दिखाई पड़ते हैं, हालांकि ये ऐसी दो महान शक्तियों के पड़ोसी थे कि अगर यह ठोस प्राकृतिक रुकावट न होती तो इनके हमले रोक लेना अरब निवासियों के बस की बात न थी।

बाहरी तौर पर अरब प्रायद्वीप पुरानी दुनिया के तमाम मालूम महाद्वीपों के बीचों-बीच स्थित है और भू-भाग और समुद्र दोनों रास्तों से उनके साथ जुड़ा

हुआ है। उनका उत्तरी पश्चिमी कोना अफ़्रीक़ा महाद्वीप के लिए प्रवेश-द्वार है। उत्तरी पूर्वी कोना यूरोप की कुंजी है। पूर्वी कोना ईरान, मध्य एशिया और पूरब के द्वार खोलता है और भारत और चीन तक पहुंचाता है। इसी तरह हर महाद्वीप समुद्र के रास्ते से भी अरब प्रायद्वीप से जुड़ा हुआ है और उनके जहाज़ अरब बन्दरगाहों में प्रत्यक्ष रूप से आकर ठहरते हैं।

इस भौगोलिक स्थिति की वजह से अरब प्रायद्वीप के उत्तरी और दक्षिणी कोने विभिन्न जातियों के गढ़ और व्यापार, कला और धर्मों के आदान-प्रदान का केन्द्र रह चुके हैं।

अरब जातियां

इतिहासकारों ने नस्ली दृष्टि से अरब जातियों को तीन भागों में विभाजित किया है—

1. **अरब बाइदा**—यानी वे प्राचीन अरब क़बीले और जातियां, जो बिल्कुल लुप्त हो गईं और उनसे सम्बन्धित ज़रूरी जानकारियां भी अब मौजूद नहीं, जैसे आद, समूद, तस्म, जदीस, अमालिक़ा अमीम, जरहम, हुज़ूरा विहार, उबैल, जासम, हज़र मौत वग़ैरह।

2. **अरब आरिबा**—यानी वे अरब क़बीले, जो यारुब बिन यशजब बिन क़हतान की नस्ल से हैं। इन्हें क़हतानी अरब कहा जाता है।

3. **अरब मुस्तारबा**—यानी वे अरब क़बीले जो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की नस्ल से हैं। इन्हें अदनानी अरब कहा जाता है।

अरब आरिबा यानी क़हतानी अरब का मूल स्थान यमन था। यहीं इनके वंश और क़बीले विभिन्न शाखाओं में उपजे, फैले और बढ़े। इनमें से दो क़बीलों ने बड़ी ख्याति प्राप्त की।

(क) हिमयर—जिसकी प्रसिद्ध शाखाएं ज़ैदुल जम्हूर, कुज़ाआ और सकासिक हैं।

(ख) कहलान—जिसकी प्रसिद्ध शाखाएं हमदान, अन्मार, तै, मज़हिज, किन्दा, लख़्म, जुज़ाम, अज़्द, औस, ख़ज़रज और जफ़ना-सन्तान हैं, जिन्होंने आगे चलकर शाम प्रदेश के आस-पास बादशाही क़ायम की और आले ग़स्सान के नाम से प्रसिद्ध हुए।

आम कहलानी क़बीलों ने बाद में यमन छोड़ दिया और अरब प्रायद्वीप के अलग-अलग हिस्सों में फैल गए। उनके देश छोड़ने की सामान्य घटना सैले इरम

से कुछ पहले उस वक़्त घटी, जब रूमियों ने मिस्र व शाम (सीरिया) पर क़ब्ज़ा करके यमन वालों के व्यापारिक समुद्री रास्ते पर अपना क़ब्ज़ा जमा लिया और थल मार्ग की सुविधाएं समाप्त करके अपना दबाव इतना बढ़ा लिया कि कह्लानियों का व्यापार नष्ट होकर रह गया। एक कथन यह भी है कि उन्होंने सैले इरम के बाद उस समय देश-परित्याग किया, जब व्यापार की तबाही के अलावा जीवन के दूसरे साधन भी जवाब दे गए। क़ुरआन से भी इसकी पुष्टि होती है।

कुछ असंभव नहीं कि कह्लानी और हिमयरी परिवारों में संघर्ष भी रहा हो और यह भी कह्लानियों के देश छोड़ने का एक प्रभावी कारण बना हो। इसका इशारा इससे मिलता है कि कह्लानी क़बीलों ने तो देश छोड़ दिया, लेकिन हिमयरी क़बीले अपनी जगह बाक़ी रहे।

जिन कह्लानी क़बीलों ने देश छोड़ा, उनकी चार क़िस्में की जा सकती हैं—

1. अज़्द

इन्होंने अपने सरदार इम्रान बिन अम्र मज़ीक़िया के मश्विरे पर वतन छोड़ा। पहले तो ये यमन ही में एक जगह से दूसरी जगह आते-जाते रहे और हालात का पता लगाने के लिए ख़ोजियों को भेजते रहे, लेकिन अन्त में उत्तर का रुख़ किया और फिर विभिन्न शाखाएं घूमती-घुमाती अनेक जगहों पर हमेशा के लिए बस गईं। सविस्तार विवेचन इस तरह है—

सालबा बिन अम्र—इसने सबसे पहले हिजाज़ का रुख़ किया और सालबीया और ज़ीक़ार के बीच में बस गए। जब इसकी सन्तान बड़ी हो गई और परिवार मज़बूत हो गया तो मदीना की ओर कूच किया और उसी को अपना वतन बना लिया। इसी सालबा की नस्ल से औस और ख़ज़रज क़बीले हैं, जो सालबा के बेटे हारिसा की सन्तान हैं।

हारिसा बिन अम्र—यानी ख़ुज़ाआ और उसकी सन्तान। ये लोग पहले हिजाज़ भू-भाग में घूमते-घामते मर्रज़्ज़हरान में ठहरे, फिर हरम पर धावा बोल दिया और बनू जुरहुम को निकाल कर ख़ुद मक्का में रहने-सहने लगे।

इम्रान बिन अम्र—इसने और इसकी सन्तान ने अमान में रहना शुरू किया, इसलिए ये लोग अज़्दे अमान कहलाते हैं।

नस्र बिन अज़्द—इससे ताल्लुक़ रखने वाले क़बीलों ने तिहामा में रहना शुरू किया। ये लोग अज़्दे शनूअः कहलाते हैं।

जुफ़्ना बिन अम्र—इसने शाम देश का रुख़ किया और अपनी सन्तान सहित वहीं रहने-सहने लगा। यही व्यक्ति ग़स्सानी बादशाहों का मूल पुरखा है। इन्हें

आले ग़स्सान इसलिए कहा जाता है कि इन लोगों ने शाम देश जाने से पहले हिजाज़ में ग़स्सान नामक एक चश्मे पर कुछ दिनों वास किया था।

दूसरे छोटे परिवार, जैसे काब बिन अम्र, हारिस बिन अम्र और औफ़ बिन अम्र ने हिजाज़ और शाम (सीरिया) हिजरत करने वाले क़बीलों का साथ पकड़ा।

देश-परित्याग करने वालों का पहला शासक मालिक बिन फ़ह्म तन्नूख़ी था जो आले-क़ह्तान से था। यह अनबार में या अंबार के क़रीब रहता था। इसके बाद एक रिवायत के अनुसार इसका भाई अम्र बिन फ़ह्म और एक दूसरी रिवायत के अनुसार जुज़ैमा बिन मालिक बिन फ़ह्म, जिसकी उपाधि अबरश और वज़ाह था, उसकी जगह शासक हुआ।

2. लख़्म व जुज़ाम

इन्होंने उत्तर पूर्व का रुख़ किया। इन्हीं लख़्मियों में नस्र बिन रबीआ था, जो हियरा के आले मुन्ज़िर बादशाहों का मूल पुरखा है।

3. बनूतै

इस क़बीले ने बनू अज़्द के देश छोड़ देने के बाद उत्तर का रुख़ किया और अजा और सलमा नामक दो पहाड़ियों के आस-पास स्थाई रूप से बस गये, यहाँ तक कि दोनों पहाड़ियां क़बीला तै की निस्बत से मशहूर हो गईं।

4. किन्दा

ये लोग पहले बहरैन—वर्तमान अल-अह्सा—में बसे, लेकिन विवश होकर वहां से हज़रमौत चले गये, मगर वहां भी अमान न मिली और आख़िरकार नज्द में डेरा डालना पड़ा। यहां उन लोगों ने एक ज़ोरदार हुकूमत की बुनियाद डाली, पर यह हुकूमत स्थाई न साबित हो सकी और उसके चिह्न जल्द ही मिट गये।

कह्लान के अलावा हिमयर का भी केवल एक क़बीला क़ुज़ाआ ऐसा है—और उसके हिमयरी होने में भी मतभेद है—जिसने यमन देश छोड़कर के इराक़ की सीमाओं में बादियतुस्समावः के अन्दर रहना-सहना शुरू किया।[1]

---

1. इन क़बीलों की और इनके देश छोड़ने की विस्तृत जानकारी के लिए देखिए, नसब माद वलयमनुल कबीर, जमहरतुन्नसब, अल-अक़्दुल फ़रीद, क़लाइदुल जमान, निहायतुल अदब, तारीख़े इब्ने ख़ल्लदून, सबहकुज़्ज़हब और अन्साब की दूसरी किताबें, साथ ही तारीख़ुल अरब क़ब्लल इस्लाम पर लिखी गई किताबें। देश छोड़ने की इन घटनाओं के समय और कारणों के निर्धारण में ऐतिहासिक स्रोतों के मामले में बड़ा

अरब मुस्तारबा

इनके मूल पुरखे सैयिदिना इब्राहीम अलैहिस्सलाम मूलतः इराक़ के एक नगर उर के रहने वाले थे। यह नगर फ़रात नदी के पश्चिमी तट पर कूफ़ा के क़रीब स्थित था। इसकी खुदाई के दौरान जो शिलालेख मिले हैं, उनसे उस नगर के बारे में बहुत-सी बातें सामने आई हैं और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के परिवार के कुछ विवरण और देशवासियों की धार्मिक और सामाजिक परिस्थितियों पर से भी परदा उठता है।

यह मालूम है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम यहां से हिजरत करके हज़ान नगर तशरीफ़ ले गए थे और फिर वहां से फ़लस्तीन जाकर उसी देश को अपनी पैग़म्बराना गतिविधियों का केन्द्र बना लिया था और दावत व तब्लीग़ (प्रचार-प्रसार) के लिए यहीं से देश के भीतर और बाहर संघर्षरत रहा करते थे। एक बार आप मिस्र तशरीफ़ ले गए। फ़िरऔन ने आपकी बीवी हज़रत सारा के बारे में सुना, तो उनके बारे में उसकी नीयत बुरी हो गई और उन्हें अपने दरबार में बुरे इरादे से बुलाया, लेकिन अल्लाह ने हज़रत सारा की दुआ के नतीजे में अनदेखे रूप से फ़िरऔन की ऐसी पकड़ की कि वह हाथ-पांव मारने और फेंकने लगा। फिर हज़रत सारा की दुआ से ठीक हो गया। तीन बार की ऐसी दशा से उसे समझ में आ गया कि हज़रत सारा अल्लाह की बहुत ख़ास और क़रीबी बन्दी हैं और वह हज़रत सारा की इस विशेषता से इतना प्रभावित हुआ कि हज़रत हाजरा[1] को उनकी सेवा में दे दिया। फिर हज़रत सारा ने हज़रत हाजरा को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की पत्नी के रूप में पेश कर दिया।[2]

मतभेद है। हमने विभिन्न पहलुओं पर विचार करके, जो बात ज़्यादा उचित जानी, वही लिख दी है।

1. मशहूर है कि हज़रत हाजरा लौंडी थीं, लेकिन अल्लामा मंसूरपुरी ने सविस्तार शोध-कार्य करके स्वयं अह्ले किताब के हवाले से यह सिद्ध किया है कि वह लौंडी नहीं, बल्कि आज़ाद थीं और फ़िरऔन की बेटी थीं। देखिए 'रहमतुल्लिल आलमीन' 2/36-37। इब्ने ख़ल्लदून, अम्र बिन आस और मिस्रियों की एक वार्ता का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि मिस्रियों ने उनसे कहा कि हाजरा हमारे बादशाहों में से एक बादशाह की औरत थीं। हमारे और ऐन शम्स वालों के दर्मियान कई लड़ाइयां हुई। कुछ लड़ाइयों में उन्हें विजय मिली और उन्होंने बादशाह को क़त्ल कर दिया और हाजरा को क़ैद कर लिया। यहीं से वह तुम्हारे पुरखे हज़रत इब्राहीम तक पहुंचीं। (तारीख़े इब्ने ख़ल्लदून 2/1/77)
2. वही, 2/34, घटना के विवरण के लिए देखिए सहीह बुख़ारी 1/484,

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत सारा और हज़रत हाजरा को साथ लेकर फ़लस्तीन वापस तशरीफ़ लाए, फिर अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को हाजरा अलैहस्सलाम के पेट से एक बेटा—इस्माईल—अता फ़रमाया, लेकिन इस पर हज़रत सारा को जो नि:सन्तान थीं, बड़ी शर्म आई और उन्होंने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मजबूर किया कि हज़रत हाजरा को उनके नए बच्चे सहित देश निकाला दे दें। हालात ने ऐसा रुख़ अपनाया कि उन्हें हज़रत सारा की बात माननी पड़ी और हज़रत हाजरा और बच्चे हज़रत इस्माईल को साथ लेकर हिजाज़ तशरीफ़ ले गए और वहां एक चटयल घाटी में बैतुल्लाह शरीफ़ के क़रीब ठहरा दिया। उस वक़्त बैतुल्लाह शरीफ़ न था, सिर्फ़ टीले की तरह उभरी हुई ज़मीन थी। बाढ़ आती थी तो पानी दाहिने-बाएं से कतरा कर निकल जाता था। वहीं मस्जिदे हराम के ऊपरी भाग में ज़मज़म के पास एक बहुत बड़ा पेड़ था। आपने उसी पेड़ के पास हज़रत हाजरा और हज़रत इस्माईल अलै० को छोड़ा था। उस वक़्त न मक्का में पानी था, न आदम, न आदमज़ाद। इसलिए हज़रत इब्राहीम ने एक तोशेदान में खजूर और एक मश्केज़े में पानी रख दिया। इसके बाद फ़लस्तीन वापस चले गए, लेकिन कुछ ही दिनों में खजूर और पानी ख़त्म हो गया और बड़ी कठिन घड़ी का सामना करना पड़ा, पर ऐसी कठिन घड़ी में अल्लाह की मेहरबानी से ज़मज़म का सोता फूट पड़ा और एक मुद्दत तक के लिए रोज़ी का सामान और जीवन की पूंजी बन गया। ये बातें आम तौर से लोगों को मालूम हैं।[1]

कुछ दिनों के बाद यमन से एक क़बीला आया, जिसे इतिहास में जुरहुम द्वितीय कहा जाता है। यह क़बीला इस्माईल अलैहिस्सलाम की मां से इजाज़त लेकर मक्का में ठहर गया। कहा जाता है कि यह क़बीला पहले मक्का के आस-पास की घाटियों में ठहरा हुआ था। सहीह बुख़ारी में इतना स्पष्टीकरण मौजूद है कि (रहने के उद्देश्य से) ये लोग मक्का में हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के आने के बाद और उनके जवान होने से पहले आये थे, लेकिन इस घाटी से उनका गुज़र इससे पहले भी हुआ करता था।[2]

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने छोड़े हुओं की निगरानी के लिए कभी-कभी मक्का तशरीफ़ लाया करते थे, लेकिन यह मालमू न हो सका कि इस तरह उनका कितनी बार आना हुआ, हां, ऐतिहासिक स्रोतों से उनका चार बार

---

1. देखिए सहीह बुख़ारी, किताबुल अंबिया, 1/474, 475
2. सहीह बुख़ारी 1/475

आना साबित है, जो इस तरह है—

1. क़ुरआन मजीद में बयान किया गया है कि अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सपने में दिखलाया कि वह अपने सुपुत्र (हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम) को ज़िब्ह कर रहे हैं। यह सपना एक प्रकार से अल्लाह का हुक्म था। बाप-बेटे दोनों जब अल्लाह के इस हुक्म को पूरा करने के लिए तैयार हो गये और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटा दिया, तो अल्लाह ने पुकारा, ऐ इब्राहीम! तुमने सपने को सच कर दिखाया। हम अच्छे लोगों को इसी तरह बदला देते हैं। निश्चय ही यह खुली परीक्षा थी और अल्लाह ने उन्हें फ़िदए (प्रतिदान) में एक बड़ा, ज़िब्ह के लायक़ जीव अता कर दिया।[1]

बाइबिल की किताब पैदाइश में उल्लिखित है कि हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम, हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम से तेरह साल बड़े थे और क़ुरआन से मालूम होता है कि यह घटना हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम के जन्म से पहले घटी थी, क्योंकि पूरी घटना का उल्लेख कर चुकने के बाद हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम के जन्म की शुभ-सूचना दी गई है।

इस घटना से सिद्ध होता है कि हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के जवान होने से पहले कम से कम एक बार हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मक्के का सफ़र ज़रूर किया था। बाक़ी तीन सफ़रों का विवरण सहीह बुख़ारी की एक लंबी रिवायत में है, जो इब्ने अब्बास रज़ि० से मरफ़ूअन रिवायत की गई है।[2] उसका सार यह है—

2. हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम जब जवान हो गये, जुरहुम से अरबी सीख ली और उनकी निगाहों में जंचने लगे, तो उन लोगों ने अपने परिवार की एक महिला से आपका विवाह कर दिया। उसी बीच हज़रत हाजरा का देहान्त हो गया। उधर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख़्याल हुआ कि अपने छोड़े हुओं को देखना चाहिए। चुनांचे वह मक्का तशरीफ़ ले गये। लेकिन हज़रत इस्माईल से मुलाक़ात न हुई। बहू से हालात मालूम किए। उसने तंगदस्ती की शिकायत की। आपने वसीयत की कि इस्माईल अलैहिस्सलाम आएं तो कहना, अपने दरवाज़े की चौखट बदल दें। इस वसीयत का मतलब हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम समझ गए। बीवी को तलाक़ दे दी और एक दूसरी औरत से शादी कर ली, जो अधिकतर इतिहासकारों के कथनानुसार जुरहुम के सरदार

---

1. सूरः साफ़्फ़ात : 103-107
2. सहीह बुख़ारी 1/475-476,

बुख़ारी का भी झुकाव है। चुनांचे अपनी सहीह में उन्होंने एक बाब (अध्याय) बांधा है, जिसका शीर्षक है 'इस्माईल अलैहिस्सलाम की ओर यमन की निस्बत' और इस पर कुछ हदीसों से तर्क जुटाया है। हाफ़िज़ इब्ने हजर ने उसकी व्याख्या में इस बात को प्रमुखता दी है कि क़हतान, नाबित बिन इस्माईल अलैहिस्सलाम की नस्ल से थे।[1]

क़ीदार बिन इस्माईल अलैहिस्सलाम की नस्ल मक्का ही में फलती-फूलती रही, यहां तक कि अदनान और फिर उनके बेटे मअद का ज़माना आ गया। अदनानी अरब का वंश-क्रम सही तौर पर यहीं तक सुरक्षित है।

अदनान नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वंश-क्रम की 21वीं पीढ़ी पर पड़ते हैं। कुछ रिवायतों में बयान किया गया है कि आप जब अपने वंश-क्रम का उल्लेख करते तो अदनान पर पहुंच कर रुक जाते और आगे न बढ़ते, फ़रमाते कि वंश-क्रम के विशेषज्ञ ग़लत कहते हैं।[2] मगर विद्वानों का एक गिरोह कहता है कि अदनान से आगे भी वंश-क्रम बताया जा सकता है। उन्होंने इस रिवायत को कमज़ोर कहा है। लेकिन उनके नज़दीक नसब के इस हिस्से में बड़ा मतभेद है, मिलाप संभव नहीं। अल्लामा मंसूरपुरी ने इब्ने साद की रिवायत को प्रमुखता दी है जिसे तबरी और मसऊदी आदि ने भी दूसरे कथनों और रिवायतों के साथ ज़िक्र किया है। इस रिवायत के अनुसार अदनान और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बीच चालीस पीढ़ियां हैं।[3]

बहरहाल मअद के बेटे नज़ार से—जिनके बारे में कहा जाता है कि इनके अलावा मअद की कोई सन्तान न थी—कई परिवार अस्तित्व में आए। वास्तव में नज़ार के चार बेटे थे और हर बेटा एक बड़े क़बीले की बुनियाद बना। चारों के नाम ये हैं—

1. इयाद, 2. अनमार, 3. रबीआ और 4. मुज़र।

इनमें से अन्तिम दो क़बीलों की शाखाएं और उपशाखाएं बहुत ज़्यादा हुईं।

---

1. सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब हदीस न० 3507, फ़त्हुल बारी 6/621-623, तारीख़ इब्ने ख़ल्लदून 2/1/46, 2/2/241, 242, साथ ही देखिए नसबे माद, अलयमनुल कबीर लिल कलबी 1/131
2. तबरी : तारीख़ुल उमम वल मुलूक 2/191-194, अल-आलाम 5/6
3. तबक़ाते इब्ने साद 1/56, तारीख़े तबरी 2/272, मसऊदी की मुरव्वजुज़्ज़हब 2/273, 274, तारीख़े इब्ने ख़ल्लदून 2/2/298, फ़त्हुल बारी 6/622 रहमतुल्लिल आलमीन 2/7-8, 14-17

चुनांचे रबीआ से असद बिन रबीआ, अन्ज़ा, अब्दुल क़ैस, वाइल, बिक्र, तग़लब और बनू हनीफ़ा वग़ैरह अस्तित्व में आए।

मुज़र की सन्तान दो बड़े क़बीलों में विभाजित हुई—

1. क़ैस ईलान बिन मुज़र,

2. इलयास बिन मुज़र

क़ैस ईलान से बनू सुलैम, बनू हवाज़िन, बनू ग़तफ़ान, ग़तफ़ान से अबस, ज़ुबियान, अशजअ और ग़नी बिन आसुर क़बीले अस्तित्व में आए।

इलयास बिन मुज़र से तमीम बिन मुर्रा, बुज़ैल बिन मुदरका, बनू असद बिन खुज़ैमा और किनाना बिन ख़ुज़ैमा के क़बीले अस्तित्व में आए। फिर किनाना से क़ुरैश का क़बीला अस्तित्व में आया। यह क़बीला फ़िह्र बिन मालिक बिन नज़्र बिन किनाना की सन्तान है।

फिर क़ुरैश भी विभिन्न शाखाओं में बंटे। मशहूर क़ुरैशी शाखाओं के नाम ये हैं—जम्ह, सह्म, अदी, मख़्ज़ूम, तैम, ज़ोहरा और क़ुसई बिन किलाब के परिवार, यानी अब्दुद्दार, असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा और अब्दे मुनाफ़, ये तीनों क़ुसई के बेटे थे। इनमें से अब्द मुनाफ़ के चार बेटे हुए, जिनसे चार उप क़बीले अस्तित्व में आए, यानी अब्द शम्स, नौफ़ल, मुत्तलिब और हाशिम। इन्हीं हाशिम की नस्ल से अल्लाह ने हमारे हुज़ूर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को चुना।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सन्तान में से इस्माईल अलैहिस्सलाम को चुना, फिर इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से किनाना को चुना और किनाना की नस्ल से क़ुरैश को चुना, फिर क़ुरैश में से बनू हाशिम को चुना और बनू हाशिम में से मुझे चुना।[1]

इब्ने अब्बास रज़ि० का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह ने तमाम जीवों को पैदा किया, तो मुझे सबसे अच्छे गिरोह में बनाया, फिर इनके भी दो गिरोहों में से ज़्यादा अच्छे गिरोह के अन्दर रखा, फिर क़बीलों को चुना, तो मुझे सबसे अच्छे क़बीले के अन्दर बनाया, फिर घरानों को चुना तो मुझे सबसे अच्छे घरानों में बनाया, इसलिए मैं अपनी ज़ात (निज) के एतबार से भी सबसे अच्छा हूं और अपने घराने के एतबार से भी सबसे बेहतर हूं।[2]

1. सहीह मुस्लिम 2/245, जामे तिर्मिज़ी 2/201
2. तिर्मिज़ी 2/201

बहरहाल अदनान की नस्ल जब ज़्यादा बढ़ गई तो वह रोज़ी-रोटी की खोज में अरब के विभिन्न भू-भाग में फैल गई, चुनांचे क़बीला अब्दुल क़ैस ने, बिक्र बिन वाइल की कई शाखाओं ने और बनू तमीम के परिवारों ने बहरैन का रुख़ किया और उसी क्षेत्र में जा बसे।

बनू हनीफ़ा बिन साब बिन अली बिन बिक्र ने यमामा का रुख़ किया और उसके केन्द्र हिज्र में आबाद हो गये।

बिक्र बिन वाइल की बाक़ी शाखाओं ने, यमामा से लेकर बहरैन, काज़िमा तट, खाड़ी, सवादे इराक़, उबुल्ला और हय्यत तक के इलाक़ों में रहना-सहना शुरू कर दिया।

बनू तग़लब फ़रातिया द्वीप में जा बसे, अलबत्ता उनकी कुछ शाखाओं ने बनू बिक्र के साथ रहना-सहना पसन्द किया।

बनू तमीम बादिया बसरा में जाकर आबाद हो गए।

बनू सुलैम ने मदीना के क़रीब डेरे डाले। उनकी आबादी वादिल क़ुरा से शुरू होकर ख़ैबर और मदीना के पूरब से गुज़रती हुई हर्रा बनू सुलैम से मिले दो पहाड़ों तक फैली हुई थी।

बनू सक़ीफ़ तायफ़ में रहने-सहने लगे और बनू हवाज़िन ने मक्का के पूरब में औतास घाटी के आस-पास डेरे डाले। उनकी आबादी मक्का-बसरा राजमार्ग पर स्थित थी।

बनू असद तैमा के पूरब और कूफ़ा के पश्चिम में आबाद हो गए थे। उनके और तैमा के बीच बनू तै का एक परिवार बहतर आबाद था। बनू असद की आबादी और कूफ़े के बीच पांच दिन की दूरी थी।

बनू ज़िबयान तैमा के क़रीब हौरान के आस-पास आबाद हो गये थे।

तिहामा में बनू किनाना के परिवार रह गये थे। इनमें से क़ुरैशी परिवारों का रहना-सहना मक्का और उसके आस-पास था। ये लोग बिखरे हुए थे, ये आपस में बंधे हुए न थे, यहां तक कि क़ुसई बिन किलाब उभरा और क़ुरैशियों को एक बनाकर उन्हें मान-सम्मान और उच्च व श्रेष्ठ स्थान दिलाया।[1]

---

1. विस्तार में जानने के लिए देखिए जमहरतुन्नसब, नसब साद वल यमनुल कबीर, अंसाबुल क़ुरशीयीन, निहायतुल अदब व क़लाइदुल जमान, सबाइकुज़्ज़हब आदि।

अरब हुकूमतें और सरदारियां

इस्लाम से पहले अरब के जो हालात थे, उन पर वार्त्ता करते हुए उचित जान पड़ता है कि वहां की हुकूमतों, सरदारियों और धर्मों का भी एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर दिया जाए, ताकि इस्लाम के प्रकट होते समय जो स्थिति थी, वह आसानी से समझ में आ सके।

जिस समय अरब प्रायद्वीप पर इस्लाम-सूर्य की चमचमाती किरणें प्रज्वलित हुईं, वहां दो प्रकार के शासक थे। एक ताजपोश (गद्दीधारी) बादशाह, जो वास्तव में पूर्ण स्वायत्तता प्राप्त न थे, दूसरे क़बीलागत सरदार, जिन्हें अधिकारों की दृष्टि से वही प्रमुखता प्राप्त थी जो ताजपोश बादशाहों को प्राप्त थी, लेकिन उनकी बड़ी संख्या को एक और प्रमुखता यह भी मिली हुई थी कि वे पूरे तौर पर स्वायत्तशासी थे।

ताजपोश या गद्दीधारी शासक ये थे—

यमन के बादशाह, आले ग़स्सान (शाम) के बादशाह और हियरा (इराक़) के बादशाह, शेष अरब शासक ताजपोश न थे।

यमन की बादशाही

अरब आरबा में से जो सबसे पुरानी यमनी जाति मालूम हो सकी, वह सबा जाति है। उर (इराक़) से जो शिलालेख मिले हैं, उनमें ढाई हज़ार साल ईसा पूर्व इस जाति का उल्लेख मिलता है। लेकिन इसकी उन्नति का युग ग्यारह शताब्दी ईसा पूर्व से शुरू होता है। उसके इतिहास के महत्वपूर्ण युग ये हैं—

1. 1200 ई०पू० से 620 ई०पू० तक का युग—इस युग में सबा के बादशाहों की उपाधि मक्रिबे सबा थी, उनकी राजधानी सरवाह थी, जिसके खंडहर आज भी मआरिब के उत्तर पश्चिम में 50 किलोमीटर की दूरी पर पाए जाते हैं और ख़रीबा के नाम से मशहूर हैं। इसी युग में मआरिब के प्रसिद्ध बांध की बुनियाद रखी गई जिसे यमन के इतिहास में बड़ा महत्व दिया गया है। कहा जाता है कि इस युग में सबा साम्राज्य को इतनी उन्नति हुई कि उन्होंने अरब के अन्दर और अरब से बाहर जगह-जगह अपने उपनिवेश बना लिए थे। इस युग के बादशाहों की तायदाद का अनुमान 23 से 26 तक किया गया है।

2. 650 ईसा पूर्व से 115 ईसा पूर्व तक का युग—इस युग में सबा के बादशाहों ने मक्रिब का शब्द छोड़कर मलिक की उपाधि अपना ली थी और

सरवाह के बजाए मआरिब को अपनी राजधानी बनाई। इस नगर के खंडहर आज भी सुनआ से 192 किलोमीटर पूरब में पाए जाते हैं।

3. 115 ईसा पूर्व से सन् 300 ई० तक का युग—इस युग में सबा साम्राज्य पर हिमयर क़बीले को ग़लबा हासिल रहा और उसने मआरिब के बजाए रैदान को अपनी राजधानी बनाया, फिर रैदान का नाम ज़िफ़ार पड़ गया, जिसके अवशेष आज भी नगर 'मरयम' के क़रीब एक गोल पहाड़ी पर पाए जाते हैं।

यही युग है जिसमें सबा जाति का पतन शुरू हुआ। पहले नब्तियों ने उत्तरी हिजाज़ पर अपना प्रभुत्व स्थापित करके सबा को उनके उपनिवेशों से निकाल बाहर किया, फिर रूमियों ने मिस्र व शाम और उत्तरी हिजाज़ पर क़ब्ज़ा करके उनके व्यापार के समुद्री रास्ते को ख़तरनाक बना दिया और इस तरह उनका व्यापार धीरे-धीरे नष्ट हो गया। इधर क़ह्तानी क़बीले ख़ुद भी आपस ही में जूझ रहे थे। इन परिस्थितियों का नतीजा यह हुआ कि क़ह्तानी क़बीले अपना देश छोड़-छोड़ कर इधर-उधर बिखर गए।

4. सन् 300 ई० के बाद से इस्लाम के शुरू का युग—इस युग में यमन के भीतर बराबर अशान्ति और बेचैनी फैलती रही। क्रान्तियां आईं, गृह-युद्ध हुए और विदेशियों को हस्तक्षेप करने के मौक़े मिल गए, यहां तक कि एक वक़्त ऐसा भी आया कि यमन की स्वायत्तता समाप्त हो गई। चुनांचे यही युग है जिसमें रूमियों का अदन पर फ़ौजी क़ब्ज़ा हो गया और उनकी मदद से हब्शियों ने हिमयर व हमदान के आपसी संघर्ष का फ़ायदा उठाते हुए 340 ई० में पहली बार यमन पर क़ब्ज़ा कर लिया, जो सन् 378 ई० तक बाक़ी रहा। इसके बाद यमन की स्वायत्तता तो बहाल हो गई, मगर 'मआरिब' के प्रसिद्ध बांध में ख़राबी आनी शुरू हो गई, यहां तक कि 450 या 451 ई० में बांध टूट गया और एक ज़बरदस्त बाढ़ आई जिसका उल्लेख क़ुरआन मजीद (सूरः सबा) में 'सैले अरिम' के नाम से किया गया है। यह बहुत बड़ी दुर्घटना थी। इसके नतीजे में आबादी की आबादी उजड़ गई और बहुत से क़बीले इधर-उधर बिखर गए।

फिर सन् 523 ई० में एक और भयानक दुर्घटना हुई अर्थात् यमन के यहूदी बादशाह ज़ूनवास ने नजरान के ईसाइयों पर एक ज़बरदस्त हमला करके उन्हें ईसाई धर्म छोड़ने पर बाध्य करना चाहा और जब वे उस पर तैयार न हुए तो ज़ूनवास ने खाइयां खुदवाकर उन्हें भड़कती हुई आग के अलाव में झोंक दिया। क़ुरआन मजीद ने सूरः बुरूज की आयतों 'क़ुति-ल अस्हाबुल उख़दूद. . .० में इस लोमहर्षक घटना की ओर इशारा किया है। इस घटना का नतीजा यह हुआ कि ईसाइयत, जो रूमी बादशाहों के नेतृत्व में अरब क्षेत्रों पर विजय पाने और विस्तारवादी होने में पहले ही

से मुस्तैद और तेज थी, बदला लेने पर तुल गई और हब्शियों को यमन पर हमले के लिए उकसाते हुए उन्हें समुद्री बेड़ा जुटाया। हब्शियों ने रूमियों का समर्थन पाकर सन् 525 ई० में अरयात के नेतृत्व में सत्तर हज़ार फ़ौज से यमन पर दोबारा क़ब्ज़ा कर लिया। क़ब्ज़े के बाद शुरू में तो हब्श के गवर्नर की हैसियत से अरयात ने यमन पर शासन किया, लेकिन फिर उसकी सेना के एक आधीन कमांडर—अबरहा—ने 549 ई० में उसकी हत्या करके ख़ुद सत्ता हथिया ली और हब्श के बादशाह को भी अपने इस काम पर राज़ी कर लिया।

सनआ वापस आकर अबरहा इंतिक़ाल कर गया। उसकी जगह उसका बेटा बकसोम, फिर दूसरा बेटा यसरूक़ उत्तराधिकारी हुआ। कहा जाता है कि ये दोनों यमन वालों पर ज़ुल्म ढाने और उन्हें रुसवा व ज़लील करने में अपने बाप से भी बढ़कर थे।

यह वही अबरहा है जिसने जनवरी 571 ई० में ख़ाना कबा को ढाने की कोशिश की और एक भारी फ़ौज के अलावा कुछ हाथियों को भी हमले के लिए साथ लाया, जिसकी वजह से यह 'फ़ौज' असहाबे फ़ीले (हाथियों वाली) के नाम से मशहूर हुई।

इधर हाथियों की इस घटना में हब्शियों की जो तबाही हुई, उससे फ़ायदा उठाते हुए यमन वालों ने फ़ारस सरकार से मदद मांगी और हब्शियों के ख़िलाफ़ विद्रोह करके सैफ़ ज़ी यज़न हिमयरी के बेटे मादीकर्ब के नेतृत्व में हब्शियों को देश से निकाल बाहर किया और एक स्वतंत्र जाति की हैसियत से मादीकर्ब को अपना बादशाह चुन लिया। यह सन् 575 ई० की घटना है।

आज़ादी के बाद मादीकर्ब ने कुछ हब्शियों को अपनी सेवा और शाही दरबार में ज़ीनत के लिए रोक लिया, लेकिन यह शौक़ महंगा पड़ा। इन हब्शियों ने एक दिन मादीकर्ब को धोखे से क़त्ल करके ज़ीयज़न के परिवार के शासन का चिराग़ हमेशा के लिए बुझा दिया। इधर किसरा ने इस स्थिति का फ़ायदा उठाते हुए सनआ पर एक फ़ारसी नस्ल का गवर्नर मुक़र्रर करके यमन को फ़ारस का एक प्रान्त बना लिया। इसके बाद यमन पर एक के बाद एक फ़ारसी गवर्नरों की नियुक्ति होती रही, यहां तक कि आख़िरी गवर्नर बाज़ान ने सन् 628 ई० में इस्लाम स्वीकार कर लिया और उसके साथ ही यमन फ़ारसी सत्ता से आज़ाद होकर इस्लाम की अमलदारी में आ गया।[1]

---

1. मौलाना सैयद सुलेमान नदवी रह० ने तारीख़े अर्ज़ुल क़ुरआन भाग 1 में पृ० 133 से अन्त तक विभिन्न ऐतिहासिक गवाहियों की रोशनी में सबा जाति के हालात सविस्तार लिखे हैं। मौलाना मौदूदी ने 'तफ़्हीमुल क़ुरआन' 4/195-198 में कुछ विवरण दिए हैं,

हियरा की बादशाही

इराक़ और उसके पास-पड़ोस के क्षेत्रों पर कोरोश कबीर (ख़ोरस या साइरस ज़ुलक़रनैन 557 ईसा पूर्व—529 ईसा पूर्व) के ज़माने ही से फ़ारस वालों का शासन चला आ रहा था। कोई न था जो उनके मुक़ाबले में आने की जुर्रात करता, यहां तक कि सन् 326 ई०पू० में सिकन्दर मक़्दूनी के दारा प्रथम को हराकर फ़ारसियों की ताक़त तोड़ दी, जिसके नतीजे में उनका देश टुकड़े-टुकड़े हो गया और अफ़रा-तफ़री शुरू हो गई। यह अशान्ति सन् २३० ई० तक जारी रही और इसी दौरान क़हतानी क़बीलों ने देश छोड़कर इराक़ के एक बहुत बड़े हरे-भरे सीमावर्ती क्षेत्र में रहना-सहना शुरू कर दिया, फिर अदनानी देश छोड़ने वालों का एक रेला आया और उन्होंने लड़-भिड़कर फ़रातिया द्वीप के एक भाग को अपने रहने की जगह बना ली।

इधर 226 ई० में अर्दशीर ने जब सासानी साम्राज्य की नींव डाली, तो धीरे-धीरे फ़ारसियों की ताक़त एक बार फिर पलट आई। अर्दशीर ने फ़ारसियों को जोड़ा और अपने देश की सीमा पर आबाद अरबों को आधीन बना लिया। इसी के नतीजे में क़ुज़ाआ ने शाम देश का रास्ता लिया, जबकि हियरा और अम्बार के अरब निवासियों ने टैक्स देना गवारा कर लिया।

अर्दशीर के युग में हियरा, बादियतुल इराक़ और द्वीप के रबीई और मुज़री क़बीलों पर जज़ीमतुल वज़ाह का शासन था। ऐसा मालूम होता है कि अर्दशीर ने महसूस कर लिया था कि अरब निवासियों पर सीधे-सीधे शासन करना और उन्हें सीमा पर लूट-मार से रोके रखना संभव नहीं, बल्कि उनको रोके रखने की केवल एक ही शक्ल है कि ख़ुद किसी ऐसे अरब को उनका शासक बना दिया जाए जिसे अपने कुंबे-क़बीले का समर्थन प्राप्त हो। इसका एक लाभ यह भी होगा कि ज़रूरत पड़ने पर रूमियों के ख़िलाफ़ उनसे मदद ली जा सकेगी और शाम के रूम समर्थक अरब शासकों के मुक़ाबले में इराक़ के इन अरब शासकों को खड़ा किया जा सकेगा।

हियरा के बादशाहों के पास फ़ारसी फ़ौज की एक यूनिट हमेशा रहा करती थी, जिससे ग्रामीण अरब विद्रोहियों को कुचलने का काम लिया जाता था।

सन् 268 ई० की सीमाओं में जज़ीमा का देहावसान हो गया और अम्र बिन

लेकिन ऐतिहासिक स्रोतों में सनों आदि के सम्बन्ध में बड़े मतभेद हैं, यहां तक कि कुछ शोधकर्त्ताओं ने इन विवरणों को 'पहलों की गाथा' कहा है।

अदी बिन नस्त्र लखमी (सन् 268-288) उसका उत्तराधिकारी हुआ। यह लख्म क़बीले का पहला शासक था और शापुर अर्दशीर का समकालीन था। उसके बाद क़बाज़ बिन फ़ीरोज़ (448 ई०-531 ई०) के युग तक हियरा पर लख्मियों का लगातार शासन रहा। क़बाज़ के युग में मुज़दक प्रकट हुआ जो नग्नता का झंडाबरदार था। क़बाज़ और उसकी बहुत-सी प्रजा ने मुज़दक का समर्थन किया, फिर क़बाज़ ने हियरा के बादशाह मुन्ज़िर बिन माइस्समाइ (521-554 ई०) को सन्देश भेजा कि तुम भी यही तरीक़ा अपना लो। मुन्ज़िर बड़ा स्वाभिमानी था, इन्कार कर बैठा। नतीजा यह हुआ कि क़बाज़ ने उसे पदच्युत करके उसकी जगह मुज़दकी दावत के एक पैरोकार हारिस बिन अम्र बिन हिज्र किन्दी को हियरा का शासन सौंप दिया।

क़बाज़ के बाद फ़ारस की बागडोर किसरा नौशेरवां के हाथ आई। उसे इस धर्म से सख़्त नफ़रत थी। उसने मुज़दक और उसके समर्थकों की एक बड़ी तायदाद की हत्या करा दी। मुन्ज़िर को दोबारा हियरा का शासक बना दिया और हारिस बिन अम्र को अपने यहां बुला भेजा, लेकिन वह बनू कल्ब के इलाक़े में भाग गया और वहीं अपनी ज़िंदगी गुज़ार दी।

मुन्ज़िर बिन माइस्समा के बाद नोमान बिन मुन्ज़िर (सन् 583 ई०-605 ई०) के युग तक हियरा का शासन उसी की नस्ल में चलता रहा, फिर ज़ैद बिन अदी इबादी ने किसरा से नोमान बिन मुंज़िर की झूठी शिकायत की। किसरा भड़क उठा और नोमान को अपने पास तलब किया। नोमान चुपके से बनू शैबान के सरदार हानी बिन मस्ऊद के पास पहुंचा और अपने घरवालों और माल व दौलत को उसकी अमानत में देकर किसरा के पास गया। किसरा ने उसे क़ैद कर लिया और क़ैद ही में उसका देहान्त हो गया।

इधर किसरा ने नोमान को क़ैद करने के बाद उसकी जगह इयास बिन क़बीसा ताई को हियरा का शासक बनाया और उसे हुक्म दिया कि हानी बिन मसऊद से नोमान की अमानत तलब करे, हानी स्वाभिमानी था, उसने सिर्फ़ इंकार ही नहीं किया, बल्कि लड़ाई का एलान भी कर दिया। फिर क्या था, इयास से अपने साथ किसरा की भारी सेना और मरज़बानों की जमाअत लेकर रवाना हुआ और ज़ीक़ार के मैदान में दोनों फ़रीक़ों में घमासान की लड़ाई हुई, जिसमें बनू शैबान को विजय मिली और फ़ारसियों को बुरी तरह पसपा होना पड़ा। यह पहला मौक़ा था जब अरब ने अजम पर विजय प्राप्त की थी। यह घटना नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म के थोड़े ही दिनों पहले या बाद की है। आपका जन्म हियरा पर इयास के शासन के आठवें महीने में हुआ था।

इयास के बाद किसरा ने हियरा पर एक फ़ारसी शासक नियुक्त किया, लेकिन 632 ई० में लख़्मियों की सत्ता फिर बहाल हुई और मुन्ज़िर बिन मारूर नामी इस क़बीले के एक व्यक्ति ने बागडोर संभाली, मगर अभी उसको सत्ता में आए आठ महीने ही हुए थे कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम की भारी सेना लेकर हियरा में दाख़िल हो गये।

शाम की बादशाही

जिस ज़माने में अरब क़बीलों की हिजरत (देश-परित्याग) ज़ोरों पर थी, क़बीला क़ुज़ाआ की कुछ शाखाएं शाम की सीमाओं में आकर आबाद हो गईं। उनका ताल्लुक़ बनी सुलैम बिन हलवान से था और उन्हीं में की एक शाखा बनू ज़ुजअम बिन सुलैम थी, जिसे ज़ुजाइमा के नाम से ख्याति मिली। क़ुज़ाआ की इस शाखा को रूमियों ने अरब मरुस्थल के बद्दुओं की लूटमार रोकने और फ़ारसियों के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करने के लिए अपना समर्थक बनाया और उसी के एक व्यक्ति के सिर पर शासन का मुकुट रख दिया। इसके बाद मुद्दतों उनका शासन रहा। उनका सबसे मशहूर बादशाह ज़ियाद बिन हयोला गुज़रा है। अन्दाज़ा किया गया है कि ज़जाइमा का शासनकाल पूरी दूसरी सदी ईसवी पर छाया रहा है, इसके बाद उस क्षेत्र में आले ग़स्सान का आगमन हुआ और ज़जाइमा का शासन जाता रहा।[1] आले ग़स्सान ने बनू ज़ुजअम को हरा कर उनके सारे क्षेत्र पर क़ब्ज़ा कर लिया। यह स्थिति देखकर रूमियों ने भी आले ग़स्सान को शाम के क्षेत्र के अरब निवासियों का बादशाह मान लिया। आले ग़स्सान की राजधानी दूमतुल जन्दल थी और रूमियों के एजेंट के रूप में शाम के क्षेत्र पर उनका शासन बराबर क़ायम रहा, यहां तक कि हज़रत उमर फ़ारूक़ के ख़िलाफ़त-काल में सन् 13 हि० में यरमूक की लड़ाई हुई और आले ग़स्सान का अन्तिम शासक जबला बिन ऐहम मुसलमान हो गया।[2] (यद्यपि उसका गर्व इस्लामी समानता को अधिक दिनों तक सहन न कर सका और वह विधर्मी हो गया।)

हिजाज़ की इमारत (सरदारी)

यह मालूम है कि मक्का में आबादी की शुरूआत हज़रत इस्माईल

---

1. मुहाज़राते ख़ज़री 1/34, तारीख़े अरज़ुल क़ुरआन 2/80-82
2. पैदाइश (बाइबिल) 25 : 17, तारीख़ तबरी 1/314, एक दूसरे कथनानुसार 130 साल में वफ़ात पाई, तबरी व याक़ूबी 1/222

अलैहिस्सलाम से हुई। आपने 137 साल की उम्र पाई और जब तक ज़िंदा रहे, मक्का के मुखिया और बैतुल्लाह के मुतवल्ली रहे। आपके बाद आपके दो सुपुत्र —नाबित, फिर क़ैदार या क़ैदार फिर नाबित—एक के बाद एक मक्का के मुखिया हुए। इनके बाद इनके नाना मज़ाज़ बिन अम्र जुरहमी ने सत्ता अपने हाथ में ले ली और इस तरह मक्का की सरदारी बनू जुरहम के पास चली गई और एक समय तक उन्हीं के पास रही। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम चूंकि (अपने पिता के साथ मिलकर) बैतुल्लाह की बुनियाद रखने वाले और उसे बनाने वाले थे, इसलिए उनकी सन्तान को एक श्रेष्ठ स्थान ज़रूर मिलता रहा, लेकिन सत्ता और अधिकार में उनका कोई हिस्सा न था।[1]

फिर दिन पर दिन और साल पर साल बीतते गए, लेकिन हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की सन्तान गुमनाम की गुमनाम ही रही, यहां तक कि बख़्त नस्र के प्रकट होने से कुछ पहले बनू जुरहुम की ताक़त कमज़ोर पड़ गई और मक्का के क्षितिज पर अदनान का राजनीतिक सितारा जगमगाना शुरू हुआ। इसका प्रमाण यह है कि बख़्त नस्र ने ज़ाते इर्क़ में अरबों से जो लड़ाई लड़ी थी, उसमें अरब फ़ौज का कमांडर जुरहुमी न था, बल्कि ख़ुद अदनान था।[2]

फिर बख़्त नस्र ने जब सन् 587 ई०पू० में दूसरा हमला किया तो बनू अदनान भागकर यमन चले गए। उस वक़्त बनू इसराईल के नबी हज़रत यरमियाह थे। इनके शिष्य बरख़या अदनान के बेटे माद को अपने साथ शाम देश ले गये और जब बख़्त नस्र का ज़ोर समाप्त हुआ और माद मक्का आए तो उन्हें क़बीला जुरहुम का केवल एक व्यक्ति जरशम बिन जलहमा मिला। माद ने उसकी लड़की मआना से शादी कर ली और उसी के पेट से नज़ार पैदा हुआ।[3]

इसके बाद मक्का में जुरहुम की हालत ख़राब होती गई। उन्हें तंगदस्ती ने आ घेरा। नतीजा यह हुआ कि उन्होंने बैतुल्लाह की ज़ियारत करने वालों पर ज़्यादतियां शुरू कर दीं और ख़ाना काबा का माल खाने से भी न झिझके।[4] इधर बनू अदनान भीतर ही भीतर उनकी इन हरकतों पर कुढ़ते और भड़कते रहे। इसीलिए जब बनू ख़ुज़ाआ ने मर्रज़्ज़हरान में पड़ाव किया और देखा कि बनू अदनान बनू जुरहुम से नफ़रत करते हैं, तो इसका फ़ायदा उठाते हुए एक अदनानी

1. इब्ने हिशाम 1/111-113। इब्ने हिशाम ने इस्माईल अलैहिस्सलाम की सन्तान में से सिर्फ़ नाबित के मुतवल्ली होने का उल्लेख किया है।
2. तारीख़ तबरी 1/559
3. तारीख़ तबरी 1/559, 561, 2/271, फ़त्हुल बारी 6/722
4. तारीख़ तबरी 2/284

क़बीले (बनू बिक्र बिन अब्दे मुनाफ़ बिन किनाना) को साथ लेकर बनू जुरहुम के विरुद्ध लड़ाई छेड़ दी और उन्हें मक्का से निकाल कर सत्ता पर ख़ुद क़ब्ज़ा कर लिया। यह घटना दूसरी सदी ईसवी के बीच की है।

बनू जुरहुम ने मक्का छोड़ते वक़्त ज़मज़म का कुंआ पाट दिया और उसमें कई ऐतिहासिक चीज़ें गाड़कर उसके चिह्न भी मिटा दिये। मुहम्मद बिन इसहाक़ का बयान है कि अम्र बिन हारिस बिन मुज़ाज़[1] जुरहुमी ने ख़ाना काबा के दोनों हिरन[2] और उसके कोने में लगा हुआ पत्थर—हजरे अस्वद—निकालकर ज़मज़म के कुएं में दफ़न कर दिया और अपने क़बीले बनू जुरहुम को साथ लेकर यमन चला गया। बनू जुरहुम को मक्का से देश-निकाला का और वहां के शासन के समाप्त होने का बड़ा दुख था। चुनांचे अम्र ने इसी सिलसिले में ये पद कहे—

'लगता है जहून से सनआ तक कोई जानने वाला था ही नहीं और न किसी क़िस्सा कहने वाले ने मक्का की रात-रात भर की मज्लिसों में कोई क़िस्सा सुनाया। क्यों नहीं? निश्चय ही हम उसके निवासी थे, लेकिन समय की चालों और टूटे हुए भाग्यों ने हमें उजाड़ फेंका।'[3]

हज़रत इस्माईल का युग लगभग दो हज़ार ईसा पूर्व का है। इस हिसाब से मक्का में क़बीला जुरहुम का अस्तित्व लगभग दो हज़ार एक सौ वर्ष तक रहा और उनका शासन लगभग दो हज़ार वर्ष चला।

बनू ख़ुज़ाआ ने मक्का पर क़ब्ज़ा करने के बाद बनू बिक्र को शामिल किए बिना अपना शासन चलाया, अलबत्ता तीन बड़े महत्वपूर्ण पद ऐसे थे जो मुज़री क़बीलों के हिस्से में आए।

1. हाजियों को अरफ़ात से मुज़दलफ़ा ले जाना और यौमुन्नज़र—13 ज़िलहिज्जा को जोकि हज के सिलसिले का अन्तिम दिन है—मिना से कूच करने का परवाना देना। यह पद इलयास बिन मुज़र के परिवार बनू ग़ौस बिन मुर्रा को प्राप्त था, जो सूफ़ा कहलाते थे। इस पद का स्पष्टीकरण इस तरह है कि

---

1. यह वह मुज़ाज़ जुरहुमी नहीं है जिसका उल्लेख हज़रत इस्माईल की घटना में हो चुका है।
2. मसऊदी ने लिखा है कि फ़ारस वाले पिछले युग में ख़ाना काबा के लिए हीरे-जवाहरात भेजते रहते थे। सासान बिन बाबक ने सोने के बने हुए दो हिरन, जवाहरात, तलवारें और बहुत-सा सोना भेजा था। अम्र ने यह सब ज़मज़म के कुएं में डाल दिया था। (मुरूजुज़ ज़हब 1/205)
3. इब्ने हिशाम 1/114-115

13 ज़िलहिज्जा को हाजी कंकड़ी न मार सकते थे, यहां तक कि पहले सूफ़ा का एक आदमी कंकड़ी मार लेता, फिर हाजी कंकड़ी मार कर फ़ारिग़ हो जाते और मिना से रवानगी का इरादा करते तो सूफ़ा के लोग मिना के एक मात्र रास्ते अक़बा के दोनों ओर घेरा डाल कर खड़े हो जाते और जब तक खुद न गुज़र लेते किसी को गुज़रने न देते। उनके गुज़र लेने के बाद बाक़ी लोगों के लिए रास्ता ख़ाली हो जाता। जब सूफ़ा ख़त्म हो गये तो यह पद बनू तमीम के एक परिवार बनू साद बिन ज़ैद मनात को मिल गया।

2. 10 ज़िलहिज्जा की सुबह को मुज़दलफ़ा से मिना की ओर रवानगी। यह पद बनू अदवान को प्राप्त था।

3. हराम महीनों को आगे-पीछे करना। यह पद बनू किनाना की एक शाखा बनू तमीम बिन अदी को प्राप्त था।[1]

मक्का पर बनू ख़ुज़ाआ का आधिपत्य कोई तीन सौ वर्ष तक क़ायम रहा।[2] यही समय था जब अदनानी क़बीले मक्का और हिजाज़ से निकल कर नज्द, इराक़ के आस-पास और बहरैन वग़ैरह में फैले और मक्का के पास-पड़ोस में सिर्फ़ क़ुरैश की कुछ शाखाएं बाक़ी रहीं, जो ख़ानाबदोश थीं, उनकी अलग-अलग टोलियां थीं और बनू किनाना में उनके कुछ बिखरे घराने थे, मगर मक्का की हुकूमत और बैतुल्लाह के मुतवल्ली होने में उनका कोई हिस्सा न था, यहां तक कि क़ुसई बिन किलाब प्रकट हुआ।[3]

क़ुसई के बारे में बताया जाता है कि वह अभी गोद ही में था कि उसके पिता का देहांत हो गया। इसके बाद उसकी मां ने बनू उज़रा के एक व्यक्ति रबीआ बिन हराम से शादी कर ली। यह क़बीला चूंकि शाम देश के पास-पड़ोस में रहता था, इसलिए क़ुसई की मां वहीं चली गई और वह क़ुसई को भी अपने साथ लेती गई। जब क़ुसई जवान हुआ, तो मक्का वापस आया। उस वक़्त मक्का का सरदार हुलैल बिन हब्शीया ख़ुज़ाई था। क़ुसई ने उसके पास उसकी बेटी हबी से विवाह का संदेशा दिया। हुलैल ने मंज़ूर कर लिया और शादी कर दी।[4] इसके बाद जब हुलैल का देहान्त हुआ, तो मक्का और बैतुल्लाह के मुतवल्ली बनने के लिए ख़ुज़ाआ और क़ुरैश के बीच लड़ाई छिड़ गई और उसके

---

1. इब्ने हिशाम, 1/44, 119-122
2. याक़ूतः मादा मक्का, फ़तहुल बारी 6/33, मसऊदी की मुरव्वजुज़्ज़हब, 2/58
3. मुहाज़रात ख़ज़्री 1/35, इब्ने हिशाम 1/117
4. इब्ने हिशाम 1/117-118

नतीजे में मक्का और बैतुल्लाह पर क़ुसई का आधिपत्य स्थापित हो गया।

लड़ाई की वजह क्या थी? इस बारे में तीन बयान मिलते हैं—

एक यह कि जब क़ुसई की औलाद खूब फल-फूल गई, उसके पास धन-धान्य का बाहुल्य हो गया और उसकी प्रतिष्ठा भी बढ़ गई और उधर हुलैल का देहान्त हो गया, तो क़ुसई ने महसूस किया कि अब बनू ख़ुज़ाआ और बूनबिक्र के बजाए मैं काबा का मुतवल्ली बनने और मक्का पर शासन करने का कहीं ज़्यादा अधिकारी हूं, उसे यह एहसास भी था कि क़ुरैश ख़ालिस इस्माईली अरब हैं और बाक़ी आले इस्माईल के सरदार भी हैं, (इसलिए सरदारी के हक़दार वही हैं।) चुनांचे उसने क़ुरैश और बनू ख़ुज़ाआ के कुछ लोगों से बातचीत की कि क्यों न बनू ख़ुज़ाआ और बूनबिक्र को मक्का से निकाल बाहर किया जाए। इन लोगों ने उसकी राय से सहमति व्यक्त की।[1]

दूसरा बयान यह है कि—ख़ुज़ाआ के कथनानुसार—ख़ुद हुलैल ने क़ुसई को वसीयत की थी कि वह काबा की देखभाल करेगा और मक्का की बागडोर संभालेगा।[2]

तीसरा बयान यह है कि हुलैल ने अपनी बेटी हुबी को बैतुल्लाह का मुतवल्ली बनाया था और अबू ग़बशान[3] ख़ुज़ाई को उसका वकील बनाया था। चुनांचे हुबी के नायब की हैसियत से वही ख़ाना काबा की कुंजियों का मालिक था। जब हुलैल का देहान्त हो गया, तो क़ुसई ने अबू ग़बशान से एक मशक शराब के बदले काबा का मुतवल्ली होना ख़रीद लिया था, लेकिन ख़ुज़ाआ ने यह ख़रीदना-बेचना मंज़ूर न किया और क़ुसई को बैतुल्लाह से रोकना चाहा। इस पर क़ुसई ने बनू ख़ुज़ाआ को मक्का से निकालने के लिए क़ुरैश और बनू किनाना को जमा किया और वे क़ुसई की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए जमा हो गए।[4]

बहरहाल कारण जो भी हो, घटनाओं का क्रम इस तरह है कि जब हुलैल का देहान्त हो गया और सूफ़ा ने वही करना चाहा, जो वे हमेशा करते आए थे, तो क़ुसई ने क़ुरैश और किनाना के लोगों को साथ लिया और अक़बा के नज़दीक, जहां वे जमा थे, उनसे आकर कहा कि तुमसे ज़्यादा हम इस पद के हक़दार हैं।

---

1. सीरते इब्ने हिशाम 1/117-118, तबरी 2/255, 256
2. सीरत इब्ने हिशाम, 1/118, अर-रौज़ुल उन्फ़ 1/142,
3. इसका नाम मुहर्रिश या सुलैम बिन अम्र था। फ़त्हुल बारी 6/633, अर-रौज़ुल उन्फ़ 1/142,
4. तारीख़ याक़ूबी 1/239, फ़त्हुल बारी 6/634, मसऊदी 2/58,

इस पर सूफ़ा ने लड़ाई छेड़ दी, पर क़ुसई ने उन्हें परास्त करके यह पद छीन लिया। यही मौक़ा था जब ख़ुज़ाआ और बनू बिक्र ने क़ुसई से अपना दामन खींचना शुरू कर दिया। इस पर क़ुसई ने उन्हें भी ललकारा, फिर क्या था। दोनों फ़रीक़ों में घमासान की लड़ाई शुरू हो गई और दोनों ओर के बहुत-से आदमी मारे गए। इसके बाद समझौते की आवाज़ें उठने लगीं और बनूबिक्र के एक व्यक्ति यामर बिन औफ़ को अध्यक्ष बनाया गया। यामर ने फ़ैसला किया कि ख़ुज़ाआ के बाजए क़ुसई ख़ाना काबा का मुतवल्ली बनने और मक्का की सरदारी अपने हाथ में रखने का ज़्यादा हक़दार है, साथ ही क़ुसई ने जितना ख़ून बहाया है, सब बेकार समझ कर पांव तले रौंद रहा हूं। अलबत्ता ख़ुज़ाआ और बनूबिक्र ने जिन लोगों को क़त्ल किया है, उनकी दियत (जुर्माना) अदा करें और ख़ाना काबा को बेरोक-टोक क़ुसई के हवाले कर दें। इसी फ़ैसले की वजह से यामर की उपाधि शद्दाख़ पड़ गई।[1] शद्दाख़ का अर्थ है पांव तले रौंदने वाला।

इस फ़ैसले के नतीजे में क़ुसई और क़ुरैश को मक्का पर पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त हो गया और क़ुसई बैतुल्लाह का धार्मिक नेता बन गया, जिसकी ज़ियारत के लिए अरब के कोने-कोने से आने वालों का तांता बंधा होता था। मक्का पर क़ुसई के आधिपत्य की यह घटना पांचवीं सदी ईसवी के मध्य अर्थात् 440 ई० की है।[2]

क़ुसई ने मक्का की व्यवस्था इस तरह की कि क़ुरैश को मक्का के पास-पड़ोस से बुलाकर पूरा शहर उन पर बांट दिया और हर परिवार के रहने-सहने का ठिकाना तै कर दिया, अलबत्ता महीने आगे-पीछे करने वालों को, साथ ही आले सफ़वान बनू अदवान और बनू मुर्रा बिन औफ़ को उनके पदों पर बाक़ी रखा, क्योंकि क़ुसई समझता था कि यह भी दीन है, जिसमें रद्दोबदल करना सही नहीं।[3]

क़ुसई का एक कारनामा यह भी है कि उसने काबा के हरम के उत्तर में दारुन्नदवः बनवाया। (उसका द्वार मस्जिद की ओर था) दारुन्नदवः असल में क़ुरैश की पार्लियामेंट थी, जहां तमाम बड़े-बड़े और अहम मामलों के फ़ैसले होते थे। क़ुरैश पर दारुन्नदवः के बड़े उपकार हैं, क्योंकि यह उनके एक होने की गारंटी देता था और यहीं उनकी उलझी हुई समस्याएं बड़े अच्छे ढंग से तै होती थीं।[4]

क़ुसई की सरदारी सबको मान्य थी। नीचे लिखी ज़िम्मेदारियां इसी का पता

---

1. इब्ने हिशाम 1/123, 124, तारीख़ तबरी 3/255-258
2. क़ल्बे जज़ीरतुल अरब, पृ० 232, फ़त्हुल बारी 6/633, मसऊदी 2/58,
3. इब्ने हिशाम 1/124-125
4. वही, 1/125, मुहाज़राते ख़ज़री 1/36, अख़बारुल किराम पृ० 152

देती हैं—

1. दारुन्नदवः की अध्यक्षता—जहां बड़े-बड़े मामलों के बारे में मश्विरे होते थे और जहां लोग अपनी लड़कियों की शादियां भी करते थे।

2. लिवा—यानी लड़ाई का झंडा क़ुसई ही के हाथों बांधा जाता था।

3. ख़ाना काबा की देखभाल—इसका अर्थ यह है कि ख़ाना काबा का द्वार क़ुसई ही खोलता था और वही ख़ाना काबा की सेवा करता था और उसकी कुंजियां उसी के हाथ में रहती थीं।

4. सक़ाया (पानी पिलाना) —इसकी शक्ल यह थी कि कुछ हौज़ में हाजियों के लिए पानी भर दिया जाता था और उसमें कुछ खजूर और किशमिश डाल कर उसे मीठा बना दिया जाता था। जब हाजी लोग मक्का आते थे, तो उसे पीते थे।

5. रिफ़ादा (हाजियों का आतिथ्य) —इसका अर्थ यह है कि हाजियों के लिए आतिथ्य के रूप में खाना तैयार किया जाता था। इस उद्देश्य के लिए क़ुसई ने क़ुरैश पर एक ख़ास रक़म तै कर रखी थी जो हज के मौसम में क़ुसई के पास जमा की जाती थी। क़ुसई इस रक़म से हाजियों के लिए खाना तैयार कराता था। जो लोग तंगहाल होते या जिनके पास धन-दौलत न होता, वे यहीं खाना खाते थे।[1]

ये सारे पद क़ुसई को प्राप्त थे। क़ुसई का पहला बेटा अब्दुद्दार था, पर उसके बजाए दूसरा बेटा अब्दे मुनाफ़ क़ुसई के जीवन ही में नेतृत्व के स्थान पर पहुंच गया था, इसलिए क़ुसई ने अब्दुद्दार से कहा कि ये लोग यद्यपि नेतृत्व में तुम पर बाज़ी ले जा चुके हैं, पर मैं तुम्हें इनके बराबर करके रहूंगा, चुनांचे क़ुसई ने अपने सारे पद और ज़िम्मेदारियों की वसीयत अब्दुद्दार के लिए कर दी अर्थात् दारुन्नदवः की अध्यक्षता, ख़ाना काबा की निगरानी और देखभाल, झंडा बरदारी, पानी पिलाने का काम और हाजियों का सत्कार सब कुछ अब्दुद्दार को दे दिया। चूंकि किसी काम में क़ुसई का विरोध नहीं किया जाता था और न उसकी कोई बात रद्द की जाती थी, बल्कि उसका हर क़दम, उसके जीवन में भी और उसके मरने के बाद भी, पालन योग्य समझा जाता था, इसलिए उसके मरने के बाद उसके बेटों ने किसी विवाद के बिना उसकी वसीयत बाक़ी रखी। लेकिन जब अब्दे मुनाफ़ का देहान्त हो गया, तो उसके बेटों ने इन पदो के सिलसिले में अपने चचेरे भाइयों अर्थात् अब्दुद्दार की सन्तान से झगड़ना शुरू किया, इसके नतीजे में क़ुरैश दो गिरोह में बंट गये और क़रीब था कि दोनों में लड़ाई हो जाती, मगर फिर उन्होंने समझौते की आवाज़ उठाई

---

1. इब्ने हिशाम 1/130

और इन पदों को आपस में बांट लिया, चुनांचे हाजियों को पानी पिलाने और उनके आतिथ्य के काम बनू अब्दे मुनाफ़ को दिए गए और दारुन्नदवः की अध्यक्षता, झंडा-बरदारी और ख़ाना काबा की निगरानी और देखभाल बनू अब्दुद्दार के हाथ में रही। फिर बनू अब्द मुनाफ़ ने अपने प्राप्त पदों के लिए क़ुरआ डाला, तो क़ुरआ हाशिम बिन अब्दे मुनाफ़ के नाम निकला, इसलिए हाशिम ने ही अपनी ज़िंदगी भर पानी पिलाने और हाजियों के आतिथ्य की व्यवस्था की, अलबत्ता जब हाशिम का देहान्त हो गया तो उनके भाई मुत्तलिब ने गद्दी संभाली, पर मुत्तलिब के बाद उनके भतीजे अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम ने—जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा थे—यह पद संभाल लिया और उनके बाद उनकी सन्तान उनकी जानशीं हुई, यहां तक कि जब इस्लाम का युग आया तो हज़रत अब्बास बिन मुत्तलिब इस पद पर आसीन थे।[1]

इनके अलावा कुछ और पद भी थे, जिन्हें क़ुरैश ने आपस में बांट रखा था। इन पदों और इन दायित्वों द्वारा क़ुरैश ने एक छोटा-सा राज्य—बल्कि राज्य प्रशासन—बना रखा था, जिसकी सरकारी संस्थाएं और समितियां कुछ इस ढंग की थीं, जैसे आजकल संसदीय संस्थाएं और समितियां हुआ करती हैं। इन पदों का विवरण नीचे दिया जा रहा है—

1. **ईसार,** यानी फ़ालगिरी, भाग्य का पता लगाने के लिए बुतों के पास जो तीर रखे रहते थे, उनकी देखभाल और निगरानी। यह पद बनू जम्ह को प्राप्त था।

2. **अर्थ,** यानी बुतों का सान्निध्य प्राप्त करने के लिए जो चढ़ावे और नज़राने चढ़ाए जाते थे, उनका प्रबन्ध करना, साथ ही झगड़ों और मुक़दमों का फ़ैसला करना। यह काम बनू सह्म को सौंपा गया था।

3. **शूरा,** यानी सलाहकार समिति, यह पद बनू असद को प्राप्त था।

4. **अशनाक़** यानी दियत और जुर्मानों की व्यवस्था, यह पद बनू तैम को मिला हुआ था।

5. **उक़ाब** यानी क़ौमी झंडाबरदारी, यह बनू उमैया का काम था।

6. **क़ुबा** यानी फ़ौज की व्यवस्था और घुड़सवारों का नेतृत्व। यह बनू मख़्ज़ूम के हिस्से में आया था।

7. **सफ़ारत** यानी राजदूतत्व, यह बनू अदी का पद था।[2]

---

1. इब्ने हिशाम 1/129-132, 137, 142, 178, 179
2. तारीख़ अर्ज़ुल क़ुरआन 2/104, 105, 106, लेकिन सही यह है कि झंडा बरदारी का हक़ बनू अब्दुद्दार का था, बनू उमैया को प्रधान सेनापति होने का अधिकार प्राप्त था।

शेष अरब सरदारियां

हम पीछे क़हतानी और अदनानी क़बीलों के देश-परित्याग का उल्लेख कर चुके हैं और बतला चुके हैं कि पूरा अरब देश इन क़बीलों में बंट गया था। इसके बाद इनकी सरदारियों और सत्ता का स्वरूप कुछ इस तरह बन गया था कि—

जो क़बीले हियरा के आस-पास आबाद थे, उन्हें हियरा राज्य के आधीन माना गया और जो क़बीले बादियतुश-शाम में (शाम के आस-पास) आबाद हो गए थे, उन्हें ग़स्सानी शासकों के आधीन मान लिया गया, पर पराधीनता नाम मात्र थी, व्यवहार में न थी। इन दो जगहों को छोड़कर अरब के भीतरी भाग में क़बीले हर पहलू से स्वतंत्र थे।

इन क़बीलों में सरदारी व्यवस्था चल रही थी। क़बीले ख़ुद अपना सरदार नियुक्त करते थे और इन सरदारों के लिए उनका क़बीला एक छोटा-सा राज्य हुआ करता था। राजनीतिक अस्तित्व और सुरक्षा का आधार, क़बीलेवार इकाई पर आधारित पक्षपात और अपने भू-भाग की रक्षा-सुरक्षा के संयुक्त हित पर स्थापित था।

क़बीलेवार सरदारों का स्थान अपनी क़ौम में बादशाहों जैसा था। क़बीला लड़ाई और संधि में बहरहाल अपने सरदार के फ़ैसले के आधीन होता था और किसी हाल में उससे अलग-थलग नहीं रह सकता था। सरदार अपने क़बीले का तानाशाह हुआ करता था, यहां तक कि कुछ सरदारों का हाल यह था कि अगर वे बिगड़ जाते, तो हज़ारों तलवारें यह पूछे बिना नंगी चमकने लगतीं कि सरदार के गुस्से की वजह क्या है? फिर भी चूंकि एक ही कुंबे के चचेरे भाइयों में सरदारी के लिए संघर्ष भी हुआ करता था, इसलिए उसका तक़ाज़ा था कि सरदार अपनी क़बीलेवार जनता के प्रति उदारता दिखाए, ख़ूब माल ख़र्च करे, सत्कार करे, धैर्य व सहनशीलता से काम ले, वीरता का व्यावहारिक रूप प्रदर्शित करे और सम्मान की रक्षा करे, ताकि लोगों की नज़र में आम तौर से और कवियों की नज़र में ख़ास तौर से गुणों और विशेषताओं का योग बन जाए, (क्योंकि उस युग में कवि क़बीले का मुख हुआ करते थे) और इस तरह सरदार अपने लोगों में सर्वश्रेष्ठ बन जाए।

सरदारों के कुछ विशेष और प्रमुख अधिकार भी हुआ करते थे, जिनका एक कवि ने इस तरह उल्लेख किया है—

लकल मिरबाअु फ़ीना वस्सफ़ाया
व हुक्मु-क वन्नशीततु वल फ़ुज़ूलू

'हमारे बीच तुम्हारे लिए ग़नीमत के (लड़ाइयों में लूटे गए) माल का चौथाई है और चुनींदा माल है और वह माल है जिसका तुम फ़ैसला कर दो और जो राह चलते हाथ आ जाए और जो बंटने से बच रहे।'

मिरबाअ : ग़नीमत के माल का चौथाई हिस्सा,

सफ़ाया : वह माल, जिसे बंटने से पहले ही सरदार अपने लिए चुन ले,

नशीता : वह माल जो असल क़ौम तक पहुंचने से पहले रास्ते ही में सरदार के हाथ लग जाए,

फ़ुज़ूल : वह माल, जो बंटने के बाद बचा रहे और लड़ने वालों की संख्या में बराबर न बंटे, जैसे बंटने से बचे हुए ऊंट-घोड़े आदि ये तमाम प्रकार के माल क़बीला के सरदार का हक़ हुआ करते थे।

राजनीतिक स्थिति

अरब प्रायद्वीप की सरकारों और शासकों का उल्लेख हो चुका, अनुचित न होगा कि अब उनकी कुछ राजनीतिक परिस्थितियों का भी उल्लेख कर दिया जाए।

अरब प्रायद्वीप के वे तीनों सीमावर्ती क्षेत्र जो विदेशी राज्यों के पड़ोस में पड़ते थे, उनकी राजनीतिक स्थिति अशान्ति, बिखराव और पतन और गिरावट का शिकार थी। इंसान स्वामी और दास या शासक और शासित दो वर्गों में बंटा हुआ था। सारे लाभ—प्रमुखों, मुख्य रूप से विदेशी प्रमुखों को प्राप्त थे और सारा बोझ दासों के सर पर था। इसे और अधिक स्पष्ट शब्दों में यो कहा जा सकता है कि प्रजा वास्तव में एक खेती थी जो सरकार के लिए टैक्स और आमदनी जुटाती थी और सरकारें उसे अपने मज़े, भोग-विलास, सुख-वैभव और दमन-चक्र के लिए इस्तेमाल करती थीं। जनता अंधेरों में जीने के लिए हाथ पैर मारती रहती थी और उन पर हर ओर से अन्याय और अत्याचार की वर्षा होती रहती थी, पर वे शिकायत का एक शब्द भी अपने मुख पर नहीं ला सकते थे, बल्कि ज़रूरी था कि भांति-भांति का अपमान, अनादर और अत्याचार सहन करें और ज़ुबान बन्द रखें, क्योंकि सरकार दमनकारी थी और मानव-अधिकार नाम की किसी चीज़ का कोई अस्तित्व न था।

इन क्षेत्रों के पड़ोस में रहने वाले क़बीले अनिश्चितता के शिकार थे। उन्हें स्वार्थ और इच्छाएं इधर से उधर फेंकती रहती थीं, कभी वे इराक़ियों के समर्थक बन जाते थे और कभी शामियों के स्वर में स्वर मिलाते थे।

जो क़बीले अरब के भीतर आबाद थे, उनके भी जोड़ ढीले और बिखरे हुए थे। हर ओर क़बीलागत झगड़ों, नस्ली बिगाड़ और धार्मिक मतभेदों का बाज़ार

गर्म था, जिसमें हर क़बीले के लोग हर हाल में अपने-अपने क़बीलों का साथ देते थे, चाहे वह सही हो या ग़लत। एक कवि इसी भावना को इस तरह व्यक्त करता है—

'मैं भी तो क़बीला गज़ीया ही का एक व्यक्ति हूं। अगर वह ग़लत राह पर चलेगा, तो मैं भी ग़लत राह पर चलूंगा और अगर वह सही राह पर चलेगा, तो मैं भी सही राह पर चलूंगा।'

अरब के भीतरी भाग में कोई बादशाह न था, जो उनकी आवाज़ को ताक़त पहुंचाता, और न कोई रुजू होने की जगह थी जिसकी ओर परेशानियों में रुजू किया जाता और जिस पर आड़े वक़्तों में भरोसा किया जाता।

हां, हिजाज़ की सरकार को मान-सम्मान की दृष्टि से यक़ीनन देखा जाता था और उसे धर्म-केन्द्र का रखवाला भी माना जाता था। यह सरकार वास्तव में एक तरह से सांसारिक नेतृत्व और धार्मिक अगुवाई का योग थी। इसे अरबों पर धार्मिक नेतृत्व के नाम से प्रभुत्व प्राप्त था और हरम और हरम के आस-पास के क्षेत्रों में उसका विधिवत शासन था। वहीं वह बैतुल्लाह के दर्शकों की ज़रूरतों की व्यवस्था और इब्राहीमी शरीअत के आदेशों को लागू करती थी और उसके पास संसदीय संस्थाओं जैसी संस्थाएं और समितियां भी थीं, लेकिन यह शासन इतना कमज़ोर था कि अरब के भीतरी भाग की ज़िम्मेदारियों का बोझ उठाने की ताक़त न रखती थी, जैसा कि हब्शियों के हमले के मौक़े पर ज़ाहिर हुआ।

अरब विचार-धाराएं और धर्म

अरब के सामान्य निवासी हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के धर्म-प्रचार व प्रसार के नतीजे में दीने इब्राहीमी की पैरवी करने वाले थे, इसलिए सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करते थे और तौहीद (एकेश्वरवाद) पर चलते थे, लेकिन समय बीतने के साथ-साथ उन्होंने अल्लाह के आदेशों-निर्देशों का एक हिस्सा भुला दिया, फिर भी उनके भीतर तौहीद और कुछ दीने इब्राहीमी के तौर-तरीक़े बाक़ी रहे, यहां तक कि बनू ख़ुज़ाआ का सरदार अम्र बिन लुह्य प्रकट हुआ। उसका लालन-पालन धार्मिक गुणों, सदक़ा व ख़ैरात और धार्मिक मामलों से गहरी दिलचस्पी के साथ हुआ था, इसलिए लोगों ने उसे मुहब्बत की नज़र से देखा और उसे महान विद्वान और अल्लाह वाला समझकर उसका अनुपालन किया। फिर उस व्यक्ति ने शाम देश का सफ़र किया, देखा तो वहां मूर्तियों की पूजा की जा रही थी। उसने समझा कि यह भी बेहतर और सही है, इसलिए कि शाम देश पैग़म्बरों की धरती और आसमानी किताबों के उतरने की जगह था, चुनांचे वह अपने साथ हुबल बुत भी ले आया और उसे ख़ाना-काबा में गाड़ दिया और मक्का वालों को अल्लाह के साथ शिर्क की दावत दी। मक्का वालों ने मान लिया। इसके बाद बहुत जल्द हिजाज़ के निवासी भी मक्का वालों के पद-चिह्नों पर चल पड़े, क्योंकि वे बैतुल्लाह के वाली (देख-रेख करने वाले) और हरम के निवासी थे।[1]

इस तरह अरब में बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) का रिवाज चल पड़ा।

हुबल लाल अक़ीक़ (पत्थर) से तराशा गया था। मानव-रूप में यह मूर्ति थी। दाहिना हाथ टूटा हुआ था। क़ुरैश को वह इसी हालत में मिला था। उन्होंने उसकी जगह सोने का हाथ लगा दिया। यह मुश्रिकों का पहला बुत था और इनके नज़दीक सबसे महान और पावन मूर्ति थी।[2]

हुबल के अलावा अरब के सबसे पुराने बुतों में से मनात है। यह हुज़ैल और ख़ुज़ाआ का बुत था और लाल सागर के तट पर क़ुदैद के निकट मुसल्लल में गड़ा हुआ था। मुसल्लल एक पहाड़ी घाटी है, जिससे क़ुदीद की तरफ़ उतरते हैं।[3]

इसके बाद तायफ़ में लात नामक बुत वजूद में आया। यह सक़ीफ़ का बुत

---

1. मुख़्तसर सीरतुर्रसूल, लेखक शेख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब नज्दी रह०, पृ० 12
2. इब्ने कलबी : किताबुल अस्नाम, पृ० 28,
3. सहीह बुख़ारी 1/222, फ़त्हुल बारी 3/499, 8/613,

था और वर्तमान मस्जिद ताइफ़ के बाएं मनारे की जगह पर था।[1] फिर नख़्ला की घाटी में ज़ाते इर्क़ से ऊपर उज़्ज़ा गाड़ा गया। यह क़ुरैश, बनू कनाना और दूसरे बहुत से क़बीलों का बुत था।[2] और ये तीनों अरब के सबसे बड़े बुत थे। इसके बाद हिजाज़ के हर क्षेत्र में शिर्क (बहुदेववाद) की अधिकता और बुतों की भरमार हो गई। कहा जाता है कि एक जिन्न अम्र बिन लुह्य के क़ब्ज़े में था। उसने बताया कि नूह की क़ौम के बुत—अर्थात वुद्द, सुआअ, यग़ूस, यऊक़ और नस्र जद्दा में दबे पड़े हैं। इस सूचना पर अम्र बिन लुह्य जद्दा गया और इन बुतों को खोद निकाला, फिर उन्हें तहामा लाया और जब हज का ज़माना आया, तो उन्हें विभिन्न क़बीलों के हवाले किया। ये क़बीले इन बुतों को अपने-अपने क्षेत्रों में ले गए। चुनांचे वुद्द को बनू कल्ब ले गए और उसे इराक़ के क़रीब शाम की धरती पर दौमतुल जन्दल के इलाक़े में जर्श नामी जगह पर लगा दिया। सुवा को हुज़ैल बिन मुदरका ले गए और उसे हिजाज़ की धरती पर मक्का के क़रीब, तटवर्ती क्षेत्र में रबात नामी जगह पर गाड़ दिया। यग़ूस को बनू मुराद का एक क़बीला बनू ग़तीफ़ ले गया और सबा के इलाक़े में जर्फ़ नामी जगह पर सेट किया। यऊक़ को बनू हमदान ले गए और यमन की एक बस्ती ख़ैवान में लगाया। ख़ैवान मूलतः क़बीला हमदान की एक शाखा है। नस्र को हिमयर क़बीले की एक शाखा आले ज़िलकिलाअ ले गए और हिमयर के इलाक़े में सेट किया।[3]

फिर अरब ने इन मूर्तियों के थान बनाए, जिनका काबे की तरह आदर करते थे। उन्होंने इन थानों के लिए पुजारी और सेवक भी नियुक्त कर रखे थे और काबे की तरह इन थानों के लिए भी चढ़ावे और भेंट चढ़ाए जाते थे, अलबत्ता काबे को इन थानों में श्रेष्ठ मानते थे।[4]

फिर दूसरे क़बीलों ने भी यही रीति अपनाई और अपने लिए मूर्तियां और थान बनाए। चुनांचे क़बीला दौस, ख़सअम और बुजैला ने मक्का और यमन के दर्मियान यमन की अपनी धरती में तबाला नामी जगह पर ज़ुलख़लसा नाम का बुत और बुतख़ाना बनाया। बनू तै और उनके अड़ोस-पड़ोस के लोगों ने अजमा और सलमा बनू तै की दो पहाड़ियों के बीच फ़ल्स नाम के दो बुत गाड़ दिए।

---

1. इब्ने कल्बीः किताबुल अस्नाम, पृ० 16
2. वही, पृ० 18, 19, फ़त्हुल बारी 8/668 तफ़्सीर क़ुर्तबी 17/99
3. सहीह बुख़ारी, हदीस न० 4920, (फ़त्हुल बारी 6/549, 8/661, मुहम्मद बिन हबीब, पृ० 327, 328, किताबुल अस्नाम, पृ० 9-11, 56-58,
4. इब्ने हिशाम 1/83,

यमन और हिमयर वालों ने सनआ में रियाम नाम की मूर्तियां और थान बनाए। बनू तमीम की शाखा बनू रबीआ बिन काब ने रज़ा नामी बुतख़ाना बनाया और बक्र व तग़लब और अयाद ने सनदाद में काबात बनाया।[1]

क़बीला दौस का एक बुत ज़ुलकफ़्फ़ैन कहलाता था, बक्र, मालिक और मलकान अबनाए कनाना के क़बीलों का एक बुत साद कहलाता था। बनू अज़रा का एक बुत शम्स कहलाता था[2], और ख़ौलान के एक बुत का नाम अमयानस था।[3]

तात्पर्य यह कि इस तरह अरब प्रायद्वीप में हर तरफ़ बुत और बुतख़ाने फैल गए, यहां तक कि हर-हर क़बीले, फिर हर-हर घर में एक बुत हो गया। मस्जिदे हराम भी बुतों से भर दी गई। चुनांचे जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का पर विजय प्राप्त की तो बैतुल्लाह के गिर्द ३६० बुत थे। आप उन्हें एक छड़ी से ठोकर मारते जा रहे थे और वे गिरते जा रहे थे। फिर आपने हुक्म दिया और उन सारे बुतों को मस्जिदे हराम से बाहर निकाल कर जला दिया गया। इनके अलावा ख़ाना-काबा में भी बुत और तस्वीरें थीं। एक बुत हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की शक्ल पर और एक बुत हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की शक्ल पर बना हुआ था और दोनों के हाथ में फ़ाल निकालने के तीर थे। मक्का-विजय के दिन ये बुत भी तोड़ दिए गए और ये तस्वीरें मिटा दी गईं।[4]

लोगों की गुमराही इसी पर बस न थी, बल्कि अबू रजा अतारदी रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि हम लोग पत्थर पूजते थे। जब पहले से अच्छा कोई पत्थर मिल जाता, तो पहला पत्थर फेंक कर उसे ले लेते। पत्थर न मिलता तो मिट्टी की एक छोटी सी ढेरी बनाते, उस पर बकरी लाकर दूहते, फिर उसका तवाफ़ करते।[5]

सार यह कि शिर्क और बुतपरस्ती अज्ञानियों के लिए दीन (धर्म) का सबसे बड़ा प्रतीक बन गई थी जिन्हें इस पर गर्व था कि वे हज़रत इब्राहीम के दीन पर हैं।

बाक़ी रही यह बात कि उन्हें शिर्क और बुतपरस्ती का विचार कैसे हुआ तो इसकी बुनियाद यह थी कि जब उन्होंने देखा कि फ़रिश्ते, पैग़म्बर, नबी, वली,

---

1. इब्ने हिशाम, 1/78, 89, तफ़्सीर इब्ने कसीर, सूरः नूह
2. तारीख़ याक़ूबी 1/255
3. इब्ने हिशाम 1/80
4. सहीह बुख़ारी, अहादीस नम्बर, 1610, 2478, 335, 3352, 4287, 4288, 4720
5. सहीह बुख़ारी, अहादीस नम्बर 4376

परहेज़गार और भले लोग अच्छे काम अंजाम देने वाले अल्लाह के सबसे क़रीबी बन्दे हैं, अल्लाह के नज़दीक उनका बड़ा दर्जा है, उनके हाथ पर मोजज़े और करामतें ज़ाहिर होती हैं, तो उन्होंने यह समझा कि अल्लाह ने अपने इन नेक बन्दों को कुछ ऐसे कामों में क़ुदरत और तसर्रुफ़ का अख़्तियार दे दिया है जो अल्लाह के साथ ख़ास हैं और ये लोग अपने इस तसर्रुफ़ की वजह से और उनके नज़दीक उनका जो मान-सम्मान है, उसकी वजह से इसके अधिकारी हैं कि अल्लाह और उसके आम बन्दों के दर्मियान वसीला और वास्ता हों, इसलिए उचित नहीं कि कोई आदमी अपनी ज़रूरत अल्लाह के हुज़ूर इन लोगों के वसीले के बग़ैर पेश करे, क्योंकि ये लोग अल्लाह के नज़दीक उसकी सिफ़ारिश करेंगे। और अल्लाह जाह व मर्तबे की वजह से उनकी सिफ़ारिश रद्द नहीं करेगा। इसी तरह मुनासिब नहीं कि कोई आदमी अल्लाह की इबादत उन लोगों के वसीले के बग़ैर करे, क्योंकि ये लोग अपने मर्तबे की बदौलत उसे अल्लाह के क़रीब कर देंगे।

जब लोगों में इस विचार ने जड़ पकड़ लिया और यह विश्वास मन में बैठ गया तो उन्होंने इन फ़रिश्तों, पैग़म्बरों और औलिया वग़ैरह को अपना वली बना लिया और उन्हें अपने और अल्लाह के दर्मियान वसीला ठहरा लिया और अपने विचार में जिन साधनों से उनका क़ुर्ब मिल सकता था, उन साधनों से क़ुर्ब हासिल करने की कोशिश की। चुनांचे अधिकतर की मूर्तियां और स्टेचू गढ़े, जो उनकी वास्तविक या काल्पनिक शक्लों के अनुसार थे। इन्हीं स्टेचूज़ को मूर्ति या बुत कहा जाता है।

बहुत से ऐसे भी थे जिनका कोई बुत नहीं गढ़ा गया, बल्कि उनकी क़ब्रों, मज़ारों, निवास स्थनों, पड़ावों और आराम की जगहों को पवित्र स्थान बना दिया गया। और उन्हीं पर नज़्र, नियाज़ और चढ़ावे पेश किए जाने लगे और उनके सामने झुकाव, आजिज़ी और इताअत का काम होने लगा। इन मज़ारों, क़ब्रों, आरामगाहों और निवास-स्थानों को अरबी भाषा में औसान कहा जाता है। जिनका अर्थ है बुत और उर्दू ज़ुबान में इसके लिए सबसे क़रीबी लफ़्ज़ है दरगाह व ज़ियारत और दरबार व सरकार है।

मुश्रिकों के नज़दीक इन बुतों और मज़ारों वग़ैरह की पूजा के लिए कुछ ख़ास तरीक़े और रस्म व रिवाज भी थे जो अधिकतर अम्र बिन लुह्य की गढ़े हुए थे, अज्ञानी समझते थे कि अम्र बिन लुह्य की ये नई गढ़ी चीज़ें दीने इब्राहीमी में तब्दीली नहीं, बल्कि बिदअते हसना (नई अच्छी बातें) हैं। नीचे हम अज्ञानियों के भीतर चल रही बुत परस्ती की कुछ महत्वपूर्ण परंपराओं का उल्लेख

कर रहे हैं—

1. अज्ञानता-युग के मुश्रिक बुतों के पास मुजाविर (सेवक-पुजारी) बनकर बैठते थे, उनकी पनाह ढूंढते थे, उन्हें ज़ोर-ज़ोर से पुकारते थे और अपनी ज़रूरतों के लिए उन्हें पुकारते और उनसे दुआएं करते थे और समझते थे कि वे अल्लाह से सिफ़ारिश करके हमारी मुराद (कामना) पूरी करा देंगे।

2. बुतों का हज व तवाफ़ करते थे, उनके सामने विनम्र भाव से पेश आते थे और उन्हें सज्दा करते थे।

3. बुतों के लिए नज़राने और क़ुर्बानियां पेश करते और क़ुर्बानी के इन जानवरों को कभी बुतों के आस्तानों पर ले जाकर उनका बध करते और कभी किसी भी जगह वध कर लेते थे, मगर बुतों के नाम पर बध करते थे। बध के इन दोनों रूपों का उल्लेख अल्लाह ने क़ुरआन में किया है। इर्शाद है—

'वे जानवर भी हराम हैं, जो थानों पर बध करके चढ़ाए गए हों।' (5 : 3)

दूसरी जगह इर्शाद है—

'उस जानवर का मांस मत खाओ, जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो।' (5 : 121)

4. बुतों से सान्निध्य प्राप्त करने का एक तरीक़ा यह भी था कि मुश्रिक अपनी सोच के मुताबिक़ अपने खाने-पीने की चीज़ों और अपनी खेती और चौपाए की पैदावार का एक भाग बुतों के लिए ख़ास कर देते थे। इस सिलसिले में उनकी दिलचस्प रीति यह थी कि वे अल्लाह के लिए भी अपनी खेती और जानवरों की पैदावार का एक हिस्सा ख़ास करते थे, फिर विभिन्न कारणों से अल्लाह का हिस्सा तो बुतों को दे देते थे, लेकिन बुतों का हिस्सा किसी भी हाल में अल्लाह को नहीं देते थे। अल्लाह का इर्शाद है—

'अल्लाह ने जो खेती और चौपाए पैदा किए हैं, उसका एक भाग अल्लाह के लिए मुक़र्रर किया और कहा, यह अल्लाह के लिए है—उनके विचार से—और यह हमारे शरीकों के लिए है। तो जो उनके शरीकों के लिए होता है, वह तो अल्लाह तक नहीं पहुंचता, मगर जो अल्लाह के लिए होता है वह उनके शरीकों तक पहुंच जाता है, कितना बुरा है वह फ़ैसला जो ये लोग करते हें।' (6 : 136)

5. बुतों के सान्निध्य का एक तरीक़ा यह भी था कि वे मुश्रिक खेती और चौपाए के ताल्लुक़ से विभिन्न प्रकार की मन्नतें मानते थे, नई-नई बातें और रस्में गढ़ रखी थीं। अल्लाह का इर्शाद है—

'उन मुश्रिकों ने कहा कि ये चौपाए और खेतियां निषिद्ध हैं, जिनकी पीठ

हराम की गई है। न इन पर सवारी की जा सकती है, न सामान लादा जा सकता है) और कुछ चौपाए ऐसे हैं, जिन पर ये लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हुए— अल्लाह का नाम नहीं लेते।'

(6 : 138)

6. इन्हीं जानवरों में बहीरा, साइबा, वसीला और हामी थे।

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब का बयान है कि बहीरा वह जानवर है, जिसका दूध बुतों के लिए ख़ास कर लिया जाता था और उसे कोई न दूहता था और साइबा वह जानवर है जिसे अपने माबूदों के नाम पर छोड़ते, इस पर कोई चीज़ लादी न जाती थी। वसीला उस जवान ऊंटनी को कहा जाता है जो पहली बार की पैदाइश में मादा बच्चा जनती, फिर दूसरी बार की पैदाइश में भी मादा बच्चा ही जनती। चुनांचे उसे इसलिए बुतों के नाम पर छोड़ दिया जाता कि उसने एक मादा बच्चे को दूसरे मादा बच्चे से जोड़ दिया। दोनों के बीच में कोई नर बच्चा पैदा न हुआ। हामी उस नर ऊंट को कहते जो गिनती की कुछ जुफ़्तियां करता (यानी दस ऊंटनियां) जब यह अपनी जुफ़्तियां पूरी कर लेता और हर एक से मादा बच्चा पैदा हो जाता, तो उसे बुतों के लिए छोड़ देते और लादने से माफ़ रखते, चुनांचे उस पर कोई चीज़ लादी न जाती और उसे हामी कहते।[1]

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि बहीरा साइबा की बच्ची को कहा जाता है और साइबा उस ऊंटनी को कहा जाता है जिससे दस बार लगातार मादा बच्चे पैदा हों, बीच में कोई नर न पैदा हो। ऐसी ऊंटनी को आज़ाद छोड़ दिया जाता था, उस पर सवारी नहीं की जाती थी, उसके बाल नहीं काटे जाते थे और मेहमान के सिवा कोई उसका दूध नहीं पीता था। उसके बाद यह ऊंटनी, जो मादा जनती, उसका कान चीर दिया जाता और उसे भी उसकी मां के साथ आज़ाद छोड़ दिया जाता, उस पर सवारी न की जाती, उसका बाल न काटा जाता और मेहमान के सिवा कोई उसका दूध न पीता। यही बहीरा है और इसकी मां साइबा है।

वसीला उस बकरी को कहा जाता था जो पांच बार बराबर दो-दो मादा बच्चे जनती। (अर्थात् पांच बार में दस मादा बच्चे हों) बीच में कोई नर न पैदा होता। इस बकरी को इसलिए वसीला कहा जाता था कि वह सारे मादा बच्चों को एक दूसरे से जोड़ देती थी। इसके बाद उस बकरी से जो बच्चे पैदा होते, उन्हें सिर्फ़ मर्द खा सकते थे, औरतें नहीं खा सकती थीं, अलबत्ता अगर कोई बच्चा मुर्दा पैदा होता तो उसको मर्द-औरत सभी खा सकते थे।

---

1. सहीह बुख़ारी हदीस न० 4623, फ़त्हुल बारी 8/133, इब्ने हिब्बान 8/53 (ब्रेकेट का वाक्य इब्ने हिब्बान का है)

हामी उस नर ऊंट को कहते थे, जिसके सहवास से लगातार दस मादा बच्चे पैदा होते, बीच में कोई नर न पैदा होता। ऐसे ऊंट की पीठ मज़बूत कर दी जाती थी, न उस पर सवारी की जाती थी, न उसका बाल काटा जाता था, बल्कि उसे ऊंटों के रेवड़ में जोड़ा खाने के लिए आज़ाद छोड़ दिया जाता था और इसके सिवा उससे कोई दूसरा फ़ायदा न उठाया जाता था। अज्ञानता-युग की बुत परस्ती के इन तरीक़ों का खंडन करते हुए अल्लाह ने फ़रमाया—

'अल्लााह ने न कोई बहीरा, न कोई साइबा, न कोई वसीला और न कोई हामी बनाया है, लेकिन जिन लोगों ने कुफ़्र किया, वे अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं और उनमें से अक्सर अक़्ल नहीं रखते।' (5 : 103)

एक दूसरी जगह फ़रमाया—

'इन (मुश्रिकों) ने कहा कि इन चौपायों के पेट में जो कुछ है, वह ख़ालिस हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औरतों पर हराम है। अलबत्ता अगर वह मुर्दा हो, तो उसमें मर्द-औरत सब शरीक हैं।' (6 : 139)

चौपायों की ऊपर लिखी गई क़िस्में अर्थात बहीरा, साइबा आदि के कुछ दूसरे अर्थ भी बयान किए गए हैं[1], जो इब्ने इसहाक़ की उल्लिखित व्याख्या से कुछ भिन्न हैं।

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० का बयान गुज़र चुका है कि ये जानवर उनके तागूतों (ख़ुदा के सरकशों) के लिए थे[2] सहीह बुख़ारी व मुस्लिम में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैंने अम्र बिन आमिर लुही ख़ुज़ाई को देखा कि वह जहन्नम में अपनी आंतें घसीट रहा था।[3] क्योंकि यह पहला आदमी था जिसने दीने इब्राहीमी को तब्दील किया, बुत गाड़े, साइबा छोड़े, बहीरा बनाए, वसीला ईजाद किया और हामी मुक़र्रर किए।[4]

---

1. सीरत इब्ने हिशाम 1/89, 90
2. सहीह बुख़ारी, 1/499
3. सहीह बुख़ारी हदीस न० 1212, फ़त्हुल बारी 3/98, हदीस न० 3521, फ़त्हुल बारी 6/633, हदीस न० 4623, फ़त्हुल बारी 8/132
4. इसे हाफ़िज़ ने फ़त्हुल बारी 6/634 में इब्ने इस्हाक़ से नक़ल किया है। इसी तरह कल्बी ने अस्नाम में और इब्ने हबीब ने अल मुनमिक़ में दर्ज किया है। इसका कुछ हिस्सा सहीह बुख़ारी में मरफ़ूअन मौजूद है, कुछ को हाफ़िज ने सहीह मुस्लिम की तरफ़ अबू सालेह अन् अबी हुरैरह की रिवायत से मंसूब किया है। देखिए फ़त्हुल बारी 8/285,

अरब अपने बुतों के साथ यह सब कुछ इस श्रद्धा के साथ करते थे कि ये बुत उन्हें अल्लाह से क़रीब कर देंगे और अल्लाह के हुज़ूर उनकी सिफ़ारिश कर देंगे। चुनांचे क़ुरआन मजीद में बताया गया है कि मुश्रिक कहते थे—

'हम उनकी पूजा केवल इसलिए कर रहे हैं कि वे हमें अल्लाह के क़रीब कर दें।'

(39 : 3)

'ये मुश्रिक अल्लाह के सिवा उनकी पूजा करते हैं जो उन्हें न फ़ायदा पहुंचा सकें, न नुक़्सान और कहते हैं कि ये अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारिशी हैं।'

(10 : 18)

अरब के मुश्रिक 'अज़लाम' अर्थात फ़ाल (शकुन) के तीर भी इस्तेमाल करते थे। (अज़लाम, ज़लम का बहुवचन है और ज़लम उस तीर को कहते हैं, जिसमें पर न लगे हों) फ़ाल निकालने के लिए इस्तेमाल होने वाले ये तीर तीन प्रकार के होते थे—

एक वे जिन पर केवल 'हां' या 'नहीं' लिखा होता था। इस प्रकार के तीर यात्रा और विवाह आदि जैसे कामों के लिए इस्तेमाल किए जाते थे। अगर फ़ाल में 'हां' निकलता तो चाहा गया काम कर डाला जाता, अगर 'नहीं' निकलता तो साल भर के लिए स्थगित कर दिया जाता और अगले साल फिर फ़ाल निकाला जाता।

फ़ाल निकालने वाले तीरों का दूसरा प्रकार वह था जिन पर पानी और दियत आदि अंकित होते थे।

और तीसरा प्रकार वह था, जिस पर यह अंकित होता था कि 'तुम में से है' या 'तुम्हारे अलावा से है' या 'मिला हुआ है'। इन तीरों का काम यह था कि जब किसी के नसब (वंश) में सन्देह होता तो उसे एक सौ ऊंटों सहित हुबल के पास ले जाते। ऊंटों को तीर वाले महन्त के हवाले करते और वह तमाम तीरों को एक साथ मिलाकर घुमाता, झिंझोड़ता, फिर एक तीर निकालता। अब अगर यह निकलता कि 'तुम में से है', तो वह उनके क़बीले का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति मान लिया जाता और अगर यह निकलता कि 'तुम्हारे अलावा से है' तो 'हलीफ़' (मित्र) माना जाता और अगर यह निकलता कि 'मिला हुआ है' तो उनके अन्दर अपनी हैसियत बाक़ी रखता, न क़बीले का व्यक्ति माना जाता, न हलीफ़।[1]

इसी से मिलता-जुलता एक रिवाज मुश्रिकों में जुआ खेलने और जुए के तीर इस्तेमाल करने का था। इसी तीर की निशानदेही पर वे जुए का ऊंट ज़िब्ह करके उसका मांस बांटते थे।

---

1. फ़त्हुल बारी 8/277, इब्ने हिशाम 1/152, 153,

इसका तरीक़ा यह था कि जुआ खेलने वा । एक ऊंट उधार ख़रीदते और ज़िब्ह करके उसे दस या अठाईस हिस्सों में बांट देते, फिर तीरों से क़ुरआ निकालते। किसी तीर पर जीत का निशान बना होता और कोई तीर बे-निशान होता। जिसके नाम पर जीत के निशान वाला तीर निकलता, वह तो कामियाब माना जाता और अपना हिस्सा लेता और जिसके नाम पर बे-निशान तीर निकलता, उसे क़ीमत देनी पड़ती।[1]

अरब के मुश्रिक काहिनों, अर्राफ़ों और नजूमियों (ज्योतिषियों) की ख़ब्ररों में भी आस्था रखते थे।

काहिन उसे कहते हैं जो आने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी करे अं.र छिपे रहस्यों को जानने का दावा करे। कुछ काहिनों का यह भी दावा था कि एक जिन्न उनके क़ब्ज़े में है, जो उन्हें ख़बरें पहुंचाता रहता है और कुछ काहिन कहते थे कि उन्हें ऐसा विवेक दिया गया है, जिससे वे ग़ैब का पता लगा लेते हैं।

कुछ इस बात के दावेदार थे कि जो आदमी उनसे कोई बात पूछने आता है, उसके कहने-करने से या उसकी हालत से, कुछ कारणों के ज़रिए वे घटना-स्थल का पता लगा लेते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति को अर्राफ़ कहा जाता था, जैसे वह व्यक्ति जो चोरी के माल, चोरी की जगह और गुमशुदा जानवर आदि का पता-ठिकाना बताता।

नजूमी उसे कहते हैं जो तारों पर विचार करके और उनकी चाल और समय का हिसाब लगाकर पता लगाता है कि दुनिया में आगे क्या परिस्थितियां जन्म लेंगी और क्या घटनाएं घटित होंगी।[2] इन नजूमियों की ख़बरों को मानना वास्तव में तारों पर ईमान लाना है और तारों पर ईमान लाने की एक शक्ल यह भी थी कि अरब के मुश्रिक नक्षत्रों पर ईमान रखते थे और कहते थे कि हम पर फ़्लां और फ़्लां नक्षत्र से वर्षा हुई है।[3]

मुश्रिकों में अपशकुन का भी रिवाज था। उसे अरबी में 'तियरा' कहते हैं। इसकी शक्ल यह थी कि मुश्रिक किसी चिड़िया या हिरन के पास जाकर उसे भगाते थे। फिर अगर वह दाहिनी ओर भागता तो उसे अच्छाई और सफलता की

---

1. याक़ूबी ने अपने इतिहास में कुछ अंशों में मतभेद के साथ सविस्तार लिखा है, 1/259, 261
2. अल-लिसान और दूसरे शब्द-कोष
3. देखिए सहीह बुख़ारी, हदीस न० 846, 1038, 4771, 3041, 750 सहीह मुस्लिम मय शरह नववी : किताबुल ईमान, बाब बयान 'क-फ़-र मन क़ा-ल मुतरुना बिन्नौइ 1/95

निशानी समझ कर अपना काम कर गुज़रते और अगर बाईं ओर भागता तो उसे अपशकुन समझ कर अपने काम से रुक जाते। इसी तरह अगर कोई चिड़िया या जानवर रास्ता काट देता तो उसे भी अपशकुन समझते।

इसी से मिलती-जुलती एक हरकत यह भी थी कि मुश्रिक खरगोश के टख़ने की हड्डी लटकाते थे और कुछ दिनों, महीनों, जानवरों, घरों और औरतों को अपशकुन समझते थे। बीमारियों की छूत के क़ायल थे और आत्मा के उल्लू बन जाने में विश्वास करते थे अर्थात् उनकी आस्था थी कि जब तक जिसकी हत्या की गई है, उसकी हत्या का बदला न लिया जाए, उसे शान्ति नहीं मिलती और उसकी आत्मा उल्लू बनकर निर्जन स्थानों पर घूमती रहती है और 'प्यास-प्यास' या 'मुझे पिलाओ, मुझे पिलाओ' की आवाज़ लगाती रहती है। जब उसका बदला ले लिया जाता है, तो उसे राहत और शान्ति मिल जाती है।[1]

दीने इब्राहीमी में क़ुरैश की गढ़ी नई चीज़ें

ये थे अज्ञानियों के विश्वास और काम। इसके साथ ही इनके अन्दर दीने इब्राहीमी की कुछ बची-खुची चीज़ें भी थीं अर्थात् उन्होंने यह दीन पूरे तौर पर नहीं छोड़ा था, चुनांचे वे बैतुल्लाह का आदर और उसकी परिक्रमा करते थे, हज व उमरा करते थे, अरफ़ात व मुज़दलफ़ा में ठहरते थे और हद्यि के जानवरों की क़ुर्बानी करते थे, अलबत्ता उन्होंने इस दीने इब्राहीमी में बहुत-सी नई बातें गढ़कर शामिल कर दी थीं, जैसे—

क़ुरैश की एक नई बात यह थी कि वे कहते थे, हम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सन्तान हैं, हरम की देखभाल करने वाले, बैतुल्लाह के निगरां और मक्का के रहने वाले हैं, कोई व्यक्ति हमारे पद की बराबरी का नहीं और न किसी के अधिकार हमारे अधिकार जितने हैं—और इसी कारण ये अपना नाम हुम्स (वीर और गर्मजोश) रखते थे—इसलिए हमारे लिए उचित नहीं कि हम हरम की सीमाओं से बाहर जाएं, चुनांचे हज के दौरान ये लोग अरफ़ात नहीं जाते थे और न वहां से इफ़ाज़ा करते थे, बल्कि मुज़दलफ़ा ही में ठहर कर वहीं से इफ़ाज़ा कर लेते थे। अल्लाह ने इस नई बात को सुधारते हुए फ़रमाया—

'तुम लोग भी वहीं से इफ़ाज़ा करो, जहां से सारे लोग इफ़ाज़ा करते हैं।'[2]

(2 : 119)

---

1. सहीह बुख़ारी 2/851, 857 मय शरहें,
2. इब्ने हिशाम 1/199, सहीह बुख़ारी 1/226

उनकी एक नई बात यह भी थी कि वे कहते थे कि हुम्स (कुरैश) के लिए एहराम की हालत में पनीर और घी बनाना सही नहीं और न यह सही है कि बाल वाले घर (अर्थात कम्बल के ख़ेमे) में दाख़िल हों और न यह सही है कि छाया लेनी हो तो चमड़े के ख़ेमे के सिवा कहीं और छाया लें।[1]

उनकी एक नई बात यह भी थी कि वे कहते थे कि हरम के बाहर के लोग हज या उमरा करने के लिए आएं और हरम के बाहर से खाने की कोई चीज़ लेकर आएं तो इसका उनके लिए खाना सही नहीं।[2]

एक नई बात यह भी कि उन्होंने हरम के बाहर के निवासियों को हुक्म दे रखा था कि वे हरम में आने के बाद पहला तवाफ़ (परिक्रमा) हुम्स से प्राप्त कपड़ों ही में करें। चुनांचे अगर उनका कपड़ा न प्राप्त होता, तो मर्द नंगे तवाफ़ करते और औरतें अपने सारे कपड़े उतारकर सिर्फ़ एक छोटा-सा खुला हुआ कुरता पहन लेतीं और उसी में तवाफ़ करतीं और तवाफ़ के दौरान ये पद पढ़ती जातीं—

'आज कुछ या कुल गुप्तांग खुल जाएगा, लेकिन जो खुल जाए, मैं उसे (देखना) हलाल नहीं क़रार देती।'

अल्लाह ने इस बेकार-सी चीज़ की समाप्ति के लिए फ़रमाया—

'ऐ आदम के बेटो! हर मस्जिद के पास अपनी ज़ीनत अख़्तियार कर लिया करो।'

(7 : 31)

बहरहाल अगर कोई औरत या मर्द श्रेष्ठ और उच्च बनकर, हरम के बाहर से लाए हुए अपने ही कपड़ों में तवाफ़ कर लेता, तो तवाफ़ के बाद इन कपड़ों को फेंक देता, उससे न ख़ुद फ़ायदा उठाता, न कोई और।[3]

क़ुरैश की एक नई बात यह भी थी कि वे एहराम की हालत में घर के भीतर दरवाज़े से दाख़िल न होते थे, बल्कि घर के पिछवाड़े एक बड़ा-सा सूराख़ बना लेते और उसी से आते-जाते थे और अपने इस उजड्डपने को नेकी समझते थे। क़ुरआन ने इससे भी मना फ़रमाया। (देखिए, 2 : 189)

यही दीन—अर्थात शिर्क व बुत परस्ती और अंधविश्वास और व्यर्थ के कामों पर आधारित विश्वास व कार्य वाला दीन—सामान्य अरब वासियों का दीन था।

---

1. इब्ने हिशाम 1/202
2. वही, वही
3. वही, 1/202, 203, सहीह बुख़ारी 1/226

इसके अलावा अरब प्रायद्वीप के विभिन्न भागों में यहूदी, ईसाई, मजूसी और साबी धर्मावलम्बियों ने भी पनपने के अवसर प्राप्त कर लिए थे, इसलिए इनका ऐतिहासिक स्वरूप भी संक्षेप में पेश किया जा रहा है।

अरब प्रायद्वीप में यहूदियों के कम से कम दो युग हैं।

पहला युग उस समय से ताल्लुक़ रखता है जब फलस्तीन में बाबिल और आशूर के राज्यों की जीतों की वजह से यहूदियों को देश-परित्याग करना पड़ा। इस राज्य के दमन-चक्र और बख़्ते नस्र के हाथों यहूदी बस्तियों की तबाही व वीरानी, उनके हैकल की बर्बादी और उनके बहुसंख्य के देश-निकाला दिए जाने का नतीजा यह हुआ कि यहूदियों का एक गिरोह फ़लस्तीन छोड़ कर हिजाज़ के उत्तरी भागों में जा बसा।[1]

दूसरा युग उस समय शुरू होता है जब टाइटस रूमी के नेतृत्व में सन् 70 ई० में रूमियों ने फ़लस्तीन पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस अवसर पर रूमियों के हाथों यहूदियों की पकड़-धकड़ और उनके हैकल की बरबादी का नतीजा यह हुआ कि अनेक यहूदी क़बीले हिजाज़ भाग आए और यसरिब, ख़ैबर और तैमा में आबाद होकर यहां अपनी विधिवत आबादियां बसा लीं और क़िले और गढ़ियां बना लीं। देश-निकाला पाए इन यहूदियों के ज़रिए अरब निवासियों में किसी क़दर यहूदी धर्म का भी रिवाज हुआ और उसे भी इस्लाम प्रकट होने से पहले और उसके आरंभिक युग की राजनीतिक घटनाओं में एक उल्लेखनीय हैसियत हासिल हो गई। इस्लाम के प्रकट होने के वक़्त प्रसिद्ध यहूदी क़बीले ये थे—ख़ैबर, नज़ीर, मुस्तलक़, क़ुरैज़ा और क़ैनुक़ाअ। सम्हूदी ने वफ़ाउल वफ़ा पृ० 116 में उल्लेख किया है कि यहूदी क़बीलों की तायदाद बीस से ज़्यादा थी।[2]

यहूदी मत को यमन में भी पलने-बढ़ने का मौक़ा मिला। यहां उसके फैलने की वजह तबान असद अबू कर्ब था। यह व्यक्ति लड़ाई लड़ता हुआ यसरिब पहुंचा, वहां यहूदी मत अपना लिया और बनू क़ुरैज़ा के दो यहूदी उलेमा को अपने साथ यमन ले आया और उनके ज़रिए यहूदी मत को यमन में विस्तार और फैलाव मिला। अबू कर्ब के बाद उसका बेटा यूसुफ़ ज़ूनवास यमन का हाकिम हुआ तो उसने यहूदी होने के जोश में नजरान के ईसाइयों पर हल्ला बोल दिया और उन्हें मजबूर किया कि यहूदी मत अपना लें। मगर उन्होंने इंकार कर दिया। इस पर ज़ूनवास ने खाई खुदवाई और उसमें आग जलवाकर बूढ़े-बच्चे,

---

1. क़ल्ब जज़ीरतुल अरब, पृ० 251
2. वही, वही और वफ़ाउल वफ़ा 1/165

मर्द-औरत सबको बिना किसी भेद-भाव के आग के अलाव में झोंक दिया। कहा जाता है कि इस दुर्घटना के शिकार होने वालों की तायदाद बीस से चालीस हज़ार के बीच थी। यह अक्तूबर 523 ई० की घटना है। क़ुरआन मजीद ने सूरः बुरूज में इसी दुर्घटना का उल्लेख किया है।[1]

जहां तक ईसाई मत का ताल्लुक़ है, तो अरब भू-भाग में यह हब्शी और रूमी क़ब्ज़ा करने वाले विजेताओं के साथ आया। हम बता चुके हैं कि यमन पर हब्शियों का क़ब्ज़ा पहली बार 340 ई० में हुआ लेकिन यह क़ब्ज़ा देर तक बाक़ी न रहा। यमनियों ने 370 ई० से 378 ई० के दौरान निकाल भगाया।[2] अलबत्ता इस बीच यमन में मसीही मिशन काम करता रहा। लगभग उसी समय एक ख़ुदा को पहुंचा हुआ करामतों वाला ज़ाहिद (सन्यासी), जिसका नाम फ़ेमियून था, नजरान पहुंचा और वहां के निवासियों में ईसाई धर्म का प्रचार किया। नजरान वालों ने उसकी ओर उसके धर्म की सच्चाई की कुछ ऐसी निशानियां देखीं कि वे ईसाई धर्म की गोद में आ गिरे।[3]

फिर ज़ूनिवास की कार्रवाई की प्रतिक्रिया में सन् 525 ई० में हब्शियों ने दोबारा यमन पर क़ब्ज़ा कर लिया और अबरहा ने यमन राज्य की सत्ता अपने हाथ में ले ली, तो उसने भारी उत्साह और उमंग के साथ बड़े पैमाने पर ईसाई धर्म को फैलाने की कोशिश की। इसी उमंग और उत्साह का नतीजा था कि उसने यमन में एक काबा बनाया और कोशिश की कि अरबों को (मक्का और बैतुल्लाह से) रोक कर उसी का हज कराये और मक्का के बैतुल्लाह शरीफ़ को ढा दे, लेकिन उसकी इस जुर्रात पर अल्लाह ने उसे ऐसी सज़ा दी कि अगलों-पिछलों के लिए शिक्षा ग्रहण करने की चीज़ बन गया।

दूसरी ओर रूमी क्षेत्रों का पड़ोस होने के कारण आले ग़स्सान, बनू तग़लब, और बनू तै वग़ैरह अरब क़बीलों में भी ईसाई धर्म फैल गया था, बल्कि हियरा के कुछ अरब बादशाहों ने भी ईसाई धर्म अपना लिया था।

जहां तक मजूसी धर्म का ताल्लुक़ है, तो अधिकतर फ़ारस वालों के पड़ोसी अरबों में इसका विकास हुआ था, जैसे इराक़ अरब, बहरैन (अल-अह्सा) हिज्र और अरब खाड़ी के तटीय क्षेत्र। इनके अलावा यमन पर फ़ारसी क़ब्ज़े के दौरान

1. इब्ने हिशाम 1/20, 21, 22, 27, 31, 35, 36, साथ ही देखिए तफ़्सीर की किताबें, तफ़्सीर सूरः बुरूज और अल-यमुन इबरुत्तारीख़ पृ० 158, 159
2. अल-यमनु इबरुत्तारीख़, 158, 159, तारीख़ुल अरब क़ब्लल इस्लाम पृ० 122, 432
3. इब्ने हिशाम, 1/31, 32, 33, 34

वहां भी एक-दो व्यक्तियों ने मजूसी धर्म अपना लिया।

बाक़ी रहा साबी धर्म, जिसकी विशेषता सितारापरस्ती, नक्षत्रों में श्रद्धा, तारों का प्रभाव और उन्हें सृष्टि का संयोजक मानना थी, तो इराक़ आदि के अवशेषों की खुदाई के दौरान जो शिला-लेख मिले हैं, उनसे पता चलता है कि यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कलदानी क़ौम का धर्म था। पुराने ज़माने में शाम व यमन के बहुत से निवासी भी इसी धर्म के मानने वाले थे, लेकिन जब यहूदी मत और फिर ईसाई धर्म का ज़ोर बढ़ा तो इस धर्म की बुनियादें हिल गईं और उसका जलता चिराग़ बुझ कर रह गया, फिर भी मजूस के साथ मिल-मिलाकर या उनके पड़ोस में इराक़ अरब और अरब खाड़ी के तट पर इस धर्म के कुछ न कुछ मानने वाले बाक़ी रहे।[1]

धार्मिक स्थिति

जिस समय इस्लाम-सूर्य उदित हुआ है, यही दीन-धर्म थे जो अरब में पाए जाते थे, लेकिन ये सारे धर्म टूट-फूट के शिकार थे। मुश्रिक जिनका दावा था कि हम दीने इब्राहीमी पर हैं, इब्राहीमी शरीअत के करने, न करने के आदेश से कोसों दूर थे। इस शरीअत ने जिस नैतिकता की शिक्षा दी थी, उनसे इन मुश्रिकों का कोई ताल्लुक़ न था। उनमें गुनाहों की भरमार थी और लम्बा समय बीतने के कारण इनमें भी बुत परस्तों की वही आदतें और रस्में पैदा हो चली थीं, जिन्हें धार्मिक अंधविश्वास का पद प्राप्त है। इन आदतों और रस्मों ने उनके सामूहिक, राजनीतिक और धार्मिक जीवन पर बड़े गहरे प्रभाव डाले थे।

यहूदी धर्म का हाल यह था कि वह मात्र दिखावा और दुनियादारी का नाम था। यहूदी रहनुमा अल्लाह के बजाए स्वयं रब बन बैठे थे, लोगों पर अपनी मर्ज़ी चलाते थे और उनके दिलों में आने वाले विचार और होंठों की हरकत तक का हिसाब करते थे। उनका सारा ध्यान इस बात पर टिका हुआ था कि किसी तरह माल और सत्ता प्राप्त हो, भले ही दीन बर्बाद हो जाए और नास्तिकता और अनीश्वरवाद को बढ़ावा मिलने लगे और उन शिक्षाओं के प्रति अनादर-भाव ही क्यों न जन्म ले ले, जिनकी पावनता बनाए रखने का अल्लाह ने हर व्यक्ति को आदेश दिया है और जिन पर अमल करने पर उभारा है।

ईसाई धर्म एक न समझ में आने योग्य बुत परस्ती का धर्म बन गया था।

---

1. तारीख़ अर्ज़ुल क़ुरआन, 2/193, 208

उसने अल्लाह और इंसान को अनोखे ढंग से मिला-जुला दिया था, फिर जिन अरबों ने इस धर्म को अपनाया था, उन पर इस दीन का कोई वास्तविक प्रभाव न था, क्योंकि उसकी शिक्षाएं उनके जीवन के असल तौर-तरीक़ों से मेल नहीं खाती थीं और वे अपने तरीक़े छोड़ नहीं सकते थे।

अरब के बाक़ी दीनों के मानने वालों का हाल मुश्रिकों ही जैसा था, क्योंकि उनके मन एक थे, मान्यताएं एक थीं और रस्म व रिवाज मिलते-जुलते थे।

अज्ञानी समाज की कुछ झलकियां

अरब प्रायद्वीप की राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियों के जान लेने के बाद अब यहां की सामाजिक, आर्थिक और नैतिक स्थिति की संक्षिप्त रूप-रेखा पेश की जा रही है।

सामाजिक स्थिति

अरब आबादी अनेक वर्गों पर सम्मिलित थी और हर वर्ग की स्थिति एक दूसरे से बहुत ज़्यादा भिन्न थी। चुनांचे उच्च वर्ग में मर्द-औरत का ताल्लुक़ अच्छा-भला प्रगतिवादी था। औरत को बहुत स्वतंत्रता प्राप्त थी, उसकी बात मानी जाती थी और उसका इतना सम्मान और इतनी सुरक्षा मिली हुई थी कि इस राह में तलवारें निकल पड़ती थीं और ख़ून की नदियां बह जाती थीं। आदमी जब अपनी कृपाओं और वीरताओं पर, जिसे अरब में ऊंचा स्थान प्राप्त था, अपनी प्रशंसा करना चाहता तो आम तौर पर औरत ही को सम्बोधित करता, कभी-कभी औरत चाहती तो क़बीलों को समझौते के लिए इकट्ठा कर देती और चाहती तो उनके बीच लड़ाई और रक्तपात के शोले भड़का देती, लेकिन इन सबके बावजूद, बिना किसी विवाद के मर्द ही को परिवार का मुखिया माना जाता और उसकी बात निर्णायक हुआ करती थी। इस वर्ग में मर्द और औरत का ताल्लुक़ निकाह के ज़रिए ही क़ायम होता था और यह निकाह औरत के वली (अभिभावक) की निगरानी में किया जाता था। औरत को यह हक़ न था कि वली के बिना अपने तौर पर निकाह कर ले।

एक ओर उच्च वर्ग का यह हाल था तो दूसरी ओर दूसरे वर्गों में मर्द व औरत के मेल-गिलाप की और भी कई शक्लें थीं, जिन्हें बदकारी, बेहयाई और ज़िनाकारी के अलावा कोई और नाम नहीं दिया जा सकता।

हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि अज्ञानता युग में विवाह की चार शक्लें थीं—

एक तो वही शक्ल थी, जो आज भी लोगों में पाई जाती है कि एक आदमी दूसरे आदमी को उसकी निगरानी में पल रही लड़की के लिए निकाह का पैग़ाम देता, फिर मंज़ूरी के बाद मह्र देकर उससे निकाह कर लेता।

दूसरी शक्ल यह थी कि औरत जब हैज़ (माहवारी) से पाक होती, तो उसका शौहर कहता कि अमुक व्यक्ति के पास पैग़ाम भेजकर उससे उसका गुप्तांग प्राप्त करो (अर्थात ज़िना कराओ) और शौहर ख़ुद उससे अलग-थलग रहता और उसके क़रीब न जाता, यहां तक कि स्पष्ट हो जाता कि जिस व्यक्ति से गुप्तांग

प्राप्त किया गया था (अर्थात ज़िना कराया था) उससे हमल (गर्भ) ठहर गया है। जब हमल ठहर जाता तो उसके बाद अगर शौहर चाहता तो उस औरत के पास जाता। ऐसा इसलिए किया जाता था कि लड़का सज्जन और गुणों वाला पैदा हो। इस निकाह को निकाह इस्तबज़ाअ कहा जाता था (और इसी को भारत में नियोग कहते हैं)।

निकाह की तीसरी शक्ल यह थी कि दस आदमियों से कम की एक टीम इकट्ठा होती थी, सब के सब एक ही औरत के पास जाते और बदकारी करते। जब वह औरत गर्भवती हो जाती और बच्चा पैदा होता तो बच्चा जनने के कुछ दिनों बाद वह औरत सबको बुला भेजती और सबको आना पड़ता। मजाल न थी कि कोई न आए। इसके बाद वह औरत कहती कि आप लोगों का जो मामला था, वह तो आप लोग जानते ही हैं और अब मेरे गर्भ से बच्चा पैदा हुआ है और ऐ फ़्लां! यह तुम्हारा बेटा है। वह औरत उनमें से जिसका नाम चाहती, ले लेती और वह उसका लड़का मान लिया जाता।

चौथा निकाह यह था कि बहुत से लोग इकट्ठा होते और किसी औरत के पास जाते। वह अपने पास किसी आने वाले से इंकार न करती। ये रंडियां होती थीं, जो अपने दरवाज़ों पर झंडियां गाड़े रखती थीं, ताकि यह निशानी का काम दे और जो इनके पास जाना चाहे, बे-धड़क चला जाए। जब ऐसी औरत गर्भवती होती और बच्चा पैदा होता, तो सब के सब उसके पास जमा हो जाते और क़ियाफ़ा शनास (अन्दाज़ा लगाने वाले) को बुलाते। क़ियाफ़ा शनास अपनी राय के मुताबिक़ उस लड़के को किसी भी व्यक्ति से जोड़ देता, फिर यह उसी से जुड़ जाता और उसी का लड़का कहलाता। वह इससे इंकार न कर सकता था—जब अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० को नबी की हैसियत से भेजा, तो अज्ञानता के सारे विवाह निरस्त कर दिए, सिर्फ़ इस्लामी निकाह बाक़ी रहा, जो आज चल रहा है।[1]

अरब में मर्द-औरत के मेल-जोल की कुछ शक्लें ऐसी भी थीं जो तलवार की धार और नेज़े की नोंक पर वजूद में आती थीं, अर्थात क़बीलेवार लड़ाइयों में विजयी क़बीला विजित क़बीले की औरतों को क़ैद करके अपने हरम में दाख़िल कर लेता था, लेकिन ऐसी औरतों से पैदा होने वाली सन्तान पूरी ज़िंदगी शर्म महसूस करती थी।

अज्ञानता-काल में बिना किसी हदबन्दी के अनेक बीवियों का रखना भी एक

---

1. सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाब मन क़ा-ल ला निका-ह इल्ला बिवली 2/769 व अबू दाऊद, बाब वुजूहुन्निकाह

जानी-पहचानी बात थी। लोग ऐसी दो औरतें भी निकाह में रख लेते थे जो आपस में सगी बहनें होती थीं। बाप के तलाक़ देने या वफ़ात पाने के बाद बेटा अपनी सौतेली मां से भी निकाह कर लेता था। तलाक़ देने और रुजू करने अधिकार मर्द को हासिल था और उसकी कोई सीमा न थी, यहां तक कि इस्लाम ने उनकी सीमा निश्चित कर दी।[1]

ज़िनाकारी तमाम वर्गों में चरम सीमा को पहुंची हुई थी। कोई वर्ग या इंसानों की कोई क़िस्म इसका अपवाद न थी। अलबत्ता कुछ मर्द और कुछ औरतें ऐसी ज़रूर थीं जिन्हें अपनी बड़ाई का एहसास उस बुराई के कीचड़ में लत-पथ होने से रोके रखता था। फिर आज़ाद औरतों का हाल लौंडियों के मुक़ाबले में ज़्यादा बेहतर था। असल मुसीबतें लौंडियां ही थीं और ऐसा लगता है कि अज्ञानियों का अधिसंख्य इस बुराई में लिप्त होने से कोई संकोच भी नहीं महसूस करता था, चुनांचे सुनने अबू दाऊद आदि में रिवायत है कि एक बार एक आदमी ने खड़े होकर कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अमुक व्यक्ति मेरा बेटा है। मैंने अज्ञानता-युग में इसकी मां से ज़िना किया था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इस्लाम में ऐसे दावे की कोई गुंजाइश नहीं, अज्ञानता की बात खत्म हो गई, अब तो लड़का उसी का होगा, जिसकी बीवी या लौंडी हो और ज़िनाकार के लिए पत्थर है और हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० और अब्द बिन ज़मआ के दर्मियान ज़मआ की लौंडी के बेटे—अब्दुर्रहमान बिन ज़मआ के बारे में जो झगड़ा पेश आया था, वह भी जाना-पहचाना और मालूम है।[2]

अज्ञानता-युग में बाप-बेटे का ताल्लुक़ भी अनेक प्रकार का था। कुछ तो ऐसे थे, जो कहते थे—

'हमारी सन्तान हमारे कलेजे हैं, जो धरती पर चलते-फिरते हैं।'

लेकिन दूसरी ओर कुछ ऐसे भी थे जो लड़कियों को रुसवाई और ख़र्च के डर से ज़िंदा ज़मीन में गाड़ देते थे और बच्चों को भुखमरी के भय से मार डालते थे।[3]

लेकिन यह कहना कठिन है कि यह ज़ुल्म बड़े पैमाने पर चल रहा था,

---

1. अबू दाऊद नुसख़ुल मुराजअः बादत्ततलीक़ातिस्सलास, साथ ही कुतुबे तफ़्सीर 'अत्तलाक़ु मर्रतान'
2. सहीह बुख़ारी 2/999, 1065, अबू दाऊद अल-वलदु लिल फ़राश, मुस्नद अहमद 2/206
3. क़ुरआन मजीद : 6/101-16/58, 59-17/31-81/8

क्योंकि वे अपने शत्रु से अपनी रक्षा के लिए दूसरों के मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा सन्तान की ज़रूरत महसूस करते थे और इसका एहसास भी रखते थे।

जहां तक सगे भाइयों, चचेरे भाइयों और कुंबे-क़बीले के लोगों के आपसी ताल्लुक़ात का मामला है, तो ये अच्छे भले पक्के और मज़बूत थे, क्योंकि अरब के लोग क़बीलेवार पक्षपात ही के सहारे जीते और उसी के लिए मरते थे। क़बीले के भीतर आपसी सहयोग और सामूहिकता की भावना पूरी तरह काम कर रही होती थी, जिसे पक्षपाती भावना और अधिक जगाए रखती थी। सच तो यह है कि क़ौमी लगाव और रिश्ते-नाते का ताल्लुक़ ही उनकी सामूहिक व्यवस्था की बुनियाद थी। वे लोग इस कहावत के शब्दों पर पूरी तरह अमल कर रहे थे कि 'अपने भाई की मदद करो, चाहे वह ज़ालिम हो या मज़्लूम' इस कहावत के अर्थ में अभी वह सुधार नहीं हुआ था जो बाद में इस्लाम द्वारा किया गया अर्थात ज़ालिम की मदद यह है कि उसे ज़ुल्म से रोका जाए, अलबत्ता बुज़ुर्गी और सरदारी में एक दूसरे से आगे निकल जाने की भावना बहुत बार एक ही व्यक्ति से वजूद में आने वाले क़बीलों के बीच लड़ाई की वजह बन जाया करती थी, जैसा कि औस व ख़ज़रज, अबस व ज़ुबयान और बिक्र व तग़लब आदि की घटनाओं में देखा जा सकता है।

जहां तक विभिन्न क़बीलों के एक दूसरे से ताल्लुक़ात का मामला है, तो ये पूरी तरह खंडित थे। क़बीलों की सारी ताक़त एक दूसरे के ख़िलाफ़ लड़ने में ख़त्म हो रही थी, अलबत्ता दीन और अंधविश्वास की मिलावट से तैयार हुए कुछ रस्म व रिवाज और आदतों की वजह से कभी-कभी लड़ाई की गर्मी और तेज़ी में कमी आ जाती थी और कुछ हालात में समझौते और ताबेदारी के नियमों पर विभिन्न क़बीले इकट्ठे हो जाते थे। इनके अलावा हराम महीने उनके जीवन के लिए और रोज़ी-रोटी हासिल करने में पूरी तरह सहायक थे क्योंकि अरब उनके सम्माननीय होने पर बहुत ध्यान देते थे। अबू रजा अतारदी कहते हैं कि जब रजब का महीना आ जाता तो हम कहते कि यह नेज़े की अनियां उतारने वाला है। चुनांचे हम कोई नेज़ा न छोड़ते, जिसमें धारदार बरछी होती, मगर हम वह बरछी निकाल लेते। और कोई तीर न छोड़ते, जिसमें धारदार फल होता, मगर उसे भी निकाल लेते और रजब भर उसे कहीं डालकर पड़ा छोड़ देते।[1] इसी तरह हराम के बाक़ी महीनों में भी।[2]

---

1. बुख़ारी हदीस न० 4376,
2. फ़त्हुल बारी 8/91

सार यह कि सामूहिक दशा कमज़ोरी और बेसूझ-बूझ के गढ़े में गिरी हुई थी, अज्ञान अपनी कमानें ताने हुए था और अंधविश्वास का दौर-दौरा था। लोग जानवरों जैसी ज़िंदगी गुज़ार रहे थे। औरत बेची और ख़रीदी जाती थी और कभी-कभी उससे मिट्टी और पत्थर जैसा व्यवहार किया जाता था। क़ौम के आपसी ताल्लुक़ात कमज़ोर, बल्कि टूटे हुए थे और राज्यों की सारी गतिविधियां अपनी जनता से ख़ज़ाने भरने या विरोधियों पर हमला कर देने तक सीमित थीं।

आर्थिक स्थिति

आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति के आधीन थी। इसका अन्दाज़ा अरब के आर्थिक साधनों पर नज़र डालने से हो सकता है कि व्यापार ही उनके नज़दीक जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने का सबसे महत्वपूर्ण साधन था और मालूम है कि व्यापार के लिए आना-जाना देश में शान्ति के बिना संभव नहीं और अरब प्रायद्वीप का हाल यह था कि हराम महीनों के अलावा शान्ति का कहीं वजूद न था। यही वजह है कि सिर्फ़ हराम महीनों ही में अरब के मशहूर बाज़ार उक़ाज़, ज़िल मजाज़ और मजिन्ना वग़ैरह लगते थे।

जहां तक उद्योगों का मामला है तो अरब इस मैदान में सारी दुनिया से पीछे थे। कपड़े की बुनाई और चमड़े की सफ़ाई आदि की शक्ल में जो कुछ उद्योग पाए भी जाते थे, वे अधिकतर यमन, हियरा और शाम से मिले हुए क्षेत्रों में थे, अलबत्ता अरब के भीतरी भागों में खेती-बाड़ी और जानवरों के चराने का कुछ रिवाज था। सारी अरब औरतें सूत कातती थीं, लेकिन मुश्किल यह थी कि सारा माल व मता हमेशा लड़ाइयों के निशाने पर रहता था। भुखमरी आम थी और लोग ज़रूरी कपड़ों और पहनावों से भी बड़ी हद तक महरूम रहते थे।

चरित्र

यह तो अपनी जगह तै है कि अज्ञानता-युग में घटिया और ओछी आदतें और बुद्धि व विवेक के ख़िलाफ़ बातें पाई जाती थीं, लेकिन उनमें ऐसे पसंदीदा उच्च आचरण भी थे, जिन्हें देखकर इंसान दंग रह जाता है, जैसे—

1. दया-भाव और दानशीलता—यह अज्ञानियों की ऐसी विशेषता थी, जिसमें वे एक दूसरे से आगे निकल जाने की कोशिश करते थे और इस पर इस तरह गर्व करते थे कि अरब का आधा काव्य साहित्य उसी की भेंट चढ़ गया है। इस गुण के आधार पर किसी ने ख़ुद अपनी प्रशंसा की है, तो किसी ने किसी

और की। हालत यह थी कि कड़े जाड़े और भूख के ज़माने में किसी के घर कोई मेहमान आता और उसके पास अपनी उस एक ऊंटनी के अलावा कुछ न होता जो उसकी और उसके परिवार का मात्र साधन होती, तो भी—ऐसी संगीन हालत के बावजूद—उस पर दानशीलता छा जाती और उठ कर अपने मेहमान के लिए अपनी ऊंटनी ज़िब्ह कर देता। उनके दया-भाव का ही नतीजा था कि वे बड़ी-बड़ी दियत और माली ज़िम्मेदारियां उठा लेते और इस तरह दूसरे रईसों और सरदारों के मुक़ाबले में इंसानों को बर्बादी और ख़ून बहाने से बचाकर एक प्रकार के गर्व का अनुभव करते थे।

इसी दया-भाव का नतीजा था कि वे मदिरा पान पर भी गर्व करते थे, इसलिए नहीं कि यह अपने आप में कोई गर्व की बात थी, बल्कि इसलिए कि यह दया-भाव और दानशीलता को आसान कर देती थी, क्योंकि नशे की हालत में माल लुटाना मानव-स्वभाव पर बोझ नहीं होता। इसलिए ये लोग अंगूर के पेड़ को करम (दया) और अंगूर की शराब को बिन्तुल करम (दया की बेटी) कहते थे। अज्ञानता-युग की काव्य साहित्य पर नज़र डालिए तो यह प्रशंसा और गर्व का एक महत्वपूर्ण अध्याय दिखाई पड़ेगा। अन्तरा बिन शद्दाद अबसी अपने मुअल्लक़ा में कहता है—

'मैंने दोपहर की तेज़ी रुकने के बाद एक पीले रंग के धारीदार बिल्लोरी जाम से, जो बाईं ओर रखे हुए चमकदार और मुंहबंद जग के साथ था, निशान लगी हुई पाक़ चमकदार शराब पी और जब मैं पी लेता हूं तो अपना माल लुटा डालता हूं, लेकिन मेरी आबरू भरपूर रहती है, उस पर कोई चोट नहीं आती। और जब मैं होश में आता हूं, तब भी दानशीलता में कोताही नहीं करता और मेरा चरित्र व आचरण जैसा कुछ है, तुम्हें मालूम है।'

उनके दया-भाव ही का नतीजा था कि वे जुआ खेलते थे। उनका विचार था कि यह भी दानशीलता का एक रास्ता है, क्योंकि उन्हें जो लाभ मिलता या लाभ प्राप्त करने वालों के हिस्से से जो कुछ ज़्यादा बचा रहता, उसे मिस्कीनों (दीन-दुखियों) को दे देते थे। इसीलिए क़ुरआन ने शराब और जुए के लाभ का इंकार नहीं किया, बल्कि यह फ़रमाया कि—

'इन दोनों का गुनाह उनके लाभ से बढ़कर है।' (2 : 219)

2. वचन का पालन—यह भी अज्ञानता-युग के उच्च चरित्र में से है। वचन को उनके नज़दीक दीन (धर्म) की हैसियत हासिल थी, जिससे वे बहरहाल चिमटे रहते थे और इस राह में अपनी औलाद का ख़ून और अपने घर-बार की तबाही को भी कुछ नहीं समझते थे। इसे समझने के लिए हानी बिन मस्ऊद शैबानी,

समवाल बिन आदिया और हाजिब बिन ज़रारा की घटनाएं पर्याप्त हैं।[1]

3. **स्वाभिमान**—स्वाभिमान पर स्थिर रहना और ज़ुल्म और जब्र सहन न करना भी अज्ञानता के जाने-पहचाने चरित्र में से था। इसका नतीजा यह था कि उनकी वीरता और स्वाभिमान सीमा से बढ़ा हुआ था। वे तुरन्त भड़क उठते थे और छोटी-छोटी बात पर, जिससे अपमान की गंध आती, तलवारें खींच लेते और बड़ी ही ख़ूनी लड़ाई छेड़ देते। उन्हें इस राह में अपनी जान की कदापि परवाह न रहती।

4. **जो कह देते, वह कर बैठते**—अज्ञानियों की विशेषता यह भी थी कि जब वे किसी काम को अपनी बड़ाई का ज़रिया समझकर अंजाम देने पर तुल जाते, तो फिर कोई रुकावट उन्हें रोक न सकती थी, वे अपनी जान पर खेल कर उस काम को अंजाम दे डालते थे।

5. **सहनशीलता और गम्भीरता**—यह भी अज्ञानता-युग के लोगों के नज़दीक एक बड़ा गुण था, पर यह उनकी हद से बढ़ी हुई वीरता और लड़ाई के लिए हर वक़्त तैयार रहने की आदत की वजह से कम पाया जाता था।

6. **बदवी सादगी**—यानी सभ्यता की गन्दगियों और दांव-पेंच का न जानना और उनसे दूरी। इसका नतीजा यह था कि उनमें सच्चाई और अमानतदारी पाई जाती थी। वे धोखाधड़ी और वायदों के पूरा न करने से दूर रहते और इन चीज़ों से नफ़रत करते थे।

---

1. हानी बिन मसऊद की घटना हियरा की बादशाही के तहत गुज़र चुकी है। समवाल की घटना यह है कि इमरउल क़ैस ने उसके पास कुछ ज़िरहें अमानत के तौर पर रख छोड़ी थीं। हारिस बिन अबी शिम्र ग़स्सानी ने उन्हें उससे लेना चाहा। उसने इंकार कर दिया और तीमा में अपने महल के अन्दर क़िला बन्द हो गया। समवाल का एक बेटा क़िला से बाहर रह गया था। हारिस ने उसे गिरफ़्तार कर लिया और ज़िरहें न देने की शक्ल में क़त्ल की धमकी दी, पर समवाल इंकार पर अड़ा रहा। आख़िर हारिस ने उसके बेटे को उसकी आंखों के सामने क़त्ल कर दिया।

   हाजिब की घटना यह है कि उसके इलाक़े में अकाल पड़ा। उसने किसरा से उसकी अमलदारी की सीमा में अपनी क़ौम को ठहरने की इजाज़त चाही। किसरा को उनके फ़साद का डर हुआ, इसलिए ज़मानत के बग़ैर मंज़ूर न किया। हाजिब ने अपनी कमान रेहन रख दी और वायदे के मुताबिक़ अकाल समाप्त होने पर अपनी क़ौम को वापस ले गया और उनके बेटे हज़रत अतारिद बिन हाजिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने किसरा के पास जाकर बाप की अमानत वापस तलब की, जिसे किसरा ने उनकी वफ़ादारी को देखते हुए वापस कर दिया।

हम समझते हैं कि अरब प्रायद्वीप को सारी दुनिया से जो भौगोलिक संबंध था, उसके अलावा यही वे मूल्यवान गुण थे, जिनकी वजह से अरबों को मानव-जाति का नेतृत्व करने और आम लोगों के लिए रिसालत का बोझ उठाने के लिए चुना गया, क्योंकि ये चरित्र यद्यपि कभी-कभी फ़साद और बिगाड़ का कारण बन जाते थे और इनकी वजह से दुखद घटनाएं घट जाती थीं, लेकिन ये अपने आप में बड़े मूल्यवान गुण थे, जो थोड़ा सा सुधरने के बाद मानव-समाज के लिए बड़े ही उपयोगी बन सकते थे और यही काम इस्लाम ने अंजाम दिया।

शायद इन गुणों में भी वायदों का पूरा करना, उसके बाद स्वाभिमान और 'जो कह देते वह कर बैठते' सरीखे गुण सबसे ज़्यादा मूल्यवान गुण थे, क्योंकि महान शक्ति और दृढ़ संकल्प के बिना बिगाड़ और फ़साद का अन्त और न्याय-व्यवस्था की स्थापना संभव नहीं।

अज्ञानता-युग के लोगों के कुछ और भी अच्छे गुण थे, लेकिन यहां सबका उल्लेख करना आवश्यक नहीं है।

- नबी सल्ल० का वंश
- जन्म और बचपन

नबी सल्ल० का वंश

वंश

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वंश-क्रम तीन भागों में बांटा जा सकता है।

एक भाग, जिसके सही होने पर वंश-विशेषज्ञ सहमत हैं, यह अदनान तक पहुंचता है।

दूसरा भाग, जिसमें विशेषज्ञों का मतभेद है, किसी ने माना, किसी ने नहीं माना, यह अदनान से ऊपर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तक का है।

तीसरा भाग, जिसमें निश्चित रूप से कुछ ग़लतियां हैं। यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से ऊपर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तक जाता है। इसकी ओर इशारा गुज़र चुका है। नीचे इन तीनों भागों को कुछ विस्तार में लिखा जा रहा है।

पहला भाग—मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब (शैबा) बिन हाशिम (अम्र) बिन अब्दे मुनाफ़ (मुग़ीरह) बिन क़ुसई (ज़ैद) बिन किलाब बिन मुर्रा बिन काब बिन लुई बिन ग़ालिब बिन फ़ह्र (इन्हीं की उपाधि क़ुरैश थी, और क़बीला क़ुरैश इन्हीं से जुड़ा हुआ है) बिन मालिक बिन नज़्र (क़ैस) बिन किनाना बिन ख़ुज़ैमा बिन मुदरिका (आमिर) बिन इलयास बिन मुज़र बिन नज़्ज़ार बिन मअद्द बिन अदनान।[1]

दूसरा भाग—अदनान से ऊपर यानी अदनान बिन औ बिन हमीसा बिन सलामान, बिन औस बिन पोज बिन क़मवाल बिन उबई बिन अव्वाम बिन नाशिद बिन हज़ा बिन बलदास बिन यदलाफ़ बिन ताबिख बिन जाहिम बिन नाहिश बिन माख़ी बिन ऐज़ बिन अबक़र बिन उबैद बिन दुआ बिन हमदान बिन संबर बिन यसरिबी बिन यहज़न बिन यलहन बिन उरअवी बिन ऐज़ बिन ज़ीशान बिन ऐसर बिन अफ़नाद बिन ऐहाम बिन मक़्सर बिन नाहिस बिन ज़ारेह बिन समी बिन मज़ी बिन अवज़ा बिन अराम बिन क़ीदार बिन इसमाईल बिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम।[2]

---

1. इब्ने हिशाम 1/201, तारीख़े तबरी 2/23, 271
2. इसे इब्ने साद ने तबक़ात 1/56, 57 में इब्ने कलबी की रिवायत से लिया है और उसके तरीक़ से तबरी ने अपनी तारीख़ 2/272 में उल्लेख किया है। इस हिस्से का कुछ मतभेद देखने के लिए देखिए तबरी 2/271, 276, फ़त्हुल बारी 6/621, 623,

तीसरा भाग—हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से ऊपर। इब्राहीम बिन तारेह (आज़र) बिन नाहूर बिन सारूअ (या सारुग़) बिन राअू बिन फ़ालिख़ बिन आबिर बिन शालिख़ बिन अरफ़ख़शद बिन साम बिन नूह अलैहिस्सलाम बिन लामिक बिन मतवशलिख़ बिन अख़नूख़ (कहा जाता है कि यह इदरीस अलै० का नाम है) बिन यर्द बिन महलाईल बिन क़ीनान बिन आनूशा बिन शीस बिन आदम अलैहिस्सलाम।[1]

परिवार

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का परिवार अपने पूर्वज हाशिम बिन अब्दे मुनाफ़ से जुड़ने से हाशमी परिवार के नाम से प्रसिद्ध है। इसलिए मुनासिब मालूम होता है कि हाशिम और उसके बाद के कुछ लोगों के संक्षिप्त हालात पेश कर दिए जाएं।

1. हाशिम—हम बता चुके हैं कि जब बनू अब्दे मुनाफ़ और बनू अब्दुद्दार के बीच पदों के बंटवारे पर समझौता हो गया तो अब्दे मुनाफ़ की सन्तान में हाशिम ही को सिक़ाया और रिफ़ादा यानी हाजियों को पानी पिलाने और उनका सत्कार करने का पद प्राप्त हुआ। हाशिम बड़े प्रतिष्ठित और मालदार व्यक्ति थे। यह पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने मक्के में हाजियों को शोरबा रोटी सान कर खिलाने का प्रबन्ध किया। उनका असल नाम अम्र था, लेकिन रोटी तोड़ कर शोरबे में सानने की वजह से उनको हाशिम कहा जाने लगा, क्योंकि हाशिम का अर्थ है तोड़ने वाला, फिर यही हाशिम वह पहले आदमी हैं, जिन्होंने क़ुरैश के लिए गर्मी और जाड़े की दो वार्षिक व्यापारिक यात्राओं की बुनियाद रखी। उनके बारे में कवि कहता है—

'यह अम्र ही हैं, जिन्होंने अकाल की मारी हुई अपनी कमज़ोर क़ौम को मक्के में रोटियां तोड़ कर शोरबे में भिगो-भिगोकर खिलाई और जाड़े और गर्मी की दोनों यात्राओं की बुनियाद रखी।'

उनकी एक महत्वपूर्ण घटना यह है कि वे व्यापार के लिए शाम देश गये। रास्ते में मदीना पहुंचे तो वहां क़बीला बनी नज्जार की एक महिला सलमा बिन्त अम्र से विवाह कर लिया और कुछ दिनों वहीं ठहरे रहे। फिर बीवी को हमल की हालत में मां के यहां ही छोड़कर शाम देश रवाना हो गए और वहां जाकर फ़लस्तीन के शहर ग़ज़्ज़ा में देहान्त हो गया। इधर सलमा के पेट से बच्चा पैदा

---

1. इब्ने हिशाम 1/2-4 तारीखे तबरी 2/276, कुछ नामों के बारे में इन स्रोतों में मतभेद भी है और कुछ नाम कुछ स्रोतों से निकाल दिए गए हैं।

हुआ। यह सन् 497 ई० की बात है, चूंकि बच्चे के सर के बालों में सफ़ेदी थी, इसलिए सलमा ने उसका नाम शैबा रखा[1]

और यसरिब में अपनी मां के घर ही में उसकी परवरिश की। आगे चलकर यही बच्चा अब्दुल मुत्तलिब के नाम से प्रसिद्ध हुआ। एक समय तक हाशिम परिवार के किसी व्यक्ति को उसके अस्तित्व का ज्ञान न हो सका। हाशिम के कुल चार बेटे और पांच बेटियां थीं। असद, अबू सैफ़ी, फ़ुज़ला, अब्दुल मुत्तलिब—शिफ़ा, ख़ालिदा, ज़ईफ़ा, रुक़ैया और जन्नः।[2]

2. अब्दुल मुत्तलिब—पिछले पृष्ठों से मालूम हो चुका है कि सिक़ाया और रिफ़ादा का पद हाशिम के बाद उनके भाई मुत्तलिब को मिला। इनमें भी बड़ी ख़ूबियां थीं, और इन्हें भी अपनी क़ौम में बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त थी। इनकी बात टाली नहीं जाती थी। इनकी दानशीलता के कारण क़ुरैश ने इनको दानी की उपाधि दे रखी थी। जब शैबा यानी अब्दुल मुत्तलिब, सात या आठ वर्ष के हो गए तो मुत्तलिब को इनके बारे में मालूम हुआ और वह इन्हें लेने के लिए रवाना हुए। जब यसरिब के क़रीब पहुंचे और शैबा पर नज़र पड़ी तो आंखों में आंसू आ गए। उन्हें सीने से लगा लिया और फिर अपनी सवारी पर पीछे बिठाकर मक्का के लिए रवाना हो गये। मगर शैबा ने मां की इजाज़त के बिना साथ जाने से इंकार कर दिया। इसलिए मुत्तलिब उनकी मां से इजाज़त चाहने लगे, पर मां ने इजाज़त न दी, आख़िर मुत्तलिब ने कहा कि यह अपने बाप की हुकूमत और अल्लाह के हरम की ओर जा रहे हैं, इस पर मां ने इजाज़त दे दी और मुत्तलिब इन्हें ऊंट पर बिठा कर मक्का ले आए। मक्का वालों ने देखा तो कहा, यह अब्दुल मुत्तलिब है, यानी मुत्तलिब का दास है। मुत्तलिब ने कहा, नहीं, नहीं, यह मेरा भतीजा अर्थात मेरे भाई हाशिम का लड़का है। फिर शैबा मुत्तलिब के पास पले-बढ़े और जवान हुए। इसके बाद रोमान (यमन) नामी जगह पर मुत्तलिब की मृत्यु हो गई और उनके छोड़े हुए पद अब्दुल मुत्तलिब को मिल गए। अब्दुल मुत्तलिब ने अपनी क़ौम में इतना ऊंचा स्थान प्राप्त किया कि उनके बाप-दादों में भी कोई इस स्थान को न पहुंच सका था। क़ौम ने उन्हें दिल से चाहा और उनका बड़ा मान-सम्मान किया।[3]

---

1. इब्ने हिशाम 1/157, मऔर्राज़ुल अन्फ़ और वहां अल अस्याफ़ की जगह अल-ईलाफ़ है।
2. इब्ने हिशाम, 1/157,
3. इब्ने हिशाम, 7/137-138, उम्र का निर्धारण तारीख़े तबरी 2/247 में है।

जब मुत्तलिब की मृत्यु हो गई तो नौफ़ुल ने अब्दुल मुत्तलिब के आंगन पर बलात् क़ब्ज़ा कर लिया। अब्दुल मुत्तलिब ने कुरैश के कुछ लोगों से अपने चचा के ख़िलाफ़ मदद चाही, लेकिन उन्होंने यह कहकर विवशता व्यक्त कर दी कि हम तुम्हारे और तुम्हारे चचा के बीच हस्तक्षेप नहीं कर सकते। आख़िर अब्दुल मुत्तलिब ने बनी नज्जार में अपने मामा को कुछ कविता लिख भेजी जिसमें उनसे सहायता मांगी थी। जवाब में उनका मामा अबू साद बिन अदी अस्सी सवार लेकर रवाना हुआ और मक्का के क़रीब अबतह में उतरा। अब्दुल मुत्तलिब ने वहीं मुलाक़ात की और कहा, मामूं जान! घर तशरीफ़ ले चलें।

अबू साद ने कहा, नहीं, ख़ुदा की क़सम! यहां तक कि नैफ़ुल से मिल लूं।

इसके बाद अबू साद आगे बढ़ा और नौफ़ुल के सर पर आ खड़ा हुआ। नौफ़ुल हतीम में कुरैश के सरदारों के साथ बैठा था। अबू साद ने तलवार भांजते हुए कहा—

'इस घर के रब की क़सम! अगर तुमने मेरे भांजे की ज़मीन वापस न की, तो यह तलवार तुम्हारे अन्दर घुसा दूंगा।'

नौफ़ुल ने कहा, 'अच्छा लो, मैंने वापस कर दी।'

इस पर अबू साद ने कुरैश के सरदारों को गवाह बनाया, फिर अब्दुल मुत्तलिब के घर गया और तीन दिन ठहर कर उमरा करने के बाद मदीना वापस चला गया।

इस घटना के बाद नौफ़ुल ने बनी हाशिम के ख़िलाफ़ बनी अब्दे शम्स से आपस में एक दूसरे की सहायता का समझौता किया। इधर बनू ख़ुज़ाआ ने देखा कि बनू नज्जार ने अब्दुल मुत्तलिब की इस तरह मदद की है, तो कहने लगे कि अब्दुल मुत्तलिब जिस तरह तुम्हारी सन्तान है, हमारी भी सन्तान है, इसलिए हम पर उसकी मदद का हक़ ज़्यादा है।

इसकी वजह यह थी कि अब्दे मुनाफ़ की मां क़बीला ख़ुज़ाआ ही से ताल्लुक़ रखती थीं, चुनांचे बनू ख़ुज़ाआ ने दारुन्नदवा में जाकर बनू अब्द शम्स और बनी नौफ़ुल के ख़िलाफ़ बनू हाशिम से सहयोग का समझौता किया। यही समझौता था जो आगे चलकर इस्लामी युग में मक्का विजय का कारण बना। विस्तृत विवरण आगे आ रहा है।[1]

बैतुल्लाह के ताल्लुक़ से अब्दुल मुत्तलिब के साथ दो महत्वपूर्ण घटनाएं घटीं—

---

1. तबरी ने अपनी तारीख़ 2/248, 251 में और दूसरे लेखकों ने अपनी किताबों में उसका विवरण दिया है।

एक ज़मज़म के कुंएं की खुदाई की घटना, और

दूसरी हाथी की घटना।

ज़मज़म के कुंएं की खुदाई

पहली घटना का सार यह है कि अब्दुल मुत्तलिब ने सपना देखा कि उन्हें ज़मज़म का कुंवां खोदने का हुक्म दिया जा रहा है और सपने ही में उन्हें उसकी जगह भी बताई गई। उन्होंने जागने के बाद खुदाई शुरू की और धीरे-धीरे वे चीज़ें बरामद हुई जिन्हें बनू जुरहुम ने मक्का छोड़ते वक़्त ज़मज़म के कुंएं में गाड़ दी थीं अर्थात तलवारें, कवच और सोने के दोनों हिरन। अब्दुल मुत्तलिब ने तलवारों से काबे का दरवाज़ा ढाला। सोने के दोनों हिरन भी दरवाज़े ही में फ़िट किए और हाजियों को ज़मज़म पिलाने की व्यवस्था की।

खुदाई के दौरान यह घटना भी घटी कि जब ज़मज़म का कुंवां प्रकट हो गया तो क़ुरैश ने अब्दुल मुत्तलिब से झगड़ा शुरू किया और मांग की कि हमें भी खुदाई में शरीक कर लो। अब्दुल मुत्तलिब ने कहा, मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं इस काम के लिए मुख्य रूप से नियुक्त किया गया हूं, लेकिन क़ुरैश के लोग न माने, यहां तक कि फ़ैसले के लिए बनू साद की काहिना औरत के पास जाना तै हुआ और लोग मक्का से रवाना भी हो गए, लेकिन रास्ते में पानी ख़त्म हो गया। अल्लाह ने अब्दुल मुत्तलिब पर बारिश बरसाई, जिससे उन्हें ज़्यादा पानी मिल गया, जबकि विरोधियों पर एक बूंद पानी न बरसा। वे समझ गए कि ज़मज़म का काम क़ुदरत की ओर से अब्दुल मुत्तलिब के साथ मुख्य है, इसलिए रास्ते ही से वापस पलट आए। यही मौक़ा था जब अब्दुल मुत्तलिब ने मन्नत मानी कि अगर अल्लाह ने उन्हें दस लड़के दिए और वे सब के सब इस उम्र को पहुंचे कि उनका बचाव कर सकें तो वह एक लड़के को काबे के पास क़ुर्बान कर देंगे।[1]

हाथी की घटना

दूसरी घटना का सार यह है कि अबरहा सबाह हब्शी ने जो नजाशी बादशाह हब्श की ओर से यमन का गवर्नर जनरल था, जब देखा कि अरब ख़ाना काबा का हज करते हैं तो सनआ में एक बहुत बड़ा चर्च बनवाया और चाहा कि अरब का हज उसी की ओर फेर दे, मगर जब इसकी खबर बनू किनाना के एक व्यक्ति को हुई तो उसने रात के वक़्त चर्च में घुस कर उसके क़िबले पर पाख़ाना पोत दिया, अबरहा को पता चला तो बहुत बिगड़ा और साठ हज़ार की एक भारी सेना

---

1. इब्ने हिशाम, 1/142-147

लेकर काबा को ढाने के लिए निकल खड़ा हुआ। उसने अपने लिए एक ज़बरदस्त हाथी भी चुना। सेना में कुल नौ या तेरह हाथी थे। अबरहा यमन से धावा बोलता हुआ मुग़म्मस पहुंचा और वहां अपनी सेना को तर्तीब देकर और हाथी को तैयार करके मक्के में दाख़िले के लिए चल पड़ा। जब मुज़दलफ़ा और मिना के बीच मुहस्सिर की घाटी में पहुंचा तो हाथी बैठ गया और काबे की ओर बढ़ने के लिए किसी तरह न उठा। उसका रुख़ उत्तर दक्षिण या पूरब की ओर किया जाता तो उठकर दौड़ने लगता, लेकिन काबे की ओर किया जाता, तो बैठ जाता। इसी बीच अल्लाह ने चिड़ियों का एक झुंड भेज दिया, जिसने सेना पर ठीकरी जैसे पत्थर गिराए और अल्लाह ने उसी से उन्हें खाए हुए भुस की तरह बना दिया। ये चिड़ियां अबाबील जैसी थीं। हर चिड़िया के पास तीन-तीन कंकड़ियां थीं—एक चोंच में और दो पंजों में। कंकड़ियां चने जैसी थीं, मगर जिस किसी को लग जाती थीं, उसके अंग कटना शुरू हो जाते थे और वह मर जाता था। ये कंकड़ियां हर आदमी को नहीं लगी थीं, लेकिन सेना में ऐसी भगदड़ मची कि हर व्यक्ति दूसरे को रौंदता-कुचलता गिरता-पड़ता भाग रहा था। फिर भागने वाले हर राह पर गिर रहे थे और हर चश्मे पर मर रहे थे। इधर अबरहा पर अल्लाह ने ऐसी आफ़त भेजी कि उसकी उंगलियों के पोर झड़ गए और सनआ पहुंचते-पहुंचते चूज़े जैसा हो गया। फिर उसका सीनः फट गया, दिल बाहर निकल आया और वह मर गया।

अबरहा के इस हमले के मौक़े पर मक्का के निवासी जान के डर से घाटियों में बिखर गए थे और पहाड़ की चोटियों पर जा छिपे थे। जब सेना पर अज़ाब आ गया तो इत्मीनान से अपने घरों को पलट आए।[1]

यह घटना, अधिकांश विशेषज्ञों के अनुसार, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश से सिर्फ़ पचास या पचपन दिन पहले मुहर्रम महीनें में घटी थी, इसलिए यह सन् 571 ई० की फ़रवरी के आख़िर की या मार्च के शुरू की घटना है। सच तो यह है कि यह एक आरंभिक निशानी थी जो अल्लाह ने अपने नबी और अपने काबा के लिए ज़ाहिर फ़रमाई थी, क्योंकि आप बैतुल-मक़्दिस को देखिए कि अपने युग में मुसलमानों का क़िबला था और वहां के रहने वाले मुसलमान थे। इसके बावजूद उस पर अल्लाह के दुश्मन अर्थात मुश्रिकों का क़ब्ज़ा हो गया था, जैसा कि बख़्ते नस्र के हमले (587 ई०पू०) और रूम वालों के क़ब्ज़े (सन् 70 ई०) से ज़ाहिर है। लेकिन इसके बिल्कुल उलट काबे पर ईसाइयों को क़ब्ज़ा न मिल सका, हालांकि

---

1. इब्ने हिशाम 1/43-56 और तफ़्सीर की किताबें, तफ़्सीर सूरः फ़ील

उस वक़्त यही मुसलमान थे और काबे के रहने वाले मुश्रिक थे।

फिर यह घटना ऐसी परिस्थितियों में घटित हुई कि इसकी ख़बर उस वक़्त के सभ्य जगत के अधिकांश क्षेत्रों अर्थात रूम और फ़ारस में तुरन्त पहुंच गई, क्योंकि हब्शा का रूमियों से बड़ा गहरा ताल्लुक़ था और दूसरी ओर फ़ारसियों की नज़र रूमियों पर बराबर रहती थी और वह रूमियों और उनके मित्रों के साथ होने वाली घटनाओं का बराबर जायज़ा लेते रहते थे। यही वजह है कि इस घटना के बाद फ़ारस वालों ने यमन पर बड़ी तेज़ी से क़ब्ज़ा कर लिया। अब चूंकि यही दो राज्य उस वक़्त सभ्य जगत के अहम भाग के प्रतिनिधि थे, इसलिए इस घटना की वजह से दुनिया की निगाहें ख़ाना काबा की ओर उठने लगीं। उन्हें बैतुल्लाह की बड़ाई का एक खुला हुआ ख़ुदा का निशान दिखाई पड़ गया और यह बात दिलों में अच्छी तरह बैठ गई कि इस घर को अल्लाह ने पावनता के लिए चुन लिया है, इसलिए आगे यहां की आबादी से किसी व्यक्ति का नबी होने के दावे के साथ उठना इस घटना के तक़ाज़े के अनुकूल ही होगा और उस ख़ुदाई हिक्मत की तफ़्सीर होगा जो कार्य-कारण के नियम से ऊपर उठकर ईमान वालों के ख़िलाफ़ मुश्रिकों की सहायता में छिपी हुई थी।

अब्दुल मुत्तलिब के कुल दस बेटे थे, जिनके नाम ये हैं—

1. हारिस, 2. ज़ुबैर, 3. अबू तालिब, 4. अब्दुल्लाह, 5. हमज़ा, 6. अबूलहब, 7. ग़ैदाक़, 8. मक़ूम, 9. सफ़ार, 10. और अब्बास। कुछ ने कहा कि ग्यारह थे। एक का नाम क़सम था और कुछ और लोगों ने कहा है कि तेरह थे, एक का नाम अब्दुल काबा था और एक का नाम हज्ल था, लेकिन दस मानने वालों का कहना है कि मक़ूम ही का दूसरा नाम अब्दुल काबा और ग़ैदाक़ का दूसरा नाम हज्ल था और क़स्म नाम का कोई व्यक्ति अब्दुल मुत्तलिब की सन्तान में न था। अब्दुल मुत्तलिब की बेटियां छः थीं, नाम इस तरह हैं—

1. उम्मुल हकीम, इनका नाम बैज़ा है, 2. बर्रा, 3. आतिका, 4. सफ़िया, 5. अरवा, 6. और उमैमा।[1]

3. अब्दुल्लाह, प्यारे नबी सल्ल० के पिता

इनकी मां का नाम फ़ातमा था और वह अम्र बिन आइज़ बिन इम्रान बिन मख़्ज़ूम बिन यक़ज़ा बिन मुर्रा की बेटी थीं। अब्दुल मुत्तलिब की सन्तान में अब्दुल्लाह सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत, पाक दामन और चहेते थे और 'ज़बीह'

---

1. सीरत इब्ने हिशाम, 1/108, 109 तलक़ीहुल फ़हूम, पृ० 8-9,

कहलाते थे। ज़बीह कहलाने की वजह यह थी कि जब अब्दुल मुत्तलिब के लड़कों की तायदाद पूरी दस हो गई और वे बचाव करने के योग्य हो गये, तो अब्दुल मुत्तलिब ने उन्हें अपनी मन्नत बता दी। सब ने बात मान ली। इसके बाद कहा जाता है कि अब्दुल मुत्तलिब ने उनके दर्मियान क़ुरआअन्दाज़ी की तो क़ुरआ अब्दुल्लाह के नाम निकला। वह सबसे प्रिय थे, इसलिए अब्दुल मुत्तलिब ने कहा कि 'ऐ अल्लाह! वह या सौ ऊंट? फिर उनके और ऊंटों के दर्मियान क़ुरआअन्दाज़ी की तो क़ुरआ सौ ऊंटों पर निकल आया।[1] और कहा जाता है कि अब्दुल मुत्तलिब ने भाग्य के तीरों पर इन सब के नाम लिखे और हुबल के निगरां के हवाले किया। निगरां ने तीरों को गर्दिश देकर क़ुरआ निकाला, तो अब्दुल्लाह का नाम निकला। अब्दुल मुत्तलिब ने अब्दुल्लाह का हाथ पकड़ा, छुरी ली और ज़िब्ह करने के लिए ख़ाना काबा के पास ले गये लेकिन क़ुरैश और ख़ास तौर से अब्दुल्लाह के ननिहाल वाले अर्थात बनू मख़्ज़ूम और अब्दुल्लाह के भाई अबू तालिब आड़े आए।

अब्दुल मुत्तलिब ने कहा, तब मैं अपनी मन्नत का क्या करूं?

उन्होंने मश्विरा दिया कि वह किसी महिला अर्राफ़ा के पास जाकर हल मालूम कर लें।

अब्दुल मुत्तलिब अर्राफ़ा के पास गए। उसने कहा कि अब्दुल्लह और दस ऊंटों के दर्मियान क़ुरआ डालें। अगर अब्दुल्लाह के नाम क़ुरआ निकले तो दस ऊंट और बढ़ा दें। इस तरह ऊंट बढ़ाते जाएं और क़ुरआ निकालते जाएं, यहां तक कि अल्लाह राज़ी हो जाए। फिर ऊंटों के नाम क़ुरआ निकल आए तो उन्हें ज़िब्ह कर दें।

अब्दुल मुत्तलिब ने वापस आकर अब्दुल्लाह और दस ऊंटों के बीच क़ुरआ डाला, मगर क़ुरआ अब्दुल्लाह के नाम निकला। इसके बाद वह दस-दस ऊंट बढ़ाते गए और क़ुरआ डालते गये, मगर क़ुरआ अब्दुल्लाह के नाम ही निकलता रहा। जब सौ ऊंट पूरे हो गये, तो क़ुरआ ऊंटों के नाम निकला। अब अब्दुल मुत्तलिब ने उन्हें अब्दुल्लाह के बदले ज़िब्ह कर दिया और वहीं छोड़ दिया। किसी इंसान या दरिंदे के लिए कोई रुकावट न थी। इस घटना से पहले क़ुरैश और अरब में ख़ून बहा (दियत) की मात्रा दस ऊंट थी, पर इस घटना के बाद सौ कर दी गई। इस्लाम ने भी इस मात्रा को बाक़ी रखा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आपका यह इर्शाद रिवायत किया जाता है कि मैं दो ज़बीह की सन्तान

---

1. तारीख़े तबरी 2/239

हूं—एक हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम और दूसरे आपके पिता अब्दुल्लाह।[1]

अब्दुल मुत्तलिब ने अपने बेटे अब्दुल्लाह की शादी के लिए हज़रत आमना को चुना जो वह्ब बिन अब्दे मुनाफ़ बिन ज़ोहरा बिन किलाब की सुपुत्री थीं और वंश और पद की दृष्टि से क़ुरैश की उच्चतम महिला मानी जाती थीं। उनके पिता वंश और श्रेष्ठता की दृष्टि से बनू ज़ोहरा के सरदार थे। वह मक्का ही में विदा होकर हज़रत अब्दुल्लाह के पास आईं, मगर थोड़े दिनों बाद अब्दुल्लाह को अब्दुल मुत्तलिब ने खजूर लाने के लिए मदीना भेजा और उनका वहीं देहान्त हो गया।

कुछ सीरत के विशेषज्ञ कहते हैं कि वह व्यापार के लिए शाम देश गए हुए थे। क़ुरैश के एक क़ाफ़िले के साथ वापस आते हुए बीमार होकर मदीना उतरे और देहान्त हो गया। नाबग़ा जादी के मकान में दफ़न किए गए। उस वक़्त उनकी उम्र 25 वर्ष थी। अधिकांश इतिहासकार के अनुसार अभी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैदा नहीं हुए थे, अलबत्ता कुछ सीरत लिखने वाले कहते हैं कि आपका जन्म उनके देहान्त से दो महीने पहले हो चुका था।[2]

जब उनके देहान्त की ख़बर मक्का पहुंची, तो हज़रत आमना ने बड़ा ही दर्द भरा मर्सिया (शोक गीत) कहा, जो यह है—

'बतहा की गोद हाशिम के बेटे से ख़ाली हो गई। वह चीख़-पुकार के दर्मियान एक क़ब्र में सो गया। उसे मौत ने एक पुकार लगाई और उसने 'हां' कह दिया। अब मौत ने लोगों में इब्ने हाशिम जैसा कोई इंसान नहीं छोड़ा। (कितनी हसरत भरी थी) वह शाम जब लोग उन्हें तख़्त पर उठाए ले जा रहे थे। अगर मौत और मौत की घटना ने उनका वजूद ख़त्म कर दिया है, (तो उनके चरित्र के चिह्न नहीं मिटाए जा सकते) वह बड़े दाता और दयालु थे।'[3]

अब्दुल्लाह का छोड़ा हुआ कुल सामान यह था—

पांच ऊंट, बकरियों का रेवड़, एक हब्शी लौंडी जिनका नाम बरकत था और उपनाम उम्मे ऐमन, यही उम्मे ऐमन हैं, जिन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गोद में खिलाया था।[4]

---

1. इब्ने हिशाम 1/151-155, तारीख़े तबरी 2/240-243,
2. इब्ने हिशाम 1/156, 158, तारीख़े तबरी 2/46, अर-रौज़ुल उन्फ़ 1/184
3. तबक़ाते इब्ने साद 1/100
4. सहीह मुस्लिम 2/96, तलक़ीहुल फ़हूम, पृ० 14

जन्म और पाक ज़िंदगी के चालीस साल

जन्म

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में शाबे बनी हाशिम के अन्दर 9 रबीउल अव्वल सन् 01 आमुल फ़ील (हाथी का साल) सोमवार के दिन सुबह के वक़्त पैदा हुए।[1] उस वक़्त नौशेरवां के सत्तासीन होने का चालीसवां साल था और 20 या 22 अप्रैल सन् 571 ई० की तारीख़ थी। अल्लामा मुहम्मद सुलैमान साहब सलमान मन्सूरपुरी रह० और महमूद पाशा फ़लकी की खोज यही है।[2]

इब्ने साद की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मां ने फ़रमाया, जब आपका जन्म हुआ, तो मेरे जिस्म से एक नूर निकला, जिससे शाम देश के महल रोशन हो गए। इमाम अहमद और दारमी आदि ने हज़रत इरबाज़ बिन सारिया से भी लगभग इसी विषय की एक रिवायत नक़ल फ़रमाई है।[3]

कुछ रिवायतों में बताया गया है कि जन्म के समय कुछ घटनाएं नुबूवत का पता देने वाली भी हुईं, अर्थात किसरा के महल के चौदह कंगूरे गिर गए, मजूस का अग्निकुंड ठंडा हो गया। सारा सागर सूख गया और उसके गिरजे ढह गए। यह तबरी और बैहक़ी वग़ैरह की रिवायत है[4], मगर इसकी सनद के लिए सबूत नहीं मिल सका है और इन क़ौमों की तारीख़ से भी इसकी कोई गवाही नहीं मिलती, हालांकि इन घटनाओं को लिपिबद्ध किए जाने का मज़बूत तत्त्व मौजूद था।

जन्म के बाद आपकी मां ने अब्दुल मुत्तलिब के पास पोते की शुभ-सूचना भिजवाई। वह ख़ुश-ख़ुश तशरीफ़ लाए और आपको ख़ाना काबा में ले जाकर अल्लाह से दुआ की और उसका शुक्र अदा किया[5] और आपका नाम मुहम्मद

---

1. देखिए नताइजुल इफ़्हाम फ़ी तक़्वीमिल अरब क़ब्लल इस्लाम, पृ० 28, 35, लेख : महमूद पाशा फ़लकी, एडीशन बैरूत,
2. 20 अप्रैल पुराने ईसवी कैलेंडर के मुताबिक़ और 22 अप्रैल नए ईसवीं कैलेंडर के मुताबिक़। विस्तृत विवरण के लिए देखिए रहमतुल लिल आलमीन 1/38, 39, 3/360, 361
3. मुस्नद अहमद 4/127, 128, 185, 5/262, सुनन दारमी 1/9, इब्ने साद 1/201,
4. दलाइलुन्नुबूव:, बैहक़ी 1/126, 127, तारीख़े तबरी 2166
5. इब्ने हिशाम 1/159, 160, तारीख़ तबरी 2/156, 157, इब्ने साद 1/103

रखा। यह नाम अरब में जाना-पहचाना न था। फिर अरब रिवाज के मुताबिक़ सातवें दिन ख़त्ना किया।[1]

आपको आपकी मां के एक सप्ताह[2] बाद सबसे पहले अबू लहब की लौंडी सुवैबा ने दूध पिलाया। उस वक़्त उसकी गोद में जो बच्चा था, उसका नाम मसरूह था। सुवैबा ने आपसे पहले हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब को और आपके बाद अबू सलमा बिन अब्दुल असद मख़्ज़ूमी को भी दूध पिलाया था।[3]

बनी साद में

अरब के नगरों में रहने वालों का तरीक़ा था कि वे अपने बच्चों को नगर के रोगों से दूर रखने के लिए दूध पिलाने वाली बदवी औरतों के हवाले कर दिया करते थे, ताकि उनके देह ताक़तवर और अंग मज़बूत हों और अपने पालने ही से शुद्ध और ठोस अरबी भाषा सीख सकें। इसी रिवाज के मुताबिक़ अब्दुल मुत्तलिब ने दूध पिलाने वाली दाई खोजी और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत हलीमा बिन्त अबी ज़ुवैब के हवाले किया। यह क़बीला बनी साद बिन बिक्र की एक महिला थीं। इनके शौहर का नाम हारिस बिन अब्दुल उज़्ज़ा और उपनाम अबू कबशा था और वह भी क़बीला बनू साद से ताल्लुक़ रखते थे।

हारिस की औलाद के नाम ये हैं जो दूध पिलाने की वजह से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भाई-बहन थे—

अब्दुल्लाह, अनीसा, हुज़ाफ़ा या जुज़ामा, इन्हीं की उपाधि शैमा थी और इसी नाम से वह ज़्यादा मशहूर हुई। वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गोद खिलाया करती थीं। इनके अलावा अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब जो अल्लाह के रसूल सल्ल० के चचेरे भाई थे, वह भी हज़रत हलीमा के वास्ते से आपके दूध शरीक भाई थे। आपके चचा हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब भी दूध पिलाने के लिए बनू साद की एक औरत के हवाले किए गए थे। उस औरत ने भी एक दिन जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत हलीमा के पास थे, आपको दूध पिला

---

1. कहा जाता है कि आप 'मख़्तून' (ख़त्ना किए हुए) पैदा हुए थे। देखिए तलक़ीहुल फ़हूम पृ० 4, मगर इब्ने क़य्यिम कहते हैं कि इस बारे में कोई साबित हदीस नहीं है, देखिए ज़ादुल मुआद 1/18
2. इत्तिहाफ़ुलवरा 1/57
3. सहीह बुख़ारी हदीस न० 2645, 5100, 5101, 5106, 5107, 5372, तारीख़े तबरी 2/158, तबरी की इस रिवायत की सनद पर कलाम है। दलाइलुन्नुबूवः 1/57

दिया। इस तरह आप और हज़रत हमज़ा दोहरे दूध शरीक भाई हो गए, एक सुवैबा के ताल्लुक़ से और दूसरे बनू साद की उस औरत के ताल्लुक़ से।[1]

दूध पिलाने के दौरान हज़रत हलीमा ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बरकत के ऐसे-ऐसे दृश्य देखे कि पूरी तरह चकित रह गईं। विवरण उन्हीं के मुख से सुनिए।

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि हज़रत हलीमा बयान किया करती थीं कि वह अपने शौहर के साथ अपना एक छोटा सा दूध पीता बच्चा लेकर बनी साद की कुछ औरतों के क़ाफ़िले में अपने नगर से बाहर दूध पीने वाले बच्चों की खोज में निकलीं। ये भुखमरी के दिन थे और अकाल ने कुछ बाक़ी न छोड़ा था। मैं अपनी एक सफ़ेद गधी पर सवार थी और हमारे पास एक ऊंटनी थी, लेकिन, ख़ुदा की क़सम! उससे एक बूंद दूध न निकलता था। इधर भूख से बच्चा इतना बिलखता था कि हम रात भर सो नहीं सकते थे, न मेरे सीने में बच्चे के लिए कुछ था, न ऊंटनी उसका भोजन दे सकती थी, बस हम वर्षा और समृद्धि की आस लगाए बैठे थे। मैं अपनी गधी पर सवार होकर चली तो वह कमज़ोरी और दुबलेपन की वजह से इतनी सुस्त रफ़्तार निकली कि पूरा क़ाफ़िला तंग आ गया। ख़ैर, हम किसी न किसी तरह दूध पीने वाले बच्चों की खोज में मक्का पहुंच गए। फिर हम में से कोई औरत ऐसी नहीं थी, जिसके सामने अल्लाह के रसूल सल्ल० को पेश न किया गया हो, पर जब उसे बताया जाता कि आप यतीम हैं, तो वह आपको लेने से इंकार कर देती, क्योंकि हम बच्चे के बाप से दान-दक्षिणा की आशा रखते हैं। हम कहते कि यह तो यतीम हैं, भला इसकी विधवा मां और इसके दादा क्या दे सकते हैं। बस यही वजह थी कि हम आपको लेना नहीं चाहते थे।

इधर जितनी औरतें मेरे साथ आई थीं, सबको कोई न कोई बच्चा मिल गया, सिर्फ मुझ ही को न मिल सका। जब वापसी की बारी आई, तो मैंने अपने शौहर से कहा, ख़ुदा की क़सम! मुझे अच्छा नहीं लगता कि मेरी सारी सहेलियां तो बच्चे ले-लेकर जाएं और अकेली मैं कोई बच्चा लिए बिना वापस जाऊं। मैं जाकर उसी यतीम बच्चे को लिए लेती हूं। शौहर ने कहा, कोई हरज नहीं। मुम्किन है अल्लाह हमारे लिए इसी में बकरत दे। इसके बाद मैंने जाकर बच्चा ले लिया और सिर्फ़ इस वजह से ले लिया कि कोई और बच्चा न मिल सका।

हज़रत हलीमा कहती हैं कि जब मैं बच्चे को लेकर अपने डेरे पर वापस

---

1. ज़ादुलमआद 1/19

आई और उसे अपनी गोद में रखा, तो उसने जितना चाहा, दोनों सीने दूध के साथ उस पर उमंड पड़े और उसने पेट भर कर पिया। उसके साथ उसके भाई ने भी पेट भर कर पिया, दोनों सो गये, हालांकि इससे पहले हम अपने बच्चे के साथ सो नहीं सकते थे। इधर मेरे शौहर ऊंटनी दूहने गए, तो देखा कि उसका थन दूध से भरा हुआ है। उन्होंने इतना दूध दूहा कि हम दोनों ने ख़ूब जी भर कर पिया और बड़े आराम से रात गुज़री।

इनका बयान है कि सुबह हुई तो मेरे शौहर ने कहा, हलीमा! ख़ुदा की क़सम! तुमने एक बरकत वाली रूह हासिल की है।

मैंने कहा, मुझे भी यही उम्मीद है।

हलीमा कहती हैं कि इसके बाद हमारा क़ाफ़िला आगे बढ़ा। मैं अपनी उसी कमज़ोर गधी पर सवार हुई और उस बच्चे को भी अपने साथ लिया, लेकिन अब वही गधी ख़ुदा की क़सम! पूरे क़ाफ़िले को काट कर इस तरह आगे निकल गई कि कोई गधा उसका साथ न पकड़ सका, यहां तक कि मेरी सहेलियां मुझसे कहने लगीं—

'ओ अबू ज़ुवैब की बेटी! अरे यह क्या? तनिक हम पर मेहरबानी कर! आख़िर यह तेरी वही गधी तो है, जिस पर तू सवार होकर आई थी।'

मैं कहती, 'हां, हां, ख़ुदा की क़सम! यह वही है।'

वे कहतीं, 'इसका यक़ीनन कोई ख़ास मामला है।'

फिर हम बनू साद में अपने घरों को आ गए। मुझे मालूम नहीं कि अल्लाह की धरती का कोई भाग हमारे इलाक़े से ज़्यादा भुखमरी का शिकार था, लेकिन हमारी वापसी के बाद मेरी बकरियां चरने जातीं तो पेट भरी हुई और दूध से भरपूर वापस आतीं। हम दूहते और पीते, जबकि किसी और व्यक्ति को दूध की एक बूंद भी नसीब न होती। इनके जानवरों के थनों में दूध सिरे से रहता ही न था, यहां तक कि हमारी क़ौम के लोग अपने चरवाहों से कहते कि भाग्यहीनो! जानवर वहीं चराने ले जाया करो, जहां अबू ज़ुवैब की बेटी का चरवाहा ले जाया करता है—लेकिन तब भी उनकी बकरियां भूखी वापस आतीं। उनके अन्दर एक बूंद दूध न रहता, जबकि मेरी बकरियां पेट भरी और दूध से भरपूर वापस आतीं। इस तरह हम अल्लाह की ओर से बराबर बढ़ोत्तरी और भलाई देखते रहे, यहां तक कि इस बच्चे के दो साल पूरे हो गए और मैंने दूध छुड़ा दिया। यह बच्चा दूसरे बच्चों के मुक़ाबले में इस तरह बढ़ रहा था कि दो साल पूरे होते-होते वह कड़ा और गठीला हो गया। इसके बाद हम इस बच्चे को उसकी मां के पास ले गए। लेकिन हम उसकी जो बरकत देखते आए थे, उसकी वजह

से हमारी बहुत बड़ी ख़्वाहिश थी कि वह हमारे पास रहे, चुनांचे हमने उसकी मां से बातचीत की।

मैंने कहा, क्यों न आप मेरे बच्चे को मेरे पास ही रहने दें कि ज़रा मज़बूत हो जाए, क्योंकि मुझे उसके बारे में मक्का की महामारी का ख़तरा है। ग़रज़ हमारे बराबर आग्रह पर बच्चा उन्होंने हमें वापस दे दिया।[1]

सीना खुलने की घटना

इस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दूध पिलाने की मुद्दत ख़त्म होने के बाद भी बनू साद ही में रहे, यहां तक कि जन्म के चौथे या पांचवें साल[2] मुबारक सीना चाक किए जाने की घटना घटी। इसका पूरा विवरण हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में मिलता है, जो सहीह मुस्लिम में अंकित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए। आप बच्चों के साथ खेल रहे थे। हज़रत जिब्रील ने आपको पकड़ कर पटका और सीना चाक करके दिल निकाला, फिर दिल से एक लोथड़ा निकाल कर फ़रमाया, यह तुमसे शैतान का हिस्सा है, फिर दिल को एक तश्त में ज़मज़म के पानी से धोया और फिर उसे जोड़ कर उसकी जगह लौटा दिया, इधर बच्चे दौड़ कर आपकी मां अर्थात दाई के पास पहुंचे और कहने लगे, मुहम्मद क़त्ल कर दिया गया, उनके घर के लोग झट-पट पहुंचे, देखा तो आपका रंग उतरा हुआ था।[3]

मां की गोद में

इस घटना के बाद हलीमा को ख़तरा महसूस हुआ और उन्होंने आपको

---

1. इब्ने हिशाम 1/162, 163, 164, तारीख़े तबरी 2/158, 159, इब्ने हिब्बान 882-84, इब्ने साद 1/111, सबने शब्दों के थोड़े मतभेद के साथ इब्ने इस्हाक के तरीक़े से रिवायत किया है।
2. सीरत के आम लिखने वालों का यही कथन है, देखिए इब्ने साद 1/112, मुरव्वज़ुज़्ज़हब, मसऊदी 21/281, दलाइलुन्नुबूवः, अबू नुऐम 1/161, 162, इनके नज़दीक इब्ने अब्बास रज़ि० के कथनानुसार पांचवें साल की घटना है, 1/162, अलबत्ता इब्ने इस्हाक़ के कथनानुसार यह आपकी वापसी के केवल कुछ महीने बाद की घटना है। (देखिए इब्ने हिशाम 1/64, 165, तारीख़े तबरी 2/160) मगर इब्ने इस्हाक़ के कथन में लगभग टकराव है, क्योंकि सिर्फ़ दो साल कुछ माह के बच्चे से बकरी चराने के बारे में सोचा नहीं जा सकता।
3. सहीह मुस्लिम बाब अल-इसरा 1/92

आपकी मां के हवाले कर दिया, चुनांचे आप छः साल की उम्र तक मां ही की गोद में पलते रहे।[1]

उधर हज़रत आमिना का इरादा हुआ कि वह अपने मृत पति की याद में यसरिब जाकर उनकी क़ब्र की ज़ियारत करें, चुनांचे वह अपने यतीम बच्चे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अपनी सेविका उम्मे ऐमन और अपने गार्जियन अब्दुल मुत्तलिब के साथ कोई पांच सौ किलोमीटर की दूरी तै करके मदीना तशरीफ़ ले गईं और वहां एक महीने तक ठहर कर वापस हुईं, लेकिन अभी रास्ते ही में थीं कि बीमारी ने आ लिया। फिर यह बीमारी तेज़ी अख़्तियार कर गई, यहां तक कि मक्का और मदीना के बीच अबवा नामी स्थान पर पहुंच कर वफ़ात पा गईं।[2]

दादा की निगरानी में

बूढ़े अब्दुल मुत्तलिब अपने पोते को लेकर मक्का पहुंचे। उनका हृदय अपने इस यतीम पोते के प्रति प्रेम व स्नेह से ओत-प्रोत था, इसलिए भी ऐसा हुआ कि अब उसे एक नयी चोट लगी थी, जिसने पुराने घाव कुरेद दिए थे। अब्दुल मुत्तलिब अपने पोते के लिए इतने नम्र स्वभाव थे कि अपने बेटों के लिए इतने न रहे होंगे। चुनांचे भाग्य ने आपको तंहाई के जिस जंगल में ला खड़ा किया था, अब्दुल मुत्तलिब इसमें आपको अकेले छोड़ने के लिए तैयार न थे, बल्कि आपको अपनी औलाद से भी बढ़कर चाहते और बड़ों की तरह उनका आदर करते थे।

इब्ने हिशाम का बयान है कि अब्दुल मुत्तलिब के लिए ख़ाना काबा के साए में फ़र्श बिछाया जाता, उनके सारे लड़के फ़र्श के चारों ओर बैठ जाते। अब्दुल मुत्तलिब तशरीफ़ लाते तो फ़र्श पर बैठते। उनके बड़कपन को देखते हुए उनका कोई लड़का फ़र्श पर न बैठता, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाते तो फ़र्श ही पर बैठ जाते। अभी आप कम उम्र बच्चे थे। आपके चचा लोग आपको पकड़कर उतार देते, लेकिन जब अब्दुल- मुत्तलिब उन्हें ऐसा करते देखते, तो फ़रमाते, 'मेरे इस बेटे को छोड़ दो। ख़ुदा की क़सम! इसकी शान निराली है, फिर उन्हें अपने साथ अपने फ़र्श पर बिठा लेते थे, अपने हाथ से पीठ सहलाते और उनकी अदाएं देखकर खुश होते।[3]

आपकी उम्र अभी 8 साल दो महीने दस दिन की हुई थी कि दादा अब्दुल

---

1. तलक़ीहुल फ़हूम पृ० 7, इब्ने हिशाम 1/168
2. इब्ने हिशाम 1/168,
3. इब्ने हिशाम 1/16

मुत्तलिब इस दुनिया से सिधार गए। उनका देहान्त मक्का में हुआ और वह मृत्यु से पहले अबू तालिब (आपके चचा) को—जो आपके बाप अब्दुल्लाह के सगे भाई थे, आपके लिए पालने-पोसने और देखभाल करने की वसीयत कर गए थे।[1]

मेहरबान चचा की निगरानी में

अबू तालिब ने अपने भतीजे की देखभाल बड़ी ख़ूबी से की। आपको अपनी औलाद में शामिल कर लिया, बल्कि उनसे भी बढ़कर माना, मान-सम्मान भी दिया। चालीस साल से ज़्यादा मुद्दत तक ताक़त पहुंचाई, अपना समर्थन सदैव दिया और आप ही की बुनियाद पर दोस्ती और दुश्मनी की और अधिक व्याख्या अपनी जगह आ रही है।

वर्षा चाही गई

इब्ने असाकिर ने जलहमा बिन अरफ़ता से रिवायत किया है कि मैं मक्का आया, लोग अकाल से दो चार थे। क़ुरैश ने कहा, अबू तालिब घाटी अकाल का शिकार है। बाल-बच्चे अकाल के निशाने पर हैं, चलिए, वर्षा की दुआ कीजिए। अबू तालिब एक बच्चा लेकर बरामद हुए। बच्चा बादलों से घिरा हुआ सूरज मालूम होता था, जिससे घना बादल अभी-अभी छटा हो, उसके आस-पास और भी बच्चे थे। अबू तालिब ने उस बच्चे का हाथ पकड़ कर उसकी पीठ काबे की दीवार से टेक दी। बच्चे ने उनकी उंगली पकड़ रखी थी, उस वक़्त आसमान पर बादल का एक टुकड़ा न था, लेकिन (देखते-देखते) इधर-उधर से बादल आने शुरू हो गये और ऐसी धुवांधार वर्षा हुई कि घाटी में पानी बह निकला, पूरा इलाक़ा पानी से भर गया। बाद में अबू तालिब ने इसी घटना की ओर इशारा करते हुए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रशंसा में कहा था—

'वह सुन्दर हैं, उनके चेहरे से वर्षा की दुआ की जाती है, यतीमों की पनाहगाह और विधवाओं के संरक्षक हैं।'[2]

बुहैरा राहिब

कुछ रिवायतों के मुताबिक़—जो शोध की दृष्टि से कुल मिलाकर प्रमाणित और प्रामाणिक हैं—जब आपकी उम्र बारह वर्ष और एक विस्तृत कथन के

---

1. तलक़ीहुल फ़हूम पृ० 7, इब्ने हिशाम 1/149
2. मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह पृ० 15-16, हैसमी ने मज्मउज़्ज़वाइद में तबरानी से इसी तरह की घटना किताब 'अलामातुन्नुबूवः 8/222 में नक़ल किया है।

अनुसार बारह वर्ष दो महीने दस दिन[1] की हो गई तो अबू तालिब आपको साथ लेकर व्यापार के लिए शाम देश के सफ़र पर निकले और बसरा पहुंचे। बसरा शाम देश का एक स्थान और हूरान का केन्द्रीय नगर है। उस वक़्त यह अरब प्रायद्वीप के रूमी अधिकृत क्षेत्रों की राजधानी था। इस नगर में जर्जीस नाम का राहिब (ईसाई सन्यासी) रहता था जो बुहैरा की उपाधि से जाना जाता था। जब क़ाफ़िले वालों ने वहां पड़ाव डाला तो यह राहिब अपनी गिरजा से निकलकर क़ाफ़िले के अन्दर आया और उसका सत्कार किया, हालांकि इससे पहले वह कभी नहीं निकलता था। उसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपके गुणों की बुनियाद पर पहचान लिया और आपका हाथ पकड़ कर कहा—

'यह पूरी दुनिया के सरदार हैं। अल्लाह इन्हें पूरी दुनिया के लिए रहमत बना कर भेजेगा।'

अबू तालिब ने कहा, 'आपको यह कैसे मालूम हुआ?'

उसने कहा, तुम लोग जब घाटी के इस ओर दिखाई दिए तो कोई भी पेड़ या पत्थर ऐसा नहीं था जो सज्दे के लिए झुक न गया हो और ये चीज़ें नबी के अलावा किसी और इंसान को सज्दा नहीं करतीं। फिर मैं इन्हें नुबूवत की मुहर से पहचानता हूं जो कंधे के नीचे किरी (नर्म हड्डी) के पास सेब की तरह है और हम इन्हें अपनी किताबों में भी पाते हैं।

इसके बाद बुहैरा राहिब ने अबू तालिब से कहा कि इन्हें वापस कर दो, शाम देश न ले जाओ, क्योंकि यहूदियों से ख़तरा है। इस पर अबू तालिब ने कुछ दासों के साथ आपको मक्का मुकर्रमा वापस भेज दिया।[2]

---

1. यह बात इब्ने जौज़ी ने तलक़ीहुल फ़हूम पृ० 7 में कही है।
2. देखिए जामेअ तिर्मिज़ी 5/550, 551, हदीस नम्बर 362, तारीख़े तबरी 3/278, 279 इब्ने अबी शैबा 11/489 हदीस न० 1782, दलाइलुन्नुबूवः, बैहक़ी, 2/24, 25, अबू नुऐम 1/170, इस रिवायत की सनद मज़बूत है, अलबत्ता इसके आख़िर में यह दिया हुआ है कि आपको हज़रत बिलाल के साथ रवाना किया गया, लेकिन यह बहुत बड़ी ग़लती है। बिलाल तो उस वक़्त तक पैदा भी नहीं हुए थे और अगर पैदा हुए थे, तो बहरहाल अबू तालिब या अबू बक्र रज़ि० के साथ न थे, ज़ादुल मआद 1/17। इस घटना में और भी विवरण मिलते हैं, जिन्हें इब्ने साद ने वाहियात की सनदों से रिवायत किया है (1/130) और इब्ने इस्हाक़ ने बिना सनद ज़िक्र किया है, जिसे इब्ने हिशाम 1/180-183, तबरी 2/277, बैहक़ी और अबू नुऐम ने ज़िक्र किया है।

फ़िजार की लड़ाई

आपकी उम्र के बीसवें साल उकाज़ के बाज़ार में क़ुरैश व किनाना—और क़ैस ऐलान के दर्मियान ज़ीक़ादा के महीने में एक लड़ाई हुई जो फ़िजार की लड़ाई के नाम से प्रसिद्ध है।[1] इसकी वजह यह हुई कि बराज़ नामी बनू किनाना के एक आदमी ने क़ैस ऐलान के तीन आदमियों को क़त्ल कर दिया। इसकी ख़बर उकाज़ पहुंची तो दोनों फ़रीक़ भड़क उठे और लड़ पड़े। क़ुरैश और किनाना का कमांडर हर्ब बिन उमैया था, क्योंकि वह अपनी उम्र और बुज़ुर्गी की वजह से क़ुरैश व किनाना के नज़दीक बड़ा ऊंचा पद रखता था। पहले पहर किनाना पर क़ैस का पल्ला भारी था, लेकिन दोपहर होते-होते क़ैस पर किनाना का पल्ला भारी हुआ चाहता था कि इतने में समझौते की आवाज़ उठी और यह प्रस्ताव आया कि दोनों फ़रीक़ के मारे गए लोग गिन लिए जाएं। जिधर ज़्यादा हों उनको ज़्यादा की दियत (अर्थ-दंड) दे दी जाए। चुनांचे इसी पर समझौता हो गया। लड़ाई ख़त्म कर दी गई और जो दुश्मनी पैदा हो गई थी, उसे समाप्त कर दिया गया। इसे फ़िजार की लड़ाई इसलिए कहते हैं कि इसमें हराम महीनेका अनादर किया गया। इस लड़ाई में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी तशरीफ़ ले गये थे और अपने चचाओं को तीर थमाते थे।[2]

हिलफ़ुल फ़ुज़ूल

इस लड़ाई के बाद इसी हुर्मत वाले महीने ज़ीक़ादा में हिलफ़ुल फ़ुज़ूल पेश

---

1. इन दोनों घटनाओं में फ़िजार की घटनाएं चार बार घटित हुईं। पहली तीन में कुछ झगड़ा-फ़साद हुआ, लेकिन लड़ाई के बिना समझौता हो गया। पहले की वजह यह थी कि एक क़ैस का एक किनानी पर क़र्ज़ था और वह टाल-मटोल कर रहा था। दूसरे की वजह यह थी कि उकाज़ के बाज़ार में एक किनानी अपनी बड़ाई जता रहा था और तीसरे की वजह यह थी कि मक्का के कुछ जवान क़ैस की एक सुन्दर स्त्री से छेड़-छाड़ कर रहे थे। चौथे का कारण बराज़ की घटना थी जिसका उल्लेख हमने किताब में किया है। विस्तृत विवरण के लिए देखिए अन्नमक़फ़ी अख़बारे क़ुरैश, पृ० 160-164, अल-कामिल इब्ने असीर 1/467। इब्ने असीर ने सबको एक ही बताया है।
2. इब्ने हिशाम, 1/184-186, अल-ग़मक़ मिन अख़बारे क़ुरैश, पृ० 164, 185 कामिल इब्ने असीर 1/468, 472, आम तौर पर इतिहासकारों ने कहा है कि यह शव्वाल में पेश आई थी, पर यह सही नहीं, क्योंकि शव्वाल का महीना हराम का महीना नहीं और उकाज़ हरम से बाहर है तो फिर हुर्मत कौन-सी चाक हुई। इसके अलावा उकाज़ का बाज़ार ज़ीक़ादा के शुरू से लगता था।

आई। क़ुरैश के कुछ क़बीले यानी बनी हाशिम, बनी मुत्तलिब, बनी असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा, बनी ज़ोहरा बिन किलाब और बनी तैम बिन मुर्रा ने इसकी व्यवस्था की। ये लोग अब्दुल्लाह बिन जुदआन तैमी के मकान पर जमा हुए—क्योंकि वह उम्र और बुज़ुर्गी में सबसे बड़ा था—और आपस में समझौता किया कि मक्का में जो भी मज़्लूम नज़र आएगा, चाहे मक्के का रहने वाला हो या कहीं और का, ये सब उसकी सहायता और समर्थन में उठ खड़े होंगे और उसका हक़ दिलाकर रहेंगे। इस सभा में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी तशरीफ़ फ़रमाते थे और बाद में पैग़म्बर बनने के बाद भी फ़रमाया करते थे, मैं अब्दुल्लाह बिन जुदआन के मकान पर एक ऐसे समझौते में शरीक था कि मुझे इसके बदले में लाल ऊंट भी पसन्द नहीं और अगर इस्लाम (के दौर) में इस समझौते के लिए मुझे बुलाया जाता तो मैं पूरा साथ देता।[1]

इस समझौते की भावना पक्षपात की तह से उठने वाली अज्ञानतापूर्ण तंगनज़री के प्रतिकूल थी। इस समझौते की वजह यह बताई जाती है कि ज़ुबैद का एक आदमी सामान लेकर मक्का आया और आस बिन वाइल ने उससे सामान ख़रीदा, लेकिन उसका हक़ रोक लिया। उसने मित्र क़बीले अब्दुद्दार, मख़्ज़ूम, जम्ह, सह्म और अदी से मदद की दरख़्वास्त की, लेकिन किसी ने तवज्जोह न दी। इसके बाद उसने अबू क़ुबैस पर्वत पर चढ़ कर ऊंची आवाज़ से कुछ पद पढ़े, जिनमें अपनी मज़्लूमियत की दास्तान बयान की थी। इस पर ज़ुबैर बिन अब्दुल मुत्तलिब ने दौड़-धूप की और कहा कि यह व्यक्ति बे-यार व मददगार क्यों है? इनकी कोशिश से उपरोक्त क़बीले जमा हो गये। पहले समझौता किया और फिर आस बिन वाइल से उस ज़ुबैदी का हक़ दिलाया।[2]

घोर परिश्रम की ज़िंदगी

किशोरावस्था में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कोई निश्चित काम न था, अलबत्ता यह ख़बर सही है कि आप बकरियां चराते थे। आप सल्ल० ने बनी साद की बकरियां चराईं[3] और मक्का में भी। मक्का के निवासियों की बकरियां कुछ क़ीरात के बदले चराते थे[4] और जब जवान हुए तो व्यापार की ओर चले गए, क्योंकि यह रिवायत आती है कि आप साइब बिन

---

1. इब्ने हिशाम 1/133-135, मुख़्तसरुस्सीरः शेख़ अब्दुल्लाह पृ० 30-31
2. तबक़ाते इब्ने साद 1/126-128, नसब क़ुरैश, ज़ुबैरी पृ० 291
3. इब्ने हिशाम, 1/166
4. सहीह बुख़ारी, अल-इजारात बाब रअयुल ग़नमि अला क़रारीत 1/301

यज़ीद मख़्ज़ूमी के साथ व्यापार करते थे और बेहतरीन शरीक थे, न हेर-फेर, न कोई झगड़ा। चुनांचे साइब मक्का-विजय के दिन आपके पास आए तो आपने उन्हें मरहबा कहा और फ़रमाया कि मेरे भाई और मेरे शरीक को मरहबा।[1] पच्चीस साल की उम्र हुई तो हज़रत ख़दीजा रज़ि० का माल लेकर व्यापार के लिए शाम देश तशरीफ़ ले गए।

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलद एक प्रतिष्ठित, धनी और व्यापारी महिला थीं। लोगों को अपना माल कारोबार के लिए देती थीं और पार्टनरशिप के उसूल पर एक हिस्सा तै कर लेती थीं। पूरा क़ुरैश क़बीला ही व्यापारी क़बीला था। जब उन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई, अमानतदारी और अच्छे चरित्र व आचरण का ज्ञान हुआ, तो उन्होंने एक सन्देश भेज कर यह बात रखी कि उनका माल लेकर व्यापार के लिए उनके दास मैसरा के साथ शाम देश तशरीफ़ ले जाएं। वह दूसरे व्यापारियों को जो कुछ देती हैं, उससे बेहतर बदला आपको देंगी। आपने इसे स्वीकार कर लिया और उनका माल लेकर उनके दास मैसरा के साथ शाम देश तशरीफ़ ले गये।[2]

हज़रत ख़दीजा रज़ि० से विवाह

जब आप मक्का वापस तशरीफ़ लाए और हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने अपने माल में ऐसी अमानत और बरकत देखी, जो इससे पहले कभी न देखी थी और इधर उनके दास मैसरा ने आपके मीठे चरित्र और उच्च आचरण, ठंडी सोच, सच्चाई और ईमानदाराना तौर-तरीक़े के बारे में उद्‌गार रखे, तो हज़रत ख़दीजा रज़ि० को जैसे अपना खोया हुआ हीरा मिल गया—उससे पहले बड़े-बड़े सरदार और रईस उनसे विवाह की इच्छा रखते थे, लेकिन उन्होंने किसी का सन्देश नहीं स्वीकार किया था, अब उन्होंने अपने दिल की बात अपनी सहेली नफ़ीसा बिन्त मुनब्बह से कही और नफ़ीसा ने जाकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बातें कीं। आप तैयार हो गए और अपने चचा से इस मामले में बात की। उन्होंने हज़रत ख़दीजा रज़ि० के चचा से बात की और विवाह का पैग़ाम दिया। इसके बाद विवाह हो गया। निकाह में बनी हाशिम और मुज़र के सरदार शरीक हुए

यह शाम देश से वापसी के दो महीने बाद की बात है।[3] आपने मह्र में बीस

1. सुनने अबी दाऊद 2/611, इब्ने माजा हदीस 2287, 2268, मुस्नद अहमद 3/425
2. इब्ने हिशाम 1/187-188
3. मसऊदी ने पूरे निश्चय के साथ उल्लेख किया है कि आप फ़िजार की लड़ाई के चार सौ नौ महीने, छः दिन बाद शाम देश के लिए निकले और हज़रत ख़दीज़ा से आपकी

ऊंट दिए। उस वक़्त हज़रत ख़दीजा की उम्र चालीस वर्ष और एक क़ौल के मुताबिक़ अठाईस साल की थी और वह वंश-धन, सूझ-बूझ की दृष्टि से अपनी क़ौम में सबसे अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त महिला थीं। यह पहली महिला थीं, जिनसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने विवाह किया और उनकी मृत्यु तक किसी दूसरी महिला से विवाह नहीं किया।[1]

इब्राहीम के अलावा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तमाम सन्तानें उन्हीं से थीं। सबसे पहले क़ासिम पैदा हुए और उन्हीं के नाम पर आपको अबुल क़ासिम (क़ासिम के बाप) के उपनाम से जाना जाने लगा, फिर ज़ैनब, रुक़ैया, उम्मे कुलसूम, फ़ातिमा और अब्दुल्लाह पैदा हुए। अब्दुल्लाह की उपाधि तैयब और ताहिर थी। आपके सब बच्चे बचपन ही में मृत्यु की गोद में चले गए। अलबत्ता बच्चियों में से हर एक ने इस्लाम का ज़माना पाया, मुसलमान हुई और हिजरत की। लेकिन हज़रत फ़ातिमा के सिवा बाक़ी सब का देहान्त आपकी ज़िंदगी ही में हो गया। हज़रत फ़ातिमा की मृत्यु आपके छः महीने बाद हुई।[2]

काबा का निर्माण और हजरे अस्वद का विवाद

आपकी उम्र का पैंतीसवां साल था कि क़ुरैश ने नए सिरे से ख़ाना काबा का निर्माण शुरू किया। वजह यह थी कि काबा सिर्फ़ क़द से कुछ ऊंची चहार दीवारी की शक्ल में था। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के समय ही से उसकी ऊंचाई 9 हाथ थी और उस पर छत न थी। इस स्थिति का फ़ायदा उठाते हुए कुछ चोरों ने उसके भीतर रखा हुआ ख़ज़ाना चुरा लिया—इसके अलावा उसके निर्माण पर एक लम्बा समय बीत चुका था, इमारत टूट-फूट का शिकार हो गई थी और दीवारें फट गई थीं। इधर उसी साल एक ज़बरदस्त बाढ़ आई थी, जिसके बहाव का रुख़ ख़ाना काबा की ओर था। इसके नतीजे में ख़ाना काबा किसी भी क्षण ढह सकता था, इसलिए क़ुरैश मजबूर हो गए कि उसका पद और स्थान बाक़ी रखने के लिए नए सिरे से उसका निर्माण किया जाए।

शादी शाम देश को रवाना होने के दो महीने चौबीस दिन बाद हुई। देखिए मुरव्वजुज़-जह्ब 2/278

1. इब्ने हिशाम 1/189-190,
2. इब्ने हिशाम 1/190-191, सहीह बुख़ारी, तलफ़ीहुल फ़हूम पृ० 7 फ़त्हुल बारी 7/105। ऐतिहासिक स्रोतों में कुछ मतभेद हैं, मेरे नज़दीक जो सही है, उसी को लिखा है।

—लेखक

इस मरहले पर क़ुरैश ने सर्वसम्मति से फ़ैसला किया कि ख़ाना काबा के निर्माण में सिर्फ़ हलाल रक़म ही इस्तेमाल करेंगे। इसमें रंडी का मुआवज़ा, सूद का धन, और किसी का नाहक़ लिया हुआ माल इस्तेमाल नहीं होने देंगे।

(नव-निर्माण के लिए पुरानी इमारत को ढाना ज़रूरी था) लेकिन किसी को ढाने की जुर्रात नहीं होती थी। अन्ततः वलीद बिन मुग़ीरा मख़्ज़ूमी ने शुरूआत की और कुदाल लेकर यह कहा कि ऐ अल्लाह! हम ख़ैर ही का इरादा करते हैं, इसके बाद दो कोनों की तरफ़ कुछ ढा दिया। जब लोगों ने देखा कि उस पर कोई आफ़त नहीं टूटी, तो बाक़ी लोगों ने भी ढाना शुरू किया और इब्राहीम अलै० की डाली बुनियाद तक ढा चुके तो निर्माण की शुरूआत की। निर्माण के लिए अलग-अलग हर क़बीले का हिस्सा मुक़र्रर था और हर क़बीले ने अलग-अलग पत्थर के ढेर लगा रखे थे। निर्माण शुरू हुआ। बाक़ूम नामी एक रूमी मेमार निगरां था। जब इमारत हजरे अस्वद तक उठ गई तो यह झगड़ा उठ खड़ा हुआ कि हजरे अस्वद को उसकी जगह रखने का यश किसे प्राप्त हो। यह झगड़ा चार-पांच दिन तक चलता रहा और धीरे-धीरे इतना आगे बढ़ गया कि लगता था, हरम की धरती रक्तरंजित हो जाएगी, लेकिन अबू उमैया मख़्ज़ूमी ने यह कहकर फ़ैसले की एक शक्ल पैदा कर दी कि मस्जिदे हराम के दरवाज़े से जो व्यक्ति पहले प्रवेश करे उसे अपने झगड़े का मध्यस्थ मान लें। लोगों ने यह प्रस्ताव पास कर दिया। अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि उसके बाद सबसे पहले अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए। लोगों ने आपको देखा तो चीख़ पड़े, 'यह अमीन हैं, हम इनसे राज़ी हैं, यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।'

फिर जब आप उनके क़रीब पहुंचे और उन्होंने आपको विवाद का विवरण दिया, तो आपने एक चादर मंगाई, बीच में हजरे अस्वद रखा और विवादित क़बीलों के सरदारों से कहा कि आप सब लोग चादर का किनारा पकड़ कर ऊपर उठाएं। उन्होंने ऐसा ही किया। जब चादर हजरे अस्वद की जगह तक पहुंच गई तो आपने अपने मुबारक हाथों से हजरे अस्वद को उसकी तैशुदा जगह पर रख दिया। यह बड़ा उचित निर्णय था। इस पर सारी क़ौम राज़ी हो गई।

इधर क़ुरैश के पास हलाल माल की कमी पड़ गई, इसलिए उन्होंने उत्तर की ओर से काबा की लंबाई लगभग छः हाथ कम कर दी। यही टुकड़ा हिज्र और हतीम कहलाता है। इस बार क़ुरैश ने काबा का दरवाज़ा ज़मीन से काफ़ी ऊंचा कर दिया, ताकि इसमें वही व्यक्ति दाख़िल हो सके, जिसे वे इजाज़त दें। जब दीवारें पन्द्रह हाथ ऊंची हो गई तो भीतर छः स्तंभ खड़े करके ऊपर से छत डाल

दी गई और काबा अपने पूरे होने के बाद लगभग चौकोर हो गया। अब खाना काबा की ऊंचाई पन्द्रह मीटर है। हजरे अस्वद वाली दीवार और उसके सामने की दीवार अर्थात दक्षिणी और उत्तरी दीवारें दस-दस मीटर हैं। हजरे अस्वद मताफ़ की ज़मीन से डेढ़ मीटर की ऊंचाई पर है। दरवाज़े वाली दीवार और उसके सामने की दीवार अर्थात पूरब और पश्चिम की दीवारें 12-12 मीटर हैं। दरवाज़ा ज़मीन से दो मीटर ऊंचा है। दीवार के चारों ओर नीचे हर चार तरफ़ से एक बढ़े हुए कुर्सीनुमा ज़िले का घेरा है जिसकी औसत ऊंचाई 25 सेंटीमीटर और औसत चौड़ाई 30 सेंटीमीटर है। इसे शाज़रवान कहते हैं। यह भी असल में बैतुल्लाह का हिस्सा है, लेकिन क़ुरैश ने इसे भी छोड़ दिया था।[1]

नुबूवत के पहले की संक्षिप्त जीवन-चर्या

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अस्तित्व उन तमाम गुणों और विशेषताओं का योग था, जो अलग-अलग तौर पर लोगों के विभिन्न वर्गों में पाई जाती हैं। आप विवेक, दूरदर्शिता और सत्यप्रियता का उच्च मीनार थे। आपको बेहतरीन सूझ-बूझ, सतर्क चिन्तन और सही उद्देश्य का पर्याप्त भाग मिला हुआ था। आप अपनी लम्बी ख़ामोशी से बराबर चिन्तन-मनन करते, लगातार ध्यान मग्न रहते और सत्य पाने की अभिलाषा करते रहते। आपने अपनी खुली बुद्धि और चमकदार प्रकृति से जीवन-ग्रन्थों का, लोगों के मामले और समूहों के हालात का अध्ययन किया और जिन ख़राबियों से ये सभी ओत-प्रोत थे, उनसे बड़ी उदासीनता दिखाई। चुनांचे आपने इन सबसे हाथ खींच कर पूरे विवेक के साथ लोगों के बीच जीवन-यात्रा शुरू की, यानी लोगों का जो काम अच्छा होता, उसमें शिर्कत फ़रमाते[2], वरना अपनी तैशुदा तंहाई की ओर पलट जाते। चुनांचे आपने शराब को कभी मुंह न लगाया, आस्तानों का ज़बीहा (चढ़ावा) न खाया और बुतों के लिए मनाए जाने वाले त्यौहार और मेलों-ठेलों में कभी शिर्कत न की।

आपको शुरू ही से इन झूठे माबूदों (जिनकी इबादत और पूजा की जाए) से

---

1. विस्तृत विवरण के लिए देखिए इब्ने हिशाम 1/192-197, तारीख़ तबरी 2/289 और इसके बाद का हिस्सा, सहीह बुख़ारी, बाब फ़ज़्लु मक्क-त ब बुनियानुहा 1/215, तह्कीम की यह ख़बर मुस्नद अबू दाऊद तयालसी में भी है, साथ ही देखिए तारीख़ ख़ज़्री 1/64-65
2. जैसे क़ुरैश जाहिलियत में आशूरा का रोज़ा रखते थे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी जाहिलियत के ज़माने में यह रोज़ा रखते थे। देखिए, सहीह बुख़ारी हदीस न० 3002, फ़त्हुल बारी 4/287

इतनी घिन थी कि उनसे बढ़कर आपकी नज़रों में कोई चीज़ ग़लत न थी, यहां तक कि लात व उज़्ज़ा की क़सम सुनना भी आपको गवारा न था।[1]

इसमें सन्देह नहीं कि भाग्य ने आप पर सुरक्षा का साया डाल रखा था, चुनांचे जब कुछ सांसारिक लाभ के लिए मनोकामनाएं उभरीं या कुछ नापसंदीदा रस्म व रिवाज की पैरवी पर मन ने कुछ करना चाहा, तो ख़ुदा की कृपा से उसमें रुकावट पैदा कर दी गई। इब्ने असीर की एक रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अज्ञानता-युग के लोग जो काम करते थे, मुझे दो बार के अलावा कभी उनका ध्यान नहीं आया, लेकिन इन दोनों में से भी हर बार अल्लाह ने मेरे और उस काम में रुकावट डाल दी। इसके बाद फिर कभी मुझे इसका विचार न आया, यहां तक कि अल्लाह ने मुझे अपनी पैग़म्बरी भी दे दी। हुआ यह कि जो लड़का ऊपरी मक्का में मेरे साथ बकरियां चराया करता था उससे एक रात मैंने कहा, क्यों न तुम मेरी बकरियां देखो और मैं मक्का जाकर दूसरे जवानों की तरह वहां रात भर की क़िस्सा- कहानी की महफ़िल में शिर्कत कर लूं। उसने कहा ठीक है। इसके बाद मैं निकला और अभी मक्का के पहले ही घर के पास पहुंचा था कि बाजे की आवाज़ सुनाई पड़ी। मैंने मालूम किया कि क्या है? लोगों ने बताया, फ़्लां की फ़्लां से शादी है। मैं सुनने बैठ गया और अल्लाह ने मेरा कान बन्द कर दिया और मैं सो गया। फिर सूरज की गर्मी ही से मेरी आंख खुली और मैं अपने साथी के पास वापस चला गया। उसके पूछने पर मैंने पूरा विवरण दे दिया।

इसके बाद एक रात फिर मैंने यही बात कही और मक्का पहुंचा तो फिर उसी रात की घटना घटी और उसके बाद फिर कभी ग़लत इरादा न हुआ।[2]

सहीह बुख़ारी में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि जब काबा बनाया गया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अब्बास रज़ि० पत्थर ढो रहे थे। हज़रत अब्बास रज़ि० ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा, अपना तहबंद अपने कंधे पर रख लो, पत्थर से हिफ़ाज़त रहेगी, लेकिन आप ज़मीन पर जा गिरे, निगाहें आसमान की ओर उठ गईं। संभलते ही आवाज़ लगाई, मेरा तहबंद, मेरा तहबंद! और आपका तहबंद आपको बांध दिया गया।

---

1. देखिए इब्ने हिशाम 1/128, तारीख़े तबरी 2/161, तहज़ीबे तारीख़े दमिश्क़ 1/373-376
2. इस हदीस को तबरी 2/279 वग़ैरह ने रिवायत किया है और हाकिम व ज़हबी ने सही कहा है, लेकिन इब्ने कसीर ने अल-बिदायः वन-निहायः 2/287 में इसे ज़ईफ़ कहा है।

एक रिवायत के शब्द ये हैं कि इसके बाद आपकी शर्मगाह कभी नहीं देखी गई।[1]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी क़ौम में मीठे बोल, उच्च चरित्र और श्रेष्ठ आचरण की दृष्टि से विख्यात थे। चुनांचे आप सबसे ज़्यादा नम्र हृदय, सबसे ज़्यादा सज्जन, सबसे अच्छे पड़ोसी, नेक कामों में सबसे आगे, अमल में सबसे नेक, वायदे के सबसे बढ़कर पाबंद और सबसे बड़े अमानतदार थे, यहां तक कि आपकी क़ौम ने आपका नाम ही 'अमीन' रख दिया था, क्योंकि आप साक्षात भलाई थे और जैसा कि हज़रत ख़दीजा की गवाही है, 'आप कमज़ोरों का बोझ उठाते थे, ग़रीबों की मदद फ़रमाते थे, मेहमानों का सत्कार करते थे और ज़रूरतमंदों की ज़रूरत पूरी करते थे।[2]

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब बुनियानुल काबा 1/540, फ़त्हुल बारी 2/513, 517, 7/180, मुस्नद अहमद 3/290, 310, 333, 380
2. सहीह बुख़ारी 1/3

नुबूवत व रिसालत की दावती ज़िंदगी

- मक्की दौर

नुबूवत व दावत का मक्की दौर

हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैग़म्बराना ज़िंदगी को दो भागों में बांट सकते हैं, जो एक दूसरे से पूरी तरह भिन्न, स्पष्ट और विख्यात थे। वे दोनों भाग ये हैं—

1. मक्की ज़िंदगी—लगभग 13 साल,

2. मदनी ज़िंदगी—दस साल

फिर इनमें से हर भाग कई मरहलों पर सम्मिलित है और ये मरहले भी अपनी विशेषताओं की दृष्टि से एक दूसरे से भिन्न और स्पष्ट हैं। इसका अन्दाज़ा आपकी पैग़म्बराना ज़िंदगी के दोनों भागों में पेश आने वाले अलग-अलग हालात का गहराई से जायज़ा लेने के बाद हो सकता है।

मक्की ज़िंदगी तीन महरलों पर सम्मिलित थी—

1. छिप-छिपाकर दावत देने का मरहला—तीन वर्ष

2. मक्का वासियों में खुल्लम खुल्ला प्रचार-प्रसार का मरहला—नुबूवत के चौथे साल के शुरू से मदीना की हिजरत तक।

3. मक्का के बाहर इस्लाम की दावत की लोकप्रियता और फैलाव का मरहला—नुबूवत के दसवें साल के शुरू से यह मरहला मदनी दौर को भी शामिल है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी के आख़िर तक फैला हुआ है।

मदनी ज़िंदगी के मरहलों का विवरण अपनी जगह पर आ रहा है।

नुबूवत व रिसालत की छांव में

हिरा की गुफा में

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र जब चालीस वर्ष के क़रीब हो चली और इस बीच आपकी अब तक की ज़िन्दगी ने क़ौम से आपकी सोच और विचार की दूरी बहुत बढ़ा दी थी, तो आपको तंहाई बहुत प्रिय रहने लगी, चुनांचे आप सत्तू और पानी लेकर मक्का से कोई दो मील दूर हिरा पहाड़ी की एक गुफा में जा रहते—यह एक छोटी-सी गुफा है, जिसकी लम्बाई चार गज़ और चौड़ाई पौने दो गज़ है। यह नीचे की ओर गहरी नहीं है, बल्कि एक छोटे-से रास्ते की बग़ल में ऊपर की चट्टानों के आपस में मिलने से एक कोतल की शक्ल लिए हुए है।

आप पूरे रमज़ान उस गुफा में ठहरते, अल्लाह की इबादत करते, सृष्टि और उसकी अनेक वस्तुओं पर चिन्तन-मनन करते। आपको अपनी क़ौम के लचर, पोच, शिर्क भरे अक़ीदे (विश्वास) और अंधविश्वासी विचारों पर तनिक भर इत्मीनान न था, लेकिन आपके सामने कोई स्पष्ट रास्ता, निश्चित तरीक़ा और अतियों से हटी हुई कोई ऐसी राह न थी, जिस पर आप इत्मीनान और सुकून के साथ आगे बढ़ सकते।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह एकान्तप्रियता भी वास्तव में अल्लाह की तद्बीर का एक हिस्सा थी कि धरती की व्यस्तताओं, ज़िंदगी के शोर और लोगों के छोटे-छोटे दुख-दर्द की दुनिया से आपका कटना उस 'बड़े काम' की तैयारी के लिए पलटने का बिन्दु हो, जिसका दुनिया को इन्तिज़ार था।

और आप बड़ी अमानत का बोझ उठाने, धरती के रहने वालों को दिशा देने और इतिहास के रुख़ को मोड़ने के लिए तैयार हो जाएं। अल्लाह ने रिसालत की ज़िम्मेदारी डालने से तीन साल पहले आपके लिए एकान्तप्रियता तै कर दी। आप एकान्त में एक माह तक सृष्टि की स्वच्छन्द आत्मा के साथ यात्रा करते रहते और इस वजूद के पीछे छिपे हुए अनदेखे के भीतर चिन्तन करते, ताकि जब अल्लाह का हुक्म हो तो उस अनदेखे के साथ ताल-मेल बिठाने के लिए मुस्तैद रहें।[1]

---

1. असल घटना के लिए देखिए सहीह बुख़ारी, भाग 3, इब्ने हिशाम 1/235, 236, और तफ़्सीर, सुन्नत व सीरत की दूसरी किताबें। कहा जाता है कि अब्दुल मुत्तलिब पहले

जिब्रील वह्य लाते हैं

जब आपकी उम्र चालीस वर्ष हो गई—और यही परिपक्वता की उम्र है और कहा जाता है कि यही पैग़म्बरों के पैग़म्बर बनाये जाने की उम्र है—तो आप महसूस करने लगे, जैसे मक्का में एक एक पत्थर आपको सलाम कर रहा है, साथ ही आपको सच्चे सपने भी नज़र आने लगे। आप जो भी सपना देखते, वह सुबह के उजाले की तरह प्रकट होता। इस दशा पर छः माह की मुद्दत बीत गई—जो नुबूवत की मुद्दत का 46वां हिस्सा है और नुबूवत की कुल मुद्दत तेईस वर्ष है—इसके बाद जब हिरा में एकान्तवास का तीसरा वर्ष आया, तो अल्लाह ने चाहा कि धरती के बसने वालों पर उसकी रहमत की वर्षा हो, चुनांचे उसने आपको नुबूवत का पद दिया और हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम क़ुरआन मजीद की कुछ आयतें लेकर आपके पास तशरीफ़ लाए।[1]

वह्य की शुरूआत, तारीख़, दिन और महीना

तमाम घटनाओं पर भरपूर निगाह डालकर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के आने की इस घटना की तारीख़ निश्चित की जा सकती है। हमारी खोज के अनुसार यह घटना रमज़ान की 21 तारीख़ को सोमवार की रात में हुई। उस दिन अगस्त की 10 तारीख़ थी और 610 ईस्वी थी। चांद के हिसाब से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र चालीस वर्ष छः महीने बारह दिन और ईसवी हिसाब से 39 साल तीन महीने 22 दिन थी।[2]

व्यक्ति हैं जिन्होंने हिरा में इबादत की। वह रमज़ान आते ही वहां जा पहुंचते और पूरे महीने निर्धनों को खाना खिलाते। (अल-कामिल, इब्ने असीर 1/553)

1. हाफ़िज़ इब्ने हजर कहते हैं कि बैहक़ी ने यह रिवायत की है कि सपने की मुद्दत छः माह थी, इसलिए सपने के ज़रिए नुबूवत की शुरूआत चालीस साल की उम्र पूरी होने पर रबीउल अव्वल महीने में हुई जो आपकी पैदाइश का महीना है, लेकिन जागने की हालत में आपके पास वह्य रमज़ान में आई। (फ़त्हुल बारी 1/27)
2. इतिहासकारों में बड़ा मतभेद है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किस महीने में नुबूवत मिली और कब से वह्य का सिलसिला शुरू हुआ। सीरत लिखने वालों में से अधिकतर लोगों का कहना है कि यह रबीउल अव्वल का महीना था, लेकिन एक गिरोह कहता है कि यह रमज़ान का महीना था। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि रजब का महीना था (देखिए मुख़्तसरुस्सीरत, शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 75) हमारे नज़दीक दूसरा कथन ज़्यादा सही है कि यह रमज़ान का महीना था, क्योंकि अल्लाह का इर्शाद है, 'रमज़ान का महीना ही वह महीना है, जिसमें क़ुरआन उतारा गया' (2/185) और

आइए, अब तनिक हज़रत आइशा रज़ि० की ज़ुबानी इस घटना का विवरण सुनें जो नुबूवतं का आरंभ-बिन्दु था और जिससे कुफ़्र और गुमराहियों की अंधियारियां छटती चली गईं, यहां तक कि ज़िंदगी की रफ़्तार बदल गई और इतिहास का रुख़ पलट गया। हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वह्य की शुरूआत नींद में अच्छे सपने से हुई। आप जो भी सपने देखते थे, वह सुबह के उजाले की तरह स्पष्ट होता था।

इर्शाद है, 'हमने क़ुरआन को शबे क़द्र में उतारा।' (97/1) और मालूम है कि शबे क़द्र रमज़ान में है। यही शबे क़द्र अल्लाह के इस इर्शाद में भी मुराद है, 'हमने क़ुरआन को एक बरकत वाली रात में उतारा। हम लोगों को अज़ाब के ख़तरे से सचेत करने वाले हैं।' (44/3)

दूसरे कथन को प्रमुखता देने की एक वजह यह भी है कि हिरा में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ठहरना रमज़ान महीने में हुआ करता था और मालूम है कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हिरा में ही तशरीफ़ लाए थे।

जो लोग रमज़ान में वह्य की शुरूआत को मानते हैं, उनमें फिर मतभेद है कि उस दिन रमज़ान की कौन-सी तारीख़ थी। कुछ सात बताते हैं, कुछ सत्तरह और कुछ अठारह। (देखिए मुख़्तसरुस्सीरत, पृ० 75, रहमतुललिल आलमीन 1/49) इब्ने इस्हाक़ और अला ख़ज़रमी का इसरार है कि यह सत्तरहवीं तारीख़ थी। देखिए तारीख़े ख़ज़री 1/69 और तारीख़ुत-तशरीअिल इस्लामी, पृ० 5-6-7।

मैंने 21 तारीख़ को इस वजह से प्रमुखता दी है कि अधिकतर सीरत लिखने वाले इस पर सहमत हैं कि आपके नबी बनाए जाने की घटना सोमवार के दिन की है और इसकी ताईद अबू क़तादा रज़ि० की इस रिवायत से भी होती है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सोमवार के दिन रोज़े के बारे में पूछा गया, तो आपने फ़रमाया कि यह वह दिन है जिसमें मैं पैदा हुआ और जिसमें मुझे पैग़म्बर बनाया गया या जिसमें मुझ पर वह्य नाज़िल की गई। (सहीह मुस्लिम 1/368, मुस्नद अहमद 5/297-299, बैहक़ी 4/286-300, हाकिम 2/2-6)—और उस साल रमज़ान में सोमवार का दिन 7, 14, 21 और 28 तारीख़ों में पड़ा था। इधर सही रिवायतों से यह बात साबित और तै है कि शबे क़द्र रमज़ान के आख़िरी दहे की ताक़ रातों में पड़ती है और इन्हीं ताक़ रातों में से बदलती रहती है। अब हम एक ओर अल्लाह का यह इर्शाद देखते हैं कि हमने क़ुरआन मजीद को शबे क़द्र में उतारा, दूसरी ओर अबू क़तादा की यह रिवायत देखते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सोमवार के दिन पैग़म्बर बनाया गया, तीसरी ओर कैलेंडर का हिसाब देखते हैं कि इस साल रमज़ान में सोमवार का दिन किन-किन तारीख़ों में पड़ा था तो निश्चित हो जाता है कि नबी सल्ल० 21वें रमज़ान की रात में पैग़म्बर बनाए गए, इसलिए यही वह्य के उतरने की पहली तारीख़ है।

फिर आपको अकेलापन अच्छा लगने लगा, चुनांचे आप हिरा की गुफ़ा में एकान्त वास करने लगे और कई-कई रात घर वापस आए बिना इबादत में लगे रहते। इसलिए आप खाने-पीने का सामान ले जाते, फिर (सामान ख़त्म होने पर) हज़रत ख़दीजा के पास वापस आते और लगभग उतने ही दिनों के लिए फिर सामान ले जाते, यहां तक कि आपके पास हक़ आया और आप हिरा की गुफा में थे, अर्थात आपके पास फ़रिश्ता आया और उसने कहा, पढ़ो। आपने फ़रमाया, मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं। उसने दोबारा पकड़कर दबोचा, फिर छोड़कर कहा, पढ़ो। मैंने फिर कहा, मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं। उसने तीसरी बार पकड़कर दबोचा, फिर छोड़कर कहा—

'पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया, इंसान को लोथड़े से पैदा किया, पढ़ो और तुम्हारा रब बड़ा ही करीम है।'[1]

इन आयतों के साथ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पलटे। आप का दिल धक-धक कर रहा था। हज़रत ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलद के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, मुझे चादर ओढ़ा दो, मुझे चादर ओढ़ा दो। उन्होंने आपको चादर ओढ़ा दी, यहां तक कि डर जाता रहा।

इसके बाद आपने हज़रत ख़दीजा रज़ि० को घटना की सूचना देते हुए फ़रमाया, यह मुझे क्या हो गया है? मुझे तो अपनी जान का डर लगता है। हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने कहा, क़तई तौर पर नहीं, ख़ुदा की क़सम! आपको अल्लाह रुसवा न करेगा। आप नातेदारों से रिश्ते जोड़ते हैं। बेसहारों का सहारा बनते हैं, ज़रूरतमंदों की ज़रूरत पूरी करते हैं, मेहमानों का सत्कार करते हैं और परेशानियों में काम आते हैं।

इसके बाद हज़रत ख़दीजा रज़ि० आपको अपने चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफ़ुल बिन असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा के पास ले गईं। वरक़ा अज्ञानता-युग में ईसाई हो गये थे और इबरानी में लिखना जानते थे। चुनांचे इबरानी भाषा में ख़ुदा की तौफ़ीक़ के मुताबिक़ इंजील लिखते थे। उस वक़्त बहुत बूढ़े और अंधे हो चुके थे। उनसे हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने कहा, भाई जान! आप अपने भतीजे की बात सुनें।

वरक़ा ने कहा, भतीजे! तुम क्या देखते हो?

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो कुछ देखा, बयान फ़रमा दिया।

---

1. आयतें 'इक़रा बिस्मिरब्बिकल्लज़ी से 'अल्लमल इंसानु मालम-यालम' तक नाज़िल हुई थीं।

इस पर वरक़ा ने आपसे कहा, यह तो वही नामूस (पवित्रात्मा) है, जिसे अल्लाह ने मूसा पर उतारा था। काश, उस वक़्त मैं ताक़तवर होता, काश, मैं उस वक़्त ज़िंदा होता, जब आपकी क़ौम आपको निकाल देगी।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अच्छा, तो क्या ये लोग मुझे निकाल देंगे? वरक़ा ने कहा, हां, जब भी कोई आदमी इस तरह का पैग़ाम लाया, जैसा तुम लाए हो, तो उससे ज़रूर दुश्मनी की गई, और अगर मैंने तुम्हारा समय पा लिया, तो तुम्हारी ज़बरदस्त मदद करूंगा।

इसके बाद वरक़ा का जल्द ही देहान्त हो गया और वह्य रुक गयी।[1]

वह्य पर रोक

रही यह बात कि वह्य कितने दिनों तक बन्द रही, तो इस सिलसिले में इब्ने साद ने इब्ने अब्बास रज़ि० से एक रिवायत नक़ल की है, जिसका सार यह है कि यह रोक कुछ दिनों के लिए थी[2] और सारे पहलुओं पर नज़र डालने के बाद यही बात ज़्यादा यक़ीनी मालूम होती है और यह जो मशहूर है कि वह्य पर रोक तीन या ढाई साल तक रही, तो बिल्कुल सही नहीं।

रिवायतों और विद्वानों की रायों पर नज़र डालने के बाद मैं एक विचित्र नतीजे पर पहुंचा हूं, जिसका उल्लेख किसी विद्वान के यहां नहीं है। इसका स्पष्टीकरण यह है कि रिवायतों और विद्वानों के कथनों से मालूम होता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिरा की गुफा में हर साल एक महीना तशरीफ़ रखते थे और यह रमज़ान का महीना हुआ करता था। यह काम आपने नुबूवत के तीन साल पहले से शुरू किया था और नुबूवत के साथ इस काम का आख़िरी साल था। फिर रमज़ान के ख़ात्मे के साथ हिरा में आपका ठहरना ख़त्म हो जाता था और आप सुबह को, यानी पहली शव्वाल की सुबह को घर वापस आ जाते थे।

इधर दोनों सहीहों की रिवायतों में यह बात स्पष्ट रूप से बयान की गई है कि वह्य पर रोक लगने के बाद दोबारा जिस वक़्त वह्य आनी शुरू हुई है, उस वक़्त आप हिरा की गुफा में अपने ठहरने का महीना पूरा करके घर तशरीफ़ ला रहे थे।

---

1. सहीह बुख़ारी बाब कै-फ़ का-न ब-द-अल वह्यु 1/2-3। शब्दों में थोड़े मतभेद के साथ यह रिवायत सहीह बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर और ताबीरुर्रोया में भी रिवायत की गई है। साथ ही मुस्लिम किताबुल ईमान, हदीस न० 252
2. थोड़ा-सा स्पष्टीकरण आगे आ रहा है।

इससे यह नतीजा निकलता है कि जिस रमज़ान में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नुबूवत मिली और वह्य आनी शुरू हुई, उसी रमज़ान के ख़ात्मे के बाद पहली शव्वाल को दोबारा वह्य आई, क्योंकि यह हिरा में आपके ठहरने का आख़िरी मौक़ा था और जब यह बात साबित है कि आप पर पहली वह्य 21 रमज़ान सोमवार की रात उतरी तो उसका अर्थ यह हुआ कि वह्य पर रोक कुल दस दिन थी और दोबारा उसका आना जुमेरात (वृहस्पतिवार, पहली शव्वाल सन् 01 नुबूवत को हुआ और शायद यही वजह है कि रमज़ान के आख़िरी दहे को एतकाफ़ के लिए ख़ास किया गया है और पहली शव्वाल को ईद के लिए। (अल्लाह बेहतर जाने)

वह्य पर इस रोक की मुद्दत में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुखी रहे और आप चकित थे, चुनांचे सहीह बुख़ारी 'किताबुत्ताबीर' की रिवायत है कि—

'वह्य बन्द हो गई, जिससे अल्लाह के रसूल सल्ल० इतने दुखी हुए कि कई बार ऊंचे पहाड़ की चोटियों पर तशरीफ़ ले गए कि वहां से लुढ़क जाएं, लेकिन जब किसी पहाड़ की चोटी पर पहुंचते कि आप अपने आपको लुढ़का दें, तो हज़रत जिब्रील प्रकट होते और फ़रमाते, ऐ मुहम्मद! आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं और इसकी वजह से आपकी बेचैनी थम जाती, जी को क़रार आ जाता और आप वापस आ जाते। फिर जब आप पर वह्य की बन्दिश लंबी हो जाती, तो आप फिर उसी जैसे काम के लिए निकलते, लेकिन जब पहाड़ की चोटी पर पहुंचते तो हज़रत जिब्रील प्रकट होकर फिर वही बात दोहराते।[1]

जिब्रील दोबारा वह्य लाते हैं

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फ़रमाते हैं कि यह (अर्थात वह्य पर कुछ दिनों की रोक) इसलिए थी, ताकि आप पर जो भय छा गया था, वह विदा हो जाए और दोबारा वह्य के आने का शौक़ और इन्तिज़ार पैदा हो जाए।[2]

चुनांचे जब यह बात हासिल हो गई और आप वह्य के आने के इन्तिज़ार में रहने लगे तो अल्लाह ने आपको दोबारा वह्य भेजी। आपका बयान है कि—

'मैंने हिरा में एक महीना एतकाफ़ किया। जब मेरा एतकाफ़ पूरा हो गया तो मैं उतरा। जब बत्ने वादी में पहुंचा तो मुझे पुकारा गया। मैंने दाएं देखा कुछ

---

1. सहीह बुख़ारी, किताबुत्ताबीर बाब 'अव्वलु' मा ब-द-अ बिही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अर्रोया अस्सालिहा, 2/1034
2. फ़त्हुल बारी 1/27

नज़र न आरया, बाएं देखा, कुछ नज़र न आया, आगे देखा कुछ नज़र न आया, पीछे देखा, कुछ नज़र न आया, फिर आँसमान की तरफ़ नज़र उठाई तो एक चीज़ नज़र आई। क्या देखता हूं कि वही फ़रिश्ता, जो मेरे पास हिरा में आया था, आसमान व ज़मीन के बीच एक कुर्सी पर बैठा है। मैं उससे भयभीत होकर ज़मीन की ओर जा झुका। फिर मैंने ख़दीजा के पास आकर कहा, 'मुझे चादर ओढ़ा दो। मुझे चादर ओढ़ा दो।' मुझे कम्बल उढ़ा दो और मुझ पर ठंडा पानी डाल दो। उन्होंने मुझे चादर ओढ़ा दी और मुझ पर ठंडा पानी डाल दिया। इसके बाद अल्लाह ने 'या ऐयुहल मुद्दास्सिर क़ुम फ़-अन्ज़िर व रब्ब-क फ़-कब्बिर व सिया-ब-क फ़-तह्हिर' से 'वर-रुज-ज़ फ़हजुर०' तक नाज़िल फ़रमाई, यह नमाज़ फ़र्ज़ होने से पहले की बात है। इसके बाद वह्य के आने में गर्मी आ गई। और वह बराबर आने लगी।[1]

यही आयतें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत का आरंभ-बिंदु हैं। रिसालत आपकी नुबूवत से उतने ही दिन पीछे है, जितने दिन वह्य बन्द रही। इसमें दो क़िस्म की बातों का आपको ज़िम्मेदार बताया गया है, उसके नतीजे भी बतलाए गए हैं।

पहली क़िस्म तब्लीग़ (प्रचार) और डरावे की है जिसका हुक्म 'क़ुम फ़-अन्ज़िर' (खड़े हो जाओ और डराओ) से दिया गया है, क्योंकि इसका मतलब यह है कि आप उठ जाइए और बता दीजिए कि लोग महान अल्लाह के अलावा दूसरों की पूजा करके और उसकी ज़ात व सिफ़ात और अफ़आल व हुक़ूक़ में दूसरों को शरीक ठहरा कर जिस ग़लती व गुमराही में फंसे हुए हैं, अगर उससे बाज़ न आए तो उन पर अल्लाह का अज़ाब आ पड़ेगा।

दूसरी क़िस्म, जिसकी ज़िम्मेदारी आपको दी गई है, यह है कि आप अपनी ज़ात पर अल्लाह का हुक्म लागू करें और अपनी हद तक उसकी पाबन्दी करें, ताकि एक तरफ़ आप अल्लाह की मर्ज़ी हासिल कर सकें और दूसरी तरफ़ ईमान लाने वालों के लिए बेहतरीन नमूना भी हों। इसका हुक्म बाक़ी आयतों में हैं, चुनांचे 'व रब्ब-क फ़कब्बिर' का मतलब यह है कि अल्लाह को बड़ाई के साथ खास करें और इसमें किसी को भी इसका शरीक न ठहराएं। और 'सिया-ब-क फ़तह्हिर' (अपने कपड़े पाक रख) का मक़्सूद यह है कि कपड़े और जिस्म पाक रखें, क्योंकि जो अल्लाह के हुज़ूर खड़ा हो और उसकी बड़ाई बयान करे, किसी

---

1. सहीह बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर, तफ़्सीर सूरः मुदस्सिर बाब 1 और उसके आगे का भी। फ़त्हुल बारी 8/445-447 और ऐसा ही सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान हदीस न० 257

तरह सही नहीं कि वह गन्दा और नापाक हो और जब जिस्म और पहनावे तक की पाकी मतलूब हो तो शिर्क और अख़्लाक़ व किरदार की गन्दगी से पाकी कहीं ज़्यादा मतलूब होगी। 'वर-रुज-ज़ फ़ह्जुर' का मतलब यह है कि अल्लाह की नाराज़ी और उसके अज़ाब की वज्हों से दूर रहो और उसकी शक्ल यही है कि उसकी इताअत ज़रूरी समझो और नाफ़रमानी से बचो और 'ला तम्नुन तस्तक्सिर' का मतलब यह है कि किसी एहसान का बदला लोगों से न चाहो, या जैसा एहसान किया है उससे बेहतर बदले की उम्मीद इस दुनिया में न रखो।

आख़िरी आयत में चेतावनी दी गई है कि अपनी क़ौम से अलग दीन अपनाने, उसे अल्लाह वह्दहू ला शरी-क लहू की दावत देने और उसके अज़ाब और पकड़ से डराने के नतीजे में क़ौम की तरफ़ से तक्लीफ़ों का सामना करना होगा, इसलिए फ़रमाया गया, 'व लि रब्बि-क फ़स्बिर' (अपने परवरदिगार के लिए सब्र करना)

फिर इन आयतों की शुरुआत अल्लाह की आवाज़ में एक आसमानी आवाज़ से हो रही है, जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उस महान काम के लिए उठने और नींद की चादर ओढ़ने और बिस्तर की गर्मी से निकलकर जिहाद व कोशिश और मशक़्क़त के मैदान में आने के लिए कहा गया है। 'या ऐयुहल मुद्दस्सिर, क़ुम फ़-अन्ज़िर' (ऐ चादर ओढ़ने वाले ! उठ और डरा) गोया यह कहा जा रहा है कि जिसे अपने लिए जीना है, वह तो (राहत की ज़िंदगी गुज़ार सकता है, लेकिन आप जो इस ज़बरदस्त बोझ को उठा रहे हैं, तो आपको नींद से क्या ताल्लुक़? आपको राहत से क्या सरोकार? आपको गर्म बिस्तर से क्या मतलब? शान्तिमय जीवन से क्या ताल्लुक़? सुख-सुविधा वाले साज़ व सामान से क्या वास्ता? आप उठ जाइए उस बड़े काम के लिए जो आपका इन्तिज़ार कर रहा है, उस भारी बोझ के लिए जो आपकी ख़ातिर तैयार है। उठ जाइए जद्दोजेहद और मशक़्क़त के लिए, थकन और मेहनत के लिए, उठ जाइए कि अब नींद और राहत का वक़्त गुज़र चुका। अब आज से लगातार बेदारी है और लम्बा और मशक़्क़त भरा जिहाद है, उठ जाइए, और इस काम के लिए मुस्तैद और तैयार हो जाइए।

यह बड़ा भारी और रौबदार कलिमा है। उसने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पुरसुकून घर, गर्म आग़ोश और नर्म बिस्तर से खींच कर तीखे तूफ़ानों और तेज़ झक्कड़ों के दर्मियान अथाह समुद्र में फेंक दिया और लोगों के ज़मीर (अन्तरात्मा) और ज़िंदगी की हक़ीक़तों की कशाकश के मंजधार में ला खड़ा किया।

फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उठ गए और बीस साल से ज़्यादा मुद्दत तक उठे रहे। सुख-वैभव को त्याग दिया, ज़िंदगी अपने

लिए अपने घरवालों के लिए न रही। आप उठे तो उठे ही रहे। काम अल्लाह की ओर बुलाना था। आपने यह कमरतोड़ भारी बोझ अपने कंधे पर किसी दबाव के बिन उठा लिया। यह बोझ था इस धरती पर बड़ी अमानत का बोझ, सारी मानवता का बोझ, सारे अक़ीदे का बोझ और विभिन्न मैदानों में जिहाद और संघर्ष का बोझ। आपने बीस साल से ज़्यादा दिनों तक लगातार हर मोर्चे पर फैले संघर्ष में जीवन बिताया। इस पूरी मुद्दत में, यानी जब से आपने वह भारी आसमानी आवाज़ सुनी और यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी पाई, आपको एक हालत दूसरी हालत से गाफ़िल न कर सकी। अल्लाह आपको हमारी तरफ़ से और सारी मानवता की तरफ़ से बेहतरीन बदला दे।

आगे के पृष्ठ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्म के इसी लम्बे और मशक़्क़त भरे जिहाद का एक छोटा-सा ख़ाका (प्रारूप) है।

वह्य की क़िस्में

अब हम क्रम से तनिक हट कर यानी रिसालत व नुबूवत की मुबारक ज़िंदगी का विवरण शुरू करने से पहले वह्य की क़िस्मों का उल्लेख करना चाहते हैं, क्योंकि यह रिवायत का स्रोत और दावत की कुमक है।

अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने वह्य की नीचे लिखी श्रेणियों का उल्लेख किया है—

1. **सच्चा सपना**—इसी से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वह्य की शुरूआत हुई।

2. **फ़रिश्ता आपको दिखाई दिए बिना आपके दिल में बात डाल देता था,** जैसे नबी सल्ल० का इर्शाद है—

'रूहुल क़ुद्स (जिब्रील) ने मेरे दिल में यह बात फूंकी कि कोई नफ़्स (जीव) मर नहीं सकता, यहां तक कि अपनी रोज़ी पूरी कर ले, पस अल्लाह से डरो और तलब में अच्छाई अपनाओ और रोज़ी में विलम्ब तुम्हें इस बात पर तैयार न करे कि तुम उसे अल्लाह की नाफ़रमानी के ज़रिए खोजो, क्योंकि अल्लाह के पास जो कुछ है, वह उसके आज्ञापालन के बिना हासिल नहीं किया जा सकता।'

3. **फ़रिश्ता नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए आदमी का रूप धारण करके आपको सम्बोधित करता,** फिर जो कुछ वह कहता, उसे आप याद कर लेते। ऐसी स्थिति में कभी-कभी सहाबा भी फ़रिश्ते को देखते थे।

4. **आपके पास वह्य घंटी के टनटनाने की तरह आती थी।** वह्य की यह सबसे भारी शक्ल होती थी। इस शक्ल में फ़रिश्ता आपसे मिलता था और वह्य आती थी तो कड़े जाड़े के ज़माने में भी आपके माथे से पसीना फूट पड़ता था

और आप ऊंटनी पर सवार होते तो वह ज़मीन पर बैठ जाती थी। एक बार इस तरह वह्य आई कि आपकी रान हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० की रान पर थी, तो उन पर इतना बड़ा बोझ पड़ा कि मालूम होता था रान कुचल जाएगी।

5. आप फ़रिश्ते को उसकी असली और पैदाइशी शक्ल में देखते थे और इसी हालत में वह अल्लाह की मंशा के मुताबिक़ आपकी ओर वह्य करता था। यह शक्ल आपके साथ दो बार पेश आई थी, जिसका उल्लेख अल्लाह ने सूरः नज्म में किया है।

6. वह वह्य, जो आप पर मेराज की रात में नमाज़ के फ़र्ज़ होने के सिलसिले में अल्लाह ने उस वक़्त फ़रमाई, जब आप आसमानों के ऊपर थे।

7. फ़रिश्ते के माध्यम के बिना अल्लाह की आपसे सीधी बातचीत, जैसे अल्लाह ने मूसा से की थी : वह्य की यह शक्ल मूसा अलैहिस्सलाम के लिए क़ुरआन से क़तई तौर पर साबित है, लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए इसका सबूत (क़ुरआन के बजाए) मेराज की हदीस में है।

कुछ लोगों ने एक आठवीं शक्ल भी मानी है, यानी अल्लाह से आमने-सामने बिना किसी परदे के, बात करे, लेकिन यह एक ऐसी शक्ल है जिसके बारे में पहले के लोगों से लेकर आज तक के लोगों में मतभेद चला आया है।[1]

---

1. ज़ादुल मआद 1/18, पहली और आठवीं शक्ल के बयान में मूल लेख का थोड़ा संक्षिप्तीकरण कर दिया गया है।

तब्लीग़ (प्रचार) का हुक्म और उसके तक़ाज़े

सूरः मुद्दस्सिर की आरंभिक आयतों—— 'या ऐयुहल मुद्दस्सिर' से 'व लिरब्बि-क फ़स्बिर' तक—में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कई हुक्म दिए गए हैं जो देखने में बहुत छोटे और सादा हैं, लेकिन सच में बड़े दूरगामी उद्देश्यों पर सम्मिलित हैं और बड़े गहरे प्रभाव रखते हैं। चुनांचे—

1. इंज़ार (डराने) की आख़िरी मंज़िल यह है कि दुनिया में अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ जो भी चल रहा हो, उसे उसके ख़तरनाक अंजाम से सूचित कर दिया जाए और वह भी इस तरह कि ख़ुदा के अज़ाब के डर से उसके दिल व दिमाग़ में हलचल और उथल-पुथल मच जाए।

2. रब की बड़ाई और किब्रियाई बजा लाने की आख़िरी मंज़िल यह है कि धरती पर किसी और की किब्रियाई बाक़ी न रहने दी जाए, बल्कि उसकी शौकत तोड़ दी जाए और उसे उलटकर रख दिया जाए, यहां तक कि धरती पर सिर्फ़ अल्लाह की बड़ाई बाक़ी रहे।

3. कपड़े की पाकी और गन्दगी से दूरी की आख़िरी मंज़िल यह है कि भीतर व बाहर की पाकी और तमाम गन्दगियों और ख़राबियों से नफ़्स (मन) की सफ़ाई के सिलसिले में इतना आगे बढ़ जाएं, जो अल्लाह की रहमत के घने साए में उसकी देखभाल, निगरानी, हिदायत और रोशनी के तहत संभव है, यहां तक कि इंसानी समाज का ऐसा श्रेष्ठतम नमूना बन जाएं कि आपकी ओर तमाम भले लोग खिंचते चले आएं और आपकी बड़ाई का एहसास तमाम टेढ़ वालों को हो जाए और इस तरह सारी दुनिया पक्ष या विपक्ष में आपके चारों ओर जमा हो जाए।

4. एहसान करके उस पर ज़्यादती न चाहने की आख़िरी मंज़िल यह है कि अपनी कोशिशों और कारनामों को बड़ाई और महत्व न दें, बल्कि एक के बाद दूसरे काम के लिए जद्दोजेहद करते जाएं और बड़े स्तर पर क़ुर्बानी और बलिदान करके उसे इस अर्थ में भुलाते जाएं कि यह हमारा कोई कारनामा है यानी अल्लाह की याद और उसके सामने जवाबदेही का एहसास अपनी मेहनतों और कोशिशों पर छाया रहे।

5. आख़िरी आयत में इशारा है अल्लाह की ओर दावत का काम (यानी

बुलाने) का काम शुरू करने के बाद विरोधियों की ओर से, विरोध, निन्दा, हंसी-ठट्ठों की शक्ल में कष्ट पहुंचाने से लेकर आपको और आपके साथियों को क़त्ल करने और आपके पास जमा होने वाले ईमान वालों को नेस्त व नाबूद करने तक की भरपूर कोशिशें होंगी और आपको इन सबसे वास्ता पड़ेगा। इस स्थिति में आपको बड़ी दृढ़ता और धीरज के साथ जमना होगा, वह भी इसलिए नहीं कि इस सब्र के बदले किसी मनोकामना की पूर्ति की आशा हो, बल्कि सिर्फ़ अपने पालनहार की मर्ज़ी और उसके दीन की सरबुलन्दी के लिए जमना। (व लिरब्बि-क फ़स्बिर)

अल्लाहु अक्बर! ये आदेश अपने प्रत्यक्ष रूप में कितने सादा और संक्षिप्त हैं और शब्दों के प्रयोग ने कितनी शान्ति और लुभावना संगीत पैदा कर दिया है, लेकिन कार्य और उद्देश्य की दृष्टि से ये आदेश कितने भारी, कितने महान और कितने कठिन हैं और इनके नतीजे में कितनी बड़ी चौमुखी आंधी चल पड़ेगी, जो सारी दुनिया के कोने-कोने को हिलाकर और एक को दूसरे से गुथकर रख देगी।

इन्हीं उपरोक्त आयतों में दावत व तब्लीग़ (प्रचार-प्रसार) की सामग्री भी मौजूद है।

इंज़ार का मतलब ही यह है कि इंसानों के कुछ कर्म ऐसे हैं जिनका अंजाम बुरा है और यह सबको मालूम है कि इस दुनिया में लोगों को न तो उनके सारे कर्मों का बदला दिया जाता है और न दिया जा सकता है, इसलिए इंज़ार का एक तक़ाज़ा यह भी है कि दुनिया के दिनों के अलावा एक दिन ऐसा भी होना चाहिए जिसमें हर कर्म का पूरा-पूरा और ठीक-ठीक बदला दिया जा सके यानी क़ियामत का दिन जज़ा का दिन और बदले का दिन है, फिर उस दिन बदला दिए जाने का ज़रूरी तक़ाज़ा है कि हम दुनिया में जो ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं, उसके अलावा भी एक ज़िंदगी हो।

शेष आयतों में बन्दों से यह मांग की गई है कि वे ख़ालिस तौहीद (विशुद्ध एकेश्वरवाद) अपनाएं। अपने सारे मामले अल्लाह को सौंप दें और अल्लाह की मर्ज़ी पर नफ़्स व ख़्वाहिश (मनोकामना) और लोगों की मर्ज़ी को छोड़ दें। इस तरह दावत व तब्लीग़ (प्रचार-प्रसार) की सामग्री का सार यह हुआ—

(क) तौहीद,

(ख) आख़िरत के दिन पर ईमान,

(ग) नफ़्स के तज़्किए (मनोनिग्रह) की व्यवस्था, यानी बुरे अंजाम तक ले जाने

वाले गंदे और बेहयाई के कामों से परहेज़ और सत्कर्मों और भलाई के कामों में लगे रहने की कोशिश।

(घ) अपने सारे मामलों को अल्लाह के हवाले और सुपुर्द करना।

(ङ) फिर इस सिलसिले की आख़िरी कड़ी यह है कि यह सब कुछ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत पर ईमान लाकर आपके महान नेतृत्व और आपकी मूल्यवान बातों की रोशनी में अंजाम दिया जाए।

फिर इन आयतों का आधार अल्लाह की आवाज़ यानी एक आसमानी पुकार है, जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उस बड़े और भारी काम के लिए उठने और नींद से बचकर और बिस्तर की गर्मी से निकल कर अथक परिश्रम और कष्ट के मैदान में आने के लिए कहा गया है।

'ऐ चादर लपेट कर लेटने वाले उठ और डरा', गोया यह कहा जा रहा है कि जिसे अपने लिए जीना है, वह तो राहत की ज़िंदगी गुज़ार सकता है, लेकिन आप, जो इस ज़बरदस्त बोझ को उठा रहे हैं, तो आपको नींद से क्या ताल्लुक़? सुख-वैभव की सामग्रियों से क्या लेना-देना? अब उठ जाइए उस महान कार्य के लिए जो आपका इन्तिज़ार कर रहा है, उस भारी बोझ के लिए जो आपके लिए तैयार है, उठ जाइए अथक परिश्रम के लिए, थकन और मेहनत के लिए उठ जाइए कि अब नींद और राहत का वक़्त गुज़र चुका। अब आज से बराबर जागना है और लम्बा और मशक़्क़त भरा जिहाद है, उठ जाइए और इस काम के लिए मुस्तैद और तैयार हो जाइए।

यह बहुत भारी और ज़ोरदार बात है, इसने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शांत घर, गर्म गोद और नर्म बिस्तर से खींच कर तेज़ तूफ़ानों और ज़ोरदार झक्कड़ों के बीच अथाह समुद्र में फेंक दिया और लोगों की अन्तरात्मा और जीवन की वास्तविकताओं की खींचतान के बीच ला खड़ा किया।

फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उठ खड़े हुए और बीस साल की मुद्दत तक उठे रहे। सुख-वैभव त्याग दिया, ज़िंदगी अपने लिए और बीवी-बच्चों के लिए न रही, आप उठे तो उठे ही रहे। काम अल्लाह की ओर दावत देना था। आपने यह कमरतोड़ भारी बोझ अपने कंधे पर किसी दबाव के बिना उठा लिया। यह बोझ था इस धरती पर बड़ी अमानत का बोझ, सारी मानवता का बोझ, सारे अक़ीदे (विश्वास और श्रद्धा) का बोझ और विभिन्न क्षेत्रों में अथक परिश्रम और प्रतिरक्षा का बोझ। आपने बीस साल से अधिक समय तक लगातार और सर्वव्यापी संघर्ष में जीवन बिताया और इस पूरी मुद्दत में यानी

जब से आपने वह आसमानी आवाज़ सुनी और यह भारी ज़िम्मेदारी पाई, आपको कोई एक हालत किसी दूसरी हालत से ग़ाफ़िल न कर सकी। अल्लाह आपको हमारी ओर से और सम्पूर्ण मानवता की ओर से बेहतरीन बदला दे।[1]

आगे के पृष्ठों में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लम्बे और मेहनत भरे जिहाद की एक संक्षिप्त रूप-रेखा है।

---

1. फ़ी ज़िलालिल क़ुरआन सूरः मुज़्ज़म्मिल व मुद्दस्सिर पारा 29/168-171, 182

पहला मरहला

अल्लाह की तरफ़ दावत (बुलाना)

ख़ुफ़िया दावत के तीन साल

सूरः मुद्दस्सिर की पिछली आयतों के आने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह की तरफ़ लोगों को बुलाने के लिए उठ गए। चूंकि आपकी क़ौम जफ़ाकार थी, बुतपरस्ती और दरगाह परस्ती उसका दीन था, बाप-दादा की रीति उसकी दलील थी, गर्व, दंभ, अहंकार और इंकार उसका चरित्र था और तलवार उसकी समस्याओं का साधन थी। इसके अलावा अरब प्रायद्वीप में धार्मिक गुरु के रूप में उसकी मान्यता थी, उसके असल केन्द्र पर क़ाबिज़ और उसके वजूद के निगरां थे, इसीलिए ऐसी स्थिति में हिक्मत का तक़ाज़ा था कि पहले पहल दावत व तब्लीग़ का काम परदे के पीछे रहकर अंजाम दिया जाए, ताकि मक्का वालों के सामने अचानक एक हलचल पैदा करने वाली स्थिति न आ जाए।

शुरू के इस्लामी साथी

यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे पहले उन लोगों के सामने इस्लाम पेश करते, जिनसे आपका गहरा संपर्क और संबंध था, यानी अपने घर के लोगों और दोस्तों के सामने। चुनांचे सबसे पहले आपने उन्हीं को दावत दी। इस तरह आपने शुरू में अपनी जान-पहचान के उन लोगों को सत्य की ओर बुलाया जिनके चेहरों पर आप भलाई के चिह्न देख चुके थे और यह जान चुके थे कि वे सत्य और भलाई को पसन्द करते हैं, आपकी सच्चाई और अमानतदारी को जानते हैं। फिर आपने जिन्हें इस्लाम की दावत दी, उनमें से एक ऐसे वर्ग ने, जिसे कभी भी अल्लाह के रसूल सल्ल० की महानता, महत्ता और सत्यता पर सन्देह नहीं हुआ था, आपकी बात मान ली। यह इस्लामी इतिहास में 'सबसे पहले के लोग' माने जाते हैं। इनकी सूची में सबसे ऊपर आपकी बीवी हज़रत ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलद, आपके आज़ाद किए हुए दास हज़रत ज़ैद बिन हारिसा बिन शुरहबील कलबी रज़ि०[1],

---

1. यह लड़ाई में क़ैद होकर दास बना लिए गए थे, बाद में हज़रत ख़दीजा रज़ि० उनकी मालिक हुईं और उन्हें अल्लाह के रसूल सल्ल० को भेंट कर दिया। इसके बाद उनके

आपके चचेरे भाई हज़रत अली बिन अबू तालिब, जो अभी बच्चे थे और आपकी परवरिश में थे, और आपके पक्के साथी हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० हैं। ये सबके सब पहले ही दिन मुसलमान हो गए थे।[1] इसके बाद अबूबक्र रज़ि० इस्लाम की तब्लीग़ में सरगर्म हो गए। वे बड़े लोकप्रिय, नम्र हृदय, पसन्दीदा आदतों वाले, सच्चरित्र और सख़ी-दाता थे। उनके पास उनकी मुरव्वत, दूरदर्शिता, व्यापार और सत्संग की वजह से लोगों का आना-जाना लगा रहता था, चुनांचे उन्होंने अपने पास आने-जाने वालों और उठने-बैठने वालों में से जिसको विश्वसनीय पाया, उसे अब इस्लाम की दावत देनी शुरू कर दी। उनकी कोशिश से हज़रत उस्मान रज़ि०, हज़रत ज़ुबैर रज़ि०, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि०, हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० और हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० मुसलमान हुए। ये बुज़ुर्ग इस्लाम का अगला दस्ता थे।

उनके बाद अमीने उम्मत[2] हज़रत अबू उबैदा आमिर बिन जर्राह रज़ि०, अबू सलमा बिन अब्दुल असद मख़्ज़ूमी, उनकी बीवी अरक़म बिन अबी अरक़म, उस्मान बिन मज़ऊन और उनके दोनों भाई क़दामा और अब्दुल्लाह और उबैदा बिन हारिस बिन मुत्तलिब बिन अब्दे मुनाफ़, सईद बिन ज़ैद अदवी और उनकी बीवी यानी हज़रत उमर रज़ि० की बहन फ़ातमा बिन्त ख़त्ताब अदवीया और ख़ब्बाब बिन अरत्त तमीमी, जाफ़र बिन अबी तालिब, उनकी बीवी अस्मा बिन्त अमीस, ख़ालिद बिन सईद बिन आस उमवी, उनकी बीवी अमीना बिन्त ख़ल्फ़ औरउनके भाई अम्र बिन सईद बिन आस, हातिब बिन हारिस जुमही, उनकी बीवी फ़ातिमा बिन्त मुजल्लल और उनके भाई ख़त्ताब बिन हारिस और उनकी बीवी फ़सीहा बिन्त यसार और उनके एक और भाई मामर बिन हारिस, मुत्तलिब बिन अज़हर ज़ोहरी और उनकी बीवी ज़मला बिन्त अबी उर्फ़ और नईम बिन अब्दुल्लाह बिन सहाम अदवी मुसलमान हुए। ये सभी क़ुरैश क़बीला के

पिता और चचा उन्हें घर ले जाने के लिए आए, लेकिन उन्होंने बाप और चचा को छोड़कर अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ रहना पसन्द किया। इसके बाद आपने अरब रिवाज के मुताबिक़ उन्हें अपना लयपालक बना लिया और उन्हें ज़ैद बिन मुहम्मद कहा जाने लगा, यहां तक कि इस्लाम ने इस रस्म को जड़ से काट दिया। यह मूता की लड़ाई में जुमादला ऊला सन् 08 हि० में सेनापति की हैसियत से लड़ते-लड़ते शहीद हुए।

1. रहमतुललिल आलमीन 1/50
2. इस उपाधि से याद किए जाने की वजह के लिए देखिए सहीह बुख़ारी, मनाक़िब अबी उबैदा बिन जर्राह 1/230

अलग-अलग परिवारों और शाखाओं से ताल्लुक़ रखते थे।

क़ुरैश के बाहर से जो लोग पहले पहल इस्लाम लाए, उनमें सूची के शुरू में ये हैं—

अब्दुल्लाह बिन मसऊद हज़्ली, मसऊद बिन रबीआ तमारी, अब्दुल्लाह बिन जह्श असदी, उनके भाई अहमद बिन जह्श, बरा बिन रबाह हब्शी, सुहैब बिन सनान रूमी, अम्मार बिन यासिर अनसी, उनके वालिद यासिर और मां सुमैया और आमिर बिन फ़ुहैरा औरतों में ऊपर वाली औरतों के अलावा जो पहले-पहले इस्लाम ले आईं, उनके नाम ये हैं—

उम्मे ऐमन बरक़ा हब्शीया, हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब की बीवी, उम्मुल फ़ज़्ल लुबाबतुल कुबरा बिन्त हारिस हिलालिया और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु की साहबज़ादी हज़रत अस्मा।[1]

ये सभी 'साबिक़ूनल अव्वलीन' की उपाधि से जाने जाते हैं। छान-बीन से मालूम हुआ है कि जो लोग इस्लाम की तरफ़ पहल करने के गुण से जाने जाते हैं, उनकी तायदाद मर्दों और औरतों को मिलाकर एक सौ तीस तक पहुंच जाती है, लेकिन यह बात पूरे विश्वास से नहीं मालूम हो सका कि ये सब खुली दावत व तब्लीग़ से पहले इस्लाम लाए या कुछ लोग बाद के हैं।

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि इसके बाद मर्द और औरतें इस्लाम में गिरोह-गिरोह करके दाख़िल हुए, यहां तक कि मक्का में इस्लाम की चर्चा फैल गई।[2]

ये लोग छिप-छिपाकर मुसलमान हुए थे और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी छिप-छिपाकर ही उनके मार्गदर्शन और धार्मिक शिक्षा के लिए उनके साथ जमा होते थे, क्योंकि तब्लीग़ का काम अभी तक व्यक्तिगत रूप से छिप-छिपाकर ही चल रहा था। इधर सूरः मुद्दस्सिर की शुरू की आयतों के बाद वह्य का आना बराबर और तेज़ी के साथ जारी था। इस दौर में छोटी-छोटी आयतें उतर रही थीं। इन आयतों का अन्त एक ही प्रकार के बड़े चित्ताकर्षक शब्दों में होता था और उनमें बड़ा शान्तिदायी और मनमोहक संगीत होता था जो उस शांत और हृदय को छू लेने वातावरण के अनुसार ही होता था, फिर इन आयतों में मनोनिग्रह के गुण और दुनिया की गन्दगी में लत-पत होने की बुराइयां

---

1. विस्तृत विवेचन के लिए देखिए सीरत इब्ने हिशाम 1/245, 262 इब्ने हिशाम के कुछ उल्लिखित नाम विचारणीय हैं। मैंने ऐसे नामों को छोड़ दिया है।
2. सीरत इब्ने हिशाम 1/262

बयान की जाती थीं और जन्नत व जहन्नम का चित्र इस तरह खींचा जाता था कि मानो वे आंखों के सामने हैं। ये आयतें ईमान वालों को उस वक़्त के इंसानी समाज से बिल्कुल अलग एक दूसरी ही दुनिया की सैर कराती थीं।

नमाज़

शुरू में जो कुछ उतरा, उसी में नमाज़ का हुक्म भी था।

इब्ने हजर कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और इसी तरह आपके सहाबा किराम मेराज के वाक़िए से पहले क़तई तौर पर नमाज़ पढ़ते थे, अलबत्ता इसमें मतभेद है कि पांच वक़्त की नमाज़ से पहले कोई नमाज़ फ़र्ज़ थी या नहीं? कुछ लोग कहते हैं कि सूरज के उगने और डूबने से पहले एक-एक नमाज़ फ़र्ज़ थी।

हारिस बिन उसामा ने इब्ने लहीआ की ओर से मिली हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० से यह हदीस रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर शुरू-शुरू में जब वह्य आई, तो आपके पास हज़रत जिब्रील तशरीफ़ लाए और आपको वुज़ू का तरीक़ा सिखाया, जब वुज़ू से फ़ारिग़ हुए तो एक चुल्लू पानी लेकर शर्मगाह पर छींटा मारा।

इब्ने माजा ने भी इसी अर्थ में हदीस रिवायत की है।

बरा बिन आज़िब और इब्ने अब्बास रज़ि० से भी इसी तरह की हदीस रिवायत की गई है। इब्ने अब्बास रज़ि० की हदीस में भी इसका ज़िक्र है कि यह (नमाज़) शुरू के फ़र्ज़ों में से थी।[1]

इब्ने हिशाम का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० नमाज़ के वक़्त घाटियों में चले जाते थे और अपनी क़ौम से छिपकर नमाज़ पढ़ते थे। एक बार अबू तालिब ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अली रज़ि० को नमाज़ पढ़ते देख लिया, पूछा और सच्चाई मालूम हुई तो कहा कि इस पर बरक़रार रहें।[2]

यह इबादत थी, जिसका हुक्म ईमान वालों को दिया गया था। उस वक़्त नमाज़ के अलावा और किसी बात के हुक्म का पता नहीं चलता, अलबत्ता वह्य के ज़रिए तौहीद के अलग-अलग पहलू बयान किए जाते थे, नफ़्स पाक करने का चाव दिलाया जाता था। अच्छे अख़्लाक़ पर उभारा जाता था। जन्नत व जहन्नम

1. मुख़्तसरुस्सीरत, शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 88
2. इब्ने हिशाम 1/247

का नक़्शा इस तरह खींचा जाता था गोया वे आंखों के सामने हैं। ऐसे असरदार वाज़ होते थे जिनसे सीने खुल जाते, रूहें आसूदा हो जातीं और ईमान वाले उस वक़्त के इंसानी समाज से अलग एक दूसरी ही फ़िज़ा की सैर करने लगते।

यों तीन वर्ष बीत गए और दावत व तब्लीग़ का काम केवल व्यक्तियों तक सीमित रहा। मज्मों और मज्लिसों में उसका एलान नहीं किया गया, लेकिन इस बीच यह क़ुरैश के अन्दर ख़ासी मशहूर हो गई। मक्का में इस्लाम का ज़िक्र फैल गया और लोगों में इसका चर्चा हो गया। कुछ ने किसी-किसी वक़्त मना भी किया और कुछ ईमान वालों पर सख़्ती भी हुई, लेकिन कुल मिलाकर इस दावत को कोई ख़ास अहमियत नहीं दी गई, क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी उनके दीन से कोई छेड़-छाड़ न की थी, न उनके माबूदों के बारे में ज़ुबान खोली थी।

दूसरा मरहला

खुला प्रचार

खुला प्रचार करने का पहला हुक्म

जब ईमान वालों की एक जमाअत भाईचारा और सहयोग के आधार पर तैयार हो गई, जो अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाने और उसको उसका स्थान दिलाने का बोझ उठा सकती थी, तो वह्य आई और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़िम्मेदार बनाया गया कि अपनी क़ौम को खुल्लम खुल्ला दावत दें और उनके असत्य का ख़ूबसूरती के साथ रद्द करें।

इस बारे में सबसे पहले अल्लाह का यह कथन आया—

'आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को (अल्लाह के अज़ाब से) डराइए।'

(26 : 214)

यह सूरः शुअरा की आयत है और इस सूरः में सबसे पहले हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का वाक़िया बयान किया गया है, यानी यह बताया गया है कि किस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की नुबूवत की शुरूआत हुई, फिर आख़िर में उन्होंने बनी इसराईल सहित हिजरत करके फ़िरऔन अैर उसकी क़ौम से नजात पाई और फ़िरऔन और आले फिरऔन को डुबो दिया गया। दूसरे शब्दों में यह उल्लेख तमाम मरहलों पर छाया हुआ है, जिनसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और फ़िरऔनी क़ौम को अल्लाह के दीन की दावत देते हुए गुज़रे थे।

मेरा ख़्याल है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी क़ौम के अन्दर खुल कर प्रचार करने का हुक्म दिया गया, तो इस मौक़े पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की घटना का यह विवरण इसलिए दिया गया, ताकि खुल्लम खुल्ला दावत देने के बाद जिस तरह झुठलाने और अन्याय और अत्याचार की कार्रवाइयों से मामला पड़ने वाला था, उसका एक नमूना आप और सहाबा किराम रज़ि० के सामने मौजूद रहे।

दूसरी ओर इस सूरः में पैग़म्बरों को झुठलाने वाली क़ौमें, जैसे फ़िरऔन और क़ौमे फ़िरऔन के अलावा क़ौमे नूह, आद, समूद, क़ौमे इब्राहीम, क़ौमे लूत और अस्हाबुल ऐका के अंजाम का भी उल्लेख है। इसका मक़्सद शायद यह है कि जो लोग आपको झुठलाएं, उन्हें मालूम हो जाए कि झुठलाने पर आग्रह की स्थिति में उनका अंजाम क्या होने वाला है और वह अल्लाह की ओर से किस

क़िस्म की पकड़ से दोचार होंगे। साथ ही ईमान वालों को मालूम हो जाए कि अच्छा अंजाम उन्हीं का होगा, झुठलाने वालों का नहीं।

रिश्तेदारों में तब्लीग़ (प्रचार)

बहरहाल इस आयत के उतरने के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहला काम यह किया कि बनी हाशिम को जमा किया, उनके साथ बनी मुत्तलिब बिन अब्दे मुनाफ़ की भी एक जमाअत थी, कुल 45 आदमी थे, लेकिन अबू लहब ने बात लपक ली और बोला, देखो ये तुम्हारे चचा और चचेरे भाई हैं, बात करो, लेकिन नादानी छोड़ दो और यह समझ लो कि तुम्हारा परिवार सारे अरब से मुक़ाबले की ताब नहीं रखता और मैं सबसे ज़्यादा हक़दार हूं कि तुम्हें पकड़ लूं। पस तुम्हारे लिए तुम्हारे बाप का परिवार ही काफ़ी है और अगर तुम अपनी बात पर क़ायम रहे तो यह बहुत आसान होगा कि क़ुरैश के सारे क़बीले तुम पर टूट पड़ें और बाक़ी अरब भी उनकी सहायता करें। फिर मैं नहीं जानता कि कोई व्यक्ति अपने बाप के परिवार के लिए तुमसे बढ़कर तबाही और बर्बादी की वजह होगा। इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चुप्पी साध ली और उस सभा में कोई बात न की।

इसके बाद आपने उन्हें दोबारा जमा किया और इर्शाद फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। मैं उसका गुणगान करता हूं और उससे मदद चाहता हूं, उस पर ईमान रखता हूं, उसी पर भरोसा करता हूं और यह गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। फिर आपने फ़रमाया, रहनुमा अपने घर के लोगों से झूठ नहीं बोल सकता। उस अल्लाह की क़सम, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, मैं तुम्हारी ओर मुख्य रूप से और लोगों की ओर सामान्य रूप से अल्लाह का रसूल (भेजा हुआ) हूं। अल्लाह की क़सम! तुम लोग उसी तरह मौत से दोचार होगे, जैसे सो जाते हो और उसी तरह उठाए जाओगे, जैसे सो कर जागते हो, फिर जो कुछ तुम करते हो उसका तुमसे हिसाब लिया जाएगा। इसके बाद या तो हमेशा के लिए जन्नत है या हमेशा के लिए जहन्नम।

इस पर अबू तालिब ने कहा, (न पूछो), हमें तुम्हें सहयोग देना कितना पसन्द है? तुम्हारी नसीहत कितनी अपनाने लायक़ है और हम तुम्हारी बात कितनी सच्ची जानते-मानते हैं और यह तुम्हारे बाप का परिवार जमा है और मैं भी उनमें का एक व्यक्ति हूं। अन्तर इतना है कि मैं तुम्हारी पसन्द पूरी करने के लिए इन सब में आगे-आगे हूं, इसलिए तुम्हें जिस बात का हुक्म हुआ है, उसे अंजाम

दो। अल्लाह की क़सम ! मैं तुम्हारी लगातार हिफ़ाज़त और मदद करता रहूंगा, अलबत्ता मेरी तबियत अब्दुल मुत्तलिब का दीन छोड़ने पर राज़ी नहीं।

अबू लहब ने कहा, यह ख़ुदा की क़सम ! बुराई है। इसके हाथ दूसरों से पहले तुम लोग ख़ुद ही पकड़ लो।

इस पर अबू तालिब ने कहा, ख़ुदा की क़सम, जब तक जान में जान है, हम इनकी रक्षा करते रहेंगे।[1]

सफ़ा पहाड़ी पर

जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अच्छी तरह इत्मीनान कर लिया कि अल्लाह के दीन के प्रचार के समय अबू तालिब उनका समर्थन करेंगे, तो एक दिन आप सफ़ा पहाड़ी पर तशरीफ़ ले गए और सबसे ऊंचे पत्थर पर चढ़कर यह आवाज़ लगाई, या सबाहा (हाय सुबह !) (अरबों का चलन था कि दुश्मन के हमले या किसी संगीन ख़तरे से सूचित करने के लिए किसी ऊंची जगह पर चढ़कर इन्हीं शब्दों से पुकारते थे।)

इसके बाद आपने क़ुरैश की एक-एक शाख़ और एक-एक ख़ानदान को आवाज़ लगाई : ऐ बनी फ़ह ! ऐ बनी अदी ! ऐ बनी फ़्लां ! और ऐ बनी फ्लां ! ऐ बनी अब्दे मुनाफ़ ! ऐ बनी अब्दुल मुत्तलिब !

जब लोगों ने आवाज़ सुनी तो कहा, कौन पुकार रहा है ? जवाब मिला, मुहम्मद हैं। इस पर लोग तेज़ी से आए। अगर कोई ख़ुद न आ सका, तो अपना आदमी भेज दिया कि देखे क्या बात है ? यों क़ुरैश के लोग आ गए, उनमें अबू लह्ब भी था।

जब सब जमा हो गए, तो आपने फ़रमाया, यह बताओ, अगर मैं ख़बर दूं कि उधर इस पहाड़ के दामन में घाटी के अन्दर घोड़सवारों की एक जमाअत है जो तुम पर छापा मारना चाहती है, तो क्या तुम लोग मुझे सच्चा मानोगे ?

लोगों ने कहा, हां ! हां ! हमने आप पर कभी झूठ का तजुर्बा नहीं किया है, हमने आप पर सच ही का तजुर्बा किया है।

आपने फ़रमाया, अच्छा, तो मैं एक सख़्त अज़ाब से पहले तुम्हें ख़बरदार करने के लिए भेजा गया हूं। मेरी और तुम्हारी मिसाल ऐसे ही है जैसे किसी आदमी ने दुश्मन को देखा, फिर उसने किसी ऊंची जगह पर चढ़कर अपने ख़ानदान वालों पर नज़र डाली तो उसे डर हुआ कि दुश्मन उससे पहले पहुंच जाएगा, इसलिए उसने

1. फ़िक़्हुस्सीरः पृ० 77, 88; इब्नुल असीर से लिया गया।

वहीं से पुकार लगानी शुरू कर दी, या सबाहा ! (हाय सुबह !)

इसके बाद आपने लोगों को हक़ की दावत दी और अल्लाह के अज़ाब से डराया और हर ख़ास व आम को ख़िताब किया, चुनांचे फ़रमाया—

क़ुरैश के लोगो ! अपने आपको अल्लाह से ख़रीद लो, जहन्नम से बचा लो। मैं तुम्हारे लाभ-हानि का अधिकार नहीं रखता। तुम्हें अल्लाह की पकड़ से बचाने के लिए कुछ काम आ सकता हूं।

बनू काब बिन लुई ! अपने आपको जहन्नम से बचा लो, क्योंकि तुम्हारे हानि-लाभ का अधिकार नहीं।

बनू मुर्रा बिन काब ! अपने आपको जहन्नम से बचा लो।

बनू क़ुसई ! अपने आपको जहन्नम से बचा लो, क्योंकि तुम्हारे हानि-लाभ का अधिकार नहीं।

बनू अब्दे मुनाफ़ ! अपने आपको जहन्नम से बचा लो, क्योंकि मुझे तुम्हारे हानि-लाभ का कुछ अधिकार नहीं। मैं तुम्हें अल्लाह से बचाने में कुछ काम आ सकता हूं।

बनू अब्दे शम्स ! अपने आपको जहन्नम से बचा लो।

बनू हाशिम ! अपने आपको जहन्नम से बचा लो।

बनू अब्दुल मुत्तलिब ! अपने आपको जहन्नम से बचा लो, क्योंकि मैं तुम्हारे लाभ-हानि का मालिक नहीं और न तुम्हें अल्लाह से बचाने के लिए कुछ काम आ सकता हूं। मेरे माल में से जो चाहो, मांग लो, मगर मैं तुम्हें अल्लाह से बचाने का कुछ अधिकार नहीं रखता।

अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब ! मैं तुम्हें भी अल्लाह से बचाने के लिए कुछ काम नहीं आ सकता।

अल्लाह के रसूल सल्ल० की फूफी, सफ़िया बिन्त अब्दुल मुत्तलिब ! मैं तुम्हें भी अल्लाह से बचाने के लिए कुछ काम नहीं आ सकता।

फ़ातिमा बिन्त मुहम्मद रसूलुल्लाह ! मेरे माल में से जो चाहो, मांग लो, मगर अपने आपको जहन्नम से बचाओ, क्योंकि मैं तुम्हारे भी लाभ-हानि का मालिक नहीं, और न तुम्हें अल्लाह से बचाने के लिए कुछ काम आ सकता हूं।

जब यह डरावा ख़त्म हुआ तो लोग बिखर गए। उनके किसी तत्काल प्रतिक्रिया का कोई उल्लेख नहीं मिलता। अलबत्ता अबू लहब ने बद-तमीज़ी की, कहने लगा, तू सारे दिन ग़ारत हो, तूने हमें इसीलिए जमा किया था। इस पर सूरः तब्बत यदा अबी ल-ह-बिं-व तब्ब उतरी कि अबू लहब के दोनों हाथ ग़ारत हो

गए और वह ख़ुद ग़ारत हो।[1]

यह पुकार प्रचार की इंतिहा थी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सबसे क़रीबी लोगों पर स्पष्ट कर दिया था कि अब इस रिसालत की पुष्टि ही पर ताल्लुक़ात तोड़े-जोड़े जा सकते हैं और जिस नस्ली और क़बीलेवार पक्षपात पर अरब क़ायम हैं, वह अल्लाह के डरावे की गर्मी में पिघलकर ख़त्म हो चुकी है।

इस आवाज़ की गूंज अभी मक्का के आस-पास ही सुनाई दे रही थी कि अल्लाह का एक और हुक्म आया—

'आपको जो हुक्म दिया जा रहा है, उसे खोलकर बयान कर दीजिए और मुश्रिकों से रुख़ फेर लीजिए।' (15 : 94)

चुनांचे इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुश्रिकों के मज्मों और उनकी महफ़िलों में खुलेआम दावत देनी शुरू कर दी। आप लोगों को अल्लाह की किताब पढ़कर सुनाते और उनसे वही फ़रमाते जो पिछले पैग़म्बरों ने अपनी क़ौमों से फ़रमाया था कि 'ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की इबादत करो। तुम्हारे लिए उसके सिवा कोई और इबादत के लायक़ नहीं।' इसके साथ आपने लोगों की आंखों के सामने दिन धाड़े आम मज्मे के रूबरू अल्लाह की इबादत भी शुरू कर दी।

आपकी दावत लोकप्रिय होने लगी और लोग अल्लाह के दीन में दाख़िल होने लगे। जो इस्लाम अपनाता, उसमें और उसके घर वालों में द्वेष, दूरी और विरोध शुरू हो जाता। क़ुरैश इस स्थिति से तंग होने लगे और जो कुछ उनकी निगाहों के सामने आ रहा था, उन्हें नागवार महसूस होने लगा।

हक़ को रोकने के लिए मज्लिसे शूरा

उन्हीं दिनों क़ुरैश के सामने एक और कठिनाई आ खड़ी हुई यानी अभी खुल्लम खुल्ला प्रचार में कुछ महीने ही बीते थे कि हज का मौसम क़रीब आ गया। क़ुरैश को मालूम था कि अब अरब की मंडलियों का आना शुरू होगा, इसलिए वे ज़रूरी समझते थे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में कोई बात कहें कि जिसकी वजह से अरबों पर आपकी तब्लीग़ का असर न हो।

---

1. सहीह बुख़ारी 1/285, 2/702, 743, सहीह मुस्लिम 1/114, फ़त्हुल बारी 5/449, 6/937, 8/361, हदीस न॰ 2753, 3525, 3526, 3527, 2077 तिर्मिज़ी, तफ़्सीर सूरः शुअरा वग़ैरह।

चुनांचे वे इस बात पर बातचीत के लिए वलीद बिन मुग़ीरह के पास इकट्ठा हुए। वलीद ने कहा, इस बारे में तुम सब लोग एक राय अपना लो, तुम में आपस में कोई मतभेद नहीं होना चाहिए कि ख़ुद तुम्हारा ही एक आदमी दूसरे आदमी को झुठला दे और एक की बात दूसरे की बात को काट दे। लोगों ने कहा, आप ही कहिए। उसने कहा, नहीं तुम लोग कहो, मैं सुनूंगा। इस पर कुछ लोगों ने कहा, हम कहेंगे कि वह काहिन है।

वलीद ने कहा, नहीं, ख़ुदा की क़सम! वह काहिन नहीं है। हमने काहिनों को देखा है। उसमें न काहिनों जैसी गुनगुनाहट है, न उनके जैसी तुकबन्दी।

इस पर लोगों ने कहा, तब हम कहेंगे कि वह पागल है।

वलीद ने कहा, नहीं, वह पागल भी नहीं। हमने पागल भी देखा है और उसकी दशा भी। उस व्यक्ति में न पागलों जैसी दम घुटने की स्थिति है और न उलटी-सीधी हरकतें हैं और न उनके जैसी बहकी-बहकी बातें।

लोगों ने कहा, तब हम कहेंगे कि वह कवि है।

वलीद ने कहा, वह कवि भी नहीं है। हमें रजज़, हजज़, क़ुरैज़, मक़्बूज़, मब्सूत, काव्य के सारे ही प्रकार मालूम हैं। उसकी बात बहरहाल काव्य नहीं है।

लोगों ने कहा, तब हम कहेंगे कि वह जादूगर है।

वलीद ने कहा, यह आदमी जादूगर भी नहीं। हमने जादूगर और उनका जादू भी देखा है। यह आदमी न तो उनकी तरह झाड़-फूंक करता है, न गिरह लगाता है।

लोगों ने कहा, तब हम क्या कहेंगे?

वलीद ने कहा, ख़ुदा की क़सम! उसकी बात बहुत मीठी है, उसकी जड़ मज़बूत है और उसकी शाखा फलदार है। तुम जो बात भी कहोगे, लोग उसे झूठ समझेंगे, अलबत्ता उसके बारे में सबसे मुनासिब बात यह कह सकते हो कि वह जादूगर है। उसने ऐसा कलाम पेश किया है, जो जादू है। उससे बाप-बेटे, भाई-भाई, पति-पत्नी और कुंबे-क़बीले में फूट पड़ जाती है।

आख़िर में लोग इसी बात से सहमत होकर वहां से विदा हुए।[1]

कुछ रिवायतों में यह विस्तार भी मिलता है जब वलीद ने लोगों की सारी बातें रद्द कर दीं, तो लोगों ने कहा कि फिर आप अपनी बे-लाग राय पेश कीजिए। इस पर वलीद ने कहा, तनिक सोच लेने दो। इसके बाद वह सोचता रहा, सोचता रहा, यहां तक कि अपनी उपरोक्त राय रखी।

---

1. इब्ने हिशाम 1/271

इसी मामले में वलीद के बारे में सूरः मुद्दस्सिर की सोलह आयतें (11-26) उतरीं, जिनमें से कुछ आयतों में उसकी सोच की रूप-रेखा भी दी गई, चुनांचे कहा गया—

'उसने सोचा और अन्दाज़ा लगाया। वह बर्बाद हो, उसने कैसा अन्दाज़ा लगाया? फिर बर्बाद हो, उसने कैसा अन्दाज़ा लगाया, फिर नज़र दौड़ाई, फिर माथा सिकोड़ा और मुंह बिसोरा, फिर पलटा और घमंड किया, आख़िरकार कहा कि यह निराला जादू है जो पहले से नक़ल होता आ रहा है। यह सिर्फ़ इंसान का कलाम है।' (74/18-25)

बहरहाल यह प्रस्ताव पास हो गया तो उसे अमली जामा पहनाने की कार्रवाई शुरू हुई। मक्का के कुछ विरोधी हज के लिए आने वालों के अलग-अलग रास्तों पर बैठ गए और वहां से हर गुज़रने वाले को आपके 'ख़तरे' से आगाह करते हुए आपके बारे में विस्तार से बताने लगे।[1]

जहां तक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ताल्लुक़ है तो आप हज के दिनों में लोगों के डेरों और उकाज़, मजना और ज़ुल मजाज़ के बाज़ारों में तशरीफ़ ले जाते और लोगों को इस्लाम की दावत देते। उधर अबू लहब आपके पीछे-पीछे लगा रहता। और यह कहता कि इसकी बात न मानना, यह झूठा बद-दीन (विधर्मी) है।[2]

इस दौड़-धूप का नतीजा यह हुआ कि लोग इस हज से अपने घरों को वापस हुए तो उन्हें यह बात मालूम हो चुकी थी कि आपने नबी होने का दावा किया है और यों उनके ज़रिए पूरे अरब में आपकी चर्चा फैल गई।

विरोध के नित नए रूप

जब क़ुरैश ने देखा कि मुहम्मद सल्ल० को दीन की तब्लीग़ (धर्म-प्रचार) से रोकने का कोई उपाय सफल नहीं हो रहा है, तो एक बार फिर उन्होंने सोच-विचार किया और आपकी दावत को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए अलग-अलग तरीक़े अपनाए, जिनका सार यह है—

1. हंसी, ठट्ठा, झुठलाना, और अपमानित करना

इसका उद्देश्य यह था कि मुसलमानों को बद-दिल करके उनके हौसले तोड़

1. इब्ने हिशाम 1/271
2. मुस्नद अहमद, 3/492, 4/341 में उसकी यह हरकत रिवायत की गई है, साथ ही देखिए अल-बिदाया वन्निहाया 5/75, कंज़ुल उम्माल 13/449, 450,

दिए जाएं। इसके लिए मुश्रिकों ने नबी सल्ल० पर निराधार आरोप लगाए और बेहूदा गालियां भी दीं।

चुनांचे वे कभी आपको पागल कहते, जैसा कि इर्शाद है—

'इन दुश्मनों ने कहा कि ऐ वह व्यक्ति, जिस पर क़ुरआन उतरा, तू यक़ीनी तौर पर पागल है।' (15 : 6)

और कभी आप पर जादूगर और झूठे होने का आरोप लगाते। चुनांचे इर्शाद है—

'उन्हें हैरत है कि ख़ुद उन्हीं में से एक डराने वाला आया और दुश्मन कहते हैं कि यह जादूगर है, झूठा है।' (38 : 4)

ये दुश्मन आपके आगे-पीछे आक्रोश से भरे हुए, बदले की भावना से ओत-प्रोत और उत्तेजित होकर चलते थे। कहा गया—

'और जब दुश्मन इस क़ुरआन को सुनते हैं, तो आपको ऐसी निगाहों से देखते हैं, मानो आपके क़दम उखाड़ देंगे और कहते हैं कि यह निश्चय ही पागल है।' (68 : 51)

और जब आप किसी जगह पधार रहे होते और आपके आस-पास कमज़ोर और मज़्लूम सहाबा किराम रज़ि० मौजूद होते, तो उन्हें देखकर ये मुश्रिक मज़ाक़ उड़ाते हुए कहते—

'अच्छा, यही लोग हैं, जिन पर अल्लाह ने हमारे बीच से चुनकर एहसान किया है।' (6 : 53)

जवाब में अल्लाह ने फ़रमाया—

'क्या अल्लाह शुक्रगुज़ारों को सबसे ज़्यादा नहीं जानता?' (6 : 53)

आम तौर से मुश्रिकों की मनोदशा वही थी, जिसका चित्र नीचे लिखी आयतों में खींचा गया है—

'जो अपराधी थे, वे ईमान लाने वालों का उपहास करते थे और जब उनके पास से गुज़रते तो आंखें मारते थे और जब अपने घरों को पलटते थे तो मज़ा लेते हुए पलटते थे और जब उन्हें देखते तो कहते कि यही गुमराह है, हालांकि वे उन पर निगरां बनाकर नहीं भेजे गए थे।' (83 : 29-33)

उन्होंने हंसी, ठट्ठा, उपहास में हद कर दी और ताने देने और अपमानित करने में धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तबियत पर उसका असर पड़ा, जैसा कि अल्लाह का इर्शाद है—

'हम जानते हैं कि ये लोग जो बातें करते हैं, उससे आपका सीना तंग होता

है', लेकिन फिर अल्लाह ने आपको जमाव अता किया और बताया कि सीने यह तंगी किस तरह जा सकती है, चुनांचे फ़रमाया—

'तो अपने रब की हम्द के साथ उसकी तस्बीह करो और सज्दागुज़ारों में से हो जाओ। और अपने परवरदिगार की इबादत करे जाओ, यहां तक कि मौत आ जाए।'

और इससे पहले यह भी बतला दिया कि इन उपहास करने वालों से निमटने के लिए अल्लाह ही काफ़ी है। चुनांचे फ़रमाया—

'हम आपके लिए उपहास करने वालों से (निमटने को) काफ़ी हैं, जो अल्लाह के साथ दूसरे माबूद ठहारते हैं। उन्हें जल्द ही मालूम हो जाएगा।'

(अल-हिज्र : 95-96)

अल्लाह ने यह भी बतलाया कि उनकी यह हरकत जल्द ही वबाल बनकर उन पर पलटेगी। चुनांचे इर्शाद हुआ—

'आपसे पहले पैग़म्बरों का भी उपहास किया गया, तो उनकी हंसी उड़ाने वाले, जो उपहास कर रहे थे, उसने उन्हीं को घेर लिया।' (अल-अंबिया : 41)

विरोध का दूसरा तरीक़ा

सन्देह पैदा कर देना और ज़बरदस्त झूठा प्रोपगंडा करना, यह काम उन्होंने इतना अधिक किया और ऐसे-ऐसे ढंग से किया कि आम लोगों को दावत व तब्लीग़ पर सोच-विचार का मौक़ा ही न मिल सका। चुनांचे वे क़ुरआन के बारे में कहते कि ये उलझे सपने हैं, जिसे मुहम्मद रात में देखते और दिन में तिलावत कर देते हैं। कभी कहते, 'बल्कि इसे उन्होंने ख़ुद ही गढ़ लिया है। कभी कहते, इन्हें कोई इंसान सिखाता है। कभी कहते, यह क़ुरआन तो सिर्फ़ झूठ है, इसे मुहम्मद (सल्ल०) ने गढ़ लिया है और कुछ दूसरे लोगों ने इस पर इनकी मदद की है, यानी आपने और आपके साथियों ने मिलकर इसे गढ़ लिया है और यह भी कहा कि ये पिछलों की कहानियां हैं, जिन्हें उसने लिखवा लिया है, अब ये उसे सुबह व शाम पढ़े जाते हैं।

कभी यह कहते हैं कि काहिनों की तरह आप पर भी कोई जिन्न या शैतान उतरता है। अल्लाह ने उनको रद्द करते हुए फ़रमाया—

'आप कह दें मैं बतलाऊं किस पर शैतान उतरते हैं, हर झूठ गढ़ने वाले गुनाहगार पर उतरते हैं।'

यानी शैतान तो झूठे और गुनाहों में लथ-पथ लोगों पर उतरता है और तुम लोगों ने मुझसे न कभी कोई झूठ सुना और न मुझमें कभी कोई फ़िस्क़ (नाफ़रमानी के काम) देखें, फिर क़ुरआन को शैतान का उतारा हुआ कैसे क़रार दे सकते हो?

कभी उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में यह कहा कि आप एक क़िस्म के जुनून में पड़े हुए हैं जिसकी वजह से आप विचारों में उड़ते हैं और उन्हें अच्छे और नए क़िस्म के कलिमों में ढाल लेते हैं, जिस तरह कवि लोग अपने विचारों को शब्द के नए परिधान में प्रस्तुत करते हैं, इसलिए वह भी कवि हैं और उनकी वाणी काव्य है। अल्लाह ने इनको रद्द करते हुए फ़रमाया—

'कवियों के पीछे तो गुमराह लोग चलते हैं। तुम देखते नहीं कि वे हर वादी का चक्कर काटते हैं और ऐसी बातें कहते हैं जिन्हें करते नहीं।' अर्थात इन कवियों की तीन विशेषताएं हैं और उनमें से कोई भी विशेषता नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में मौजूद नहीं। चुनांचे जो लोग आपकी पैरवी करने वाले हैं, वे हिदायत पाने वाले हैं। अपने धर्म, चरित्र, ईमान और कामों, हर चीज़ में भले, नेक और अल्लाह का डर रखने वाले हैं। उन पर उनकी ज़िंदगी के किसी भी मामले में गुमराही का नाम व निशान नहीं। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कवियों की तरह हर वादी का चक्कर नहीं काटते, बल्कि एक रब, एक दीन और एक रास्ते की दावत देते हैं। इसके अलावा आप वही कहते हैं जो करते हैं और वही करते हैं, जो कहते हैं, इसलिए आपको कवियों और उनके वाक्य से क्या वास्ता? और कवियों और उनके काव्य को आपसे क्या वास्ता?

यों वे लोग, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़, क़ुरआन व इस्लाम के ख़िलाफ़ जो शक भी पैदा करते थे अल्लाह उसका भरपूर और सन्तोषजनक जवाब देता था।

उनको अधिकतर सन्देह, तौहीद, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत और मरने के बाद क़ियामत के दिन दोबारा उठाए जाने से मुताल्लिक़ हुआ करते थे। क़ुरआन ने तौहीद के बारे में उनके हर सन्देह का खंडन किया है, बल्कि आगे बढ़कर कुछ ऐसी बातें भी बयान की हैं जिनसे इस विवाद का हर पहलू स्पष्ट हो गया है और उसका कोई पहलू बाक़ी नहीं छोड़ा है। इस सिलसिले में उनके माबूदों (उपास्यों) की आजिज़ी व मजबूरी इस तरह खोलकर बयान की है कि उस पर कुछ आगे कहने की गुंजाइश नहीं और शायद इसी बात पर उनका ग़ुस्सा भड़क उठा और फिर जो कुछ पेश आया वह मालूम है।

जहां तक नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैग़म्बरी के बारे में उनके सन्देहों का ताल्लुक़ है, तो वे तो इसे मानते थे कि आप सच्चे, अमानतदार और नेक और परहेज़गार आदमी हैं, लेकिन वे समझते थे कि नुबूवत व रिसालत का पद इससे कहीं ज़्यादा महान है कि किसी इंसान को दिया जाए। यानी उनका मानना था कि जो इंसान है, वह रसूल नहीं हो सकता और जो रसूल हो, वह

इंसान नहीं हो सकता। इसलिए जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी नुबूवत का एलान किया और अपने ऊपर ईमान लाने की दावत दी तो उन्हें आश्चर्य हुआ और उन्होंने कहा, 'यह कैसा रसूल है कि खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है।' उन्होंने यह भी कहा, 'अल्लाह ने किसी इंसान पर कोई चीज़ नहीं उतारी है।

अल्लाह ने इनका खंडन करते हुए फ़रमाया, 'आप कह दें, वह किताब किसने उतारी है जिसे मूसा अलैहिस्सलाम लेकर आए थे और जो लोगों के लिए नूर और हिदायत है।' वे चूंकि जानते और मानते थे कि मूसा अलैहिस्सलाम इंसान हैं, इसलिए कोई जवाब न दे सके। अल्लाह ने उनके रद्द में यह भी फ़रमाया कि हर क़ौम ने अपने पैग़म्बरों की पैग़म्बरी का इंकार करते हुए यही कहा था कि 'तुम लोग तो हमारे ही जैसे इंसान हो।' और उसके जवाब में पैग़म्बरों ने उनसे कहा था कि हम लोग यक़ीनन तुम्हारे ही जैसे इंसान हैं, लेकिन अपने बन्दों में से जिस पर वह चाहता है, एहसान करता है।' मतलब यह है कि नबी और रसूल हमेशा इंसान ही हुआ करते हैं। इंसान होने और रसूल होने में कोई टकराव नहीं है।

चूंकि उन्हें इक़रार था कि इब्राहीम और इस्माईल और मूसा अलैहिस्सलाम पैग़म्बर थे और इंसान भी थे, इसलिए वे अपने इस सन्देह पर अधिक आग्रह न कर सके, इसलिए उन्होंने पैंतरा बदला और कहने लगे, अच्छा अगर ऐसा है, यानी इंसान पैग़म्बर हो सकता है, तो क्या अल्लाह को अपनी पैग़म्बरी के लिए यही यतीम व मिस्कीन इंसान मिला था? यह कैसे हो सकता है कि अल्लाह मक्का और तायफ़ के बड़े-बड़े लोगों को छोड़कर इस मिस्कीन को पैग़म्बर बना ले। 'यह क़ुरआन इन दोनों आबादियों में से किसी बड़े आदमी पर क्यों न उतारा गया? अल्लाह ने इनका रद्द करते हुए फ़रमाया, 'क्या ये लोग तेरे रब की रहमत का विभाजन न करते हैं?' मतलब यह है कि वह्य व रिसालत तो अल्लाह की रहमत है और 'अल्लाह ज़्यादा जानता है कि उसे अपनी पैग़म्बरी कहां रखनी चाहिए।'

इन जवाबों के बाद मुश्रिकों ने एक और पहलू बदला, कहने लगे कि दुनिया के बादशाहों के एलची धूम-धाम से पूरी फ़ौज के साथ चलते हैं, उनका बड़ा रौब व दबदबा हुआ करता है और उनके लिए ज़िंदगी के हर तरह के सामाम जुटाए रहते हैं, फिर मुहम्मद का क्या मामला है कि वह अल्लाह के रसूल होने का दावा करते हैं और उन्हें पेट भरने के लिए बाज़ारों के चक्कर भी काटना पड़ते हैं। 'उन पर कोई फ़रिश्ता क्यों न उतारा गया जो उनके साथ डराने वाला होता या उनकी

तरफ़ ख़ज़ाना क्यों न डाल दिया गया या उनका कोई बाग़ ही होता जिससे वह खाते और ज़ालिमों ने कहा कि तुम लोग तो एक जादू किए हुए आदमी की पैरवी कर रहे हो।

अल्लाह ने इस सारी कठहुज्जती का एक छोटा-सा जवाब दिया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं, यानी आपकी मुहिम यह है कि आप हर छोटे-बड़े, कमज़ोर और ताक़तवर, शरीफ़ और पस्त, आज़ाद और गुलाम तक अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा दें। इसलिए अगर ऐसा होता कि आप भी बादशाहों के एलचियों की धूम-धाम, नौकरों-चाकरों की फ़ौज के साथ चलने वालों के साथ भेजे जाते तो कमज़ोर और छोटे लोग तो आप तक पहुंच ही नहीं सकते थे कि आपसे फ़ायदा उठा सकें, हालांकि यही आम लोग हैं, इसलिए ऐसी शक्ल में पैग़म्बर बनाने का मक़्सद ही ख़त्म हो जाता और इसका कोई उल्लेखनीय लाभ न होता।

जहां तक मरने के बाद दोबारा उठाए जाने के मामले का ताल्लुक़ है, तो उसके इंकार के लिए मुश्रिकों के पास, स्तब्धता और बे-अक़्ली के अलावा कोई दलील न थी। वे आश्चर्य से कहते थे, 'क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डी हो जाएंगे तो फिर उठा दिए जाएंगे? क्या हमारे पहले बाप-दादा भी? (अस्साफ़्फ़ात : 17) फिर वे ख़ुद ही कहते थे 'यह दूर की वापसी है।' वे ताज्जुब से कहते, 'क्या हम तुम्हें एक ऐसा आदमी न बताएं जो ख़बर देता है कि जब तुम लोग बिल्कुल रेज़ा-रेज़ा हो जाओ, तो फिर तुम्हारा एक नया जन्म होगा? मालूम नहीं उसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है या उसको पागलपन है।' कहने वाले ने यह भी कहा, 'क्या मौत, उसके बाद ज़िंदगी, उसके बाद हश्र? उम्मे अम्र! यह तो पागल की बड़ है।'

अल्लाह ने इसके खंडन के लिए दुनिया में पेश आने वाले हालात पर उनकी नज़र डलवाई कि एक ज़ालिम अपने ज़ुल्म की सज़ा पाए बग़ैर दुनिया से गुज़र जाता है और मज़्लूम भी ज़ालिम से अपना हक़ वसूल किए बग़ैर मौत से दोचार हो जाता है। उपकार करने वाले और भले लोग अपने उपकार और सुधार का बदला पाए बग़ैर फ़ौत हो जाते हैं और फ़ाजिर और बदकार अपनी बदअमली की सज़ा पाए बग़ैर मर जाते हैं। अब अगर इंसान को मरने के बाद दोबारा न उठाया जाए और उसके अमल का बदला न दिया जाए तो दोनों फ़रीक़ बराबर हो जाएंगे, बल्कि ज़ालिम और फ़ाजिर, मज़्लूमों और नेकों से ज़्यादा ख़ुशक़िस्मत होंगे और यह बात बिल्कुल ही नामाक़ूल है और अल्लाह के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता कि वह अपनी सृष्टि-व्यवस्था की बुनियाद ऐसे बिगाड़ कर रखेगा।

अल्लाह फ़रमाता है, 'क्या हम आज्ञाकारियों को अपराधियों जैसा ठहराएंगे?

तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसे फ़ैसले कर रहे हो?' साथ ही फ़रमाया, 'क्या हम ईमान लाने वालों और भले काम करने वालों को ज़मीन के अन्दर फ़साद पैदा करने वालों जैसा बनाएंगे या क्या हम परहेज़गारों को फ़ाजिरों जैसा ठहराएंगे?' और फ़रमाया, 'क्या बुराइयां करने वाले यह समझते हैं कि हम उन्हें ईमान लाने वालों और भले काम करने वालों जैसा बनाएंगे कि इन (दोनों गिरोहों) की ज़िंदगी और मौत बराबर हो? बुरा फ़ैसला है जो ये करते हैं?

जहां तक 'बड़ की बकवास' के आरोप का ताल्लुक़ है, तो अल्लाह ने इसको रद्द करते हुए फ़रमाया, 'क्या तुम पैदाइश में ज़्यादा सख़्त हो या आसमान?' और फ़रमाया, 'क्या यह नज़र नहीं आता कि जिस अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और उनको पैदा करने से नहीं थका, वह इस पर भी क़ुदरत रखता है कि मुर्दों को ज़िंदा कर दे? क्यों नहीं? यक़ीनी तौर पर वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है? साथ ही फ़रमाया, 'तुम पहली पैदाइश तो जानते ही हो, फिर हक़ीक़त क्यों नहीं मानते?' अल्लाह ने वह बात भी याद दिलाई जो अक़्ल के पहलू से भी और चलन के पहलू से भी जानी-पहचानी है कि किसी चीज़ को दोबारा करना पहली बार करने से ज़्यादा आसान होता है। फ़रमाया, 'जैसे हमने पहली बार पैदा करने की शुरुआत की थी, उसी तरह पलटा भी लेंगे।' और फ़रमाया, क्या पहली बार पैदा करने से हम थक गए हैं?

यों अल्लाह ने उनके एक-एक सन्देह का बड़े ही सन्तोषजनक ढंग से जवाब दिया, जिससे हर सूझ-बूझ वाला आदमी सन्तुष्ट हो सकता है, लेकिन मक्का के विरोधी हंगामा पसंद करते थे, उनमें अहंकार था, वे ज़मीन में बड़े बनकर रहना चाहते थे और सृष्टि पर अपनी राय लागू करना चाहते थे, इसलिए अपनी सरकशी में भटकते रहे।

3. विरोध का तीसरा तरीक़ा

पहलों की घटनाओं और कहानियों से क़ुरआन का मुक़ाबला करना और लोगों के क़ुरआन सुनने का अवसर न मिलने देना।

मुश्रिक अपने उपरोक्त सन्देहों को फैलाने के अलावा हर संभव तरीक़े से लोगों को क़ुरआन सुनने से दूर रखने की कोशिश भी करते थे, चुनांचे वे लोगों को ऐसी जगहों से भगाते और जब देखते कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दावत व तब्लीग़ से उठा चाहते हैं या नमाज़ में क़ुरआन की तिलावत फ़रमा रहे हैं तो शोर करते और तालियां और सीटियां बजाते। अल्लाह फ़रमाता है, कुफ़्फ़ार ने कहा, यह क़ुरआन न सुनो और इसमें शोर मचाओ, ताकि तुम ग़ालिब

रहो। इस स्थिति का नतीजा यह था कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनके मज्मों और महफ़िलों के अन्दर पहली बार क़ुरआन तिलावत करने का मौक़ा पांचवें सन् नुबूवत के आख़िर में मिल सका, वह भी इस तरह कि आपने अचानक खड़े होकर क़ुरआन की तिलावत शुरू कर दी और पहले किसी को इसका अन्दाज़ा न हो सका।

नज़्र बिन हारिस क़ुरैश के शैतानों में से एक शैतान था। वह हियरा गया। वहां बादशाहों की कहानियां और रुस्तम व स्फ़न्दयार के क़िस्से सीखे, फिर वापस आया, तो जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी जगह बैठकर अल्लाह की बातें करते और उसकी पकड़ से लोगों को डराते तो आपके बाद यह आदमी वहां पहुंच जाता और कहता कि अल्लाह की क़सम! मुहम्मद सल्ल० की बातें मुझसे बेहतर नहीं। इसके बाद वह फ़ारस के बादशाहों और रुस्तम व स्फन्दयार की कहानियां सुनाता, फिर कहता, आख़िर किस वजह से मुहम्मद की बात मुझसे बेहतर है?[1]

इब्ने अब्बास की एक रिवायत है कि नज़्र ने एक लौंडी ख़रीदी थी, जब वह किसी आदमी के बारे में सुनता कि यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ मायल है तो उस लौंडी के पास ले जाकर कहता कि इसे खिलाओ-पिलाओ और गाने सुनाओ। यह तुम्हारे लिए उससे बेहतर है जिसकी तरफ़ तुमको मुहम्मद बुलाते हैं। उसके बारे में अल्लाह का यह इर्शाद उतरा—

'कुछ लोग ऐसे हैं जो खेल की बात ख़रीदते हैं, ताकि अल्लाह की राह से भटका दें।'[2]

अत्याचार और दमन-चक्र

सन् 04 नुबूवत में इस्लामी दावत के सामने आने के बाद मुश्रिकों ने उसके ख़ात्मे के लिए पिछली कार्रवाइयां धीरे-धीरे अंजाम दीं। महीनों इससे आगे क़दम नहीं बढ़ाया और ज़ुल्म व ज़्यादती शुरू नहीं की, लेकिन जब देखा ये तरीक़े इस्लामी दावत को नाकाम बनाने में असरदार साबित नहीं हो रहे हैं तो आपसी मश्विरे से तै किया कि मुसलमानों को सज़ाएं दे-देकर उनको उनके दीन से बाज़ रखा जाए। इसके बाद हर सरदार ने अपने क़बीले के मातहत लोगों को, जो मुसलमान हो गए थे, सज़ाएं देनी शुरू कीं और हर मालिक अपने ईमान लाने

1. सार इब्ने हिशाम 1/299, 300, 358,
2. अद्-दुर्रुल मन्सूर, तफ़्सीर सूरः लुक़मान आयत 6/5/317

वाले ग़ुलामों पर टूट पड़ा और यह बात तो बिल्कुल स्वाभाविक थी कि दुमछल्ले और गुंडे अपने सरदारों के पीछे दौड़ें और उनकी मर्ज़ी और ख़्वाहिशों के मुताबिक़ हरकत करें। चुनांचे मुसलमानों और ख़ास तौर से कमज़ोरों पर ऐसी-ऐसी मुसीबतें तोड़ी गईं और उन्हें ऐसी-ऐसी सज़ाएं दी गईं, जिन्हें सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं और दिल फट जाता है। नीचे केवल एक झलक दी जा रही है—

अबू जह्ल जब किसी प्रतिष्ठित और शक्तिशाली आदमी के मुसलमान होने की ख़बर सुनता तो उसे बुरा-भला कहता, ज़लील व रुसवा करता और माल को बड़े घाटे से दोचार करने की धमकियां देता और अगर कोई कमज़ोर आदमी मुसलमान होता तो उसे ख़ुद भी मारता और दूसरों को भी भड़का देता।[1]

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु का चचा उन्हें खजूर की चटाई में लपेट कर नीचे से धुवां देता।[2]

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु की मां को उनके इस्लाम लाने की जानकारी हुई तो उनका दाना-पानी बन्द कर दिया और घर से निकाल दिया। बड़े लाड़-प्यार से पले थे, जब परेशानियों से दोचार हुए तो खाल इस तरह उधड़ गई, जैसे सांप केंचुली छोड़ता है।[3]

सुहैब बिन सिनान रूमी रज़ियल्लाहु अन्हु को इतनी सज़ा दी जाती कि होश व हवास जाता रहता और उन्हें यह पता न चलता कि वह क्या बोल रहे हैं।[4]

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु उमैया बिन ख़ल्फ़ जुमही के ग़ुलाम थे। उमैया उनकी गरदन में रस्सी डालकर लड़कों के हवाले कर देता और वह उन्हें मक्का के पहाड़ों में घुमाते और खीचते फिरते, यहां तक कि गरदन पर रस्सी का निशान पड़ जाता फिर भी वह 'अहद-अहद' कहते रहते। ख़ुद उमैया भी उन्हें बांधकर डंडे से मारता और चिलचिलाती धूप में जबरन बिठाए रखता, खाना-पानी भी न देता, बल्कि भूखा-प्यासा रखता और इन सबसे बढ़कर यह काम करता कि जब दोपहर की गर्मी बहुत ज़्यादा होती, तो मक्का के पथरीले कंकरों पर लिटाकर सीने पर भारी पत्थर रखवा देता, फिर कहता, अल्लाह की क़सम ! तू इसी तरह पड़ा रहेगा, यहां तक कि मर जाए या मुहम्मद के साथ कुफ़्र

---

1. इब्ने हिशाम, 1/220
2. रहमतुल्लिल आलमीन 1/57
3. असदुल ग़ाबा 4/406, तलक़ीहुल फ़ुहूम पृ० 60
4. अल-इसाबा 3, 4/255, इब्ने साद 3/248,

करे और लात व उज़्ज़ा की पूजा करे। हज़रत बिलाल रज़ि० इस हालत में भी कहते, अहद, अहद और फ़रमाते, अगर मुझे कोई ऐसा कलिमा मालूम होता, जो तुम्हें इससे भी ज़्यादा नागवार होता, तो मैं उसे कहता। एक दिन यही कार्रवाई जारी थी कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का गुज़र हुआ। उन्होंने हज़रत बिलाल रज़ि० को एक काले ग़ुलाम के बदले और कहा जाता है कि दो सौ दिरहम (735 ग्राम चांदी) या दो सौ अस्सी दिरहम (एक किलो से ज़्यादा चांदी) के बदले ख़रीद कर आज़ाद कर दिया।[1]

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु बनू मख़्ज़ूम के ग़ुलाम थे। उन्होंने और उनके मां-बाप ने इस्लाम क़ुबूल किया, तो उन पर क़ियामत टूट पड़ी। मुश्रिक, जिनमें अबू जह्ल पेश-पेश था, कड़ी धूप के वक़्त, पथरीली ज़मीन पर ले जाकर उसके तपन से सज़ा देते। एक बार उन्हें इस तरह सज़ा दी जा रही थी कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का गुज़र हुआ। आपने फ़रमाया, आले यासिर! सब्र करना, तुम्हारा ठिकाना जन्नत है। आख़िरकार यासिर ज़ुल्म की ताब न लाकर वफ़ात पा गए और हज़रत सुमैया रज़ि० जो हजरत अम्मार रज़ि० की मां थीं, अबू जह्ल ने उनकी शर्मगाह में नेज़ा मारा और वह दम तोड़ गईं। यह इस्लाम में पहली शहीदा हैं। उनके बाप का नाम ख़य्यात था और यह अबू हुज़ैफ़ा बिन मुग़ीरह बिन अब्दुल्लाह की लौंडी थीं। बहुत बूढ़ी और कमज़ोर थीं।

हज़रत अम्मार रज़ि० पर सख़्ती का सिलसिला जारी रहा। उन्हें कभी धूप में तपाया जाता, तो कभी उनके सीने पर पत्थर रख दिया जाता और कभी पानी में डुबोया जाता, यहां तक कि वह होश व हवास खो बैठते। उनसे मुश्रिक कहते थे कि जब तक तुम मुहम्मद को गाली न दोगे या लात व उज़्ज़ा के बारे में कलिमा ख़ैर न कहोगे, हम तुम्हें न छोड़ेंगे। मजबूर होकर उन्होंने मुश्रिकों की बात मान ली, फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास रोते हुए और माज़रत करते हुए आए, इस पर यह आयत उतरी—

'जिसने अल्लाह पर ईमान लाने के बाद कुफ़्र किया, (उस पर अल्लाह का गुस्सा और अज़ाब ज़बरदस्त है), लेकिन जिसे मजबूर किया जाए और उसका दिल अल्लाह पर मुतमइन हो (उस पर कोई पकड़ नहीं)[2]

---

1. इब्ने हिशाम 1/317, 318, तलक़ीहुल फ़ुहूम, पृ० 11, तफ़्सीर इब्ने कसीर, सूरः नम्ल 2/648,
2. इब्ने हिशाम 1/319, 320, तबक़ात इब्ने साद 3/248, 249, इब्ने कसीर और अद्दुर्रुल मंसूर, तफ़्सीर सूरः नह्ल, आयत 106,

हज़रत अबू फ़कीह, जिनका नाम अफ़लह था, यह असल में क़बीला उज़्द से थे। और बनू अब्दुद्दार के ग़ुलाम थे। उनके पांवों में लोहे की बेड़ियां डालकर दोपहर की सख़्त गर्मी में बाहर निकालते और जिस्म से कपड़े उतार कर तपती हुई ज़मीन पर पेट के बल लिटा देते और पीठ पर भारी पत्थर रख देते कि हरकत न कर सकें। वह इसी तरह पड़े-पड़े होश व हवास खो बैठते। उन्हें इसी तरह की सज़ाएं दी जाती रहीं, यहां तक कि हब्शा की दूसरी हिजरत में वह भी हिजरत कर गए। एक बार मुश्रिकों ने उनका पांव रस्सी में बांधा और घसीट कर तपती हुई ज़मीन पर डाल दिया, फिर इस तरह गला दबा दिया कि समझे वह मर गए हैं। इसी दौरान हज़रत अबूबक्र रज़ि० का गुज़र हुआ, उन्होंने ख़रीद कर अल्लाह के लिए आज़ाद कर दिया।[1]

हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त क़बीला ख़ुज़ाआ की एक औरत उम्मे अम्मार के एक ग़ुलाम थे और लोहारी का काम करते थे। मुसलमान हुए तो उनकी मालकिन उन्हें आग से जलाने की सज़ा देती। वह लोहे का गर्म टुकड़ा लाती और उनकी पीठ या सर पर रख देती, ताकि वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ कुफ़्र करें, मगर इससे उनके ईमान और तस्लीम व रज़ा में और बढ़ोत्तरी होती। मुश्रिकीन भी तरह-तरह की सज़ाएं देते, कभी सख़्ती से गरदन मरोड़ते, तो कभी सर के बाल नोचते। एक बार तो उन्हें धधकते अंगारो पर डाल दिया, फिर उस पर घसीटा और दबाए रखा, यहां तक कि उनकी पीठ की चरबी से आग बुझी।[2]

हज़रत ज़मीरह रूमी लौंडी थी, मुसलमान हुई तो उन्हें अल्लाह की राह में सज़ाएं दी गईं। इत्तिफ़ाक़ से उनकी आंखें जाती रहीं। मुश्रिकों ने कहा, देखो, तुम पर लात व उज़्ज़ा की मार पड़ गई है। उन्होंने कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम! यह लात व उज़्ज़ा की मार नहीं है, बल्कि यह अल्लाह की ओर से है अगर वह चाहे तो दोबारा बहाल कर सकता है, फिर अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि दूसरे दिन निगाग पलट आई। मुश्रिक कहने लगे, यह मुहम्मद का जादू है।[3]

उम्मे अबीस बनू ज़ोहरा की लौंडी थीं। वह इस्लाम लाई तो मुश्रिकों ने उन्हें भी सजाएं दीं, मुख्य रूप से उनका मालिक अस्वद बिन अब्दे यग़ूस उन्हें सज़ाएं

---

1. असदुल ग़ाबा 5/248, अल-इसाबा 7, 8/152, तलक़ीहुल फ़हूम पृ० 60 वग़ैरह।
2. असदुल ग़ाबा 1/591, 593, तलक़ीहुम फ़हूम पृ० 5 वग़ैरह
3. तबक़ाते इब्ने साद 8/256, इब्ने हिशाम, 1/318,

देता। वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बड़ा कट्टर दुश्मन था और आपका मज़ाक़ उड़ाया करता था।[1]

बनू अदी के उमैर बिन सोयल की लौंडी मुसलमान हुईं तो उमर बिन ख़त्ताब उन्हें सज़ाएं देते, वह अभी मुसलमान नहीं हुए थे। उन्हें इतना मारते कि मारते-मारते थक जाते, फिर छोड़कर कहते, अल्लाह की क़सम! मैंने तुझे किसी मुरव्वत की वजह से नहीं, बल्कि सिर्फ़) थक कर छोड़ा है। वह कहतीं, तेरे साथ तेरा परवरदिगार भी ऐसा ही करेगा।[2]

हज़रत नहदिया और उनकी बेटी भी बनू अब्दुद्दार की एक औरत की लौंडी थीं। इस्लाम ले आईं तो उन्हें भी सज़ाओं से दोचार होना पड़ा।[3]

ग़ुलामों में आमिर बिन फ़ुहैरा भी थे। इस्लाम लाने पर उन्हें भी इतनी सज़ाएं दी जातीं कि वह अपने होश व हवास खो बैठते और उन्हें यह पता न चलता कि क्या बोल रहे हैं।[4] रज़ियल्लाहु अन्हुम व अन्हुन-न अजमईन०

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन सारे ग़ुलामों और लौंडियों को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया। इस पर उनके बाप अबू क़हाफ़ा उन पर ग़ुस्सा हुए, कहने लगे (बेटे!) मैं तुम्हें देखता हूं कि कमज़ोर गरदनें आज़ाद कर रहे हो, मज़बूत लोगों को आज़ाद करते तो वे तुम्हारा बचाव भी करते। उन्होंने कहा, मैं अल्लाह की रिज़ा चाहता हूं, इस पर अल्लाह ने क़ुरआन उतारा। हज़रत अबूबक्र रज़ि० की प्रशंसा की और उनके दुश्मनों की निंदा की। फ़रमाया, 'मैंने तुम्हें भड़कती हुई आग से डराया है, जिसमें वही बद-बख़्त दाख़िल होगा जिसने झुठलाया और पीठ फेरी। इससे मुराद उमैया बिन ख़ल्फ़ और उसके साथी हैं, फिर फ़रमाया, 'और उस आग से वह परहेज़गार आदमी दूर रखा जाएगा जो अपना माल पाकी हासिल करने के लिए ख़र्च कर रहा है। उस पर किसी का एहसान नहीं है, जिसका बदला दिया जा रहा हो, बल्कि सिर्फ़ अपने बुज़ुर्ग रब की मर्ज़ी की तलब रखता है। इससे मुराद हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।[5]

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को भी पीड़ा दी गई। उन्हें और उनके साथ

---

1. अल-इसाबा 7, 8/258,
2. इब्ने हिशाम 1/319, तबक़ात इब्ने साद 8/256,
3. इब्ने हिशाम 1/318, 319,
4. इब्ने हिशाम 1/318, 319, तबक़ाते इब्ने साद 8/256
5. इब्ने हिशाम 1/318, 319, तबक़ाते इब्ने साद 8/256, क़ुतुबे तफ़्सीर, ज़िक्र की गई आयत

तलहा बिन उबैदुल्लाह को नौफ़ुल बिन ख़ुवैलद ने पकड़ कर एक ही रस्सी में बांध दिया, ताकि उन्हें नमाज़ न पढ़ने दे, बल्कि दीने इस्लाम से भी त्राज़ रखे। मगर उन्होंने उसकी बात न सुनी। इसके बाद उसे यह देखकर हैरत हुई कि वे दोनों बन्धन से आज़ाद और नमाज़ में लगे हुए हैं। इस वाक़िए के बाद इन दोनों को क़रीनैन—एक साथ बंधे हुए—कहा जाता था। कहा जाता है कि यह काम नौफ़ुल के बजाए तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई उस्मान बिन उबैदुल्लाह ने किया था।[1]

सार यह कि मुश्रिकों को जिस किसी के बारे में भी मालूम हुआ कि वह मुसलमान हो गया है तो उसको पीड़ा ज़रूर पहुंचाई और कमज़ोर मुसलमानों, मुख्य रूप से ग़ुलामों और लौंडियों के बारे में यह काम आसान भी था, क्योंकि कोई न था, जो उनके लिए ग़ुस्सा होता और उनकी हिमायत करता, बल्कि उनके सरदार और मालिक उन्हें ख़ुद ही सज़ाएं देते थे और बदमाशों को भी उभारते थे अलबत्ता बड़े लोगों और अशराफ़ में से कोई मुसलमान होता तो उसको पीड़ा पहुंचाना ज़रा आसान न होता, क्योंकि वह अपनी क़ौम की हिफ़ाज़त और बचाव में होता। इसलिए ऐसे लोगों पर ख़ुद उनके अपने क़बीले के अशराफ़ के सिवा कम ही कोई जुर्रात करता था, वह भी बहुत बच-बचाकर और सोच-समझ कर।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में मुश्रिकों की सोच

जहां तक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मामले का ताल्लुक़ है, तो यह बात याद रखनी चाहिए कि आप रौब व दबदबा और वक़ार की मालिक शख़्सियत थे। दोस्त-दुश्मन सभी आपका आदर करते थे। आप जैसी शख़्सियत का सामना मान-सम्मान ही से किया जा सकता था और आपके ख़िलाफ़ किसी नीच और ज़लील हरकत की जुर्रात कोई नीच और मूर्ख ही कर सकता था। इस ज़ाती महानता के अलावा आपको अबू तालिब की हिमायत और हिफ़ाज़त भी हासिल थी और अबू तालिब मक्का के उन गिने-चुने लोगों में से थे, जो अपनी ज़ाती और इज्तिमाई दोनों हैसियतों से इतने महान थे कि कोई आदमी बड़ी मुश्किल से हज़रत मुहम्मद को सताने और उन पर हाथ डालने की हिम्मत कर सकता था। इस स्थिति ने क़ुरैश को सख़्त परेशानी और मुश्किल से दोचार कर रखा था जिसका तक़ाज़ा था कि नापसन्दीदा दायरे में पड़े बग़ैर इस मुश्किल

1. उसदुल ग़ाबा 2/468

से निकलने के लिए संजीदगी से ग़ौर करें। आख़िरकार उन्हें यह रास्ता समझ में आया कि सबसे बड़े ज़िम्मेदार अबू तालिब से बात-चीत करें, लेकिन हिक्मत और दानाई के साथ और किसी क़दर चुनौती और ख़ुफ़िया धमकी लिए हुए, ताकि जो बात कही जाए, उसे वे मान लें।

क़ुरैश का प्रतिनिधिमंडल अबू तालिब की ख़िदमत में

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि क़ुरैश के कुछ अशराफ़ अबू तालिब के पास गए और बोले, ऐ अबू तालिब! आपके भतीजे ने हमारे माबूदों (उपास्यों) को बुरा-भला कहा है। हमारे दीन में कीड़े निकाले हैं, हमारी अक़्लों को मूर्खता का मारा हुआ कहा है और हमारे बाप-दादा को गुमराह क़रार दिया है, इसलिए या तो आप इन्हें इससे रोक दें या हमारे और इनके दर्मियान से हट जाएं, क्योंकि आप भी हमारी ही तरह इनसे अलग दीन पर हैं, हम इनके मामले में आपके लिए भी काफ़ी रहेंगे।

इसके जवाब में अबू तालिब ने नर्म बात कही और उदारता का सुबूत दिया। चुनांचे वे वापस चले गए और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने तरीक़े पर चलते रहे और अल्लाह का दीन फैलाने और उसका प्रचार करने में लगे रहे।[1]

अबू तालिब को क़ुरैश की धमकी

इस फ़ैसले के बाद क़ुरैश के सरदार अबू तालिब के पास फिर हाज़िर हुए और बोले, अबू तालिब! आप हमारे अन्दर बड़े बुज़ुर्ग और मान-सम्मान वाले आदमी हैं। हमने आपसे गुज़ारिश की थी कि आप अपने भतीजे को रोकिए, लेकिन आपने नहीं रोका। आप याद रखें, हम इसे सहन नहीं कर सकते कि हमारे बाप-दादाओं को गालियां दी जाएं, हमारी अक़्ल व समझ को मूर्खता कहा जाए और हमारे माबूदों में ऐब निकाले जाएं, आप रोक दीजए वरना हम आपसे और उनसे ऐसी लड़ाई लड़ेंगे कि एक फ़रीक़ का सफ़ाया होकर रहेगा।

अबू तालिब पर इस ज़ोरदार धमकी का बहुत अधिक प्रभाव हुआ और उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को बुलाकर कहा, भतीजे! तुम्हारी क़ौम के लोग मेरे पास आए थे और ऐसी-ऐसी बातें कह गए हैं। अब मुझ पर और स्वयं अपने आप पर दया करो और इस मामले में मुझ पर इतना बोझ न डालो जो मेरे वश से बाहर हो।

---

1. इब्ने हिशाम 1/256,

यह सुनकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने समझा कि अब आपके चचा भी आपका साथ छोड़ देंगे और वह भी आपकी मदद से कमज़ोर पड़ गए हैं, इसलिए फ़रमाया, चचा जान! अल्लाह की क़सम! अगर ये लोग मेरे दाहिने हाथ में सूरज और बाएं हाथ में चांद रख दें कि मैं इस काम को इस हद तक पहुंचाए बग़ैर छोड़ दूं कि या तो अल्लाह इसे ग़ालिब कर दे या मैं इसी राह में फ़ना हो जाऊं, तो मैं नहीं छोड़ सकता।

इसके बाद आपकी आंखें आंसुओं से भीग गईं। आप रो पड़े और उठ गए। जब वापस होने लगे तो अबू तालिब ने पुकारा और सामने तशरीफ़ लाए तो कहा, भतीजे! जाओ, जो चाहे करो। ख़ुदा की क़सम! मैं तुम्हें कभी भी किसी भी वजह से नहीं छोड़ सकता।[1] और ये पद पढ़े—

'ख़ुदा की क़सम! वे लोग तुम्हारे पास अपने जत्थ सहित भी हरगिज़ नहीं पहुंच सकते, यहां तक कि मिट्टी में दफ़न कर दिया जाऊं। तुम अपनी बात खुल्लम खुल्ला कहो। तुम पर कोई पाबंदी नहीं, तुम ख़ुश हो जाओ और तुम्हारी आंखें इससे ठंडी हो जाएं।'[2]

क़ुरैश एक बार फिर अबू तालिब के सामने

पिछली धमकी के बावजूद जब क़ुरैश ने देखा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपना काम किए जा रहे हैं तो उनकी समझ में आ गया कि अबू तालिब अल्लाह के रसूल सल्ल० को छोड़ नहीं सकते, बल्कि इस बारे में क़ुरैश से जुदा होने और उनकी दुश्मनी मोल लेने को तैयार हैं। चुनांचे वे लोग वलीद बिन मुग़ीरह के लड़के उमारा को साथ लेकर अबू तालिब के पास पहुंचे और उनसे यों कहा—

'ऐ अबू तालिब! यह क़ुरैश का सबसे बांका और ख़ूबसूरत नवजवान है। आप इसे ले लें। आप इसे अपना लड़का बना लें, यह आपका होगा और अपने इस भतीजे को हमारे हवाले कर दें, जिसने आपके बाप-दादों का विरोध किया, आपकी क़ौम का एका बिखेर दिया है और उनकी बुद्धि और सोच को मूर्खता नाम दिया है, हम इसे क़त्ल करेंगे। बस यह एक आदमी के बदले एक आदमी का हिसाब है।

अबू तालिब ने कहा, ख़ुदा की क़सम! कितना बुरा सौदा है, जो लोग मुझसे

---

1. इब्ने हिशाम 1/265, 266
2. मुख़्तसरुस्सीरतः शेख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब, पृ० 68

कर रहे हो। तुम अपना बेटा देते हो कि मैं उसे खिलाऊं-पिलाऊं, पालूं-पोसूं और मेरा बेटा मुझसे तलब करते हो कि उसे क़त्ल कर दो। ख़ुदा की क़सम! यह नहीं हो सकता।

इस पर नौफ़ल बिन अब्द मुनाफ़ का पोता मुतइम बिन अदी बोला, ख़ुदा की क़सम! ऐ अबू तालिब! तुमसे तुम्हारी क़ौम ने इंसाफ़ की बात कही है और जो शक्ल तुम्हें नागवार है, उससे बचने की कोशिश की है, लेकिन मैं देखता हूं कि तुम उनकी किसी बात को क़ुबूल करना ही नहीं चाहते।

जवाब में अबू तालिब ने कहा, ख़ुदा की क़सम! तुम लोगों ने मुझसे इंसाफ़ की बात नहीं कही है। बल्कि तुम भी मेरा साथ छोड़कर मेरे विरोधियों की मदद पर तुले बैठे हो, तो ठीक है, जो चाहो, करो।[1]

जब क़ुरैश अपनी बात-चीत में असफल हो गए और अबू तालिब को इस बात पर सन्तुष्ट न कर सके कि वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रोकें और अल्लाह की ओर दावत देने से बाज़ रखें, तो उन्होंने एक ऐसा रास्ता अपनाने का फ़ैसला किया, जिस पर चलने से वह अब तक कतराते रहे थे और जिसके अंजाम और नतीजों के डर से उन्होंने दूर रहना ही उचित समझा था और वह रास्ता था अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात पर ज़ुल्म व सितम ढाने का रास्ता।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ज़ुल्म व सितम

चुनांचे क़ुरैश ने अन्ततः वे सीमाएं तोड़ दीं जिन्हे दावत शुरू होने के दिनों से अब तक वे महान समझते थे और जिनका सम्मान करते आ रहे थे। वास्तव में क़ुरैश की अकड़ और अभिमान पर यह बात बड़ी गरां गुज़र रही थी कि वे लम्बे समय तक सब्र करें। चुनांचे वे अब तक हंसी, ठट्ठे, उपहास और खिल्ली और सच्चाई से नज़रें चुराने या उसे तोड़-मरोड़ कर बिगाड़ने का जो काम करते आ रहे थे, उससे एक क़दम आगे बढ़कर अल्लाह के रसूल सल्ल० की तरफ़ ज़ुल्म व सितम का हाथ भी बढ़ा दिया और यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि इस काम में आपका चचा अबू लहब सबसे आगे हो, क्योंकि वह बनू हाशिम एक सरदार था। उसे वह ख़तरा न था जो औरों को था और वह इस्लाम और मुसलमानों का कट्टर दुश्मन था। नबी सल्ल० के बारे में उसकी रीति पहले दिन ही से, जबकि

---

1. इब्ने हिशाम 1/266, 267

क़ुरैश ने इस तरह की बात अभी सोची भी न थी, यही थी। उसने बनू हाशिम की सभा में कुछ किया, फिर कोहे सफ़ा पर जो हरकत की उसका उल्लेख पिछले पन्नों में आ चुका है।

आपके नबी बनाए जाने से पहले अबू लहब ने अपने दो बेटों उत्बा और उतैबा का विवाह नबी सल्ल० की दो बेटियों रुक़ैया और उम्मे कुलसूम से किया था, लेकिन नबी बनाए जाने के बाद उसने बड़ी ही सख़्ती और कड़ाई से इन दोनों को तलाक़ दिलवा दी।[1]

इसी तरह जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दूसरे सुपुत्र अब्दुल्लाह का देहान्त हुआ तो अबू लहब को इतनी ख़ुशी हुई कि वह दौड़ता हुआ अपने साथियों के पास पहुंचा और उन्हें यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि मुहम्मद अब्तर (जिसकी नस्ल ख़त्म हो गई हो) हो गए हैं।[2]

हम यह भी उल्लेख कर चुके हैं कि हज के दिनों में अबू लहब नबी सल्ल० को झुठलाने के लिए बाज़ारों और सभाओं में आपके पीछे-पीछे लगा रहता था। तारिक़ बिन अब्दुल्लाह मुहारबी की रिवायत से मालूम होता है कि यह व्यक्ति सिर्फ़ झुठलाने ही पर बस नहीं करता, बल्कि पत्थर भी मारता रहता था, जिससे आपकी एड़ियां ख़ून से सन जाती थीं।[3]

अबू लहब की बीवी उम्मे जमील, जिसका नाम अरवा था, जो हर्ब बिन उमैया की बेटी और अबू सुफ़ियान की बहन थी, वह भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुश्मनी में अपने शौहर से पीछे न थी, चुनांचे वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रास्ते में और दरवाज़े पर रात को कांटे डाल दिया करती थी, ज़ुबान की गन्दी, बकवास करने वाली और फ़ित्ना पैदा करने वाली भी थी। चुनांचे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ बदज़ुबानी करना, लम्बी-चौड़ी बातें बनाना और झूठी-झूठी बातें जोड़ना, फ़ित्ने की आग भड़काना और भयानक लड़ाई की फ़िज़ा बना देना उसकी रीति-नीति थी। इसीलिए क़ुरआन ने इसको 'हम्मालतल ह-तब' (लकड़ी ढोने वाली) की उपाधि दी है।

जब उसे मालूम हुआ कि उसकी और उसके शौहर की निन्दा में क़ुरआनी आयतें उतरी हैं, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खोजती हुई आई।

---

1. इसे तबरी ने क़तादा से रिवायत किया है। इब्ने इस्हाक़ की रिवायत यह भी बताती है कि क़ुरैश ने भी इस बारे में दौड़-धूप की थी, देखिए इब्ने हिशाम 1/652,
2. यह हज़रत अता से रिवायत की गई है, तफ़्सीर इब्ने कसीर सूरः अल-कौसर 4/595
3. कंज़ुल उम्माल 12/449

आप ख़ाना काबा के पास मस्जिदे हराम में तशरीफ़ रखते थे। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० भी साथ थे। यह मुट्ठी भर पत्थर लिए हुए थी। सामने खड़ी हुई तो अल्लाह ने उसकी निगाह पकड़ ली और वह अल्लाह के रसूल सल्ल० को न देख सकी, सिर्फ़ हज़रत अबूबक्र रज़ि० को देख रही थी। उसने सामने पहुंचते ही सवाल किया, अबूबक्र ! तुम्हारा साथी कहां है? मुझे मालूम हुआ है कि वह मेरी निन्दा करता है। ख़ुदा की क़सम ! अगर मैं उसे पा गई, तो उसके मुंह पर यह पत्थर दे मारूंगी, देखो, ख़ुदा की क़सम ! मैं भी कवियित्री हूं, फिर उसने यह पद सुनाया—

'हमने मुज़म्मम[1] की अवज्ञा की, उसकी बात नहीं मानी और उसके दीन को घृणा और तिरस्कार के साथ छोड़ दिया।'

इसके बाद वापस चली गई।

अबूबक्र रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या उसने आपको देखा नहीं?

आपने फ़रमाया, नहीं ! उसने मुझे नहीं देखा। अल्लाह ने उसकी निगाह पकड़ ली थी।[2]

अबूबक्र बज़्ज़ार ने भी इस घटना का उल्लेख किया है और उसमें इतना बढ़ा दिया है कि जब वह अबूबक्र के पास खड़ी हुई थी तो उसने यह भी कहा, 'अबूबक्र ! तुम्हारे साथी ने हमारी निन्दा की है?'

अबूबक्र ने कहा, 'नहीं, इस इमारत के रब की क़सम ! न वह कविता कहते हैं, न उसे ज़ुबान पर लाते हैं।'

उसने कहा, तुम सच कहते हो।[3]

---

1. मुश्रिक जल कर नबी सल्ल० को मुहम्मद (सल्ल०) के बजाए 'मुज़म्मम' कहा करते थे जो मुहम्मद का विलोम है। मुहम्मद, वह व्यक्ति जिसकी प्रशंसा की जाए और मुज़म्मम वह, जिसकी निंदा की जाए। वे चूंकि मुज़म्मम की बुराई करते थे, इसलिए उनकी बुराई नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर लागू न होती। तारीख़े बुख़ारी 1/11, सहीह बुख़ारी मअल फ़त्ह 7/162, मुस्नद अहमद 2/244, 340, 369
2. इब्ने हिशाम 1/335-336
3. यह घटना हाकिम ने मुस्तदरक 2/361. में, इब्ने अबी शैबा ने मुसन्निफ़ 11/498 (हदीस न० 11817) में अबू याला ने मुस्नद 4/246, (हदीस न० 2358) में इस्माई अस्बहानी ने दलाइलुन्नुबूवः पृ० 71 (हदीस न० 54) में और तबरानी और इब्ने अबी हातिम वग़ैरह ने रिवायत किया है। प्रसंग में थोड़ा-सा मतभेद है।

अबू लहब इसके बावजूद कि ये सारी हरकतें कर रहा था, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चचा और पड़ोसी था। उसका घर आपके घर से मिला हुआ था।

इसी तरह आपके दूसरे पड़ोसी भी आपको घर के अन्दर सताते थे।

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि जो गिरोह घर के अन्दर अल्लाह के रसूल सल्ल० को पीड़ा पहुंचाया करता था, वह यह था—अबू लहब, हकम बिन अबुल आस बिन उमैया, उक़्बा बिन अबी मुअैत, अदी बिन हमरा सक़फ़ी, इब्नुल असद हुज़ली, ये सब के सब आपके पड़ोसी थे और इनमें हकम बिन अबिल आस[1] के अलावा कोई मुसलमान न हुआ।

इनके सताने का तरीक़ा यह था कि जब आप नमाज़ पढ़ते तो कोई व्यक्ति बकरी की बच्चादानी इस तरह टिका कर फेंकता कि वह ठीक आपके ऊपर गिरती। चूल्हे पर हांडी चढ़ाई जाती तो बच्चादानी इस तरह फेंकते कि सीधे हांडी में जा गिरती। आपने मजबूर होकर एक घरौंदा बना लिया ताकि नमाज़ पढ़ते हुए उनसे बच सकें।

बहरहाल जब आप पर यह गंदगी फेंकी जाती तो आप उसे लकड़ी पर लेकर निकलते और दरवाज़े पर खड़े होकर फ़रमाते, ऐ बनी अब्द मुनाफ़! यह कैसा पड़ोस है? फिर उसे रास्ते में डाल देते।[2]

उक़्बा बिन अबी मुऐत अपनी दुष्टता और भाग्यहीनता में और बढ़ा हुआ था। चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैतुल्लाह के पास नमाज़ पढ़ रहे थे और अबू जहल और उसके कुछ साथी बैठे हुए थे कि इतने में किसी ने किसी से कहा, कौन है जो बनी फ़्लां के ऊंट की ओझड़ी लाए और जब मुहम्मद सज्दा करें तो उनकी पीठ पर डाल दे?

इस पर क़ौम का सबसे बड़ा भाग्यहीन व्यक्ति—उक़्बा बिन अबी मुऐत[3]—उठा और ओझ लाकर इन्तिज़ार करने लगा। जब नबी सल्ल० सज्दे में तशरीफ़ ले गए, तो उसे आपकी पीठ पर दोनों कंधों के बीच में डाल दिया। मैं सारी बातें देख रहा था, पर कुछ कर नहीं सकता था, काश! मेरे अन्दर बचाने की

---

1. यह उमवी ख़लीफ़ा मरवान बिन हकम के बाप हैं।
2. इब्ने हिशाम 1/416
3. ख़ुद सहीह बुख़ारी की ही एक दूसरी रिवायत में इसे स्पष्ट कर दिया गया है, देखिए 1/543

ताक़त होती।

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि इसके बाद वे हंसी के मारे एक दूसरे पर गिरने लगे और अल्लाह के रसूल सल्ल० सज्दे ही में पड़े रहे, सर न उठाया, यहां तक कि फ़ातिमा आईं और आपकी पीठ से ओझ हटाकर फेंकी, तब आपने सर उठाया, फिर तीन बार फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह ! तू क़ुरैश को पकड़ ले।' जब आपने बद-दुआ की तो उन्हें बहुत दुख हुआ, क्योंकि उनका विश्वास था कि इस शहर में दुआएं क़ुबूल की जाती हैं। इसके बाद आपने नाम ले-लेकर बद-दुआ की, ऐ अल्लाह ! अबू जहल को पकड़ ले और उत्बा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, वलीद बिन उत्बा, उमैया बिन ख़ल्फ़ और उक़्बा बिन अबी मुऐत को पकड़ ले।

उन्होंने सातवें का नाम भी गिनाया, लेकिन रिवायत करने वाले को याद न रहा।[1]

इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं, उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, मैंने देखा कि जिन लोगों के नाम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने गिन-गिनकर लिए थे, सबके सब बद्र के कुंएं में मक़्तूल (क़त्ल किए गए) पड़े हुए थे।[2]

इमैया बिन ख़ल्फ़ ने आदत बना ली थी कि वह जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखता तो लान-तान करता। उसी के बारे में यह आयत उतरी, 'हर लान-तान और बुराइयां करने वाले के लिए तबाही है।' उस आयत में 'हुमज़ा' और 'लुमज़ा' दो शब्द आए हैं। इब्ने हिशाम कहते हैं कि हुमज़ा वह व्यक्ति है जो एलानिया गाली बके और आंखे टेढ़ी करके इशारे करे और लुमज़ा वह व्यक्ति है जो पीठ पीछे लोगों की बुराइयां करे और उन्हें पीड़ा पहुंचाए।[3]

उमैया का भाई उबई बिन ख़ल्फ़, उक़्बा बिन अबी मुऐत का गहारा दोस्त था। एक बार उक़्बा ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठकर कुछ सुना। उबई को मालूम हुआ तो उसने उक़्बा को सख़्त-सुस्त कहा, रुष्ट हुआ

---

1. यह सातवां आदमी अम्मारा बिन वलीद था। ख़ुद सहीह बुख़ारी हदीस न० 520 में इसे स्पष्ट किया गया है।
2. सहीह बुख़ारी, किताबुल वुज़ू बाब 'इज़ा उल क़ि-य अलल मुसल्ला क़ज़-रुन औजीफ़तुन 1/37
3. इब्ने हिशाम 1/356-357

और उससे मांग की कि वह जाकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर थूक आए। आख़िर उक़्बा ने ऐसा ही किया। ख़ुद उबई बिन ख़ल्फ़ ने एक बार एक सड़ी-गली हड्डी लाकर तोड़ी और हवा में फूंक कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर उड़ा दी।[1]

अख़नस बिन शुरैक़ सक़फ़ी भी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सताने वालों में था। क़ुरआन में उसके नौ अवगुण बताए गए हैं, जिससे उसके आचरण का अनुमान किया जा सकता है। इर्शाद है—

'तुम बात न मानो किसी क़सम खाने वाले ज़लील की, जो लान-तान करता है, चुग़लियां खाता है, भलाई से रोकता है, हद दर्जा ज़ालिम, बद-अमल और अत्याचारी है और उसके बाद बद-अस्ल भी है।' (68 : 10-13)

अबू जह्ल कभी-कभी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आकर क़ुरआन सुनता था, लेकिन बस सुनता ही था, मानना, पालन करना, सम्मान करना और डरना सरीखे काम नहीं करता था। वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी बात से पीड़ा पहुंचाता और अल्लाह की राह से रोकता था, फिर अपनी इस हरकत और बुराई पर गर्व करता और इतराता जाता था, मानो उसने कोई उल्लेखनीय काम किया है। क़ुरआन मजीद की ये आयतें उसी व्यक्ति के बारे में उतरीं—

'न उसने सदक़ा किया, न नमाज़ पढ़ी, बल्कि झुठलाया और पीठ फेरी, फिर वह अकड़ता हुआ अपने घर वालों के पास गया। तेरे ख़ूब लायक़ है, तेरे ख़ूब लायक़ है।'

उस व्यक्ति ने पहले दिन जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ते हुए देखा, तो उसी दिन से आपको नमाज़ से रोकता रहा। एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक़ामे इब्राहीम के पास नमाज़ पढ़ रहे थे कि उसका गुज़र हुआ। देखते ही बोला, मुहम्मद! क्या मैंने तुझे इससे मना नहीं किया था? साथ ही धमकी भी दी।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी डांट कर सख़्ती से जवाब दिया। इस पर वह कहने लगा, ऐ मुहम्मद! मुझे कैसी धमकी दे रहे हो? देखो, अल्ल्लाह की क़सम! इस घाटी (मक्का) में मेरी महफ़िल सबसे बड़ी है। इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

1. इब्ने हिशाम, 1/361-362

'अच्छा तो वह बुलाए अपनी महफ़िल को, हम भी सज़ा के फ़रिश्तों को बुलाए देते हैं)।'[1]

एक रिवायत में उल्लेख हुआ है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका गरेबान गले के पास से पकड़ लिया और झिंझोड़ते हुए फ़रमाया—

'तेरे लिए बहुत ही उचित है, तेरे लिए बहुत ही उचित है।'

इस पर अल्लाह का यह दुश्मन कहने लगा, 'ऐ मुहम्मद! मुझे धमकी दे रहे हो? अल्लाह की क़सम, तुम और तुम्हारा पालनहार मेरा कुछ नहीं कर सकते। मैं मक्के की दोनों पहाड़ियों के बीच चलने-फिरने वालों में सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित हूं।'[2]

बहरहाल इस डांट के बावजूद अबू जहल अपनी मूर्खता से रुकने वाला न था, बल्कि उसकी भाग्यहीनता में कुछ और वृद्धि ही हो गई। चुनांचे सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि (एक बार क़ुरैश के सरदारों से) अबू जहल ने कहा कि मुहम्मद आप लोगों के सामने अपना चेहरा धूल स भर लेता है। जवाब दिया गया, हां। उसने कहा, लात व उज़्ज़ा की क़सम! अगर मैंने (इस हालत में) उसे देख लिया तो उसकी गरदन रौंद दूंगा और उसका चेहरा मिट्टी पर रगड़ दूंगा। इसके बाद उसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ते हुए देख लिया और यह सोचकर चला कि आपकी गरदन रौंद देगा, लेकिन लोगों ने अचानक क्या देखा कि वह एड़ी के बल पलट रहा है और दोनों हाथ से बचाव कर रहा है। लोगों ने पूछा, अबुल हकम! तुम्हें क्या हुआ? उसने कहा, मेरे और उसके बीच एक खाई है, हौलनाकी है, तबाही है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर वह मेरे क़रीब आता तो फ़रिश्ते उसका एक-एक अंग उचक लेते।[3]

यह उस दमन-चक्र का एक संक्षिप्त प्रारूप है जो अल्लाह वाला होने और हरम के निवासी होने का दावा रखने वाले सरकश मुश्रिकों के हाथों अल्लाह के

---

1. इसे इब्ने जरीर ने तफ़्सीर में रिवायत किया है। इसी की तरह तिर्मिज़ी ने भी अब-वाबुत्तफ़्सीर, तफ़्सीर सूरः इक़रा, आयत न० 17, 18 (हदीस न० 3349) 5/514 में रिवायत किया है।
2. देखिए तफ़्सीर इब्ने कसीर 4/477, अद्दुर्रुल मंसूर 6/478 वग़ैरह
3. सहीह मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन व अह्लामुहुम हदीस न० 3/4/2154

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों को सहना पड़ रहे थे।

इस संगीन स्थिति का तक़ाज़ा यह था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसा सावधानी भरा और हौसलामंदी वाला तरीक़ा अपनाएं कि मुसलमानों पर जो आफ़त टूट पड़ी थी, उससे बचाने की कोई शक्ल निकल आए और जहां तक संभव हो उसकी तीव्रता कम की जा सके। इस उद्देश्य के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो हिक्मत भरे क़दम उठाए जो दावत का काम आगे बढ़ाने में प्रभावी सिद्ध हुए।

1. अरक़म बिन अबी अरक़म मख़्ज़ूमी के मकान को दावत का तर्बियत के केन्द्र के रूप में इस्तेमाल किया,

2. मुसलमानों को हब्शा की हिजरत का हुक्म फ़रमाया।

दारे अरक़म (अरक़म का घर)

यह मकान सरकशों की निगाहों और उनकी मज्लिसों से दूर सफ़ा पहाड़ के दामन में अलग-थलग स्थित था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसे इस उद्देश्य के लिए चुन लिया कि यहां मुसलमानों के साथ ख़ुफ़िया तौर पर जमा हों। चुनांचे आप यहां इत्मीनान से बैठकर मुसलमानों पर अल्लाह की आयतें तिलावत फ़रमाते, उनका मन उज्जवल करते और उन्हें किताब व हिक्मत सिखाते और मुसलमान सुख-शान्ति के साथ अपनी इबादत और दीनी आमाल अंजाम देते और अल्लाह की उतारी हुई वह्य सीखते। जो आदमी इस्लाम लाना चाहता, वह भी यहां आकर ख़ामोशी से मुसलमान हो जाता और ज़ुल्म और बदला लेने पर उतरे हुए सरकशों को इसकी ख़बर न होती।

यह बात निश्चित है कि अगर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसके बजाए मुसलमानों के साथ खुल्लम खुल्ला इकट्ठा होते तो मुश्रिक अपनी पूरी ताक़त के साथ इस बात की कोशिश करते कि आप मन को पाक करने और किताब व सुन्नत का जो काम करना चाहते हैं, उसे न होने दें। इसके नतीजे में दोनों फ़रीक़ों के दर्मियान संघर्ष हो सकता था।

चुनांचे इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम घाटियों में इकट्ठा होकर नमाज़ पढ़ा करते थे। एक बार क़ुरैश के कुछ दुश्मनों ने देख लिया तो गाली-गलोच और लड़ाई-झगड़े पर उतर आए। जवाब में हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० ने एक व्यक्ति को ऐसी चोट लगाई कि उसका ख़ून बह पड़ा और यह पहला

ख़ून था जो इस्लाम में बहाया गया।[1]

मालूम है अगर इस तरह का टकराव बार-बार होता और लम्बा खिंच जाता, तो मुसलमानों के ख़ात्मे की नौबत आ सकती थी, इसलिए हिक्मत का तक़ाज़ा यही था कि काम परदे के पीछे किया जाए, चुनांचे आम सहाबा किराम रज़ि० अपना सलाम, अपनी इबादत, अपनी तब्लीग़ और अपने लोगों के मीटिंगें सब कुछ छिप-छिपाकर करते थे, अलबत्ता अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तब्लीग़ का काम भी मुश्रिकों के सामने खुल्लम-खुल्ला अंजाम देते थे और इबादत का काम भी। कोई चीज़ आपको इससे रोक नहीं सकती थी, फिर भी आप मुसलमानों के साथ ख़ुद उनकी मस्लहत देखते हुए ख़ुफ़िया तौर पर जमा होते थे। इधर अरक़म बिन अबी अरक़म मख़्ज़ूमी का मकान सफ़ा पहाड़ी पर दुश्मनों और विरोधियों की निगाहों और उनकी मजिल्सों से दूर अलग-थलग वाक़े था, इसलिए आपने पांचवीं सन् नुबूवत में उसी मकान को अपनी दावत और मुसलमानों के साथ अपने जमा होने का सेन्टर बना लिया।[2]

हब्शा की पहली हिजरत

अत्याचार और दमन का उल्लिखित चक्र नुबूवत के चौथे साल के दर्मियान या आखिर में शुरू हुआ था और शुरू में मामूली था, पर दिन ब दिन और माह ब माह बढ़ता गया, यहां तक कि नुबूवत के पांचवें साल का बीच आते-आते अपनी चरम सीमा को पहुंच गया, यहां तक कि मुसलमानों के लिए मक्का में रहना दूभर हो गया और उन्हें इन बराबर किये जा रहे ज़ुल्म व सितम से मुक्ति पाने के उपाय सोचने पर मजबूर होना पड़ा। इन्हीं संगीन और अंधेरे की हालत में सूरः ज़ुमर उतरी और उसमें हिजरत की ओर इशारा किया और बताया गया कि अल्लाह की ज़मीन तंग नहीं है—

'जिन लोगों ने इस दुनिया में अच्छाई की, उनके लिए अच्छाई है और अल्लाह की ज़मीन विशाल है। सब्र करने वालों को उनका बदला बेहिसाब दिया जाएगा।' (39 : 10)

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम था कि असहमा नजाशी हब्शा का एक न्यायप्रिय बादशाह है। वहां किसी पर ज़ुल्म नहीं होता। इसलिए आपने मुसलमानों को हुक्म दिया कि वे फ़ित्नों से अपने दीन की

---

1. इब्ने हिशाम 1/263,
2. मुख़्तसरुस्सीरः, मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब, पृ० 61

रक्षा के लिए हब्शा हिजरत कर जाएं।[1] इसके बाद एक तैशुदा प्रोग्राम के मुताबिक़ रजब सन् 05 नबवी में सहाबा किराम रज़ि० के पहले गिरोह ने हब्शा की ओर हिजरत की। इस गिरोह में 12 मर्द और चार औरतें थीं। हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० उनके अमीर (सरदार) थे और उनके साथ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी (सुपुत्री) हज़रत रुक़ैया भी थीं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके बारे में फ़रमाया कि हज़रत इब्राहीम और हज़रत लूत अलै० के बाद यह पहला घराना है, जिसने अल्लाह की राह में हिजरत की।[2]

ये लोग रात के अंधेरे में चुपके से निकलकर अपनी नई मंज़िल की ओर रवाना हुए। रहस्य में रखने से अभिप्राय यह था कि क़ुरैश को इसका ज्ञान न हो सके। जाना लाल सागर की बन्दरगाह शुऐबा की ओर था। सौभाग्य कि वहां दो व्यापारिक नावें मौजूद थीं, जो उन्हें अपनी शरण में लेकर समुद्र पार हब्शा चली गई। क़ुरैश को बाद में उनके जाने का पता चला, फिर भी उन्होंने पीछा किया और तट पर पहुंचे, लेकिन सहाबा किराम आगे जा चुके थे, इसलिए विफल वापस आ गए।

इधर मुसलमानों ने हब्शा पहुंचकर बड़े चैन की सांस ली[3],

मुसलमानों के साथ मुश्रिकों का सज्दा और मुहाजिरों की वापसी

लेकिन उसी वर्ष रमज़ान शरीफ़ में यह घटना घटी कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार हरम तशरीफ़ ले गए। वहां क़ुरैश की बहुत बड़ी भीड़ थी। उनके सरदार और बड़े-बड़े लोग जमा थे। आपने एकदम अचानक खड़े होकर सूरः नज्म पढ़ना शुरू कर दिया। इन दुश्मनों ने इससे पहले आम तौर से क़ुरआन सुना न था, क्योंकि क़ुरआन के सिलसिले में उनकी स्थाई नीति यह थी कि—

'इस क़ुरआन को मत सुनो और इसमें बाधा डालो, (ऊधम मचाओ) ताकि तुम छा जाओ।' (41 : 26)

लेकिन जब नबी सल्ल० ने अचानक इस सूरः की तिलावत शुरू कर दी और उनके कानों में एक अकथनीय और महानता लिए हुए कलामे इलाही की आवाज़

---

1. देखिए अस्सुननुल कुबए : बैहक़ी 9/9
2. ज़ादुल मआद 1/24,
3. ज़ादुल मआद 1/24

पड़ी, तो उन्हें कुछ होश न रहा। सब के सब तल्लीन होकर सुनने लगे, किसी के दिल में और कोई विचार ही न आया, यहां तक कि जब आपने सूरः के अन्त में दिल हिला देने वाली आयतें पढ़कर अल्लाह का यह हुक्म सुनाया कि—

'अल्लाह के लिए सज्दा करो और उसकी इबादत करो।' (53 : 62)

और उसके साथ ही सज्दा फ़रमाया तो किसी को अपने आप पर क़ाबू न रहा और सब के सब सज्दे में गिर पड़े। सच तो यह है कि इस मौक़े पर सत्य की महत्ता व महानता ने घमंडी और उपहास करने वाले विरोधियों की हठधर्मी का परदा चाक कर दिया था, इसलिए उन्हें अपने आप पर क़ाबू न रह गया था और वे बे-अख़्तियार सज्दे में गिर पड़े थे।[1]

लेकिन बाद में जब उन्हें एहसास हुआ कि कलामे इलाही की महानता ने उनकी लगाम मोड़ दी और वे ठीक वही काम कर बैठे, जिसे मिटाने और ख़त्म करने के लिए उन्होंने एड़ी से चोटी तक का ज़ोर लगा रखा था और इसके साथ ही इस घटना के समय ग़ैर-मौजूद मुश्रिकों ने उन पर हर ओर से लानत-मलामत की बौछार शुरू की, तो उनके हाथ के तोते उड़ गए और उन्होंने अपनी जान छुड़ाने के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह आरोप लगाया और झूठ गढ़ा कि आपने उनके बुतों का उल्लेख मान-सम्मान के साथ करते हुए यह कहा था कि —

'ये श्रेष्ठतर देवियां हैं और इनकी शफ़ाअत (सिफ़ारिश) की उम्मीद की जाती है।'

हालांकि यह खुला झूठ था, जो सिर्फ़ इसलिए गढ़ लिया गया था, ताकि नबी सल्ल० के साथ सज्दा करने की जो 'ग़लती' हो गई है, उसके लिए एक 'समुचित' बहाना ढूंढा जा सके और ज़ाहिर है कि जो लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हमेशा झूठ गढ़ते और आपके ख़िलाफ़ हमेशा निराधार बातें करते रहे थे, वे अपना दामन बचाने के लिए इस तरह का झूठ क्यों न गढ़ते।

बहरहाल मुश्रिकों के सज्दा करने की ख़बर हब्शा के मुहाजिरों को भी मालूम हुई, लेकिन अपनी सही स्थिति से हटकर, यानी उन्हें यह मालूम हुआ कि क़ुरैश मुसलमान हो गए हैं। चुनांचे उन्होंने शव्वाल के महीने में मक्का वापसी का रास्ता लिया, लेकिन जब इतने क़रीब आ गए कि मक्का एक दिन से भी कम

---

1. सहीह बुख़ारी में इस सज्दे की घटना इब्ने मसऊद और इब्ने अब्बास रज़ि० से संक्षिप्त में बयान की गई है। देखिए बाब सज्दतुन्नज्म और बाब सुजूदुल मुस्लिमीन वल मुश्रिकीन 1/146, और बाब मालक़ियन्नबीयु व अस्हाबुहू बिमक्क-त 1/543

दूरी पर रह गया तो सही स्थिति मालूम हुई। इसके बाद कुछ लोग तो सीधे हब्शा पलट गये और कुछ लोग छिप-छिपाकर या क़ुरैश के किसी आदमी की शरण लेकर मक्के में दाख़िल हुए।[1]

हब्शा की दूसरी हिजरत

इसके बाद उन मुहाजिरों पर ख़ास तौर पर और मुसलमानों पर आम तौर पर क़ुरैश का अन्याय और अत्याचार और बढ़ गया और उनके परिवार वालों ने उन्हें ख़ूब सताया, क्योंकि क़ुरैश को उनके साथ नजाशी के सद्व्यवहार की जो ख़बर मिली थी, उस पर वे बहुत रुष्ट थे। मजबूर होकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि० को फिर हब्शा की हिजरत का मश्विरा दिया, लेकिन यह दूसरी हिजरत पहली हिजरत के मुक़ाबले में ज़्यादा परेशानियों और कठिनाइयों से भरी हुई थी, क्योंकि इस बार क़ुरैश पहले ही से चौकन्ना थे और ऐसी किसी कोशिश को विफल करने का संकल्प किए हुए थे, लेकिन मुसलमान उनसे कहीं ज़्यादा मुस्तैद साबित हुए और अल्लाह ने उनके लिए सफ़र आसान बना दिया, चुनांचे वे क़ुरैश की पकड़ में आने से पहले ही हब्श के बादशाह के पास पहुंच गए।

इस बार कुल 82 या 83 मर्दों ने हिजरत की। (हज़रत अम्मार की हिजरत में मतभेद है) और अठारह या उन्नीस औरतों ने।[2] अल्लामा मंसूरपुरी ने पूरे विश्वास के साथ औरतों की तायदाद अठारह लिखी है।[3]

हब्शा के मुहाजिरों के विरुद्ध क़ुरैश का षड्यंत्र

मुश्रिकों को बड़ा दुख था कि मुसलमान अपनी जान और अपना दीन बचाकर एक शांतिपूर्ण जगह पहुंच गए हैं, इसलिए उन्होंने अम्र बिन आस और अब्दुल्लाह बिन रबीआ को, जो गहरी सूझ-बूझ के मालिक थे और अभी मुसलमान नहीं हुए थे, दूत बनाकर एक अहम मुहिम पर भेजने को सोचा और इन दोनों को नजाशी और बितरीक़ों (दरबारियों) की सेवा में भेंट और उपहार देने के लिए हब्शा रवाना किया। इन दोनों ने पहले हब्शा पहुंचकर बितरीक़ों को उपहार दिए, फिर उन्हें अपनी वे दलीलें बताई, जिनको आधार बनाकर वे मुसलमानों को हब्शा से निकलवाना चाहते थे। जब बितरीक़ों ने इसे मान लिया कि वे नजाशी

1. ज़ादुल मआद 1/24, 2/44, इब्ने हिशाम 1/364
2. ज़ादुल मआद 1/24,
3. वही, रहमतुल लिल आलमीन

को मुसलमानों के निकाल देने का मश्विरा देंगे तो ये दोनों नजाशी के दरबार में हाज़िर हुए और भेंट-उपहार देकर अपनी बात इस तरह रखी—

'ऐ बादशाह! आपके देश मे हमारे कुछ नासमझ नवजवान भाग आए हैं, उन्होंने अपनी क़ौम का धर्म छोड़ दिया है, लेकिन आपके दीन में भी दाख़िल नहीं हुए हैं, बल्कि एक नया दीन गढ़ लिया है, जिसे न हम जानते हैं, न आप। हमें आपकी सेवा में उन्हीं के बारे में उनके मां-बाप, चचा और कुंबे-क़बीले के सरदारों ने भेजा है। अभिप्राय यह है कि आप इन्हें उनके पास वापस भेज दें, क्योंकि वे लोग उन पर सबसे ऊंची निगाह रखते हैं और उनकी कमज़ोरी और ख़राबी को बेहतर तौर पर समझते हैं।

जब ये दोनों अपना उद्देश्य पेश कर चुके तो बितरीक़ों ने कहा, 'बादशाह सलामत! ये दोनों ठीक ही कह रहे हैं। आप इन जवानों को इन दोनों के सुपुर्द कर दें। ये दोनों इन्हें इनकी क़ौम और इनके देश में वापस पहुंचा देंगे।'

लेकिन नजाशी ने सोचा कि इस विवाद को गहराई में जाकर समझना और उनके तमाम पहलुओं को सुनना-जानना ज़रूरी है। चुनांचे उसने मुसलमानों को बुला भेजा।

मुसलमान यह तै करके उसके दरबार में आए कि हम सच ही बोलेंगे, चाहे नतीजा कुछ भी हो। जब मुसलमान आ गए तो नजाशी ने पूछा—

'यह कौन-सा दीन है जिसकी बुनियाद पर तुम अपनी क़ौम से अलग हो गए? और मेरे धर्म में भी दाख़िल नहीं हुए और न इन समुदायों ही में से किसी के धर्म को अपनाया?'

मुसलमानों के नुमाइंदे हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब ने कहा—

'ऐ बादशाह! हम ऐसी क़ौम थे, जो अज्ञानता में पड़ी हुई थी। हम बुत पूजते थे, मुरदार खाते थे, कुकर्म करते थे, नातेदारों से नाते तोड़ते थे, पड़ोसियों से दुर्व्यवहार करते थे और हम में से ताक़तवर कमज़ोर को खा रहा था। हम इसी हालत में थे कि अल्लाह ने हम ही में से एक रसूल भेजा। उसका श्रेष्ठ वंश का होना, उसकी सच्चाई, अमानतदारी और पाकदामनी हमें पहले से मालूम थी। उसने हमें अल्लाह की ओर बुलाया और समझाया कि हम सिर्फ़ एक अल्लाह को मानें और उसी की इबादत करें और उसके सिवा जिन पत्थरों और बुतों को हमारे बाप-दादा पूजते थे, उन्हें छोड़ दें। उसने हमें सच बोलने, अमानत अदा करने, रिश्ते-नाते जोड़ने, पड़ोसी से अच्छा व्यवहार करने और कुकर्मों से और ख़ून बहाने से बचने का हुक्म दिया और बेहयाई में पड़ने, झूठ बोलने, यतीम का माल खाने और पाकदामन औरतों पर झूठी तोहमत लगाने से मना किया। उसने

हमें यह भी हुक्म दिया कि हम सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करें, उसके साथ किसी को शरीक न करें, उसने हमें नमाज़, रोज़ा और ज़कात का हुक्म दिया।'

इसी तरह हज़रत जाफ़र रज़ि० ने इस्लाम के काम गिनाए, फिर कहा—

'हमने उस पैग़म्बर को सच्चा माना, उस पर ईमान लाए और उसके लाए हुए ख़ुदाई दीन का पालन किया, उसकी पैरवी की, चुनांचे हमने सिर्फ़ अल्लाह की इबादत की, उसके साथ किसी को शरीक नहीं किया और जिन बातों को उस पैग़म्बर ने हराम बताया उन्हें हराम माना और जिनको हलाल बताया, उन्हें हलाल जाना। इस पर हमारी क़ौम हमसे बिगड़ गई, उसने हम पर ज़ुल्म व सितम किया और हमें हमारे दीन से फेरने के लिए फ़िल्ले और सज़ाओं से दो चार किया, ताकि हम अल्लाह की इबादत छोड़कर बुतपरस्ती की ओर पलट जाएं और जिन गन्दी चीज़ों को हलाल समझते थे, उन्हें फिर हलाल समझने लगें। जब उन्होंने हम पर अत्याचार के पहाड़ तोड़ दिए, जीना दूभर कर दिया, ज़मीन तंग कर दी और हमारे और हमारे दीन के बीच रोक बनकर खड़े हो गए तो हमने आपके देश का रास्ता पकड़ा और दूसरों पर प्रमुखता देते हुए आपकी शरण में रहना पसन्द किया और यह आशा की कि ऐ बादशाह! आपके पास हमारे साथ अन्याय न किया जाएगा।'

नजाशी ने कहा, 'वह पैग़म्बर जो कुछ लाए हैं, उसमें से कुछ तुम्हारे पास है?'

हज़रत जाफ़र ने कहा, 'हां!'

नजाशी ने कहा, 'तनिक मुझे भी पढ़ कर सुनाओ।'

हज़रत जाफ़र ने सूरः मरयम की शुरू की आयतें तिलावत फ़रमाई। नजाशी इतना रोया कि उसकी दाढ़ी भीग गई। नजाशी के तमाम पादरी भी हज़रत जाफ़र की तिलावत सुनकर इतना रोए कि उनकी किताबें भीग गईं।

फिर नजाशी ने कहा कि यह कलाम और वह कलाम जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम लेकर आए थे, दोनों एक ही शमादान (ज्योति पुंज) से निकले हुए हैं।

इसके बाद नजाशी ने अम्र बिन आस और अब्दुल्लाह बिन रबीआ को सम्बोधित करके कहा कि तुम दोनों चले जाओ। मैं इन लोगों को तुम्हारे सुपुर्द नहीं कर सकता और न यहां इनके ख़िलाफ़ कोई चाल चली जा सकती है।

इस हुक्म पर वे दोनों वहां से निकल गए, लेकिन फिर अम्र बिन आस ने अब्दुल्लाह बिन रबीआ से कहा, 'ख़ुदा की क़सम! कल इनके बारे में ऐसी बातें लाऊंगा कि उनकी हरियाली की जड़ काट कर रख दूंगा।'

अब्दुल्लाह बिन रबीआ ने कहा, नहीं, ऐसा न करना। इन लोगों ने अगरचे हमारे

ख़िलाफ़ कुछ किया है, लेकिन हैं बहरहाल हमारे अपने ही कुंबे-क़बीले के लोग।

मगर अम्र बिन आस अपनी राय पर अड़े रहे।

अगला दिन आया, तो अम्र बिन आस ने नजाशी से कहा, ऐ बादशाह ! ये लोग ईसा बिन मरयम के बारे में एक बड़ी बात कहते हैं।

इस पर नजाशी ने मुसलमानों को फिर बुला भेजा। वह पूछना चाहता था कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में मुसलमान क्या कहते हैं?

इस बार मुसलमानों को घबराहट हुई, लेकिन उन्होंने तै किया कि सच ही बोलेंगे, नतीजा भले ही कुछ निकले। चुनांचे जब मुसलमान नजाशी के दरबार में हाज़िर हुए और उसने सवाल किया, तो हज़रत जाफ़र रज़ि० ने फ़रमाया—

'हम ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में वही बात कहते हैं, जो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लेकर आए हैं, यानी हज़रत ईसा अल्लाह के बन्दे, उसके रसूल, उसकी रूह और उसका वह कलिमा हैं, जिसे अल्लाह ने कुंवारी पाकदामन हज़रत मरयम अलैहस्सलाम की ओर डाला था।'

इस पर नजाशी ने ज़मीन से एक तिनका उठाया और बोला, 'ख़ुदा की क़सम ! जो कुछ तुमने कहा है, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उससे इस तिनके के बराबर भी बढ़कर न थे। इस पर बितरीक़ों ने 'हुंह' की आवाज़ लगाई।

नजाशी ने कहा, 'अगरचे तुम लोग 'हुंह' कहो।'

इसके बाद नजाशी ने मुसलमानों से कहा, 'जाओ, तुम लोग मेरे राज्य में सुख-शान्ति से रहो। जो तुम्हें गाली देगा, उस पर ज़ुर्माना लगाया जाएगा। मुझे गवारा नहीं कि तुम में से मैं किसी आदमी को सताऊं और उसके बदले मुझे सोने का पहाड़ मिल जाए।'

इसके बाद उसने अपने दरबारियों को सम्बोधित करके कहा, 'इन दोनों को इनके उपहार वापस कर दो। मुझे इनकी कोई ज़रूरत नहीं। ख़ुदा की क़सम ! अल्लाह ने जब मुझे मेरा देश वापस किया था, तो मुझसे कोई रिश्वत नहीं ली थी कि मैं उसकी राह में रिश्वत लूं। साथ ही अल्लाह ने मेरे बारे में लोगों की बात स्वीकार न की थी कि मैं अल्लाह के बारे में लोगों की बात मानूं।'

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि०, जिन्होंने इस घटना का उल्लेख किया है, कहती हैं, इसके बाद वे दोनों अपने भेंट-उपहार लिए बे-आबरू होकर वापस चले गये और हम नजाशी के पास एक अच्छे देश में एक अच्छे पड़ोसी की छत्र-छाया में ठहरे रहे।[1]

---

1. इब्ने हिशाम (संक्षिप्त किया गया) 1/334-338

यह इब्ने इस्हाक़ की रिवायत है। दूसरे सीरत के रचनाकारों का मत है कि नजाशी के दरबार में हज़रत अम्र बिन आस की हाज़िरी बद्र की लड़ाई के बाद हुई थी। कुछ लोगों ने दोनों में ताल-मेल पैदा करने की यह शक्ल निकाली है कि हज़रत अम्र बिन आस नजाशी के दरबार में मुसलमानों की वापसी के लिए दो बार गए थे, लेकिन बद्र की लड़ाई के बाद की हाज़िरी के ताल्लुक़ से हज़रत जाफ़र रज़ि० और नजाशी के बीच सवाल व जवाब का जो विवरण दिया जाता है, वह लगभग वही है जो इब्ने इस्हाक़ ने हब्शा की हिजरत के बाद की हाज़िरी के सिलसिले में बयान की हैं। फिर इन सवालों के विषयों पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि नजाशी के पास यह मामला अभी पहली बार आया था, इसलिए प्रमुखता इस बात को प्राप्त है कि मुसलमानों को वापस लाने की कोशिश केवल एक बार हुई थी और वह हब्शा की हिजरत के बाद थी।

पीड़ा पहुंचाने में तीव्रता और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल की कोशिश

जब मुश्रिक अपनी चाल में सफल न हो सके और हब्शा के मुहाजिरों को वापस लाने में मुंह की खानी पड़ी तो आपा खो बैठे और लगता था कि मारे ग़ुस्से के फट पड़ेंगे, चुनांचे उनकी दरिन्दगी (पशिवकता) और बढ़ गई उनका हाथ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक बढ़ने लगा और उनकी गतिविधियों से यह महसूस होने लगा कि वह आपका अन्त करना चाहते हैं, ताकि उनके विचार से जिस फ़िले ने उनकी नींद हराम कर रखी है, उसे जड़ से उखाड़ फेंका जाए।

जहां तक मुसलमानों का ताल्लुक़ है तो अब मक्का में जो मुसलमान बचे-खुचे रह गए थे, वह बहुत ही थोड़े थे और फिर प्रतिष्ठित लोग थे, या किसी बड़े आदमी की पनाह में थे। इसके साथ ही वे अपने इस्लाम को छिपाए हुए भी थे और यथासंभव सरकशों और ज़ालिमों की निगाहों से दूर रहते थे, लेकिन इस सावधानी और बचाव के बावजूद वे ज़ुल्म व जौर और पीड़ा के शिकार बनने से पूरी तरह न बच सके।

जहां तक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ताल्लुक़ है तो आप ज़ालिमों की निगाहों के सामने नमाज़ पढ़ते और अल्लाह की इबादत करते थे और ख़ुफ़िया और खुल्लम खुल्ला दोनों तरह अल्लाह के दीन की दावत देते थे। इससे आपको न कोई रोकने वाली चीज़ रोक सकती थी और न मोड़ने वाली चीज़ मोड़ सकती थी, क्योंकि यह अल्लाह की रिसालत के प्रचार का एक हिस्सा

था और इस पर आप उस वक़्त से अमल कर रहे थे जब से अल्लाह का यह हुक्म आया था, 'आपको जो हुक्म दिया जाता है, उसे खुल्लम खुल्ला कीजिए और मुश्रिकों से मुंह फेरे रखिए।'

चुनांचे ऐसी स्थिति में मुश्रिकों के लिए संभव था कि आपसे जब चाहें छेड़-छाड़ कर बैठें। प्रत्यक्ष में कोई चीज़ न थी जो उनके और उनके इरादों के दर्मियान रोक बन सकती। अगर कुछ था तो वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपना निजी रौब व दबदबा था या अबू तालिब का ज़िम्मा व एहतराम था या इस बात का डर था कि अगर उन्होंने कोई ग़लत हरकत की तो अंजाम अच्छा न होगा और सारे बनू हाशिम उनके ख़िलाफ़ डट जाएंगे।

मगर उनके दिलों में इन सारी बातों का जैसा असर होना चाहिए था, वह असर बाक़ी न रह गया था और जब से उन्हें यह महसूस हो चला था कि आपकी दावत के सामने उनकी दीनी चौधराहट और मूर्ति पूजा-व्यवस्था टूट-फूट का शिकार हुआ चाहती है, तब से उन्होंने आपसे ओछी हरकतें करने शुरू कर दी थीं। इस संबंध में जो घटनाएं हदीस व सीरत की किताबों में रिवायत की गई हैं और जिनकी गवाही हालात भी देते हैं, वे इसी दौर में घटीं। उनके एक दो नमूने ये हैं कि—

एक दिन अबू लहब का बेटा उतैबा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और बोला—

'मैं 'वन्नज्मि इज़ा हवा' और 'सुम-म दना फ़-त-दल्ला' के साथ कुफ़्र करता हूं।'

इसके बाद वह आपको पीड़ा पहुंचाने पर उतर आया। आपका कुरता फाड़ दिया और आपके चेहरे पर थूक दिया। अगरचे थूक आप पर न पड़ा।

इसी मौक़े पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बद-दुआ की कि ऐ अल्लाह! इस पर अपने कुत्तों में से कोई कुत्ता मुसल्लत कर दे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह बद-दुआ क़ुबूल हुई। चुनांचे एक बार उतैबा क़ुरैश के कुछ लोगों के साथ सफ़र में गया। जब उन्होंने शाम देश के नगर ज़रक़ा में पड़ाव डाला, तो रात के वक़्त शेर ने उनका चक्कर लगाया।

उतैबा ने देखते ही कहा, 'हाय! मेरी तबाही! यह अल्लाह की क़सम! मुझे खा जाएगा, जैसा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे बद-दुआ दी है। देखो, मैं शाम देश में हूं, लेकिन उसने मक्का में रहते हुए मुझे मार डाला।

सावधानी और रक्षा की दृष्टि से लोगों ने उतैबा को अपने और जानवरों के

घेरे के बीचों-बीच सुलाया, लेकिन रात को शेर सबको फांदता हुआ सीधा उतैबा के पास पहुंचा और पकड़ कर ज़िब्ह कर डाला।[1]

एक बार उक़्बा बिन अबी मुऐत ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गरदन सज्दे की हालत में इस ज़ोर से रौंदी कि मालूम होता था, दोनों आंखें निकल आएंगी।[2]

इब्ने इस्हाक़ की एक लम्बी रिवायत से भी क़ुरैश के दुष्टों के इस इरादे पर रोशनी पड़ती है कि वे नबी सल्ल० के ख़ात्मे के चक्कर में थे, चुनांचे इस रिवायत में बयान किया गया है कि एक बार अबू जहल ने कहा—

'क़ुरैशी भाइयो! आप देखते हैं कि मुहम्मद हमारे धर्म में दोष निकालने, हमारे पुरखों को बुरा-भला कहने, हमारी सूझ-बूझ को घटाने और हमारे उपास्यों का अपमान करने से रुकते नहीं, इसलिए मैं अल्लाह से प्रण कर रहा हूं कि एक बहुत भारी और मुश्किल से उठने वाला पत्थर लेकर बैठूंगा और जब वह सज्दा करेगा, तो उसी पत्थर से उसका सर कुचल दूंगा। अब इसके बाद चाहे तुम लोग मुझको असहाय छोड़ दो, चाहे मेरी रक्षा करो और बनू अब्द मुनाफ़ भी इसके बाद जो चाहें करें।'

लोगों ने कहा, 'नहीं, ख़ुदा की क़सम! हम तुम्हें कभी किसी मामले में असहाय नहीं छोड़ सकते। तुम जो करना चाहते हो, कर गुज़रो।'

सुबह हुई तो अबू जहल वैसा ही एक पत्थर लेकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इन्तिज़ार में बैठ गया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पहले ही की तरह तशरीफ़ लाये और खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे। क़ुरैश भी अपनी-अपनी मज्लिसों (बैठकों की जगहों) में आ चुके थे और अबू जहल की कार्रवाई देखने के इन्तिज़ार में थे। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दे में तशरीफ़ ले गए तो अबू जहल ने पत्थर उठाया, फिर आपकी ओर बढ़ा, लेकिन जब क़रीब पहुंचा तो पराजित व्यक्ति की तरह वापस भागा। उसका रंग उड़ रहा था और वह इतना रौब खा गया था कि उसके दोनों हाथ पत्थर पर चिपककर रह गए थे। वह बड़ी मुश्किल से हाथ से पत्थर अलग कर सका।

जहां तक क़ुरैश के दूसरे गुंडों का ताल्लुक़ है, तो उनके दिलों में भी नबी

---

1. मुख़्तसरुस्सीर, शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 135, इस्तीआब, इसाबा, दलाइलुन्नुबूव, अरौज़ुल उन्फ़
2. वही, मुख़्तसरुस्सीर, पृ० 113

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ात्मे का ख़्याल बराबर पक रहा था। चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० से इब्ने इस्हाक़ ने उनका यह बयान नक़ल किया है कि एक बार मुश्रिक हतीम में जमा थे। मैं भी मौजूद था। मुश्रिकों ने अल्लाह के रसूल सल्ल० का ज़िक्र छेड़ा और कहने लगे—

'इस व्यक्ति के मामले में हमने जैसा सब्र किया है, उसकी मिसाल नहीं। सच तो यह है कि हमने इसके मामले में बहुत ही बड़ी बात पर सब्र किया है।'

यह बातचीत चल ही रही थी कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सामने आ गए। आपने आते ही पहले हजरे अस्वद को चूमा, फिर तवाफ़ करते हुए मुश्रिकों के पास से गुज़रे। उन्होंने कुछ कहकर लान-तान किया, जिसका प्रभाव मैंने आपके चेहरे पर देखा। इसके बाद आप तीसरी बार गुज़रे, तो मुश्रिकों ने फिर आप पर लान-तान की। अब की बार आप ठहर गए और फ़रमाया—

'क़ुरैश के लोगो! सुन रहे हो? उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं तुम्हारे पास ज़िब्ह लेकर आया हूं।'

आपके इस इर्शाद ने लोगों को पकड़ लिया। (वे ऐसा चुप हुए कि) मानो हर व्यक्ति के सर पर चिड़िया है, यहां तक कि जो आप पर सबसे ज़्यादा सख़्त था, वह भी बेहतर से बेहतर शब्द जो पा सकता था, उसके द्वारा आपसे रहमत तलब करने लगा, कहता—

'अबुल क़ासिम! वापस जाइए। ख़ुदा की क़सम! आप कभी नादान न थे।'

दूसरे दिन क़ुरैश फिर इसी तरह जमा होकर आपका ज़िक्र कर रहे थे कि आप सामने आ गए। देखते ही सब इकट्ठा होकर एक आदमी की तरह आप पर पिल पड़े और आपको घेर लिया। फिर मैंने एक आदमी को देखा कि उसने गले के पास से आपकी चादर पकड़ ली। (और बल देने लगा) अबूबक्र रज़ि० आपके बचाव में लग गए। वह रोते जाते थे और कहते जाते थे—

'क्या तुम लोग एक व्यक्ति को इसलिए क़त्ल कर रहे हो कि वह कहता है, मेरा रब अल्लाह है?'

इसके बाद वे लोग आपको छोड़कर पलट गये।

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० कहते हैं कि यह सबसे बड़ी पीड़ा पहुंचाने वाली बात थी, जो मैंने क़ुरैश को कभी करते हुए देखी।[1] (संक्षिप्त करके लिखा गया)

---

1. इब्ने हिशाम 1/289-290

सहीह बुख़ारी में हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० से उनका बयान रिवायत किया गया है कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० से सवाल किया कि मुश्रिकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जो सबसे बुरी बद-सुलूकी की थी, आप मुझे उसे विस्तार में बताइए।

उन्होंने कहा कि नबी सल्ल० ख़ाना काबा के क़रीब हतीम में नमाज़ पढ़ रहे थे कि उक़्बा बिन अबी मुऐत आ गया। उसने आते ही अपना कपड़ा आपकी गरदन में डाल कर बड़ी सख़्ती के साथ आपका गला घोंटा। इतने में अबूबक्र आ पहुंचे और उन्होंने उसके दोनों कंधे पकड़ कर धक्का दिया और उसे नबी सल्ल० से दूर करते हुए फ़रमाया, 'क्या तुम लोग एक आदमी को इसलिए क़त्ल कर रहे हो कि वह कहता है, मेरा रब अल्लाह है।'[1]

हज़रत अस्मा रज़ि० की रिवायत में कुछ और विस्तार है कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास यह चीख पहुंची कि अपने साथी को बचाओ। वह झट हमारे पास से निकले। उनके सर पर चार चोटियां थीं। वह यह कहते हुए गए कि 'क्या तुम लोग एक व्यक्ति को केवल इसलिए क़त्ल कर रहे हो कि वह कहता है मेरा रब अल्लाह है।' मुश्रिक नबी सल्ल० को छोड़कर अबूबक्र रज़ि० पर पिल पड़े। वह वापस आए तो हालत यह थी कि हम उनकी चोटियों का जो बाल भी छूते थे, वह हमारी (चुटकी) के साथ आता था।[2]

हज़रत हमज़ा रज़ि० का इस्लाम ले आना

मक्का का वातावरण अत्याचार और दमन के इन काले बादलों से गम्भीर हो गया था कि अचानक एक बिजली चमकी और सताए जा रहे लोगों का रास्ता चमक उठा, यानी हज़रत हमज़ा रज़ि० मुसलमान हो गए।

उनके इस्लाम लाने की घटना सन् 06 नबवी के अन्त की है और सही अनुमान यही है कि वह ज़िलहिज्जा के महीने में मुसलमान हुए थे।

उनके इस्लाम लाने की वजह यह है कि एक दिन अबू जहल सफ़ा पहाड़ी के नज़दीक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से गुज़रा तो आपको पीड़ा पहुंचाई और बुरा-भला कहा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुप रहे और कुछ भी न कहा, लेकिन इसके बाद उसने आपके

---

1. सहीह बुख़ारी बाब ज़िक्र मा लक़ि यन्नबीयु सल्ल० मिनल मुश्रिकीन बि म-क्क-त 1/544
2. मुख़्तसरुस्सीरः शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 113

सर पर एक पत्थर दे मारा, जिससे ऐसी चोट आई कि ख़ून बह निकला। फिर वह ख़ाना काबा के पास क़ुरैश की सभा में जा बैठा।

अब्दुल्लाह बिन जुदआन की एक लौंडी सफ़ा पहाड़ी पर स्थित अपने मकान से यह पूरा दृश्य देख रही थी। हज़रत हमज़ा कमान लटकाए शिकार से वापस आए तो उसने उनसे अबू जहल की सारी हरकत कह सुनाई। हज़रत हमज़ा गुस्से से भड़क उठे।

यह क़ुरैश के सबसे ताक़तवर और मज़बूत जवान थे। क़िस्सा सुनकर एक क्षण के लिए भी नहीं रुके। दौड़ते हुए और यह तहैया करते हुए आए कि ज्यों ही अबू जहल का सामना होगा, उसकी मरम्मत कर देंगे, चुनांचे मस्जिदे हराम में दाख़िल होकर सीधे उसके सर पर जा खड़े हुए और बोले—

'ओ अपने चूतड़ से पाद निकालने वाले! तू मेरे भतीजे को गाली देता है, हालांकि मैं भी उसी के दीन पर हूं।'

इसके बाद कमान से इस ज़ोर की मारी कि उसके सर पर बड़ा घाव हो गया। इस पर अबू जहल के क़बीले बनू मख़्ज़ूम और हज़रत हमज़ा रज़ि० के क़बीले बनू हाशिम के लोग एक दूसरे के ख़िलाफ़ भड़क उठे, लेकिन अबू जहल ने यह कहकर उन्हें चुप करा दिया कि अबू अम्मारा को जाने दो। मैंने वाक़ई उसके भतीजे को बहुत बुरी गाली दी थी।[1]

शुरू में हज़रत हमजा का इस्लाम मात्र इस भावना के साथ था कि उनके रिश्तेदार की तौहीन क्यों की गई, लेकिन फिर अल्लाह ने उनका सीना खोल दिया और उन्होंने इस्लाम का दामन मज़बूती से थाम लिया[2] और मुसलमानों ने उनकी वजह से बड़ी शक्ति महसूस की।

हज़रत उमर रज़ि० का इस्लाम लाना

अत्याचार और दमन के इन काले बादलों में एक और बिजली चमकी, जिसकी चमक पहले से ज़ोरदार थी। यानी हज़रत उमर रज़ि० मुसलमान हो गए।

उनके इस्लाम लाने की घटना सन् 06 नबवी की है।[3] वह हज़रत हमज़ा

---

1. इब्ने हिशाम 1/291-292
2. इसका अन्दाज़ा मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह में उल्लिखित एक रिवायत से होता है, देखिए पृ० 101
3. तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब : इब्ने जौज़ी, पृ० 11

रज़ि० के सिर्फ़ तीन दिन बाद मुसलमान हुए थे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके ईमान लाने की दुआ की थी।

चुनांचे इमाम तिर्मिज़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत की है और इसे सहीह भी क़रार दिया है। इसी तरह तबरानी ने हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० और हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत की है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह ! उमर बिन ख़त्ताब और अबू जहल बिन हिशाम में से जो व्यक्ति तेरे नज़दीक अधिक प्रिय है, उसके ज़रिए से इस्लाम को ताक़त पहुंचा।'

(अल्लाह ने यह दुआ क़ुबूल फ़रमाई और हज़रत उमर रज़ि० मुसलमान हो गए) अल्लाह के नज़दीक इन दोनों में अधिक प्रिय हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु थे।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने की तमाम रिवायतों पर नज़र डालने से यह बात उभर कर सामने आती है कि उनके दिल में इस्लाम धीरे-धीरे उतरा। उचित मालूम होता है कि इन रिवायतों का सार प्रस्तुत करने से पहले हज़रत उमर रज़ि० के स्वभाव, विचारों और भावनाओं की ओर भी संक्षेप में संकेत कर दिया जाए।

हज़रत उमर रज़ि० अपनी तेज़ी और सख़्ती के लिए मशहूर थे। मुसलमानों ने लंबे समय तक उनके हाथों तरह-तरह की सख़्तियां झेली थीं। ऐसा लगता है कि उनके भीतर उनकी अपनी एक दूसरे से टकराने वाली भावनाएं आपस में जूझ रही थीं। चुनांचे वह एक ओर तो बाप-दादा की गढ़ी हुई रस्मों का बड़ा आदर करते थे, शराब पीते थे और खेल-तमाशे के शौक़ीन थे, लेकिन दूसरी ओर वह ईमान व अक़ीदे की राह में मुसलमानों की दृढ़ता और विपदाओं को झेलने की उनकी सहन-शक्ति की भी सराहना करते थे। फिर उनके भीतर सोचने-समझने वालों की तरह प्रश्नों का एक तांता था जो रह-रहकर उभरा करता था कि इस्लाम जिस बात की दावत दे रहा है, शायद वही अधिक श्रेष्ठ और पवित्र है। इसीलिए उनकी मनोदशा (दम में माशा और दम में तोला की-सी) थी कि अभी भड़के और अभी ढीले पड़ गए।

हज़रत उमर रज़ि० के इस्लाम लाने के बारे में मिलने वाली तमाम रिवायतों का सार यह है कि—

एक दिन उन्हें घर से बाहर रात बितानी-पड़ी। वह हरम तशरीफ़ लाए और

---

1. तिर्मिज़ी, अबवाबुल मनाक़िब, मनाक़िब अबी हफ़्स उमर बिन ख़त्ताब 2/209.

ख़ाना काबा के परदे में घुस गए। उस वक़्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ रहे थे और सूरः अल-हाक़्क़ा की तिलावत फ़रमा रहे थे। हज़रत उमर क़ुरआन सुनने लगे और उसे सुनकर चकित रह गए।

उनका बयान है कि मैंने अपने जी में कहा, ख़ुदा की क़सम! यह तो कवि है, जैसा कि क़ुरैश कहते हैं। लेकिन इतने में आपने यह आयत तिलावत फ़रमाई—

'यह एक बुज़ुर्ग रसूल का क़ौल है, यह किसी कवि की कविता नहीं है, तुम लोग कम ही ईमान लाते हो।'

हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं, मैंने अपने जी में कहा, ओहो यह तो काहिन है, लेकिन आपने इतने में यह आयत तिलावत फ़रमाई—

'यह किसी काहिन का क़ौल भी नहीं, तुम लोग कम ही नसीहत क़ुबूल करते हो। यह अल्लाह रब्बुल आलमीन की ओर से उतारा गया है।' (आख़िर सूरः तक)

हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि उस वक़्त मेरे दिल में इस्लाम घुस गया।[1]

यह पहला मौक़ा था कि हज़रत उमर रज़ि० के दिल में इस्लाम का बीज पड़ा, लेकिन अभी उनके भीतर अज्ञानतापूर्ण विचार, पक्षपात और पुरखों के धर्म की महानता इतरी गहरी बैठी हुई थी कि वह आगे नहीं बढ़ने देती थी और उनका इस्लाम-विरोध चल रहा था।

उनके स्वभाव की सख़्ती और नबी सल्ल० के प्रति वैर-भाव का यह हाल था कि एक दिन ख़ुद नबी सल्ल० का काम तमाम करने की नीयत से तलवार लेकर निकल पड़े, लेकिन अभी रास्ते ही में थे कि नुऐम बिन अब्दुल्लाह अन-नहाम अदवी[2] से या बनी ज़ोहरा[3] या बनी मख़्ज़ूम[4] के किसी आदमी से मुलाक़ात हो

---

1. तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब : इब्ने जौज़ी पृ० 6, इब्ने इस्हाक़ ने अता और मुजाहिद से भी लगभग यही बात नक़ल की है। अलबत्ता इसका आख़िरी टुकड़ा उससे भिन्न है। देखिए सीरत इब्ने हिशाम 1/346, 348 और ख़ुद इब्ने जौज़ी ने भी हज़रत जाबिर रज़ि० से इसी के क़रीब-क़रीब रिवायत नक़ल की है, लेकिन इसका आख़िरी हिस्सा भी इससे भिन्न है। देखिए तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब, पृ० 9-10
2. यह इब्ने इस्हाक़ की रिवायत है। देखिए इब्ने हिशाम 1/344
3. यह हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत की गई है। देखिए तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब : इब्ने जौज़ी, पृ० 10
4. यह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की गई है, देखिए मुख़्तसरुस्सीरः वही, पृ० 102

गई। उसने तैवर देखकर पूछा—

'उमर! कहां का इरादा है?'

उन्होंने कहा, 'मुहम्मद को क़त्ल करने जा रहा हूं।'

उसने कहा, 'मुहम्मद को क़त्ल करके बनू हाशिम और बनू ज़ोहरा से कैसे बच सकोगे?'

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, 'मालूम होता है तुम भी अपना पिछला धर्म छोड़कर विधर्मी हो चुके हो?'

उसने कहा, उमर! एक विचित्र बात न बता दूं? तुम्हारी बहन और बहनोई भी तुम्हारा धर्म छोड़कर विधर्मी हो चुके हैं।

यह सुनकर उमर ग़ुस्से से बे-क़ाबू हो गए और सीधे बहन-बहनोई का रुख़ किया। वहां उन्हें हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त सूरः ताहा पर सम्मिलित एक किताब पढ़ा रहे थे और क़ुरआन पढ़ाने के लिए वहां आना-जाना हज़रत ख़ब्बाब का रोज़ाना का काम था।

जब हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० की आहट सुनी, तो घर के अन्दर छिप गए। उधर हज़रत उमर की बहन फ़ातिमा ने किताब छिपा दी, लेकिन हज़रत उमर घर के क़रीब पहुंच कर हज़रत ख़ब्बाब की क़िरात सुन चुके थे, चुनांचे पूछा कि यह कैसी धीमी-धीमी सी आवाज़ थी, जो तुम लोगों के पास मैंने सुनी थी?

उन्होंने कहा, कुछ भी नहीं, बस हम आपस में बातें कर रहे थे।

हज़रत उमर ने कहा, शायद तुम दोनों विधर्मी हो चुके हो?

बहनोई ने कहा, अच्छा उमर! यह बताओ, अगर हक़ तुम्हारे धर्म के बजाए किसी और धर्म में हो तो?

हज़रत उमर का इतना सुनना था कि अपने बहनोई पर चढ़ दौड़े और उन्हें बुरी तरह कुचल दिया।

उनकी बहन ने लपक कर उन्हें अपने शौहर से अलग किया तो बहन को ऐसा चांटा मारा कि चेहरा ख़ून से भर गया।

इब्ने इस्हाक़ की रिवायत है कि उनके सर में चोट आई।

बहन ने गुस्से में चीख़ कर कहा, उमर! अगर तेरे दीन के बजाए दूसरा ही दीन हक़ पर हो तो? मैं गवाही देती हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मैं गवाही देती हूं कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

यह सुनकर हज़रत उमर के चेहरे पर निराशा छा गई और उन्हें अपनी बहन के चेहरे पर ख़ून देखकर लज्जा भी आने लगी, कहने लगे—

'अच्छा, यह किताब जो तुम्हारे पास है, तनिक मुझे भी पढ़ने को दो।'

बहन ने कहा, तुम नापाक हो। इस किताब को सिर्फ़ पाक लोग ही छू सकते हैं। उठो, नहा लो।

हज़रत उमर ने उठ कर स्नान किया, फिर किताब ली और बिस्मिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम० पढ़ी और कहने लगे—

'ये तो बड़े पवित्र नाम हैं।'

इसके बाद ताहा से 'इन्ननी अनल्लाहु ला इला-ह इल्ला अना फ़अबुदनी व अक़िमिस्सला-त लिज़िक्री० तक पढ़ा। कहने लगे—

'यह तो बड़ा अच्छा और बड़ा सम्माननीय कलाम है। मुझे मुहम्मद का पता बताओ।'

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० ये वाक्य सुनकर बाहर आ गए। कहने लगे—

'उमर! ख़ुश हो जाओ। मुझे उम्मीद है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वीरवार को तुम्हारे बारे में जो दुआ की थी (कि ऐ अल्लाह! उमर बिन ख़त्ताब या अबू जहल बिन हिशाम के ज़रिए इस्लाम को शक्ति पहुंचा) यह वही है और उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्ल० सफ़ा पहाड़ी के पास वाले मकान में तशरीफ़ रखते हैं।'

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ने अपनी तलवार खींच ली और उस घर के पास आकर दरवाज़े पर दस्तक दी। एक आदमी ने उठकर दरवाज़े की दराड़ से झांका तो देखा कि उमर तलवार नंगी किए मौजूद हैं। लपक कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़बर दी और सारे लोग सिमट कर इकट्ठा हो गए।

हज़रत हमज़ा रज़ि० ने पूछा, क्या बात है?

लोगों ने कहा, उमर हैं।

हज़रत हमज़ा रज़ि० ने कहा, बस, उमर हैं, दरवाज़ा खोल दो। अगर वह भली नीयत से आया है, तो उसे हम भलाई देंगे और अगर कोई बुरा इरादा लेकर आया है, तो हम उसी की तलवार से उसका काम तमाम कर देंगे।

उधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अन्दर तशरीफ़ रखते थे, आप पर वह्य नाज़िल हो रही थी। वह्य नाज़िल हो चुकी तो हज़रत उमर के पास तशरीफ़ लाए। बैठक में उनसे मुलाक़ात हुई। आपने उनके कपड़े और तलवार का

परतला समेट कर पकड़ा और सख़्ती से झटकते हुए फ़रमाया, उमर ! क्या तुम उस वक़्त तक बाज़ नहीं आओगे, जब तक कि अल्लाह तुम पर वैसी ही ज़िल्लत और रुसवाई और शिक्षाप्रद सज़ा न उतार दे, जैसी वलीद बिन मुग़ीरह रज़ि० पर नाज़िल हो चुकी है। ऐ अल्लाह ! यह उमर बिन ख़त्ताब है। ऐ अल्लाह ! इस्लाम को उमर बिन ख़त्तब के ज़रिए ताक़त और इज़्ज़त अता फ़रमा।

आपके इस इर्शाद के बाद हज़रत उमर रज़ि० ने इस्लाम स्वीकार करते हुए कहा—

'मैं गवाही देता हूं कि यक़ीनन अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और यक़ीनी तौर पर आप अल्लाह के रसूल हैं।'

यह सुनकर घर के भीतर मौजूद सहाबा रज़ि० ने इस ज़ोर से तक्बीर कही कि मस्जिदे हराम वालों को सुनाई पड़ी।[1]

मालूम है कि हज़रत उमर रज़ि० की ताक़त और दबदबे का हाल यह था कि कोई उनसे मुक़ाबले की हिम्मत न करता था, इसलिए उनके मुसलमान हो जाने से मुश्रिकों में कुहराम मच गया और उन्हें बड़ी ज़िल्लत व रुसवाई महसूस हुई।

दूसरी ओर इनके इस्लाम लाने से मुसलमानों को बड़ी इज़्ज़त, ताक़त, पद-प्रतिष्ठा, और हर्ष-प्रसन्नता हुई। चुनांचे इब्ने इस्हाक़ ने अपनी सनद से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान नक़ल किया है कि जब मैं मुसलमान हुआ तो मैंने सोचा कि मक्के का कौन आदमी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सबसे बड़ा और सबसे सख़्त दुश्मन है? फिर मैंने जी ही जी में कहा, यह अबू जहल है। इसके बाद मैंने उसके घर जाकर उसका दरवाज़ा खटखटाया। वह बाहर आया, देखकर बोला—

'स्वागत है, स्वागत है, कैसे आना हुआ?'

मैंने कहा, 'तुम्हें यह बताने आया हूं कि मैं अल्लाह और उसके रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान ला चुका हूं और जो कुछ वह लाए हैं, उसकी तस्दीक़ कर चुका हूं।'

हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि (यह सुनते ही) उसने मेरे सामने से रवाज़ा बन्द कर लिया और बोला—

'अल्लाह तेरा बुरा करे और जो कुछ तू लेकर आया है, उसका भी बुरा करे।'[2]

---

1. तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब, पृ० 7-10, 11, सीरत बिन हिशाम 1/343-346
2. इब्ने हिशाम 1/349-350

इमाम इब्ने जौज़ी ने हज़रत उमर रज़ि० से यह रिवायत नक़ल की है कि जब कोई व्यक्ति मुसलमान हो जाता तो लोग उसके पीछे पड़ जाते, उसे मारते-पीटते और वह भी उन्हें मारता, इसलिए जब मैं मुसलमान हुआ तो अपने मामूं आसी बिन हाशिम के पास गया और उसे ख़बर दी। वह घर के अन्दर घुस गया, फिर क़ुरैश के एक बड़े आदमी के पास गया, (शायद अबू जहल की ओर इशारा है) और उसे ख़बर दी, वह भी घर के अन्दर घुस गया।[1]

इब्ने हिशाम और इब्ने जौज़ी का बयान है कि जब हज़रत उमर रज़ि० मुसलमान हुए तो जमील बिन मोमर जुमही के पास गए। यह व्यक्ति किसी बात का ढोल पीटने में पूरे क़ुरैश में सबसे ज़्यादा मशहूर था। हज़रत उमर रज़ि० ने उसे बताया कि वह मुसलमान हो गए हैं।

उसने सुनते ही बड़ी ऊंची आवाज़ में चिल्ला कर कहा कि ख़त्ताब का बेटा बेदीन (विधर्मी) हो गया है।

हज़रत उमर रज़ि० उसके पीछे ही थे, बोले—

'यह झूठ कहता है। मैं मुसलमान हो गया हूं।'

बहरहाल लोग हज़रत उमर रज़ि० पर टूट पड़े और मार-पीट शुरू हो गई। लोग हज़रत उमर रज़ि० को मार रहे थे और हज़रत उमर रज़ि० लोगों को मार रहे थे, यहां तक कि सूरज सर पर आ गया और हज़रत उमर थक कर बैठ गये। लोग सर पर सवार थे। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा—

'जो बन पड़े, कर लो। ख़ुदा की क़सम! अगर हम लोग तीन सौ की तायदाद में होते तो फिर मक्के में या तो तुम ही रहते या हम ही रहते।'[2]

इसके बाद मुश्रिकों ने इस इरादे से हज़रत उमर रज़ि० के घर पर हल्ला बोल दिया कि उन्हें जान से मार डालें। चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ि० ख़ौफ़ की हालत में घर के भीतर थे कि इस बीच अबू अम्र आस बिन वाइल सह्मी आ गया। वह धारीदार यमनी चादर का जोड़ा और रेशमी गोटे से सजा हुआ कुरता पहने हुए था। उसका ताल्लुक़ क़बीला सह्म से था और यह क़बीला अज्ञानता-युग में हमारा मित्र था। उसने पूछा, क्या बात है?

---

1. तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब, पृ० 8
2. वही, पृ० 8, इब्ने हिशाम 1/348-349, इब्ने हिब्बान 9/16, अल मोजमुल अवसत, तबरानी 2/172 (हदीस न० 13)

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं मुसलमान हो गया हूं। इसलिए आपकी क़ौम मुझे क़त्ल करना चाहती है।

आस ने कहा, यह संभव नहीं।

आस की बात सुनकर मुझे सन्तोष हो गया।

इसके बाद आस वहां से निकला और लोगों से मिला। उस वक़्त स्थिति यह थी कि घाटी में भीड़ की भीड़ जमा हो रही थी। आस ने उनसे पूछा, 'क्या इरादा है? क्यों जमा हो रहे हैं? कहां जाना चाहते हैं?'

लोगों ने बताया, यही ख़त्ताब के बेटे (उमर) की खोज है। वह बे-दीन हो गया है न!

आस ने कहा, वहां जाने की कोई ज़रूरत नहीं।

यह सुनते ही लोग वापस अपने घरों को पलट गये।[1]

इब्ने इस्हाक़ की एक रिवायत में है कि अल्लाह की क़सम, ऐसा लगता था, मानो वे लोग एक कपड़ा थे, जिसे उसके ऊपर से झटक कर फेंक दिया गया।[2]

हज़रत उमर रज़ि० के इस्लाम लाने पर यह हालत तो मुश्रिकों की हुई थी, बाक़ी रहे मुसलमान तो उनके हालात का अन्दाज़ा इससे हो सकता है कि मुजाहिद ने इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत किया है कि मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से मालूम किया कि किस वजह से आपकी उपाधि 'फ़ारूक़' हुई?

तो उन्होंने कहा—

'मुझसे तीन दिन पहले हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु मुसलमान हुए।'

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने उनके इस्लाम लाने की घटना बता कर अन्त में कहा कि फिर जब मैं मुसलमान हुआ, तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या हम हक़ (सत्य) पर नहीं हैं, भले ही ज़िंदा रहें या मरें?

आपने फ़रमाया, क्यों नहीं। उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम लोग हक़ पर हो, चाहे ज़िंदा रहो, चाहे मौत के शिकार हो जाओ।

हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं कि तब मैंने कहा कि फिर छिपना कैसा? उस ज़ात की क़सम, जिसने हक़ के साथ आपको भेजा है, हम ज़रूर बाहर निकलेंगे।

चुनांचे हम दो लाइनों में आपको साथ लेकर बाहर आए। एक लाइन में हमज़ा थे और एक में मैं था। हमारे चलने से चक्की के आटे की तरह

---

1. सहीह बुख़ारी, इस्लाम, उमर बिन ख़त्ताब 1/545
2. इब्ने हिशाम 1/349

हल्की-हल्की धूल उड़ रही थी, यहां तक कि हम मस्जिदे हराम में दाख़िल हो गए।

हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि क़ुरैश ने मुझे और हमज़ा को देखा तो उनके दिलों पर ऐसी चोट लगी कि अब तक न लगी थी। उसी दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मेरी उपाधि 'फ़ारूक़' रख दिया।[1]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० का इर्शाद है कि हम ख़ाना काबा के पास नमाज़ पढ़ने की ताक़त न रखते थे, यहां तक कि हज़रत उमर रज़ि० ने इस्लाम अपना लिया।[2]

हज़रत सुहैब बिन सिनान रूमी रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि हज़रत उमर रज़ि० मुसलमान हुए तो इस्लाम परदे से बाहर आया, उसकी खुल्लम खुल्ला दावत दी गई। हम घेरा बना कर बैतुल्लाह के चारों ओर बैठे, बैतुल्लाह का तवाफ़ किया और जिसने हम पर सख़्ती की, उससे बदला लिया और उसके कुछ अत्याचारों का जवाब दिया।[3]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि जब से हज़रत उमर रज़ि० ने इस्लाम अपनाया, तब से हम बराबर ताक़तवर और इज़्ज़तदार रहे।[4]

क़ुरैश का नुमाइन्दा अल्लाह के रसूल सल्ल० के दरबार में

इन दोनों महान योद्धाओं यानी हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हुमा के मुसलमान हो जाने के बाद दमन के बादल छटने शुरू हुए और मुसलमानों पर अत्याचार के जो पहाड़ तोड़े जा रहे थे, उसकी जगह सूझ-बूझ ने लेनी शुरू की। चुनांचे मुश्रिकों ने यह कोशिश की कि इस दावत से नबी का जो मक़्सद और मंशा हो सकता है, उसे जुटाने की बात कह के आपको आपके प्रचार-प्रसार से रोकने की सौदेबाज़ी की जाए, लेकिन उन बेचारों को पता न था कि यह पूरी सृष्टि, जिसमें सूरज उगता है, आपकी दावत के मुक़ाबले में एक तिनके की हैसियत भी नहीं रखती। इसलिए उन्हें अपनी योजना में बुरी तरह विफल होना पड़ा।

इब्ने इस्हाक़ ने यजीद बिन ज़ियाद के वास्ते से मुहम्मद बिन काब क़ुरज़ी का

---

1. तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब : इब्नुल जौज़ी, पृ० 6-7
2. मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 103
3. तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब : इब्नुल जौज़ी, पृ० 13
4. सहीह बुख़ारी : बाब इस्लामु उमर बिन ख़त्ताब 1/545

यह बयान नक़ल किया है कि मुझे बताया गया कि उत्बा बिन रबीआ ने, जो क़ौम का सरदार था, एक दिन क़ुरैश की एक सभा में कहा और उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिदे हराम में एक जगह अकेले बैठे हुए थे कि—

'क़ुरैश के लोगो ! क्यों न मैं मुहम्मद के पास जाकर उनसे बात करूं और उनके सामने कुछ बातें रखूं, हो सकता है वह कोई चीज़ क़ुबूल कर लें, तो जो कुछ वह क़ुबूल करेंगे, उसे देकर हम उन्हें अपने विरोध से रोके रखेंगे।'

(यह उस वक़्त की बात है, जब हज़रत हमज़ा मुसलमान हो चुके थे और मुश्रिकों ने यह देख लिया था कि मुसलमानों की तायदाद बराबर बढ़ती ही जा रही है।)

मुश्रिकों ने कहा, अबुल वलीद ! आप जाइए और उनसे बात कीजिए।

इसके बाद उत्बा उठा और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाकर बैठ गया, फिर बोला—

'हमारी क़ौम में तुम्हारा जो पद और स्थान है और तुम्हारा जो श्रेष्ठ वंश है, वह तुम्हें मालूम ही है और अब तुम अपनी क़ौम में एक बड़ा मामला लेकर आए हो, जिसकी वजह से तुमने उनके समाज में फूट डाल दी, उनकी सोच को मूर्खता बता दी। उनके उपास्यों और उनके दीन (धर्म) में दोष निकाले और उनके जो बाप-दादा गुज़र चुके हैं, उन्हें 'काफ़िर' ठहरा दिया, इसलिए मेरी बात सुनो। मैं तुमसे कुछ बातें कह रहा हूं, उन पर सोचो, हो सकता है कि कोई बात मान लो।'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अबुल वलीद ! कहो, मैं सुनूंगा।

अबुल वलीद ने कहा, भतीजे ! यह मामला जिसे तुम लेकर आए हो, अगर तुम इससे यह चाहते हो कि माल हासिल करो, तो हम तुम्हारे लिए इतना माल जमा किए देते हैं कि तुम हम में सबसे ज़्यादा मालदार हो जाओ और अगर तुम यह चाहते हो कि पद-प्रतिष्ठा मिले, तो हम तुम्हें अपना सरदार बनाए लेते हैं, यहां तक कि तुम्हारे बिना किसी मामले का फ़ैसला न करेंगे, और अगर तुम चाहते हो कि बादशाह बन जाओ, तो हम तुम्हें अपना बादशाह बनाए लेते हैं और अगर यह जो तुम्हारे पास आता है, कोई जिन्न-भूत है, जिसे तुम देखते हो, लेकिन अपने आप से उसे दूर नहीं कर सकते, तो हम तुम्हारे लिए इसका इलाज खोजे देते हैं और इस सिलसिले में हम अपना इतना माल ख़र्च करने को तैयार हैं कि तुम स्वास्थ्य प्राप्त कर सको, क्योंकि कभी-कभी ऐसा होता है कि जिन्न-भूत इंसान पर ग़ालिब आ जाता है और उसका इलाज करना पड़ता है।'

उत्बा ये बातें करता रहा और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुनते रहे। जब वह कह चुका, तो आपने फ़रमाया—

'अबुल वलीद ! तुम कह चुके ?'

उसने कहा, 'हां'

आपने फ़रमाया, 'अच्छा, अब मेरी सुनो।'

उसने कहा, 'ठीक है, सुनूंगा।'

आपने फ़रमाया—

'हामीम, यह रहमान व रहीम की ओर से उतारी हुई ऐसी किताब है, जिसकी आयतें खोल-खोल कर बयान कर दी गई हैं—अरबी क़ुरआन उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं, ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला है, लेकिन ज़्यादातर लोगों ने मुख मोड़ा और वे सुनते नहीं। कहते हैं कि जिस चीज़ की ओर तुम हमें बुलाते हो, उसके लिए हमारे दिलों पर परदा पड़ा हुआ है।. . .'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे पढ़ते जा रहे थे। और उत्बा अपने दोनों हाथ पीछे ज़मीन पर टेके चुपचाप सुनता जा रहा था। जब आप सज्दे की आयत पर पहुंचे तो आपने सज्दा किया, फिर फ़रमाया—

'अबुल वलीद ! तुम्हें जो कुछ सुनना था, सुन चुके, अब तुम जानो और तुम्हारा काम जाने।'

उत्बा उठा और सीधा अपने साथियों के पास आया।

उसे आता देखकर मुश्रिकों ने आपस में एक दूसरे से कहा, ख़ुदा की क़सम ! अबुल वलीद तुम्हारे पास वह चेहरा लेकर नहीं आ रहा है जो चेहरा लेकर गया था।

फिर जब अबुल वलीद आकर बैठ गया, तो लोगों ने पूछा, अबुल वलीद ! पीछे की क्या ख़बर है ?

उसने कहा, 'पीछे की ख़बर यह है कि मैंने एक ऐसा कलाम सुना है कि वैसा कलाम, ख़ुदा की क़सम ! मैंने कभी नहीं सुना। ख़ुदा की क़सम ! वह न कविता है, न जादू, न कहानत। क़ुरैश के लोगो ! मेरी बात मानो और इस मामले को मुझ पर छोड़ दो। (मेरी राय यह है कि) उस व्यक्ति को उसके हाल पर छोड़ दो कि अलग-थलग बैठे रहो। ख़ुदा की क़सम ! मैंने उसका जो कथन सुना है, उससे कोई बड़ी घटना घटित होकर रहेगी। फिर अगर उस व्यक्ति को अरब ने मार डाला, तो तुम्हारा काम दूसरों के ज़रिए अंजाम पा चुका होगा और अगर यह व्यक्ति अरब पर छा गया तो उसकी बादशाही तुम्हारी बादशाही और उसकी

इज़्ज़त तुम्हारी इज़्ज़त होगी और उसका वजूद सबसे बढ़कर तुम्हारे लिए बेहतरी की वजह होगा।'

लोगों ने कहा, अबुल वलीद ! ख़ुदा की क़सम, तुम पर भी उसकी ज़ुबान का जादू चल गया।

उत्बा ने कहा, उस व्यक्ति के बारे में मेरी राय यही है, अब तुम्हें जो ठीक मालूम हो, करो।[1]

एक दूसरी रिवायत में यह उल्लेख है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब तिलावत शुरू की तो उत्बा चुपचाप सुनता रहा। जब आप अल्लाह के इस कथन पर पहुंचे—

'पस अगर वे मुंह फेरें तो तुम कह दो कि मैं तुम्हें आद व समूद की कड़क जैसी एक कड़क के ख़तरे से सचेत कर रहा हूं।'

तो उत्बा थर्रा कर खड़ा हो गया और यह कहते हुए अपना हाथ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुंह पर रख दिया कि मैं आपको अल्लाह का और नातेदारी का वास्ता देता हूं (कि ऐसा न करें)। उसे ख़तरा था कि कहीं यह डरावा आन न पड़े। इसके बाद वह क़ौम के पास गया और ऊपर लिखी बातें हुईं।[2]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क़ुरैश के सरदारों की बात-चीत

उत्बा की उपरोक्त पेशकश का जिस ढंग से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उत्तर दिया था, उससे क़ुरैश की आशाएं पूरे तौर पर ख़त्म नहीं हुई थीं, क्योंकि आपके उत्तर में उनकी पेशकश को ठुकराने या क़ुबूल करने की बात स्पष्ट न थी, बस आपने कुछ आयतों की तिलावत कर दी थी, जिन्हें उत्बा पूरे तौर पर न समझ सका था और जहां से आया था, वहीं वापस चला गया था, इसलिए क़ुरैश ने आपस में फिर मश्विरा किया। मामले के तमाम पहलुओं पर नज़र दौड़ाई और तमाम संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया। इसके बाद एक दिन सूरज डूबने के बाद काबे के पास जमा हुए और अल्लाह के रसूल सल्ल० को बुला भेजा। आप ख़ैर (भलाई) की उम्मीद लिए हुए जल्दी में तशरीफ़ लाए। जब उनके बीच में बैठ गए तो उन्होंने वैसी ही बातें कहीं जैसी

---

1. इब्ने हिशाम 1/293-294
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर 6/159, 160, 161

उत्बा से कही थीं और वही पेशकश की जो उत्बा ने की थी, शायद उनका विचार रहा हो कि बहुत संभव है कि उत्बा के पेशकश करने से आपको पूरा सन्तोष न हुआ हो, इसलिए जब सारे सरदार मिलकर इस पेशकश को दोहराएंगे तो आपको सन्तोष हो जाएगा और आप उसे क़ुबूल कर लेंगे, मगर आप सल्ल० ने फ़रमाया—

'मेरे साथ यह बात नहीं जो आप लोग कह रहे हैं। मैं आप लोगों के पास जो कुछ लेकर आया हूं, वह इसलिए नहीं लेकर आया हूं कि मुझे आपका माल चाहिए या आपके अन्दर शरफ़ चाहिए या आप पर शासन करना चाहता हूं नहीं, बल्कि मुझे अल्लाह ने आपके पास पैग़म्बर बनाकर भेजा है, मुझ पर अपनी किताब उतारी है और मुझे हुक्म दिया है कि मैं आपको ख़ुशख़बरी दूं और डराऊं, इसलिए मैंने आप लोगों तक अपने रब का पैग़ाम पहुंचा दिया, आप लोगों को नसीहत कर दी। अब अगर आप लोग मेरी लाई हुई बात क़ुबूल करते हैं, तो यह दुनिया और आख़िरत में आप लोगों का नसीब और अगर रद्द करते हैं तो मैं अल्लाह के फ़ैसले का इन्तिज़ार करूंगा, यहां तक कि वह मेरे और आपके बीच फ़ैसला फ़रमा दे।'

इस जवाब के बाद उन्होंने एक दूसरा पहलू बदला, कहने लगे, आप अपने रब से सवाल करेंगे कि वह हमारे पास से उन पहाड़ों को हटा कर खुला हुआ मैदान बना दे और उसमें नदियां बहा दे और हमारे मुर्दों, मुख्य रूप से क़ुसई बिन किलाब को ज़िंदा कर लाए। अगर वह आपको सच्चा कर दिखाएं तो हम भी ईमान लाएंगे। आपने उनकी इस बात का भी वही जवाब दिया।

इसके बाद उन्होंने एक तीसरा पहलू बदला। कहने लगे, आप अपने रब से सवाल करें कि वह एक फ़रिश्ता भेंज दे, जो आपकी पुष्टि करे और जिससे हम आपके बारे में रुजू भी कर सकें और यह भी सवाल करें कि आपके लिए बाग़ हों, ख़ज़ाने हों और सोने-चांदी के महल हों। आपने इस बात का भी वही जवाब दिया।

इसके बाद उन्होंने एक चौथा पहलू बदला, कहने लगे कि अच्छा, तो आप हम पर अज़ाब ही ला दीजिए और आसमान का कोई टुकड़ा ही गिरा दीजिए, जैसा कि आप कहते और धमकियां देते रहते हैं।

आपने फ़रमाया, इसका अख़्तियार अल्लाह को है, वह चाहे तो ऐसा कर सकता है। उन्होंने कहा, क्या आपके रब को मालूम था कि हम आपके साथ बैठेंगे, आपसे सवाल व जवाब करेंगे और आपसे मांग करेंगे कि वह आपको सिखा देता कि आप हमें क्या जवाब देंगे और अगर हमने आपकी बात न मानी

तो वह हमारे साथ क्या करेगा?

फिर आख़िर में उन्होंने सख़्त धमकी दी। कहने लगे, सुन लो! जो कुछ कर चुके हो, उसके बाद हम तुम्हें यों ही नहीं छोड़ देंगे, बल्कि या तो तुम्हें मिटा देंगे या ख़ुद मिट जाएंगे। यह सुनकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उठ गए और अपने घर वापस आ गए। आपको ग़म व अफ़सोस था कि जो आशाएं आपने लगा रखी थी, वह पूरी न हुई।[1]

अबू जहल, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल की स्कीम बनाता है

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन लोगों के पास से उठकर वापस तशरीफ़ ले गए तो अबू जह्ल ने उन्हें सम्बोधित करके पूरे दंभ व अभिमान के साथ कहा—

क़ुरैशी भाइयो! आप देख रहे हैं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हमारे दीन में दोष निकालने, हमारे पुरखों को बुरा-भला कहने, हमारी बुद्धिमत्ता को हलका करने और हमारे माबूदों (उपास्यों) को अपमानित करने से बाज़ नहीं आता, इसलिए मैं अल्लाह से प्रतिज्ञा करता हूं कि एक बहुत भारी और मुश्किल से उठने वाला पत्थर लेकर बैठूंगा और जब वह सज्दा कर लेगा, तो उस पत्थर से उसका सर कुचल दूंगा। अब इसके बाद चाहे आप लोग मुहम्मद को निःसहाय छोड़ दें, चाहे मेरी रक्षा करें और बनू अब्दे मुनाफ़ भी इसके बाद जो चाहे करें।

लोगों ने कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम! हम तुम्हें कभी किसी मामले में बे-यार व मददगार नहीं छोड़ सकते। तुम जो कुछ करना चाहो, कर गुज़रो। चुनांचे सुबह हुई तो अबू जह्ल वैसा ही एक पत्थर लेकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इंतिज़ार में बैठ गया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नित्य प्रति की तरह तशरीफ़ लाए और खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे, क़ुरैश भी अपनी-अपनी मज्लिसों में आ चुके थे और अबू जह्ल की कार्रवाई देखने के इन्तिज़ार में थे। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दे में तशरीफ़ ले गए तो अबू जह्ल ने पत्थर उठाया, फिर आपकी तरफ़ बढ़ा, लेकिन जब क़रीब पहुंचा पराजय का मुंह देखने वाले की

---

1. रिवायत इब्ने इस्हाक़ का सार (इब्ने हिशाम 1/295-298) व इब्ने जरीर व इब्नुल मुन्ज़िर व इब्ने अबी हातिम (अद्दुर्रुल मंसूर 4/365, 366)

तरह वापस भागा। उसका रंग उतरा हुआ था, वह इतना आतंकित था कि उसके दोनों हाथ पत्थर पर चिपक कर रह गए थे। वह बड़ी मुश्किल से हाथ से पत्थर फेंक सका। इधर क़ुरैश के लोग उठकर उसके पास आए और कहने लगे, अबुल हकम ! तुम्हें क्या हो गया है ? उसने कहा, मैंने रात जो बात कही थी, वही करने जा रहा था, लेकिन जब उसके क़रीब पहुंचा तो एक ऊंट आड़े आ गया। अल्लाह की क़सम ! मैंने कभी किसी ऊंट की वैसी खोपड़ी, वैसी गरदन और वैसे दांत देखे ही नहीं। वह मुझे खा जाना चाहता था।

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं, मुझे बताया गया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यह जिब्रील अलैहिस्सलाम थे। अगर अबू जह्ल क़रीब आता तो उसे धड़ पकड़ते।[1]

सौदेबाज़ियां और चालें

जब क़ुरैश धन-धौंस-धमकी से मिली-जुली अपनी बातों में असफल हो गए और अबू जह्ल को चाल, बदमाशी और क़त्ल के इरादे में मुंह की ख़ानी पड़ी तो क़ुरैश में एक स्थाई हल तक पहुंचने का चाव पैदा हुआ, ताकि जिस 'मुश्किल' में वे पड गए थे, उससे निकल सकें। इधर उन्हें यह विश्वास भी नहीं था कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सच में सत्य पर हैं, बल्कि जैसा कि अल्लाह ने बताया है वे लोग डगमगा देने वाले सन्देह में थे, इसलिए उन्होंने उचित समझा कि दीन के बारे में आपसे सौदेबाज़ी की जाए। इस्लाम और अज्ञानता दोनों बीच रास्ते में एक दूसरे से मिल जाएं और 'कुछ लो और कुछ दो' के नियम पर अपनी कुछ बातें मुश्रिक छोड़ दें और कुछ बातों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से छोड़ने के लिए की जाए। उनका विचार था कि अगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत सत्य पर है तो इस तरह वे भी इस सत्य को पा लेंगे।

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ाना काबा का तवाफ़ कर रहे थे कि अस्वद बिन मुत्तलिब बिन असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा, वलीद बिन मुग़ीरह, उमैया बिन ख़ल्फ़ और आस बिन वाइल सह्मी आपके सामने आए। ये सभी अपनी क़ौम के बड़े लोग थे, ऐ मुहम्मद ! आइए, जिसे आप पूजते हैं, हम भी पूजें और जिसे हम पूजते हैं उसे आप भी पूजें। इस तरह हम और आप इस काम में मुश्तरक (संयुक्त) हो जाएं। अब अगर आपका माबूद हमारे माबूद से बेहतर है तो हम उससे अपना हिस्सा

1. इब्ने हिशाम, 1/298, 299,

हासिल कर चुके होंगे और अगर हमारा माबूद आपके माबूद से बेहतर हुआ तो आप उससे अपना हिस्सा हासिल कर चुके होंगे। इस पर अल्लाह ने पूरी सूरः 'क़ुल या अय्युल काफ़िरून' नाज़िल फ़रमाई, जिसमें एलान किया गया है कि जिसे तुम लोग पूजते हो, उसे मैं नहीं पूज सकता।[1]

अब्द बिन हुमैद वग़ैरह ने इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि क़ुरैश ने कहा, अगर हमारे माबूदों को तबर्रुक के तौर पर छुएं तो हम आपके माबूद की इबादत करेंगे, इस पर पूरी सूरः 'क़ुल या ऐयुहल काफ़िरून' उतरी।[2]

इब्ने जरीर वग़ैरह ने इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि मुश्रिकों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा, आप एक साल हमारे माबूदों की पूजा करें और हम एक साल आपके माबूद की पूजा करें, इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

'आप कह दें कि ऐ नासमझो! क्या तुम मुझे ग़ैर-अल्लाह की इबादत के लिए कहते हो।'[3]

अल्लाह ने इस क़तई और निर्णायक उत्तर से उस हास्यास्पद वार्ता की जड़ काट दी, लेकिन फिर भी क़ुरैश पूरे तौर पर निराश नहीं हुए, बल्कि उन्होंने अपने दीन से और अधिक हाथ खींच लेने पर आमादगी बताई, अलबत्ता यह शर्त लगाई कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी जो शिक्षाएं लेकर आए हैं, उसमें कुछ तब्दील करें। चुनांचे उन्होंने कहा, 'इसके बजाए कोई और क़ुरआन लाओ या इसमें तब्दीली कर दो। अल्लाह ने इसका जो जवाब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बतलाया, उसके ज़रिए यह रास्ता भी काट दिया। चुनांचे फ़रमाया—

'आप कह दें, मुझे इसका अधिकार नहीं कि मैं इसमें ख़ुद अपनी तरफ़ से तब्दीली करूं। मैं तो सिर्फ़ उसी चीज़ की पैरवी करता हूं, जिसकी वह्य मेरी तरफ़ की जाती है। मैंने अगर अपने रब की नाफ़रमानी की तो मैं एक बुरे दिन के अज़ाब से डरता हूं।'

अल्लाह ने उस दिन की ज़बरदस्त ख़तरनाकी का ज़िक्र इस आयत में भी फ़रमाया—

'और क़रीब था कि जो वह्य हमने आपकी तरफ़ की है, उससे ये लोग

1. इब्ने हिशाम 1/362,
2. अद्-दुर्रुल मंसूर 6/692,
3. तफ़्सीर इब्ने जरीर तबरी 'क़ुल या ऐयुहल काफ़िरून'

आपको फ़ित्ने में डाल देते ताकि आप हम पर कोई और बात कह दें और तब यक़ीनन लोग आपको गहरा दोस्त बना लेते और अगर हमने आपको साबित क़दम न रखा होता तो आप भी उनकी तरफ़ थोड़ा-सा झुक जाते और तब हम आपको दोहरी सज़ा ज़िंदगी में और दोहरी सज़ा मरने के बाद चखाते। फिर आपको हमारे मुक़ाबले में कोई सहायता करने वाला न मिलता।'

मुश्रिकों को आश्चर्य, संजीदा ग़ौर व फ़िक्र और यहूदियों से सम्पर्क

उपरोक्त बात-चीत, प्रलोभन, सौदेबाज़ियों, पीछे हटने की चालों में असफलताओं के बाद मुश्रिकों के सामने रास्ते अंधेरे में डूब-से गए। वे परेशान थे कि अब क्या करें? चुनांचे उनके एक शैतान नज़्र बिन हारिस ने उन्हें उपदेश देते हुए कहा, कुरैश के लोगो! अल्लाह की क़सम! तुम पर ऐसी परेशानी आ पड़ी है कि तुम लोग अब तक उसका कोई तोड़ नहीं ला सके। मुहम्मद तुममें जवान थे तो तुम्हारे पसंदीदा आदमी थे। सबसे ज़्यादा सच्चे और सबसे बढ़कर अमानतदार थे। अब जबकि उनकी कनपटियों पर सफ़ेदी दिखाई पड़ने को है (यानी अधेड़ हो चले हैं) और वह तुम्हारे पास कुछ बातें लेकर आते हैं, तो तुम कहते हो कि वह जादूगर हैं। नहीं, अल्लाह की क़सम! वह जादूगर नहीं हैं, हमने जादूगर देखे हैं, उनकी झाड़-फूंक और गिरहबंदी भी देखी है और तुम लोग कहते हो, वह काहिन है, नहीं, अल्लाह की क़सम! वह काहिन भी नहीं, हमने काहिन भी देखे हैं, उनकी उलटी-सीधी हरकतें भी देखी हैं और उनकी चुस्त बातें भी सुनी हैं। तुम लोग कहते हो, वह शायर (कवि) हैं, नहीं, अल्लाह की क़सम! वह शायर भी नहीं। हमने शेर (पद) भी देखा है और शायर के हर प्रकार के काव्य भी सुने हैं। तुम लोग कहते हो, वह पागल है, नहीं, अल्लाह की क़सम! वह पागल भी नहीं, हमने पागलपन भी देखा है, उनके यहां न इस तरह की घुटन है, न वैसी बहकी-बहकी बातें और न उनके जैसी उलटी-सीधी हरकतें। कुरैश के लोगो! सोचो, अल्लाह की क़सम! तुम पर ज़बरदस्त परेशानी आ पड़ी है।

ऐसा मालूम होता है कि जब उन्होंने देखा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर चुनौती का डटकर सामना कर रहे हैं, आपने सारे प्रलोभनों पर लात मार दिया है और हर मामले में बिल्कुल खरे और ठोस साबित हुए हैं, जबकि सच्चाई, पाकदामनी और नैतिक मूल्य भी उनके जीवन में पूरी तरह पाये जाते हैं, तो उनका यह सन्देह ज़्यादा पक्का हो गया कि आप वाक़ई सच्चे रसूल हैं, इसलिए उन्होंने फ़ैसला किया कि यहूदियों से सम्पर्क बनाकर आपके बारे में ज़रा अच्छी तरह इत्मीनान हासिल कर लिया जाए।

चुनांचे जब नज़्र बिन हारिस ने उपरोक्त उपदेश दिया तो क़ुरैश ने ख़ुद उसी को ज़िम्मेदार बनाया कि वह एक या कुछ आदमियों के साथ लेकर मदीना के यहूदियों के पास जाए और उनसे आपके मामले की जांच-पड़ताल करे। चुनांचे वह मदीना आया तो यहूदी उलेमा ने कहा कि उससे तीन बातों का सवाल करो, अगर वह बता दे, तो भेजा हुआ नबी है, वरना सिर्फ़ बातें बनाने वाला। उससे पूछो कि पिछले दौर में कुछ नवजवान गुज़रे हैं, उनका क्या क़िस्सा है? क्योंकि उनकी बड़ी विचित्र घटना है और उससे पूछो कि एक आदमी ने ज़मीन को पूरब व पश्चिम के चक्कर लगाए, उसकी क्या ख़बर है? और उससे पूछो कि रूह क्या है?

इसके बाद नज़्र बिन हारिस मक्का आया, तो उसने कहा कि मैं तुम्हारे और मुहम्मद के दर्मियान एक निर्णायक बात लेकर आया हूं। इसके साथ ही उसने यहूदियों की कही हुई बात बताई। चुनांचे क़ुरैश ने आपसे तीनों बातों का सवाल किया। कुछ दिनों बाद सूरः कह्फ़ उतरी, जिसमें उन नवजवानों का और उस चक्कर लगाने वाले आदमी का क़िस्सा बयान किया गया था। नवजवान अस्हाबे कह्फ़ थे और वह ज़ुलक़रनैन था। रूह के बारे में जवाब सूरः इसरा में उतरा। इससे क़ुरैश पर यह बात स्पष्ट हो गई कि आप सच्चे पैग़म्बर हैं, लेकिन उन ज़ालिमों ने कुफ़्र और इंकार का ही रास्ता अपनाया।[1]

मुश्रिकों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत का जिस ढंग से मुक़ाबला किया था, यह उसकी एक संक्षिप्त रूप-रेखा है। उन्होंने ये सारे क़दम पहलू-ब-पहलू उठाए थे। वे एक ढंग से दूसरे ढंग और एक पद्धति से दूसरे पद्धति की ओर आगे बढ़ते रहते थे, सख़्ती से नर्मी की तरफ़ और नर्मी से सख़्ती की तरफ़, झगड़े से सौदेबाज़ी की तरफ़ और सौदेबाज़ी से झगड़े की तरफ़, धमकी से प्रलोभन की तरफ़ और प्रलोभन से धमकी की तरफ़, कभी भड़कते और कभी नर्म पड़ जाते, कभी झगड़ते और कभी चिकनी-चिकनी बातें करने लगते, कभी मरने-मारने पर उतर आते और कभी ख़ुद अपने दीन (धर्म) से हाथ खींच लेते, कभी गरजे-बरसते और कभी दुनिया के सुख-वैभव की पेशकश करते, न उन्हें किसी पहलू क़रार था, न किनारा अपनाना ही पसन्द करते थे और इन सबका अभिप्राय यही था कि इस्लामी दावत विफल हो जाए और कुफ़्र का बिखराव फिर से जुड़ जाए, लेकिन इन सारी कोशिशों और सारे हीलों के बाद भी वे नाकाम ही रहे और उनके सामने सिर्फ़ एक ही रास्ता रह गया और वह था

1. इब्ने हिशाम, 1/299, 300, 301

तलवार। मगर ज़ाहिर है तलवार से मतभेद में तेज़ी ही आती बल्कि आपसी ख़ून-ख़राबा का ऐसा सिलसिला चल पड़ता जो पूरी क़ौम को ले डूबता, इसलिए मुश्रिक हैरान थे कि वे क्या करें।

अबू तालिब और उनके ख़ानदान की सोच

लेकिन जहां तक अबू तालिब का ताल्लुक़ है, तो जब उनके सामने क़ुरैश की यह मांग आई कि वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने के लिए उनके हवाले कर दें और उनकी गतिविधियों में ऐसी निशानी देखी जिससे यह डर पक्का होता था कि वह अबू तालिब के प्रण और सुरक्षा की परवाह किए बग़ैर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने का तहैया किए बैठे हैं, जैसे उक़्बा बिन अबी मुऐत, अबू जह्ल बिन हिशाम और उमर बिन ख़त्ताब के उठाए जा रहे क़दम—तो उन्होंने अपने परदादा अब्दे मुनाफ़ के दो सुपुत्रों हाशिम और मुत्तलिब से अस्तित्व में आने वाले परिवारों को जमा किया और उन्हें दावत दी कि वे सब मिलकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुरक्षा का काम अंजाम दें।

अबू तालिब की यह बात अरबी हमीयत (पक्षपात) की दृष्टि से इन दोनों परिवारों के सारे मुस्लिम और काफ़िर लोगों ने मान ली और इस पर ख़ाना काबा के पास प्रतिज्ञा की, अलबत्ता सिर्फ़ अबू तालिब का भाई अबू लह्ब एक ऐसा व्यक्ति था जिसने यह बात मंजूर न की और सारे ख़ानदान से अलग होकर क़ुरैश के मुश्रिकों के साथ रहा।[1]

---

1. इब्ने हिशाम 1/269

मुकम्मल बाइकाट

अत्याचार का संकल्प

जब मुश्रिकों के तमाम हीले-बहाने ख़त्म हो गए और उन्होंने यह देखा कि बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब हर हाल में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुरक्षा और बचाव का पक्का इरादा किए बैठे हैं, तो वे चकित रह गए और अन्त में मुहस्सब घाटी में ख़ैफ़ बनी कनाना के अंदर जमा होकर और आपस में बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब के ख़िलाफ़ यह संकल्प लिया कि न उनसे शादी-ब्याह करेंगे, न क्रय-विक्रय करेंगे, न उनके साथ उठें-बैठेंगे, न उनसे मेल-जोल रखेंगे, न उनके घरों में जाएंगे, न उनसे बातचीत करेंगे, जब तक कि वे अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को क़त्ल करने के लिए उनके हवाले न कर दें।

मुश्रिकों ने इस बाइकाट की दस्तावेज़ के तौर पर एक कागज लिखा, जिसमें इस बात का संकल्प लिया गया था कि वे बनी हाशिम की ओर से कभी भी किसी समझौते की बात न करेंगे, न उनके साथ किसी तरह की नर्मी दिखाएंगे, जब तक कि वे अल्लाह के रसूल सल्ल० को क़त्ल करने के लिए मुश्रिकों के हवाले न कर दें।

इब्ने क़य्यिम कहते हैं कि कहा जाता है कि यह लेख मंसूर बिन इक्रिमा बिन आमिर बिन हाशिम ने लिंखा था और कुछ के नज़दीक नज़्र बिन हारिस ने लिखा था, लेकिन सही बात यह है कि लिखने वाला बग़ीज़ बिन आमिर बिन हाशिम था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस पर बद-दुआ की और उसका हाथ बेकार हो गया।[1]

बहरहाल यह संकल्प ले लिया गया और काग़ज़ ख़ाना काबा पर लटका दिया गया। इसके नतीजे में अबू लहब के सिवा बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब के सारे लोग, चाहे मुसलमान रहे हों या ग़ैर-मुसलमान सिमट-सिमटाकर शेबे अबी तालिब में क़ैद हो गये।

---

1. ज़ादुल मआद 2/46, बाइकाट के विषय पर देखिए सहीह बुख़ारी मय फ़त्हुल बारी 3/529, हदीस न० 1589, 1590, 3882, 4284, 4285, 7479,

यह नबी सल्ल० के पैग़म्बर बनाए जाने के सातवें साल मुहर्रम की चांद रात की घटना है।

तीन साल शेबे अबी तालिब की घाटी में

इस बाइकाट के नतीजे में हालात बड़े संगीन हो गए। अनाज और खाने-पीने के सामान का आना बन्द हो गया, क्योंकि मक्का में जो अनाज या सामान आता था, उसे मुश्रिक लपक कर ख़रीद लेते थे, इसलिए क़ैदियों की हालत बड़ी पतली हो गई। उन्हें पत्ते और चमड़े खाने पड़े। लोगों के भूख का हाल यह था कि भूख से बिलखते हुए बच्चों और औरतों की आवाज़ें घाटी के बाहर सुनाई पड़ती थीं, उनके पास मुश्किल ही से कोई चीज़ पहुंच पाती थी,वह भी छिप-छिपाकर। वे लोग हुर्मत वाले महीनों के अलावा बाक़ी दिनों में ज़रूरत की चीज़ों की ख़रीद के लिए घाटी से बाहर निकलते भी न थे। वे अगरचे उन क़ाफ़िलों से सामान ख़रीद सकते थे जो बाहर से मक्का आते थे, लेकिन उनके सामान के साथ भी मक्का वाले इतना बढ़ाकर ख़रीदने को तैयार हो जाते थे कि घिरे हुए क़ैदियों के लिए कुछ ख़रीदना मुश्किल हो जाता था।

हकीम बिन हिज़ाम, जो हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का भतीजा था, कभी-कभी अपनी फूफी के लिए गेहूं भिजवा देता था। एक बार अबू जहल का सामना हो गया, वह अनाज रोकने पर अड़ गया, लेकिन अबुल बख़्तरी ने हस्तक्षेप किया और उसे अपनी फूफी के पास गेहूं भिजवाने दिया।

उधर अबू तालिब को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में बराबर ख़तरा लगा रहता था, इसलिए जब लोग अपने-अपने बिस्तरों पर जाते, तो वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहते कि तुम अपने बिस्तर पर सोए रहो। मक़्सद यह होता कि अगर कोई व्यक्ति आपको क़त्ल करने की नीयत रखता हो, तो देख ले कि आप कहां सो रहे हैं। फिर जब लोग सो जाते तो अबू तालिब आपकी जगह बदल देते यानी अपने बेटों, भाइयों या भतीजों में से किसी को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिस्तर पर सुला देते और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहते कि तुम उसके बिस्तर पर चले जाओ।

इस क़ैद व बन्द के बावजूद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और दूसरे मुसलमान हज के दिनों में बाहर निकलते थे और हज के लिए आने वालों से मिलकर उन्हें इस्लाम की दावत देते थे। इस मौक़े पर अबू लहब की जो हरकत हुआ करती थी, उसका उल्लेख पिछले पृष्ठों में हो चुका है।

काग़ज़ फाड़ दिया जाता है

इन हालात पर पूरे तीन साल गुज़र गए। इसके बाद मुहर्रम 10 नबवी[1] में काग़ज़ फाड़े जाने और इस अत्याचारपूर्ण संकल्प को ख़त्म किए जाने की यह घटना घटी। इसकी वजह यह थी कि शुरू ही से क़ुरैश के कुछ लोग अगर इस संकल्प से प्रसन्न थे, तो कुछ नाराज़ भी थे और इन्हीं नाराज़ लोगों ने इस काग़ज़ को फाड़ देने की कोशिश की।

इनमें असल हौसला दिखाने वाला क़बीला बनू आमिर बिन लुई का हिशाम बिन अम्र नाम का एक व्यक्ति था। यह रात के अंधेरे में चुपके-चुपके शेबे अबी तालिब के भीतर अनाज भेजकर बनू हाशिम की मदद भी किया करता था—यह ज़ुहैर बिन अबी उमैया मख़्ज़ूमी के पास पहुंचा—ज़ुहैर की मां आतिका, अब्दुल मुत्तलिब की बेटी यानी अबू तालिब की बहन थीं और उससे कहा—

'ज़ुहैर! क्या तुम्हें यह पसन्द है कि तुम मज़े से खाओ, पियो और तुम्हारे मामूं का वह हाल है जिसे तुम जानते हो?'

ज़ुहैर ने कहा, मैं अकेला क्या कर सकता हूं? हां, अगर मेरे साथ कोई आदमी होता, तो मैं इस काग़ज़ को फाड़ने के लिए यक़ीनन उठ खड़ा होता।

उसने कहा, अच्छा तो एक आदमी और मौजूद है।

पूछा, कौन है?

कहा, मैं हूं।

ज़ुहैर ने कहा, अच्छा तो अब तीसरा आदमी खोजो।

इस पर हिशाम, मुतअम बिन अदी के पास गया और बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब से, जो कि अब्दे मुनाफ़ की औलाद थे, मुतइम के क़रीबी ख़ानदानी ताल्लुक़ का ज़िक्र करके उसे मलामत की कि उसने इस ज़ुल्म पर क़ुरैश की हां में हां कैसे मिलाया? (याद रहे कि मुतइम भी अब्दे मुनाफ़ ही की नस्ल से था)

मुतइम ने कहा, अफ़सोस! मैं अकेला क्या कर सकता हूं?

हिशाम ने कहा, एक आदमी और मौजूद है।

---

1. इसकी दलील यह है कि अबू तालिब की वफ़ात काग़ज़ फाड़े जाने के छः महीने के बाद हुई और सही बात यह है कि उनकी मौत रजब के महीने में हुई थी और जो लोग यह कहते हैं कि उनकी वफ़ात रमज़ान में हुई थी, वे यह भी कहते हैं कि उनकी वफ़ात काग़ज़ फाड़े जाने के छः महीने बाद नहीं, बल्कि आठ माह और कुछ दिन बाद हुई थी। दोनों शक्लों में वह महीना जिसमें काग़ज़ फाड़ा गया, मुहर्रम साबित होता है।

मुतइम ने पूछा, कौन है?

हिशाम ने कहा, मैं।

मुतइम ने कहा, अच्छा एक तीसरा आदमी खोजो।

हिशाम ने कहा, यह भी कर चुका हूं।

पूछा, वह कौन है?

कहा, ज़ुहैर बिन अबी उमैया।

मुतइम ने कहा, अच्छा तो अब चौथा आदमी खोजो।

इस पर हिशाम बिन अम्र अबुल बख़्तरी बिन हिशाम के पास गया और उससे भी इसी तरह की बात की, जैसी मुतइम से की थी।

उसने कहा, भला कोई इसकी ताईद भी करने वाला है?

हिशाम ने कहा, हां।

पूछा, कौन?

कहा, ज़ुहैर बिन अबी उमैया, मुतइम बिन अदी और मैं।

उसने कहा, अच्छा तो अब पांचवां आदमी ढूंढो।

इसके लिए हिशाम, ज़मआ बिन अस्वद बिन मुत्तलिब बिन असद के पास गए और उससे बातों-बातों में बनू हाशिम की रिश्तेदारी और उनके हक़ याद दिलाए।

उसने कहा, भला जिस काम के लिए मुझे बुला रहे हो, उससे कोई और भी सहमत है?

हिशाम ने हां में सर हिलाया और सबके नाम बता दिए।

इसके बाद उन लोगों ने जहून के पास जमा होकर यह संकल्प लिया कि काग़ज़ फाड़ देना है। ज़ुहैर ने कहा, मैं शुरूआत करूंगा, यानी सबसे पहले मैं ही ज़ुबान खोलूंगा।

सुबह हुई तो सब लोग हर दिन की तरह अपनी-अपनी सभाओं में पहुंचे। ज़ुहैर भी सज-धजकर पहुंचा, पहले बैतुल्लाह के सात चक्कर लगाए, फिर लोगों को संबोधित करके बोला—

'मक्का वालो! क्या हम खाना खाएं, कपड़े पहनें और बनू हाशिम तबाह व बर्बाद हों, न उनके हाथ कुछ बेचा जाए, न उनसे कुछ ख़रीदा जाए। ख़ुदा की क़सम! मैं बैठ नहीं सकता, यहां तक कि इस ज़ुल्म भरे और रिश्तेदारियों के तोड़ने वाले काग़ज़ को फाड़ दिया जाए।'

अबू जह्ल, जो मस्जिदे हराम के एक कोने में मौजूद था, बोला, 'तुम ग़लत कहते हो, ख़ुदा की क़सम! उसे फाड़ा नहीं जा सकता।'

इस पर ज़मआ बिन अस्वद ने कहा, ख़ुदा की क़सम! तुम ग़लत कहते हो। जब यह काग़ज़ लिखा गया था, तब भी हम उससे राज़ी न थे।

इस पर अबुल बख़्तरी ने गिरह लगाई, ज़मआ ठीक कह रहा है। इसमें जो कुछ लिखा गया है, उससे न हम राज़ी हैं, न इसे मानने को तैयार हैं।

इसके बाद मुतइम बिन अदी ने कहा, 'तुम दोनों ठीक कहते हो और जो इसके ख़िलाफ़ कहता है, ग़लत कहता है। हम इस काग़ज़ से और जो कुछ इसमें लिखा गया है उससे अल्लाह के हुज़ूर अलग होने का एलान करते हैं।'

फिर हिशाम बिन अम्र ने भी इसी तरह की बात कही।

यह स्थिति देखकर अबू जह्ल ने कहा, 'हुंह! यह बात रात में तै की गई है और इसका मश्विरा यहां के बजाए कहीं और किया गया है।'

इस बीच अबू तालिब भी हरम पाक के एक कोने में मौजूद थे। उनके आने की वजह यह थी कि अल्लाह ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस काग़ज़ के बारे में यह ख़बर दी कि उस पर अल्लाह ने कीड़े भेज दिए हैं, जिन्होंने ज़ुल्म व सितम और नातेदरी के काटने की सारी बातें चट कर ली हैं और सिर्फ़ अल्लाह का नाम बाक़ी छोड़ा है।

फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चचा को यह बात बताई तो वह क़ुरैश से यह क़हने आए थे कि उनके भतीजे ने उन्हें यह और यह ख़बर दी है, अगर वह झूठा साबित हुआ तो हम तुम्हारे और उसके बीच से हट जाएंगे, फिर तुम्हारा जो जी चाहे, करना, लेकिन अगर वह सच्चा साबित हुआ तो तुम्हें हमारे बाइकाट और ज़ुल्म से रुक जाना होगा।

इस पर क़ुरैश ने कहा था, आप इंसाफ़ की बात कर रहे हैं।

इधर अबू जह्ल और बाक़ी लोगों की नोक-झोंक ख़त्म हुई तो मुतइम बिन अदी काग़ज़ फाड़ने के लिए उठा। क्या देखता है कि वाक़ई कीड़ों ने उसका सफ़ाया कर दिया है, सिर्फ़ 'बिस्मिकल्लाहुम-म' बाक़ी रह गया है और जहां-जहां अल्लाह का नाम था, वह बचा है। कीड़ों ने उसे नहीं खाया था।

इसके बाद काग़ज़ फट गया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और बाक़ी तमाम लोग शेबे अबी ताबिल से निकल आए।

मुश्रिकों ने आपके नबी होने की एक शानदार निशानी देखी, लेकिन उनका

रवैया वही रहा, जिसका उल्लेख इस आयत में है—

'अगर वे कोई निशानी देखते हैं तो रुख़ फेर लेते हैं और कहते हैं कि यह तो चलता-फिरता जादू है।' (54 : 2)

चुनांचे मुश्रिकों ने इस निशानी से भी रुख़ फेर लिया और अपने कुफ़्र की राह में कुछ क़दम और आगे बढ़ गए।[1]

---

1. बाइकाट का यह विस्तृत विवरण नीचे लिखे स्रोतों से लिया गया है—सहीह बुख़ारी बाब नुज़ूलुन्नबी सल्ल० बिमक्क-त 1/216, बाब तक़ासमुल मुश्रिकीन अलन्नबी सल्ल० 1/548, ज़ादुल मआद 2/46, इब्ने हिशाम 1/350, 351, 374-377 इन स्रोतों में कुछ-कुछ मतभेद हैं। हमने जांच-परख कर तर्जीही पहलू नोट किया है।

अबू तालिब की सेवा में क़ुरैश का आख़िरी प्रतिनिधि मंडल

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शेबे अबी तालिब से निकलने के बाद फिर पहले की तरह दीन के प्रचार-प्रसार का काम शुरू कर दिया और अब मुश्रिकों ने अगरचे बाइकाट ख़त्म कर दिया था, लेकिन वे भी पहले की तरह मुसलमानों पर दबाव डालने और अल्लाह के रास्ते से रोकने का सिलसिला जारी रखे हुए थे और जहां तक अबू तालिब का ताल्लुक़ है, तो वह भी अपनी पुरानी परंपरा के मुताबिक़ पूरी तवज्जोह से अपने भतीजे की हिमायत और हिफ़ाज़त में लगे हुए थे, लेकिन अब उनकी उम्र अस्सी से भी ज़्यादा हो चुकी थी। कई साल से लगातार आ रही परेशानियों ने और ख़ास तौर से क़ैद व बंद ने उन्हें तोड़ कर रख दिया था। उनके जिस्म की ताक़त जवाब दे चुकी थी और कमर टूट चुकी थी, चुनांचे घाटी से निकलने के बाद कुछ ही महीने बीते थे कि उन्हें बड़ी बीमारी ने आ पकड़ा।

इस मौक़े पर मुश्रिकों ने सोचा कि अगर अबू तालिब का इंतिक़ाल हो गया और उसके बाद हमने उसके भतीजे पर कोई ज़्यादती की, तो बड़ी बदनामी होगी, इसलिए अबू तालिब के सामने ही नबी सल्ल० से कोई मामला तै कर लेना चाहिए। इस सिलसिले में वे कुछ ऐसी रियायतें देने को तैयार हो गए जिस पर अभी तक राज़ी न थे। चुनांचे उनका एक दल अबू तालिब की सेवा में आया और यह उनका अन्तिम दल था।

इब्ने इस्हाक़ वग़ैरह का बयान है कि जब अबू तालिब बीमार पड़ गए और क़ुरैश को मालूम हुआ कि उनकी हालत बहुत ख़राब होती जा रही है, तो उन्होंने आपस में कहा कि देखो हमज़ा और उमर रज़ि० मुसलमान हो चुके हैं और मुहम्मद (सल्ल०) का दीन हर क़बीले में फैल चुका है, इसलिए चलो, अबू तालिब के पास चलें कि वह अपने भतीजे को किसी बात का पाबंद करें और हम से भी उनके बारे में वचन ले लें, क्योंकि ख़ुदा की क़सम ! हमें डर है, लोग हमारे क़ाबू में न रहेंगे।

एक रिवायत यह है कि हमें डर है कि वह बूढ़ा मर गया और मुहम्मद सल्ल० के साथ कोई गड़बड़ हो गई, तो अरब हमें ताने देंगे, कहेंगे कि इन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) को छोड़े रखा (और उनके ख़िलाफ़ कुछ करने की हिम्मत न

की) लेकिन जन उसका चचा मर गया तो उस पर चढ़ दौड़े।

बहरहाल कुरैश का यह दल अबू तालिब के पास पहुंचा और उनसे बातें कीं। दल के सदस्य कुरैश के प्रतिष्ठित जन थे यानी उत्बा बिन रबीआ, शैबा निब रबीआ, अबू जह्ल बिन हिशाम, उमैया बिन ख़ल्फ़, अबू सुफ़ियान बिन हर्ब और कुरैश के दूसरे बड़े लोग, जिनकी कुल तायदाद लगभग पचीस थी, उन्होंने कहा—

'ऐ अबू तालिब ! हमारे बीच आपका जो पद और स्थान है, उसे आप अच्छी तरह जानते हैं और अब आप जिस हालत से गुज़र रहे हैं, वह भी आपके सामने है। हमें डर है कि ये आपकी उम्र के आख़िरी दिन हैं। इधर हमारे और आपके भतीजे के बीच जो मामला चल रहा है, उसे भी आप जानते हैं। हम चाहते हैं कि आप उन्हें बुलाएं और उनके बारे में हम से कुछ वचन लें और हमारे बारे में उनसे वचन लें, यानी यह कि वे हमको हमारे दीन पर छोड़ दें और हम उनको उनके दीन पर छोड़ दें।'

इस पर अबू तालिब ने आपको बुलवाया और आप तशरीफ़ लाए तो कहा—

'भतीजे ! ये तुम्हारी क़ौम के सरदार लोग हैं। तुम्हारे ही लिए जमा हुए हैं। ये चाहते हैं कि तुम्हें कुछ वचन दें और तुम भी इन्हें कुछ वचन दे दो।'

इसके बाद अबू तालिब ने उनकी यह बात बताई कि कोई भी फ़रीक़ एक दूसरे से छेड़छाड़ न करे।

जवाब में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दल को सम्बोधित करके फ़रमाया, आप लोग यह बताएं कि अगर मैं एक ऐसी बात पेश करूं, जिसके अगर आप क़ायल हो जाएं, तो अरब के बादशाह बन जाएं और अजम आपके पैरों में आ जाएं, तो आपकी राय क्या होगी ?

कुछ रिवायतों में यह कहा गया है कि आपने अबू तालिब को सम्बोधित करके फ़रमाया, मैं उनसे एक ऐसी बात चाहता हूं जिसके ये क़ायल हो जाएं तो अरब इनके आज्ञाकारी बन जाएं और अजम इन्हें जिज़या अदा करें।

एक और रिवायत में इसका उल्लेख है कि आपने फ़रमाया, चचा जान ! आप क्यों न इन्हें एक ऐसी बात की ओर बुलाएं जो इनके हक़ में बेहतर है ?

उन्होंने कहा, तुम इन्हें किस बात की ओर बुलाना चाहते हो ?

आपने फ़रमाया, मैं एक ऐसी बात की ओर बुलाना चाहता हूं जिसके ये क़ायल हो जाएं तो अरब इनके आज्ञाकारी हो जाएं और अजम पर इनकी

बादशाही चले।

इब्ने इस्हाक़ की एक रिवायत यह है कि आपने फ़रमाया—

आप लोग सिर्फ़ एक बात मान लें जिसकी वजह से आप अरब के बादशाह बन जाएंगे और अजम आपके क़दमों में होगा।

बहरहाल जब आपने यह बात कही तो वे लोग कुछ संकोच में पड़ गए और सटपटा से गए। वे हैरान थे कि सिर्फ़ एक बात जो इतनी फ़ायदेमंद है, उसे रद्द कैसे कर दें? आख़िरकार अबू जह्ल ने कहा—

'अच्छा तो बताओ वह बात है क्या? तुम्हारे बाप की क़सम! ऐसी एक बात क्या, दस बातें भी पेश करो, जो हम मानने को तैयार हैं?'

आपने फ़रमाया, 'आप लोग ला इला-ह इल्लल्लाहु कहें और अल्लाह के सिवा जो कुछ पूजते हैं उसे छोड़ दें।'

इस पर उन्होंने हाथ पीट-पीटकर और तालियां बजा-बजाकर कहा, 'मुहम्मद (सल्ल०)! तुम यह चाहते हो कि सारे ख़ुदाओं की जगह बस एक ही ख़ुदा बना डालो, वाक़ई तुम्हारा मामला बड़ा अजीब है।'

फिर आपस में एक दूसरे से बोले, 'ख़ुदा की क़सम! यह व्यक्ति तुम्हारी एक बात मानने को तैयार नहीं, इसलिए चलो और अपने बाप-दादों के दीन पर डट जाओ, यहां तक कि अल्लाह हमारे और इस व्यक्ति के बीच फ़ैसला कर दे।'

इसके बाद उन्होंने अपना-अपना रास्ता लिया। इस घटना के बाद इन्हीं लोगों के बारे में क़ुरआन मजीद की ये आयतें उतरीं—

'साद, क़सम है नसीहत भरे क़ुरआन की, बल्कि जिन्होंने कुफ़्र किया, हेकड़ी और ज़िद में हैं। हमने कितनी ही क़ौमें इनसे पहले हलाक कर दीं और वे चीख़े-चिल्लाए (लेकिन उस वक़्त) जबकि बचने का समय न था। उन्हें ताज्जुब है कि उनके पास ख़ुद उन्हीं में से एक डराने वाला आ गया। काफ़िर कहते हैं कि यह जादूगर है, बड़ा झूठा है। क्या उसने सारे माबूदों की जगह बस एक ही माबूद बना डाला! यह तो बड़ी अजीब बात है और उनके बड़े यह कहते हुए निकले कि चलो और अपने माबूदों पर डटे रहो। यह एक सोची-समझी स्कीम है। हमने किसी और मिल्लत में यह बात नहीं सुनी। यह सिर्फ़ गढ़ी हुई बात है।'[1] (38 : 1-7)

---

1. इब्ने हिशाम 1/417 से 419 तक, तिर्मिज़ी, हदीस न० 3232 (5/341) मुस्नद अबू याला हदीस न० 2583, (4/456) तफ़्सीर इब्ने जरीर,

ग़म का साल

अबू तालिब की वफ़ात

अबू तालिब का रोग बढ़ता गया, यहां तक कि वह इंतिक़ाल कर गए।

उनकी वफ़ात शेबे अबी तालिब के क़ैद व बन्द के ख़ात्मे के छः माह बाद रजब सन् 10 नबवी में हुई।[1]

एक कथन यह भी है कि उन्होंने हज़रत ख़दीजा रज़ि० की वफ़ात से सिर्फ़ तीन दिन पहले रमज़ान के महीने में वफ़ात पाई।

सहीह बुख़ारी में हज़रत मुसय्यिब से रिवायत है कि जब अबू तालिब की वफ़ात का वक़्त आया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास तशरीफ़ ले गए। वहां अबू जह्ल भी मौजूद था। आपने फ़रमाया, चचा जान! आप 'ला इला-ह इल्लल्लाह' कह दीजिए, बस एक बोल, जिसके ज़रिए मैं अल्लाह के पास आपके लिए हुज्जत पेश कर सकूंगा।'

अबू जह्ल और अब्दुल्लाह बिन उमैया ने कहा, अबू तालिब! क्या अब्दुल मुत्तलिब की मिल्लत से रुख़ फेर लोगे?

फिर ये दोनों बराबर उनसे बात करते रहे, यहां तक कि आख़िरी बात जो अबू तालिब ने लोगों से कही, वह यह थी कि 'अब्दुल मुत्तलिब की मिल्लत पर'

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, 'मैं जब तक आपसे रोक न दिया जाऊं, आपके लिए मग़्फ़िरत की दुआ करता रहूंगा।' इस पर यह आयत उतरी—

'नबी और ईमान वालों के लिए उचित नहीं कि मुश्रिकों के लिए मग़्फ़िरत की दुआ करें, भले ही वे रिश्ते-नातेदार हों, जबकि उन पर स्पष्ट हो चुका है कि वे लोग जहन्नमी हैं।' (9 : 113)

और यह आयत भी उतरी—

---

1. सीरत की किताबों में बड़ा मतभेद है कि अबू तालिब की वफ़ात किस महीने में हुई। हमने रजब को इसलिए तर्जीह दी है कि अधिकतर किताबों में यही बात है कि उनकी वफ़ात शेबे अबी तालिब से निकलने के छः माह बाद हुई और क़ैद व बन्द की शुरूआत मुहर्रम सन् 07 नबवी की चांद रात से हुई थी। इस हिसाब से उनकी मौत का समय रजब सन् 10 नबवी ही होता है।

'आप जिसे पसन्द करें, हिदायत नहीं दे सकते।'[1] (28 : 56)

यहां यह बताने की ज़रूरत नहीं कि अबू तालिब ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कितनी हिमायत व हिफ़ाज़त की थी। वह वास्तव में मक्के के बड़ों और मूर्खों के हमलों से बचाव के लिए एक क़िला थे, लेकिन वह अपने आप अपने पुरखों की मिल्लत पर क़ायम रहे, इसलिए पूरी कामियाबी न पा सके।

चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मालूम किया—

'आप अपने चचा के क्या काम आ सके? क्योंकि वह आपकी रक्षा करते थे और आपके लिए (दूसरों पर) बिगड़ते (और उनसे लड़ाई मोल लेते) थे।'

आपने फ़रमाया, 'वह जहन्नम की एक छिछली जगह में हैं और अगर मैं न होता तो वह जहन्नम के सबसे गहरे खड्ड में होते।'[2]

अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आपके चचा की बात निकल आई, तो आपने फ़रमाया—

'मुम्किन है क़ियामत के दिन उन्हें मेरी शफ़ाअत फ़ायदा पहुंचा दे और उन्हें जहन्नम की एक उथली जगह में रख दिया जाए, जो सिर्फ़ उनके दोनों टख़नों तक पहुंच सके।'[3]

हज़रत ख़दीजा रज़ि० भी वफ़ात पा गईं

अबू तालिब की वफ़ात के दो महीने बाद या सिर्फ़ तीन दिन बाद—अलग-अलग कथनों की बुनियाद पर—उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा भी इंतिक़ाल फ़रमा गईं। उनकी वफ़ात नुबूवत के दसवें साल रमज़ान के महीने में हुई। उस वक़्त वह 65 वर्ष की थीं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी उम्र के पचासवीं मंज़िल में थे।[4]

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब क़िस्सा अबू तालिब 1/548
2. सहीह बुख़ारी बाब क़िस्सा अबू तालिब 1/548
3. सहीह बुख़ारी बाब क़िस्सा अबू तालिब 1/548
4. रमज़ान में वफ़ात हुई है, इसे इब्ने जौज़ी ने 'तलक़ीहुल मफ़हूम' पृ० 7 में और अल्लामा मंसूरपुरी ने रहमतुल लिल आलमीन 2/164 में लिखकर स्पष्ट किया है।

हज़रत ख़दीजा रज़ि० रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत थीं। वह एक चौथाई सदी बीवी की हैसियत से आपके साथ रहीं और इस बीच रंज और दुख का वक़्त आता, तो आपके लिए तड़प उठतीं, संगीन और कठिन घड़ियों में आपको ताक़त पहुंचातीं, दावत पहुंचाने में आपकी मदद करतीं और इस कठिन से कठिन जिहाद में आपकी बराबर शरीक रहतीं और अपनी जान व माल से आपका पूरा-पूरा साथ देतीं और हौसला बढ़ातीं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है—

जिस वक़्त लोगों ने मेरे साथ कुफ़्र किया, वह मुझ पर ईमान लाई, जिस वक़्त लोगों ने मुझे झुठलाया, उन्होंने मेरी तस्दीक़ की, जिस वक़्त लोगों ने मुझे महरूम किया, उन्होंने मुझे अपने माल में शरीक किया और अल्लाह ने मुझे उनसे औलाद दी और दूसरी बीवियों से कोई औलाद न दी।[1]

सहीह बुख़ारी में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत जिब्रील नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह ख़दीजा रज़ि० तशरीफ़ ला रही हैं। इनके पास एक बरतन है, जिसमें सालन या खाना या कोई पेय है। जब वह आपके पास आ पहुंचें तो आप उन्हें उनके रब की ओर से सलाम कहें और जन्नत में मोती के महल की ख़ुशख़बरी दें, जिसमें न शोर-हंगामा होगा, न परेशानी व थकन।[2]

ग़म ही ग़म

ये दोनों दुखद घटनाएं कुछ दिनों के बीच में घटीं, जिससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दिल दुख और ग़म से भर गया था। इसके बाद क़ौम की ओर से मुसीबतों का पहाड़ तोड़ा जाने लगा, क्योंकि अबू तालिब की वफ़ात के बाद उनकी हिम्मत बढ़ गई और वे खुलकर आपको कष्ट और पीड़ा पहुंचाने लगे। इस स्थिति ने आपके दुख को और बढ़ा दिया। आपने उनसे निराश होकर तायफ़ का रास्ता पकड़ा कि शायद लोग वहां आपकी दावत क़ुबूल कर लें, आपको पनाह दे दें और आपकी क़ौम के ख़िलाफ़ आपकी मदद करें। लेकिन वहां न कोई पनाह देनेवाला मिला, न मदद करने वाला, बल्कि उलटे उन्होंने बहुत

---

1. मुस्नद अहमद 6/118
2. सहीह बुख़ारी बाब तज़वीजुन्नबी सल्ल० ख़दी-ज-त व फ़ज़्लुहा 1/539

पीड़ा पहुंचाई और ऐसा दुर्व्यवहार किया कि ख़ुद आपकी क़ौम ने वैसा दुर्व्यवहार न किया था। (विवरण आगे आ रहा है)

यहां इस बात का दोहराना बे-मौक़ा न होगा कि मक्का वालों ने जिस तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ ज़ुल्म व सितम का बाज़ार गर्म कर रखा था, उसी तरह वे आपके साथियों के ख़िलाफ़ भी अन्याय व अत्याचार के हर तरीक़े पर उतर आए थे, चुनांचे आपके क़रीबी साथी हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० मक्का छोड़ने पर मजबूर हो गए और हब्शा के इरादे से निकल पड़े, लेकिन बरके ग़माद पहुंचे तो इब्ने दुग़ना से मुलाक़ात हो गई और वह अपनी पनाह में आपको मक्का वापस ले आया।[1]

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि जब अबू तालिब इंतिक़ाल कर गए, तो क़ुरैश ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसी पीड़ा पहुंचाई कि अबू तालिब की ज़िंदगी में कभी इसकी आरज़ू भी न कर सके थे, यहां तक कि क़ुरैश के एक मूर्ख ने सामने आकर आपके सर पर मिट्टी डाल दी। आप उसी हालत में घर तशरीफ़ लाए। मिट्टी आपके सर पर पड़ी हुई थी। आपकी एक सुपुत्री ने उठकर मिट्टी धुली। वह धुलते हुए रोती जा रही थीं, और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हें तसल्ली देते हुए फ़रमाते जा रहे थे—

'बेटी! रोओ नहीं, अल्लाह तुम्हारे अब्बा की हिफ़ाज़त करेगा।'

इस बीच आप यह भी फ़रमाते जा रहे थे कि क़ुरैश ने मेरे साथ कोई ऐसा दुर्व्यवहार न किया, जो मुझे नागवार गुज़रा हो, यहां तक कि अबू तालिब का देहान्त हो गया।[2]

इसी तरह की लगातार आने वाली परेशानियों और कठिनाइयों की वजह से इस साल का नाम 'आमुल हुज़्न' यानी ग़म का साल पड़ गया और यह साल इतिहास में इसी नाम से मशहूर हो गया।

हज़रत सौदा रज़ि० से शादी

इसी वर्ष शव्वाल सन् 10 नबवी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सौदा बिन्त ज़मआ रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की। यह शुरू

---

1. अकबर शाह नजीबादी ने स्पष्ट किया है कि यह घटना उसी साल घटी थी। देखिए तारीख़े इस्लाम 1/120 असल घटना पूरे विस्तार के साथ इब्ने हिशाम 1/372-374 और सहीह बुख़ारी 1/552-553 में उल्लिखित है।
2. इब्ने हिशाम 1/416

के दिनों में ही मुसलमान हो गई थीं और हब्शा की दूसरी हिजरत के मौक़े पर हिजरत भी की थी। इनके शौहर का नाम सकरान बिन अम्र था। वह भी पुराने मुसलमान थे। हज़रत सौदा रज़ि० ने उन्हीं के साथ हब्शा की ओर हिजरत की थी, लेकिन वह भी हब्शा ही में और कहा जाता है कि मक्का वापस आकर इंतिक़ाल कर गए। इसके बाद जब हज़रत सौदा रज़ि० की इद्दत ख़त्म हो गई तो नबी सल्ल० ने उनको शादी का पैग़ाम दिया और फिर शादी हो गई।

यह हज़रत ख़दीजा रज़ि० की वफ़ात के बाद पहली बीवी हैं जिनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शादी की। कुछ वर्षों के बाद उन्होंने अपनी बारी हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को दे दी थी।[1]

---

1. रहमतुल लिल आलमीन 1/165, तलक़ीहुल फ़हूम, पृ० 6

मुसलमानों का आदर्श धैर्य

यहां पहुंचकर गहरी सूझ-बूझ और मज़बूत दिल व दिमाग़ का आदमी भी चकित रह जाता है और बड़े-बड़े सूझ-बूझ वाले लोग सोच में पड़ जाते हैं कि आख़िर वे क्या बातें थीं, जिन्होंने मुसलमानों के क़दमों को इतना अधिक चमत्कारिक ढंग से जमाए रखा? आख़िर मुसलमानों ने किस तरह ज़ुल्म के इन पहाड़ों पर सब्र किया, जिन्हें सुन-सुनकर रौंगटे खड़े हो जाते हैं और मन कांप-कांप उठता है। बार-बार खटकने और दिल की तहों से उभरने वाले इस प्रश्न को देखते हुए उचित लगता है कि उन बातों की ओर एक सरसरी इशारा कर दिया जाए।

1. **इनमें सबसे पहली और अहम वजह एक अल्लाह पर ईमान और उसकी ठीक-ठीक पहचान है,** क्योंकि ईमान की ताज़गी दिलों में बैठ जाती है, तो इंसान पहाड़ों से टकरा जाता है फिर भी उसी का पल्ला भारी रहता है और जो आदमी ऐसे मज़बूत ईमान और पक्के यक़ीन से भर जाए, वह दुनिया की कठिनाइयों को—चाहे वे जितनी हों और जैसी भी भारी-भरकम हों, ख़तरनाक और सख़्त हों—अपने ईमान के मुक़ाबले में उस काई से ज़्यादा अहमियत नहीं देता जो किसी बन्द तोड़ और क़िला शिकन बाढ़ की ऊपरी सतह पर जम जाती है, इसलिए मोमिन (ईमान वाला) अपने ईमान की मिठास, यक़ीन की ताज़गी और विश्वास के स्वाद के सामने इन कठिनाइयों की कोई परवाह नहीं करता कि—

'जो झाग है, वह तो बेकार होकर उड़ जाता है और जो लोगों को नफ़ा देनेवाली चीज़ है, वह ज़मीन में बरक़रार रहती है।' (13 : 17)

फिर इसी एक वजह से ऐसी वज्हें सामने आती हैं जो इस जमाव और धैर्य को ताक़त पहुंचाती हैं। जैसे—

2. **आकर्षक नेतृत्व** : मालूम है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, जो पूरी उम्मते मुस्लिमा (मुस्लिम समुदाय) बल्कि सारी मानव-जाति के सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक और रहनुमा थे, ऐसी जिस्मानी ख़ूबसूरती, मन की पाकीज़गी, श्रेष्ठ चरित्र, आदर्श आचरण और आदर्श तौर-तरीक़ों के मालिक थे कि मन अपने आप आपकी ओर खिंचे जाते थे और तबीयतें स्वयं आप पर निछावर होती थीं, क्योंकि जिन अच्छी बातों पर लोग जान छिड़कते हैं, उनमें से आपको इतना भरपूर हिस्सा मिला था कि इतना किसी और इंसान को दिया ही नहीं गया। आप श्रेष्ठता की सबसे ऊंची चोटी पर आसीन नज़र आते थे। सच्चाई, अमानतदारी,

पाकदामनी और तमाम ही भली ख़ूबियों में आप इतने नुमायां जगह पर थे कि साथी तो साथी, आपके दुश्मनों को भी आप पर कभी सन्देह न गुज़रा। आपके मुख से जो बात निकल गई, दुश्मनों को भी यक़ीन हो गया कि वह सच्ची है और होकर रहेगी। घटनाएं इसकी गवाही देती हैं।

एक बार क़ुरैश के ऐसे तीन आदमी इकट्ठे हुए, जिनमें से हर एक ने अपने बाक़ी दो साथियों से छिप-छिपाकर बिल्कुल अकेले क़ुरआन मजीद सुना था, लेकिन बाद में हर एक का भेद दूसरे पर खुल गया। इन्हीं तीनों में से एक अबू जह्ल भी था।

तीनों इकट्ठे हुए तो एक ने अबू जह्ल से पूछा कि बताओ, तुमने जो कुछ मुहम्मद सल्ल० से सुना है, उसके बारे में तुम्हारी क्या राय है?

अबू जह्ल ने कहा, मैंने क्या सुना है? बात असल में यह है कि हमने और बनू अब्द मुनानफ़ ने महत्ता और महानता में एक दूसरे का मुक़ाबला किया। उन्होंने (ग़रीबों को) खाना खिलाया, तो हमने भी खिलाया, उन्होंने दान-दक्षिणा में सवारियां दीं, तो हमने भी दीं, उन्होंने लोगों को भेंट-उपहार दिए, तो हमने भी ऐसा किया, यहां तक कि जब हम और वह घुटनों-घुटनों एक दूसरे के बराबर हो गए और हमारी और उनकी हैसियत रेस के दो मुक़ाबले के घोड़ों की हो गई, तो अब अबू अब्द मुनाफ़ कहते हैं कि हमारे अन्दर एक नबी सल्ल० है, जिसके पास आसमान से वह्य आती है। भला बताइए, हम उसे कब पा सकते हैं? ख़ुदा की क़सम! हम उस व्यक्ति पर कभी ईमान न लाएंगे और उसकी हरगिज़ तस्दीक़ न करेंगे।[1]

चुनांचे अबू जह्ल कहा करता था, 'ऐ मुहम्मद! हम तुम्हें झूठा नहीं कहते, लेकिन तुम जो कुछ लेकर आए हो उसे झुठलाते हैं और इसी बारे में अल्लाह ने यह आयत उतारी—

'ये लोग आपको नहीं झुठलाते, बल्कि ये ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इंकार करते हैं।'[2]

इस घटना को विस्तार में दिया जा चुका है कि एक बार दुश्मनों ने नबी सल्ल० की तीन बार लान-तान की और तीसरी बार में आपने फ़रमाया कि ऐ क़ुरैश की जमाअत! मैं तुम्हारे पास ज़िब्ह लेकर आया हूं, तो यह बात उन पर इस तरह असर कर गई कि जो व्यक्ति दुश्मनी में सबसे बढ़कर था, वह भी बेहतर से बेहतर जो वाक्य पा सकता था, उसके ज़रिए आपको राज़ी करने की

1. इब्ने हिशाम 1/316
2. तिर्मिज़ी, तफ़्सीर सूरः अनआम 2/132

कोशिश में लग गया।

इसी तरह यह भी सविस्तार आ चुका है कि जब सज्दे की हालत में आप पर ओझड़ी डाली गई और आपने सर उठाने के लिए इस हरकत के करने वालों पर बद-दुआ की तो उनकी हंसी हवा हो गई और उनमें दुख और अफ़सोस की लहर दौड़ गई। उन्हें विश्वास हो गया कि अब हम बच नहीं सकते।

इस घटना का भी उल्लेख किया जा चुका है कि आपने अबू लहब के बेटे उतैबा के लिए बद-दुआ की, तो उसे यक़ीन हो गया कि वह आपकी बद-दुआ की मार से बच नहीं सकता। चुनांचे उसने शामदेश के सफ़र में शेर को देखते ही कहा, 'ख़ुदा की क़सम! मुहम्मद (सल्ल०) ने मक्का में रहते हुए मुझे क़त्ल कर दिया।'

उबई बिन ख़ल्फ़ की घटना है कि वह बार-बार आपको क़त्ल की धमकियां दिया करता था। एक बार आपने जवाब में फ़रमाया कि (तुम नहीं) बल्कि मैं तुम्हें क़त्ल करूंगा, अगर अल्लाह ने चाहा।

इसके बाद जब आपने उहुद की लड़ाई के दिन उबई की गरदन पर नेज़ा मारा, तो अगरचे उससे मामूली चोट आई थी, लेकिन उबई बराबर यही कहे जा रहा था कि मुहम्मद ने मुझसे मक्का में कहा था कि मैं तुम्हें क़त्ल करूंगा, इसलिए वह अगर मुझ पर थूक ही देता तो भी मेरी जान निकल जाती।[1] (विस्तृत विवेचन आगे आ रहा है)

इसी तरह एक बार हज़रत साद बिन मुआज़ ने मक्का में उमैया बिन ख़ल्फ़ से कह दिया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि मुसलमान तुम्हें क़त्ल करेंगे तो उससे उमैया पर बड़ी घबराहट छा गयी जो बराबर छाई रही, चुनांचे उसने प्रण कर लिया कि मक्के से बाहर ही न निकलेगा और जब बद्र की लड़ाई के मौक़े पर अबू जह्ल के आग्रह से मजबूर होकर निकलना पड़ा तो उसने मक्के से तेज़ चलने वाला ऊंट ख़रीदा, ताकि ख़तरे की घंटी बजते ही चम्पत हो जाए।

इधर लड़ाई में जाने पर तैयार देखकर उसकी बीवी ने भी टोका कि अबू सफ़वान! आपके यसरबी भाई ने जो कुछ कहा था, उसे आप भूल गए?

अबू सफ़वान ने जवाब में कहा कि नहीं, बल्कि मैं ख़ुदा की क़सम! उनके साथ थोड़ी ही दूर जाऊंगा।[2]

---

1. इब्ने हिशाम 2/84
2. सहीह बुख़ारी 2/563

यह तो आपके दुश्मनों का हाल था। बाक़ी रहे आपके साथी और सहाबा तो आप तो उनके लिए जान-प्राण थे। उनके दिल की गहराइयों से आपके लिए सच्ची मुहब्बत इस तरह उबलती थी जैसे ढाल की ओर पानी बहता है और जान व दिल इस तरह आपकी ओर खिंचते थे, जैसे लोहा चुम्बक की ओर खिंचता है—

'आपका रूप हर देह का प्राण था,

और आपका अस्तित्व हर दिल के लिए चुम्बक।'

इस मुहब्बत, फ़िदाकारी और जांनिसारी का नतीजा यह था कि सहाबा किराम को यह गवारा न था कि आपके नाख़ून में चोट लगे या आपके पांव में कांटा चुभ जाए, चाहे इसके लिए उनकी गरदनें ही क्यों न काट दी जाएं।

एक दिन अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को बुरी तरह कुचल दिया गया और उन्हें कड़ी मार मारी गई। उत्बा बिन रबीआ उनके क़रीब आकर उन्हें दो पैवन्द लगे हुए जूतों से मारने लगा। चेहरे को मुख्य रूप से निशाना बनाया, फिर पेट पर चढ़ गया। स्थिति यह थी कि चेहरे और नाक का पता नहीं चल रहा था। फिर उनके क़बीले बनू तैम के लोग उन्हें एक कपड़े में लपेटकर ले गए। उन्हें यक़ीन था कि अब यह ज़िंदा न बचेंगे, लेकिन दिन के ख़ात्मे के क़रीब उनकी ज़ुबान खुल गई (और ज़ुबान खुली, तो यही बोले कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) क्या हुए?

इस पर बनू तैम ने उन्हें सख़्त-सुस्त कहा, निन्दा की और उनकी मां उम्मुल ख़ैर से यह कहकर उठ खड़े हुए कि इन्हें कुछ खिला-पिला देना। जब वह अकेली रह गईं, तो उन्होंने अबूबक्र रज़ि० से खाने-पीने के लिए आग्रह किया, लेकिन अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु यही कहते रहे कि अल्लाह के रसूल सल्ल० का क्या हुआ?

आख़िरकार उम्मुल ख़ैर ने कहा, मुझे तुम्हारे साथी का हाल मालूम नहीं।

अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने कहा, उम्मे जमील बिन्त ख़त्ताब के पास जाओ और उससे मालूम करो।

वह उम्मे जमील के पास गईं और बोलीं, 'अबूबक्र तुमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के बारे में मालूम कर रहे हैं।'

उम्मे जमील ने कहा, मैं न अबूबक्र को जानती हूं, न मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह को, अलबत्ता अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे बेटे के पास चल सकती हूं।

उम्मुल ख़ैर ने कहा, बेहतर है।

इसके बाद उम्मे जमील उनके साथ आईं, देखा, तो अबूबक्र बड़े ही फटेहाल पड़े थे। फिर क़रीब हुईं तो चीख़ पड़ीं और कहने लगीं, जिस क़ौम ने आपकी यह दुर्गति बनाई है, वह यक़ीनन बदमाश और दुश्मन क़ौम है। मुझे उम्मीद है कि अल्लाह आपका बदला उनसे लेकर रहेगा।

अबूबक्र रज़ि० ने पूछा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या हुए?

उन्होंने कहा, यह आपकी मां सुन रही हैं।'

कहा, 'कोई बात नहीं !'

बोलीं, आप सही-सालिम हैं।

पूछा, कहां हैं?

कहा, इब्ने अरक़म के घर में हैं।

अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, अच्छा, तो फिर अल्लाह के लिए मुझ पर यह प्रतिज्ञा है कि मैं न कोई खाना खाऊंगा, न पानी पियूंगा, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हो जाऊं।

इसके बाद उम्मुल ख़ैर और उम्मे जमील रुकी रहीं। जब आना-जाना बन्द हो गया और स्यापा पड़ गया, तो ये दोनों अबूबक्र रज़ि० को लेकर निकलीं। वे इन पर टेक लगाए हुए थे और इस तरह उन्होंने अबूबक्र रज़ि० को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में पहुंचा दिया।[1]

मुहब्बत और जांनिसारी की कुछ और भी अनोखी घटनाएं हम अपनी इस पुस्तक में मौक़े-मौक़े से नक़ल करेंगे, मुख्य रूप से उहुद की लड़ाई की घटनाएं और हज़रत ख़ुबैब रज़ि० के हालात बयान करते समय।

3. ज़िम्मेदारी का एहसास—सहाबा किरम जानते थे कि मिट्टी का यह पुतला, जिसे इंसान कहा जाता है, उस पर कितनी भारी-भरकम और ज़बरदस्त ज़िम्मेदारियां हैं और यह कि इन ज़िम्मेदारियों से किसी हाल में भी नहीं बचा जा सकता, क्योंकि इस बचने के जो नतीजे होंगे, वे वर्तमान ज़ुल्म व सितम से ज़्यादा भयानक और विनाशकारी होंगे और इस बचने के बाद ख़ुद उनको और सारी मानवता को जो घाटा होगा, वह इतना ज़्यादा होगा कि इस ज़िम्मेदारी के नतीजे में पेश आनेवाली कठिनाइयां इस घाटे के मुक़ाबले में कोई हैसियत नहीं रखतीं।

---

1. अल-बिदाया वन्निहाया 3/30

4. आख़िरत पर ईमान—जो ऊपर लिखी ज़िम्मेदारी के एहसास को ताक़त पहुंचाने की वजह था। सहाबा किराम रज़ि० इस बात पर अडिग विश्वास रखते थे, उन्हें अपने रब के सामने खड़ा होना है, फिर उनके छोटे-बड़े और मामूली-ग़ैर मामूली हर तरह के कर्मों का हिसाब लिया जाएगा। इसके बाद या तो नेमतों भरी हमेशा की जन्नत होगी या अज़ाब की भड़कती हुई जहन्नम। इस विश्वास का फल यह था कि सहाबा किराम अपनी ज़िंदगी आशा-निराशा की हालत में गुज़ारते थे, यानी अपने पालनहार की रहमत की आशा रखते थे और उसकी सज़ा का डर और उनकी स्थिति वही रहती थी जो इस आयत में बयान की गई है कि—

'वे जो कुछ करते हैं, दिल के इस डर के साथ करते हैं कि उन्हें अपने रब के पास पलट कर जाना है।'

उन्हें इस बात का भी विश्वास था कि दुनिया अपनी सारी नेमतों और मुसीबतों सहित आख़िरत के मुक़ाबले में मच्छर के एक पर के बराबर भी नहीं और यह विश्वास इतना पक्का था कि उसके सामने दुनिया की सारी परेशानियां, मशक़्क़तें और कडुवाहटें तुच्छ थीं, इसलिए वे इन कठिनाइयों और कडुवाहटों को कोई हैसियत नहीं देते थे।

5. बुनियादी बातों पर पक्का यक़ीन—इन्हीं ख़तरों भरे सबसे कठिन और अंधेरे हालात में ऐसी सूरतें और आयतें भी उतर रही थीं, जिनमें बड़े ठोस और आकर्षक ढंग से इस्लाम के बुनियादी उसूलों पर दलीलें जुटाई गई थीं और उस वक़्त इस्लाम की दावत इन्हीं उसूलों के चारों ओर घूम रही थी। इन आयतों में इस्लाम वालों को ऐसी बुनियादी बातें बताई जा रही थीं, जिन पर अल्लाह ने मानवता के सबसे आदर्श और रौनक़दार समाज यानी इस्लामी समाज का गठन तै कर रखा था।

साथ ही इन आयतों में मुसलमानों को धैर्य और जमाव पर उभारा जा रहा था, इसके लिए मिसालें दी जा रही थीं और उसकी हिक्मतें बयान की जाती थीं—

'तुम समझते हो कि जन्नत में चले जाओगे, हालांकि अभी तुम पर उन लोगों जैसी हालत नहीं आई जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं। वे सख़्तियों और बदहालियों से दो चार हुए और उन्हें झिंझोड़ दिया गया, यहां तक कि रसूल और जो लोग उन पर ईमान लाए थे, बोल उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी। सुनो! अल्लाह की मदद क़रीब ही है। (2 : 214)

'अलिफ़-लाम-मीम० क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि उन्हें यह कहने पर छोड़ दिया जाएगा कि हम ईमान लाए और उनकी आज़माइश नहीं की जाएगी! हालांकि इनसे पहले जो लोग थे हमने उनकी आज़माइश की, इसलिए (उनके बारे में भी) अल्लाह यह ज़रूर मालूम करेगा कि किन लोगों ने सच कहा और यह भी ज़रूर मालूम करेगा कि कौन लोग झूठे हैं।' (29 : 1, 2, 3)

और इन्हीं के पहलू ब पहलू ऐसी आयतें भी उतर रही थीं जिनमें विरोधियों और शत्रुओं के मुंहतोड़ जवाब दिए गए थे, उनके लिए कोई हीला छोड़ा नहीं गया था और उन्हें बड़े स्पष्ट और दो टोक शब्दों में बता दिया गया था कि अगर वे अपनी गुमराही और वैर-भाव पर अड़े रहे तो उसके नतीजे कितने संगीन होंगे। इसकी दलील में पिछली क़ौमों की ऐसी घटनाएं और ऐतिहासिक गवाहियां पेश की गई थीं, जिनसे स्पष्ट होता था कि अल्लाह की सुन्नत अपने वलियों के बारे में और अपने दुश्मनों के बारे में क्या है। फिर इस डरावे के साथ-साथ दया व कृपा की बातें भी की जा रही थीं और समझाने-बुझाने और रहनुमाई का हक़ भी अदा किया जा रहा था, ताकि रुकने वाले अपनी खुली गुमराही से रुक सकें।

सच तो यह है कि क़ुरआन मुसलमानों को एक दूसरी ही दुनिया की सैर करा रहा था और उन्हें कायनात में ख़ुदा के ऐसे-ऐसे जलवे दिखा रहा था कि उनके आकर्षण के आगे कोई रुकावट ठहर ही नहीं पा रही थी।

फिर इन्हीं आयतों की तह में मुसलमानों से ऐसे-ऐसे सम्बोधन भी होते थे कि जिनमें पालनहार की ओर से रहमत, ख़ुशी और हमेशा की नेमतों से भरी हुई जन्नत की ख़ुशख़बरी होती थी और ज़ालिम और सरकश दुश्मनों के उन हालात का चित्रण होता था कि वे रब्बुल आलमीन की अदालत में फ़ैसले के लिए खड़े किए जाएंगे। इनकी भलाइयां और नेकियां ज़ब्त कर ली जाएंगी और इन्हें चेहरों के बल घसीट कर यह कहते हुए जहन्नम में फेंक दिया जाएगा कि लो जहन्नम का मज़ा चखो।

6. सफलता की शुभ सूचनाएं—इन सारी बातों के अलावा मुसलमानों को अपनी आज़माइशों के पहले ही दिन से, बल्कि इसके पहले से, मालूम था कि इस्लाम अपनाने का अर्थ यह नहीं है कि हमेशा की मुसीबतें और परेशानियां मोल ले ली गई, बल्कि इस्लामी दावत पहले दिन से अज्ञानता, अज्ञानी और उसकी अन्यायपूर्ण व्यवस्था के ख़ात्मे के इरादे रखती है और इस दावत का एक अहम निशाना यह भी है कि वह धरती पर अपना प्रभाव फैलाए और दुनिया के राजनीतिक क्षितिज पर इस तरह छा जाए कि इंसानी समूह और दुनिया की क़ौमों

को अल्लाह की मर्ज़ी की ओर ले जा सके और उन्हें बन्दों की बन्दगी से निकालकर अल्लाह की बन्दगी में दाख़िल कर सके।

क़ुरआन मजीद में ये शुभ-सूचनाएं, कभी संकेतों में, कभी स्पष्ट शब्दों में, उतरती थीं, चुनांचे एक ओर हालात ये थे कि मुसलमानों पर पूरी धरती अपने सारे फैलाव के बावजूद तंग बनी हुई थी और ऐसा लगता था कि अब वे पनप न सकेंगे, बल्कि उनका मुकम्मल सफ़ाया कर दिया जाएगा, मगर दूसरी ओर इन्हीं हतोत्साह करने वाले हालात में ऐसी आयतों का उतरना भी होता रहता था जिनमें पिछले नबियों की घटनाएं और उनकी क़ौम के झुठलाने और विरोधी रवैया अपनाने का विस्तृत विवरण होता था और इन मामलों में इनका जो चित्र खींचा जाता था, वह ठीक वही होता था जो मक्के के मुसलमानों और दुश्मनों के बीच पाया जाता था।

इसके बाद यह भी बताया जाता था कि इन हालात के नतीजे में किस तरह दुश्मनों और ज़ालिमों को हलाक किया गया और अल्लाह के नेक बन्दों को धरती का वारिस बनाया गया। इस तरह इन आयतों में खुला इशारा होता था कि आगे चलकर मक्का वाले नाकाम व नामुराद रहेंगे और मुसलमान और उनकी इस्लामी दावत सफलता के क़दम चूमेगी।

फिर इन्हीं हालात और दिनों में कुछ ऐसी भी आयतें उतरती थीं जिनमें स्पष्ट रूप से ईमान वालों के ग़लबे की शुभ-सूचना मौजूद होती थी, जैसे इर्शाद है कि—

'अपने भेजे हुए बन्दों के लिए हमारा पहले ही फ़ैसला हो चुका है कि उनकी ज़रूर मदद की जाएगी और यक़ीनन हमारी ही फ़ौज ग़ालिब रहेगी। पस (हे नबी! एक वक़्त तक के लिए तुम उनसे रुख़ फेर लो और उन्हें देखते रहो। बहुत जल्द ये ख़ुद भी देख लेंगे। क्या ये हमारे अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं? तो जब वह उनके आंगन में उतर पड़ेगा, तो डराए गए लोगों की सुबह बुरी हो जाएगी।' (37 : 171-177)

साथ ही यह भी कहा गया—

'बहुत जल्द इस दल को परास्त कर दिया जाएगा और ये लोग पीठ फेरकर भागेंगे।' (54 : 45)

'यह जत्थों में से एक मामूली-सा जत्था है, जिसे यहां परास्त कर दिया जाएगा।' (38 : 11)

हब्शा हिजरत करने वालों के बारे में इर्शाद हुआ—

'जिन लोगों ने मज़्लूमियत (उत्पीड़न) के बाद अल्लाह की राह में हिजरत की, हम उन्हें यक़ीनन दुनिया में बेहतरन ठिकाना देंगे और आख़िरत का बदला बहुत बड़ा है, अगर लोग जानें।' (16 : 41)

इसी तरह कुफ़्फ़ार ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बारे में जानकारी चाही, तो जवाब में यह आयत उतरी—

'यूसुफ़ और उनके भाइयों (की घटना) में पूछने वालों के लिए निशानियां हैं।' (12 : 7)

यानी मक्का वाले जो आज हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की घटना पूछ रहे हैं, ये ख़ुद भी उसी तरह असफल होंगे, जिस तरह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई असफल हुए थे और उनके हथियार डालने का हाल वही होगा, जो उनके भाइयों का हुआ था। इन्हें हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और उनके भाइयों की घटना से सबक़ लेना चाहिए कि ज़ालिम का अंजाम क्या होता है।

एक जगह पैग़म्बरों का उल्लेख करते हुए कहा गया—

'कुफ़्फ़ार ने अपने पैग़म्बरों से कहा कि हम तुम्हें अपनी ज़मीन से ज़रूर निकाल देंगे या यह कि तुम हमारी मिल्लत में वापस आ जाओ। इस पर उनके रब ने उनके पास वह्य भेजी कि हम ज़ालिमों को यक़ीनन हलाक कर देंगे। यह (वायदा) है उस व्यक्ति के लिए जो मेरे पास खड़े होने से डरे और मेरी धमकियों से डरे।' (14 : 13-14)

इसी तरह जित वक़्त फ़ारस व रूम में लड़ाई के शोले भड़क रहे थे और कुफ़्फ़ार चाहते थे कि फ़ारसी ग़ालिब आ जाएं, क्योंकि फ़ारसी मुश्रिक थे और मुसलमान चाहते थे कि रूमी ग़ालिब आ जाएं, क्योंकि रूमी बहरहाल अल्लाह पर, पैग़म्बरों पर, वह्य पर, आसमानी किताबों पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखने के दावेदार थे, लेकिन ग़लबा फ़ारसियों को होता जा रहा था, तो उस वक़्त अल्लाह ने यह ख़ुशख़बरी दी कि कुछ वर्षों बाद रूमी ग़ालिब आ जाएंगे, लेकिन उस एक ख़ुशख़बरी पर बस न किया, बल्कि इसी के साथ यह ख़ुशख़बरी भी दी कि रूमियों के ग़लबे के वक़्त अल्लाह ईमान वालों की भी ख़ास मदद फ़रमाएगा, जिससे वे ख़ुश हो जाएंगे। चुनांचे इर्शाद है—

'उस दिन ईमान वाले भी अल्लाह की (एक ख़ास) मदद से ख़ुश हो जाएंगे।' (30 : 4-5)

(और आगे चलकर अल्लाह की यह मदद बद्र की लड़ाई में मिलने वाली

भारी सफलता और विजय के रूप में सामने आई।)

क़ुरआन के अलावा ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी मुसलमानों को कभी-कभी इस तरह की ख़ुशख़बरी सुनाया करते थे, चुनांचे हज के मौसम में आप उकाज़, मजना और ज़ुलमजाज़ के बाज़ारों में लोगों के अन्दर दीन का पैग़ाम पहुंचाने के लिए तशरीफ़ ले जाते, तो सिर्फ़ जन्नत ही की ख़ुशख़बरी नहीं देते थे, बल्कि दो टोक शब्दों में इसका भी एलान फ़रमाते थे—

'लोगो ! ला इला-ह इल्लल्लाहु कहो, सफल रहोगे और इसकी बुनियाद पर अरब के बादशाह बन जाओगे और इसकी वजह से अजम भी तुम्हारे क़दमों में आ जाएगा। फिर जब वफ़ात पा जाओगे तो जन्नत के अन्दर बादशाह रहोगे।'[1]

यह घटना पिछले पन्नों में आ चुकी है कि जब उत्बा बिन रबीआ ने आपको दुनिया की पूंजी की पेशकश करके सौदेबाज़ी करनी चाही और आपने जवाब में हा-मीम तंज़ील अस्सज्दा की आयतें पढ़कर सुनाईं तो उत्बा को यह आशा हो गई कि अन्ततः आप ग़ालिब रहेंगे।

इसी तरह अबू तालिब के पास आने वाले क़ुरैश के आख़िरी दल से आपकी जो बातें हुई थीं, उसका भी विवरण बीत चुका है। इस मौक़े पर भी आपने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि आप उनसे सिर्फ़ एक बात चाहते हैं, जिसे वे मान लें तो अरब उनके अधीन आ जाएं और अजम पर उनकी बादशाही क़ायम हो जाए।

हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त का इर्शाद है कि एक बार मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप काबे के साए में एक चादर को तकिया बनाए तशरीफ़ फ़रमा थे। उस वक़्त हम मुश्रिकों के हाथों सख़्ती से दो चार थे। मैंने कहा—

'क्यों न आप अल्लाह से दुआ फ़रमाएं?'

यह सुनकर आप उठ बैठे। आपका चेहरा लाल हो गया और आपने फ़रमाया, जो लोग तुमसे पहले थे, उनकी हड्डियों तक में गोश्त और अंगों के साथ लोहे की कंघियां कर दी जाती थीं, लेकिन यह सख़्ती भी उन्हें दीन पर चलने से रोक न पाती थी।'

फिर आपने फ़रमाया, अल्लाह इस दीन को मुकम्मल करके रहेगा, यहां तक कि एक सवार सनआ से हज़्र मौत तक जाएगा और उसे अल्लाह के सिवा किसी का डर न होगा। अलबत्ता बकरी पर भेड़िए का डर होगा।[2]

---

1. इब्ने साद 1/216
2. सहीह बुख़ारी 1/543

एक रिवायत में इतना और भी है कि—

'लेकिन तुम लोग जल्दी कर रहे हो।'[1]

याद रहे कि ये ख़ुशख़बरियां कुछ ढकी-छिपी न थीं, बल्कि काफ़ी मशहूर थीं और मुसलमानों ही की तरह कुफ़्फ़ार भी इन्हें जानते थे। चुनांचे जब अस्वद बिन अब्दुल मुत्तलिब और उसके साथी सहाबा किराम को देखते तो ताने देते हुए आपस में कहते कि लीजिए, आपके पास धरती के बादशाह आ गए हैं। यह जल्द ही क़ैसर व किसरा के बादशाहों पर ग़ालिब आ जाएंगे। इसके बाद वे सीटियां और तालियां बजाते।[2]

बहरहाल सहाबा किराम के ख़िलाफ़ उस वक़्त ज़ुल्म व सितम और मुसीबतों और तक्लीफ़ों का भारी-भरकम तूफ़ान आया हुआ था, उसकी हैसियत जन्नत हासिल करने की इन यक़ीनी उम्मीदों और रोशन भविष्य की उन ख़ुशख़बरियों के मुक़ाबले में उस बादल से ज़्यादा न थी, जो हवा के एक ही झोंके से बिखरकर फट जाता है।

इसके अलावा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ईमान वालों को ईमानी चाहतों के ज़रिए बराबर रूहानी भोजन जुटा रहे थे। किताब व हिक्मत की तालीम के ज़रिए उनके नफ़्स को पाक कर रहे थे। बड़ी शानदार और गहरी तर्बियत दे रहे थे और रूह की ऊंचाई, दिल की सफ़ाई, अख़्लाक़ की पाकी, माद्दी ग़लबे से आज़ादी, वासनाओं से मुक्ति रब की ओर खिंचाव जैसी ख़ूबियों को परवान चढ़ा रहे थे। आप उनके दिलों की बुझती हुई चिंगारी को भड़कते हुए शोलों में तब्दील कर देते थे और उन्हें अंधेरों से निकालकर हिदायत की रोशनी में पहुंचा रहे थे। उन्हें पीड़ाओं पर धीरज से काम लेने को कह रहे थे।

इसका नतीजा यह था कि उनकी दीनी मज़बूती हर दिन बढ़ती चली गई और वे अपनी ख़्वाहिशों के पीछे भागने से बचने, ख़ुदा की रिज़ा के लिए जान दे देने, जन्नत के शौक़, ज्ञान का लोभ, दीन की समझ, नफ़्स की पकड़, भावनाओं को दबाने, रुझानों को मोड़ने, उग्रता की लहरों पर क़ाबू पाने और सब्र व सुकून और मान-मर्यादा की पाबन्दी करने में मानवता का आदर्श बन गए।

---

1. सहीह बुख़ारी 1/510
2. अस्सीरतुल हलबीया 1/511, 512

तीसरा मरहला

मक्का के बाहर इस्लाम की दावत

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तायफ़ में

शव्वाल सन् 10 नबवी (मई का अन्त या जून 619 ई० का शुरू) में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ताइफ़ तशरीफ़ ले गए। यह मक्के से एक सौ तीस किलोमीटर से ज़्यादा दूर है। आपने यह दूरी आते-जाते पैदल तै फ़रमाई थी। आपके साथ आपके आज़ाद किए हुए दास हज़रत ज़ैद बिन हारिसा थे।

रास्ते में जिस क़बीले से गुज़र होता, उसे इस्लाम की दावत देते, लेकिन किसी ने भी यह दावत कुबूल नहीं की। जब ताइफ़ पहुंचे तो क़बीला सक़ीफ़ के तीन सरदारों के पास तशरीफ़ ले गए, जो आपस में भाई थे और जिनके नाम ये थे—

अब्दिया लैल, मस्ऊद और हबीब।

इन तीनों के पिता का नाम अम्र बिन उमैर सक़फ़ी था।

आपने उनके पास बैठने के बाद उन्हें अल्लाह की इताअत और इस्लाम की मदद की दावत दी। जवाब में एक ने कहा—

'वह काबे का परदा फाड़े अगर अल्लाह ने तुम्हें रसूल बनाया हो।'[1]

दूसरे ने कहा, 'क्या अल्लाह को तुम्हारे अलावा और कोई न मिला?'

तीसरे ने कहा, 'मैं तुमसे हरगिज़ बात न करूंगा। अगर तुम वाक़ई पैग़म्बर हो तो तुम्हारी बात रद्द करना मेरे लिए बहुत ही ख़तरनाक है और अगर तुमने अल्लाह पर झूठ गढ़ रखा है, तो फिर मुझे तुमसे बात करनी ही नहीं चाहिए।'

यह जवाब सुनकर आप वहां से उठ खड़े हुए और सिर्फ़ इतना कहा—

'तुम लोगों ने जो कुछ किया, बहरहाल इसे छिपाए रखना।'

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ताइफ़ में दस दिन ठहरे रहे। इस बीच आप उनके एक-एक सरदार के पास तशरीफ ले गए और हर एक से बात की, लेकिन सबका एक ही जवाब था कि तुम हमारे शहर से निकल जाओ, बल्कि

---

1. यह उर्दू के उस मुहावरे से मिलता-जुलता है कि 'अगर तुम पैग़म्बर हो, तो अल्लाह मुझे ग़ारत करे।' अभिप्राय यह विश्वास व्यक्त करना है कि तुम्हारा पैग़म्बर होना नामुम्किन है, जैसे काबे के परदे पर हाथ डालना नामुम्किन है।

उन्होंने अपने गुंडों को उभार दिया।

चुनांचे जब आपने वापसी का इरादा किया, तो ये गुंडे गालियां देते, तालियां पीटते और शोर मचाते आपके पीछे लग गए और देखते-देखते इतनी भीड़ जमा हो गई कि आपके रास्ते के दोनों ओर लाइन लग गई। फिर गालियों और अपशब्दों के साथ-साथ पत्थर भी चलने लगे, जिससे आपकी एड़ी पर इतने घाव आए कि दोनों जूते ख़ून में तर ब तर हो गये।

इधर हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० ढाल बनकर पत्थरों को रोक रहे थे, जिससे उनके सर में कई जगह चोट आई। बदमाशों ने यह सिलसिला बराबर जारी रखा, यहां तक कि आपको रबीआ के बेटों उत्बा और शैबा के एक बाग़ में पनाह लेने पर मजबूर कर दिया। यह बाग़ ताइफ़ से तीन मील की दूरी पर स्थित था।

जब आपने यहां पनाह ली तो भीड़ वापस चली गई और आप एक दीवार से टेक लगाकर अंगूर की बेल के साए में बैठ गए। कुछ इत्मीनान हुआ तो दुआ फ़रमाई, जो 'कमज़ोरों की दुआ' के नाम से मशहूर है। इस दुआ के एक-एक वाक्य से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि ताइफ़ में इस दुष्टता को भोगने के बाद और किसी एक भी व्यक्ति के ईमान न लाने की वजह से आपका दिल कितना टूटा होगा और आपका मन दुख और अफ़सोस की भावनाओं से कितना भर गया होगा। आपने फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह! मैं तुझी से अपनी कमज़ोरी, बेबसी और लोगों के नज़दीक अपनी बे-क़द्री का शिकवा करता हूं, ऐ दया करने वालों में सबसे बड़े दया करने वाले! तू कमज़ोरों का रब है और तू ही मेरा भी रब है, तू मुझे किसके हवाले कर रहा है? क्या किसी बेगाने के, जो मेरे साथ दुव्यर्वहार करे या किसी दुश्मन के, जिसको तूने मेरे मामले का मालिक बना दिया है? अगर मुझ पर तेरा ग़ज़ब नहीं है तो मुझे कोई परवाह नहीं। लेकिन मेरी कुशलता का द्वार मेरे लिए ज़्यादा खुला हुआ है। मैं तेरे चेहरे के उस नूर की पनाह चाहता हूं जिससे अंधेरे जगमगा उठें और जिस पर दुनिया व आख़िरत के मामले ठीक हुए कि तू मुझ पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करे या तेरा गुस्सा मुझ पर उतरे। तेरी ही रज़ा मुझे चाहिए, यहां तक कि तू ख़ुश हो जाए और तेरे बिना कोई ज़ोर और ताक़त नहीं।'

इधर आपको रबीआ के बेटों ने इस हालत में देखा तो उनकी रिश्तेदारी की भावना ने जोश मारा और उन्होंने अपने एक ईसाई दास को, जिसका नाम अदास था, बुलाकर कहा कि इस अंगूर से एक गुच्छा लो और उस व्यक्ति को दे

आओ। जब उसने अंगूर आपको दिया, तो आपने 'बिस्मिल्लाह' कहकर हाथ बढ़ाया और खाना शुरू किया।

अदास ने कहा, 'यह वाक्य तो इस क्षेत्र के लोग नहीं बोलते?'

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, तुम कहां के रहने वाले हो? और तुम्हारा दीन क्या है?

उसने कहा, 'मैं ईसाई हूं और नैनवा का रहने वाला हूं।'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अच्छा, तुम भले व्यक्ति यूनुस बिन मत्ती की बस्ती के रहने वाले हो।

उसने कहा, आप यूनुस बिन मत्ती को कैसे जानते हैं?

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, वह मेरे भाई थे, वह नबी थे और मैं भी नबी हूं।

यह सुनकर अदास नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर झुक पड़ा और आपके सर और हाथ-पांव को बोसा दिया।

यह देखकर रबीआ के दोनों बेटों ने आपस में कहा, लो, अब इस व्यक्ति ने हमारे दास को बिगाड़ दिया।

इसके बाद जब अदास वापस आया तो दोनों ने उससे कहा, अजी! यह क्या मामला था?

उसने कहा, मेरे मालिक! धरती पर इस व्यक्ति से बेहतर और कोई नहीं। उसने मुझे एक ऐसी बात बताई है जिसे नबी के सिवा कोई नहीं जानता।

इन दोनों ने कहा, देखो अदास, कहीं यह व्यक्ति तुम्हें दीन से फेर न दे, क्योंकि तुम्हारा दीन इसके दीन से बेहतर है।[1]

थोड़ा ठहर कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाग़ से निकले तो मक्का के रास्ते पर चल पड़े। दुख व पीड़ा से तबियत निढाल और दिल टुकड़े-टुकड़े था। क़र्नेमनाज़िल पहुंचे तो अल्लाह के हुक्म से हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए। उनके साथ पहाड़ों का फ़रिश्ता था। वह आपसे यह निवेदन करने आया था कि आप हुक्म दें तो वह मक्का वालों को दो पहाड़ों के बीच पीस डाले।

इस घटना को सविस्तार सहीह बुख़ारी में हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत किया गया है। उनका बयान है कि उन्होंने एक दिन अल्लाह के रसूल

1. ख़ुलासा इब्ने हिशाम 1/419, 421

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मालूम किया कि क्या आप पर कोई दिन ऐसा भी आया है जो उहुद के दिन से ज़्यादा संगीन रहा हो?

आपने फ़रमाया, हां। तुम्हारी क़ौम से मुझे जिन-जिन मुसीबतों का सामना करना पड़ा, उनमें सबसे संगीन मुसीबत वह थी, जिसमें मैं घाटी के दिन दो चार हुआ, जब मैंने अपने आपको अब्दिया लैल बिन अब्दे कुलाल के लड़के पर पेश किया, मगर उसने मेरी बात न मानी, तो मैं दुख और पीड़ा से निढाल अपने रुख़ पर चल पड़ा और मुझे क़र्नें सआलिब पहुंचकर ही सुकून हुआ। वहां मैंने सर उठाया तो क्या देखता हूं कि बादल का एक टुकड़ा मुझ पर छाया हुआ है।मैंने ध्यान से देखा तो उसमें हज़रत जिब्रील थे। उन्होंने मुझे पुकारकर कहा—

आपकी क़ौम ने आपको जो बात कही, अल्लाह ने उसे सुन लिया है। अब उसने आपके पास पहाड़ों का फ़रिश्ता भेजा है, ताकि आप उनके बारे में उन्हें जो चाहें हुक्म दें।

इनके बाद पहाड़ों के फ़रिश्ते ने मुझे आवाज़ दी और सलाम करने के बाद कहा—

ऐ मुहम्मद सल्ल० ! बात यही है। अब आप जो चाहें. . . . अगर चाहें कि मैं इन्हें दो पहाड़ों[1] के बीच कुचल दूं, तो ऐसा ही होगा।

नबी सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, बल्कि मुझे उम्मीद है कि अल्लाह उनकी पीठ से ऐसी नस्ल पैदा करेगा जो सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करेगी और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराएगी।[2]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस जवाब में आपकी महानता और चरित्र की श्रेष्ठता की झलक देखी जा सकती है। बहरहाल अब सात आसमानों के ऊपर से आने वाली इस ग़ैबी (अप्रत्यक्ष) मदद की वजह से आपका दिल सन्तुष्ट हो गया और दुख व कष्ट के बादल छंट गये। चुनांचे आप मक्के के रास्ते पर और आगे बढ़े और नख़्ला की घाटी में ठहरे।

---

1. इस मौक़े पर सहीह बुख़ारी में शब्द 'अख़्शबीन' इस्तेमाल किया गया है, जो मक्का के दो मशहूर पहाड़ों अबू क़ुबीस और क़ैक़आन के लिए बोला जाता है। ये दोनों पहाड़ क्रमवार हरम के दक्षिण-उत्तर में आमने-सामने स्थित हैं। उस वक़्त मक्के की आम आबादी इन्हीं दो पहाड़ों के बीच में थी।
2. सहीह बुख़ारी किताब ब-दअल ख़ल्क़ 1/458, मुस्लिम बाब मालक़ियन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मन अज़ल मुश्रिकीन वल मुनाफ़िक़ीन 2/109

यहां दो जगहें ठहरने लायक हैं—एक अस्सैलुल कबीर और दूसरे ज़ैमा, क्योंकि दोनों ही जगह पानी और हरियाली मौजूद हैं, लेकिन किसी स्रोत से यह न मालूम हो सका कि आप इनमें से किस जगह ठहरे थे।

नख़्ला की घाटी में आप कुछ दिन ठहरे रहे। इस बीच अल्लाह ने आपके पास जिन्नों का एक दल भेजा[1] जिसका उल्लेख क़ुरआन मजीद में दो जगह हुआ है। एक सूरः अहक़ाफ़ में, दूसरे सूरः जिन्न में। सूरः अहक़ाफ़ की आयतें ये हैं—

'और जबकि हमने आपकी ओर जिन्नों के एक गिरोह को फेरा कि वे क़ुरआन सुनें, तो जब वे क़ुरआन (की तिलावत) की जगह पहुंचे तो उन्होंने आपस में कहा कि चुप हो जाओ। फिर जब उसकी तिलावत पूरी की जा चुकी, तो वे अपनी क़ौम की ओर अज़ाबे इलाही से डराने वाले बनकर पलटे। उन्होंने कहा, ऐ हमारी क़ौम! हमने एक किताब सुनी है जो मूसा के बाद उतारी गई है, अपने से पहले की तस्दीक़ करने वाली है, हक़ और सीधे रास्ते की ओर रहनुमाई करती है। ऐ हमारी क़ौम! अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात मान लो और उस पर ईमान ले आओ, अल्लाह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचाएगा।' (46 : 29-31)

सूरः जिन्न की आयतें ये हैं—

'आप कह दें, मेरी ओर यह वह्य की गई है कि जिन्नों की एक जमाअत ने क़ुरआन सुना, और आपस में कहा कि हमने एक विचित्र क़ुरआन सुना है जो सीधी रहनुमाई करता है। हम उस पर ईमान लाए हैं और हम अपने रब के साथ किसी को हरगिज़ शरीक नहीं कर सकते।' (सूरः जिन्न की 15 आयतों तक)

ये आयतें जो इस घटना का उल्लेख कर रही हैं, इनके आगे-पीछे पढ़ने से लगता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शुरू में जिन्नों के इस दल के आने का ज्ञान न हो सका था, बल्कि जब इन आयतों के ज़रिए अल्लाह की ओर से आपको ख़बर दी गई तब आप जान सके। यह भी मालूम होता है कि जिन्नों का यह आना पहली बार हुआ था और हदीसों से पता चलता है कि इसके बाद उनका आना-जाना होता रहा।

जिन्नों के आने और उनके इस्लाम स्वीकार करने की घटना वास्तव में अल्लाह की ओर से दूसरी मदद थी, जो उसने अपने परदे की तहों में छिपे ख़ज़ाने से इस

---

1. देखिए सहीह बुख़ारी, किताबुस्सलात, बाबु अल जहरु बिक़िराति सलातिल फ़ज्रि 1/195

दल के ज़रिए फ़रमाई थी, जिसका ज्ञान अल्लाह के सिवा किसी को नहीं। फिर इस घटना के ताल्लुक़ से जो आयतें उतरीं, उनके बीच में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत की कामियाबी की ख़ुशख़बरियां भी हैं और इस बात की व्याख्या भी कि सृष्टि की कोई भी ताक़त इस दावत की कामियाबी के रास्तों में रुकावट नही हो सकती, चुनांचे इर्शाद है—

'जो अल्लाह की ओर बुलाने वाले की दावत न क़ुबूल करे, वह ज़मीन में (अल्लाह को) बेबस नहीं कर सकता और अल्लाह के सिवा उसका कोई कर्त्ता-धर्त्ता है भी नहीं और ऐसे लोग खुली हुई गुमराही में हैं।' (46 : 32)

'हमारी समझ में आ गया है कि हम अल्लाह को ज़मीन में बेबस नहीं कर सकते और न हम भाग कर ही उसे (पकड़ने में) विवश कर सकते हैं।'

(72 : 12)

इस मदद और इन ख़ुशख़बरियों के सामने दुख, कष्ट और निराशा के वे सारे बादल छट गए जो ताइफ़ से निकलते वक़्त गालियां और तालियां सुनने और पत्थर खाने की वजह से आप पर छाए गए थे। आपने पक्का इरादा कर लिया कि अब मक्का पलटना है और नए सिरे से इस्लाम की दावत और रिसालत की तब्लीग़ के काम में चुस्ती और मुस्तैदी के साथ लग जाना है। यही मौक़ा था जब हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० ने आपसे कहा कि आप मक्का कैसे जाएंगे, जबकि वहां के रहने वालों ने यानी क़ुरैश ने आपको निकाल दिया है?

जवाब में आपने फ़रमाया, ऐ ज़ैद! तुम जो हालत देख रहे हो, अल्लाह उससे बचाने और नया रास्ता बनाने की कोई शक्ल ज़रूर पैदा करेगा। अल्लाह यक़ीनन अपने दीन की मदद करेगा और अपने नबी को ग़ालिब फ़रमाएगा।

आख़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहां से रवाना हुए और मक्के के क़रीब पहुंच कर हिरा पहाड़ी के दामन में ठहर गए। फिर ख़ुज़ाआ के एक आदमी के ज़रिए अख़नस बिन शुरैक़ को यह सन्देश भेजा कि वह आपको पनाह दे दे, पर अख़नस ने यह कहकर विवशता दिखाई कि मैं क़ुरैश का मित्र हूं और मित्र पनाह देने का अधिकार नहीं रखता।

इसके बाद आपने सुहैल बिन अम्र के पास यही सन्देश भेजा, पर उसने भी यह कहकर विवशता दिखाई कि बनू आमिर की दी हुई पनाह बनू काब पर लागू नहीं होती।

इसके बाद आपने मुतइम बिन अदी के पास पैग़ाम भेजा।

मुतइम ने कहा, हां। और फिर हथियार पहनकर अपने बेटों और क़ौम के

लोगों को बुलाया और कहा कि तुम लोग हथियार बांध कर ख़ाना काबा के कोनों में जमा हो जाओ, क्योंकि मैंने मुहम्मद सल्ल० को पनाह दे दी है।

इसके बाद मुतइम ने रसूलुल्लाह सल्ल० के पास पैग़ाम भेजा कि मक्के के अन्दर आ जाओ।

आप पैग़ाम पाने के बाद हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को साथ लेकर मक्का तशरीफ़ लाए और मस्जिदे हराम में दाख़िल हो गए। इसके बाद मुतइम बिन अदी ने अपनी सवारी पर खड़े होकर एलान किया कि क़ुरैश के लोगो! मैंने मुहम्मद को पनाह दे दी है, अब उसे कोई न छेड़े।

इधर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सीधे हजरे अस्वद के पास पहुंचे, उसे चूमा, फिर दो रक्अत नमाज़ पढ़ी और अपने घर को पलट आए। इस बीच मुतइम बिन अदी और उनके लड़कों ने हथियार बन्द होकर आपके चारों ओर हलक़ा उस वक़्त तक बांधे रखा, जब तक कि आप अपने मकान के अन्दर तशरीफ़ न ले गए।

कहा जाता है कि इस मौक़े पर अबू जह्ल ने मुतइम से पूछा था, तुमने पनाह दी है या पैरवी करने वाले (यानी मुसलमान) बन गए हो?

मुतइम ने जवाब दिया था, पनाह दी है।

इस जवाब को सुनकर अबू जह्ल ने कहा था, जिसे तुमने पनाह दी, उसे हमने भी पनाह दी।[1]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुतइम बिन अदी के सद्व्यवहार को कभी न भुलाया, चुनांचे बद्र में जब मक्का के कुफ़्फ़ार की एक बड़ी तायदाद क़ैद होकर आई और कुछ क़ैदियों की रिहाई के लिए हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ि० आपकी सेवा में आए, तो आपने फ़रमाया—

'अगर मुतइम बिन अदी ज़िंदा होता, फिर मुझसे इन बदबूदार लोगों के बारे में बातें करता, तो उसके लिए मैं इन सबको छोड़ देता।'[2]

---

1. इब्ने हिशाम 1/381 (संक्षिप्त), ज़ादुल मआद 2/46, 47
2. सहीह बुख़ारी 2/573

क़बीलों और व्यक्तियों को इस्लाम की दावत

ज़ीक़ादा 10 नबवी (सन् 619 ई० के जून का आख़िरी हिस्सा या जुलाई का शुरूका हिस्सा) में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ताइफ़ से मक्का तशरीफ़ लाए और यहां क़बीलों और व्यक्तियों को फिर से इस्लाम की दावत देनी शुरू की। चूंकि हज का मौसम क़रीब था, इसलिए हज अदा करने, अपने मुनाफ़े और अल्लाह की याद के लिए दूर व नज़दीक हर जगह से पैदल और सवारों का आना शुरू हो चुका था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मौक़े को ग़नीमत समझा और एक-एक क़बीले के पास जाकर उसे इस्लाम की दावत दी, जैसा कि नुबूवत के चौथे साल से आपका तरीक़ा था। अलबत्ता इस दसवें साल से आपने यह भी चाहा कि वह आपको ठिकाना जुटाएं, आपकी सहायता करें और आपकी रक्षा करें, यहां तक कि अल्लाह की दी हुई बात का आप प्रचार कर सकें।

वे क़बीले, जिन्हें इस्लाम की दावत दी गई

इमाम ज़ोहरी रह० फ़रमाते हैं कि जिन क़बीलों के पास अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले गए और उन्हें इस्लाम की दावत देते हुए अपने आपको उन पर पेश किया, उनमें नीचे लिखे क़बीलों के नाम हमें बताए गए हैं—

बनू आमिर बिन सासआ, मुहारिब बिन ख़सफ़ा, फ़ज़ारा, ग़स्सान, मुर्रा, हनीफ़ा, सुलैम, अबस, बनू नस्र, बनुल बका कन्दा, कल्ब, हारिस बिन काब, उज़रा, हज़ारमा, लेकिन इनमें से किसी ने भी इस्लाम क़ुबूल न किया।[1]

स्पष्ट रहे कि इमाम ज़ोहरी के उल्लिखित इन सारे क़बीलों पर एक ही साल या हज के एक ही मौसम में इस्लाम नहीं पेश किया गया था, बल्कि नुबूवत के चौथे साल से हिजरत से पहले के हज के आख़िरी मौसम तक दस साल की इस मुद्दत में पेश किया गया था और किसी निश्चित वर्ष में किसी निश्चित क़बीले पर इस्लाम पेश करने के समय को निश्चित नहीं किया जा सकता, अलबत्ता अधिकतर क़बीलों के पास आप दसवें साल तशरीफ़ ले गए।[2]

---

1. तिर्मिज़ी, मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 149
2. देखिए रहमतुल लिल आलमीन 1/74

इब्ने इस्हाक़ ने कुछ क़बीलों पर इस्लाम की पेशी और उनके जवाब का भी उल्लेख किया है। नीचे संक्षेप में उनका बयान नक़ल किया जा रहा है—

1. बनू कल्ब—नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस क़बीले की एक शाखा बनू अब्दुल्लाह के पास तशरीफ़ ले गए। उन्हें अल्लाह की ओर बुलाया और अपने आपको उन पर पेश किया। बातों-बातों में यह भी फ़रमाया कि ऐ बनू अब्दुल्लाह! अल्लाह ने तुम्हारे परदादा का नाम बहुत अच्छा रखा था, लेकिन उस क़बीले ने आपकी दावत क़ुबूल न की।

2. बनू हनीफ़ा—आप इनके डेरे पर तशरीफ़ ले गए। इन्हें अल्लाह की ओर बुलाया और अपने आपको उन पर पेश किया, लेकिन उनके जैसा बुरा जवाब अरबों में से किसी ने भी न दिया।

3. आमिर बिन सासआ—इन्हें भी आपने अल्लाह की ओर दावत दी और अपने आपको उन पर पेश किया। जवाब में उनके एक आदमी बुहैरा बिन फ़रास ने कहा, ख़ुदा की क़सम! अगर मैं क़ुरैश के इस जवान को ले लूं, तो इसके ज़रिए पूरे अरब को खा जाऊंगा।

फिर उसने पूछा, अच्छा यह बताइए, अगर हम आपसे आपके इस दीन पर बैअत (वचन) कर लें, फिर अल्लाह आपको विरोधियों पर ग़लबा दे दे, तो क्या आपके बाद सत्ता हमारे हाथ में होगी?

आपने फ़रमाया, सत्ता तो अल्लाह के हाथ में है, वह जहां चाहेगा, रखेगा।

इस पर उस व्यक्ति ने कहा, ख़ूब, आपकी रक्षा में तो हमारा सीना अरबों के निशाने पर रहे, लेकिन जब अल्लाह आपको ग़लबा दे, तो सत्ता किसी और के हाथ में हो। हमें आपके दीन की ज़रूरत नहीं, ग़रज़ उन्होंने इंकार कर दिया।

इसके बाद जब क़बीला बनू आमिर अपने इलाक़े में वापस गया, तो अपने एक बूढ़े आदमी को, जो बुढ़ापे की वजह से हज में शरीक न हो सका था, सारा क़िस्सा सुनाया, और बताया कि हमारे पास क़ुरैश क़बीले के ख़ानदान बनू अब्दुल मुत्तलिब का एक जवान आया था, जिसका ख़्याल था कि वह नबी है। उसने हमें दावत दी कि हम उसकी हिफ़ाज़त करें और उसका साथ दें और अपने इलाक़े में ले आएं।

यह सुनकर उस बूढ़े ने दोनों हाथों से सर थाम लिया और बोला—

'ऐ बनू आमिर! क्या अब इस क्षतिपूर्ति का कोई रास्ता है? और क्या उस व्यक्ति को ढूंढा जा सकता है? उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में फ़्लां की

जान है, किसी इस्माईली ने कभी इस (नुबूवत) का झूठा दावा नहीं किया। यह यक़ीनन हक़ है, आख़िर तुम्हारी अक़्ल कहां चली गई थी ?[1]

ईमान की किरणें मक्के से बाहर

जिस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़बीलों और समूहों पर इस्लाम पेश किया, उसी तरह व्यक्तियों को भी इस्लाम की दावत दी और कुछ ने अच्छा जवाब भी दिया। फिर हज के इस मौसम के कुछ ही दिनों बाद कई लोगों ने इस्लाम क़ुबूल किया। नीचे उनकी एक 'छोटी सी झलक पेश की जा रही है।

1. सुवैद बिन सामित—यह कवि थे, गहरी सूझ-बूझ वाले, यसरिब के रहने वाले, इनके उच्चकोटि के कवि होने और श्रेष्ठ वंश के व्यक्ति होने की वजह से इनकी क़ौम ने इन्हें 'कामिल' की उपाधि दी थी। यह हज या उमरा के लिए तशरीफ़ ले आए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन्हें इस्लाम की दावत दी, कहने लगे—

'शायद आपके पास जो कुछ है, वह वैसा ही है, जैसा मेरे पास है !'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम्हारे पास क्या है ?

सुवैद ने कहा, 'लुक़मान की हिक्मत !'

आपने फ़रमाया, पेश करो।

उन्होंने पेश किया। आपने फ़रमाया—

'यह कलाम यक़ीनन अच्छा है, लेकिन मेरे पास जो कुछ है, वह इससे भी अच्छा है। वह क़ुरआन है, जो अल्लाह ने मुझ पर उतारा है, वह हिदायत और नूर है।' इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें क़ुरआन पढ़कर सुनाया और इस्लाम की दावत दी।

उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और बोले, यह तो बहुत ही अच्छा कलाम है।

इसके बाद वह मदीना पलट कर आए ही थे कि बुआस की लड़ाई से पहले औस व ख़ज़रज की एक लड़ाई में क़त्ल कर दिए गए।[2]

उन्होंने सन् 11 नबवी के शुरू में इस्लाम कुबलू किया था।

---

1. इब्ने हिशाम 1/424-425
2. इब्ने हिशाम 1/425-427, अल-इस्तीआब 2/677, असदुल ग़ाबा 2/337

2. इयास बिन मुआज़—यह भी यसरिब के रहने वाले थे और थे नवयुवक। सन् 11 नबवी में बुआस की लड़ाई से कुछ पहले औस का एक प्रतिनिधि मंडल ख़ज़रज के ख़िलाफ़ क़ुरैश से मिताई करने मक्का आया था। आप भी उसके साथ तशरीफ़ लाए थे। उस वक़्त यसरिब में इन दोनों क़बीलों के दर्मियान दुश्मनी की आग भड़क रही थी और औस की तायदाद ख़ज़रज से कम थी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को प्रतिनिधि मंडल के आने का ज्ञान हुआ, तो आप उनके पास तशरीफ़ ले गए और उनके बीच बैठकर यों कहा—

'आप लोग जिस मक़्सद के लिए तशरीफ़ लाए हैं, क्या इससे बेहतर चीज़ क़ुबूल कर सकते हैं?'

उन सबने कहा, वह क्या चीज़ है?

आपने फ़रमाया, 'मैं अल्लाह का रसूल हूं। अल्लाह ने मुझे अपने बन्दों के पास इस बात की दावत देने के लिए भेजा है कि वे अल्लाह की इबादत करें और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करें। अल्लाह ने मुझ पर किताब भी उतारी है।'

फिर आपने इस्लाम का ज़िक्र किया और क़ुरआन की तिलावत फ़रमाई।

इयास बिन मुआज़ बोले, 'ऐ क़ौम! यह अल्लाह की क़सम, उससे बेहतर है जिसके लिए आप लोग यहां तशरीफ़ लाए हैं, लेकिन दल के एक सदस्य अबुल हैसर अनस बिन राफ़ेअ ने एक मुट्ठी कंकड़ी उठाकर इयास के मुंह पर दे मारी और बोला—

'यह बात छोड़ो, मेरी उम्र की क़सम! यहां हम इसके बजाए दूसरे मक़्सद से आए हैं।'

इयास चुप हो गये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी उठ गए। दल क़ुरैश के साथ मैत्री समझौता करने में सफल न हो सका और यों ही नाकाम मदीना वापस हो गया।

मदीना पहुंचने के थोड़े दिनों बाद इयास इंतिक़ाल कर गए। वह अपनी वफ़ात के वक़्त तक्बीर व तह्लील और हम्द व तस्बीह (रब के गुणगान वाले शब्द हैं) कर रहे थे। इसलिए लोगों को यक़ीन है कि उनकी वफ़ात इस्लाम पर हुई।[1]

---

1. इब्ने हिशाम 1/427-428, मुस्नद अहमद, 5/427

3. अबूज़र ग़िफ़ारी—यह यसरिब के बाहरी भाग के रहने वाले थे। जब सुवैद बिन सामित और इयास बिन मुआज़ के ज़रिए यसरिब में नबी के आने की ख़बर पहुंची, तो शायद यह ख़बर अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु के कान से भी टकराई और यही उनके इस्लाम लाने की वजह बनी।

इनके इस्लाम लाने की घटना का सहीह बुख़ारी में सविस्तार उल्लेख हुआ है। इब्ने अब्बास रज़ि० का बयान है कि अबूज़र रज़ि० ने फ़रमाया—

मैं क़बीला ग़िफ़ार का एक आदमी था। मुझे मालूम हुआ कि मक्के में एक आदमी ज़ाहिर हुआ है, जो अपने आपको नबी कहता है। मैंने अपने भाई से कहा, तुम उस आदमी के पास जाओ, उससे बात करो और मेरे पास उसकी ख़बर लाओ।

वह गया, मुलाक़ात की और वापस आया। मैंने पूछा, 'क्या ख़बर लाए हो?'

बोला, ख़ुदा की क़सम! मैंने एक ऐसा आदमी देखा है, जो भलाई का हुक्म देता है और बुराई से रोकता है।

मैंने कहा, तुमने सन्तोषजनक ख़बर नहीं दी।

आख़िर मैंने ख़ुद रास्ते का खाना लिया और डंडा उठाया और मक्का के लिए चल पड़ा। (वहां पहुंच तो गया) लेकिन आपको पहचानता न था और यह भी पसन्द न था कि आपके बारे में किसी से मालूम करूं।

चुनांचे मैं ज़मज़म का पानी पीता और मस्जिदे हराम में पड़ा रहता। आख़िर मेरे पास से अली रज़ि० का गुज़र हुआ, कहने लगे, आदमी अनजाना मालूम होता है।

मैंने कहा, जी हां।

उन्होंने कहा, अच्छा तो घर चलो।

मैं उनके साथ चल पड़ा। न वह मुझसे कुछ पूछ रहे थे, न मैं उनसे कुछ पूछ रहा था और न उन्हें कुछ बता ही रहा था।

सुबह हुई तो मैं इस इरादे से फिर मस्जिदे हराम गया कि आपके बारे में मालूम करूं। लेकिन कोई न था जो मुझे आपके बारे में कुछ बताता। आख़िर मेरे पास से फिर हज़रत अली रज़ि० गुज़रे। (देखकर) बोले, लगता है इस आदमी को अभी अपना ठिकाना न मालूम हो सका।

मैंने कहा, नहीं।

उन्होंने कहा, अच्छा तो मेरे साथ चलो।

इसके बाद उन्होंने कहा, अच्छा तुम्हारा मामला क्या है ? और तुम इस शहर में क्यों आए हो ?

मैंने कहा, आप राज़दारी से काम लें, तो बताऊं ?

उन्होंने कहा, ठीक है, मैं ऐसा ही करूंगा।

मैंने कहा, मुझे मालूम हुआ है कि यहां एक आदमी ज़ाहिर हुआ है, जो अपने आपको अल्लाह का नबी बताता है। मैंने आपने भाई को भेजा कि वह बात करके आए, मगर उसने पलटकर कोई सन्तोषजनक बात न बताई। इसलिए मैंने सोचा कि ख़ुद ही मुलाक़ात कर लूं।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, भाई ! तुम सही जगह पहुंचे। देखो, मेरा रुख़ उन्हीं की ओर है। जहां मैं घुसूं वहां तुम भी घुस जाना और हां, अगर मैं किसी ऐसे आदमी को देखूंगा, जिससे तुम्हारे लिए ख़तरा है, तो दीवार की ओर इस तरह जा रहूंगा, मानो अपना जूता ठीक कर रहा हूं, लेकिन तुम रास्ता चलते रहना।

इसके बाद हज़रत अली रज़ि० रवाना हुए और मैं भी साथ-साथ चल पड़ा, यहां तक कि वह अन्दर दाख़िल हुए और मैं भी उनके साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जा दाख़िल हुआ और बोला—

'आप मुझ पर इस्लाम पेश करें।'

आपने इस्लाम पेश फ़रमाया और मैं वहीं मुसलमान हो गया। इसके पास आपने मुझसे फ़रमाया—

'ऐ अबूज़र ! इस मामले को अभी छिपाए रखो और अपने इलाक़े में वापस चले जाओ ! जब हमारे ज़ाहिर होने की ख़बर मिले, तो आ जाना।'

मैंने कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है, मैं तो उनके बीच खुल्लम खुल्ला इसका एलान करूंगा।

इसके बाद मैं मस्जिदे हराम आया। क़ुरैश मौजूद थे। मैंने कहा—

'क़ुरैश के लोगो ! मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।'

लोग चिल्लाए, उठो, इस बेदीन (विधर्मी) की ख़बर लो।

लोग उठ खड़े हुए और मुझे इतना मारा कि मर जाता, लेकिन हज़रत अब्बास रज़ि० ने आकर बचाया।

उन्होंने मुझे झुककर देखा, फिर क़ुरैश की ओर पलटकर कहा—

'तुम्हारी बर्बादी हो, तुम लोग ग़िफ़ार के आदमी को मारे दे रहे हो, हालांकि तुम्हारा कारोबार और कारोबारी रास्ता ग़िफ़ार ही से होकर जाता है।'

इस पर लोग मुझे छोड़कर हट गए।

दूसरे दिन सुबह हुई तो मैं फिर वहीं गया और जो कुछ कहा था, आज फिर कहा और लोगों ने फिर कहा, उठो, इस बेदीन की ख़बर लो।

इसके बाद फिर मेरे साथ वहीं हुआ जो कल हो चुका था और आज भी हज़रत अब्बास रज़ि० ही ने मुझे आकर बचाया। वह मुझ पर झुके और वैसी ही बात कही, जैसी कल कही थी।[1]

4. तुफ़ैल बिन अम्र दौसी—यह सज्जन कवि, सूझ-बूझ के मालिक और क़बीला दौस के सरदार थे। इनके क़बीले को यमन के आस-पास में सरदारी या लगभग सरदारी हासिल थी। वह नुबूवत के ग्यारहवें साल मक्का तशरीफ़ लाए, तो वहां पहुंचने से पहले ही मक्का वालों ने उनका स्वागत किया और बड़े आदर से सत्कार किया, फिर बोले—

ऐ तुफ़ैल! आप हमारे नगर में पधारे हैं और यह व्यक्ति जो हमारे बीच है, इसने हमें बड़ी उलझनों में डाल रखा है। हमारे भीतर फूट डाल रखी है और हम बिखर कर रह गए हैं। इसकी बातों में जादू-जैसा प्रभाव है कि बेटे और बाप में, भाई और भाई में और मियां-बीवी में फूट डाल देता है। हमें डर लगता है कि जिस आज़माइश में हम घिरे हुए हैं, कहीं वह आप पर और आपकी क़ौम पर भी न आ पड़े। इसलिए आप इससे हरगिज़ बात न करें और इसकी कोई चीज़ न सुनें।

हज़रत तुफ़ैल का इर्शाद है कि ये लोग मुझे बराबर इसी तरह की बातें समझाते रहे, यहां तक कि मैंने तै कर लिया कि न आपकी कोई चीज़ सुनूंगा, न आपसे बातचीत करूंगा, यहां तक कि जब मैं सुबह को मस्जिदे हराम गया तो कान में रूई ठूंस रखी थी कि कहीं कोई बात आपकी मेरे कान में न पड़ जाए। लेकिन अल्लाह को मंज़ूर था कि आपकी कुछ बातें मुझे सुना ही दे। चुनांचे मैंने बड़ा अच्छा कलाम सुना, फिर मैंने अपने जी में कहा—

हाय! मुझ पर मेरी मां की चीख-पुकार! में तो, ख़ुदा की क़सम! एक सूझबूझ रखने वाला कवि हूं, मुझ पर बुरा-भला छिपा नहीं रह सकता, फिर क्यों न मैं इस व्यक्ति की बात सुनूं? अगर अच्छी हुई तो क़ुबूल कर लूंगा, बुरी हुई तो छोड़ दूंगा।

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब क़िस्सा ज़मज़म 1/499-500, बाब इस्लाम अबूज़र 1/544-545

यह सोचकर मैं रुक गया और जब आप घर पलटे तो मैं भी पीछे हो लिया। आप अन्दर दाख़िल हुए तो मैं भी दाख़िल हो गया और आपको अपना आना, लोगों का भय दिलाना, फिर कान में रूई ठूंसना, फिर भी आपकी कुछ बातों का सुन लेना ये सब बातें सविस्तार आपको बताईं, फिर अर्ज़ किया कि आप अपनी बात पेश कीजिए।

आपने मुझ पर इस्लाम पेश किया और क़ुरआन की तिलावत फ़रमाई। ख़ुदा गवाह है, मैंने इससे अच्छी बात और इससे ज़्यादा इंसाफ़ की बात कभी न सुनी थी। चुनांचे मैंने वहीं इस्लाम क़ुबूल कर लिया और हक़ की गवाही दी।

इसके बाद आपसे अर्ज़ किया कि मेरी क़ौम में मेरी बात मानी जाती है। मैं उसके पास पलट कर जाऊंगा और उन्हें इस्लाम की दावत दूंगा। इसके बाद आप अल्लाह से दुआ फ़रमाएं कि वह मुझे कोई निशानी दे दे।

आपने दुआ फ़रमाई।

हज़रत तुफ़ैल रज़ि० को जो निशानी मिली, वह यह थी कि जब वह अपनी क़ौम के क़रीब पहुंचे, तो अल्लाह ने उनके चेहरे पर चिराग़ जैसी- रोशनी पैदा कर दी।

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह! चेहरे के बजाए किसी और जगह? मुझे अंदेशा है कि लोग इसे मुस्ला (चेहरे का विकृत होना) कहेंगे।

चुनांचे यह रोशनी उनके डंडे में पलट गई। फिर उन्होंने अपने बाप और अपनी बीवी को इस्लाम की दावत दी और वे दोनों मुसलमान हो गए, लेकिन क़ौम ने इस्लाम अपनाने में देर की।

फिर भी हज़रत तुफ़ैल रज़ि० बराबर कोशिशें करते रहे, यहां तक कि ख़ंदक़ की लड़ाई के बाद[1], जब उन्होंने हिजरत फ़रमाई, तो उनके साथ उनकी क़ौम के सत्तर या अस्सी परिवार थे।

हज़रत तुफ़ैल रज़ि० ने इस्लाम में बड़े अहम कारनामे अंजाम देकर यमामा की लड़ाई में शहीद होने का पद प्राप्त किया।[2]

ज़िमाद अज़्दी—यह यमन के रहने वाले और क़बीला अज़्दशनूआ के एक व्यक्ति थे। झाड़-फूंक करना और भूत-प्रेत उतारना उनका काम था। मक्का आए

---

1. बल्कि हुदैबिया के समझौते के बाद, क्योंकि जब वह मदीना तशरीफ़ लाए, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ैबर में थे। देखिए इब्ने हिशाम 1/385
2. इब्ने हिशाम 1/182-185,

तो वहां के मूर्खों से सुना कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पागल हैं। सोचा, क्यों न उस व्यक्ति के पास चलूं? हो सकता है अल्लाह मेरे ही हाथों उसे सेहत दे दे।

चुनांचे आपसे मुलाक़ात की, और कहा—

'ऐ मुहम्मद! मैं भूत-प्रेत उतारने के लिए झाड़-फूंक किया करता हूं, क्या आपको भी इसकी ज़रूरत है?'

आपने जवाब में फ़रमाया—

'यक़ीनन सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है, हम उसी की तारीफ़ करते हैं और उसी से मदद चाहते हैं, जिसे अल्लाह हिदायत दे दे, उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता, और जिसे अल्लाह भटका दे, उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं। अम्मा बादु'

ज़ियाद ने कहा, ज़रा अपने ये कलिमे मुझे फिर सुना दीजिए। आपने तीन बार दोहराया। इसके बाद ज़ियाद ने कहा—

'मैं काहिनों, जादूगरों और कवियों की बात सुन चुका हूं, लेकिन मैंने आपके इन जैसे कलिमे कहीं नहीं सुने। ये तो समुद्र की अथाह गहराई को पहुंचे हुए हैं। लाइए, अपना हाथ बढ़ाइए। आपसे इस्लाम पर बैअत करूं।'

इसके बाद उन्होंने बैअत कर ली।[1]

यस्‌रिब की छः भाग्यवान आत्माएं

सन् 11 नबवी (जुलाई 620 ई०) के हज के मौसम में इस्लामी दावत को कुछ काम के बीज मिले, जो देखते-देखते छतनार पेड़ों में बदल गए और उनकी सुगन्धित और घनी छांवों में बैठकर मुसलमानों ने वर्षों के ज़ुल्म व सितम की तपन से राहत व नजात पाई, यहां तक कि घटनाओं की दिशा बदल गई और इतिहास की धारा मुड़ गई ।

मक्के वालों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठलाने और लोगों को अल्लाह की राह से रोकने का जो बेड़ा उठा रखा था, उस सिलसिले में नबी सल्ल० की रणनीति थी कि आप रात के अंधेरों में क़बीलों के पास तशरीफ़ ले जाते, ताकि मक्का का कोई मुश्रिक रुकावट न डाल सके।

1. सहीह मुस्लिम, मिश्कातुल मसाबीह, बाब अलामातुन्नुबूवः 2/525

इसी रणनीति के अनुसार एक रात आप, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० और हज़रत अली रज़ि० को साथ लेकर निकले। बनू ज़ुहल और बनू शैबान बिन सालबा के डेरों से गुज़रे, तो उनसे इस्लाम के बारे में बातचीत की। उन्होंने जवाब तो उम्मीदों भरा दिया, लेकिन इस्लाम क़ुबूल करने के बारे में कोई क़तई फ़ैसला न किया। इस मौक़े पर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और अबू ज़ुह्ल के एक आदमी के बीच वंश-क्रम के बारे में बड़ा दिलचस्प सवाल व जवाब भी हुआ। दोनों ही वंश-विशेषज्ञ थे।[1]

इसके बाद रसूलुल्लाह सल्ल० मिना की घाटी से गुज़रे, तो कुछ लोगों को आपस में बातचीत करते सुना।

आपने सीधे उनका सीधा रुख़ किया और उनके पास जा पहुंचे।

ये यसरिब के छः जवान थे और सबके सब क़बीला ख़ज़रज से ताल्लुक़ रखते थे। नाम ये हैं—

1. असअद बिन ज़ुरारा (क़बीला बनी नज्जार)
2. औफ़ बिन हारिस बिन रिफ़ाआ (इब्ने अफ़रा क़बीला बनी नज्जार)
3. राफ़ेअ बिन मालिक बिन अजलान (क़बीला बनी ज़ुरैक़)
4. क़ुतबा बिन आमिर बिन हदीदा (क़बीला बनी सलमा)
5. उक़्बा बिन आमिर बिन नाबी (क़बीला बनी हराम बिन काब)
6. हारिस बिन अब्दुल्लाह बिन रिआब (क़बीला बनी उबैद बिनग़नम)

यह यसरिब वालों का सौभाग्य था कि वे मदीना के अपने मित्र यहूदियों से सुना करते थे कि उस ज़माने में एक नबी भेजा जाने वाला है और अब जल्द ही वह ज़ाहिर होगा। हम उसकी पैरवी करके उसके साथ तुम्हें आदे इरम की तरह क़त्ल कर डालेंगे।[2]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके पास पहुंचकर मालूम किया कि आप कौन लोग हैं?

उन्होंने कहा, हम ख़ज़रज क़बीले से ताल्लुक़ रखते हैं।

आपने फ़रमाया, यानी यहूदियों के मित्र।

बोले, हां।

फ़रमाया, फिर क्यों न आप लोग बैठें, कुछ बातचीत की जाए।

---

1. देखिए मुख़्तसरुत्तवारीख़ : अब्दुल्लाह, पृ० 150-151
2. ज़ादुल मआद 2/50, इब्ने हिशाम 1/429, 541

वे लोग बैठ गए।

आपने उनके सामने इस्लाम की सच्चाई बयान की, उन्हें अल्लाह की ओर बुलाया और क़ुरआन की तिलावत फ़रमाई।

उन्होंने आपस में एक दूसरे से कहा, भाई, देखो, यह तो वही नबी मालूम होते हैं, जिनका हवाला देकर यहूदी तुम्हें धमकियां दिया करते हैं, इसलिए यहूदी तुमसे आगे न जाने पाएं।

इसके बाद उन्होंने तुरन्त आपकी दावत मान ली और मुसलमान हो गए।

ये यसरिब के बुद्धिमान लोग थे। हाल ही में जो लड़ाई हो चुकी थी और जिसके धुएं अब तक फ़िज़ा को अंधेरा बनाए हुए थे। इस लड़ाई ने उन्हें चूर-चूर कर दिया था, इसलिए उन्होंने सही ही यह उम्मीद कर रखी थी कि आपकी दावत, लड़ाई के अन्त का ज़रिया बनेगी, चुनांचे उन्होंने कहा—

'हम अपनी क़ौम को इस हाल में छोड़कर आए थे कि किसी और क़ौम में उनके जैसी दुश्मनी और वैर-भाव नहीं पाई जाती। उम्मीद है कि अल्लाह आपके ज़रिए उन्हें एक कर देगा। हम वहां जाकर लोगों को आपके उद्देश्य की ओर बुलाएंगे और यह दीन जो हमने ख़ुद क़ुबूल कर लिया है, उन पर भी पेश करेंगे। अगर अल्लाह ने आप पर उनको एक कर दिया, तो फिर आपसे बढ़कर कोई और सम्माननीय न होगा।'

इसके बाद जब ये लोग मदीना वापस हुए तो अपने साथ इस्लाम का पैग़ाम भी ले गए। चुनांचे वहां घर-घर रसूलुल्लाह सल्ल० की चर्चा फैल गाई।[1]

हज़रत आइशा रज़ि० से निकाह

इसी साल शव्वाल सन् 11 नबवी में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आइशा रज़ि० से निकाह फ़रमाया।

उस वक़्त उनकी उम्र छः वर्ष थी।

फिर हिजरत के पहले साल शव्वाल ही के महीने में मदीना के अन्दर उनकी विदाई हुई।

उस वक़्त उनकी उम्र नौ वर्ष की थी।[2]

---

1. इब्ने हिशाम 1/428, 430
2. तलक़ीहुल फ़ुहूम, पृ० 10, सहीह बुख़ारी 1/550

चांद के दो टुकड़े

इस्लामी दावत मुश्रिकों के साथ इसी संघर्ष के मरहले से गुज़र रही थी कि इस सृष्टि का अति शानदार और विचित्र मोजज़ा ज़ाहिर हुआ। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मुश्रिकों के बहस व तकरार के जो कुछ नमूने गुज़र चुके हैं, उनमें यह बात भी मौजूद है कि उन्होंने आपकी नुबूवत पर ईमान लाने के लिए अप्राकृतिक निशानियों की मांग की थी और क़ुरआन के बयान के अनुसार उन्होंने पूरा ज़ोर देकर क़सम खाई थी कि अगर आपने मांगी गई निशानियां पेश कर दीं तो वे ज़रूर ईमान लाएंगे, मगर इसके बाद भी उनकी यह मांग पूरी नही की गई और उनकी तलब की गई कोई निशानी पेश नहीं की गई। इसकी वजह यह है कि यह अल्लाह की सुन्नत रही है कि जब कोई क़ौम अपने पैग़म्बर से कोई ख़ास निशानी तलब करे और दिखलाए जाने के बाद भी ईमान न लाए, तो उसकी क़ौम की मोहलत ख़त्म हो जाती है और उसे आम अज़ाब से हलाक कर दिया जाता है। चूंकि अल्लाह की सुन्नत तब्दील नहीं होती और उसे मालूम था कि अगर क़ुरैश को उनकी तलब की हुई कोई निशानी दिखला भी दी जाए तो वह अभी ईमान नहीं लाएंगे, जैसा कि उसका इर्शाद है—

'अगर हम इन पर फ़रिश्ते उतार दें और मुर्दे इनसे बातें करें और हर चीज़ इनके सामने लाकर इकट्ठा कर दें, तो भी वे ईमान नहीं लाएंगे, सिवाए इस शक्ल के कि अल्लाह चाहे, मगर इनमें से अधिकतर नासमझ हैं।'

और अल्लाह को भी मालूम था कि उनको अगर कोई निशानी न भी दिखलायी जाए, लेकिन और मोहलत दे दी जाए, तो आगे चलकर यही लोग कोई निशानी देखे बिना ईमान लाएंगे, इसलिए इन्हें अल्लाह ने इनकी तलब की हुई कोई निशानी नहीं दिखाई और ख़ुद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी अधिकार दिया कि अगर आप चाहें तो इनकी तलब की हुई निशानी इन्हें दिखा दी जाए, लेकिन फिर ईमान लाने पर इन्हें सारी दुनिया से सख़्त अज़ाब दिया जाए और अगर चाहें तो निशानी न दिखाई जाए और तौबा और रहमत का दरवाज़ा इनके लिए खोल दिया जाए। इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यही आख़िरी शक्ल अख़्तियार फ़रमाई कि इनके लिए तौबा व रहमत का दरवाज़ा खुला रखा जाए।[1]

तो यह थी मुश्रिकों को उनकी तलब की हुई चीज़ न दिखाई जाने की असल

---

1. मुस्नद अहमद, 1/342, 34,

वजह, चूंकि मुश्रिकों को इस बात से कोई सरोकार न था, इसलिए उन्होंने सोचा कि निशानी तलब करना आपको ख़ामोश और बेबस करने का बेहतरीन ज़रिया है, इस तरह आम लोगों को सन्तुष्ट भी किया जा सकता है कि आप पैग़म्बर नहीं, बल्कि बातें बनाने वाले हैं, इसलिए उन्होंने फ़ैसला किया कि चलो अगर यह नामज़द निशानी नहीं दिखाते तो बिन कुछ तय किए ही कोई भी निशानी तलब की जाए। चुनांचे उन्होंने सवाल किया कि कोई भी निशानी ऐसी ही दिखा दें, जिससे हम यह जान सकें कि आप वाक़ई अल्लाह के रसूल हैं? इस पर आपने अपने पालनहार से सवाल किया कि इन्हें कोई निशानी दिखला दे। जवाब में हज़रत जिब्रील तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि इन्हें बतला दो, आज रात निशानी दिखलाई जाएगी[1] और रात हुई तो अल्लाह ने चांद को दो टुकड़े करके दिखला दिया।

सहीह बुख़ारी में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मक्का वालों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया कि आप उन्हें कोई निशानी दिखाएं। आपने उन्हें सिखलाया कि चांद के दो टुकड़े हो गए हैं, यहां तक कि उन्होंने दोनों टुकड़ों के बीच में हिरा पहाड़ को देखा।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि चांद दो टुकड़े हुआ। उस वक़्त हम लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मिना में थे। आपने फ़रमाया, गवाह रहो और चांद का एक टुकड़ा फट कर पहाड़ (यानी जबल अबू क़ुबैस) की ओर जा रहा।[3]

चांद के दो टुकड़े होने का यह मोजज़ा बहुत साफ़ था। क़ुरैश ने इसे स्पष्ट रूप से बड़ी देर तक देखा और आंख मल-मल कर साफ़ करके देखा और स्तब्ध रह गए, लेकिन फिर भी ईमान नहीं लाए, बल्कि कहा तो यह कहा कि यह तो चलता हुआ जादू है और सच तो यह है कि मुहम्मद ने हमारी आंखों पर जादू कर दिया है। इस पर बहस व मुबाहसा भी किया। कहने वालों ने कहा कि अगर मुहम्मद ने तुम पर जादू कर दिया है, तो वह सारे लोगों पर तो जादू नहीं कर सकते। बाहर वालों को आने दो, देखो, क्या ख़बर लेकर आते हैं। इसके बाद ऐसा हुआ कि बाहर से जो कोई भी आया, उसने इसी घटना की पुष्टि की[4],

---

1. अद्-दुर्रुल मंसूर, अबू नुऐम, दलाइल 6/177
2. सहीह बुख़ारी मय फ़त्हुल बारी 7/221, भाग 8/386
3. वही, वही, भाग 9, पृ० 386
4. फ़त्हुल बारी 7/223, अबू नुऐम, दलाइल व अ़बू अवाना, अद्दुर्रुल मंसूर 6/176, इब्ने जरीर, हाकिम, बैहक़ी

लेकिन ज़ालिम फिर भी ईमान नहीं लाए और अपनी डगर पर चलते रहे।

यह घटना कब घटित हुई, इब्ने हजर ने इसका वक़्त हिजरत से लगभग पांच साल पहले लिखा है।[1] अर्थात सन् 08 नबवी। अल्लामा मंसूरपुरी ने सन् 09 नबवी लिखा है।[2] मगर ये दोनों बयान विचारणीय हैं, क्योंकि सन् 08 और 09 नबवी में कुरैश की तरफ़ से आप और बनू हाशिम और बनू अब्दुल मुत्तलिब का पूरी तरह से बाइकाट चल रहा था, बात-चीत तक बन्द थी और मालूम है कि यह घटना इस प्रकार की परिस्थितियों में नहीं घटित हुई थी। हज़रत आइशा रज़ि० ने इस एक आयत का उल्लेख करके इस सूरः की ओर संकेत करते हुए फ़रमाया है कि वह जब उतरी तो मैं मक्का में एक खेलती हुई बच्ची थी।[3] यानी यह उम्र का वह मरहला था, जिसमें इस प्रकार की बातें याद भी हो जाती हैं और बचपन का खेल भी जारी रहता है यानी 5-6 वर्ष की उम्र। इसलिए चांद के दो टुकड़े होने की घटना सन् 10 या 11, सही होने के ज़्यादा क़रीब है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० के इस बयान से कि उस वक़्त हम मिना में थे, ऐसा लगता है कि यह हज का ज़माना था, यानी चांद का साल अपने अंत पर था।

चांद के दो टुकड़े होने की यह निशानी शायद इस बात की भी प्रस्तावना रही हो कि आगे मेराज की घटना हो तो मन उसकी संभावना को स्वीकार कर सकें। वल्लाहु आलम (अल्लाह ही बेहतर जाने)

---

1. फ़त्हुल बारी 6/635
2. रहमतुल लिल आलमीन 3/159
3. सहीह बुख़ारी, तफ़्सीर सूरः क़मर

मेराज

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत व तब्लीग़ (प्रचार-प्रसार) अभी सफलता और ज़ुल्म व सितम के उस दर्मियानी मरहले से गुज़र रही थी और क्षितिज में दूर-दूर तक फैले तारों की झलक दिखाई पड़ना शुरू हो चुकी थी कि मेराज की घटना घटित हुई।

यह मेराज कब हुई? इस बारे में सीरत लिखने वालों के कथन अलग-अलग हैं, जो ये हैं—

1. जिस साल आपको नुबूवत दी गई, उसी साल मेराज की घटना घटित हुई। (यह तबरी का कथन है)

2. नुबूवत के पांच साल बाद मेराज हुई। (इसे इमाम नववी और इमाम क़ुरतबी ने प्रमुखता दी है)

3. नुबूवत से दसवें साल 27 रजब को हुई। (इसे अल्लामा मंसूरपुरी ने अपनाया है)

4. हिजरत के सोलह महीने पहले यानी नुबूवत के बारहवें साल रमज़ान के महीने में हुई।

5. हिजरत से एक साल दो माह पहले यानी नुबूवत के तेरहवें साल मुहर्रम में हुई।

6. हिजरत से एक साल पहले यानी नुबूवत के तेरहवें साल रबीउल अव्वल के महीने में हुई।

इनमें से पहले तीन कथन इसलिए सही नहीं माने जा सकते कि हज़रत ख़दीजा रज़ि० की वफ़ात पांच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ होने से पहले हुई थी और इस पर सभी सहमत हैं कि पांच वक़्त की नमाज़ मेराज में फ़र्ज़ हुई।

इसका मतलब यह है कि हज़रत ख़दीजा की वफ़ात मेराज से पहले हुई थी और मालूम है कि हज़रत ख़दीजा रज़ि० की वफ़ात नुबूवत के दसवें साल रमज़ान महीने में हुई थी, इसलिए मेराज का ज़माना इसके बाद होगा, इससे पहले का नहीं।

बाक़ी रहे आख़िर के तीन कथन, तो इनमें से किसी को किसी पर प्रमुखता देने के लिए दलील न मिल सकी। अलबत्ता सूरः इस्रा के देखने से अन्दाज़ा

होता है कि यह घटना मक्की ज़िंदगी के बिल्कुल आखिरी दौर की है।[1]

हदीस के इमामों ने इस घटना का जो विवरण दिया है, हम आगे उनका सार लिख रहे हैं।

इब्ने क़य्यिम लिखते हैं कि सही कथन के अनुसार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपके मुबारक जिस्म के साथ बुराक़ पर सवार करके हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के साथ मस्जिदे हराम से बैतुल मक़्दिस तक सैर कराई गई, फिर आप वहां उतरे और नबियों की इमामत करते हुए नमाज़ पढ़ाई और बुराक़ को मस्जिद के दरवाज़े के हलक़े से बांध दिया था।

इसके बाद उसी रात आपको बैतुल मक़्दिस से आसमाने दुनिया तक ले जाया गया। जिब्रील अलैहिस्सलाम ने दरवाज़ा खुलवाया। आपके लिए दरवाज़ा खोला गया। आपने वहां इंसानों के बाप हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को देखा और उन्हें सलाम किया। उन्होंने आपको मरहबा (अभिनन्दन) कहा, सलाम का जवाब दिया और आपकी नुबूवत का इक़रार किया। अल्लाह ने आपको उनके दाहिनी ओर भाग्यवानों की आत्माएं और बाईं ओर भाग्यहीनों की आत्माएं दिखलाईं।

फिर आपको दूसरे आसमान पर ले जाया गया और दरवाज़ा खुलवाया गया। आपने वहां हज़रत यह्या बिन ज़करिया अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम को देखा। दोनों से मुलाक़ात की और सलाम किया। दोनों ने सलाम का जवाब दिया, मुबारकबाद दी और आपकी नुबूवत का इक़रार किया।

फिर आपको तीसरे आसमान पर ले जाया गया। आपने वहां हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखा और सलाम किया। उन्होंने जवाब दिया, मुबारकबाद दी और आपकी नुबूवत का इक़रार किया।

फिर चौथे आसमान पर ले जाया गया। वहां आपने हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम को देखा और उन्हें सलाम किया। उन्होंने जवाब दिया, मरहबा कहा और आपकी नुबूवत का इक़रार किया।

फिर पांचवें आसमान पर ले जाया गया। वहां आपने हज़रत हारून बिन इम्रान अलैहिस्सलाम को देखा और उन्हें सलाम किया। उन्होने जवाब दिया, मुबारकबाद दी और नुबूवत का इक़रार किया।

फिर आपको छठे आसमान पर ले जाया गया। वहां आपकी मुलाक़ात हज़रत मूसा बिन इम्रान से हुई। आपने सलाम किया। उन्होंने मरहबा कहा और

---

1. इस कथनों के विस्तृत विवेचन के लिए देखिए ज़ादुल मआद 2/49, मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 148-149, रहमतुल लिल आलमीन 1/76

फिर आपको छठे आसमान पर ले जाया गया। वहां आपकी मुलाक़ात हज़रत मूसा बिन इम्रान से हुई। आपने सलाम किया। उन्होंने मरहबा कहा और नुबूवत का इक़रार किया।

अलबत्ता जब आप वहां से आगे बढ़े, तो वह रोने लगे। उनसे कहा गया, आप क्यों रो रहे हैं?

उन्होंने कहा, मैं इसलिए रो रहा हूं कि एक नवजवान, मेरे बाद पैग़म्बर बनाकर भेजा गया, उसकी उम्मत के लोग मेरी उम्मत के लोगों से बहुत ज़्यादा तायदाद में जन्नत के अन्दर दाख़िल होंगे।

इसके बाद आपको सातवें आसमान पर ले जाया गया। वहां आपकी मुलाक़ात हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से हुई। आपने उन्हें सलाम किया। उन्होंने जवाब दिया, मुबारकबाद दी और आपकी नुबूवत का इक़रार किया।

इसके बाद आपको सिदरतुलमुन्तहा तक ले जाया गया। इसके बेर (फल) हिज्र के ठलियों जैसे और उसके पत्ते हाथी के कान जैसे थे, फिर उस पर सोने के पतंगे, रोशनी और विभिन्न रंग छा गए और वह सियरा इस तरह बदल गया कि अल्लाह के पैदा किए हुए लोगों में से कोई उसके सौन्दर्य की प्रशंसा नहीं कर सकता। फिर आपके लिए बैते मामूर को ऊंचा किया गया। उसमें हर दिन सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दाख़िल होते थे जिनके दोबारा पलटने की नौबत नहीं आती थी। इसके बाद आपको जन्नत में दाख़िल किया गया। उसमें मोती के गुम्बद थे और उसकी मिट्टी मुश्क थी। इसके बाद आपको और ऊपर ले जाया गया, यहां तक कि आप एक ऐसी बराबर जगह पर ज़ाहिर हुए जहां क़लमों की चरमराहट सुनी जा रही थी।

फिर आपके लिए बैते मामूर को ज़ाहिर किया गया।

फिर अल्लाह के दरबार में पहुंचाया गया और आप अल्लाह के इतने क़रीब हुए कि दो कमानों के बराबर या उससे भी कम दूरी रह गई। उस वक़्त अल्लाह ने अपने बन्दे पर वह्य फ़रमाई जो कुछ कि वह्य फ़रमाई और पचास वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ कीं।

इसके बाद आप वापस हुए, यहां तक हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास से गुज़रे, तो उन्होंने पूछा कि अल्लाह ने आपको किस चीज़ का हुक्म दिया है?

आपने फ़रमाया, पचास नमाज़ों का।

उन्होंने कहा, आपकी उम्मत इसकी ताक़त नहीं रखती। अपने पालनहार के पास वापस जाइए और अपनी उम्मत के लिए इसके घटा देने की दरख़्वास्त कीजिए।

उन्होंने इशारा किया कि हां, अगर आप चाहें।

इसके बाद हज़रत जिब्रील आपको अल्लाह के हुज़ूर ले गये और वह अपनी जगह था। (कुछ रिवायतों में सहीह बुख़ारी के शब्द यही हैं)

उसने दस नमाज़ें कम कर दीं और आप नीचे लाए गए।

जब मूसा अलैहिस्सलाम के पास से गुज़र हुआ तो उन्हें ख़बर दी।

उन्होंने कहा, आप अपने रब के पास वापस जाइए और कमी के लिए फिर कहिए। इस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और अल्लाह के बीच आपका आना-जाना बराबर चलता रहा, यहां तक कि अल्लाह ने सिर्फ़ पांच नमाज़ें बाक़ी रखीं। इसके बाद भी मूसा अलैहिस्सलाम ने आपको वापसी और कम करने की तलब का मश्विरा दिया, मगर आपने फ़रमाया, अब मुझे अपने रब से शर्म महसूस हो रही है। मैं इसी पर राज़ी हूं और इसे मान लेता हूं।

फिर जब आप कुछ दूर और चले तो आवाज़ आई कि मैंने अपना फ़र्ज़ लागू कर दिया और अपने बन्दों से कमी कर दी।[1]

इसके बाद इब्ने क़य्यिम ने इस बारे में मतभेद का उल्लेख किया है कि नबी सल्ल० ने अपने रब को देखा या नहीं? फिर इमाम इब्ने तैमिया के एक शोध का उल्लेख किया है, जिसका सार यह है कि आंख से देखने का सिरे से कोई सबूत नहीं और न कोई सहाबी इसके क़ायल हैं? और इब्ने अब्बास से साफ़ देखने और दिल के देखने के जो कथन कहे जाते हैं, उनमें से पहला दूसरे के ख़िलाफ़ नहीं।

इसके बाद इमाम इब्ने क़य्यिम लिखते हैं कि सूरः नज्म में अल्लाह का जो यह कथन है—

'फिर वह नज़दीक आया और ज़्यादा क़रीब हो गया।' (53 : 8)

तो यह उस क़रीब होने के अलावा है जो मेराज में हासिल हुआ था, क्योंकि सूरः नज्म में जिस क़रीब होने का उल्लेख है, उससे मुराद हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम का क़रीब होना है, जैसा कि हज़रत आइशा रज़ि० और इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने फ़रमाया है और सब पर नज़र रखने से यही सही बात भी मालूम होती है।

इसके ख़िलाफ़ मेराज की हदीस में जिस क़रीब होने का उल्लेख है, उसके बारे में स्पष्ट है कि यह अल्लाह से क़रीब होना है और सूरः नज्म में सिरे से इसको छेड़ा ही नहीं गया है, बल्कि इसमें यह कहा गया है कि आपने इन्हें दूसरी

---

1. ज़ादुल मआद, 2/47-48

बार सिदरतुल मुन्तहा के पास देखा और यह हज़रत जिब्रील थे। इन्हें मुहम्मद सल्ल० ने उनकी अपनी शक्ल में दो बार देखा था—

एक बार ज़मीन पर और एक बार सिदरतुल मुन्तहा के पास।[1]

कुछ रिवायतों में आया है कि इस बार भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ शक़्क़े सद्र (सीना चाक करने) की घटना घटित हुई और आपको इस सफ़र के दौरान कई चीज़ें दिखाई गईं।

आप पर दूध और शराब पेश की गई। आपने दूध लिया। इस पर आपसे कहा गया कि आपको प्रकृति की राह बताई गई या आपने प्रकृति पा ली और याद रखिए कि अगर आपने शराब ली होती, तो आपकी उम्मत गुमराह हो जाती।

आपने जन्नत में चार नहरें देखीं, दो ज़ाहिरी (प्रत्यक्ष), दो बातिनी (अप्रत्यक्ष)।

ज़ाहिरी नहरें नील व फ़रात नदियां थीं यानी उनका तत्व था और बातिनी दो नहरें जन्नत की दो नहरें हैं। (नील व फ़रात देखने का मतलब शायद यह है कि आपकी रिसालत नील व फ़रात की हरी भरी घाटियों को अपना वतन बनाएगी)। (वल्लाहु आलम)

आपने मालिक, जहन्नम के दारोग़ा को भी देखा। वह हंसता न था और न उसके चेहरे पर हर्ष और प्रसन्नता थी।

आपने जन्नत और जहन्नम भी देखी।

आपने उन लोगों को भी देखा, जो यतीमों का माल ज़ुल्म करके खा जाते हैं। उनके होंठ ऊंट के होंठों की तरह थे और वे अपने मुंह में पत्थर के टुकड़ों जैसे अंगारे ठूंस रहे थे, जो दूसरी ओर उनके पाख़ाने के रास्ते से निकल रहे थे।

आपने सूदख़ोरों को भी देखा। उनके पेट इतने बड़े-बड़े थे कि वे अपनी जगह से इधर-उधर नहीं हो सकते थे और जब आले फ़िरऔन को आग पर पेश करने के लिए ले जाया जाता, तो उनके पास से गुज़रते वक़्त उन्हें रौंदते हुए जाते थे।

आपने ज़िनाकारों को भी देखा। उनके सामने ताज़ा और चिकना गोश्त था और इसी के पहलू में साथ-साथ सड़ा हुआ छीछड़ा भी था। ये लोग ताज़ा और चिकना गोश्त छोड़कर सड़ा हुआ छीछड़ा खा रहे थे।

आपने उन औरतों को देखा जो अपने शौहरों पर दूसरों की औलाद दाख़िल कर देती हैं। (यानी दूसरों से ज़िना के ज़रिए गर्भवती होती हैं, लेकिन न जानने

---

1. ज़ादुल मआद 2/47-48, साथ ही देखिए सहीह बुख़ारी 1/450, 455, 456, 470, 471, 481, 508, 549, 550, 2/684, सहीह मुस्लिम, 1/91, 92, 93, 94, 95, 96

की वजह से बच्चा उनके शौहर का समझा जाता है।) आपने उन्हें देखा कि उनके सीनों में बड़े-बड़े टेढ़े कांटे चुभा कर उन्हें आसमान व ज़मीन के बीच लटका दिया गया है।

आपने आते-जाते हुए मक्के वालों का एक क़ाफ़िला भी देखा और उन्हें उनका एक ऊंट भी बताया जो भड़क कर भाग गया था। आपने उनका पानी भी पिया जो एक ढके हुए बरतन में रखा था। उस वक़्त क़ाफ़िला सो रहा था, फिर आपने उसी तरह बरतन ढक कर छोड़ दिया और यह बात मेराज की सुबह आपके दावे की सच्चाई की एक दलील साबित हुई।[1]

अल्लामा इब्ने क़य्यिम रह० फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुबह की और अपनी क़ौम को उन बड़ी-बड़ी निशानियों की ख़बर दी, जो अल्लाह ने आपको दिखाई थीं, तो क़ौम के झुठलाने और पीड़ा पहुंचाने में और तेज़ी आ गई।

उन्होंने आपसे सवाल किया कि बैतुल मक़्दिस की स्थिति बयान करें।

इस पर अल्लाह ने आप पर बैतुल मक़्दिस ज़ाहिर कर दिया और वह आपकी निगाहों के सामने आ गया। चुनांचे आपने क़ौम को उसकी निशानियां बतानी शुरू कीं और उनसे किसी बात का खंडन न बन पड़ा।

आपने जाते और आते हुए उनके क़ाफ़िले से मिलने का उल्लेख किया और बतलाया कि उसके आने का समय क्या है।

आपने उस ऊंट की भी निशानदेही की जो क़ाफ़िले के आगे-आगे आ रहा था, फिर जैसा कुछ आपने बताया था, वैसा ही साबित हुआ। लेकिन इन सबके बावजूद उनकी नफ़रत में वृद्धि ही हुई और इन ज़ालिमों ने कुफ़्र करते हुए कुछ भी मानने से इंकार कर दिया।[2]

कहा जाता है कि अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को इसी मौक़े पर सिद्दीक़ की उपाधि दी गई, क्योंकि आपने इस घटना की उस वक़्त पुष्टि की, जबकि और लोगों ने झुठला दिया था।[3]

मेराज की उपलब्धि बताते हुए कम से कम शब्दों में जो बड़ी बात कही गई,

---

1. पिछले हवाले, साथ ही इब्ने हिशाम 1/397, 402, 406 और तफ़्सीर की किताबें, तफ़्सीर सूरः इसरा
2. ज़ादुल मआद 1/48, साथ ही देखिए सहीह बुख़ारी 2/684, सहीह मुस्लिम 1/96 इब्ने हिशाम 1/402-403
3. इब्ने हिशाम 1/399

वह यह है—

'ताकि हम (अल्लाह) आपको अपनी कुछ निशानियां दिखाएं।' (17-1)

और नबियों के बारे में यही अल्लाह की सुन्नत है। इर्शाद है कि—

'और इसी तरह हमने इब्राहीम को आसमान व ज़मीन की राज्य-व्यवस्था दिखाई और ताकि वह यक़ीन करने वालों में से हो।' (6/57)

और मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाया—

'ताकि हम तुम्हें अपनी कुछ बड़ी निशानियां दिखाएं।' (20/23)

फिर इन निशानियों के दिखाने का जो अभिप्राय था, उसे भी अल्लाह ने अपने इर्शाद 'ताकि वह विश्वास करने वालों में से हो' द्वारा स्पष्ट किया।

चुनांचे जब नबियों के ज्ञान को इस तरह की चीज़ें दिखाकर सनद हासिल हो जाती थी, तो उन्हें 'ऐनल यक़ीन' का वह स्थान मिल जाता था, जिसका अन्दाज़ा लगाना संभव नहीं कि—

'देखी हुई चीज़ सुनी चीज़ों जैसी नहीं होती।'

और यही वजह है कि पैग़म्बर अल्लाह की राह में ऐसी-ऐसी परेशानियां झेल लेते थे, जिन्हें कोई और झेल ही नहीं सकता। हक़ीक़त में उनकी निगाहों में दुनिया की सारी ताक़तें मिलकर भी मच्छर के पर के बराबर हैसियत नहीं रखती थीं, इसीलिए वे इन ताक़तों की ओर से होने वाली सख़्तियों पर दी जाने वाली पीड़ाओं की कोई परवाह नहीं करते थे।

मेराज की इस घटना की छोटी-छोटी बातों के भेद खोलने वाली किताबें हैं, हां, कुछ मोटी-मोटी सच्चाइयां ऐसी हैं जो इस मुबारक सफ़र के स्रोतों से फूट कर नबी की सीरत पर भरपूर रोशनी डालती हैं, इसलिए यहां उन्हें संक्षेप में लिखा जा रहा है।

आप देखेंगे कि अल्लाह ने सूरः इसरा में इसरा (मेराज का सफ़र) की घटना का केवल एक आयत में उल्लेख करके बात का रुख़ यहूदियों के कुकर्मों, करतूतों और अपराधों के बताने की ओर फेर दिया है, फिर उन्हें बता दिया गया है कि यह क़ुरआन वह रास्ता बताता है जो सबसे सीधा और सही है।

क़ुरआन पढ़ने वालों को कभी-कभी सन्देह हो जाता है कि दोनों बातें बेजोड़ हैं, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है, बल्कि अल्लाह इस शैली में यह इशारा फ़रमा रहा है कि अब यहूदियों को मानव-जाति के नेतृत्व से हटाया जा रहा है, क्योंकि उन्होंने ऐसे-ऐसे अपराध किए हैं, जिनके करने के बाद इस पद पर बाक़ी नहीं रखा जा सकता, इसलिए अब यह पद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम को सौंपा जाएगा और इब्राहीमी दावत के दोनों केन्द्र उनके आधीन कर दिए जाएंगे।

दूसरे शब्दों में अब समय आ गया है कि रूहानी (आध्यात्मिक) क़ियादत (नेतृत्व) एक उम्मत (समुदाय) से दूसरी उम्मत को दे दी जाए, यानी एक ऐसी उम्मत से जिसका इतिहास धोखादेही, बद-दयानती, ज़ुल्म और बदकारी से भरा हुआ है, यह नेतृत्व छीनकर एक ऐसी उम्मत के हवाले कर दिया जाए, जिससे नेकियों और भलाइयों के सोते फूटेंगे और जिसका पैग़म्बर सबसे ज़्यादा सीधा रास्ता बताने वाले क़ुरआन की वह्य से मालामाल है।

लेकिन यह नेतृत्व कैसे मिल सकता है जबकि इस उम्मत का रसूल मक्के के पहाड़ों में लोगों के बीच ठोकरें खाता फिर रहा है?

उस समय यह एक सवाल था जो एक दूसरी सच्चाई से परदा उठा रहा था और वह सच्चाई यह थी कि इस्लामी दावत का एक दौर अपने अन्त और पूरा होने के क़रीब आ लगा है और अब एक दूसरा दौर शुरू होने वाला है, जिसकी धारा पहले से अलग होगी।

इसीलिए हम देखते हैं कि कुछ आयतों में मुश्रिकों को खुली चेतावनी और कड़ी धमकी दी गई है। इर्शाद है—

'और जब हम किसी बस्ती को तबाह करना चाहते हैं तो वहां के खाते-पीते लोगों को हुक्म देते हैं, पर वे खुली मनमानी करते हैं। पस उस बस्ती पर (तबाही का) कथन सही साबित हो जाता है और हम उसे कुचल कर रख देते हैं।'

(17 : 16)

'और हमने नूह के बाद कितनी ही क़ौमों को तबाह कर दिया और तुम्हारा रब अपने बन्दों के अपराधों की ख़बर रखने और देखने के लिए काफ़ी है।'

(17 : 17)

फिर इन आयतों के साथ-साथ कुछ ऐसी आयंतें भी हैं जिनमें मुसलमानों को सांस्कृतिक नियम और विधान बताये गए हैं जिन पर आगे इस्लामी समाज का निर्माण होना था, गोया अब वे किसी ऐसे भू-भाग पर अपना ठिकाना बना चुके हैं, जहां हर पहलू से उनके मामले उनके अपने हाथ में हैं और उन्होंने एक ऐसी इकाई बना ली है, जिस पर समाज की चक्की घूमा करती है, इसलिए इन आयतों में इशारा है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत जल्द ऐसी शरण-स्थली और शान्ति स्थली पा लेंगे जहां आपके दीन को चैन नसीब होगा।

यह इसरा और मेराज की बरकत भरी घटना की तह में छिपी हिक्मतों और छिपे भेदों में से एक ऐसा भेद और एक ऐसी हिक्मत है जिसका हमारे विषय से सीधा ताल्लुक़ है। इसलिए हमने उचित समझा कि उसे बयान कर दें।

इस तरह की दो बड़ी हिक्मतों पर नज़र डालने के बाद हमने यह राय बनाई है कि मेराज की यह घटना या तो पहली अक़बा की बैअत से कुछ ही पहले की है या अक़बा की दोनों बैअतों के बीच की है। (वल्लाहु आलम)

अक़बा की पहली बैअत[1]

हम बता चुके हैं कि नुबूवत के ग्यारहवें साल हज के मौसम में यसरिब के छः आदमियों ने इस्लाम कुबूल कर लिया था और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वायदा किया था कि अपनी क़ौम में जाकर आपकी रिसालत का प्रचार करेंगे।

इसका नतीजा यह हुआ कि अगले साल जब हज का मौसम आया (यानी ज़िलहिज्जा सन् 12 नववी, मुताबिक़ जुलाई 621 ई०) तो बारह आदमी आपकी सेवा में उपस्थित हुए, इनमें हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह को छोड़कर बाक़ी पांच वही थे, जो पिछले साल भी आ चुके थे और इनके अलावा सात आदमी नए थे, जिनके नाम ये हैं—

1. मुआज़ बिन हारिस बिन अफ़रा, क़बीला बनी नज्जार (ख़ज़रज)
2. ज़कवान बिन अब्दुल क़ैस, क़बीला बनी ज़ुरैक़ (ख़ज़रज)
3. उबादा बिन सामित, क़बीला बनी ग़नम (ख़ज़रज)
4. यज़ीद बिन सालबा, क़बीला बनी ग़नम के मित्र (ख़ज़रज)
5. अब्बास बिन उबादा बिन नज़ला, क़बीला बनी सालिम (ख़ज़रज)
6. अबुल हैसम बिन तैहान, क़बीला बनी अब्दुल अशहल (औस)
7. उवैम बिन साइदा, क़बीला बनी अम्र बिन औफ़ (औस)

इनमें से सिर्फ़ आख़िरी दो आदमी औस क़बीले से थे, बाक़ी सबके सब क़बीला ख़ज़रज से थे।[2]

---

1. अक़बा पहाड़ की घाटी यानी तंग पहाड़ी रास्ते को कहते हैं। मक्का से मिना आते-जाते हुए मिना के पश्चिमी किनारे पर एक तंग पहाड़ी रास्ते से गुज़रना पड़ता था। यही रास्ता अक़बा के नाम से मशहूर है। ज़िलहिज्जा की दसवीं तारीख़ को जिसमें जमरा को कंकरी मारी जाती है, वह इसी रास्ते के सिरे पर वाक़े है, इसलिए इसे जमरा अक़्बा कहते हैं। इस जमरा का दूसरा नाम जमरा कुबरा भी है। बाक़ी दो जमरे इससे पूरब में थोड़ी दूरी पर वाक़े हैं। चूंकि मिना का पूरा मैदान जहां हाजी लोग ठहरते हैं इन तीनों जमरों के पूरब में है, इसलिए सारी चहल पहल इधर ही रहती थी और कंकरियां मारने के बाद उस ओर लोगों के आने-जाने का सिलसिला ख़त्म हो जाता है। इसीलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बैअत लेने के लिए इस घाटी को चुना और इसी के ताल्लुक़ से इसको अक़्बा की बैअत कहते हैं। अब पहाड़ काट कर यहां चौड़ी-चौड़ी सड़कें निकाल ली गई हैं।
2. इब्ने हिशाम 1/431-433

इन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिना में अक़बा के पास मुलाक़ात की और आपसे कुछ बातों पर बैअत की। ये बातें वही थी जिन पर आगे हुदैबिया के समझौते के बाद और मक्का की विजय के वक़्त औरतों से बैअत ली गई।

अक़बा की इस बैअत का विवरण सही बुख़ारी में हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० की रिवायत से मिलता है। वह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, आओ, मुझसे इस बात पर बैअत करो कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न करोगे, चोरी न करोगे, ज़िना न करोगे, अपनी औलाद को क़त्ल न करोगे, अपने हाथ-पांव के बीच से गढ़ कर कोई बोहतान न लाओगे और किसी भली बात में मेरी नाफ़रमानी न करोगे।

जो व्यक्ति ये सारी बातें पूरी करेगा, उसका बदला अल्लाह पर है और जो व्यक्ति इनमें से कोई चीज़ कर बैठेगा, फिर उसे दुनिया ही में उसकी सज़ा दे दी जाएगी, तो यह उसके लिए कफ़्फ़ारा होगी और जो व्यक्ति इनमें से कोई चीज़ कर बैठेगा, फिर अल्लाह उस पर परदा डाल देगा, तो उसका मामला अल्लाह के हवाले है, चाहेगा तो सज़ा देगा और चाहेगा तो माफ़ कर देगा।

हज़रत उबादा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हमने इस पर आपसे बैअत की।[1]

मदीना में इस्लाम का दूत (सफ़ीर)

बैअत पूरी हो गई और हज ख़त्म हो गया, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन लोगों के साथ यसरिब में अपना पहला दूत (सफ़ीर) भेजा, ताकि वह मुसलमानों को इस्लामी हुक्मों की शिक्षा दे और उन्हें दीन की बातें बताए और जो लोग अब तक शिर्क पर चले आ रहे हैं, उनमें इस्लाम की इशाअत करे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसके लिए पहले इस्लाम क़ुबूल करने वालों में से एक जवान को चुना, जिसका शुभ नाम मुसअब बिन उमैर अब्दरी रज़ियल्लाहु अन्हु है।

ज़बरदस्त कामियाबी

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना पहुंचे, तो हज़रत असद बिन ज़ुरारा रज़ि० के घर उतरे। फिर दोनों ने मिलकर यसरिब वालों में पूरे

1. सहीह बुख़ारी, बाब बाद हलावतिल ईमान 1/7, बाब वफ़ूदुल अंसार 1/550-551, बाब क़ौलुहूतआला इज़ा जा-अ-कल मोमिनाति 2/727 बाब अल-हुदूद कफ़्फ़ारा 2/1003

उत्साह के साथ इस्लाम की तब्लीग़ (प्रचार) शुरू कर दी।

हज़रत मुस्अब मुक़री की उपाधि से पहचाने जाने लगे। (मुक़री का अर्थ है पढ़ाने वाला। उस वक़्त अध्यापक या गुरु को मुक़री कहते थे।)

तब्लीग़ (प्रचार) के सिलसिले में उनकी सफलता की एक बहुत ही शानदार घटना यह है कि एक दिन हज़रत असद बिन ज़ुरारा रज़ि० उन्हें साथ लेकर बनी अब्दुल अशहल और बनी ज़फ़र के मुहल्ले में तशरीफ़ ले गए और वहां बनी ज़फ़र के एक बाग़ के अंदर मर्क़ नामी एक कुंएं पर बैठ गए। उनके पास कुछ मुसलमान भी जमा हो गए। उस वक़्त तक बनी अब्दुल अशहल के दोनों सरदार यानी हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० और हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० मुसलमान नहीं हुए थे, बल्कि शिर्क ही पर थे।

उन्हें जब ख़बर हुई तो हज़रत साद ने हज़रत उसैद से कहा कि ज़रा जाओ और इन दोनों को, जो हमारे कमज़ोरों को मूर्ख बनाने आए हैं, डांट दो और हमारे मुहल्ले में आने से मना कर दो। चूंकि असद बिन ज़ुरारा मेरी ख़ाला का लड़का है, (इसलिए तुम्हें भेज रहा हूं) वरना यह काम मैं ख़ुद कर लेता।

उसैद ने अपना हथियार उठाया और इन दोनों के पास पहुंचे।

हज़रत असद रज़ि० ने उन्हें आता देखकर हज़रत मुसअब रज़ि० से कहा, 'यह अपनी क़ौम का सरदार इधर आ रहा है। इसके बारे में अल्लाह से सच्चाई अख़्तियार करना।'

हज़रत मुस्अब रज़ि० ने कहा, अगर यह बैठा तो इससे बात करूंगा।

उसैद पहुंचे तो उनके पास खड़े होकर सख़्त-सुस्त कहने लगे, बोले—

'तुम दोनों हमारे यहां क्यों आए हो? हमारे कमज़ोरों को मूर्ख बनाते हो? याद रखो, अगर तुम्हें अपनी जान की ज़रूरत है, तो इससे अलग ही रहो।'

हज़रत मुसअब ने कहा, क्यों न आप बैठें और कुछ सुनें। अगर कोई बात पसन्द आ जाए, तो क़ुबूल कर लें। पसन्द न आए तो छोड़ दें।

हज़रत उसैद रज़ि० ने कहा, 'बात तो ठीक कह रहे हो।' इसके बाद अपना हथियार गाड़ कर बैठ गए।

अब हज़रत मुसअब ने इस्लाम की बात शुरू की और क़ुरआन की तिलावत फ़रमाई। उनका बयान है कि ख़ुदा की क़सम, हमने उसैद के बोलने से पहले ही उनके चेहरे की चमक-दमक से उनके इस्लाम का पता लगा लिया। इसके बाद उन्होंने ज़ुबान खोली तो फ़रमाया—

'यह तो बहुत ही ख़ूब और बहुत ही अच्छा है। तुम लोग किसी को इस दीन में दाख़िल करना चाहते हो, तो क्या करते हो?'

उन्होंने कहा, 'आप नहा लें, कपड़े पाक कर लें, फिर हक़ की गवाही दें, फिर दो रक्अत नमाज़ पढ़ें।'

उन्होंने उठ कर ग़ुस्ल (स्नान) किया, कपड़े पाक किए, कलिमा शहादत अदा किया और दो रक्अत नमाज़ पढ़ी, फिर बोले, 'मेरे पीछे एक और व्यक्ति है। अगर वह तुम्हारी पैरवी करने वाला बन जाए, तो उसकी क़ौम का कोई आदमी पीछे न रहेगा और मैं उसको अभी तुम्हारे पास भेज रहा हूं।'

(इशारा साद बिन मुआज़ की ओर था।)

इसके बाद हज़रत उसैद ने अपना हथियार उठाया और पलट कर हज़रत साद के पास पहुंचे। वह अपनी क़ौम के साथ महफ़िल में तशरीफ़ रखते थे। (हज़रत उसैद को देखकर) बोले—

'ख़ुदा की क़सम! मैं कह रहा हूं कि यह आदमी तुम्हारे पास जो चेहरा लेकर आ रहा है, यह वह चेहरा नहीं है, जिसे लेकर गया था।'

फिर जब हज़रत उसैद महफ़िल के पास आ खड़े हुए तो हज़रत साद ने उनसे पूछा कि तुमने क्या किया?

उन्होंने कहा, मैंने उन दोनों से बात की, तो ख़ुदा की क़सम! मुझे कोई हरज तो नहीं नज़र आया। वैसे मैंने उन्हें मना कर दिया है और उन्होंने कहा कि हम वही करेंगे, जो आप चाहेंगे।

और मुझे मालूम हुआ है कि बनी हारिसा के लोग असद बिन ज़ुरारा को क़त्ल करने गए हैं और इसकी वजह यह है कि वे जानते हैं कि असद आपकी ख़ाला का लड़का है, इसलिए वे चाहते हैं कि आपका अह्द तोड़ दें।

यह सुनकर साद ग़ुस्से से भड़क उठे और अपना नेज़ा लेकर सीधे उन दोनों के पास पहुंचे, देखा, तो दोनों इत्मीनान से बैठे हैं। समझ गए कि उसैद का मंशा यह था कि आप भी उनकी बातें सुनें, लेकिन यह उनके पास पहुंचे तो खड़े होकर सख़्त-सुस्त कहने लगे, फिर असद बिन ज़ुरारा को सम्बोधित करके बोले—

'ख़ुदा की क़सम, ऐ अबू उमामा! अगर मेरे और तेरे बीच रिश्तेदारी का मामला न होता तो तुम मुझसे इसकी उम्मीद न रख सकते थे। हमारे मुहल्ले में ऐसी हरकतें करते हो, जो हमें गवारा नहीं।'

इधर हज़रत असद ने हज़रत मुसअब से पहले ही से कह दिया था कि ख़ुदा की क़सम! तुम्हारे पास एक ऐसा सरदार आ रहा है जिसके पीछे उसकी पूरी क़ौम है।

अगर उसने तुम्हारी बात मान ली, तो फिर उनमें से कोई भी न पिछड़ेगा।'

इसलिए हज़रत मुस्अब ने हज़रत साद से कहा, क्यों न आप तशरीफ़ रखें और सुनें। अगर कोई बात पसन्द आ गई तो क़ुबूल कर लें और अगर पसन्द न आई तो हम आपकी नापसंदीदा बात को आपसे दूर ही रखेंगे।

हज़रत साद ने कहा, इंसाफ़ की बात कहते हो।

इसके बाद अपना नेज़ा गाड़ कर बैठ गए।

हज़रत मुसअब ने उन पर इस्लाम पेश किया और क़ुरआन की तिलावत की।

उनका बयान है कि हमें हज़रत साद के बोलने से पहले ही उनके चेहरे की चमक-दमक से उनके इस्लाम का पता लग गया। इसके बाद उन्होंने ज़ुबान खोली और फ़रमाया, तुम लोग इस्लाम लाते हो, तो क्या करते हो?

उन्होंने कहा, आप नहा लें, कपड़े पाक कर लें, फिर हक़ की गवाही दें, फिर दो रक्अत नमाज़ पढ़ें।

हज़रत साद ने ऐसा ही किया। इसके बाद अपना नेज़ा उठाया और अपनी क़ौम की महफ़िल में तशरीफ़ लाए।

लोगों ने देखते ही कहा, हम ख़ुदा की क़सम! कह रहे हैं कि हज़रत साद रज़ि० जो चेहरा लेकर गए थे, उसके बजाए दूसरा ही चेहरा लेकर पलटे हैं।

फिर जब हज़रत साद मज्लिस वालों के पास आकर रुके तो बोले, 'ऐ बनी अब्दुल अशहल! तुम लोग अपने अन्दर मेरा मामला कैसा जानते हो?

उन्होंने कहा, आप हमारे सरदार हैं, सबसे अच्छी सूझ-बूझ के मालिक हैं और हमारे रब से बड़े बरकत वाले निगरां हैं।

उन्होंने कहा, अच्छा तो सुनो! अब तुम्हारे मर्दों और औरतों से मेरी बातचीत हराम है, जब तक कि तुम लोग अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० पर ईमान न लाओ।

उनकी इस बात का यह असर हुआ कि शाम होते-होते इस क़बीले का कोई भी मर्द और कोई भी औरत ऐसी न बची, जो मुसलमान न हो गई हो। सिर्फ़ एक आदमी, जिसका नाम उसेरम था, उसका इस्लाम उहुद की लड़ाई तक स्थगित रहा। फिर उहुद के दिन उसने इस्लाम क़ुबूल किया और लड़ाई में लड़ता हुआ काम आ गया। उसने अभी अल्लाह के लिए एक सज्दा भी न किया था।

नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि उसने थोड़ा अमल किया और ज़्यादा अच्छा बदला पाया।

हज़रत मुसअब रज़ि०, हज़रत असद बिन ज़ुरारा रज़ि० ही के घर पर ठहरे रहकर इस्लाम की तब्लीग़ करते रहे, यहां तक कि अंसार का कोई घराना बाक़ी न बचा जिसमें कुछ मर्द और औरतें मुसलमान न हो चुकी हों, सिर्फ़ बनी उमैया बिन ज़ैद और ख़त्मा और वाइल के मकान बाक़ी रह गये थे। प्रसिद्ध कवि क़ैस बिन असलत इन्हीं का आदमी था और ये लोग उसी की बात मानते थे। इस कवि ने खाई की लड़ाई (05 हि०) तक इन्हें इस्लाम से रोके रखा।

बहरहाल हज के अगले मौसम यानी तेहरवें नबवी के साल के हज का मौसम आने से पहले हज़रत मुसअब बिन उमैर की सफलता की ख़ुशख़बरियां लेकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में मक्का तशरीफ़ लाए और आपके यसरिब के क़बीलों के हालात उनकी जंगी और प्रतिरक्षात्मक क्षमताओं और भली योग्यताओं की बातें विस्तार में बताई।[1]

---

1. इब्ने हिशाम 1/435-438, 2/90 ज़ादुल मआद 2/51

अक़बा की दूसरी बैअत

नुबूवत के तेरहवें साल हज के मौसम (जून सन् 522 ई०) में यसरिब के सत्तर से ज़्यादा मुसलमान हज का फ़र्ज़ अदा करने के लिए मक्का तशरीफ़ लाए। ये अपनी क़ौम के मुश्रिक हाजियों में शामिल होकर आए थे और अभी यसरिब ही में थे या मक्का के रास्ते ही में थे कि आपस में एक दूसरे से पूछने लगे कि हम कब तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यों ही मक्के के पहाड़ों में चक्कर काटते, ठोकर खाते और भयभीत बना हुआ छोड़े रखेंगे?

फिर जब ये मुसलमान मक्का पहुंच गए तो परदे के पीछे नबी सल्ल० के साथ बातों का सिलसिला शुरू किया और आख़िरकार इस बात पर सहमत हो गए कि दोनों फ़रीक़ अय्यामे तश्रीक़[1] के बीच के दिन, यानी 12 ज़िलहिज्जा को, मिना में जमरा ऊला यानी जमरा अक़बा के बाद जो घाटी है, उसी में जमा हों और यह मिलन रात के अंधेरे में बिल्कुल ख़ुफ़िया तरीक़े पर हो।

आइए, अब इस तारीख़ी मिलन के हालात, अंसार के एक लीडर की ज़ुबानी सुनें, कि यही वह मिलन है जिसने इस्लाम और बुतपरस्ती की लड़ाई में ज़माने का रुख़ मोड़ दिया।

हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं—

हम लोग हज के लिए निकले। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अय्यामे तश्रीक़ के बीच के दिन अक़बा में मुलाक़ात तै हुई और आख़िरकार वह रात आ गई जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात तै थी। हमारे साथ एक जाने-माने सरदार अब्दुल्लाह बिन हराम भी थे (जो अभी इस्लाम न लाए थे)। हमने उनको साथ ले लिया था, वरना हमारे साथ हमारी क़ौम के जो मुश्रिक थे, हम उनसे अपना सारा मामला ख़ुफ़िया रखते थे। मगर हमने अब्दुल्लाह बिन हराम से बातचीत की और कहा—

'ऐ अबू जाबिर! आप हमारे एक जाने-पहचाने और शरीफ़ सरदार हैं और हम आपको आपकी मौजूदा हालात से निकालना चाहते हैं, ताकि आप कल-कलां को आग का ईंधन न बन जाएं।'

इसके बाद हमने उन्हें इस्लाम की दावत दी और बतलाया कि आज अक़बा में

---

1. ज़िलहिज्जा महीने की 11, 12, 13 तारीख़ों को 'अय्यामे तश्रीक़' कहते हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हमारी मुलाक़ात तै है।

उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और हमारे साथ अक़बा में तशरीफ़ ले गए और नक़ीब (ग्रुप लीडर) भी मुक़र्रर हुए।

हज़रत काब रज़ि० इस घटना को सविस्तार बयान करते हैं और कहते हैं कि हम लोग पहले की तरह उस रात अपनी क़ौम के साथ अपने डेरों में सोए, लेकिन जब तिहाई रात बीत गई तो अपने डेरों से निकल-निकलकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ तैशुदा जगह पर जा पहुंचे। हम इस तरह चुपके-चुपके दबक-दबक कर निकलते थे, जैसे चिड़िया घोंसले से सुकड़ कर निकलती है, यहां तक कि हम सब अक़बा में जमा हो गए।

हमारी कुल तायदाद पचहत्तर थी, तिहत्तर मर्द और दो औरतें—एक उम्मे अम्मारा नसीबा बिन्त काब थीं, जो क़बीला बनू माज़िन बिन नज्जार से ताल्लुक़ रखती थीं और दूसरी उम्मे मनीअ अस्मा बिन्त अम्र थीं, जिनका ताल्लुक़ क़बीला बनू सलमा से था।

हम सब घाटी में जमा होकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इन्तिज़ार करने लगे और आख़िर वह लम्हा आ ही गया, जब आप तशरीफ़ ले आए। आपके साथ आपके चचा हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब भी थे। वह अगरचे अभी तक अपनी क़ौम के दीन पर थे, पर चाहते थे कि अपने भतीजे के मामले में मौजूद रहें और उनके लिए पक्का इत्मीनान हासिल कर लें। सबसे पहले बात भी उन्हीं ने शुरू की।[1]

बात शुरू हुई और हज़रत अब्बास ने समझाया

मज्लिस जब पूरी हो गई तो दीनी और फ़ौजी मदद के समझौते को क़तई और आख़िरी शक्ल देने के लिए बात शुरू हुई। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत अब्बास ने सबसे पहले ज़ुबान खोली, उनका मतलब यह था कि वह स्पष्ट शब्दों में इस ज़िम्मेदारी की नज़ाकत रख दें, जो इस समझौते के नतीजे में इन लोगों के सर पड़ने वाली थी, चुनांचे उन्होंने कहा—

ख़ज़रज के लोगो! (अरब के आम लोग अंसार के दोनों ही क़बीले यानी ख़ज़रज और औस को ख़ज़रज ही कहते थे) हमारे अन्दर मुहम्मद सल्ल० की जो हैसियत है, वह तुम्हें मालूम है। हमारी क़ौम के जो लोग धार्मिक दृष्टि से हमारी ही जैसी राय रखते हैं, हमने मुहम्मद सल्ल० को उनसे बचाए रखा है।

---

1. इब्ने हिशाम, 1/440-441

वह अपनी क़ौम और अपने शहर में ताक़त, इज़्ज़त और हिफ़ाज़त के अन्दर है, मगर वह अब तुम्हारे यहां जाने और तुम्हारे साथ मिलने पर तैयार हो गए हैं, इसलिए अगर तुम्हारा यह ख़्याल है कि तुम उन्हें जिस चीज़ की ओर बुला रहे हो, निभा लोगे और उन्हें उनके विरोधियों से बचा लोगे, तब तो ठीक है, तुमने जो ज़िम्मेदारी उठाई है, उसे तुम जानो, लेकिन अगर तुम्हारा यह अन्दाज़ा है कि तुम उन्हें अपने पास ले जाने के बाद उनका साथ छोड़कर अलग हो जाओगे, तो फिर अभी से उन्हें छोड़ दो, क्योंकि वे अपनी क़ौम और अपने शहर में बहरहाल इज़्ज़त और हिफ़ाज़त से हैं।

हज़रत काब रज़ि० कहते हैं कि हमने अब्बास से कहा कि आपकी बात हमने सुन ली। अब ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप बात कीजिए और अपने लिए और अपने रब के लिए जो समझौते पसन्द करें, कर लीजिए।[1]

इस जवाब से पता चलता है कि इस बड़ी ज़िम्मेदारी को उठाने और उसके ख़तरनाक नतीजों के झेलने के सिलसिले में अन्सार के पक्के इरादे, बहादुरी और ईमान और जोश और इख़्लास का क्या हाल था। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्ल० ने बातचीत की।

आपने पहले क़ुरआन की तिलावत की, अल्लाह की ओर दावत दी और इस्लाम पर उभारा, इसके बाद बैअत हुई।

बैअत की धाराएं

बैअत की घटना इमाम अहमद ने हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से सविस्तार रिवायत की है।

हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि हमने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हम आपसे किस बात पर बैअत करें?

आपने फ़रमाया, इस बात पर कि—

1. चुस्ती और सुस्ती, हर हाल में सुनोगे और मानोगे,
2. तंगी और ख़ुशहाली, हर हाल में माल ख़र्च करोगे,
3. भलाई का हुक्म दोगे और बुराई से रोकेगे।
4. अल्लाह की राह में उठ खड़े होगे और अल्लाह के मामले में किसी

---

1. इब्ने हिशाम, 1/441-442

मलामत करने वाले की मलामत की परवाह न करोगे।

5. और मैं जब तुम्हारे पास आ जाऊंगा, तो मेरी मदद करोगे और जिस चीज़ से अपनी जान और अपने बाल-बच्चों की हिफ़ाज़त करते हो, उससे मेरी भी हिफ़ाज़त करोगे।

और तुम्हारे लिए जन्नत है।[1]

हज़रत काब रज़ि० की रिवायत में—जिसका उल्लेख इब्ने इस्हाक़ ने किया है—सिर्फ़ आख़िरी धारा 5 का उल्लेख है। चुनांचे उसमें कहा गया है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने क़ुरआन की तिलावत, अल्लाह की ओर दावत और इस्लाम पर उभारने के बाद फ़रमाया,

'मैं तुमसे इस बात पर बैअत लेता हूं कि तुम उस चीज़ से मेरी हिफ़ाज़त करोगे, जिससे अपने बाल-बच्चों की हिफ़ाज़त करते हो।'

इस पर हज़रत बरा बिन मारूर रज़ि० ने आपका हाथ पकड़ा और कहा—

'हां, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको सच्चा नबी बनाकर भेजा है, हम यक़ीनन उस चीज़ से आपकी हिफ़ाज़त करेंगे, जिससे अपने बाल-बच्चों की हिफ़ाज़त करते हैं। इसलिए ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप हमसे बैअत लीजिए। हम ख़ुदा की क़सम ! जंग के बेटे हैं और हथियार हमारा खिलौना है। हमारी यही रीति बाप-दादा से चली आ रही है।'

हज़रत काब रज़ि० कहते हैं कि हज़रत बरा रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात कर ही रहे थे कि अबुल हैसम बिन तैहान ने बात काटते हुए कहा—

'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमारे और कुछ लोगों यानी यहूदियों के बीच समझौतों की रस्सियां हैं और अब हम इन रस्सियों को काटने वाले हैं, तो कहीं ऐसा तो नहीं होगा कि हम ऐसा कर डालें, फिर अल्लाह आपको ग़लबा दे तो आप हमें छोड़कर अपनी क़ौम की ओर पलट आएं।'

यह सुनकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुस्कराए, फिर फ़रमाया—

---

1. इसे इमाम अहमद बिन हंबल ने हसन सनद से रिवायत किया है और इमाम हाकिम और इब्ने हब्बान ने यही कहा है। 2/212, बैहक़ी ने सुनने कुबरा में रिवायत किया है 1/1 इब्ने इस्हाक़ ने क़रीब-क़रीब यही चीज़ हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० से रिवायत की है, अलबत्ता उसमें एक धारा बढ़ी हुई है, जो यह है कि हम हुकूमत वालों से हुकूमत के लिए न झगड़ेंगे। देखिए इब्ने हिशाम 1/454

'(नहीं) बल्कि आप लोगों का ख़ून मेरा ख़ून और आप लोगों की बर्बादी मेरी बर्बादी है। मैं आपसे हूं और आप मुझसे हैं। जिससे आप लड़ेंगे, उससे मैं लड़ूंगा, और जिससे आप सुलह करेंगे, उससे मैं सुलह करूंगा।'[1]

बैअत की ख़तरनाकी की दोबारा याद देहानी

बैअत की शर्तों के बारे में बातचीत पूरी हो चुकी और लोगों ने बैअत शुरू करने का इरादा किया, तो पहली पंक्ति के दो मुसलमान जो 11 नबवी और 12 नबवी में मुसलमान हुए थे, एक-एक करके उठे, ताकि लोगों के सामने उनकी ज़िम्मेदारी और ख़तरनाकी को अच्छी तरह स्पष्ट करें और ये लोग मामले के सारे पहलुओं को अच्छी तरह समझ लेने के बाद ही बैअत करें। इससे यह भी मालूम करना था कि क़ौम किस हद तक क़ुर्बानी देने के लिए तैयार है।

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि जब लोग बैअत के लिए जमा हो गए, तो हज़रत अब्बास बिन उबादा बिन नज़ला ने कहा—

'तुम लोग जानते हो कि इनसे (इशारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर था) किस बात पर बैअत कर रहे हो?'

आवाज़ें : जी हां।

हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, तुम इनसे लाल और काले लोगों से लड़ने पर बैअत कर रहे हो। अगर तुम्हारा यह ख़्याल हो कि जब तुम्हारे मालों का सफ़ाया कर दिया जाएगा, और तुम्हारे सज्जन क़त्ल कर दिए जाएंगे, तो तुम इनका साथ छोड़ दोगे, तो अभी से छोड़ दो, क्योंकि अगर तुमने उन्हें ले जाने के बाद छोड़ दिया, तो यह दुनिया और आख़िरत की रुसवाई होगी और अगर तुम्हारा यह ख़्याल है कि तुम माल की तबाही और सज्जनों के क़त्ल के बावजूद वायदा निभाओगे, जिसकी ओर तुमने उन्हें बुलाया है, तो फिर बेशक तुम इन्हें ले लो, क्योंकि ख़ुदा की क़सम, यह दुनिया और आख़िरत की भलाई है।'

इस पर सब ने एक आवाज़ होकर कहा—हम माल की तबाही और सज्जनों के क़त्ल का ख़तरा मोल लेकर इन्हें क़ुबूल करते हैं। हां, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हमने यह वायदा निभाया, तो हमें इसके बदले में क्या मिलेगा?

आपने फ़रमाया, जन्नत।

लोगों ने अर्ज़ किया, अपना हाथ फैलाइए।

---

1. इब्ने हिशाम 1/442

आपने हाथ फैलाया और लोगों ने बैअत की ।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि उस वक़्त हम बैअत करने उठे तो हज़रत असद बिन ज़ुरारा ने, जो इन सत्तर आदमियों में सबसे कम उम्र थे—आपका हाथ पकड़ लिया और बोले—

'यसरिब वालो ! तनिक ठहर जाओ !

हम आपकी सेवा में ऊंटों के कलेजे मार कर (यानी लम्बा-चौड़ा सफ़र करके) इस यक़ीन के साथ हाज़िर हुए हैं कि आप अल्लाह के रसूल हैं। आज आपको यहां से ले जाने का मतलब है, सारे अरब से दुश्मनी, तुम्हारे चुने सरदारों का क़त्ल और तलवारों की मार, इसलिए अगर यह सब कुछ बरदाश्त कर सकते हो, तब तो इन्हें ले चलो, और तुम्हारा बदला अल्लाह पर है और अगर तुम्हें अपनी जान प्यारी है, तो इन्हें अभी से छोड़ दो। यह अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा क़ाबिले क़ुबूल बहाना होगा ।[2]

बैअत पूरी हो गई

बैअत की धाराएं पहले ही तै हो चुकी थीं, एक बार इस नाज़ुक काम का स्पष्टीकरण भी हो चुका था। अब यह ताकीद आगे की गई तो लोगों ने एक आवाज़ होकर कहा—

असद बिन ज़ुरारह ! अपना हाथ हटाओ, ख़ुदा की क़सम ! हम इस बैअत को न छोड़ सकते हैं और न तोड़ सकते हैं ।[3]

इस जवाब से हज़रत असद को अच्छी तरह मालूम हो गया कि क़ौम किस हद तक इस राह में जान देने को तैयार है।

वास्तव में हज़रत असद बिन ज़ुरारह, हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० के साथ मिलकर मदीने में इस्लाम के सबसे बड़े प्रचारक थे, इसलिए स्वाभाविक रूप से ही वही इन बैअत करने वालों के धार्मिक नेता भी थे और इसीलिए सबसे पहले उन्हीं ने बैअत भी की।

चुनांचे इब्ने इस्हाक़ की रिवायत है कि बनू नज्जार कहते हैं कि अबू उमामा असद बिन ज़ुरारह सबसे पहले आदमी हैं जिन्होंने आपसे हाथ मिलाया ।[4] और

---

1. इब्ने हिशाम 1/446
2. मुस्नद अहमद, हज़रत जाबिर से 3/322, बैहक़ी, सुनने कुब्रा 9/9
3. वही,
4. इब्ने इस्हाक़ का यह भी बयान है कि बनू अब्दुल अशहल कहते हैं कि सबसे पहले

इसके बाद आम बैअत हुई।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि हम लोग एक-एक आदमी करके उठे और आपने हमसे बैअत ली और उसके बदले जन्नत की ख़ुशख़बरी दी।[1]

बाक़ी रहीं वे औरतें, जो इस मौक़े पर हाज़िर थीं, तो उनकी बैअत सिर्फ़ ज़ुबानी हुई। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी किसी अनजानी औरत से मुसाफ़ा नहीं किया।[2]

बारह नक़ीब

बैअत पूरी हो चुकी तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह प्रस्ताव रखा कि बारह सरदार चुन लिए जाएं, जो अपनी-अपनी क़ौम के 'नक़ीब' हों, और इस बैअत की धाराओं को लागू करने के लिए अपनी क़ौम की ओर से वही ज़िम्मेदार और मुकल्लफ़ हों।

आपका इर्शाद था कि आप लोग अपने भीतर से बारह नक़ीब पेश कीजिए, ताकि वही लोग आपकी अपनी-अपनी क़ौम के मामलों के ज़िम्मेदार हों। आपके इर्शाद पर तुरन्त ही नक़ीबों का चुनाव अमल में आ गया। नौ ख़ज़रज से लिए गए और तीन औस से। नाम इस तरह हैं—

ख़ज़रज के नक़ीब— 1. असद बिन ज़ुरारा बिन अदस,

2. साद बिन रबीअ बिन अम्र,

3. अब्दुल्लाह बिन रुवाहा बिन सालबा,

4. राफ़ेअ बिन मालिक बिन अजलान,

5. बरा बिन मारूर बिन सख़्र

6. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हराम,

7. उबादा बिन सामित बिन क़ैस,

अबुल हैसम बिन तैहान ने बैअत की और हज़रत काब बिन मालिक कहते हैं कि बरा बिन मारूर ने की (इब्ने हिशाम 1/447) मेरा विचार है कि संभव है बैअत से पहले नबी सल्ल० से हज़रत अबुल हैसम और बरा की जो बातें हुई थीं, लोगों ने उसी को बैअत मान लिया हो, वरना उस वक़्त आगे बढ़ाए जाने के सबसे ज़्यादा हक़दार हज़रत असद बिन ज़ुरारह ही थे। वल्लाहु आलम।

1. मुस्नद अहमद, 3/322
2. देखिए सहीह मुस्लिम बाब कैफ़ीयतुबैअतिन्निसाइ 2/131

8. साद बिन उबादा बिन वलीम,

9. मुन्ज़िर बिन अम्र बिन ख़नीस,

औस के नक़ीब— 1. उसैद बिन हुज़ैर बिन समाक,

2. साद बिन ख़ैसमा बिन हारिस,

3. रिफ़ाआ बिन अब्दुल मुंज़िर बिन ज़ुबैर।[1]

जब इन नक़ीबों को चुन लिया गया, तो इनसे सरदार और ज़िम्मेदार होने की हैसियत से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक और वचन लिया। आपने फ़रमाया—

'आप लोग अपनी क़ौम के तमाम लोगों के निगरां हैं जैसे हवारी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ओर से निगरां हुए थे और मैं अपनी क़ौम यानी मुसलमानों का निगरां हूं।'

उन सबने कहा, जी हां।[2]

शैतान समझौते का पता देता है

समझौता पूरा हो चुका था और अब लोग बिखरने ही वाले थे कि एक शैतान को इसका पता लग गया। चूंकि यह भेद बिल्कुल अन्तिम क्षणों में खुला था और इतना मौक़ा न था कि यह ख़बर चुपके से क़ुरैश को पहुंचा दी जाए और वे अचानक इस सभा में शरीक लोगों पर टूट पड़ें और उन्हें घाटी ही में जा लें, इसलिए इस शैतान ने झट एक ऊंची जगह खड़े होकर पूरी ऊंची आवाज़ से, जो शायद ही कभी सुनी गई हो, यह पुकार लगाई—

'ख़ेमे वालों! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखो। इस वक़्त विधर्मी उसके साथ हैं और तुमसे लड़ने के लिए जमा हैं।'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—

'यह इस घाटी का शैतान है। ऐ अल्लाह के दुश्मन! सुन, अब मैं तेरे लिए जल्द ही फ़ारिग़ हो रहा हूं।'

इसके बाद आपने लोगों से फ़रमाया कि वे अपने डेरों को चले जाएं।[3]

---

1. ज़ुबैर ब पर सम्मिलित, कुछ लोगों ने ब की जगह न कहा है यानी ज़ुनैर। कुछ लोगों ने रिफ़ाआ के बदले अबुल हैसम बिन तैहान का नाम लिखा है।
2. इब्ने हिशाम 1/443, 444, 446
3. इब्ने हिशाम, 1/447, जादुल मआद 2/51

क़ुरैश पर चोट लगाने के लिए अंसार की मुस्तैदी

इस शैतान की आवाज़ सुनकर हज़रत अब्बास बिन उबादा बिन नज़ला ने फ़रमाया—

'उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है, आप चाहें तो हम कल मिना वालों पर अपनी तलवारों के साथ टूट पड़ें।'

आपने फ़रमाया, हमें इसका हुक्म नहीं दिया गया है। पस आप लोग अपने डेरों में चले जाएं, इसके बाद लोग वापस जाकर सो गए, यहां तक कि सुबह हो गई।[1]

यसरिब के सरदारों से क़ुरैश का विरोध

यह ख़बर क़ुरैश के कानों तक पहुंची तो बड़े दुखी हुए, एक हंगामा मच गया, क्योंकि इस जैसी बैअत का जो परिणाम उनकी जान व माल के ताल्लुक़ से निकल सकता था और जो नतीजे सामने आ सकते थे, इसका उन्हें अच्छी तरह अन्दाज़ा था।

चुनांचे सुबह होते ही उनके सरदार और बड़े चौधरियों के एक बड़े दल ने इस समझौते के ख़िलाफ़ कड़े विरोध के लिए यसरिब वालों के खेमों का रुख़ किया और यों अपने दिल की भड़ास निकाली—

'ख़ज़रज के लोगो ! हमें मालूम हुआ है कि आपके लोग हमारे इस साहब को हमारे बीच से निकाल ले जाने के लिए आए हैं और हमसे लड़ाई करने के लिए उसके हाथ पर बैअत कर रहे हैं, हालांकि कोई अरब क़बीला ऐसा नहीं जिससे लड़ाई करना हमारे लिए इतना ज़्यादा नागवार हो, जितना आप लोगों के लिए है।'[2]

लेकिन चूंकि ख़ज़रजी मुश्रिक इस बैअत के बारे में सिरे से कुछ जानते ही न थे, क्योंकि यह पूरी राज़दारी के साथ रात के अंधेरे में हुई थी, इसलिए इन मुश्रिकों ने अल्लाह की क़सम खा-खाकर यक़ीन दिलाया कि ऐसा कुछ हुआ ही नहीं है, हम इस तरह की कोई बात सिरे से जानते ही नहीं।

अन्ततः यह दल अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल के पास पहुंचा। वह भी कहने लगा, यह झूठ है। ऐसा नहीं हुआ है और यह तो हो ही नहीं सकता कि

---

1. इब्ने हिशाम 1/448
2. वही, 1/448

मेरी क़ौम मुझे छोड़कर इस तरह काम कर डाले। अगर मैं यसरिब में होता, तो मुझसे मश्विरा किए बिना मेरी क़ौम ऐसा न करती।

बाक़ी रहे मुसलमान, तो उन्होंने कनखियों से एक दूसरे को देखा और चुप साध ली। इनमें से किसी ने हां या नहीं के साथ ज़ुबान ही नहीं खोली।

आख़िर कुरैश के सरदारों का रुझान यह रहा कि मुश्रिकों की बात सच है, इसलिए वह नामुराद वापस चले गए।

ख़बर पर विश्वास हो जाने के बाद. . .

मक्का के सरदार लगभग इस यक़ीन के साथ पलटे थे कि यह ख़बर ग़लत है, लेकिन उसकी कुरेद में वे बराबर लगे रहे, अन्ततः उन्हें यह निश्चित रूप से मालूम हो गया कि ख़बर सही है और बैअत हो चुकी है, लेकिन यह पता उस वक़्त चला जब हज वाले अपने-अपने वतन रवाना हो चुके थे, इसलिए उनके सवारों ने तेज़ रफ़्तारी से यसरिब वालों का पीछा किया, लेकिन मौक़ा निकल चुका था।

अलबत्ता उन्होंने साद बिन उबादा और मुन्ज़िर बिन अम्र को देख लिया और उन्हें जा खदेड़ा, लेकिन मुन्ज़िर ज़्यादा तेज़ रफ़्तार साबित हुए और निकल भागे, अलबत्ता साद बिन उबादा पकड़ लिए गए और उनका हाथ गरदन के पीछे उन्हीं के कजावे की रस्सी से बांध दिया गया, फिर उन्हें मारते-पीटते और बाल नोचते हुए मक्का ले जाया गया, लेकिन वहां मुतइम बिन अदी और हारिस बिन हर्ब बिन उमैया ने आकर छुड़ा दिया, क्योंकि इन दोनों के जो क़ाफ़िले मदीने से गुज़रते थे, वे हज़रत साद रज़ि० ही की पनाह में गुज़रते थे।

इधर अंसार उनकी गिरफ़्तारी के बाद आपस में मश्विरा कर रहे थे कि क्यों न धावा बोल दिया जाए, मगर इतने में वह दिखाई पड़ गए। इसके बाद तमाम लोग ख़ैरियत से मदीना पहुंच गए।[1]

यही अक़्बा की दूसरी बैअत है, जिसे अक़्बा की बड़ी बैअत कहते हैं।

इस बैअत पर एक ऐसी फ़िज़ा में अमल शुरू हुआ जिसमें मुहब्बत, वफ़ादारी, ईमान वालों के आपसी सहयोग व सहायता, आपसी विश्वास और साहस, धैर्य और वीरता की भावनाएं छाई हुई थीं। चुनांचे यसरिबी मुसलमानों के दिल अपने कमज़ोर मक्की भाइयों की मुहब्बत से लबालब भरे हुए थे। उनके अन्दर इन भाइयों की हिमायत का जोश था और उन पर ज़ुल्म करने वालों पर ग़म व ग़ुस्सा था।

---

1. ज़ादुल मआद 2/51-52, इब्ने हिशाम 1/448-450

उनके सीने अपने उस भाई की मुहब्बत से भरे हुए थे, जिसे देखे बिना सिर्फ़ अल्लाह की ख़ातिर अपना भाई क़रार दे लिया था।

ये भावनाएं किसी सामयिक कारण का नतीजा न थीं, जो दिन गुज़रने के साथ-साथ ख़त्म हो जाती हैं, बल्कि इसका स्रोत अल्लाह पर ईमान, रसूल पर ईमान और किताब पर ईमान था, यानी वह ईमान जो ज़ुल्म व ज़्यादती की किसी बड़ी से बड़ी ताक़त के सामने झुकता नहीं, वह ईमान कि जब उसकी ठंडी हवाएं चलती हैं, तो अक़ीदा व अमल में अनोखी बातें सामने आती हैं। उसी ईमान की बदौलत मुसलमानों के समय के चेहरे पर ऐसे-ऐसे कारनामे अंकित किए और ऐसी-ऐसी निशानियां छोड़ीं कि उनकी नज़ीर अब तक किसी दौर में नहीं मिल सकी है और संभवत: भविष्य में भी न मिल सकेगी।

हिजरत का दौर शुरू

जब अक़्बा की दूसरी बैअत पूरी हो गई, इस्लाम, कुफ़्र और जिहालत के फैले हुए निर्जन मरुस्थल में अपने एक वतन की बुनियाद रखने में सफल हो गया और यह सबसे महत्वपूर्ण सफलता थी, जो इस्लाम ने अपनी दावत के आरंभ से अब तक प्राप्त की थी, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों को इजाज़त दे दी कि वे अपने इस नए वतन की ओर हिजरत कर जाएं।

हिजरत का मतलब यह था कि सारे हितों और स्वार्थों को त्याग कर और माल की क़ुर्बानी देकर सिर्फ़ अपनी जान बचा ली जाए और वह भी यह समझते हुए कि यह जान भी ख़तरे के निशाने पर है और पूरे रास्ते में, शुरू से लेकर आख़िर तक कहीं भी ख़त्म की जा सकती है। फिर सफ़र भी एक अस्पष्ट भविष्य की ओर है। मालूम नहीं आगे चलकर अभी कौन-कौन सी मुसीबतों और परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

मुसलमानों ने यह सब कुछ जानते हुए हिजरत की शुरूआत कर दी। उधर मुश्रिकों ने भी उनकी रवानगी में रुकावटें खड़ी करनी शुरू कीं, क्योंकि वे समझ रहे थे कि इसमें ख़तरे बहुत हैं।

हिजरत के कुछ नमूने पेश किए जाते हैं—

1. सबसे पहले मुहाजिर हज़रत अबू सलमा रज़ि० थे। उन्होंने इब्ने इस्हाक़ के अनुसार अक़्बा की बड़ी बैअत से एक साल पहले हिजरत की थी। उनके साथ उनके बीवी-बच्चे भी थे।

जब उन्होंने रवाना होना चाहा, तो उनकी ससुराल वालों ने कहा कि यह रही आपकी जान, इसके बारे में आप हम पर ग़ालिब आ गए, लेकिन यह बताइए कि यह हमारे घर की लड़की, आख़िर किस बुनियाद पर हम आपको छोड़ दें कि आप इसे शहर-शहर घुमाते फिरें?

चुनांचे उन्होंने उनसे उनकी बीवी छीन ली। इस पर अबू सलमा के घरवालों को ताव आ गया और उन्होंने कहा—

'जब तुम लोगों ने इस औरत को हमारे आदमी से छीन लिया, तो हम अपना बेटा उस औरत के पास नहीं रहने दे सकते।'

चुनांचे दोनों फ़रीक़ ने उस बच्चे को अपनी-अपनी ओर खींचा, जिससे उसका

हाथ उखड़ गया और अबू सलमा रज़ि० के घर वाले उसको अपने पास ले गए।

ख़ुलासा यह कि अबू सलमा रज़ि० ने अकेले मदीने का सफ़र किया।

इसके बाद उम्मे सलमा रज़ि० का हाल यह था कि वह अपने शौहर के चले जाने और अपने बच्चे से महरूमी के बाद हर दिन सुबह-सुबह अबतह पहुंच जातीं। (जहां यह घटना घटी थी) और शाम तक रोती रहतीं।

इसी हाल में एक साल गुज़र गया। अन्ततः उनके घराने के किसी आदमी को तरस आ गया और उसने कहा कि इस बेचारी को जाने क्यों नहीं देते? इसे ख़ामख़ाही इसके शौहर और बेटे से जुदा कर रखा है।

इस पर उम्मे सलमा से उनके घरवालों ने कहा कि अगर तुम चाहो तो अपने शौहर के पास जाओ।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने बेटे को उसके ददिहाल वालों से वापस लिया और मदीना चल पड़ीं।

अल्लाहु अक्बर! कोई पांच सौ किलोमीटर की दूरी का सफ़र और साथ में अल्लाह का कोई बन्दा नहीं। जब तनईम पहुंचीं तो उस्मान बिन अबी तलहा मिल गया। उसे हालत का विवरण मालूम हुआ तो साथ-साथ चलकर मदीना पहुंचाने ले गया और जब क़ुबा की आबादी नज़र आई तो बोला—

'तुम्हारा शौहर इसी बस्ती में है। इसी में चली जाओ। अल्लाह बरकत दे।'

इसके बाद वह मक्का पलट गया।[1]

2. हज़रत सुहैब रज़ि० ने जब हिजरत का इरादा किया, तो उनसे क़ुरैश के कुफ़्फ़ार ने कहा, तुम हमारे पास आए थे तो दीन-हीन थे, लेकिन यहां आकर तुम्हारा माल बहुत ज़्यादा हो गया और तुम बहुत आगे पहुंच गए। अब तुम चाहते हो कि अपनी जान और अपना माल दोनों लेकर चल दो, तो ख़ुदा की क़सम, ऐसा नहीं हो सकता।

हज़रत सुहैब रज़ि० ने कहा, अच्छा यह बताओ, अगर मैं अपना माल छोड़ दूं, तो तुम मेरी राह छोड़ दोगे?

उन्होंने कहा, हां।

हज़रत सुहैब रज़ि० ने कहा, अच्छा तो फिर ठीक है। चलो, मेरा माल तुम्हारे हवाले।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह बात मालूम हुई तो

---

1. इब्ने हिशाम 1/468, 469, 470

आपने फ़रमाया, सुहैब ने नफ़ा उठाया, सुहैब ने नफ़ा उठाया।[1]

3. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु, अय्याश बिन अबी रबीआ और हिशाम बिन आस बिन वाइल ने आपस में तै किया कि फ़्लां जगह सुबह-सुबह इकट्ठे होकर वहीं से मदीना को हिजरत की जाएगी। हज़रत उमर और अय्याश तो निर्धारित समय पर आ गए, लेकिन हिशाम को क़ैद कर लिया गया।

फिर जब ये दोनों मदीना पहुंचकर क़ुबा में उतर चुके तो अय्याश के पास अबू जह्ल और उसका भाई हारिस पहुंचे। तीनों की मां एक थी। इन दोनों ने अय्याश से कहा—

'तुम्हारी मां ने मन्नत मानी है कि जब तक वह तुम्हें देख न लेगी, सर में कंघी न करेगी और धूप छोड़कर साए में न आएगी।'

यह सुनकर अय्याश को अपनी मां पर तरस आ गया।

हज़रत उमर रज़ि० ने यह स्थिति देखकर अय्याश से कहा, 'अय्याश! देखो, ख़ुदा की क़सम, ये लोग तुमको सिर्फ़ तुम्हारे दीन से फ़िल्ने में डालना चाहते हैं। इसलिए इनसे होशियार रहो। ख़ुदा की क़सम! अगर तुम्हारी मां को जुओं ने पीड़ा पहुंचाई, तो वह कंघी कर लेगी और उसे मक्का की कड़ी धूप लगी, तो वह साए में चली जाएगी, पर अय्याश न माने।

उन्होंने अपनी मां की क़सम पूरी करने के लिए इन दोनों के साथ निकलने का फ़ैसला कर लिया। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अच्छा जब यही करने पर तैयार हो तो मेरी यह ऊंटली ले लो। यह बड़ी उम्दा और तेज़ रफ़्तार है, इसकी पीठ न छोड़ना और लोगों की ओर से कोई शक महसूस हो, तो निकल भागना।

अय्याश ऊंटनी पर सवार इन दोनों के साथ निकल पड़े। रास्ते में एक जगह अबू जह्ल ने कहा, भाई! मेरा यह ऊंट तो बड़ा सख़्त निकला, क्यों न तुम मुझे भी अपनी इस ऊंटनी पर पीछे बिठा लो।

अय्याश ने कहा, ठीक है और उसके बाद ऊंटनी बिठा दी।

इन दोनों ने भी अपनी-अपनी सवारियां बिठाईं ताकि अबू जह्ल अय्याश की ऊंटनी पर पलट आए।

लेकिन जब तीनों ज़मीन पर आ गए तो ये दोनों अचानक अय्याश पर टूट पड़े और उन्हें रस्सी से जकड़ कर बांध दिया और इसी बंधी हुई हालत में दिन के वक़्त मक्का लाए और कहा कि ऐ मक्का वालो! अपने मूर्खों के साथ ऐसा

---

1. इब्ने हिशाम, 1/477

ही करो जैसा हमने अपने इस मूर्ख के साथ किया है।[1]

हिजरत के लिए पर तौलने वालों के बारे में अगर मुश्रिकों को मालूम हो जाता तो उनके साथ जो व्यवहार करते थे, उसके ये तीन नमूने हैं। लेकिन इन सबके बावजूद लोग आगे-पीछे निकलते ही रहे।

चुनांचे अक़बा की बड़ी बैअत के केवल दो माह कुछ दिन बाद मक्का में अल्लाह के रसूल सल्ल०, हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत अली रज़ि० के अलावा एक भी मुसलमान बाक़ी न रहा। ये दोनों अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कहने पर रुके हुए थे।

अलबत्ता कुछ ऐसे मुसलमान ज़रूर रह गए थे जिन्हें मुश्रिकों ने ज़बरदस्ती रोक रखा था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी अपना साज़ व सामान तैयार करके रवाना होने के लिए ख़ुदा के हुक्म का इन्तिज़ार कर रहे थे।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० के सफ़र का सामान भी बंधा हुआ था।[2]

सहीह बुख़ारी में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया गया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों से फ़रमाया—

'मुझे तुम्हारी हिजरत की जगह दिखलाई गई है। यह लावे की दो पहाड़ियों के बीच वाक़े एक मरुद्यान है।'

इसके बाद लोगों ने मदीने की ओर हिजरत की।

हब्शा के आम मुहाजिर भी मदीना ही आ गए।

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी मदीना के सफ़र के लिए साज़ व

---

1. हिशाम और अय्याश कुफ़्फ़ार की क़ैद में पड़े रहे। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत फ़रमा चुके तो आपने एक दिन कहा—
कौन है जो मेरे लिए हिशाम और अय्याश को छुड़ा लाए?
वलीद बिन वलीद ने कहा, मैं आपके लिए उनको लाने का ज़िम्मेदार हूं।
फिर वलीद ख़ुफ़िया तौर पर मक्का गए और एक औरत (जो इन दोनों के पास खाना ले जा रही थी) के पीछे जाकर उनका ठिकाना मालूम किया। ये दोनों एक बिना छत के मकान में क़ैद थे। रात हुई तो हज़रत वलीद दीवार फांद कर इन दोनों के पास पहुंचे और बेड़ियां काट कर अपने ऊंट पर बिठाया और मदीना भाग गए। इब्ने हिशाम 1/474-476 और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बीस सहाबा की एक जमाअत के साथ हिज़रत की थी। सहीह बुख़ारी 1/558
2. ज़ादुल मआद 2/52

सामान तैयार कर लिया, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया,

'ज़रा रुके रहो, क्योंकि उम्मीद है मुझे भी इजाज़त दे दी जाएगी।'

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, मेरे बाप आप पर फ़िदा, 'क्या आपको इसकी उम्मीद है?'

आपने फ़रमाया, हां।

इसके बाद अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु रुके रहे, ताकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सफ़र करें।

उनके पास दो ऊंटनियां थीं। उन्हें भी चार महीने तक बबूल के पत्तों का ख़ूब चारा खिलाया।[1]

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब हिजरतुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व अस्हाबुहू 1/553

क़ुरैश की पार्लियामेंट 'दारुन्नदवा' में

जब मुश्रिकों ने देखा कि सहाबा किराम रज़ि० तैयार हो-होकर निकल गए और बाल-बच्चों और माल व दौलत को लाद-फांद कर औस व ख़ज़रज के इलाक़े में जा पहुंचे, तो उनमें बड़ा कोहराम मचा। दुख के पहाड़ टूट पड़े और उन्हें ऐसा रंज हुआ कि ऐसा रंज कभी न हुआ था।

अब उनके सामने एक ऐसा बड़ा और भयानक ख़तरा सामने आ खड़ा हुआ था जो उनकी बुतपरस्ती पर आधारित जीवन और व्यापारिक समाज के लिए किसी चुनौती से कम न था।

मुश्रिकों को मालूम था कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में ज़बरदस्त नेतृत्व और मार्गदर्शन की क्षमता मौजूद है, साथ ही उनका कर्म-वचन भी बड़ा प्रभावी है। साथ ही यह भी मालूम था कि आपके सहाबा (साथी) में धैर्य, दृढ़ता और त्याग-भाव बहुत ज़्यादा है, फिर यह कि औस व ख़ज़रज के क़बीलों में से कितनी ताक़त, क़ुदरत और जंगी सलाहियत है और इन दोनों क़बीलों के बड़ों में सुलह व सफ़ाई की कैसी पाक भावनाएं हैं और वे कई वर्ष तक फैले हुए गृहयुद्ध की कडुवाहट चखने के बाद अब आपसी रंज और दुश्मनी को ख़त्म करने पर कितने तैयार हैं।

उन्हें इसका भी एहसास था कि यमन से शाम तक लाल सागर के तट से उनका जो व्यापारिक मार्ग गुज़रता है, उस दृष्टि से मदीना सैनिक महत्व की कितनी अहम जगह पर स्थित है, जबकि शाम देश से मक्का वालों का वार्षिक व्यापार ढाई लाख दीनार सोने के हिसाब से हुआ करता था। ताइफ़ वालों का व्यापार इसके अलावा था और मालूम है कि इस कारोबार का पूरा आश्रय इस पर था कि यह रास्ता शान्तिपूर्ण रहे।

इन बातों से आसानी से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि यसरिब में इस्लामी दावत के जड़ पकड़ने और मक्का वालों के ख़िलाफ़ यसरिब वालों का मोर्चा क़ायम कर लेने की स्थिति में मक्के वालों के लिए कितने ख़तरे थे।

चूंकि मुश्रिकों को इस गम्भीर ख़तरे का पूरा-पूरा एहसास था, जो उनके वजूद के लिए चैलेंज बन रहा था, इसलिए उन्होंने इस ख़तरे का कामियाब से कामियाब इलाज सोचना शुरू किया और मालूम है कि इस ख़तरे की असल बुनियाद इस्लामी दावत के अलमबरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही थे।

मुश्रिकों ने इस मक़्सद के लिए अक़बा की बड़ी बैअत के लगभग ढाई माह बाद 26 सफ़र सन् 14 नबवी, तद० 12 सितम्बर सन् 622 ई०, बृहस्पतिवार[1] को दिन के पहले पहर[2] में मक्के की पार्लियामेंट दारुन्नदवा में इतिहास की सबसे ख़तरनाक मीटिंग हुई और उसमें क़ुरैश के तमाम क़बीलों के नुमाइन्दे जमा हुए। एजेंडा था एक ऐसे प्लान की तैयारी, जिसके मुताबिक़ इस्लामी दावत के अलमबरदार का क़िस्सा जल्द से जल्द पाक कर दिया जाए और इस दावत की रोशनी पूरे तौर पर मिटा दी जाए।

इस ख़तरनाक मीटिंग में क़ुरैशी क़बीलों के विख्यात प्रतिनिधि इस तरह थे—

1. अबू जह्ल बिन हिशाम, क़बीला बनी मख़्ज़ूम से,
2. जुबैर बिन मुतइम, तईमा बिन अदी और हारिस बिन आमिर, बनी नौफ़ल बिन अब्दे मुनाफ़ से,
3. शैबा बिन रबीआ, उत्बा बिन रबीआ और अबू सुफ़ियान बिन हर्ब, बनी अब्द शम्स बिन अब्द मुनाफ़ से,
4. नज़्र बिन हारिस, बनी अब्दुद्दार से,
5. अबुल बख़्तरी बिन हिशाम, ज़मआ बिन अस्वद और हकीम बिन हिज़ाम, बनी असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा से,
6. नबीह बिन हिजाज और मुनब्बह बिन हिजाज, बनी सह्म से,
7. उमैया बिन ख़ल्फ़, बनी जम्ह से।

निर्धारित समय पर ये प्रतिनिधि दारुन्नदवा पहुंचे, तो इब्लीस भी एक बूढ़े-बुज़ुर्ग की शक्ल में इबा ओढ़े, रास्ता रोके, दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ।

लोगों ने कहा, यह कहां का शेख़ है?

इब्लीस ने कहा, यह नज्द वालों का एक शेख़ है, आप लोगों का प्रोग्राम

---

1. यह तारीख़ अल्लामा मंसूरपुरी की खोज के अनुसार है जो अंकित है। देखिए रहमतुल लिल आलमीन 1/95, 97, 102, 2/471
2. पहले पहर में इस मीटिंग की दलील इब्ने इस्हाक़ की वह रिवायत है, जिसमें बयान किया गया है कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में इस मीटिंग की ख़बर लेकर आए और आपको हिजरत की इजाज़त दी। इसके साथ सहीह बुख़ारी में दर्ज हज़रत आइशा रज़ि० की इस रिवायत को मिला लीजिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ठीक दोपहर के वक़्त हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि 'मुझे हिजरत की इजाज़त दे दी गई है।' रिवायत सविस्तार आगे आ रही है।

सुनकर हाज़िर हो गया है। बातें सुनना चाहता है और कुछ असंभव नहीं कि आप लोगों को हितैषितापूर्ण मश्विरों से भी महरूम न रखे।

लोगों ने कहा, बेहतर है, आप भी आ जाइए।

चुनांचे इब्लीस भी उनके साथ अन्दर गया।

पार्लियामेंट में नबी सल्ल० के क़त्ल के प्रस्ताव से सब सहमत

मीटिंग ख़त्म हो गई तो प्रस्ताव आने शुरू हुए, ताकि समस्या हल की जा सके। देर तक इसी पर बहस चलती रही।

पहले अबुल अस्वद ने यह प्रस्ताव रखा कि हम इस व्यक्ति को अपने बीच से निकाल दें और देश निकाला दे दें। फिर हमें इससे मतलब नहीं कि वह कहां जाता और कहां रहता है। बस हमारा मामला ठीक हो जाएगा और हमारे भीतर पहले की तरह एकाग्रता और एकरूपता पैदा हो जाएगी।

मगर शेख़ नज्दी ने कहा, नहीं, ख़ुदा की क़सम, यह मुनासिब राय नहीं है। तुम देखते नहीं कि उस व्यक्ति की बात कितनी अच्छी और बोल कितने मीठे हैं और जो कुछ लाता है, उसके ज़रिए से किस तरह लोगों का दिल जीत लेता है। ख़ुदा की क़सम! अगर तुमने ऐसा किया, तो कुछ भरोसा नहीं कि वह अरब के किस क़बीले में जाए और उन्हें अपना पैरवी करने वाला बना लेने के बाद तुम पर धावा बोल दे और तुम्हें तुम्हारे शहर के अन्दर रौंदकर जैसा व्यवहार चाहे करे। इसकी जगह कोई और उपाय सोचो।

अबुल बख़्तरी ने कहा, उसे लोहे की बेड़ियों में जकड़ कर क़ैद कर दो और बाहर से दरवाज़ा बन्द कर दो, फिर उसी अंजाम (मौत) का इन्तिज़ार करो, जो इससे पहले और दूसरे कवियों जैसे ज़ुहैर और नाबग़ा वग़ैरह का हो चुका है।

शेख़ नज्दी ने कहा, नहीं, ख़ुदा की क़सम, यह भी मुनासिब राय नहीं है। ख़ुदा की क़सम! अगर तुम लोगों ने इसे क़ैद कर दिया, जैसा कि तुम कह रहे हो, तो इसकी ख़बर बन्द दरवाज़े से बाहर निकलकर उसके साथियों तक ज़रूर पहुंच जाएगी। फिर कुछ असंभव नहीं कि वे लोग तुम पर धावा बोलकर तुम्हारे क़ब्ज़े से निकाल ले जाएं, फिर उसकी मदद से अपनी तायदाद बढ़ाकर तुम्हें पस्त कर दें। इसलिए यह भी मुनासिब राय नहीं, कोई और प्रस्ताव सोचो।

ये दोनों प्रस्ताव पार्लियामेंट रद्द कर चुकी, तो एक तीसरा अपराधपूर्ण प्रस्ताव रखा गया, जिससे तमाम मेम्बरों ने सहमति दिखाई। इसे प्रस्तुत करने वाला मक्के का सबसे बड़ा अपराधी अबू जहल था। उसने कहा—

'उस व्यक्ति के बारे में मेरी एक राय है। मैं देख रहा हूं कि अब तक तुम लोग वहां तक नहीं पहुंचे।'

लोगों ने कहा, अबुल हकम ! वह क्या है ?

अबू जह्ल ने कहा, मेरी राय यह है कि हम हर क़बीले से एक मज़बूत, ऊंचे ख़ानदान का और बांका जवान चुन लें, फिर हर एक को तेज़ तलवार दें। इसके बाद सबके सब उस व्यक्ति का रुख़ करें और इस तरह एक साथ तलवार मार कर क़त्ल कर दें, जैसे एक ही आदमी ने तलवार मारी हो। यों हमें उस व्यक्ति से रहात मिल जाएगी और इस तरह क़त्ल करने का नतीजा यह होगा कि उस व्यक्ति का ख़ून सारे क़बीलों में बिखर जाएगा और अबू अब्द मुनाफ़ सारे क़बीलों से लड़ाई न लड़ सकेंगे। इसलिए दियत (ख़ून बहा) लेने पर राज़ी हो जाएंगे और हम दियत अदा कर देंगे।[1]

शेख़ नज्दी ने कहा, बात यह रही जो इस जवान ने कही। अगर कोई प्रस्ताव और राय हो सकती है, तो यही है। इसके अलावा सब बेकार।

इसके बाद मक्का की पार्लियामेंट ने इस अपराधपूर्ण प्रस्ताव को पास कर दिया और सभी इस दृढ़ संकल्प के साथ अपने घरों को वापस गए कि इस प्रस्ताव को तुरन्त लागू करना है।

---

1. इब्ने हिशाम 1/480-482

नबी सल्ल० की हिजरत

क़ुरैश की चाल और अल्लाह की चाल

उल्लिखित सामाजिकता का स्वभाव यह होता है कि उसे बड़े रहस्य में रखा जाता है और ऊपरी सतह पर कोई ऐसी हलचल सामने नहीं आने दी जाती जो नित्य प्रति से हटकर और आम आदत से हटकर हो, ताकि कोई व्यवित ख़तरे की गंध न सूंघ सके और किसी के दिल में ख़्याल न आए कि यह ख़ामोशी किसी ख़तरे का पता देती है। यह क़ुरैश की चाल या दांव-पेच था, पर यह चाल उन्होंने अल्लाह से चली थी। इसलिए अल्लाह ने उन्हें ऐसे ढंग से विफल किया कि वे सोच भी नहीं सकते थे, चुनांचे जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल का अपराधपूर्ण प्रस्ताव पारित हो चुका तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम अपने रब की वह्य लेकर आपकी सेवा में आए और आपको क़ुरैश के षड्यंत्र की सूचना देते हुए बताया कि अल्लाह ने आपको यहां से हिजरत कर जाने की इजाज़त दे दी और यह कहते हुए हिजरत का समय भी निर्धारित कर दिया कि आप यह रात अपने उस बिस्तर पर न गुज़ारें जिस पर अब तक गुज़ारा करते थे।[1]

इस सूचना के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ठीक दोपहर के वक़्त अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के घर तशरीफ़ ले गए, ताकि उनके साथ हिजरत के सारे प्रोग्राम और मरहले तै फ़रमा लें।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का बयान है कि ठीक दोपहर के वक़्त हम लोग अबूबक्र रज़ि० के मकान में बैठे थे कि किसी कहने वाले ने अबूबक्र रज़ि० से कहा, यह अल्लाह के रसूल सल्ल० सिर ढांके तशरीफ़ ला रहे हैं।

यह ऐसा वक़्त था, जिसमें आप तशरीफ़ नहीं लाया करते थे।

अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान! आप इस वक़्त किसी अहम मामले ही की वजह से तशरीफ़ लाए हैं।

हज़रत आइशा रज़ि० बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए, इजाज़त तलब की। आपको इजाज़त दी गई और आप अन्दर दाख़िल हुए, फिर अबूबक्र रज़ि० से फ़रमाया—

'तुम्हारे पास जो लोग हैं, उन्हें हटा दो।'

---

1. इब्ने हिशाम 1/482, ज़ादुल मआद 2/52 और हिजरत के लिए देखिए बुख़ारी की हदीस न० 476, 2138, 2263, 2264, 2297, 3905, 4093, 5807, 6079

अबूबक्र रज़ि० ने कहा, बस आपकी घरवाली ही है, आप पर मेरे मां-बाप फ़िदा हों, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० !

आपने फ़रमाया, अच्छा तो मुझे चलने की इजाज़त मिल चुकी है।

अबूबक्र रज़ि० ने कहा, साथ. . . ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर फ़िदा हों।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया—हां।[1]

इसके बाद हिजरत का प्रोग्राम तै करके अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर वापस तशरीफ़ ले आए और रात के आने का इन्तिज़ार करने लगे।

अल्लाह के रसूल सल्ल० के मकान का घेराव

इधर क़ुरैश के बड़े अपराधियों ने अपना सारा दिन मक्के की पार्लियामेंट 'दारुन्नदवा' को पहले पहर के पारित प्रस्ताव के लागू करने की तैयारी में गुज़ारा और इस उद्देश्य के लिए उन बड़े अपराधियों में से ग्यारह सरदार चुने गए, जिनके नाम ये हैं—

1. अबू जह्ल बिन हिशाम,
2. हकम बिन आस,
3. उत्बा बिन अबी मुऐत,
4. नज़्र बिन हारिस,
5. उमैया बिन ख़ल्फ़
6. ज़मआ बिन अस्वद,
7. तुऐमा बिन अदी,
8. अबू लहब,
9. उबई बिन ख़ल्फ़
10. नुबैह बिन हिजाज, और
11. उसका भाई मुनब्बह बिन हिजाज।[2]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा था कि आप शुरू रात में इशा की नमाज़ के बाद सो जाते और आधी रात के बाद घर से निकलकर मस्जिदे

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब हिजरतुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 1/553
2. ज़ादुल मआद 2/52

हराम तशरीफ़ ले जाते और वहां तहज्जुद की नमाज़ अदा फ़रमाते। उस रात आपने हज़रत अली रज़ि० को हुक्म दिया कि वह आपके बिस्तर पर सो जाएं और आपकी हरी हज़रमी[1] चादर ओढ़ लें। यह भी बतला दिया कि तुम्हें उनके हाथों कोई चोट नहीं पहुंचेगी। (आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वही चादर ओढ़ कर सोया करते थे।)

इधर रात जब तनिक अंधेरी हो गई, हर ओर सन्नाटा छा गया और आम लोग सोने के लिए जा चुके तो उपरोक्त व्यक्तियों ने ख़ुफ़िया तौर पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर का रुख़ किया और दरवाज़े पर जमा होकर घात में बैठ गए। वह हज़रत अली को देखकर समझ रहे थे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही सोये हुए हैं। इसलिए इन्तिज़ार करने लगे कि आप उठें और बाहर निकलें तो ये लोग यकायक आप पर टूट पड़ें और तय किया हुआ फ़ैसला लागू करते हुए आपको क़त्ल कर दें।

इन लोगों को पूरा भरोसा और पूरा यक़ीन था कि उनका यह नापाक षड्यंत्र सफल होकर रहेगा, यहां तक कि अबू जह्ल ने दंभ से भरे पूरे घमंड के साथ उपहास करते हुए अपने घेरा डालने वाले साथियों से कहा—

'मुहम्मद (सल्ल०) कहता है कि अगर तुम लोग उसके दीन में दाख़िल होकर उसकी पैरवी करोगे तो अरब व अजम के बादशाह बन जाओगे, फिर मरने के बाद उठाए जाओगे तो तुम्हारे लिए जार्डन के बाग़ों जैसी जन्नतें होंगी और अगर तुमने ऐसा न किया तो उनकी ओर से तुम्हारे अन्दर ज़िब्ह की घटनाएं सामने आएंगी, फिर तुम मरने के बाद उठाए जाओगे और तुम्हारे लिए आग होगी, जिसमें तुम जलाए जाओगे।[2]

बहरहाल इस षड्यंत्र को लागू करने के लिए आधी रात के बाद का समय निश्चित था। इसलिए ये लोग जाग कर रात गुज़ार रहे थे और निर्धारित समय के आने का इन्तिज़ार कर रहे थे, लेकिन अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है। उसीके हाथ में आसमानों और ज़मीन की बादशाही है। वह जो सोचता है, करता है। जिसे बचाना चाहे, कोई उसका बाल टेढ़ा नहीं कर सकता और जिसे पकड़ना चाहे, कोई उसको बचा नहीं सकता।

चुनांचे इस मौक़े पर अल्लाह ने वह काम किया जिसे नीचे की आयत में अल्लाह ने रसूल को सम्बोधित करते हुए बयान फ़रमाया है कि—

---

1. हज़रत मौत (दक्षिणी यमन) की बनी हुई चादर हज़रमी कहलाती है।
2. इब्ने हिशाम 1/482, 483

'वह मौक़ा याद करो जब कुफ़्फ़ार तुम्हारे ख़िलाफ़ चाल चल रहे थे, ताकि तुम्हें क़ैद कर दें या क़त्ल कर दें या निकाल बाहर करें और वे लोग दाव चल रहे थे और अल्लाह भी दाव चल रहा था और अल्लाह सबसे बेहतर दाव चलने वाला है।' (8 : 30)

अल्लाह के रसूल सल्ल० अपना घर छोड़ते हैं

बहरहाल क़ुरैश अपनी योजना के लागू करने की भरपूर तैयारी के बाजूद बुरी तरह परास्त हुए और असफल रहे, क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर से बाहर तशरीफ़ लाए, मुश्रिकों की सफ़ें चीरीं और एक मुट्ठी कंकरियां लेकर उनके सरों पर डालीं, लेकिन अल्लाह ने उनकी निगाहें पकड़ लीं और वे आपको देख न सके। उस वक़्त आप यह आयत तिलावत फ़रमा रहे थे—

'हमने उनके आगे रुकावट खड़ी कर दी और उनके पीछे रुकावट खड़ी कर दी, पस हमने उन्हें ढांक लिया है और वे देख नहीं रहे हैं।' (36 : 9)

इस मौक़े पर कोई भी मुश्रिक बाक़ी न बचा, जिसके सर पर आपने मिट्टी न डाली हो।

इसके बाद आप अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के घर तशरीफ़ ले गए और फिर उनके मकान की एक खिड़की से निकलकर दोनों हज़रात ने रात ही रात यमन का रुख़ किया और कुछ मील पर स्थित सौर नामी पहाड़ की एक गुफा में जा पहुंचे।[1]

इधर घेराव करने वाले शून्य समय का इन्तिज़ार कर रहे थे, लेकिन इससे थोड़ा पहले उन्हें अपनी नाकामी व नामुरादी का ज्ञान हो गया।

हुआ यह कि उनके पास एक ग़ैर-मुताल्लिक़ आदमी आया और उन्हें आपके दरवाज़े पर देखकर पूछा कि आप लोग किस चीज़ का इन्तिक़ार कर रहे हैं?

उन्होंने कहा, मुहम्मद का।

उसने कहा, आप लोग विफल हो गए। ख़ुदा की क़सम, मुहम्मद तो आप लोगों के पास से गुज़रे और आपके सरों पर कंकरी डालते हुए अपना काम कर गए।

उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम, हमने तो उन्हें नहीं देखा। और इसके बाद अपने सरों से मिट्टी झाड़ते हुए उठ खड़े हुए।

फिर दरवाज़े के दराज़ से झांक कर देखा, तो हज़रत अली रज़ि० नज़र

---

1. वही, 1/483, ज़ादुल मआद 2/52

आए। कहने लगे—

'अल्लाह की क़सम, यह तो मुहम्मद सोए पड़े हैं। उनके ऊपर उनकी चादर मौजूद है।'

चुनांचे वे लोग सुबह तक वहीं डटे रहे।

इधर सुबह हुई और हज़रत अली रज़ि० बिस्तर से उठे, तो मुश्रिकों के हाथों के तोते उड़ गए। उन्होंने हज़रत अली रज़ि० से पूछा कि अल्लाह के रसूल कहां हैं?

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, मुझे मालूम नहीं।[1]

घर से ग़ार (गुफा) तक

अल्लाह के रसूल 27 सफ़र 14 नबवी मुताबिक़ 12-13 सितंबर 622 ई०[2] की बीच की रात अपने मकान से निकल कर जान व माल के सिलसिले में अपने सबसे विश्वसनीय साथी अबूबक्र रज़ि० के घर तशरीफ़ लाए थे और वहां से पिछवाड़े की एक खिड़की से निकल कर दोनों ने बाहर की राह ली थी, ताकि मक्का से जल्द से जल्द यानी भोर से पहले-पहले बाहर निकल जाएं।

चूंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालमू था कि क़ुरैश पूरी जान लगाकर आपकी खोज में जुट जाएंगे और जिस रास्ते पर पहले हल्ले में नज़र उठेगी, वह मदीने का कारवानी रास्ता होगा जो उत्तर के रुख़ पर जाता है, इसलिए आपने वह रास्ता अपनाया, जो इसके बिल्कुल उलट था, यानी यमन जाने वाला रास्ता जो मक्का के दक्षिण में स्थित है।

आपने उस रास्ते पर कोई पांच मील का रास्ता तै किया और उस पहाड़ के दामन में पहुंचे, जो सौर के नाम से विख्यात है।

यह बहुत ऊंचा, पेचदार और मुश्किल चढ़ाई वाला पहाड़ है। यहां पत्थर भी बहुत पाए जाते हैं, जिनसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दोनों पांव घायल हो गए और कहा जाता है कि आप क़दम के निशान छिपाने के

---

1. वही, वही
2. रहमतुल लिल आलमीन 1/95। सफ़र का यह महीना चौदहवीं सन नुबूवत का उस वक़्त होगा जब सन् की शुरूआत मुहर्रम के महीने से मानी जाए और अगर सन् की शुरूआत उसी महीने से करें जिसमें आप नबी बनाए गए थे, तो सफ़र का यह महीना क़तई तौर पर तेरहवीं सन् नुबूवत का होगा। सीरत लिखने वालों ने आम तौर पर कहीं पहला हिसाब अपनाया है और कहीं दूसरा, जिसकी वजह से वे घटनाओं की तर्तीब में ख़ब्त और ग़लती में पड़ गए हैं। हमने सन् का आरंभ मुहर्रम से माना है।

लिए पंजों के बल चल रहे थे, इसलिए आपके पांव घायल हो गए।

बहरहाल वजह जो भी रही हो, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने पहाड़ के दामन में पहुंचकर आपको उठा लिया और दौड़ते हुए पहाड़ की चोटी पर एक ग़ार के पास जा पहुंचे जो तारीख़ में सौर के ग़ार के नाम से मशहूर है।[1]

ग़ार में

ग़ार के पास पहुंचकर अबूबक्र रज़ि० ने कहा, ख़ुदा के लिए अभी आप इसमें दाख़िल न हों। पहले मैं दाख़िल होकर देख लेता हूं। अगर उसमें कोई चीज़ हुई तो आपके बजाए मुझे उससे वास्ता पड़ेगा।

चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु अन्दर गए और ग़ार को साफ़ किया। एक ओर कुछ सूराख थे, जिन्हें अपना तहबन्द फाड़ कर बन्द किया, लेकिन वे सूराख बाक़ी बचे रहे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने इन दोनों में अपने पांव डाल दिए, फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि अन्दर तशरीफ़ लाएं।

आप अन्दर तशरीफ़ ले गए और हज़रत अबूबक्र रज़ि० की गोद में सर रखकर सो गए।

इधर अबूबक्र रज़ि० के पांव में किसी चीज़ ने डस लिया, मगर इस डर से हिले भी नहीं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जाग न जाएं, लेकिन उनके आंसू अल्लाह के रसूल सल्ल० के चेहरे पर टपक गए (और आपकी आंख खुल गई)।

आपने फ़रमाया, अबूबक्र ! तुम्हें क्या हुआ ?

अर्ज़ किया, मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान ! मुझे किसी चीज़ ने डस लिया है।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उस पर होंठों का लुआब लगा दिया और तक्लीफ़ जाती रही।[2]

यहां दोनों हज़रात ने तीन रातें यानी शुक्रवार, शनिवार और रविवार की रातें ग़ार में छिप कर गुज़ारीं।[3]

---

1. मुख़्तसरुस्सीरः, लेख शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 167
2. यह बात रज़ीन ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से रिवायत की है। इस रिवायत में यह भी है कि फिर यह ज़हर फूट पड़ा (यानी मौत के वक़्त उसका असर पलट आया) और यही मौत की वजह बना। देखिए मिश्कात 2/556, बाब मनाक़िब अबी बक्र
3. फ़त्हुल बारी 7/336

इस बीच अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे अब्दुल्लाह भी यहीं रात गुज़ारते थे।

हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि वह गहरी सूझ-बूझ के मालिक, बात समझने वाले नवजवान थे। सुबह के अंधेरे में इन दोनों हज़रात के पास से चले जाते और मक्का में क़ुरैश के साथ यों सुबह करते मानो उन्होंने यहीं रात गुज़ारी है। फिर आप दोनों के ख़िलाफ़ षड्यंत्र की जो कोई बात सुनते, उसे अच्छी तरह याद कर लेते और अंधेरा गहरा हो जाता तो उसकी ख़बर लेकर ग़ार में पहुंच जाते।

उधर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के दास आमिर बिन फ़ुहैरा बकरियां चराते रहते थे और जब रात का एक हिस्सा गुज़र जाता तो बकरियां लेकर उनके पास पहुंच जाते। इस तरह दोनों रात को पेट भरकर दूध पी लेते, फिर सुबह तड़के ही आमिर बिन फ़ुहैरा बकरियां हांक कर चल देते। तीनों रात उन्होंने यही किया।[1]

(साथ ही यह भी कि) आमिर बिन फ़ुहैरा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र को मक्का जाने के बाद उन्हीं के क़दमों के निशान पर बकरियां हांकते थे, ताकि निशान मिट जाएं।[2]

क़ुरैश की दौड़-भाग

उधर क़ुरैश का यह हाल था कि जब क़त्ल की योजना वाली रात गुज़र गई और सुबह को यक़ीनी तौर पर मालूम हो गया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके हाथ से निकल चुके हैं, तो उन पर मानो जुनून तारी हो गया और वे पागल जैसे हो गए।

उन्होंने अपना ग़ुस्सा सबसे पहले हज़रत अली रज़ि० पर उतारा। आपको घसीट कर ख़ाना काबा तक ले गये और एक घड़ी क़ैद में रखा कि मुम्किन है इन दोनों की ख़बर लग जाए।[3]

लेकिन जब हज़रत अली रज़ि० से कुछ न पता चला तो अबूबक्र रज़ि० के घर आए और दरवाज़ा खटखटाया। हज़रत असमा बिन्त अबूबक्र निकलीं।

उनसे पूछा, तुम्हारे बाप कहां हैं?

उन्होंने कहा, ख़ुदा की क़सम, मुझे मालूम नहीं कि मेरे बाप कहां हैं?

---

1. सहीह बुख़ारी, 1/553-554
2. इब्ने हिशाम 1/486
3. तारीख़ तबरी 2/374

इस पर कमबख़्त ख़बीस अबू जह्ल ने हाथ उठा कर इस ज़ोर का थप्पड़ उनके गाल पर मारा कि उनके कान की बाली गिर गई।[1]

इसके बाद क़ुरैश ने एक आपात्कालीन मीटिंग बुलाकर यह तै किया कि इन दोनों को गिरफ़्तार करने के लिए तमाम संभव साधनों का उपयोग किया जाए। चुनांचे मक्का से निकलने वाले तमाम रास्तों पर, चाहे वह किसी भी दिशा में जा रहा हो, बड़ा सशस्त्र पहरा बिठा दिया गया। इसी तरह यह आम एलान भी किया गया कि जो कोई अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को या इनमें से किसी एक को ज़िंदा या मुर्दा हाज़िर करेगा, उसे हर एक के बदले सौ ऊंटों का इनाम दिया जाएगा।[2]

इस एलान के नतीजे में सवार और पैदल और क़दम के निशानों के माहिर खोजी बड़ी सरगर्मी से खोज में लग गए और पहाड़ों, घाटियों और ऊंच-नीच हर ओर फैल गए, लेकिन नतीजा और हासिल कुछ न रहा।

खोजने वाले ग़ार के मुंह तक भी पहुंचे, लेकिन अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है, चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया—

'मैं नबी के साथ ग़ार में था, सर उठाया तो क्या देखता हूं कि लोगों के पांव नज़र आ रहे हैं।'

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के नबी! अगर इनमें से कोई आदमी सिर्फ़ अपनी निगाह नीची कर दे तो हमें देख लेगा।

आपने फ़रमाया, अबूबक्र! ख़ामोश रहो। (हम) दो हैं जिनका तीसरा अल्लाह है।

एक रिवायत के शब्द ये हैं—

'अबूबक्र! ऐसे दो आदमियों के बारे में तुम्हारा क्या विचार है, जिनका तीसरा अल्लाह है।'[3]

---

1. इब्ने हिशाम 1/487
2. सहीह बुख़ारी 1/554
3. सहीह बुख़ारी, 1/516, 558, ऐसा ही मुस्नद अहमद 114 में है। यहां यह बात भी याद रखने की है कि अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की बेचैनी अपनी जान के डर से न थी, बल्कि एक ही वजह थी जो इस रिवायत में बयान की गई है कि अबूबक्र रज़ि० ने जब खोजी दस्तों को देखा तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए आपका दुख बढ़ गया और आपने कहा कि अगर मैं मारा गया तो मैं सिर्फ़ एक

सच तो यह है कि यह एक मोजज़ा था, जिसे अल्लाह ने अपने नबी को प्रदान किया था। चुनांचे खोजी दस्ते उस वक़्त वापस लौट गये, जब आपके और उनके दर्मियान कुछ क़दम से ज़्यादा दूरी न रह गई थी।

मदीना के रास्ते में

जब खोज की आग बुझ गई, दौड़-भाग रुक गई और तीन दिन की लगातार और बेनतीजा दौड़-धूप के बाद क़ुरैश की उमंग और उत्साह ठंडा पड़ गया तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मदीना के लिए निकलने का इरादा कर लिया। अब्दुल्लाह बिन उरैक़त लैसी से, जो वीरानों और जंगलों के गुज़रने वाले रास्तों का माहिर था, पहले ही मुआवज़े पर मदीना पहुंचाने का मामला तै हो चुका था। यह आदमी अभी क़ुरैश ही के धर्म पर था, लेकिन इत्मीनान के क़ाबिल था, इसलिए सवारियां उसके हवाले कर दी गई थीं और तै हुआ था कि तीन रातें गुज़रने के बाद वह दोनों सवारियां लेकर सौर ग़ार को पहुंच जाएगा।

चुनांचे जब पीर का दिन (सोमवार) आया, जो रबीउल अव्वल सन 01 हि० की चांद रात थी (मुताबिक़ 16 दिसम्बर सन् 622 ई०) तो अब्दुल्लाह बिन उरैक़त सवारियां लेकर आ गया और उसी मौक़े पर अबूबक्र रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में सबसे बेहतर ऊंटनी पेश करते हुए गुज़ारिश की कि आप मेरी इन दो सवारियों में से एक क़ुबूल फ़रमा लें।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क़ीमत के साथ।

इधर अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ि० भी रास्ते का सामान लेकर आईं, मगर उसमें लटकाने वाला बंधन लगाना भूल गईं। जब रवानगी का वक़्त आया और हज़रत अस्मा ने तोशा लटकाना चाहा, तो देखा उसमें बन्धन ही नहीं है।

उन्होंने अपना पटका खोला और दो हिस्सों में फाड़ कर एक में तोशा लटका दिया और दूसरा कमर में बांध लिया। इसी वजह से उनकी उपाधि 'ज़ातुन्नताक़तैन' (दो पटकों वाली) पड़ गया।[1]

आदमी हूं, लेकिन अगर आप क़त्ल कर दिए गए, तो पूरी उम्मत ही नष्ट हो जाएगी और इसी मौक़े पर उनसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि ग़म न करो, यक़ीनन अल्लाह हमारे साथ है। देखिए मुख़्तसरुस्सीरत लेख : शेख़ अब्दुल्लाह पृ० 168

1. सहीह बुख़ारी 1/553-555, इब्ने हिशाम 1/486

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कूच फ़रमाया। आमिर बिन फुहैरा रज़ियल्लाहु अन्हु भी साथ थे। रास्ता बताने वाले अब्दुल्लाह बिन उरैक़त ने तट का रास्ता अपनाया।

ग़ार से रवाना होकर उसने सबसे पहले यमन के रुख़ पर चलाया और दक्षिण की ओर ख़ूब दूर तक ले गया फिर पश्चिम की ओर मुड़ा और समुद्र तट का रुख़ किया, फिर एक ऐसे रास्ते पर पहुंचकर, जिसे आम लोग जानते न थे, उत्तर की ओर मुड़ गया। यह रास्ता लाल सागर के तट के क़रीब ही था और उस पर बहुत ही कम कोई चलता था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस रास्ते में जिन स्थानों से गुज़रे, इब्ने इस्हाक़ ने उनका उल्लेख किया है।

वह कहते हैं कि जब राहनुमा (रास्ता बताने वाला) आप दोनों को साथ लेकर निकला, तो मक्का के नीचे से ले चला, फिर तट के साथ-साथ चलता हुआ अस्फ़ान के नीचे से रास्ता काटा, फिर नीचे इमिज से गुज़रता हुआ आगे बढ़ा और क़दीद पार करने के बाद फिर रास्ता काटा और वहीं से आगे बढ़ता हुआ ख़रार से गुज़रा, फिर सनीयतुल मर्रा से, फिर लक़्फ़ से, फिर लक़्फ़ के वीराने से गुज़रा, फिर मजाह के वीरानों में पहुंचा और वहां से होकर मजहा के मोड़ से गुज़रा, फिर ज़िलग़ज़्वैन के मोड़ से नीचे को चला, फिर ज़ीकश्र की घाटी में दाख़िल हुआ फिर जदाजद का रुख़ किया, फिर अजरद पहुंचा और उसके बाद ताहन के वीरानों से होता हुआ ज़ूसलम घाटी से गुज़रा। वहां से अबाबीद और उसके बाद फ़ाजा का रुख़ किया, फिर अर्ज में उतरा, फिर रक़्बा के दाहिने हाथ सनीयतुल आहर में चला, यहां तक कि रोम की घाटी में उतरा और उसके बाद क़ुबा पहुंच गया।[1]

आइए, अब रास्ते की कुछ घटनाएं भी सुनते चलें।

1. सहीह बुख़ारी में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० से रिवायत किया गया है कि उन्होंने फ़रमाया—

'हम लोग (ग़ार से निकलकर) रातभर और दिन में दोपहर तक चलते रहे। जब ठीक दोपहर का वक़्त हो गया, रास्ता खाली हो गया और कोई गुज़रने वाला न रहा, तो हमें एक लंबी चट्टान दिखाई पड़ी, जिसके साए पर धूप नहीं आई थी। हम वहीं उतर पड़े। मैंने अपने हाथ से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सोने के लिए एक जगह बराबर की और उस पर एक पोस्तीन बिछाकर गुज़ारिश की कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप सो जाएं और मैं आपके

1. इब्ने हिशाम 1/491-492

चारों ओर की देखभाल किए लेता हूं।

आप सो गए और मैं आपके आस-पास की देखभाल के लिए निकला। अचानक क्या देखता हूं कि एक चरवाहा अपनी बकरियां लिए चट्टान की ओर चला आ रहा है। वह भी उस चट्टान से वही चाहता था, जो हमने चाहा था।

मैंने उससे कहा, 'ऐ जवान! तुम किसके आदमी हो?'

उसने मक्का या मदीना के किसी आदमी का उल्लेख किया।[1]

मैंने कहा, तुम्हारी बकरियों में कुछ दूध है?

उसने कहा, हां।

मैंने कहा, दूह सकता हूं।

उसने कहा, हां।

फिर उसने एक बकरी पकड़ ली।

मैंने कहा, ज़रा थन को मिट्टी, बाल और तिनके वग़ैरह से साफ़ कर लो।

उसने एक बर्तन में थोड़ा-सा दूध दूहा।

मेरे पास एक चमड़े का लोटा था, जो मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० के पीने और वुज़ू करने के लिए रख लिया था।

मैं नबी सल्ल० के पास आया, लेकिन गवारा न हुआ कि आपको जगाऊं।

चुनांचे जब आप बेदार हुए तो मैं आपके पास आया और दूध पर पानी उंडेला, यहां तक कि उसका निचला हिस्सा ठंडा हो गया।

इसके बाद मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! पी लीजिए।

आपने पिया, यहां तक कि मैं ख़ुश हो गया।

फिर आपने फ़रमाया, क्या अभी कूच का वक़्त नहीं हुआ?

मैंने कहा, क्यों नहीं?

इसके बाद हम लोग चल पड़े।[2]

2. इस सफ़र में अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का तरीक़ा यह था कि वह नबी सल्ल० के पीछे रहा करते थे, यानी सवारी पर हुज़ूर सल्ल० के पीछे बैठा करते थे। चूंकि उन पर बुढ़ापे की निशानियां पाई जा रही थीं, इसलिए लोगों की तवज्जोह उन्हीं की ओर जातीं थी। नबी सल्ल० पर अभी जवानी के चिह्न नुमायां

---

1. एक रिवायत में है कि उसने क़ुरैश के एक आदमी को बतलाया।
2. सहीह बुख़ारी 1/510

थे, इसलिए आपकी ओर तवज्जोह कम जाती थी। इसका नतीजा यह था कि किसी आदमी से वास्ता पड़ता तो वह अबूबक्र रज़ि० से पूछता कि यह आपके आगे कौन-सा आदमी है?

(हज़रत अबूबक्र उसका बड़ा ख़ूबसूरत जवाब देते) फ़रमाते, 'यह आदमी मुझे रास्ता बताता है।' इससे समझने वाला समझता कि वह यही रास्ता मुराद ले रहे हैं, हालांकि वह 'ख़ैर' (भलाई) का रास्ता मुराद लेते थे।[1]

3. इसी सफ़र में दूसरे या तीसरे दिन आपका गुज़र उम्मे माबद ख़ुज़ाईया के ख़ेमे से हुआ। यह खेमा क़दीद के बाहरी हिस्से में मुशल्लल के भीतर स्थित था। इसका फ़ासला मक्का मुर्करमा से एक सौ तीस (130) किलोमीटर है। उम्मे माबद एक नुमायां और तवाना औरत थीं। हाथ में घुटने डाले ख़ेमे के आंगन में बैठी रहतीं और आने-जाने वाले को खिलाती-पिलाती रहतीं। आपने उनसे पूछा कि पास में कुछ है?

बोली, अल्लाह की क़सम, हमारे पास कुछ होता, तो आप लोगों की मेज़बानी में तंगी न होती, बकरियां भी दूरी पर हैं। यह अकाल का ज़माना था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देखा कि ख़ेमे के एक कोने में एक बकरी है, फ़रमाया, उम्मे माबद! यह कैसी बकरी है?

बोलीं, इसे कमज़ोरी ने रेवड़ से पीछे छोड़ दिया है।

आपने मालूम किया, इसमें कुछ दूध है?

बोलीं, वह इससे कहीं ज़्यादा कमज़ोर है।

आपने फ़रमाया, इजाज़त है कि इसे दूह लूं?

बोली, हां, मेरे मां-बाप तुम पर क़ुर्बान! अगर तुम्हें दूध इसमें दिखाई दे रहा है, तो ज़रूर दूह लो।

इस बातचीत के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस बकरी के थन पर हाथ फेरा, अल्लाह का नाम लिया और दुआ की। बकरी ने पांव फैला दिए, थन में भरपूर दूध उतर आया। आपने उम्मे माबद का एक बड़ा बरतन लिया जो एक ग्रुप का पेट भर सकता था और उसमें इतना दूहा कि झाग ऊपर आ गया। फिर उम्मे माबद को पिलाया, उन्होंने इतना पिया कि पेट भर गया, तो अपने साथियों को पिलाया। उनके भी पेट भर गए, तो ख़ुद पिया। फिर उसी बरतन में इतना दूध दूहा कि बरतन भर गया और उसे उम्मे माबद के पास

1. सहीह बुख़ारी 1/556

छोड़कर आगे चल पड़े।

थोड़ी ही देर हुई थी कि उनके पति अबू माबद अपनी कमज़ोर बकरियों को, जो दुबलेपन की वजह से मरियल चाल चल रही थीं, हांकते हुए आ पहुंचे। दूध देखा तो हैरत में पड़ गए, पूछा, यह तुम्हारे पास कहां से आया, जबकि बकरियां बहुत दूर चली गई थीं और घर में दूध देनेवाली बकरी न थी?

बोलीं, अल्लाह की क़सम, कोई बात नहीं, अलावा इसके कि हमारे पास से एक बरकत वाला आदमी गुज़रा, जिसकी ऐसी और ऐसी बात थी और यह और यह हाल था।

अबू माबद ने कहा, यह तो क़ुरैश का वही आदमी मालूम होता है, जिसे क़ुरैश खोज रहे हैं। अच्छा, ज़रा उसकी हालत तो बयान करो।

इस पर उम्मे माबद ने बड़े ही सुन्दर ढंग से आपकी ख़ूबियों और आपके कमालों का ऐसा नक़्शा खींचा कि गोया सुनने वाला आपको अपने सामने देख रहा है। (किताब के अन्त में ये ख़ूबियां लिखी जाएंगी)

ये गुण सुनकर अबू माबद बोला, ख़ुदा की क़सम! यह तो वही क़ुरैश का आदमी है, जिसके बारे में लोगों ने क़िस्म-क़िस्म की बातें गढ़ रखी हैं। मेरा इरादा है कि मैं आपका साथ दूं और कोई रास्ता मिला तो मैं ऐसा ज़रूर करूंगा।

उधर मक्के में एक आवाज़ उभरी जिसे लोग सुन रहे थे, पर उसका बोलने वाला दिखाई नहीं पड़ रहा था। आवाज़ यह थी—

'अर्श का रब अल्लाह उन दो साथियों को बेहतरीन बदला दे जो उम्मे माबद के ख़ेमे में उतरे।

वे दोनों ख़ैर (भलाई) के साथ उतरे और ख़ैर के साथ रवाना हुए और जो मुहम्मद सल्ल० का साथी हुआ, वह कामियाब हुआ।

हाय क़ुसई! अल्लाह ने उसके साथ कितने अपूर्व कारनामे और सरदारियां तुमसे समेट लीं।

बनू काब को उनकी महिलाओं की निवास स्थली और ईमान वालों की देखभाल का पड़ाव मुबारक हो।

तुम अपनी महिला से उसकी बकरी और बरतन के बारे में पूछो। तुम अगर बकरी से पूछोगे, तो वह भी गवाही देगी। (अरबी पदों का अनुवाद)

हज़रत अस्मा रज़ि० कहती हैं, हमें मालूम न था कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने किधर का रुख़ फ़रमाया है कि एक जिन्न मक्का के निचले भाग से ये पद पढ़ता हुआ आया। लोग उसके पीछे-पीछे चल रहे थे, उसकी आवाज़ सुन

रहे थे, लेकिन ख़ुद उसे नहीं देख रहे थे, यहां तक कि वह मक्का के ऊपरी भाग से निकल गया। वह कहती हैं कि जब हमने उसकी बात सुनी, तो हमें मालूम हुआ कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किधर का रुख़ फ़रमाया है। यानी आपका रुख़ मदीने की ओर है।[1]

4. रास्ते में सुराक़ा बिन मालिक ने पीछा किया और इस घटना को ख़ुद सुराक़ा ने बयान किया है। वह कहते हैं—

मैं अपनी क़ौम बनी मुदलिज की एक मज्लिस में बैठा था कि इतने में एक आदमी आकर हमारे पास खड़ा हुआ और हम बैठे थे। उसने कहा—

ऐ सुराक़ा! मैंने अभी तट पर कुछ लोगों को देखा है। मेरा ख़्याल है कि यह मुहम्मद सल्ल० और उनके साथी हैं।

सुराक़ा कहते हैं कि मैं समझ गया कि वही लोग हैं, लेकिन मैंने उस आदमी से कहा कि ये वह लोग नहीं है, बल्कि तुमने फ़्लां और फ़्लां को देखा है, जो हमारी आंखों के सामने से गुज़रकर गए हैं। फिर मैं मज्लिस में कुछ देर तक ठहरा रहा। इसके बाद उठकर अन्दर गया और अपनी लौंडी को हुक्म दिया कि वह मेरा घोड़ा निकाले और टीले के पीछे रोक कर मेरा इन्तिज़ार करे।

इधर मैंने अपना नेज़ा लिया और घर के पिछवाड़े से बाहर निकला। लाठी का एक सिरा ज़मीन पर घसीट रहा था और दूसरा ऊपरी सिरा नीचे कर रखा था। इस तरह मैं अपने घोड़े के पास पहुंचा और उस पर सवार हो गया।

मैंने देखा कि वह पहले की तरह मुझे लेकर दौड़ रहा है, यहां तक कि उनके क़रीब आ गया। इसके बाद घोड़ा मुझ समेत फिसला और मैं उससे गिर गया।

मैंने उठ कर तिरकश की ओर हाथ बढ़ाया और पांसे के तीर निकाल कर यह जानना चाहा कि मैं इन्हें नुक़्सान पहुंचा सकूंगा या नहीं, तो वह तीर निकला जो मुझे नापसन्द था। लेकिन मैंने तीर की नाफ़रमानी की और घोड़े पर सवार हो गया। वह मुझे लेकर दौड़ने लगा, यहां तक कि जब मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़िरात (क़ुरआन-पाठ) सुन रहा था और आप तवज्जोह नहीं दे रहे थे, जबकि अबूबक्र रज़ि० बार-बार मुड़ कर देख रहे थे, तो मेरे घोड़े के अगले दोनों पांव ज़मीन में धंस गए, यहां तक कि घुटनों तक जा पहुंचे और मैं उससे गिर गया।

---

1. ज़ादुल मआद 2/53-54, मुस्तदरक हाकिम 3/9, 10, हाकिम ने इसे सही कहा है और ज़हबी ने इनका साथ दिया है। इसे बग़वी ने भी शरहुस्सनुन्नः 13/264 में रिवायत किया है।

फिर मैंने उसे डांटा, तो उसने उठना चाहा, लेकिन वह अपने पांव मुश्किल से निकाल सका।

बहरहाल जब वह सीधा खड़ा हुआ तो उसके पांव के निशान से आसमान की ओर धुंएं जैसी गर्द उड़ रही थी। मैंने पांसे के तीर से क़िस्मत मालूम की और फिर वही तीर निकला जो मुझे नापसन्द था।

इसके बाद मैंने अमान के साथ उन्हें पुकारा तो वे लोग ठहर गए और मैं अपने घोड़े पर सवार होकर उनके पास पहुंचा। जिस वक़्त मैं उनसे रोक दिया गया था, उसी वक़्त मेरे दिल में यह बात बैठ गई थी कि रसूलुल्लाह सल्ल० का मामला ग़ालिब आकर रहेगा।

चुनांचे मैंने आपसे कहा कि आपकी क़ौम ने आपके बदले दियत (इनाम) का एलान कर रखा है और साथ ही मैंने लोगों के निश्चयों से आपको आगाह किया और तोशा और साज़ व सामान की भी पेशकश की, मगर उन्होंने मेरा कोई सामान नहीं लिया और न मुझसे कोई सवाल किया, सिर्फ़ इतना कहा कि हमारे बारे में राज़दारी बरतना।

मैंने आपसे गुज़ारिश की कि आप मुझे अम्न का परवाना लिख दें।

आपने आमिर बिन फ़ुहैरा को हुक्म दिया और उन्होंने चमड़े के एक टुकड़े पर लिखकर मेरे हवाले कर दिया, फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे बढ़ गए।[1]

इस घटना के बारे में ख़ुद अबूबक्र रज़ि० की भी एक रिवायत है। उनका बयान है कि हम लोग रवाना हुए, तो क़ौम हमारी ही खोज में थी, पर सुराक़ा बिन मालिक बिन जासम के सिवा, जो अपने घोड़े पर आया था, और कोई हमें न पा सका।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह पीछा करने वाला हमें आ लेना चाहता है?

आपने फ़रमाया, 'ग़म न करो, अल्लाह हमारे साथ है।'[2]

बहरहाल सुराक़ा वापस हुआ तो देखा कि लोग खोजने में लगे हुए हैं। कहने लगा—

---

1. सहीह बुख़ारी 1/554, बनी मुदलिज का वतन राबिग़ के क़रीब था और सुराक़ा ने उस वक़्त आपका पीछा किया था, जब आप क़दीद से ऊपर जा रहे थे। (ज़ादुल मआद 2/53), इसलिए ग़ालिब गुमान यह है कि ग़ार से रवाना होने के बाद तीसरे दिन पीछा करने की यह घटना घटी थी।
2. सहीह बुख़ारी 1/516

'इधर की खोज-ख़बर ले चुका हूं। यहां तुम्हारा जो काम था, वह किया जा चुका है। (इस तरह लोगों को वापस ले गया) यानी दिन के शुरू में तो चढ़ा आ रहा था और आख़िर में पासबान (देखभाल करने और निगरानी करने वाला) बन गया।[1]

5. रास्ते में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुरैदा बिन हुसैब अस्लमी मिले। इनके साथ अस्सी घराने थे। सभी मुसलमान हो गए और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशा की नमाज़ पढ़ी, ते सबने आपके पीछे नमाज़ पढ़ी। बुरैदा अपनी ही क़ौम की धरती पर ठहरे रहे और उहुद के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में तशरीफ़ लाए।

अब्दुल्लह बिन बुरैदा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़ाल लेते थे, अपशकुन न्हीं लेते थे।

बुरैदा अपने ख़ानदान बनू सह्म के सत्तर सवारों के साथ सवार होकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिले तो आपने मालूम किया कि तुम किनसे हो? उन्होंने कहा, क़बीला अस्लम से। आपने अबूबक्र से कहा, हम सालिम रहे। फिर पूछा किनकी औलाद से हो? कहा, बनू सह्म से। आपने फ़रमाया, तुम्हारा सह्म (नसीब) निकल आया।[2]

6. अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अन्दर जोह्फ़ा और हर्शी के दर्मियान क़हदारात में अबू औस तमीम बिन हज्र या अबू तमीम औस बिन हज्र अस्लमी के पास से गुज़रे। आपका कोई ऊंट पीछे रह गया था। चुनांचे आप और अबूबक्र एक ही ऊंट पर सवार थे। औस ने अपने एक नर ऊंट पर दोनों को सवार किया और उनके साथ मस्ऊद नामी अपने एक गुलाम को भेज दिया और कहा कि जो सुरक्षित रास्ते तुमको मालूम हैं, उनसे इनको लेकर जाओ और इनका साथ न छोड़ना। चुनांचे वह साथ लेकर रास्ता चला और मदीना पहुंचा दिया। फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मस्ऊद को उसके मालिक के पास भेज दिया और उसे हुक्म दिया कि औस से कहे कि वह अपने ऊंटों की गरदन पर घोड़े की क़ैद का निशान लगाए यानी दो हलक़े या दायरे बनाए और उनके बीच लकीर खींच दे। यही उनकी निशानी होगी। जब उहुद के दिन मुश्रिकीन न आए तो औस ने अपने उस गुलाम मस्ऊद बिन हुनैदा को उनकी ख़बर देने के लिए अर्ज से पैदल अल्लाह के रसूल

1. ज़ादुल मआद 2/53
2. असदुल ग़ाबा 1/209

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में रवाना किया। यह बात इब्ने माकोला ने तबरी के हवाले से ज़िक्र की है। औस ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना आ जाने के बाद इस्लाम क़ुबूल कर लिया, मगर अर्ज ही में ठहरे रहे।[1]

7. रास्ते में बत्ने एम के अन्दर नबी सल्ल० को हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु मिले। यह मुसलमानों के एक तिजारती गिरोह के साथ शामदेश से वापस आ रहे थे। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ि० को सफ़ेद कपड़े दिए।[2]

क़ुबा पहुंचे

सोमवार 8 रबीउल अव्वल सन् 14 नबवी यानी सन् 01 हिजरी मुताबिक़ 23 सितम्बर सन् 622 ई० को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ुबा में दाख़िल हुए।[3]

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० का बयान है कि मदीना के मुसलमानों ने मक्का से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रवाना होने की ख़बर सुन ली थी, इसलिए लोग हर दिन सुबह ही सुबह हर्रा की ओर निकल जाते और आपकी राह तकते रहते। जब दोपहर को धूप तेज़ हो जाती तो वापस पलट जाते।

एक दिन लम्बे इन्तिज़ार के बाद वापस पलट कर लोग अपने-अपने घरों को पहुंच चुके थे कि एक यहूदी अपने किसी टीले पर कुछ देखने के लिए चढ़ा। क्या देखता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके साथी सफ़ेद कपड़े पहने हुए, जिनसे चांदनी छिटक रही थी, तशरीफ़ ला रहे हैं।

उसने बे-अख़्तियार बड़ी ऊंची आवाज़ में कहा, अरब के लोगो! यह रहा तुम्हारा भाग्य, जिसका तुम इन्तिज़ार कर रहे थे।

ऐसा सुनते ही मुसलमान हथियारों की ओर दौड़ पड़े[4] (और हथियार सज-

---

1. उसदुल ग़ाबा 1/173, इब्ने हिशाम 1/491,
2. सहीह बुख़ारी, उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० की रिवायत 1/554
3. रहमतुल लिल आलमीन 1/102। उस दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र बग़ैर किसी कमी-बेशी के ठीक त्रिपन साल हुई थी और जो लोग आपकी नुबूवत का आरंभ 9 रबीउल अव्वल सन् 41 हाथी वर्ष से मानते हैं, उनके कहने के मुताबिक़ बारह साल पांच महीना अठारह दिन या बाईस दिन हुए थे।
4. सहीह बुख़ारी 1/555

धज कर स्वागत के लिए उमंड पड़े।) और हर्रा के पीछे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का स्वागत किया।

इब्ने क़य्यिम कहते हैं कि इसके साथ ही बनी अम्र बिन औफ़ (क़बा के रहने वालों) में शोर उठा और 'अल्लाहु अक्बर' के नारे सुने गए।

मुसलमान आपके आने की ख़ुशी में अल्लाहु अक्बर का नारा बुलन्द करते हुए स्वागत के लिए निकल पड़े। फिर आपका अभिनन्दन किया और आपके चारों ओर परवानों की तरह जमा हो गए। उस वक़्त आप शान्त थे और यह वह्य उतर रही थी—

'अल्लाह आपका मौला है और जिब्रील और भले ईमान वाले भी और इसके बाद फ़रिश्ते आपके मददगार हैं।'[1]

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० का बयान है कि लोगों से मिलने के बाद आप उनके साथ दाहिनी ओर मुड़े और बनी अम्र बिन औफ़ में तशरीफ़ लाए। यह सोमवार का दिन और रबीउल हव्वल का महीना था। अबूबक्र आनेवालों के स्वागत के लिए खड़े थे और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुपचाप बैठे थे। अंसार के जो लोग आते, जिन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को देखा न था, वे सीधे अबूबक्र रज़ि० को सलाम करते, यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्ल० पर धूप आ गई और अबूबक्र रज़ि० ने चादर तानकर आप पर साया किया। तब लोगों ने पहचाना कि यह रसूलुल्लाह सल्ल० हैं।[2]

आपके स्वागत और दर्शन के लिए सारा मदीना उमंड पड़ा था। यह एक ऐतिहासिक दिन था, जिसकी नज़ीर मदीना की धरती ने कभी न देखी थी। आज यहूदियों ने भी हबक़ूक़ नबी की उस ख़ुशख़बरी का मतलब देख लिया था कि—

'अल्लाह दक्षिण से और वह जो क़ुद्दूस है, फ़ारान की चोटी से आया।'[3]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़बा में कुलसूम बिन बदम (और कहा जाता है कि साद बिन ख़ैसमा) के मकान में निवास किया। पहला कथन ज़्यादा मज़बूत है।

इधर हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मक्का में तीन दिन रहकर और लोगों की जो अमानतें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास थीं, उन्हें अदा करके पैदल ही मदीने का रुख़ किया और क़बा में अल्लाह

1. ज़ादुल मआद 2/54
2. सहीह बुख़ारी 1/555
3. किताब बाइबिल, सहीफ़ा हबक़ूक़ 303

के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आ मिले और कुलसूम बिन बदम के यहां निवास किया।[1]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ुबा में कुल चार दिन[2] (सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार) या दस से ज़्यादा दिन या पहुंच और रवानगी के अलावा 24 दिन ठहरे। इसी दौरान मस्जिदे क़ुबा की बुनियाद रखी और उसमें नमाज़ भी पढ़ी।

यह आपकी नुबूवत के बाद पहली मस्जिद है जिसकी बुनियाद तक़्वा पर रखी गई।

पांचवें दिन (या बारहवें दिन या छब्बीसवें दिन) शुक्रवार को आप अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ सवार हुए। हज़रत अबूबक्र रज़ि० आपके पीछे थे। आपने बनू नज्जार को जो आपके मामुओं का क़बीला था, सूचना भेज दी थी, चुनांचे वे तलवारें लटकाए हाज़िर थे। आपने (उनके साथ) मदीने का रुख़ किया।

बनू सालिम बिन औफ़ की आबादी में पहुंचे तो जुमा का वक़्त आ गया। आपने बीच घाटी में उस जगह जुमा पढ़ी, जहां अब मस्जिद है। कुल एक सौ आदमी थे।[3]

मदीना में दाख़िला

जुमा के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ ले गए और उसी दिन से इस शहर का नाम यसरिब के बजाए मदीनतुर्रसूल (रसूल का शहर) पड़ गया जिसे संक्षेप में मदीना कहा जाता है।

यह अतिप्रमुख ऐतिहासिक दिन था। गली-गली, कूचे-कूचे में अल्लाह के

---

1. ज़ादुल मआद 2/54, इब्ने हिशाम 1/493,
2. यह इब्ने इस्हाक़ की रिवायत है। देखिए इब्ने हिशाम 1/494। सहीह बुख़ारी की एक रिवायत है कि आपने क़ुबा में 24 रात निवास किया (1/61) मगर एक और रिवायत में दस दिन से कुछ ज़्यादा (1/555) और एक तीसरी रिवायत में चौदह रात (1/560) बताया गया है। इब्ने क़य्यिम ने इसी आख़िरी रिवायत को अपनाया है, मगर ख़ुद इब्ने क़य्यिम ने स्पष्ट किया है कि आप क़ुबा में सोमवार को पहुंचे थे और वहां से जुमा को रवाना हुए थे। (ज़ादुल मआद 2/54-55) और मालूम है कि सोमवार और शुक्रवार को अलग-अलग सप्ताहों का लिया जाए तो पहुंच और रवानगी का दिन छोड़कर कुल मुद्दत दस दिन की होती है और रवानगी का दिन शामिल करके 12 दिन होती है, इसलिए कुल मुद्दत 14 दिन कैसे हो सकेगी?
3. सहीह बुख़ारी 1/555-560, ज़ादुल मआद 2/55, इब्ने हिशाम 1/494,

गुणों का बखान हो रहा था और अंसार की बच्चियां ख़ुशी-ख़ुशी गीत गा रही थीं—

'इन पहाड़ों से जो हैं दक्षिण तरफ़, चौदहवीं का चांद है हम पर चढ़ा।'

कैसा उम्दा दीन और तालीम है, शुक्र वाजिब है हमें अल्लाह का।

है इताअत फ़र्ज़ तेरे हुक्म की, भेजने वाला है तेरा किब्रिया।[1]

अंसार अगरचे बड़े धनी न थे, लेकिन हर एक की यही आरज़ू थी कि अल्लाह के रसूल सल्ल० उसके यहां निवास करें। चुनांचे आप अंसार के जिस मकान या मुहल्ले से गुज़रते, वहां के लोग आपकी ऊंटनी की नकेल पकड़ लेते और अर्ज़ करते कि तायदाद व सामान और हथियार और हिफ़ाज़त आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं, तशरीफ़ लाइए। मगर आप फ़रमाते कि ऊंटनी की राह छोड़ दो। यह अल्लाह की ओर से नियुक्त है।

चुनांचे ऊंटनी लगातार चलती रही और वहां पहुंचकर बैठी जहां आज मस्जिदे नबवी है, लेकिन आप नीचे नहीं उतरे, यहां तक कि वह उठकर थोड़ी दूर गई, फिर मुड़कर देखने के बाद पलट आई और अपनी पहली जगह बैठ गई। इसके बाद आप नीचे तशरीफ़ लाए। यह आपके ननिहाल वालों यानी बनू नज्जार का मुहल्ला था और यह ऊंटनी के लिए सिर्फ़ ख़ुदा की तौफ़ीक़ थी, क्योंकि आप ननिहाल में निवास करके उनकी इज़्ज़त बढ़ाना चाहते थे।

अब बनू नज्जार के लोगों ने अपने-अपने घर ले जाने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहना शुरू किया, लेकिन अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु ने लपक कर कजावा उठा लिया और अपने घर लेकर चले गए। इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाने लगे—

'आदमी अपने कजावे के साथ है।'

इधर हज़रत असद बिन ज़रारह रज़ियल्लाहु अन्हु ने आकर ऊंटनी की नकेल

---

1. पदों का यह अनुवाद अल्लामा मंसूरपुरी ने किया है। अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने लिखा है कि ये पद तबूक से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वापसी पर पढ़े गए थे और जो यह कहता है कि मदीना में आपके दाख़िले के मौक़े पर पढ़े गए थे, उसे भ्रम हुआ। (ज़ादुल मआद 3/10 लेकिन अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने इसके भ्रम होने का कोई सन्तोषजनक तर्क नहीं दिया है। इसके विपरीत अल्लामा मंसूरपुरी ने इस बात को प्रमुखता दी है कि ये पद मदीने में दाख़िले के वक़्त पढ़े गए। उन्होंने सुहुफ़े बनी इस्राईल के इशारों और व्याख्याओं से यह नतीजा निकाला है (देखिए रहमतुल्लिल आलमीन 1/106) संभव है ये पद दोनों अवसरों पर पढ़े गए हों।

पकड़ ली। चुनांचे यह ऊंटनी उन्हीं के पास रही।[1]

सहीह बुख़ारी में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हमारे किस आदमी का घर ज़्यादा क़रीब है?

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० ने कहा, मेरा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! यह रहा मेरा मकान और यह रहा मेरा दरवाज़ा।

आपने फ़रमाया, जाओ और हमारे लिए आराम की जगह तैयार कर दो।

उन्होंने अर्ज़ किया, आप दोनों तशरीफ़ ले चलें। अल्लाह बरकत दे।[2]

कुछ दिनों बाद आपकी बीवी उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ि० और आपकी दोनों बेटियां हज़रत फ़ातिमा रज़ि० और उम्मे कुलसूम रज़ि० और हज़रत उसामा बिन ज़ैद और उम्मे ऐमन भी आ गईं। इन सबको हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र रज़ि० अपने घर वालों के साथ, जिनमें हज़रत आइशा रज़ि० भी थीं, लेकर आए थे, अलबत्ता नबी सल्ल० की एक बेटी, हज़रत ज़ैनब, हज़रत अबुल आस के पास बाक़ी रह गईं। उन्होंने आने नहीं दिया और वह बद्र की लड़ाई के बाद तशरीफ़ ला सकीं।[3]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि हम मदीना आए तो यह अल्लाह की ज़मीन में सबसे ज़्यादा बीमारियों वाली जगह थी। बतहान घाटी सड़े हुए पानी से बहती थी। उनका यह भी बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो हज़रत अबूबक्र और हज़रत बिलाल रज़ि० को बुख़ार आ गया। मैंने उनकी खिदमत में हाज़िर होकर मालूम किया कि अब्बा जान! आपका क्या हाल है? और ऐ बिलाल! आपका क्या हाल है?

वह फ़रमाती हैं कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० को बुख़ार आता तो यह पद पढ़ते—

'हर व्यक्ति से उसके अहल (घर) के अन्दर बख़ैर कहा जाता है, हालांकि मौत उसके जूते के फ़ीते से भी ज़्यादा क़रीब है।'

और हज़रत बिलाल रज़ि० की हालत कुछ संभलती, तो वह अपनी दर्दनाक आवाज़ ऊंची करते और कहते—

---

1. ज़ादुल मआद 2/55, इब्ने हिशाम 1/494-496
2. सहीह बुख़ारी 1/556
3. ज़ादुल मआद 2/55

'काश, मैं जानता कि कोई रात घाटी (मक्का) में बिता सकूंगा और मेरे आस-पास इज़्ख़र और जलील (घासें) होंगी और क्या किसी दिन मजना के सोते पर आ सकूंगा और मुझे शामा और तफ़ील (पहाड़) दिखलाई पड़ेंगे।'

हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर उसकी ख़बर दी तो आपने फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह! हमारे नज़दीक मदीना को वैसे ही प्रिय कर दे जैसे मक्का प्रिय था या उससे भी ज़्यादा और मदीना की फ़िज़ा सेहत बख़्श बना दे और इसके साअ और मुद्द (अनाज के पैमानों) में बरकत दे और इसका बुख़ार यहां से हटाकर जोहफ़ा पहुंचा दे।'[1]

अल्लाह ने आपकी दुआ सुन ली, चुनांचे आपको सपने में दिखाया गया कि एक बिखरे बालों वाली काली औरत मदीना से निकली और जहीआ यानी जोह्फ़ा में जा उतरी। इसका स्वप्न फल यह था कि मदीना की वबा (बीमारी) जोह्फ़ा मुंतक़िल कर दी गई और इस तरह मुहाजिरों को मदीना की आब व हवा की सख़्ती से राहत मिल कई।

नोट : यहां तक आपकी पाक ज़िंदगी की एक क़िस्म और इस्लामी दावत का एक दौर (यानी मक्की दौर) पूरा हो जाता है। आगे संक्षेप में मदनी दौर पेश किया जा रहा है। व बिल्लाहित्तौफ़ीक़

---

1. सहीह बुख़ारी 1/588-589

पाक ज़िंदगी
का
मदनी दौर

मदनी दौर में दावत व जिहाद के मरहले

मदनी दौर को तीन मरहलों में बांटा जा सकता है—

1. पहला मरहला

इस्लामी समाज की बुनियाद रखने का मरहला, जिसमें फ़ित्ने पैदा किए गए, परेशानियां बढ़ाई गईं, अन्दर से रुकावटें खड़ी की गईं और बाहर से दुश्मनों ने मदीना को नेस्त व नाबूद करने के लिए चढ़ाइयां कीं।

यह मरहला मुसलमानों के ग़लबे और स्थिति पर क़ाबू पाने के साथ ही हुदैबिया समझौते पर (ज़ीक़ादा सन् 06 हि०) ख़त्म हो जाता है।

2. दूसरा मरहला

जिसमें बड़े दुश्मन से समझौता हुआ। यह मरहला मक्का विजय रमज़ान सन् 08 हि० पर ख़त्म होता है।

3. तीसरा मरहला

जिसमें अल्लाह के बन्दे अल्लाह के दीन में गिरोह-दर-गिरोह दाख़िल हुए। यही मरहला मदीने में क़ौमों और क़बीलों के प्रतिनिधिमंडलों के आने का मरहला है। यह मरहला अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक ज़िंदगी के आख़िर तक यानी रबीउल अव्वल सन् 11 हि० तक फैला हुआ है।

हिजरत के समय मदीना के हालात

हिजरत का मतलब सिर्फ़ यही नहीं था कि फ़िलों से और मज़ाक़ का निशाना बनने से निजात हासिल कर ली जाए, बल्कि इसमें यह मतलब भी शामिल था कि एक अमन वाले इलाक़े के अन्दर एक नए समाज के गठन में मदद की जाए। इसीलिए इसे हर समर्थ मुसलमान का कर्त्तव्य कहा गया था कि इस नए वतन के बनाने में हिस्सा ले और उसकी मज़बूती, हिफ़ाज़त, और उसको ऊंचा उठाने में अपनी कोशिश लगाए।

यह बात तो क़तई तौर पर मालूम है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही इस समाज के गठन के इमाम, कर्त्ता-धर्त्ता और रहनुमा थे और किसी विवाद के बिना ही सारे मामलों की बागडोर आप ही के हाथ में थी।

मदीना में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तीन तरह की क़ौमों से वास्ता पड़ा, जिनमें से हर एक के हालात दूसरे से बिल्कुल अलग थे और हर एक क़ौम के ताल्लुक़ से कुछ ख़ास मसले थे, जो दूसरी क़ौमों के मसलों से अलग थे। ये तीनों क़ौमें नीचे लिखी जा रही हैं—

1. आपके पाकबाज़ सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की चुनी हुई और सब में नुमायां जमाअत,

2. मदीने के पुराने और असली क़बीलों से ताल्लुक़ रखने वाले मुश्रिक, जो अब तक ईमान नहीं लाए थे,

3. यहूदी।

1. सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के ताल्लुक़ से आपको जिन समस्याओं का सामना था, उनकी व्याख्या यह है कि उनके लिए मदीने के हालात मक्का के हालात से क़तई तौर पर अलग थे। मक्के में उनका कलिमा एक था और उनका उद्देश्य भी एक था, मगर वे ख़ुद अलग-अलग घरानों में बिखरे हुए थे और मजबूर, परेशान और ज़लील व कमज़ोर थे। उनके हाथ में किसी तरह का कोई अधिकार न था। सारे अधिकार दीन के दुश्मनों के हाथ में थे और दुनिया का कोई भी इंसानी समाज जिन हिस्सों और ज़रूरी चीज़ों से क़ायम होता है, मक्का के मुसलमानों के पास वे हिस्से सिरे से थे ही नहीं कि उनकी बुनियाद पर किसी नए इस्लामी समाज का गठन किया जा सके।

इसलिए हम देखते हैं कि मक्की सूरतों में सिर्फ़ इस्लाम की आरंभिक बातों का विवरण दिया गया है और सिर्फ़ ऐसे आदेश दिए गए हैं जिन पर हर आदमी अकेले

अमल कर सकता है। इसके अलावा नेकी, भलाई और अच्छे अख़्लाक़ पर उभारा गया है और नीच और घटिया कामों से बचने की ताकीद की गई है।

इसके ख़िलाफ़ मदीने में मुसलमानों की बागडोर पहले ही दिन से ख़ुद उनके अपने हाथ में थी। उन पर किसी दूसरे का क़ब्ज़ा न था। इसलिए अब वक़्त आ गया था कि मुसलमान संस्कृति, समाज, अर्थ, राजनीति, शासन और सुलह और लड़ाई की समस्याओं का सामना करें और उनके लिए हलाल व हराम और इबादत व अख़्लाक वग़ैरह ज़िंदगी के मसलों को भरपूर तरीक़े से स्पष्ट किया जाए।

वक़्त आ गया था कि मुसलमान एक नया समाज यानी इस्लामी समाज बनाएं जो ज़िंदगी के तमाम मरहलों में जाहिली समाज से अलग और इंसानों में मौजूद किसी भी दूसरे समाज से नुमायां हो और उस इस्लामी दावत का नुमाइन्दा हो, जिसकी राह में मुसलमानों ने दस साल तक तरह-तरह की मशक़्क़तें और मुसीबतें सहन की थीं।

ज़ाहिर है कि इस तरह के किसी समाज का गठन एक दिन, एक महीना या एक साल में नहीं हो सकता, बल्कि इसके लिए एक लम्बी मुद्दत चाहिए होती है, ताकि उसमें धीरे-धीरे और एक-एक करके आदेश दिए जाएं और क़ानून बनाने का काम अभ्यास, ट्रेनिंग और व्यावहारिक तौर पर लागू करने के साथ-साथ पूरा किया जाए।

अब जहां तक आदेश और क़ानून देने और बनाने का मामला है, तो अल्लाह इसे ख़ुद पूरा करने वाला था और जहां तक इनके लागू करने और मुसलमानों की तर्बियत और रहनुमाई का मामला है, तो इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लगे हुए थे। चुनांचे इर्शाद है—

'वही है जिसने उम्मियों (अपढ़ों) में ख़ुद उन्हीं के अन्दर से एक रसूल भेजा जो उन पर अल्लाह की आयतें तिलावत करता है और उन्हें पाक व साफ़ करता है और उन्हें किताब व हिक्मत सिखाता है और ये लोग यक़ीनन पहले खुली गुमराही में थे।'

(62 : 2)

इधर सहाबा किराम रज़ि० का यह हाल था कि वे आपकी ओर पूरी तरह कान लगाए रखते और जो आदेश आता, उससे अपने आपको जोड़कर ख़ुशी महसूस करते, जैसा कि इर्शाद है—

'जब उन पर अल्लाह की आयतें तिलावत की जाती हैं, तो उनके ईमान को बढ़ा देती हैं।'

(8 : 2)

चूंकि इन तमाम समस्याओं का विवरण देना हमारे सामने नहीं है, इसलिए हम इस पर ज़रूरत के मुताबिक़ बातें करेंगे।

बहरहाल यही सबसे बड़ी समस्या थी, जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने मुसलमानों के ताल्लुक़ से थी और बड़े पैमाने पर यही इस्लामी दावत और मुहम्मदी रिसालत का अभिप्राय भी था, लेकिन यह कोई हंगामी समस्या न थी, बल्कि हमेशा की और मुस्तक़िल समस्या थी, अलबत्ता इसके अलावा कुछ दूसरी समस्याएं भी थीं, जो फ़ौरी ध्यान चाहती थीं। संक्षेप में उनकी स्थिति स्पष्ट की जा रही है।

मुसलमानों की जमाअत में दो तरह के लोग थे—

एक वे जो ख़ुद अपनी ज़मीन, अपने मकान और अपने मालों के साथ रह रहे थे और इस बारे में उनको इससे ज़्यादा चिन्ता न थी, जितनी किसी आदमी को अपने घर वालों में अम्न व सुकून के साथ रहते हुए करनी पड़ती है। यह अंसार का गिरोह था और इनमें पीढ़ियों से आपस में बड़ी ज़ोरदार दुश्मनियां और नफ़रतें चली आ रही थीं।

इसके पहलू ब पहलू दूसरा गिरोह मुहाजिरों का था, जो उन सारी सुविधाओं से महरूम था और लुट-पिटकर किसी न किसी तरह अल्लाह भरोसे मदीने पहुंच गया था। इनके पास न तो रहने के लिए कोई ठिकाना था, न पेट पालने के लिए कोई काम और न सिरे से किसी क़िस्म का कोई माल, जिस पर उनकी अर्थव्यवस्था खड़ी हो सके।

फिर इन पनाह लेने वाले मुहाजिरों की तायदाद कोई मामूली भी न थी और उनमें हर दिन बढ़ौतरी ही हो रही थी, क्योंकि एलान कर दिया गया था कि जो कोई अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान रखता है, वह हिजरत करके मदीना आ जाए और मालूम है कि मदीने में न कोई बड़ी दौलत है, न आमदनी के साधन, चुनांचे मदीने का आर्थिक सन्तुलन बिगड़ गया, और इसी तंगी-तुर्शी में इस्लाम दुश्मन ताक़तों ने भी मदीना का लगभग आर्थिक बहिष्कार कर दिया, जिससे आयात बन्द हो गया और स्थिति बहुत ज़्यादा संगीन हो गई।

2. दूसरी क़ौम यानी मदीने के असल मुश्रिक निवासियों का हाल यह था कि उन्हें मुसलमानों पर कोई बालादस्ती (श्रेष्ठता) हासिल न थी। कुछ मुश्रिक शक व शुबहे में पड़े हुए थे और अपने बाप-दादा के दीन को छोड़ देने में संकोच कर रहे थे, लेकिन इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ अपने दिल में

कोई दुश्मनी और दांव-घात नहीं रख रहे थे। इस तरह के लोग थोड़े दिनों बाद ही मुसलमान हो गए और खालिस और पक्के मुसलमान हो गए।

इसके ख़िलाफ़ कुछ ऐसे मुश्रिक थे जो अपने सीने में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ सख़्त कीना और दुश्मनी छिपाए हुए थे, लेकिन उन्हें मुक़ाबले में आने की जुर्रात न थी, बल्कि हालात को सामने रखते हुए आपसे मुहब्बत और ख़ुलूस ज़ाहिर करने पर मजबूर थे। इनमें सबसे आगे अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल था, यह वह व्यक्ति है, जिसे बुआस की लड़ाई के बाद अपना सरदार बनाने पर औस व ख़ज़रज ने सहमति दिखाई थी, हालांकि इससे पहले दोनों फ़रीक़ किसी के सरदार से सहमत नहीं हुए थे, लेकिन अब इसके लिए मूंगों का ताज तैयार किया जा रहा था, ताकि उसके सर पर शाही ताज रखकर उसकी बाक़ायदा बादशाही का एलान कर दिया जाए, यानी यह व्यक्ति मदीने का बादशाह होने ही वाला था कि अचानक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आना-जाना हो गया और लोगों का रुख़ उसके बजाए आपकी ओर हो गया।

उसे एहसास था कि आप ही ने उसकी बादशाही छीनी है, इसलिए वह अपने दिल में आपके ख़िलाफ़ कड़ी दुश्मनी छिपाए हुए था। इसके बावजूद जब उसने बद्र की लड़ाई के बाद देखा कि हालात उसके मुताबिक़ नहीं हैं और वह शिर्क पर क़ायम रहकर अब दुनिया के फ़ायदों से भी महरूम हुआ चाहता है, तो उसने ज़ाहिर में इस्लाम क़ुबूल करने का एलान कर दिया, लेकिन वह अब भी अन्दर से काफ़िर ही था। इसीलिए जब भी उसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ किसी शरारत का मौक़ा मिलता, तो वह हरगिज़ न चूकता।

उसके साथी आमतौर से वे सरदार थे, जो उसकी बादशाही की छत्रछाया में बड़े-बड़े पदों की प्राप्ति की आशा लिए बैठे थे, पर अब उन्हें इससे महरूम हो जाना पड़ा था। ये लोग उस व्यक्ति के कामों में शरीक थे और उसकी योजनाओं के लागू करने में उसकी मदद करते थे और इस मक़सद के लिए कभी-कभी नवजवानों और भोले-भाले मुसलमानों को भी तेज़ी से अपना साथी बना लेते थे।

(ग) तीसरी क़ौम यहूदी थी, जैसा कि गुज़र चुका है। ये लोग अशूरी और रूमी ज़ुल्म व जब्र से भाग कर हिजाज़ में शरण लिए हुए थे।

ये वास्तव में इब्रानी थे, लेकिन हिजाज़ में शरण लेने के बाद उनका खान-पान, भाषा, और सभ्यता आदि बिल्कुल अरबी रंग में रंग गई थी, यहां तक कि उनके क़बीलों और लोगों के नाम भी अरबी हो गए थे और यहां तक कि

इनमें और अरबों में शादी-ब्याह के रिश्ते भी क़ायम हो गए थे, लेकिन इन सबके बावजूद उनका नस्ली पक्षपात बहाल था और वे अरबों में मिले न थे, बल्कि अपनी इसराईली—यहूदी—राष्ट्रीयता पर गर्व करते थे और अरबों को बहुत ही तुच्छ समझते थे, यहां तक कि उन्हें उम्मी (अपढ़) समझते थे, जिसका मतलब उनके नज़दीक यह था, बुद्धू, जंगली, नीच, दलित और अछूत।

उनका विश्वास था कि अरबों का माल उनके लिए जायज़ है, जैसे चाहें खाएं, चुनांचे इर्शाद है—

'उन्होंने कहा, हम पर उम्मियों के मामले में कोई राह नहीं।' (3 : 75)

यानी उम्मियों का माल खाने में हमारी कोई पकड़ नहीं।

इन यहूदियों में अपने दीन के प्रचार के लिए कोई सरगर्मी नहीं पाई जाती थी। ले-देकर उनके पास दीन की जो पूंजी रह गई थी, वह थी फ़ालगिरी (शकुन-अपशकुन मालूम करना), जादू और झाड़-फूंक वग़ैरह। इन्हीं चीज़ों की वजह से वे अपने आपको इल्म और फ़ज़्ल का मालिक और रूहानी नेता और पेशवा समझते थे।

यहूदियों को धन कमाने की कला आती थी। अन्न, खजूर, शराब और कपड़े का कारोबार उन्हीं के हाथ में था। ये लोग अनाज, कपड़ा और शराब आयात करते थे और खजूर निर्यात करते थे। इसके अलावा भी उनके बहुत-से काम थे, जिनमें वे सरगर्म रहते थे। वे अपने कारोबारी माल में अरबों से दो गुना-तीन गुना लाभ लेते थे और इसी पर बस न करते थे, बल्कि वे ब्याज का काम भी करते थे। इसलिए वे अरब शेख़ों और सरदारों को सूदी क़र्ज़ के तौर पर बड़ी-बड़ी रक़में देते थे, जिन्हें ये सरदार नाम कमाने के लिए अपनी प्रशंसा करने वाले कवियों आदि पर बिल्कुल व्यर्थ और बे-दरेग़ ख़र्च कर देते थे।

इधर यहूदी इन रक़मों के बदले इन सरदारों से उनकी ज़मीनें, खेतियां और बाग़ वग़ैरह गिरवी रखवा लेते थे और कुछ साल बीतते-बीतते उनके मालिक बन बैठते थे।

ये लोग फूट डालने, षड्यंत्र रचने और लड़ाई-झगड़े की आग भड़काने में भी बड़े माहिर थे। ऐसी चालाकी से पड़ोसी क़बीलों में दुश्मनी के बीज बोते और एक को दूसरे के ख़िलाफ़ भड़काते थे कि उन क़बीलों को एहसास तक न होता। इसके बाद इन क़बीलों में आपस की लड़ाई होती रहती और अगर किसी तरह लड़ाई की यह आग ठंडी दिखाई देती, तो यहूदियों की छिपी चालें फिर हरकत में आ जातीं और लड़ाई फिर भड़क उठती।

कमाल यह था कि ये लोग क़बीलों को लड़ा-भिड़ाकर चुपचाप किनारे बैठे रहते और अरबों की तबाही का तमाशा देखते, अलबत्ता भारी-भरकम सूदी क़र्ज़ देते रहते, ताकि पूंजी की कमी की वजह से लड़ाई बन्द न होने पाए और इस तरह वे दोहरा नफ़ा कमाते रहते। एक ओर अपने यहूदी जत्थे को बचाए रखते और दूसरी ओर सूद का बाज़ार ठंडा न पड़ने देते, बल्कि सूद दर सूद के ज़रिए बड़ी-बड़ी दौलत कमाते।

यसरिब में इन यहूदियों के तीन मशहूर क़बीले थे—

1. **बनू क़ैनुक़ाअ**—ये ख़ज़रज के मित्र थे और इनकी आबादी मदीने के अन्दर ही थी।

2. **बनू नज़ीर**—

3. **बनू क़ुरैज़ा**—ये दोनों क़बीले औस के मित्र थे और इन दोनों की आबादी मदीने के बाहरी हिस्से में थी।

एक मुद्दत से यही क़बीले औस व ख़ज़रज के बीच लड़ाई के शोले भड़का रहे थे, और बुआस की लड़ाई में अपने-अपने मित्रों के साथ ख़ुद भी शरीक हुए थे।

स्वाभाविक बात है कि इन यहूदियों से इसके अलावा और कोई उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि ये इस्लाम को द्वेष और वैर-भाव से देखें, क्योंकि पैग़म्बर इनकी नस्ल के न थे कि उनके नस्ली पक्षपात को, जो उनके मनोविज्ञान और मनोवृत्ति का अटूट अंग बना हुआ था, शान्ति मिलती।

फिर इस्लाम की दावत एक भली दावत थी, जो टूटे दिलों को जोड़ती थी, द्वेष और वैर की आग को बुझाती थी। तमाम मामलों में अमानतदारी बरतने और पाक और हलाल माल खाने की पाबन्द बनाती थी।

इसका मतलब यह था कि अब यसरिब के क़बीले आपस में जुड़ जाएंगे, और ऐसी स्थिति में अनिवार्य रूप से वे यहूदियों की पकड़ से आज़ाद हो जाएंगे और उनकी कारोबारी चालें ढीली पड़ जाएंगी। वे उस सूदी दौलत से महरूम हो जाएंगे, जिस पर उनकी मालदारी की चक्की घूम रही थी, बल्कि यह भी डर था कि कहीं ये क़बीले जाग कर अपने हिसाब में उन सूदी मालों को भी न दाख़िल कर लें जिन्हें यहूदियों ने उनसे बे-मुआवज़ा हासिल किया था और इस तरह उन ज़मीनों और बाग़ों को वापस न ले लें जिन्हें सूद के नाम पर यहूदियों ने हाथिया लिया था।

जब से यहूदियों को मालूम हुआ था कि इस्लामी दावत यसरिब में अपनी जगह बनाना चाहती है, तभी से उन्होंने इन सारी बातों को अपने हिसाब में दाख़िल कर रखा था। इसीलिए यसरिब में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम के आने के वक़्त ही से यहूदियों को इस्लाम और मुसलमानों से बड़ी दुश्मनी हो गई थी। अगरचे वे उसको प्रकट करने का साहस एक लम्बी मुद्दत बाद कर सके। इस स्थिति का बहुत साफ़-साफ़ पता इब्ने इस्हाक़ की बयान की हुई एक घटना से चलता है।

उनका बयान है कि मुझे उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया बिन्त हुइ बिन अख़तब रज़ियल्लाहु अन्हा से यह रिवायत मिली है कि उन्होंने फ़रमाया, मैं अपने पिता और चचा अबू यासिर की निगाह में अपने बाप की सबसे चहेती औलाद थी। मैं चचा और बाप से जब कभी उनकी किसी भी औलाद के साथ मिलती, तो वे उसके बजाए मुझे ही उठाते।

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और क़ुबा में बनू अम्र बिन औफ़ के यहां उतरे, तो मेरे पिता हुइ बिन अख़तब और मेरे चचा अबू यासिर आपकी सेवा में सुबह तड़के हाज़िर हुए और सूरज डूबने के वक़्त वापस आए। बिल्कुल थके-मांदे, गिरते-पड़ते, लड़खड़ाती चाल चलते हुए। मैंने पहले की तरह चहक कर उनकी ओर दौड़ लगाई, लेकिन उन्हें इतना दुख था कि ख़ुदा की क़सम, दोनों में से किसी ने मेरी ओर तवज्जोह न दी और मैंने अपने चचा को सुना, वह मेरे पिता हुइ बिन अख़तब से कह रहे थे—

'क्या यह वही हैं?'

उन्होंने कहा, 'हां, ख़ुदा की क़सम!'

चचा ने कहा, 'आप उन्हें ठीक-ठीक पहचान रहे हैं?'

पिता ने कहा, हां।

चचा ने कहा, तो अब आपके मन में उनके बारे में क्या इरादे हैं?

पिता ने कहा :, 'दुश्मनी, ख़ुदा की क़सम, जब तक ज़िंदा रहूंगा।'[1]

इसी की गवाही सहीह बुख़ारी की इस रिवायत से भी मिलती है, जिसमें हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु के मुसलमान होने की घटना बयान की गई है। वह एक बहुत ही ऊंचे यहूदी विद्वान थे। आपको जब बनू नज्जार में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने की ख़बर मिली, तो वह आपकी सेवा में बिना देर किए हाज़िर हुए और कुछ सवाल किए, जिन्हें सिर्फ़ नबी ही जानता है और जब नबी की ओर से उनके जवाब सुने, तो वहीं उसी वक़्त मुसलमान हो गए, फिर आपसे कहा—

---

1. इब्ने हिशाम 1/518, 519

'यहूदी एक बोहतान लगाने वाली क़ौम है। अगर उन्हें इससे पहले कि आप कुछ मालूम करें, मेरे इस्लाम लाने का पता लग गया, तो वे आपके पास मुझ पर बोहतान गढ़ेंगे।'

इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहूदियों को बुला भेजा, वे आए (और उधर अब्दुल्लाह बिन सलाम घर के अन्दर छिप गए थे), तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा कि अब्दुल्लाह बिन सलाम तुम्हारे अन्दर कैसे आदमी हैं?

उन्होंने कहा, हमारे सबसे बड़े विद्वान हैं और सबसे बड़े विद्वान के बेटे हैं। हमारे सबसे अच्छे आदमी हैं और सबसे अच्छे आदमी के बेटे हैं।

एक रिवायत के शब्द ये हैं कि हमारे सरदार हैं और हमारे सरदार के बेटे हैं और एक दूसरी रिवायत के शब्द ये हैं कि हमारे सब से अच्छे आदमी हैं और सबसे अच्छे आदमी के बेटे हैं और हम में सबसे अफ़ज़ल हैं और सबसे अफ़ज़ल आदमी के बेटे हैं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अच्छा यह बताओ, अगर अब्दुल्लाह मुसलमान हो जाएं तो?

यहूदियों ने दो या तीन बार कहा, अल्लाह उनको इससे बचाए रखे।

इसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम निकले और फ़रमाया—

'अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाह व अश्हदु अन-न मुहम्मदर रसूलुल्लाह'

(मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।)

इतना सुनना था कि यहूदी बोल पड़े—

'यह हमारा सबसे बुरा आदमी है और सबसे बुरे आदमी का बेटा है।' और (उसी वक़्त) उनकी बुराइयां शुरू कर दीं।

एक रिवायत में है कि इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया—

'ऐ यहूदियो! अल्लाह से डरो। उस अल्लाह की क़सम, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, तुम लोग जानते हो कि आप अल्लाह के रसूल हैं और आप हक़ लेकर तशरीफ़ लाए हैं।'

लेकिन यहूदियों ने कहा कि तुम झूठ कहते हो।[1]

---

1. सहीह बुख़ारी 1/459, 556, 561

यह पहला तर्जुबा था जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यहूदियों के बारे में हासिल हुआ और मदीने में दाख़िले के पहले ही दिन हासिल हुआ।

यहां तक जो कुछ लिखा गया है, यह मदीने के अन्दरूनी हालात से मुताल्लिक़ था। मदीने के बाहरी हिस्से में वे लोग थे जो क़ुरैश के धर्म का साथ देते थे और क़ुरैश मुसलमानों के सबसे बड़े दुश्मन थे। वे दस साल तक, जबकि मुसलमान उनके मातहत थे, आतंक फैलाने, धमकी देने और तंग करने के तमाम हथकंडे इस्तेमाल कर चुके थे। तरह-तरह की सख़्तियां और ज़ुल्म कर चुके थे। संगठित और विस्तृत प्रचार और बड़े ही आज़माइशी मनोवैज्ञानिक हथियारों को इस्तेमाल में ला चुके थे, फिर जब मुसलमानों ने मदीना हिजरत की, तो क़ुरैश ने उनकी ज़मीनें, मकान, और माल व दौलत सब कुछ ज़ब्त कर लिया और मुसलमानों और उनके घरवालों के दर्मियान रुकावट बनकर खड़े हो गए, बल्कि जिसको पा सके, क़ैद करके तरह-तरह की पीड़ाएं दीं, फिर इसी पर बस न किया, बल्कि प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने और आपकी दावत को जड़-बुनियाद से उखाड़ने के लिए भयानक साज़िशें कीं और उसे अमली जामा पहनाने के लिए अपनी सारी क्षमताएं लगा दीं।

इसके बाद भी जब मुसलमान किसी तरह बच-बचाकर कोई पांच सौ किलोमीटर दूर मदीना के भू-भाग पर जा पहुंचे, तो क़ुरैश ने अपनी साख का फ़ायदा उठाते हुए घिनौना सियासी किरदार अंजाम दिया, यानी ये चूंकि हरम के रहने वाले और बैतुल्लाह के पड़ोसी थे और उसकी वजह से उन्हें अरबों के दर्मियान दीनी क़ियादत और दुन्यवी स्टेट का पद मिला हुआ था, इसलिए उन्होंने अरब प्रायद्वीप के दूसरे मुश्रिकों को भड़का और वरग़ला कर मदीने का लगभग पूरा बाईकाट करा दिया, जिसकी वजह से मदीना में आनेवाली चीज़ें बहुत थोड़ी-सी रह गई, जबकि वहां मुहाजिर शरणार्थियों की तायदाद हर दिन बढ़ती जा रही थी।

सच तो यह है कि मक्का के इन सरकशों और मुसलमानों के इस नए वतन के दर्मियान लड़ाई की हालत पैदा हो चुकी थी और यह बड़ी ही मूर्खता की बात है कि इस झगड़े का आरोप मुसलमानों के सर डाला जाए।

मुसलमानों को हक़ पहुंचता था कि जिस तरह उनके माल ज़ब्त किए गए थे, उसी तरह वे भी उन सरकशों के माल ज़ब्त करें, जिस तरह उन्हें सताया गया था, उसी तरह वे भी उन सरकशों को सताएं और जिस तरह मुसलमानों की

ज़िंदगियों के आगे रुकावटें खड़ी की गई थीं, उसी तरह मुसलमान भी इन सरकशों के आगे रुकावटें खड़ी करें और इन सरकशों को 'जैसे को तैसा' वाला बदला दें, ताकि उन्हें मुसलमानों को तबाह करने और जड़ से उखाड़ने का रास्ता न मिल सके।

ये थे वे विवाद और समस्याएं जिनसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मदीना तशरीफ़ लाने के बाद, रसूल, रहबर, रहनुमा और इमाम की हैसियत से सामना करना था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन तमाम समस्याओं के बारे में मदीना में पैग़म्बरों वाला किरदार और सरदारी की भूमिका निभाई और जो क़ौम रहमत, नर्मी या सख़्ती और कड़ाई की हक़दार थी, उसके साथ वही व्यवहार किया और इसमें कोई सन्देह नहीं कि रहमत और मुहब्बत का पहलू सख़्ती और कड़ाई पर छाया हुआ था, यहां तक कि कुछ ही वर्षों में पूरी बागडोर इस्लाम और मुसलमानों के हाथ में आ गई।

अगले पृष्ठों में इन्हीं बातों का विस्तृत विवेचन पाठकों के सामने लाया जाएगा।

पहला मरहला

नए समाज का गठन

हम बयान कर चुके हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीने में बनू नज्जार के यहां जुमा के दिन 12 रबीउल अव्वल सन् 01 हि० मुताबिक़ 27 सितंबर सन् 622 ई० को हज़रत अबू अय्यूब अंसारी के मकान के सामने उतरे थे और उसी वक़्त फ़रमाया था कि इनशाअल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) तो यहीं मंज़िल होगी। फिर आप हज़रत अबू अय्यूब अंसारी के घर मुंतक़िल हो गए थे।

मस्जिदे नबवी का निर्माण

इसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पहला क़दम यह था कि आपने मस्जिद नबवी की तामीर शुरू की और इसके लिए वही जगह चुनी, जहां आपकी ऊंटनी बैठी थी। उस ज़मीन के मालिक दो यतीम बच्चे थे। आपने उनसे यह ज़मीन क़ीमत देकर ख़रीदी और मस्जिद बनाने में ख़ुद भी शरीक हो गए। आप ईंट और पत्थर ढोते थे और साथ ही फ़रमाते जाते थे—

अल्लाहुम-म ला ऐ-श इल्ला ऐशल आख़िरः
फ़ग़्फ़िर लिल अंसारि वल मुहाजिरः

(ऐ अल्लाह! ज़िंदगी तो बस आख़िरत की ज़िंदगी है, पस अंसार और मुहाजिरों को बख़्श दे।)

यह भी फ़रमाते—

हाज़ल हिमालु ला हिमा-ल ख़ैब-र
हाज़ा अबर्रु रब्बिना व अतहरु

(यह बोझ ख़ैबर का बोझ नहीं है। यह हमारे पालनहार की क़सम ज़्यादा नेक और पाकीज़ा है।)

आपके इस तरीक़े से सहाबा किराम रज़ि० के जोश व ख़रोश और सरगर्मी में बड़ी बढ़ोत्तरी हो जाती थी, चुनांचे सहाबा किराम कहते थे—

लइन क़-अदना वन्नबीयु यामलु
ल-ज़ा-क मिन्नल अमलुल मुज़ल्ललु

(अगर हम बैठे रहें और नबी सल्ल० काम करें, तो हमारा यह काम गुमराही का काम होगा।)

उस ज़मीन में मुश्रिकों की कुछ क़ब्रें थीं। कुछ वीराना भी था। खजूर और ग़रक़द के कुछ पेड़ भी थे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुश्रिकों की क़ब्रें उखड़वा दीं, वीराना बराबर करा दिया और खजूरों और पेड़ों को काट कर क़िबले की ओर लगा दिया। (उस वक़्त क़िब्ला बैतुल मक़्दिस था) दरवाज़े के बाज़ू के दोनों पाए पत्थर के बनाए गए, दीवारें कच्ची ईंट और गारे से बनाई गई। छत पर खजूर की शाखाएं और पत्ते डलवा दिए गए और खजूर के तनों के खम्भे बना दिए गए। ज़मीन पर रेत और छोटी-छोटी कंकरियां (छर्रियां) बिछा दी गई। तीन दरवाज़े लगाए गए। क़िब्ले की दीवार से पिछली दीवार तक एक सौ हाथ लम्बाई थी, चौड़ाई भी उतनी या उससे कुछ कम थी। बुनियाद लगभग तीन हाथ गहरी थी।

आपने मस्जिद के बाज़ू में कुछ मकान भी बनाए, जिनकी दीवारें कच्ची ईंट की थीं, और छत खजूर की कड़ियां देकर खजूर की शाखा और पत्तों से बनाई गई थी। यही आपकी बीवियों के हुजरे (कोठरी) थे। इन हुजरों की तामीर पूरी हो जाने के बाद आप हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० के मकान से यहीं आ गए।[1]

मस्जिद सिर्फ़ नमाज़ अदा करने के लिए न थी, बल्कि यह एक युनिवर्सिटी थी, जिसमें मुसलमान इस्लामी शिक्षाओं और हिदायतों का सबक़ हासिल करते थे और एक महफ़िल थी, जिसमें मुद्दतों अज्ञानतापूर्ण संघर्षों और खिंचावों, नफ़रतों और आपसी लड़ाइयों से दो चार रहने वाले क़बीले के लोग अब मेल-मुहब्बत से मिल-जुलकर रह रहे थे, साथ ही यह एक सेंटर था, जहां से इस छोटी-सी स्टेट की सारी व्यवस्था चलाई जाती थी और विभिन्न प्रकार की मुहिमें भेजी जाती थीं। इसके अलावा इसकी हैसियत एक पार्लियामेंट की भी थी जिसमें मज्लिसे शूरा और प्रशासन की सभाएं हुआ करती थीं।

इन सबके साथ-साथ यह मस्जिद ही उन ग़रीब मुहाजिरों की एक अच्छी भली तायदाद का ठिकाना थी, जिनका वहां पर न कोई मकान था, न माल, न बीवी-बच्चे।

फिर हिजरत के शुरू के दिनों ही में अज़ान भी शुरू हुई। यह एक लाहूती नग़्मा (अलौकिक गीत) था जो हर दिन पांच बार फ़िज़ा में गूंजता था और जिससे पूरी दुनिया कांप उठती थी। इसमें हर दिन पांच बार एलान किया जाता था कि अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं, इस तरह अल्लाह की किब्रियाई (सर्वोच्च सत्ता)

---

1. सहीह बुख़ारी 1/71, 555, 560, ज़ादुल मआद, 2/96

को छोड़कर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाए हुए दीन को छोड़कर इस सृष्टि के भीतर हर किब्रियाई का निषेध होता था और इस दुनिया के अन्दर हर दीन का इंकार होता था। इस अज़ान को सपने के अन्दर देखने का शरफ़ एक बुज़ुर्ग सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन अब्द रब्बिही को हासिल हुआ, जिसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बाक़ी रखा। और उन्हीं से मिलता हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने सपना देखा था। पूरी घटना सुन्नत व सीरत की तमाम किताबों में मिलती है।[1]

मुसलमानों को भाई-भाई बनाया गया

जिस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मस्जिदे नबवी की तामीर का एहतिमाम फ़रमा कर आपसी जोड़ और मेल-मुहब्बत के एक सेंटर को वजूद बख़्शा, उसी तरह आपने इंसानी तारीख़ का एक और अति उज्ज्वल कारनामा अंजाम दिया, जिसे मुहाजिरों और अंसार के बीच मुवाख़ात (भाई-भाई बनाना) और भाईचारे का नाम दिया जाता है। इब्ने क़य्यिम लिखते हैं—

फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० के मकान में मुहाजिरों और अंसार के बीच भाईचारा कराया था। कुल नव्वे आदमी थे, आधे मुहाजिर और आधे अंसार। भाईचारे की बुनियाद थी कि ये एक दूसरे के ग़म में शरीक होंगे और मौत के बाद नसबी रिश्तेदारों के बजाए यही एक दूसरे के वारिस होंगे। विरासत का यह हुक्म बद्र की लड़ाई तक चला, फिर यह आयत आई कि—

'नसबी रिश्तेदार एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं।' (6 : 331)

तो अंसार और मुहाजिरों में आपसी विरासत का हुक्म ख़त्म कर दिया गया, लेकिन भाईचारे का क़ौल व क़रार बाक़ी रहा।

कहा जाता है कि आपने एक और भाईचारा कराया था, जो ख़ुद आपस में मुहाजिरों के बीच था, लेकिन पहली बात ही साबित है। यों ही मुहाजिर अपने आपसी इस्लामी भाईचारा, वतनी भाईचारा और रिश्ते और नातेदारी के भाईचारे की बुनियाद पर आपस में अब किसी भाईचारे के मुहताज न थे, जबकि मुहाजिर और अंसार का मामला इससे अलग था।[2]

---

1. तिर्मिज़ी, अस्सलातु बद-उल अज़ान, हदीस न० 189 (1/358, 359) अबू दाऊद, मुस्नद अहमद वग़ैरह।
2. ज़ादुल मआद 2/56

इस भाईचारे का मक़्सूद यह था कि अज्ञानतापूर्ण पक्षपात ख़त्म हो, स्वाभिमान जो कुछ हो, इस्लाम के लिए हो। नस्ल, रंग और वतन के भेदभाव समाप्त हो जाएं। दोस्ती और दुश्मनी की बुनियाद इंसानियत और तक़्वा के अलावा कुछ और न हो।

इस भाईचारे के साथ त्याग-भाव, सेवा-भाव, और प्रेम-भाव मिले-जुले पाए जा रहे थे और इसीलिए उसने इस नए समाज को बड़े अनोखे और बे-मिसाल कारनामों से भर दिया था।

चुनांचे सहीह बुख़ारी में रिवायत आती है कि मुहाजिर जब मदीना तशरीफ़ लाए, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु और साद बिन रबीअ रज़ियल्लाहु अन्हु के बीच भाईचारा करा दिया। इसके बाद हज़रत साद रज़ि० ने हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० से कहा—

'अंसार में मैं सबसे ज़्यादा मालदार हूं। आप मेरा माल दो हिस्सों में बांटकर (आधा ले लें) और मेरी दो बीवियां हैं। आप देख लें, जो ज़्यादा पसन्द हो, मुझे बता दें। मैं उसे तलाक़ दे दूं और इद्दत गुज़रने के बाद आप उससे शादी कर लें।'

हज़रत अब्दुर्रहमान ने कहा, 'अल्लाह आपके बीवी-बच्चों और माल में बरकत दे, आप लोगों का बाज़ार कहां है?'

लोगों ने उन्हें बनू क़ैनुक़ाअ का बाज़ार बतला दिया। वह वापस आए तो उनके पास कुछ फ़ायदे का पनीर और घी था। इसके बाद वह रोज़ाना जाते रहे। फिर एक दिन आए, तो उन पर पीलेपन का असर था।

नबी सल्ल० ने मालूम किया, यह क्या है?

उन्होंने कहा, मैंने शादी की है।

आपने फ़रमाया, औरत को मह्र कितना दिया है?

बोले, एक नवात (गुठली) सोना।[1] कहा जाता है कि उसकी क़ीमत उन दिनों पांच दिरहम थी और कहा जाता है कि चौथाई दीनार।

इसी तरह हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से एक रिवायत आई है कि अंसार ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया, 'आप हमारे बीच और हमारे भाइयों के बीच हमारे खजूर के बाग़ बांट दें।'

आपने फ़रमाया, नहीं।

अंसार ने कहा, तब आप लोग यानी मुहाजिर हमारा काम कर दिया करें और

1. सहीह बुख़ारी, बाब 'ईख़ाउन्नबी बैनलमुहाजिरीन वल अंसार' 1/553

हम फल में आप लोगों को शरीक रखेंगे।

उन्होंने कहा, ठीक है, हमने बात सुनी और मानी।[1]

इससे अन्दाज़ा किया जा सकता है कि अंसार ने किस तरह बढ़-चढ़कर अपने मुहाजिर भाइयों का सत्कार किया था और कितनी मुहब्बत, निष्ठा और त्याग से काम लिया था और मुहाजिर उनकी इन कृपाओं का कितना आदर करते थे। चुनांचे उन्होंने इसका कोई ग़लत फ़ायदा नहीं उठाया, बल्कि उनसे सिर्फ़ उतना ही हासिल किया जिससे वे अपनी टूटी हुई अर्थव्यवस्था की कमर सीधी कर सकते थे।

और सच तो यह है कि यह भाईचारा अपूर्व सूझ-बूझ, विवेकपूर्ण राजनीति और मुसलमानों की ढेर सारी समस्याओं का एक बेहतरीन हल था।

इस्लामी सहयोग का क़रार

उल्लिखित भाईचारे की तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक और वायदा-क़रार कराया, जिसके ज़रिए सारे अज्ञानतापूर्ण झगड़ों, क़बीलेवार संघर्षों की बुनियाद ढा दी और अज्ञानतापूर्ण युग के रस्म व रिवाज के लिए कोई गुंजाइश न छोड़ी। नीचे इस क़ौल व क़रार को उसकी धाराओं सहित थोड़े में पेश किया जा रहा है।

यह लेख है मुहम्मद नबी सल्ल० की ओर से कुरैशी, यसरिबी और उनके आधीन होकर उनके साथ जुड़े रहने और जिहाद करने वाले मोमिनों और मुसलमानों के बीच कि—

1. ये सब अपने मासिवा इंसानों से अलग एक उम्मत (समुदाय) हैं।

2. मुहाजिर कुरैश अपनी पिछली हालत के मुताबिक़ आपस में दियत अदा करेंगे और ईमान वालों के दर्मियान भले तरीक़े से और इंसाफ़ की बुनियादों पर अपने क़ैदी का फ़िदया अदा करेंगे और उनका हर गिरोह भले तरीक़े पर और ईमान वालों के दर्मियान इंसाफ़ के साथ अपने क़ैदी का फ़िदया अदा करेगा।

3. ईमान वाले अपने बीच किसी बेकस को फ़िदया या दियत के मामले में भले तरीक़े के मुताबिक़ लेन-देन से महरूम न रखेंगे।

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब इज़ा क़ा-ल इक्फ़िनी मऊनतल नख़्ल 1/312, फ़त्हुल बारी 4/337, हदीस न० 2049, साथ ही 2293, 3781, 3937, 5078, 5148, 5153, 5155, 5167, 6068, 6386, भाईचारे की घटना के लिए देखिए सहीह मुस्लिम हदीस न० 2529, सुनन अबी दाऊद हदीस न० 2529, अल-अदबुल मुफ़रद, हदीस न० 6083, मुस्नद अबी याला 4/366 वग़ैरह

4. सारे सच्चे ईमान वाले उस व्यक्ति के ख़िलाफ़ होंगे जो उन पर ज़्यादती करेगा, या ईमान वालों के दर्मियान ज़ुल्म और गुनाह और ज़्यादती और फ़साद के रास्ते को खोज रहा होगा।

5. इन सबके हाथ उस व्यक्ति के ख़िलाफ़ होंगे, चाहे वह उनमें से किसी का लड़का ही क्यों न हो।

6. कोई ईमान वाला किसी ईमान वाले को काफ़िर के बदले क़त्ल न करेगा।

7. किसी ईमान वाले के ख़िलाफ़ किसी काफ़िर की मदद न करेगा।

8. अल्लाह का ज़िम्मा (वचन) एक होगा और एक मामूली आदमी का दिया हुआ ज़िम्मा भी सारे मुसलमानों पर लागू होगा।

9. जो यहूदी हमारी पैरवी करने लगें, उनकी मदद की जाएगी और वे दूसरे मुसलमानों जैसे होंगे। न उन पर ज़ुल्म किया जाएगा और न उनके ख़िलाफ़ सहयोग किया जाएगा।

10. मुसलमानों का समझौता एक होगा। कोई मुसलमान किसी मुसलमान को छोड़कर अल्लाह के रास्ते में हो रहे युद्ध के सिलसिले में सुलह नहीं करेगा, बल्कि सबके सब बराबरी और न्याय के आधार पर कोई क़ौल व क़रार करेंगे।

11. मुसलमान उस ख़ून में एक दूसरे के बराबर होंगे, जिसे कोई अल्लाह के रास्ते में बहाएगा।

12. कोई मुश्रिक क़ुरैश की किसी जान या माल को पनाह नहीं दे सकता और न किसी मोमिन के आगे उसकी हिफ़ाज़त के लिए रुकावट बन सकता है।

13. जो आदमी किसी ईमान वाले को क़त्ल करेगा और सबूत मौजूद होगा, उससे क़सास (बदला) लिया जाएगा, सिवाए इस शक्ल के कि मक़्तूल का वली राज़ी हो जाए।

14. यह कि सारे ईमान वाले उसके ख़िलाफ़ होंगे। इनके लिए इसके सिवा कुछ हलाल न होगा कि उसके ख़िलाफ़ उठ खड़े हों।

15. किसी ईमान वाले के लिए हलाल न होगा कि किसी हंगामा बरपा करने वाले (या बिदअती) की मदद करे और उसे पनाह दे और जो उसकी मदद करेगा या उसे पनाह देगा, उस पर क़ियामत के दिन अल्लाह की लानत और उसका ग़ज़ब होगा और उसका फ़र्ज़ और नफ़्ल कुछ भी क़ुबूल न किया जाएगा।

16. तुम्हारे बीच जो भी मतभेद पैदा होगा, उसे अल्लाह और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर पलटाया जाएगा।[1]

---

1. इब्ने हिशाम 1/502-503

समाज का नया रूप

इस सूझ-बूझ, हिक्मत और इस दूरदर्शिता से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक नए समाज की बुनियादें मज़बूत कीं, लेकिन सच तो यह है कि समाज का प्रत्यक्ष रूप उन अप्रत्यक्ष शिक्षाओं के प्रभाव में था, जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संगति से सहाबा किराम की ज़िंदगियों में देखा जा सकता था।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हें संवारने-सजाने, उनकी शिक्षा-दीक्षा और उन्हें आदर्श चरित्र के अनुसार ढालने की बराबर कोशिशें करते रहते थे और उन्हें मुहब्बत, भाईचारा, इबादत व इताअत के आदाब बराबर सिखाते और बताते रहते थे।

एक सहाबी ने आपसे पूछा कि कौन-सा इस्लाम बेहतर है? (यानी इस्लाम में कौन-सा अमल बेहतर है?)

आपने फ़रमाया, तुम खाना खिलाओ और पहचान वाले और बे-पहचान वाले सबको सलाम करो।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए, तो मैं आपकी सेवा में हाज़िर हुआ। जब मैंने आपका मुबारक चेहरा देखा, तो अच्छी तरह समझ गया कि वह किसी झूठे आदमी का चेहरा नहीं हो सकता।

फिर आपने पहली बात जो इर्शाद फ़रमाई, वह यह थी, ऐ लोगो! सलाम फैलाओ, खाना खिलाओ, रिश्तों-नातों को जोड़ो और रात में जब लोग सो रहे हों, नमाज़ पढ़ो। जन्नत में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओगे।[2]

आप फ़रमाते थे, वह व्यक्ति जन्नत में दाख़िल न होगा, जिसका पड़ोसी, उसकी शरारतों और तबाहकारियों से बचा न रहे।[3]

और फ़रमाते थे, मुसलमान वह है जिसकी ज़ुबान और हाथ से मुसलमान बचे रहें[4].

और फ़रमाते थे, 'तुम में से कोई व्यक्ति ईमान वाला नहीं हो सकता, यहां तक

---

1. सहीह बुख़ारी 1/6, 9
2. तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, दारमी, मिश्कात 1/168
3. सहीह मुस्लिम, मिश्कात, 2/422
4. सहीह बुख़ारी 1/6

कि अपने भाई के लिए वही चीज़ पसन्द करे जो ख़ुद अपने लिए पसन्द करता है।[1]

और फ़रमाते थे, सारे ईमान वाले एक आदमी की तरह हैं कि अगर उसकी आंख में तक्लीफ़ हो तो सारे जिस्म को तक्लीफ़ महसूस होती है और अगर सर में तक्लीफ़ हो तो सारे जिस्म को तक्लीफ़ महसूस होती है।[2]

और फ़रमाते, मोमिन (ईमान वाला) मोमिन के लिए इमारत की तरह है, जिसका कुछ कुछ को ताक़त पहुंचाता है।[3]

और फ़रमाते, आपस में बुग़्ज़ न रखो, आपस में एक दूसरे से जलो नहीं, एक दूसरे से पीठ न फेरो और अल्लाह के बन्दे और भाई-भाई बनकर रहो। किसी मुसलमान के लिए हलाल नहीं है कि अपने भाई को तीन दिन से ऊपर छोड़े रहे।[4]

और फ़रमाते, मुसलमान मुसलमान का भाई है, न उस पर ज़ुल्म करे और न उसे दुश्मन के हवाले करे और जो व्यक्ति अपने भाई की ज़रूरत पूरी करने में लगा रहेगा, अल्लाह उसकी ज़रूरतें पूरी करेगा और जो व्यक्ति किसी मुसलमान से कोई ग़म और दुख दूर करेगा, अल्लाह उस व्यक्ति से क़ियामत के दिन के दुखों में से कोई दुख दूर करेगा और जो व्यक्ति किसी मुसलमान की परदापोशी करेगा, अल्लाह क़ियामत के दिन उसकी परदापोशी करेगा।[5]

और फ़रमाते, तुम लोग ज़मीन वालों पर मेहरबानी करो, तुम पर आसमान वाला मेहरबानी करेगा।[6]

और फ़रमाते, वह व्यक्ति मोमिन नहीं, जो ख़ुद पेट भरकर खा ले और उसके बग़ल में रहने वाला पड़ोसी भूखा रहे।[7]

और फ़रमाते, मुसलमान से गाली-गलोच करना फ़िस्क़ है और उससे मार-काट करना कुफ़्र है।[8]

इसी तरह आप रास्ते से तक्लीफ़ पहुंचाने वाली चीज़ हटाने को सदक़ा क़रार

---

1. सहीह बुख़ारी 1/6
2. मुस्लिम, मिश्कात 2/422
3. मुस्लिम, मिश्कात 2/422, सहीह बुख़ारी 2/890
4. सहीह बुख़ारी 2/896
5. बुख़ारी-मुस्लिम, मिश्कात 2/422
6. सुनने अबू दाऊद 2/335, जामेअ तिर्मिज़ी 2/14
7. शोबुल ईमान (बैहक़ी) मिश्कात 2/424
8. सहीह बुख़ारी 2/893,

देते थे, और इसे ईमान की शाखाओं में से एक शाखा गिना करते थे।[1]

साथ ही आप सदक़े और ख़ैरात पर उभारते थे, उसकी ऐसी-ऐसी बड़ाइयां बयान करते थे कि उसकी ओर दिल अपने आप खिंचते चले जाएं, चुनांचे आप फ़रमाते कि सदक़ा गुनाहों को ऐसे ही बुझा देता है, जैसे पानी आग को बुझाता है।[2]

और आप फ़रमाते कि-जो मुसलमान किसी नंगे मुसलमान को कपड़ा पहना दे, अल्लाह उसे जन्नत का हरा कपड़ा पहनाएगा और जो मुसलमान किसी भूखे मुसलमान को खाना खिला दे, अल्लाह उसे जन्नत के फल खिलाएगा और जो मुसलमान किसी प्यासे मुसलमान को पानी पिला दे, अल्लाह उसे जन्नत की मुहर लगी हुई शराबे तहूर पिलाएगा।[3]

आप फ़रमाते, आग से बचो, अगरचे खजूर का एक टुकड़ा ही सदक़ा करके और अगर वह भी न पाओ तो पाकीज़ा बोल ही के ज़रिए।[4]

और इसी के पहलू-ब-पहलू दूसरी ओर आप मांगने से परहेज़ की भी बहुत ज़्यादा ताकीद फ़रमाते, सब्र व क़नाअत की फ़ज़ीलतें सुनाते और सवाल करने को सवाल करने वाले के चेहरे के लिए नोच, खरोंच और घाव क़रार देते।[5] अलबत्ता उससे उस व्यक्ति को अपवाद क़रार दिया जो बहुत ज़्यादा मजबूर होकर सवाल करे।

इसी तरह आप यह भी बयान फ़रमाते कि किन इबादतों की क्या फ़ज़ीलतें हैं और अल्लाह के नज़दीक उनका क्या अज्र व सवाब है? फिर आप पर आसमान से जो वह्य आती, आप उससे मुसलमानों को बड़ी मज़बूती से जोड़े रखते। आप वह वह्य मुसलमानों को पढ़कर सुनाते और मुसलमान आपको पढ़कर सुनाते, ताकि इस अमल से उनके अन्दर सूझ-बूझ के अलावा दावत का हक़ और पैग़म्बराना ज़िम्मेदारियों का शऊर भी पैदा हो।

इस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों के अन्दर को झिंझोड़ा, उनकी ख़ुदा की बख़्शी सलाहियतों को तरक़्क़ी दी और उन्हें उच्चतम मूल्यों का और चरित्र का मालिक बनाया, यहां तक कि वे नबियों की

---

1. इस विषय की हदीसें बुख़ारी-मुस्लिम में रिवायत की गई हैं, मिश्कात 1/12, 167
2. अहमद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, मिश्कात, 1/14
3. सुनने अबू दाऊद, जामेअ तिर्मिज़ी, मिश्कात 1/169
4. सहीह बुख़ारी 1/190, 2/890
5. देखिए अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसई, इब्ने माजा, दारमी, मिश्कात 1/163

तारीख़ में नबियों के बाद फ़ज़्ल व कमाल की सबसे ऊंची चोटी का नमूना बन गए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जिस व्यक्ति को तरीक़ा अख़्तियार करना हो, वह गुज़रे हुए लोगों का तरीक़ा अख़्तियार करे, क्योंकि ज़िंदा के बारे में फ़ित्ने का अंदेशा है। वे लोग नबी के साथी थे, इस उम्मत में सबसे अफ़ज़ल, सबसे नेकदिल, सबसे गहरे इल्म के मालिक और सबसे ज़्यादा बे-तकल्लुफ़। अल्लाह ने उन्हें अपने नबी का साथी बनने और अपने दीन के क़ायम करने के लिए चुना, इसलिए उनका फ़ज़्ल पहचानो और उनके पदचिह्नों पर चलो और जितना मुम्किन हो उनके चरित्र और आचरण से चिमटे रहो, क्योंकि वे लोग हिदायत के सीधे रास्ते पर थे?[1]

फिर हमारे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद भी ऐसे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष गुणों, कमालों, अल्लाह की दी हुई क्षमताओं, बड़ाइयों और चरित्र और आचरण के आदर्श को पहुंचे हुए थे कि दिल अपने आप आपकी ओर खिंचे जाते थे और जानें क़ुर्बान हुआ चाहती थीं, चुनांचे आपकी ज़ुबान से ज्योंही कोई शब्द निकलता, सहाबा किराम उसे पूरा करने के लिए दौड़ पड़ते और हिदायत व रहनुमाई की जो बात आप इर्शाद फ़रमाते, उसे दिल में बिठाने के लिए, गोया एक दूसरे से आगे निकलने की बाज़ी लग जाती।

इस तरह की कोशिशों से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसे समाज के गठन में कामियाब हो गए, जो इतिहास का सबसे ज़्यादा कमाल वाला और शरफ़ से भरा-पुरा समाज था और उस समाज की समस्याओं का ऐसा सुन्दर हल निकाला कि मानवता ने एक लम्बे समय तक ज़माने की चक्की में पिसने और अथाह अंधियारियों में हाथ-पांव मारकर थक जाने के बाद पहली बार चैन की सांस ली।

इस नए समाज के तत्व ऐसी उच्च और श्रेष्ठ शिक्षाओं द्वारा निखरे-संवरे और पूरे हुए, जिसने पूरी हिम्मत और बहादुरी के साथ ज़माने के हर झटके का मुक़ाबला करके उसका रुख़ फेर दिया और इतिहास की धारा बदल दी।

---

1. रज़ीन, मिश्कात 1/32

यहूदियों के साथ समझौता

नबी सल्ल० ने हिजरत के बाद जब मुसलमानों के बीच अक़ीदे, सियासत और व्यवस्था की इकाई के ज़रिए एक नए इस्लामी समाज की बुनियादें मज़बूत कर ली, तो ग़ैर-मुस्लिमों के साथ अपने ताल्लुक़ात ठीक करने की ओर तवज्जोह फ़रमाई।

आपका मक़्सूद यह था कि सारी इंसानियत को अम्न व सलामती, सुख-शान्ति मिले और इसके साथ ही मदीना और उसके पास-पड़ोस का इलाक़ा एक संघीय इकाई में संगठित हो जाए। चुनांचे आपने उदारता और विशालहृदयता के एक नियम बनाए, जिनको इस तास्सुब और अतिवाद से भरी दुनिया में कोई सोच भी नहीं सकता था।

जैसा कि हम बता चुके हैं, मदीने के सबसे क़रीबी पड़ोसी यहूदी थे। ये लोग अगरचे पीठ पीछे मुसलमानों से दुश्मनी रखते थे, लेकिन उन्होंने अब तक किसी मोर्चाबन्दी और झगड़े को ज़ाहिर नहीं किया था, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके साथ एक समझौता किया, जिसमें उन्हें दीन व मज़हब और जान व माल क़ी बिल्कुल आज़ादी दी गई थी और देश निकाला, जायदाद की ज़ब्ती या झगड़े की सियासत की कोई दिशा तै नहीं की गई थी।

यह समझौता इसी समझौते की रोशनी में हुआ था, जो ख़ुद मुसलमानों के बीच आपस में तै पाया था, और जिसका उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। आगे इस समझौते की अहम धाराएं पेश की जा रही है।

समझौते की धाराएं

1. बनू औफ़ के यहूदी मुसलमानों के साथ मिलकर एक ही उम्मत होंगे। यहूदी अपने दीन पर अमल करेंगे और मुसलमान अपने दीन पर। ख़ुद उनका भी यही हक़ होगा, और उनके ग़ुलामों और मुताल्लिक़ लोगों का भी और बनू औफ़ के अलावा दूसरे यहूदियों के भी यही हक़ होंगे।

2. यहूदी अपने ख़र्चे के ज़िम्मेदार होंगे और मुसलमान अपने ख़र्चों के।

3. और जो ताक़त इस समझौते के किसी फ़रीक़ से लड़ाई करेगी, सब उसके ख़िलाफ़ आपस में सहायता करेंगे।

4. और इस समझौते में शरीक गिरोहों के आपसी ताल्लुक़ एक दूसरे का हित चाहने, भलाई करने और फ़ायदा पहुंचाने की बुनियाद पर होंगे, गुनाह पर नहीं।

5. कोई आदमी अपने मित्र की वजह से अपराधी न ठहराया जाएगा।

6. मज़्लूम की मदद की जाएगी।

7. जब तक लड़ाई चलती रहेगी, यहूदी भी मुसलमानों के बीच ख़र्च सहन करेंगे।

8. इस समझौते के तमाम शरीक लोगों पर मदीने में हंगामा करना और क़त्ल का ख़ून हराम होगा।

9. इस समझौते के फ़रीक़ों में कोई नई बात या झगड़ा पैदा हो जाए, जिसमें फ़साद का डर हो, तो इसका फ़ैसला अल्लाह और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाएंगे।

10. क़ुरैश और उसके मददगारों को पनाह नहीं दी जाएगी।

11. जो कोई यसरिब पर धावा बोल दे, उससे लड़ने के लिए सब आपस में सहयोग करेंगे और हर फ़रीक़ अपने-अपने लोगों की रक्षा करेगा।

12. यह समझौता किसी ज़ालिम या मुजरिम के लिए आड़ न बनेगा।[1]

इस समझौते के हो जाने से मदीना और उसके पास-पड़ोस में एक संघीय सरकार बन गई, जिसकी राजधानी मदीना थी और जिसके प्रमुख अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे और जिसमें लागू कलिमा और ग़ालिब हुक्मरानी मुसलमानों की थी और इस तरह मदीना सच में इस्लाम की राजधानी बन गया।

सुख-शान्ति के क्षेत्र को और ज़्यादा फैलाव देने के लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आगे दूसरे क़बीलों से भी हालात के मुताबिक़ इसी तरह के समझौते किए, जिसमें से कुछ का उल्लेख आगे किया जाएगा।

---

1. देखिए इब्ने हिशाम 1/503-504

सशस्त्र संघर्ष

हिजरत के बाद मुसलमानों के ख़िलाफ़ क़ुरैश की चालें और अब्दुल्लाह बिन उबई से पत्र-व्यवहार

पिछले पृष्ठों में बताया जा चुका है कि मक्का के काफ़िरों ने मुसलमानों पर कैसे-कैसे ज़ुल्म व सितम के पहाड़ तोड़े थे और जब मुसलमानों ने हिजरत शुरू की तो उनके ख़िलाफ़ कैसी-कैसी कार्रवाइयां की थीं, जिनकी बुनियाद पर वे हक़दार हो चुके थे कि उनके माल ज़ब्त कर लिए जाएं और उन पर हल्ला बोल दिया जाए। पर अब भी उनकी मूर्खताओं का सिलसिला बन्द न हुआ और वे अपनी चालों के चलने से रुके नहीं, बल्कि यह देखकर जोशे ग़ज़ब और भड़क उठा कि मुसलमान उनकी पकड़ से बच निकले हैं और उन्हें मदीने में एक शान्तिपूर्ण जगह मिल गई है। चुनांचे उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उबई को, जो अभी तक खुल्लम खुल्ला मुश्रिक था, उसकी इस हैसियत की वजह से धमकी भरा एक पत्र लिखा कि वह अंसार का सरदार है, क्योंकि अंसार उसकी सरदारी पर सहमत हो चुके थे और अगर इसी बीच अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तशरीफ़ लाना न हुआ होता तो उसको अपना बादशाह भी बना लिए होते।

मुश्रिकों ने अपने इस पत्र में अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके मुश्रिक साथियों को खिताब करते हुए दो टोक शब्दों में लिखा—

'आप लोगों ने हमारे साहब (आदमी) को पनाह दे रखी है, इसलिए हम अल्लाह की क़सम खाकर कहते हैं कि या तो आप लोग उससे लड़ाई कीजिए या उसे निकाल दीजिए या फिर हम अपने पूरे जत्थ के साथ आप लोगों पर धावा बोलकर आपके सारे लड़ने वालों को क़त्ल कर देंगे और आपकी औरतों की आबरू मिट्टी में मिला देंगे।'[1]

इस पत्र के पहुंचते ही अब्दुल्लाह बिन उबई मक्के के अपने उन मुश्रिक भाइयों के हुक्म के पूरा करने के लिए उठ खड़ा हुआ, इसलिए कि वह पहले ही से नबी सल्ल० के ख़िलाफ़ रंज और कीना लिए बैठा था, क्योंकि उसके मन में यह बात बैठी थी, कि आप ही ने उसकी बादशाही छीनी है।

चुनांचे अब्दुर्रहमान बिन औफ़ कहते हैं कि जब यह पत्र अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके बुतपरस्त साथियों को मिला, तो वे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

1. अबू दाऊद, बाब ख़बरुन्नज़ीर,

व सल्लम से लड़ने के लिए जमा हो गए। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसकी ख़बर हुई तो आप उनके पास तशरीफ़ ले गए। और फ़रमाया—

'क़ुरैश की धमकी तुम लोगों पर बहुत गहरा असर कर गई है। तुम ख़ुद अपने आपको जितना नुक़्सान पहुंचा देना चाहते हो, क़ुरैश इससे ज़्यादा नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते थे। तुम अपने बेटों और भाइयों से ख़ुद ही लड़ना चाहते हो?'

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह बात सुनकर लोग बिखर गए।[1]

उस वक़्त तो अब्दुल्लाह बिन उबई लड़ाई के इरादे से बाज़ आ गया, क्योंकि उसके साथी ढीले पड़ गए थे या उनकी समझ में बात आ गई थी, लेकिन मालूम होता है कि क़ुरैश के साथ उसके सम्बन्ध छिप-छिपकर क़ायम रहे, क्योंकि मुसलमानों और मुश्रिकों के बीच शरारतों और फ़सादों का कोई मौक़ा वह हाथ से जाने न देना चाहता था। फिर उसने अपने साथ यहूदियों को भी गांठ रखा था, ताकि इस मामले में उनसे भी मदद हासिल करे, लेकिन वह तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिक्मत थी जो रह-रहकर शरारत और बिगाड़ की भड़कने वाली आग को बुझा दिया करती थी।[2]

मुसलमानों पर मस्जिदे हराम का दरवाज़ा बन्द किए जाने का एलान

इसके बाद हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु उमरा के लिए मक्का गए और उमैया बिन ख़ल्फ़ के मेहमान हुए। उन्होंने उमैया से कहा—

'मेरे लिए कोई तंहाई का वक़्त रखो, ज़रा मैं बैतुल्लाह का तवाफ़ कर लूं।'

उमैया दोपहर के क़रीब उन्हें लेकर निकला, तो अबू जह्ल से मुलाक़ात हो गई। उसने (उमैया को ख़िताब करके) कहा—

अबू सफ़वान! तुम्हारे साथ यह कौन है?'

उमैया ने कहा, यह साद हैं।

अबू जह्ल ने साद को ख़िताब करके कहा, अच्छा, मैं देख रहा हूं कि तुम बड़े अम्न और इत्मीनान से तवाफ़ कर रहे हो, हालांकि तुम लोगों ने बे-दीनों को पनाह दे रखी है और यह ख़्याल रखते हो कि उनकी मदद भी करोगे। सुनो, ख़ुदा की क़सम! अगर तुम अबू सफ़वान के साथ न होते, तो अपने घर सलामत पलटकर न जा सकते थे।

---

1. अबू दाऊद, वही बाब
2. इस मामले में देखिए सहीह बुख़ारी 2/655, 656, 916, 924

इस पर हज़रत साद रज़ि० ने ऊंची आवाज़ से कहा, सुन, ख़ुदा की क़सम! अगर तूने मुझको इससे रोका, तो मैं तुझे ऐसी चीज़ से रोक दूंगा, जो तुझ पर इससे भी ज़्यादा भारी होगी यानी मदीना वालों के पास से गुज़रने वाला तेरा (कारोबारी) रास्ता।[1]

मुहाजिरों को क़ुरैश की धमकी

ऐसा लगता है कि कुरैश इससे अधिक दुष्टताई और झगड़े का इरादा किए बैठे थे और ख़ुद मुसलमानों, मुख्य रूप से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की समाप्ति का उपाय सोच रहे थे और यह सिर्फ़ सोच और विचार न था, बल्कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इतने ताकीदी तरीक़े पर क़ुरैश की चालों और बुरे इरादों की जानकारी हो चुकी थी कि आप या तो जागकर रात गुज़ारते थे या सहाबा किराम के पहरे में सोते थे।

चुनांचे सहीह बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत किया गया है कि मदीना आने के बाद एक रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जाग रहे थे कि फ़रमाया, काश! आज रात मेरे सहाबा में से कोई भला आदमी मेरे यहां पहरा देता। अभी हम इसी हालत में थे कि हमें हथियार की झंकार सुनाई पड़ी।

आपने फ़रमाया, कौन है?

जवाब आया, साद बिन अबी वक़्क़ास।

फ़रमाया, कैसे आना हुआ?

बोले, मेरे दिल में आपके बारे में ख़तरे का अंदेशा हुआ, तो मैं आपके यहां पहरा देने आ गया।

इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें दुआ दी, फिर सो गए।[2]

यह भी याद रहे कि पहरे की यह व्यवस्था कुछ रातों के लिए ख़ास न थी, बल्कि बराबर रहती थी। चुनांचे हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रात को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए पहरा दिया जाता था, यहां तक कि यह आयत उतरी—

---

1. बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, 2/563
2. सहीह बुख़ारी, बाबुल हिरासति फ़िल ग़ज़लि फ़ी सबी लिल्लाहि 1/404 मुस्लिम बाब फ़ज़्लु साद बन अबी वक़्क़ास 2/180

'अल्लाह आपको लोगों से सुरक्षित रखेगा।'

तब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुब्बे से सर निकाला और फ़रमाया—

'लोगो ! वापस जाओ, अल्लाह ने मुझे सुरक्षित कर दिया है।[1]

फिर यह ख़तरा सिर्फ़ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात तक सीमित न था, बल्कि सारे ही मुसलमानों को था।

चुनांचे हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके साथी मदीना तशरीफ़ ले गए और अंसार ने उन्हें अपने यहां पनाह दी, तो सारे अरब ने उन्हें एक कमान से मारा। चुनांचे ये लोग न हथियार के बग़ैर रात गुज़ारते थे और न हथियार के बग़ैर सुबह करते थे।

लड़ाई की इजाज़त

ऐसे ख़तरों से भरे हालात में जो मदीना में मुसलमानों के वजूद के लिए चुनौती बने हुए थे और जिनसे साफ़ था कि क़ुरैश किसी तरह होश के नाख़ून लेने और अपनी सरकशी से बाज़ आने के लिए तैयार नहीं, अल्लाह ने मुसलमानों को लड़ाई की इजाज़त दे दी, लेकिन इसे फ़र्ज़ नहीं क़रार दिया। इस मौक़े पर अल्लाह का जो इर्शाद आया, वह यह था—

'जिन लोगों से लड़ाई लड़ी जा रही है, उन्हें भी लड़ाई की इजाज़त दी गई, क्योंकि वे मज़्लूम हैं और यक़ीनन अल्लाह उनकी मदद की क़ुदरत रखता है।'

फिर इस आयत के साथ कुछ और आयतें भी उतरीं, जिनमें बताया गया कि यह इजाज़त सिर्फ़ लड़ाई बराए लड़ाई नहीं है, बल्कि इससे मक़्सूद बातिल (असत्य) का अन्त और अल्लाह की पहचान का क़ायम करना है, चुनांचे आगे चलकर इर्शाद हुआ—

'जिन्हें हम अगर ज़मीन में सत्ता दे दें, तो वे नमाज़ क़ायम करेंगे, ज़कात अदा करेंगे, भलाई का हुक्म देंगे और बुराई से रोकेंगे।' (22 : 41)

लड़ाई की यह इजाज़त पहले पहल क़ुरैश तक सीमित थी। फिर हालात बदलने के साथ इसमें भी तब्दीली आई। चुनांचे आगे चलकर यह इजाज़त अनिवार्यता में बदल गई और क़ुरैश से आगे बढ़कर ग़ैर-क़ुरैश को भी शामिल हो गई। उचित होगा कि घटनाओं के उल्लेख से पहले इसके अलग-अलग

---

1. जामेअ तिर्मिज़ी, अबवाबुत्तफ़्सीर 2/130

मरहलों को संक्षेप में प्रस्तुत कर दिया जाए।

(1) **पहला मरहला** : क़ुरैश को युद्ध का आरंभ करने वाला समझा गया, क्योंकि उन्होंने ज़ुल्म की शुरुआत की थी, इसलिए मुसलमानों का हक़ पहुंचता था कि उनसे लड़ें और उनके माल ज़ब्त कर लें, लेकिन अरब के दूसरे मुश्रिकों के साथ यह बात सही न थी।

(2) **दूसरा मरहला** : ग़ैर-क़ुरैश में से हर वह फ़रीक़ जिसने क़ुरैश का साथ दिया और उससे हाथ मिलाया या जिसने स्वतः मुसलमानों पर ज़ुल्म किया, उनसे लड़ना।

(3) **तीसरा मरहला** : जिन यहूदियों के साथ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अह्द व पैमान था, मगर उन्होंने ख़ियानत की और मुश्रिकों का साथ दिया, ऐसे यहूदियों के अह्द व पैमान को उनके मुंह पर दे मार दिया जाए और उनसे लड़ाई लड़ी जाए।

(4) **चौथा मरहला** : अह्ले किताब, जैसे ईसाइयों में से, जिन्होंने मुसलमानों के साथ दुश्मनी की शुरुआत की और मुक़ाबले में आ गए, उनसे लड़ा जाए, यहां तक कि वे छोटे बनकर अपने हाथों जिज़या अदा करें।

(5) **पांचवां मरहला** : जो इस्लाम में दाख़िल हो जाए उससे हाथ रोक लेना, भले ही वह मुश्रिक रहा हो, या यहूदी या ईसाई या कुछ और। अब उसके जान या माल से इस्लाम के हक़ के मुताबिक़ ही छेड़ की जा सकती है और उसका हिसाब अल्लाह पर है।

लड़ाई की इजाज़त मिली तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह तदबीर मुनासिब समझी कि अपने ग़लबे का दायरा क़ुरैश के उस कारोबारी राजमार्ग तक फैला दें जो मक्का से शाम तक आती जाती है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ग़लबे के इस फैलाव के लिए दो योजनाएं बनाई—

1. एक, जो क़बीले इस राजमार्ग के चारों ओर या इस राजमार्ग से मदीना तक के बीच के इलाक़े में आबाद थे, उनके साथ दोस्ती और सहयोग और लड़ाई न करने का समझौता। चुनांचे इसी तरह का एक समझौता आपने जुहैना के साथ किया। उनकी आबादी मदीने से तीन मरहले पर, यानी 45-50 मील की दूरी पर, वाक़े थी। इसके अलावा मुहिम के दौरान भी आपने कई समझौते किए, जिनका उल्लेख आगे किया जाएगा।

2. दूसरी योजना यह थी कि उस रास्ते पर लगातार फ़ौजी मुहिमें रवाना की जाएं।

सरीया और ग़ज़वे[1] (झड़पें और लड़ाइयां)

लड़ाई की इजाज़त मिल जाने के बाद इन दोनों योजनाओं को लागू करने के लिए मुसलमानों की फ़ौजी मुहिमों का सिलसिला अमली तौर पर शुरू हुआ। जांच-पड़ताल के लिए फ़ौजी दस्ते गश्त करने लगे। इसका मक़्सूद वही था जिसकी ओर इशारा किया जा चुका है—

- मदीने के पास-पड़ोस के रास्तों पर आमतौर से और मक्का के रास्ते पर ख़ास तौर से नज़र रखी जाए और उसके हालात का पता लगाया जाता रहे
- इन रास्तों पर वाक़े क़बीलों से समझौते किए जाएं
- यसरिब के मुश्रिकों, यहूदियों और आस-पास के बद्दुओं को यह एहसास दिलाया जाए कि मुसलमान ताक़तवर हैं और अब उन्हें अपनी पुरानी कमज़ोरी से निजात मिल चुकी है,

क़ुरैश को उनके बेजा ग़ुस्से और बदले की भावना के ख़तरनाक नतीजे से डराया जाए, ताकि जिस मूर्खता की दलदल में अब तक धंसते चले जा रहे हैं, उससे निकल कर होश में आएं और अपनी अर्थव्यवस्था और आर्थिक साधनों को ख़तरे में देखकर समझौते की ओर झुक जाएं और मुसलमानों के घरों में घुसकर उन्हें ख़त्म करने का जो संकल्प लिया है और अल्लाह की राह में जो रुकावटें खड़ी कर रहे हैं और मक्के के कमज़ोर मुसलमानों पर जो ज़ुल्म व सितम ढा रहे हैं, इन सबसे बाज़ आ जाएं और मुसलमान अरब प्रायद्वीप में अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाने के लिए आज़ाद हो जाएं।

इन झड़पों और लड़ाइयों के संक्षिप्त हालात नीचे दिए जा रहे हैं।

1. सरीया सीफ़ुल बह्र[2]—रमज़ान सन् 01 हि० मुताबिक़ मार्च सन् 623 ई०

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु को इस सरीया (झड़प) का अमीर बनाया और तीस मुहाजिरों को उनकी कमान में देकर शाम से आने वाले एक क़ुरैशी क़ाफ़िले

---

1. सीरत की परिभाषा में ग़ज़वा (लड़ाई) उस फ़ौजी मुहिम को कहते हैं जिसमें नबी सल्ल० स्वतः तशरीफ़ ले गए हों, चाहे लड़ाई हुई हो या न हुई हो और सरीया (झड़पें) वह फ़ौजी मुहिम है जिसमें आप ख़ुद तशरीफ़ न ले गए हों।
2. यानी समुद्र-तट

का पता लगाने के लिए रवाना फ़रमाया। इस क़ाफ़िले में तीन सौ आदमी थे, जिनमें अबू जह्ल भी था।

मुसलमान ईस[1] के आस-पास समुद्र तट पर पहुंचे तो क़ाफ़िले का सामना हो गया और दोनों फ़रीक़ लड़ाई के लिए तैयार हो गए, लेकिन क़बीला जुहैना के सरदार मज्दी बिन अम्र ने, जो दोनों फ़रीक़ का मित्र था, दौड़-धूप करके लड़ाई न होने दी।

हज़रत हमज़ा रज़ि० का यह झंडा पहला झंडा था, जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने मुबारक हाथों से बांधा था। इसका रंग सफ़ेद था और इसके झंडाबरदार हज़रत अबू मुरसद कनाज़ बिन हुसैन ग़नवी रज़ियल्लाहु अन्हु थे।

2. सरीया राबिग़-शव्वाल 01 हि०, अप्रैल सन् 623 ई०

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उबैदा बिन हारिस बिन मुत्तलिब को मुहाजिरों के साथ सवारों की टुकड़ी देकर रवाना फ़रमाया। राबिग़ की घाटी में अबू सुफ़ियान का सामना हुआ। उसके साथ दो सौ आदमी थे। दोनों फ़रीक़ों ने एक-दूसरे पर तीर चलाए, लेकिन इससे आगे कोई लड़ाई न हुई।

इस झड़प में मक्की फ़ौज के दो आदमी मुसलमानों से आ मिले—

एक हज़रत मिक़्दाद बिन अम्र बहरानी, और

दूसरे उत्बा बिन ग़ज़वान अल माज़नी रज़ियल्लाहु अन्हुमा।

ये दोनों मुसलमान थे और कुफ़्फ़ार के साथ निकले ही इस मक़्सद से थे कि इस तरह मुसलमानों से जा मिलेंगे।

हज़रत अबू उबैदा का झंडा सफ़ेद था और झंडाबरदार हज़रत मिस्तह बिन असासा बिन मुत्तलिब बिन अब्दे मुनाफ़ थे।

3. सरीया ख़र्रार[2], ज़ीक़ादा सन् 01 हि०, मई 623 ई०

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस सरीया का अमीर साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० को मुक़र्रर फ़रमाया और उन्हें बीस आदमियों की कमान देकर क़ुरैश के एक क़ाफ़िले का पता लगाने के लिए रवाना फ़रमाया और यह ताकीद फ़रमा दी कि ख़र्रार से आगे न बढ़ें।

---

1. लाल सागर के पड़ोस में यम्बुअ और मर्वः के बीच एक जगह है।
2. जोहफ़ा के क़रीब एक जगह का नाम है।

ये लोग पैदल रवाना हुए। रात को सफ़र करते और दिन में छिपे रहते थे। पांचवें दिन सुबह ख़र्रार पहुंचे तो मालूम हुआ कि क़ाफ़िला एक दिन पहले जा चुका है।

इस सरीए का झंडा सफ़ेद था और झंडा बरदार हज़रत मिक़्दाद बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु थे।

4. ग़ज़वा अबवा या वद्दान[1], सफ़र 02 हि०, अगस्त सन् 623 ई०

इस मुहिम में सत्तर मुहाजिरों के साथ अल्लाह के रसूल स्वतः भी गए थे और मदीने में हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० को अपना स्थानापन्न नियुक्त कर दिया था। मुहिम का मक़्सद क़ुरैश के एक क़ाफ़िले की राह रोकना था। आप वद्दान तक पहुंचे, लेकिन कोई मामला पेश न आया।

इसी लड़ाई में आपने बनू ज़मरा के उस वक़्त के सरदार अम्र बिन मख़्शी ज़मरी से मैत्रीपूर्ण समझौता किया, समझौता इस तरह था—

'यह बनू ज़मरा के लिए मुहम्मद रसूलुल्लाह का लेख है। ये लोग अपनी जान और माल के बारे में सुरक्षित रहेंगे और जो इन पर धावा करेगा, उसके ख़िलाफ़ उनकी मदद की जाएगी, अलावा इसके कि ये ख़ुद अल्लाह के दीन के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ें। (यह समझौता उस वक़्त तक के लिए है) जब तक समुद्र ऊन को तर करे। (यानी हमेशा के लिए है) और जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी मदद के लिए उन्हें आवाज़ देंगे, तो उन्हें आना होगा।'[2]

यह पहली फ़ौजी मुहिम थी, जिसमें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वतः शरीक हुए थे और पन्द्रह दिन मदीने से बाहर रहकर वापस आए। इस मुहिम के झंडे का रंग उजला था और हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु झंडाबरदार थे।

5. ग़ज़वा बुवात, रबीउल अव्वल सन् 02 हि०, सितम्बर 623 ई०

इस मुहिम में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दो सौ सहाबा को साथ लेकर रवाना हुए। मक़्सूद क़ुरैश का एक क़ाफ़िला था, जिसमें उमैया बिन

---

1. वद्दान मक्का और मदीना के बीच एक जगह का नाम है। यह राबिग़ से मदीना जाते हुए 29 मील की दूरी पर पड़ता है। अबवा वद्दान के क़रीब ही एक दूसरी जगह का नाम है।
2. अल-मवाहिबुल लदं निया 1/75 मय शरह ज़रक़ानी

ख़ल्फ़ सहित क़ुरैश के एक सौ आदमी और ढाई हज़ार ऊंट थे। आप रिज़्वा से क़रीबी जगह बुवात[1] तक तशरीफ़ ले गए, लेकिन कोई मामला पेश न आया।

इस लड़ाई के दौरान हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीने का अमीर बनाया गया था। झंडा सफ़ेद था और झंडा बरदार हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु थे।

6. ग़ज़वा सफ़वान, रबीउल अव्वल 02 हि०, सितम्बर 623 ई०

इस ग़ज़वा की वजह यह थी कि कर्ज़ बिन जाबिर फ़हरी ने मुश्रिकों की एक छोटी-सी सेना के साथ मदीने की चरागाह पर छापा मारा और कुछ मवेशी लूट लिए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सत्तर सहाबा के साथ उसका पीछा किया और बद्र के पड़ोस में स्थित सफ़वान घाटी तक तशरीफ़ ले गए, लेकिन कर्ज़ और उसके साथियों को न पा सके और किसी टकराव के बिना वापस आ गए। इस ग़ज़वे को कुछ लोग 'पहली बद्र की लड़ाई' भी कहते हैं।

इस ग़ज़वे के दौरान मदीने का अमीर ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को बनाया गया था। झंडा सफ़ेद था और झंडा बरदार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु थे।

7. ग़ज़वा ज़ुल उशैरा, जुमादल ऊला व जुमादल आख़र 02 हि०, नवम्बर, दिसम्बर 623 ई०

इस मुहिम में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ डेढ़ या दो सौ मुहाजिर थे, लेकिन आपने किसी को चलने पर मजबूर नहीं किया था। सवारी के लिए सिर्फ़ तीस ऊंट थे, इसलिए लोग बारी-बारी सवार होते थे। निशाने पर क़ुरैश का एक क़ाफ़िला था जो शाम देश जा रहा था और मालूम हुआ था कि यह मक्के से चल चुका है। इस क़ाफ़िले में क़ुरैश का ख़ासा माल था। आप उसकी तलाश में ज़ुल उशैरा[2] तक पहुंचे। लेकिन आपके पहुंचने से कई दिन पहले ही क़ाफ़िला जा चुका था।

यह वही क़ाफ़िला है जिसे शाम से वापसी पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने गिरफ़्तार करना चाहा, तो यह क़ाफ़िला तो बच निकला, लेकिन बद्र की लड़ाई हो गई।

---

1. बुवात और रिज़्वा कोहिस्तान जुहैना के सिलसिले के दो पहाड़ हैं जो सच तो यह है कि एक ही पहाड़ की दो शाखाएं हैं। यह मक्का से शाम जाने वाले राजमार्ग से मिला हुआ है और मदीना से 48 मील की दूरी पर है।
2. इसे उसैरा भी कहते हैं। यम्बूअ के पड़ोस में एक जगह है।

इस मुहिम पर इब्ने इस्हाक़ के अनुसार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जुमादल ऊला के अन्त में रवाना हुए और जुमादल उख़रा में वापस आए। शायद यही वजह है कि इस ग़ज़वे के महीने के तै करने में सीरत लिखने वालों में मतभेद हो गया है।

इस ग़ज़वे में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू मुदलिज और उनके मित्र बनू ज़मरा से लड़ाई न करने का समझौता किया।

सफ़र के दिनों में मदीने के नेतृत्व का काम हज़रत अबू सलमा बिन असद मख़्ज़ूमी रज़ि० ने अंजाम दिया। इस बार भी झंडा सफ़ेद था और झंडा बरदारी हज़रत हमज़ा फ़रमा रहे थे।

8. सरीया नख़्ला, रजब 02 हि०, जनवरी 624 ई०

इस मुहिम पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु के नेतृत्व में बारह मुहाजिरों की एक टुकड़ी रवाना फ़रमाई। हर दो आदमी के लिए एक ऊंट था, जिस पर बारी-बारी दोनों सवार होते थे।

टुकड़ी के अमीर को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक लेख लिख दिया था और हिदायत फ़रमाई थी कि दो दिन सफ़र कर लेने के बाद ही इसे देखेंगे। चुनांचे दो दिन के बाद हज़रत अब्दुल्लाह ने लेख देखा, तो उसमें यह लिखा था—

'जब तुम मेरा यह लेख देखो तो आगे बढ़ते जाओ, यहां तक कि मक्का और ताइफ़ के बीच नख़्ला में उतरो और वहां क़ुरैश के एक क़ाफ़िले की घात में लग जाओ और हमारे लिए उसकी ख़बरों का पता लगाओ।'

उन्होंने सुना और बात मान ली और अपने साथियों को इसकी ख़बर देते हुए फ़रमाया कि मैं किसी पर ज़बरदस्ती नहीं करता, जिसे शहादत से मुहब्बत हो वह उठ खड़ा हो और जिसे मौत नागवार हो, वह वापस चला जाए, बाक़ी रहा मैं तो मैं बहरहाल आगे जाऊंगा।

इस पर सारे ही साथी उठ खड़े हुए और अभीष्ट मंज़िल के लिए चल पड़े। अलबत्ता रास्ते में साद बिन अबी वक़्क़ास और उत्बा बिन ग़ज़वान रज़ियल्लाहु अन्हुमा का ऊंट ग़ायब हो गया, जिस पर ये दोनों बुज़ुर्ग बारी-बारी सफ़र कर रहे थे। इसलिए दोनों पीछे रह गए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ि० लम्बा फ़ासला तै करके नख़्ला पहुंच गए, वहां से क़ुरैश का एक क़ाफ़िला गुज़रा, किशमिश, चमड़े और व्यापार का सामान

लिए हुए था। क़ाफ़िले में अब्दुल्लाह बिन मुग़ीरा के दो बेटे उस्मान और नौफ़ुल और अम्र बिन हज़रमी और हकीम बिन कीसान (मुग़ीरा के दास) थे।

मुसलमानों ने आपस में मश्विरा किया कि आख़िर क्या करें। आज हराम महीना रजब का आख़िरी दिन है। अगर हम लड़ाई करते हैं, तो इस हराम महीने का अनादर होता है, और रात भर रुक जाते हैं, तो ये लोग हरम की हदों में दाख़िल हो जाएंगे। इसके बाद सबकी यही राय हुई कि हमला कर देना चाहिए।

चुनांचे एक व्यक्ति ने अम्र बिन हज़रमी को तीर मारा और उसका काम ख़त्म कर दिया। बाक़ी लोगों ने उस्मान और हकीम को गिरफ़्तार कर लिया। अलबत्ता नौफ़ुल भाग निकला। इसके बाद ये लोग दोनों क़ैदियों और क़ाफ़िले के सामान को लिए हुए मदीना पहुंचे। उन्होंने ग़नीमत के माल से ख़ुम्स (पांचवां हिस्सा) भी निकाल लिया था।[1] और यह इस्लामी तारीख़ का पहला ख़ुम्स, पहला मक़्तूल और पहले क़ैदी थे।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी इस हरकत को पसन्द नहीं किया और फ़रमाया कि मैंने तुम्हें हराम महीने में लड़ने का हुक्म नहीं दिया था और क़ाफ़िले के सामान और क़ैदियों के सिलसिले में किसी भी तरह के प्रयोग से हाथ रोक लिया।

इधर इस घटना से मुश्रिकों को इस प्रचार का मौक़ा मिल गया कि मुसलमानों ने अल्लाह के हराम किए हुए महीने को हलाल कर लिया। चुनांचे बड़ी कहा-सुनी हुई, यहां तक कि अल्लाह ने वह्य के ज़रिए इस प्रचार की क़लई खोल दी और बतलाया कि मुश्रिक जो कुछ कर रहे हैं, वह मुसलमानों की हरकत से कहीं ज़्यादा बड़ा जुर्म है। इर्शाद हुआ—

'लोग तुमसे हराम महीने में लड़ाई के बारे में पूछते हैं। कह दो, इसमें लड़ना बड़ा गुनाह है और अल्लाह की राह में रोकना और अल्लाह के साथ कुफ़्र करना, मस्जिदे हराम से रोकना और उसके रहने वालों को वहां से निकालना, यह सब अल्लाह के नज़दीक और ज़्यादा बड़ा जुर्म है और फ़ित्ना क़त्ल से बढ़कर है।'

(2 : 217)

इस वह्य ने स्पष्ट कर दिया कि मुसलमान योद्धाओं के बारे में मुश्रिकों ने जो

---

1. सीरत लिखने वालों का बयान यही है, मगर इसमें पेचीदगी यह है कि ख़ुम्स निकालने का हुक्म बद्र की लड़ाई के मौक़े पर उतरा था और इसके उतरने की वजह का जो विवरण तफ़्सीर की किताबों में बयान किया गया है, उनसे मालूम होता है कि इससे पहले तक मुसलमान ख़ुम्स के हुक्म को नहीं जानते थे।

शोर मचा रखा है, उसकी कोई गुंजाइश नहीं, क्योंकि क़ुरैश इस्लाम के ख़िलाफ़ लड़ाई में और मुसलमानों पर ज़ुल्म व सितम करने में सारी ही हुर्मतें कुचल चुके हैं। क्या जब हिजरत करने वाले मुसलमानों का माल छीना गया और पैग़म्बर को क़त्ल करने का फ़ैसला किया गया तो यह घटना शहरे हराम (मक्का) से बाहर कहीं और की थी? फिर क्या वजह है कि इन हुर्मतों की पाकी यकायक पलट आई और उनका चाक करना अफ़सोस और शर्म की वजह बन गया। यक़ीनी तौर पर मुश्रिकों ने प्रोपगंडे का जो तूफ़ान मचा रखा है, वह खुली हुई बेहयाई और बेशर्मी पर आधारित है।

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोनों क़ैदियों को आज़ाद कर दिया और मक़्तूल के औलिया को उसका ख़ून बहा अदा किया।[1]

ये हैं बद्र की लड़ाई से पहले के सरीए और ग़ज़्वे। इनमें से किसी में भी लूटमार और क़त्ल व ग़ारतगरी की नौबत नहीं आई, जब तक कि मुश्रिकों ने कर्ज़ बिन जाबिर फ़हरी के नेतृत्व में ऐसा नहीं किया, इसलिए इसकी शुरूआत भी मुश्रिकों ही की ओर से हुई, जबकि इससे पहले भी वे तरह-तरह के ज़ुल्म व सितम के पहाड़ तोड़ते रहते थे।

इधर सरीया अब्दुल्लाह बिन जह्श की घटनाओं के बाद मुश्रिकों का डर हक़ीक़त बन गया और उनके सामने एक ख़तरा साक्षात सामने आ खड़ा हुआ। उन्हें जिस फंदे में फंसने का डर था, उसमें अब वे वाक़ई फंस चुके थे। उन्हें मालूम हो गया कि मदीना का नेतृत्व पूरी तरह जाग रहा है और उनकी एक-एक व्यापारिक गतिविधियों पर नज़र रखता है। मुसलमान चाहें तो तीन सौ मील का रास्ता तै करके उनके इलाक़े के अन्दर उन्हें मार-काट सकते हैं, क़ैद कर सकते हैं, माल लूट सकते हैं और इन सबके बाद सही-सालिम वापस भी जा सकते हैं।

मुश्रिकों की समझ में आ गया कि उनकी शामी तिजारत अब स्थाई रूप से ख़तरे के निशाने पर है, लेकिन इन सबके बावजूद वे अपनी मूर्खता से माने नहीं और जुहैना और बनू ज़मरा की तरह सुलह-सफ़ाई की राह अपनाने के बजाए

---

1. इन सरीयों और ग़ज़्वों का सविस्तार विवेचन नीचे की किताबों से लिया गया है। ज़ादुल मआद 2/83-85, इब्ने हिशाम 1/591-605, रहमतुल लिल आलीमन 1/115-116, 2/215, 216, 468-470, इन पुस्तकों में इन सरीयों और ग़ज़्वों की तर्तीब और उनमें शिरकत करने वालों की तायदाद के बारे में मतभेद है। हमने अल्लामा इब्ने क़य्यिम और अल्लामा मंसूरपुरी पर भरोसा किया है।

अपने गुस्से की तेज़ी और दुश्मनी की भावना में कुछ और आगे बढ़ गए और उनके बड़ों ने अपनी इस धमकी को अमली जामा पहनाने का फ़ैसला कर लिया कि मुसलमानों के घरों में घुसकर उनका सफ़ाया कर दिया जाएगा। चुनांचे यही गुस्सा था जो उन्हें बद्र के मैदान तक ले आया।

बाक़ी रहे मुसलमान, तो अल्लाह ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श के सरीया के बाद शाबान 02 हि० में उन पर लड़ाई फ़र्ज़ क़रार दे दी और इस सिलसिले में कई स्पष्ट आयतें उतरीं। इर्शाद हुआ—

'अल्लाह के रास्ते में उनसे लड़ो, जो तुमसे लड़ते हैं और हद से आगे न बढ़ो। यक़ीनन अल्लाह हद से आगे बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता और उन्हें जहां पाओ, क़त्ल करो और जहां से उन्होंने तुम्हें निकाला है, वहां से तुम भी उन्हें निकाल दो और फ़िला क़त्ल से ज़्यादा सख़्त है और उनसे मस्जिदे हराम के पास लड़ो नहीं, यहां तक कि वे तुमसे मस्जिदे हराम में लड़ें। पस अगर वे (वहां) लड़ें, तो तुम (वहां भी) उन्हें क़त्ल करो। काफ़िरों का बदला ऐसा ही है। पस अगर वे रुक जाएं तो बेशक अल्लाह माफ़ फ़रमाने वाला और रहम फ़रमाने वाला है और उनसे लड़ाई करो, यहां तक कि फ़िला न रहे और दीन अल्लाह के लिए हो जाए। पस अगर वे रुक जाएं, तो ज़्यादती नहीं है, मगर ज़ालिमों ही पर।'

(2 : 190-193)

इसके बाद जल्द ही दूसरी क़िस्म की आयतें उतरीं, जिनमें लड़ाई का तरीक़ा बताया गया है और उस पर उभारा गया है और कुछ आदेश भी दिए गए हैं। चुनांचे इर्शाद है—

'पस जब तुम लोग कुफ़्र करने वालों से टकराओ, तो गरदनें मारो, यहां तक कि जब उन्हें अच्छी तरह कुचल लो, तो जकड़ कर बांधो। इसके बाद या तो एहसान करो या फ़िदया लो, यहां तक कि लड़ाई अपने हथियार रख दे। यह है (तुम्हारा काम) और अगर अल्लाह चाहता, तो ख़ुद ही उनसे बदला ले लेता, लेकिन (वह चाहता है कि) तुममें से कुछ को कुछ के ज़रिए आज़माए और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किए जाएं, अल्लाह उनके अमल को हरगिज़ बर्बाद न करेगा। अल्लाह उनकी रहनुमाई करेगा और उनका हाल दुरुस्त करेगा और उनको जन्नत में दाख़िल करेगा, जिससे उनको भिज्ञ करा चुका है। ऐ ईमान वालो! अगर तुमने अल्लाह की मदद की, तो अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमाए रखेगा।' (47 : 4-7)

इसके बाद अल्लाह ने उन लोगों की निन्दा की, जिनके दिल लड़ाई का हुक्म सुनकर कांपने और धड़कने लगे थे। फ़रमाया—

'तो जब कोई यक़ीनी सूरः नाज़िल की जाती है और उसमें लड़ाई का हुक्म होता है, तो तुम देखते हो कि जिन लोगों के दिलों में बीमारी है, वे तुम्हारी ओर इस तरह देखते हैं जैसे वह आदमी देखता है, जिस पर मौत की ग़शी छा रही हो।'

(47 : 20)

सच तो यह है कि लड़ाई का फ़र्ज़ होना और उस पर उभारना और उस पर तैयारी का हुक्म देना हालात के तक़ाज़े के ठीक अनुरूप था, यहां तक कि अगर हालात पर गहरी नज़र रखने वाला कोई कमांडर होता तो वह भी अपनी फ़ौज को हर तरह के हंगामी हालात का तत्काल मुक़ाबला करने के लिए तैयार रहने का हुक्म देता, इसलिए वह परवरदिगारे बरतर क्यों न ऐसा हुक्म देता जो हर खुली और ढकी बात को जानता है।

सच तो यह है कि हालात सत्य-असत्य (हक़ व बातिल) के दर्मियान एक ख़ूनी और फ़ैसला कर देने वाली लड़ाई का तक़ाज़ा कर रहे थे, ख़ास तौर से सरीया अब्दुल्लाह बिन जह्श के बाद, जो कि मुश्रिकों की ग़ैरत और स्वाभिमान पर एक ज़ोरदार चोट थी, और जिसने उन्हें सीख का कबाब बना रखा था।

लड़ाई के हुक्मों वाली आयतों के देखने से अन्दाज़ा होता है कि ख़ूनी लड़ाई का वक़्त क़रीब ही है और इसमें जीत मुसलमानों ही को मिलेगी।

आप इस बात पर नज़र डालिए कि अल्लाह ने किस तरह मुसलमानों को हुक्म दिया है कि जहां से मुश्रिकों ने तुम्हें निकाला है, अब तुम भी वहां से उन्हें निकाल दो। फिर किस तरह उसने क़ैदियों के बांधने और विरोधियों को कुचल कर लड़ाई के सिलसिले को अन्त तक पहुंचाने की हिदायत दी है, जो एक ग़ालिब और विजयी सेना से तअल्लुक़ रखती है। यह इशारा था कि आख़िरी ग़लबा मुसलमानों ही को नसीब होगा लेकिन यह बात परदों और इशारों में बताई गई, ताकि जो व्यक्ति अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिए जितनी गर्मजोशी रखता है, उसे व्यवहार में प्रदर्शित कर सके।

फिर इन्हीं दिनों, (शाबान सन् 02 हि०, फ़रवरी 624 ई० में) अल्लाह ने हुक्म दिया कि क़िब्ला बैतुल मक़्दिस के बजाए ख़ाना काबा को बनाया जाए और नमाज़ में उसी ओर रुख़ किया जाए।

इसका फ़ायदा यह हुआ कि कमज़ोर और मुनाफ़िक़ यहूदी जो मुसलमानों की पंक्ति में केवल बेचैनी और बिखराव फैलाने के लिए दाख़िल हो गए थे, खुलकर सामने आ गए और मुसलमानों से अलग होकर अपनी असल हालत पर वापस चले गए और इस तरह मुसलमानों की पंक्तियां बहुत से ग़द्दारों और ग़लत क़िस्म के लोगों से पाक हो गईं।

क़िब्ला बदलने में इस ओर भी इशारा था कि अब एक नया दौर शुरू हो रहा है, जो इस क़िब्ले पर मुसलमानों के क़ब्ज़े से पहले ख़त्म न होगा? क्योंकि यह बड़ी अजीब बात होगी कि किसी क़ौम का क़िब्ला उसके दुश्मनों के क़ब्ज़े में हो और अगर है तो फिर ज़रूरी है कि किसी न किसी दिन उसे आज़ाद कराया जाए।

इन हुक्मों और इशारों के बाद मुसलमानों का उत्साह और बढ़ गया और अल्लाह के रास्ते में उनकी जिहादी भावना और दुश्मन से फ़ैसला कर देने वाली टक्कर लेने की आरज़ू कुछ और बढ़ गई।

बद्र की बड़ी लड़ाई

इस्लाम का पहला निर्णायक युद्ध

लड़ाई की वजह

उशैरा ग़ज़वे के ज़िक्र में हम बता चुके हैं कि क़ुरैश का एक क़ाफ़िला मक्का से शाम जाते हुए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पकड़ से बच निकला था। यही क़ाफ़िला जब शाम से पलट कर मक्का वापस आने वाला था, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तलहा बिन उबैदुल्लाह और सईद बिन ज़ैद रज़ि० को उसके हालात का पता लगाने के लिए उत्तर की ओर भेजा। ये दोनों सहाबी हौरा नामी जगह तक तशरीफ़ ले गए और वहीं ठहरे रहे। जब अबू सुफ़ियान क़ाफ़िला लेकर वहां से गुज़रा, तो ये बड़ी तेज़ रफ़्तारी के साथ मदीना पलटे और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसकी सूचना दी।

इस क़ाफ़िले के साथ मक्का वालों का बहुत ढेर सारा धन था, यानी एक हज़ार ऊंट थे, जिन पर कम से कम पचास हज़ार दीनार (दो सौ साढ़े बासठ किलो सोने) की क़ीमत का सामान लदा हुआ था, जबकि इसकी हिफ़ाज़त के लिए सिर्फ़ चालीस आदमी थे।

मदीना वालों के लिए यह बड़ा सुनहरा मौक़ा था, जबकि मक्का वालों के लिए इस भारी-भरकम माल से महरूमी बड़ी ज़बरदस्त, सैनिक, राजनीतिक और आर्थिक मार की हैसियत रखती थीं, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों के अन्दर एलान फ़रमाया कि यह क़ुरैश का क़ाफ़िला माल व दौलत लिए चला आ रहा है, इसलिए निकल पड़ो। हो सकता है अल्लाह उसे ग़नीमत के माल के तौर पर तुम्हारे हवाले कर दे।

लेकिन आपने किसी पर रवानगी ज़रूरी नहीं क़रार दी, बल्कि इसे सिर्फ़ लोगों के चाव पर छोड़ दिया, क्योंकि इस एलान के वक़्त यह उम्मीद नहीं थी कि क़ाफ़िले के बजाए क़ुरैशी फ़ौज के साथ बद्र के मैदान में एक ज़ोरदार टक्कर हो जाएगी और यही वजह है कि बहुत से सहाबा किराम मदीना ही में रह गए। उनका ख़्याल था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह सफ़र आपकी पिछली आम सैनिक मुहिमों से अलग न होगा और इसीलिए इस ग़ज़वे में शरीक न होने वालों की कोई पकड़ न की गई।

इस्लामी फ़ौज की तायदाद और कमान का विभाजन

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रवानगी के लिए तैयार हुए तो आपके साथ कुछ ऊपर तीन सौ लोग थे। (यानी 313, या 314, या 317) जिनमें से 82 या 83 या 85 मुहाजिर थे और बाक़ी अंसार। फिर अंसार में से 61 क़बीला औस के थे और 170 क़बीला ख़ज़रज थे। इस टुकड़ी ने लड़ाई का न कोई विशेष प्रबन्ध किया था, न पूरी तैयारी। चुनांचे पूरी सेना में सिर्फ़ दो घोड़े थे। (एक हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम का और दूसरा हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद कुंदी का) और सत्तर ऊंट, जिनमें हर ऊंट पर दो या तीन आदमी बारी-बारी सवार होते थे। एक ऊंट अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, हज़रत अली रज़ि० और हज़रत मरसद बिन अबी मरसद ग़नवी के हिस्से में आया था, जिन पर तीनों लोग बारी-बारी सवार होते थे।

मदीना का इन्तिज़ाम और नमाज़ की इमामत पहले पहल हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु को सौंपी गई, लेकिन जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम रौहा तक पहुंचे तो आपने हज़रत अबू लुबाबा बिन अब्दुल मुंज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना का व्यवस्थापक बनाकर वापस भेज दिया।

सेना इस तरह तर्तीब दी गई कि एक दस्ता मुहाजिरों का बनाया गया और एक अंसार का।

मुहाजिरों का झंडा हज़रत अली बिन अबू तालिब को दिया गया और उसका नाम उक़बा था। और अंसार का झंडा हज़रत साद बिन मुआज़ को दिया गया। इन दोनों झंडों का रंग काला था और जनरल कमान का झंडा, जिसका रंग सफ़ेद था, हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया गया। मैमना (दाहिनी तरफ़ का दस्ता) के अफ़सर हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु मुक़र्रर किए गए और मैसरा (बाईं तरफ़ का दस्ता) के अफ़सर हज़रत मिक़्दाद बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु।

और जैसा कि हम बता चुके हैं, पूरी फ़ौज में यही दोनों बुज़ुर्ग घुड़सवार थे। साक़ा की कमान हज़रत क़ैस बिन अबी सअसआ के हवाले की गई और कमांडर इन चीफ़ की हैसियत से जनरल कमान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद संभाली।

बद्र की ओर इस्लामी सेना की रवानगी

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस अधूरी फ़ौज को लेकर

रवाना हुए, तो मदीने के मुहाने से निकलकर मक्का जाने वाले राजमार्ग पर चलते हुए बेरे रौहा तक तशरीफ़ ले गए। फिर वहां से आगे बढ़े तो मक्का का रास्ता बाईं ओर छोड़ दिया और दाहिनी ओर कतरा कर चलते हुए नाज़िया पहुंचे। (मंज़िल तो बद्र थी) फिर नाज़िया के एक किनारे से गुज़रकर रहक़ान घाटी पार की। यह नाज़िया और सफरा दर्रे के बीच में एक घाटी है।

इस घाटी के बाद सफ़रा दर्रे से गुज़रे। फिर दर्रे से उतर कर सफ़रा घाटी के क़रीब जा पहुंचे और वहां से क़बीला जुहैना के दो आदमियों यानी बसीस बिन उमर और अदी बिन अबी ज़गबा को क़ाफ़िले का पता लगाने के लिए बद्र रवाना फ़रमाया।

मक्के में ख़तरे का एलान

दूसरी ओर क़ाफ़िले की स्थिति यह थी कि अबू सुफ़ियान जो उसका सरदार था, बहुत ज़्यादा सावधान था। उसे मालूम था कि मक्के का रास्ता ख़तरों से भरा हुआ है, इसलिए वह हालात का बराबर पता लगाता रहता था और जिन क़ाफ़िलों से मुलाक़ात होती थी, उनसे वस्तुस्थिति मालूम करता रहता था, चुनांचे उसे जल्द ही मालूम हो गया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम को क़ाफ़िले पर हमले की दावत दे दी है।

इसलिए उसने तुरन्त ज़मज़म बिन अम्र ग़िफ़ारी को मुआवज़ा देकर मक्का भेजा कि वहां जाकर क़ाफ़िले की सुरक्षा के लिए कुरैश में आम एलान की आवाज़ लगा दे। ज़मज़म बड़ी तेज़रफ़्तारी से मक्का आया और अरब के आम चलन के मुताबिक़ अपने ऊंट की नाक चुपड़ी, कजावा उलटा, कुरता फाड़ा और मक्का घाटी में उसी ऊंट पर खड़े होकर आवाज़ लगाई—

'ऐ कुरैश की जमाअत! क़ाफ़िला. . . क़ाफ़िला. . . तुम्हारा माल जो अबू सुफ़ियान के साथ है, उस पर मुहम्मद और उसके साथी धावा बोलने जा रहे हैं। मुझे यक़ीन नहीं कि तुम उसे पा सकोगे। मदद. . . मदद. . .।

लड़ाई के लिए मक्का वालों की तैयारी

यह आवाज़ सुनकर हर ओर से लोग दौड़ पड़े। कहने लगे—

मुहम्मद और उसके साथी समझते हैं कि यह क़ाफ़िला भी इब्ने हज़रमी के क़ाफ़िले जैसा है? जी नहीं, हरगिज़ नहीं। ख़ुदा की क़सम! इन्हें पता चल जाएगा कि हमारा मामला कुछ और है।

चुनांचे सारे मक्के में दो ही तरह के लोग थे, या तो आदमी ख़ुद लड़ाई के लिए

निकल रहा था या अपनी जगह किसी और को भेज रहा था और इस तरह मानो सभी निकल पड़े। ख़ास तौर से मक्का के इज़्ज़तदार बड़े लोगों में से कोई भी पीछे न रहा। सिर्फ़ अबू लहब ने अपनी जगह अपने एक क़र्ज़दार को भेजा।

पास-पड़ोस के अरब क़बीलों को भी क़ुरैश ने भर्ती किया और ख़ुद क़ुरैशी क़बीलों में से बनी अदी के छोड़कर कोई भी पीछे न रहा। अलबत्ता बनी अदी के किसी भी आदमी ने इस लड़ाई में शिरकत न की।

मक्की सेना की तायदाद

शुरू में मक्की सेना की तायदाद तेरह सौ थी, जिनके पास एक सौ घोड़े और छः सौ कवच थे। ऊंट बहुत ज़्यादा थे, जिनकी ठीक-ठीक तायदाद न मालूम हो सकी। सेना का सेनापति अबू जह्ल बिन हिशाम था। क़ुरैश के नौ बड़े आदमी उसकी रसद के ज़िम्मेदार थे। एक दिन नौ और एक दिन दस ऊंट ज़िब्ह किए जाते थे।

बनू बक्र क़बीले की समस्या

जब मक्की सेना चलने के लिए तैयार हुई, तो क़ुरैश को याद आया कि बनू बक्र के क़बीले से उनकी दुश्मनी और लड़ाई चल रही है, इसलिए उन्हें ख़तरा महसूस हुआ कि कहीं ये क़बीले पीछे से हमला न कर दें और इस तरह वे दो आग के बीच में न पड़ जाएं।

क़रीब था कि यह विचार उनको लड़ाई के इरादे से रोक दे, लेकिन ठीक उसी वक़्त इब्लीस बनू किनाना के सरदार सुराक़ा बिन मालिक बिन जासम मुदलजी के रूप में प्रकट हुआ और बोला, मैं भी तुम्हारा साथी हूं और इस बात की ज़मानत देता हूं कि बनू किनाना तुम्हारे पीछे कोई अप्रिय काम न करेंगे।

मक्की सेना की रवानगी

इस गारंटी के बाद मक्का वाले अपने घरों से निकल पड़े और जैसा कि इर्शाद है—'इतराते हुए, लोगों को अपनी शान दिखाते हुए और अल्लाह की राह से रोकते हुए' मदीना की ओर चल पड़े, जैसा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है—

'अपने धार और हथियार लेकर, अल्लाह से ख़ार खाते हुए और उसके रसूल सल्ल० से ख़ार खाते हुए, बदले की भावना से चूर और जोश और गुस्से से भरपूर, इस पर किचकिचाते हुए कि अल्लाह के रसूल सल्ल० और आपके

सहाबा रज़ि० ने मक्के वालों के क़ाफ़िलों पर आंख उठाने की जुर्रात कैसे की।'

बहरहाल ये लोग बड़ी तेज़ रफ़्तारी से उत्तर के रुख़ पर बद्र की ओर चले जा रहे थे कि उस्फ़ान घाटी और क़ुदैद से गुज़र कर जोह्फ़ा पहुंचे तो अबू सुफ़ियान का एक नया पैग़ाम मिला, जिसमें कहा गया था कि आप लोग अपने क़ाफ़िले, अपने आदमियों और अपने मालों की हिफ़ाज़त की ग़रज़ से निकले हैं और चूंकि अल्लाह ने इन सबको बचा लिया है, इसलिए अब वापस पलट जाइए।

क़ाफ़िला बच निकला

अबू सुफ़ियान के बच निकलने की तफ़्सील यह है कि वह शाम से कारवां चलते रहने वाले राजमार्ग पर चला तो आ रहा था, लेकिन बराबर चौकन्ना था और बेदार था। उसने सूचना प्राप्त करने की अपनी कोशिशें दो गुनी कर दी थीं।

जब वह बद्र के क़रीब पहुंचा तो ख़ुद क़ाफ़िले से आगे जाकर मज्दी बिन अम्र से भेंट की और उससे मदीना की सेना के बारे में मालूम किया।

मज्दी ने कहा, मैंने हमेशा के खिलाफ़ कोई आदमी तो नहीं देखा, अलबत्ता दो सवार देखे, जिन्होंने टीले के पास अपने जानवर बिठाए, फिर अपनी मश्कों में पानी भरकर चले गए।

अबू सुफ़ियान लपक कर वहां पहुंचा और उनके ऊंट की मेंगनियां उठा कर तोड़ीं, तो उसमें खजूर की गुठली निकली। अबू सुफ़ियान ने कहा, ख़ुदा की क़सम ! यह यसरिब का चारा है।

इसके बाद वह तेज़ी से क़ाफ़िले की ओर पलटा और उसे पश्चिम की ओर मोड़ कर उसका रुख़ तट की ओर कर दिया और बद्र से गुज़रने वाले राजमार्ग को बाएं हाथ पर छोड़ दिया। इस तरह क़ाफ़िले को मदनी फ़ौज के क़ब्ज़े में जाने से बचा लिया और तुरन्त ही मक्की सेना को अपने बच निकलने की सूचना देतें हुए उसे वापस जाने का सन्देश दिया, जो उसे जोह्फ़ा में मिल गया।

मक्की सेना का वापसी का इरादा और आपसी फूट

यह सन्देश पाकर मक्की सेना ने चाहा कि वापस चली जाए, लेकिन क़ुरैश का सबसे बड़ा उद्दंड व्यक्ति अबू जह्ल खड़ा हो गया और बड़े ही घमंड के साथ बोला—

'ख़ुदा की क़सम ! हम वापस न होंगे, यहां तक कि बद्र जाकर वहां तीन दिन

ठहरेंगे और इस बीच ऊंट ज़िब्ह करेंगे, लोगों को खाना खिलाएंगे और शराब पिलाएंगे, लौंडियां हमारे लिए गाना गाएंगी और सारा अरब हमारे जमा होने और खाने-पीने और गाने-बजाने का हाल सुनेगा और इस तरह हमेशा के लिए उन पर हमारी धाक बैठ जाएगी।'

लेकिन अबू जह्ल के इस कहने के बावजूद अख़नस बिन शुरैक़ ने यही मश्विरा दिया कि वापस चले चलो, मगर लोगों ने उसकी बात न मानी, इसलिए वह बनू ज़ोहरा के लोगों को साथ लेकर वापस हो गया, क्योंकि वह बनू ज़ोहरा का मित्र और इस सेना में उनका सरदार था। बनू ज़ोहरा की कुल तायदाद कोई तीन सौ थी। उनका कोई भी आदमी बद्र की लड़ाई में हाज़िर न हुआ।

बाद में बनू ज़ोहरा अख़नस निब शुरैक़ की राय पर बड़े ख़ुश थे और उनके भीतर उसका मान-सम्मान हमेशा बाक़ी रहा।

बनू ज़ोहरा के अलावा बनू हाशिम ने भी चाहा कि वापस चले जाएं, लेकिन अबू जह्ल ने बड़ी सख़्ती की और कहा कि जब तक हम वापस न हों, यह गिरोह हमसे अलग न होने पाए।

तात्पर्य यह कि सेना ने अपना सफ़र जारी रखा। बनू ज़ोहरा की वापसी के बाद अब उसकी तायदाद एक हज़ार रह गई थी और उसका रुख़ बद्र की ओर था। बद्र के क़रीब पहुंच कर उसने एक टीले के पीछे पड़ाव डाला। यह टीला बद्र की घाटी की सीमाओं पर दक्षिणी मुहाने के पास स्थित है।

इस्लामी सेना के लिए हालात की नज़ाकत

इधर मदीने के सूचना-सूत्रों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को, जबकि अभी आप रास्ते ही में थे और ज़फ़रान घाटी से गुज़र रहे थे, क़ाफ़िले और सेना दोनों के बारे में सूचनाएं जुटाईं। आपने इन सूचनाओं का गहराई से जायज़ा लेने के बाद यक़ीन कर लिया कि अब एक ख़ूनी टकराव का वक़्त आ गया है और ऐसा क़दम उठाना ज़रूरी हो गया है जिसमें हिम्मत हो, हौसला हो, उमंग हो और सत्य के लिए लड़ने-मरने का जज़्बा हो, तभी कामियाबी हाथ लग सकेगी।

क्योंकि यह बात क़तई थी कि अगर मक्की सेना को इस इलाक़े में यों ही दनदनाता हुआ फिरने दिया जाता, तो इससे क़ुरैश की फ़ौजी साख को बड़ी ताक़त पहुंच जाती और उनकी सियासी जीत का दायरा दूर तक फैल जाता, मुसलमानों की आवाज़ दबकर कमज़ोर हो जाती और उसके बाद इस्लामी दावत को एक बे-रूह ढांचा समझकर इस इलाक़े का हर व्यक्ति, जो अपने सीने में इस्लाम के ख़िलाफ़ कीना और दुश्मनी रखता था, शरारत पर उतर आता।

फिर इन सब बातों के अलावा आख़िर इसकी क्या गारंटी थी कि मक्के की सेना मदीना की ओर आगे नहीं बढ़ेगी और इस लड़ाई को मदीने की चारदीवारी तक पहुंचा कर मुसलमानों को उनके घरों में घुसकर तबाह करने की जुर्रत और कोशिश नहीं करेगी? जी हां, अगर मदीना की फ़ौज की ओर से ज़रा भी ढील दी जाती, तो वह सब कुछ संभव था और ऐसा न भी होता तो मुसलमानों के रौब और दबदबे पर बहरहाल इसका बहुत बुरा असर पड़ता।

मज्लिसे शूरा की सभा

स्थिति की इस अचानक और खतरनाक तब्दीली को देखते हुए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक उच्चस्तरीय सैनिक मज्लिसे शूरा (सलाहकार समिति) की मीटिंग की, जिसमें उस वक़्त की परिस्थितियों का उल्लेख किया और कमांडरों और आम फ़ौजियों से विचार-विमर्श किया।

इस अवसर पर एक गिरोह ख़ूनी टकराव का नाम सुनकर कांप उठा और उसका दिल कांपने और धड़कने लगा। उसी गिरोह के बारे में अल्लाह का इर्शाद है—

'जैसा कि तुझे तेरे रब ने घर से हक़ के साथ निकाला और ईमान वालों का एक गिरोह अप्रिय समझ रहा था। वह तुझसे हक़ के बारे में इसके स्पष्ट हो चुकने के बाद झगड़ रहे थे, मानो वे आंखों देखते मौत की ओर हांके जा रहे हैं।'

(अल-अंफ़ाल 5-6)

लेकिन जहां तक सेना के कमांडरों का ताल्लुक़ है, तो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु उठे और बहुत अच्छी बात कही। फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु उठे और बोले—

'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह ने आपको जो राह दिखाई है, उस पर चलते रहिए, हम आपके साथ हैं। ख़ुदा की क़सम ! हम आपसे यह बात नहीं कहेंगे, जो बनी इसराईल ने मूसा अलैहिस्सलाम से कही थी—'तुम और तुम्हारा रब जाओ और लड़ो, हम यहीं बैठे हैं।'

(अल-माइदा, 24)

बल्कि हम यह कहेंगे कि आप और आपके पालनहार चलें और लड़ें और हम भी आपके साथ लड़ेंगे। उस ज़ात की क़सम ! जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है, अगर आप हमको बरकेग़माद तक ल चलें, तो हम रास्ते वालों से लड़ते-भिड़ते आपके साथ वहां भी चलेंगे।

(अल-माइदा, 24)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके हक़ में भले कलिमे इर्शाद फ़रमाए और दुआ दी।

ये तीनों कमांडर मुहाजिरों में से थे, जिनकी तायदाद फ़ौज में कम थी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इच्छा थी कि अंसार की राय मालूम करें, क्योंकि वही फ़ौज में अधिक थे और लड़ाई का असल बोझ उन्हीं के कंधों पर पड़ने वाला था, जबकि अक़बा की बैअत के हिसाब से उन पर ज़रूरी न था कि मदीने से बाहर निकलकर लड़ें।

इसलिए आपने तीनों कमांडरों की बातें सुनने के बाद फिर फ़रमाया, लोगो ! मुझे मश्विरा दो।

इशारा अंसार की ओर था और यह बात अंसार के कमांडर और झंडा बरदार हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० ने भांप ली। चुनांचे उन्होंने अर्ज़ किया कि ख़ुदा की क़सम ! ऐसा मालूम होता है कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपका इशारा हमारी ओर है।

आपने फ़रमाया, हां।

उन्होंने कहा, हम तो आप पर ईमान लाए हैं। आपकी तस्दीक़ की है और यह गवाही दी है कि आप जो कुछ ले आए हैं, सब हक़ है और इस पर हमने अपने आज्ञापालन का वचन दिया है। इसलिए ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपका जो इरादा है, उसके लिए क़दम बढ़ाइए। उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है, अगर आप हमें साथ लेकर उस समुद्र में कूदना चाहें, तो हम उसमें भी आपके साथ कूद पड़ेंगे, हमारा एक आदमी भी पीछे न रहेगा। हमें क़तई तौर पर कोई हिचकिचाहट नहीं कि कल आप हमारे साथ दुश्मन से टकरा जाएं। हम लड़ाई में जमने वाले और लड़ने में वीर योद्धा है और मुम्किन है अल्लाह आपको हमारा वह जौहर दिखा दे, जिससे आपकी आंखें ठंडी हो जाएं। पस आप हमें साथ लेकर चलें। अल्लाह बरकत दे।

एक रिवायत में यों है कि हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया—

'शायद आपको डर है कि अंसार अपना यह फ़र्ज़ समझते हैं कि आपकी मदद सिर्फ़ अपने क्षेत्र में करें, इसलिए मैं अंसार की ओर से बोल रहा हूं और उनकी ओर से जवाब दे रहा हूं। अर्ज़ है कि आप जहां चाहें, तशरीफ़ ले चलें, जिससे चाहें ताल्लुक़ जोड़ें और जिससे चाहें, ताल्लुक़ काट लें। हमारे माल में से जो चाहें ले लें और जो चाहें दे दें और जो आप लेंगे, वह हमारे नज़दीक इससे ज़्यादा पसन्दीदा होगा जिसे आप छोड़ देंगे और इस मामले में आपका जो भी फ़ैसला होगा, हमारा फ़ैसला बहरहाल उसके आधीन होगा। ख़ुदा की क़सम,

अगर आप क़दम बढ़ाते हुए बरकेग़माद तक जाएं, तो हम भी आपके साथ-साथ चलेंगे और अगर आप हमें लेकर इस समुद्र में कूदना चाहें, तो हम उसमें भी कूद जाएंगे।'

हज़रत साद रज़ि० की यह बात सुनकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ख़ुशी की लहर दौड़ गई। आपका चेहरा खिल उठा। आपने फ़रमाया, चलो और ख़ुशी-ख़ुशी चलो। अल्लाह ने मुझसे दो गिरोहों में से एक का वायदा फ़रमाया है। अल्लाह की क़सम ! इस वक़्त मानो मैं क़ौम की क़त्लगाहें देख रहा हूं।

इस्लामी फ़ौज का बाक़ी सफ़र

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़फ़रान से आगे बढ़े और कुछ पहाड़ी मोड़ से गुज़र कर जिन्हें असाफ़िर कहा जाता है, दीत नामी एक आबादी में उतरे और हन्नान नामी पहाड़ जैसी चट्टान को दाहिने हाथ छोड़ दिया और इसके बाद बद्र के क़रीब पड़ाव के लिए उतर पड़े।

जासूसी का क़दम

यहां पहुंच कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने ग़ार के साथी हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को साथ लिया और ख़ुद ख़बर लाने के लिए निकल पड़े।

अभी दूर ही से मक्की सेना के कैम्प का जायज़ा ले रहे थे कि एक बूढ़ा अरब मिल गया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे क़ुरैश और मुहम्मद और उनके साथियों का हाल मालूम किया। दोनों फ़ौजों के बारे में पूछने का मक़्सद यह था कि आपके व्यक्तित्व पर परदा पड़ा रहे।

लेकिन बूढ़े ने कहा, जब तक तुम लोग यह नहीं बताओगे कि तुम्हारा ताल्लुक़ किस क़ौम से है, मैं भी कुछ नहीं बताऊंगा।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब तुम हमें बता दोगे, तो हम भी तुम्हें बता देंगे।

उसने कहा, अच्छा, तो यह उसके बदले में है ?

आपने ने फ़रमाया, हां।

उसने कहा, मुझे मालूम हुआ है कि मुहम्मद और उनके साथी फ़्लां दिन निकले हैं। अगर मुझे बताने वाले ने सही बताया है, तो आज वे लोग फ़्लां जगह

होंगे और ठीक उस जगह की निशानदेही की, जहां इस समय मदीने की फ़ौज थी। और मुझे यह भी मालूम हुआ है, क़ुरैश फ़्लां दिन निकले हैं। अगर मुझे ख़बर देने वाले ने सही ख़बर दी है, तो वह आज फ़्लां जगह होंगे और ठीक उस जगह का नाम लिया, जहां इस वक़्त मक्के की सेना थी।

जब बूढ़ा अपनी बात कह चुका, तो बोला—

'अच्छा, अब बताओ कि तुम दोनों में से किससे हो ?'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—हम लोग एक पानी से हैं और यह कहकर वापस पलट पड़े।

बूढ़ा बकता रहा, क्या पानी से हैं ? क्या इराक़ के पानी से हैं ?

मक्का की सेना के बारे में अहम जानकारियां मिलीं

उसी दिन शाम को आपने दुश्मन के हालात का पता लगाने के लिए नए सिरे से एक जासूसी दस्ता रवाना फ़रमाया। इस कार्रवाई के लिए मुहाजिरों के तीन नेता अली बिन अबी तालिब, ज़ुबैर बिन अव्वाम और साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हुम सहाबा किराम की एक जमाअत के साथ रवाना हुए।

ये लोग सीधे बद्र के सोते पर पहुंचे। वहां दो दास मक्की सेना के लिए पानी भर रहे थे। उन्हें गिरफ़्तार कर लिया और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर किया।

उस वक़्त आप नमाज़ पढ़ रहे थे। सहाबा ने इन दोनों से हालात मालूम किए।

उन्होंने कहा, हम क़ुरैश के सक़्क़े (पानी पिलाने वाले) हैं। उन्होंने हमें पानी भरने के लिए भेजा है।

क़ौम को यह जवाब पसन्द न आया। उन्हें उम्मीद थी कि ये दोनों अबू सुफ़ियान के आदमी होंगे, क्योंकि दिलों में अब भी बची-खुची आरज़ू रह गई थी कि क़ाफ़िले पर ग़लबा हासिल हो।

चुनांचे सहाबा किराम ने इन दोनों की ज़रा ज़ोरदार पिटाई कर दी और उन्होंने मजबूर होकर कह दिया कि हां, हम अबू सुफ़ियान के आदमी हैं। इसके बाद मारने वालों ने हाथ रोक लिया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो गुस्से में फ़रमाया, जब इन दोनों ने सही बात बताई तो आप लोगों ने पिटाई क्यों कर दी और जब झूठ कहा तो छोड़ क्यों दिया। ख़ुदा की क़सम, इन दोनों ने सही कहा था कि ये क़ुरैश के आदमी हैं।

इसके बाद आपने इन दोनों ग़ुलामों से फ़रमाया, अच्छा, अब मुझे क़ुरैश के बारे में बताओ।

उन्होंने कहा, यह टीला जो घाटी के आख़िरी मुहाने पर दिखाई दे रहा है, क़ुरैश उसी के पीछे हैं।

आपने पूछा, लोग कितने हैं?

उन्होंने कहा, बहुत हैं।

आपने पूछा, तायदाद कितनी है?

उन्होंने कहा, हमें नहीं मालूम।

आपने फ़रमाया, हर दिन कितने ऊंट ज़िब्ह करते हैं?

उन्होंने कहा, एक दिन नौ और एक दिन दस।

आपने फ़रमाया, तब तो लोगों की तायदाद नौ सौ और एक हज़ार के बीच में है।

फिर आपने पूछा, इनके अन्दर क़ुरैश के बड़े लोगों में से कौन-कौन हैं?

उन्होंने कहा, रबीआ के दोनों लड़के, उत्बा और शैबा और अबुल बख़्तरी बिन हिशाम, हकीम बिन हिज़ाम, नौफ़ल बिन ख़ुवैलद, हारिस बिन आमिर, तुऐमा बिन अदी, नज़्र बिन हारिस, ज़मआ बिन अस्वद, अबू जह्ल बिन हिशाम, उमैया बिन ख़ल्फ़ और आगे कुछ लोगों के नाम गिनवाए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा की ओर मुतवज्जह होकर फ़रमाया, मक्का ने अपने जिगर के टुकड़ों को तुम्हारे पास लाकर डाल दिया है।

रहमतों की वर्षा

अल्लाह ने इसी रात पानी बरसा दिया, जो मुश्रिकों पर मूसलाधार बरसी और उनके आगे बढ़ने में रुकावट बन गई, लेकिन मुसलमानों पर फुवार बनकर बरसी और उन्हें पाक कर दिया, शैतान की गन्दगी दूर कर दी और ज़मीन को हमवार कर दिया। इसकी वजह से रेत में कड़ाई आ गई और क़दम टिकने के लायक़ हो गए। ठहरना ख़ुशगवार हो गया और दिल मज़बूत हो गए।

अहम सैनिक केन्द्रों की ओर इस्लामी सेना का बढ़ना

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी फ़ौज को हरकत दी, ताकि मुश्रिकों से पहले बद्र के सोते पर पहुंच जाएं और उस पर

मुश्रिकों को क़ब्ज़ा न करने दें।

चुनांचे इशा के वक़्त आप बद्र के सबसे क़रीबी सोते पर पहुंचे। इस मौक़े पर हज़रत हुबाब बिन मुन्ज़िर ने एक माहिर फ़ौजी की हैसियत से मालूम किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! क्या यहां आप अल्लाह के हुक्म से आए हैं कि हमारे लिए हमसे आगे-पीछे हटने की गुंजाइश नहीं या आपने इसे एक सामरिक रणनीति के रूप में अपनाया है ?

आपने फ़रमाया, यह सिर्फ़ सामरिक रणनीति के रूप में है।

उन्होंने कहा, यह मुनासिब जगह नहीं है। आप आगे तशरीफ़ ले चलें और कुरैश के सबसे करीब जो सोता हो, उस पर पड़ाव डालें, फिर हम बाक़ी सोते पाट देंगे और अपने सोते पर हौज़ बनाकर पानी भर लेंगे। इसके बाद हम क़ुरैश से लड़ाई लड़ेंगे, तो हम पानी पीते रहेंगे और उन्हें पानी न मिलेगा।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुमने बहुत ठीक मश्विरा दिया।

इसके बाद आप फ़ौज के साथ उठे और कोई आधी रात गए दुश्मन के सबसे क़रीबी सोते पर पहुंचकर पड़ाव डाल दिया। फिर सहाबा किराम रज़ि० ने हौज़ बनाया और बाक़ी तमाम सोतों को बन्द कर दिया।

नेतृत्व-केन्द्र

सहाबा किराम रज़ि० सोते पर पड़ाव डाल चुके तो हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह प्रस्ताव रखा कि क्यों न मुसलमान आपके लिए एक नेतृत्व-केन्द्र बना दें, ताकि ख़ुदा न करे जीत के बजाए हार से दोचार होना पड़ जाए या किसी और हंगामी हालत का सामना करना पड़ जाए, तो उसके लिए हम पहले ही से मुस्तैद रहें। चुनांचे उन्होंने अर्ज़ किया—

'ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! क्यों न हम आपके लिए छप्पर बना दें, जिसमें आप तशरीफ़ रखेंगे और हम आपके पास आपकी सवारियां भी मुहैया रखेंगे। इसके बाद अपने दुश्मन से टक्कर लेंगे। अगर अल्लाह ने हमें इज़्ज़त बख़्शी और दुश्मन पर ग़लबा दिलाया, तो यह वह चीज़ होगी, जो हमें पसन्द है और दूसरी शक्ल हो गई, तो आप सवार होकर हमारी क़ौम के उन लोगों के पास जा रहेंगे, जो पीछे रह गए हैं।

वास्तव में आपके पीछे ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! ऐसे लोग रह गए हैं कि हम आपकी मुहब्बत में इनसे बढ़कर नहीं। अगर इन्हें यह अन्दाज़ा होता कि आप लड़ाई से दोचार होंगे तो वे हरगिज़ पीछे न रहते। अल्लाह उनके ज़रिए

आपकी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। वे आपका भला चाहने वाले होंगे और आपके साथ जिहाद करेंगे।

इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी प्रशंसा की और उनके लिए दुआ की, फिर मुसलमानों ने लड़ाई के मैदान के उत्तर-पूरब में एक ऊंचे टीले पर छप्पर बनाया, जहां से लड़ाई का पूरा मैदान दिखाई पड़ता था, फिर आपके उस नेतृत्व-केन्द्र की निगरानी के लिए हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० की कमान में अंसारी नवजवानों का एक दस्ता तैयार कर लिया गया।

फ़ौज की तर्तीब और रात का गुज़रना

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ौज की तर्तीब फ़रमाई[1] और लड़ाई के मैदान में तशरीफ़ ले गए। वहां अपने हाथ से इशारा फ़रमाते जा रहे थे कि यह कल फ़्लां की क़त्लगाह है, इनशाअल्लाह।[2]

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वहीं एक पेड़ की जड़ के पास रात गुज़ारी और मुसलमानों ने भी सुख-शान्ति के साथ रात गुज़ारी। उनके दिल विश्वास से भरे हुए थे और उन्होंने राहत व सुकून से अपना हिस्सा हासिल किया। उन्हें यह उम्मीद थी कि सुबह अपनी आंखों से अपने रब की ख़ुशख़बरियां देखेंगे।

'जब अल्लाह तुम पर अपनी ओर से अम्न और बे-ख़ौफ़ी के तौर पर नींद छाए दे रहा था और तुम पर आसमान से पानी बरसा रहा था, ताकि तुम्हें उसके ज़रिए पाक कर दे और तुमसे शैतान की गन्दगी दूर कर दे और तुम्हारे दिल मज़बूत कर दे और तुम्हारे क़दम जमा दे।' (8 : 11)

यह रात जुमा 17 रमज़ान सन् 02 हि० की रात थी और आप इस महीने की 8 या 12 तारीख़ को मदीने से रवाना हुए थे।

लड़ाई के मैदान में मक्की सेना का आना और उनका आपसी मतभेद

दूसरी ओर क़ुरैश ने घाटी के मुहाने के बाहर अपने कैम्प में रात गुज़ारी और सुबह अपने दस्तों सहित टीले से उतर कर बद्र की ओर चल पड़े।

---

1. देखिए जामेअ तिर्मिज़ी, अब-वाबुल जिहाद बाब मा जा-अ फ़िस्सफ़्फ़ वत्ताबिया 1/201
2. मुस्लिम, मिश्कात 2/543

एक गिरोह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हौज़ की ओर बढ़ा।

आपने फ़रमाया, इन्हें छोड़ दो, मगर इनमें से जिसने भी पानी पिया, वह इस लड़ाई में मारा गया, सिर्फ़ हकीम बिन हिज़ाम बाक़ी बचा, जो बाद में मुसलमान हुआ और बहुत अच्छा मुसलमान हुआ।

उसका तरीक़ा था जब बहुत पक्की क़सम खानी होती, तो कहता, 'क़सम है उस ज़ात की, जिसने मुझे बद्र के दिन से निजात दी।'

बहरहाल जब क़ुरैश सन्तुष्ट हो चुके, तो उन्होंने मदनी ताक़त का अन्दाज़ा लगाने के लिए उमैर बिन वह्ब जुमही को रवाना किया। उमैर ने घोड़े पर सवार होकर फ़ौज का चक्कर लगाया, फिर वापस जाकर बोला, कुछ कम या कुछ ज़्यादा तीन सौ आदमी हैं, लेकिन तनिक ठहरो, मैं देख लूं उनकी कोई रसदगाह या कुमक तो नहीं?

इसके बाद वह घाटी में घोड़ा दौड़ाता हुआ दूर तक निकल गया, लेकिन उसें कुछ दिखाई न पड़ा। चुनांचे उसने वापस जाकर कहा—

'मैंने कुछ पाया तो नहीं, लेकिन ऐ क़ुरैश के लोगो! मैंने बलाएं देखी हैं, जो मौत को लादे हुए हैं। यसरिब के ऊंट अपने ऊपर ख़ालिस मौत सवार किए हुए हैं। ये ऐसे लोग हैं, जिनकी सारी हिफ़ाज़त और पनाह की जगह उनकी तलवारें हैं। कोई और चीज़ नहीं। ख़ुदा की क़सम! मैं समझता हूं कि उनका कोई आदमी तुम्हारे आदमी को क़त्ल किए बग़ैर क़त्ल न होगा। और अगर उन्होंने तुम्हारे ख़ास-ख़ास लोगों को मार लिया, तो इसके बाद जीने का मज़ा ही क्या है, इसलिए तनिक अच्छी तरह सोच-समझ लो।'

इस मौक़े पर अबू जह्ल के विरुद्ध एक और विवाद उठ खड़ा हुआ, जो हर क़ीमत पर लड़ने पर तुला हुआ था। कुछ लोग चाह रहे थे कि लड़े बिना मक्का वापस हो जाएं।

चुनांचे हकीम बिन हिज़ाम ने लोगों के दर्मियान दौड़-धूप शुरू कर दी। वह उत्बा बिन रबीआ के पास आया और बोला—

'अबुल वलीद! आप क़ुरैश के बड़े आदमी और ऐसे सरदार हैं, जिनकी बात मानी जाती है, आप क्यों न एक अच्छा काम कर जाएं जिसके कारण आपका उल्लेख भलाई के साथ होता रहे।'

उत्बा ने कहा, 'हकीम! वह कौन-सा काम है?'

उसने कहा, आप लोगों को वापस ले जाएं और अपने मित्र अम्र बिन हज़रमी

का मामला, जो सरीया नख़ला में मारा गया था, अपने ज़िम्मे ले लें।

उत्बा ने कहा, मुझे मंज़ूर है। तुम मेरी ओर से उसकी ज़मानत लो। वह मेरा मित्र है। मैं उसकी दियत का भी ज़िम्मेदार हूं और उसका जो माल बर्बाद हुआ, उसका भी।

इसके बाद उत्बा ने हकीम बिन हिज़ाम से कहा, तुम हनज़लीया के पूत के पास जाओ, क्योंकि लोगों के मामलों को बिगाड़ने और भड़काने के सिलसिले में मुझे उसके अलावा किसी और से कोई अन्देशा नहीं।

हनज़लीया के पूत से तात्पर्य अबू जह्ल है। हनज़लीया उसकी मां थी।

इसके बाद उत्बा बिन रबीआ ने खड़े होकर भाषण दिया और कहा—

'कुरैश के लोगो! तुम लोग मुहम्मद और उनके साथियों से लड़कर कोई कारनामा अंजाम न दोगे! ख़ुदा की क़सम! अगर तुमने उन्हें मार लिया, तो सिर्फ़ ऐसे ही चेहरे दिखाई पड़ेंगे, जिन्हें देखना पसन्द न होगा, क्योंकि आदमी ने अपने चचेरे भाई को या खालाज़ाद भाई को या अपने ही कुंबे-क़बीले के किसी आदमी को क़त्ल किया होगा, इसलिए वापस चले चलो और मुहम्मद (सल्ल०) और सारे अरब से किनारा कर लो। अगर अरब ने उन्हें मार लिया तो यह वही चीज़ होगी जिसे तुम चाहते हो और अगर उलटी बात हो गई तो मुहम्मद (सल्ल०) तुम्हें इस हालत में पाएंगे कि तुमने जो व्यवहार उनसे करना चाहा था, उसे किया न था।

इधर हकीम बिन हिज़ाम अबू जह्ल के पास पहुंचा तो अबू जह्ल अपनी कवच ठीक-ठाक कर रहा था। हकीम ने कहा, ऐ अबुल हकम! मुझे उत्बा ने तुम्हारे पास यह और यह पैग़ाम देकर भेजा है।

अबू जह्ल ने कहा, ख़ुदा की क़सम! मुहम्मद और उसके साथियों को देखकर उत्बा का सीना सूज आया है। नहीं, हरगिज़ नहीं। ख़ुदा की क़सम! हम वापस न होंगे, यहां तक कि अल्लाह हमारे और मुहम्मद के दर्मियान फ़ैसला फ़रमा दे। उत्बा ने जो कुछ कहा है, सिर्फ़ इसलिए कहा है कि वह मुहम्मद और उसके साथियों को ऊंट खाने वाला समझता है और ख़ुद उत्बा का बेटा भी उन्हीं के साथ है, इसलिए वह तुम्हें उनसे डराता है।

उत्बा के बेटे अबू हुज़ैफ़ा बहुत पुराने इस्लाम क़ुबूल करने वाले थे और हिजरत करके मदीना तशरीफ़ ला चुके थे।

उत्बा को जब पता चला कि अबू जह्ल कहता है 'ख़ुदा की क़सम! उत्बा का सीना सूज आया है', तो बोला—

'इस चूतड़ से पाद निकालने वाले को (या चूतड़ पर ख़ुशबू लगाने वाले को)

बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि किसका सीना सूज आया है ? मेरा या उसका ?'

इधर अबू जह्ल ने इस डर से कि कहीं यह विवाद बढ़कर छा न जाए, इस बातचीत के बाद झट आमिर बिन हज़रमी को, जो सरीया अब्दुल्लाह बिन जह्श के मक़्तूल अम्र बिन हज़रमी का भाई था, बुला भेजा और कहा कि यह तुम्हारा मित्र उत्बा चाहता है कि लोगों को वापस ले जाए, हालांकि तुम अपना बदला अपनी आंख से देख चुके हो, इसलिए उठो, अपने मज़्लूम होने की और अपने भाई के क़त्ल की दुहाई दो।

इस पर आमिर उठा और चूतड़ खोलकर चीख़ा, 'वा अम्राह, वा अम्राह', (हाय अम्र, हाय अम्र), इस पर क़ौम गर्म हो गई। उनका मामला संगीन और लड़ने का उनका इरादा पक्का हो गया और उत्बा ने जिस सूझ-बूझ की दावत दी थी, वह बेकार गई। इस तरह होश पर जोश छा गया और यह विवाद भी बे-नतीजा रहा।

दोनों सेनाएं आमने-सामने

बहरहाल जब मुश्रिको की सेना सामने आई और दोनों सेनाएं एक दूसरे को दिखाई पड़ने लगीं, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह ! ये क़ुरैश हैं, जो अपने पूरे दंभ व अभिमान के साथ तेरा विरोध करते हुए और तेरे रसूल सल्ल० को झुठलाते हुए आ गए हैं। ऐ अल्लाह ! तेरी मदद, जिसका तूने वायदा किया है। ऐ अल्लाह ! आज इन्हें ऐंठकर रख दे।'

साथ ही अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उत्बा बिन रबीआ को उसके एक ऊंट पर देखकर फ़रमाया—

'अगर क़ौम में से किसी के पास भलाई है, तो लाल ऊंट वाले के पास है। अगर लोगों ने इसकी बात मान ली, तो यही राह पाएंगे।'

इस मौक़े पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों की पंक्तियां ठीक कीं। पंक्तियों के ठीक करते वक़्त एक विचित्र घटना घटी। आपके हाथ में एक तीर था, जिसके ज़रिए आप पंक्ति सीधी कर रहे थे कि सवाद बिन ग़ज़ीया के पेट पर, जो पंक्ति से कुछ आगे निकले हुए थे, तीर का दबाव डालते हुए फ़रमाया, सवाद ! बराबर हो जाओ।

सवाद ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने मुझे कष्ट पहुंचा दिया, बदला दीजिए।

आपने अपना पेट खोल दिया और फ़रमाया, बदला ले लो।

सवाद आपसे चिमट गए और आपके पेट का बोसा लेने लगे।

आपने फ़रमाया, सवाद ! इस हरकत पर तुम्हें किसने उभारा ?

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जो कुछ हो रहा है, आप देख ही रहे हैं। मैंने चाहा कि ऐसे मौक़े पर आपसे आख़िरी बात यह हो कि मेरी खाल आपकी खाल से छू जाए।

इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके लिए दुआ-ए-ख़ैर फ़रमाई।

फिर जब पंक्तियां ठीक जी जा चुकीं, तो आपने फ़ौज को हिदायत फ़रमाई कि जब तक उसे आपके अन्तिम आदेश न मिल जाएं, लड़ाई शुरू न करे। इसके बाद लड़ाई के तरीक़े के बारे में एक विशेष मार्ग-दर्शन देते हुए आपने कहा कि जब मुश्रिक जमघट करके तुम्हारे क़रीब आएं, तो उन पर तीर चलाना और अपने तीर बचाने की कोशिश करना।[1] (यानी पहले ही से बेकार तीरंदाज़ी करके तीरों को बर्बाद न करना) जब तक वे तुम पर छा न जाएं, तलवार न खींचना।[2]

इसके बाद ख़ास आप और अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु छप्पर की ओर वापस गए, और हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु अपना निगरां दस्ता लेकर छप्पर के द्वार पर तैनात हो गए।

दूसरी ओर मुश्रिकों की स्थिति यह थी कि अबू जह्ल ने अल्लाह से फ़ैसले की दुआ की। उसने कहा—

'ऐ अल्लाह ! हममें से जो फ़रीक़ रिश्ते-नातों को ज़्यादा काटने वाला और ग़लत हरकतें ज़्यादा करने वाला है, तू आज उसको तोड़ दे। ऐ अल्लाह ! हममें से, जो फ़रीक़ तेरे नज़दीक ज़्यादा प्रिय और ज़्यादा पसन्दीदा है, आज उसकी मदद फ़रमा।'

बाद में इसी बात की ओर इशारा करते हुए अल्लाह ने यह आयत उतारी—

'अगर तुम फ़ैसला चाहते तो तुम्हारे पास फ़ैसला आ गया और अगर तुम रुक जाओ, तो यही तुम्हारे लिए बेहतर है। लेकिन अगर तुम (यानी इस हरकत की ओर) पलटोगे, तो हम भी (तुम्हारी सज़ा की ओर) पलटेंगे और तुम्हारी जमाअत, अगरचे वह ज़्यादा ही क्यों न हो, तुम्हारे कुछ काम न आ सकेगी। (और याद रखो कि) अल्लाह ईमान वालों के साथ है।' (8/19)

---

1. सहीह बुख़ारी 2/568
2. सुनने अबी दाऊद बाब फ़ी सल्लिस सूयुफ़ि अिन्दल लिक़ाइ 2/13

लड़ाई का पहला ईंधन

इस लड़ाई का पहला ईंधन अस्वद बिन अब्दुल असद मख़्ज़ूमी था। यह आदमी बड़ा ही अड़यल और बदतमीज़ था। यह कहते हुए मैदान में निकला कि मैं अल्लाह को वचन देता हूं कि उनके हौज़ का पानी पीकर रहूंगा वरना उसे ढा दूंगा या उसके लिए जान दे दूंगा।

जब यह उधर से निकला तो इधर से हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब बरामद हुए। दोनों में हौज़ से परे ही टकराव हो गया। हज़रत हमज़ा रज़ि० ने ऐसी तलवार मारी कि उसका पांव आधी पिंडुली से कटकर अलग हो गया और वह पीठ के बल गिर पड़ा।

उसके पांव से ख़ून का फ़व्वारा निकल रहा था, जिसका रुख़ उसके साथियों की ओर था, लेकिन इसके बावजूद वह घुटनों के बल घसिट कर हौज़ की ओर बढ़ा और उसमें दाखिल हुआ ही चाहता था, ताकि अपनी क़सम पूरी करे। इतने में हज़रत हमज़ा रज़ि० ने दूसरा वार किया और हौज़ के अन्दर ही ढेर हो गया।

लड़ाई शुरू

यह उस लड़ाई का पहला क़त्ल था और इससे लड़ाई की आग भड़क उठी। चुनांचे इसके बाद क़ुरैश के तीन सबसे बेहतर घुड़सवार निकले जो कि सबके सब एक ही ख़ानदान के थे—

एक उत्बा, दूसरा उसका भाई शैबा, जो दोनों रबीआ के बेटे थे। और तीसरा वलीद जो उत्बा का बेटा था। उन्होंने अपनी पंक्ति से आगे बढ़कर लड़ने को ललकारा।

मुक़ाबले के लिए अंसार के तीन जवान निकले—एक औफ़, दूसरे मुअव्विज़ ये दोनों हारिस के बेटे थे और इनकी मां का नाम अफ़रा था, तीसरे अब्दुल्लाह बिन रुवाहा।

क़ुरैशियों ने कहा, तुम कौन लोग हो?

उन्होंने कहा, अंसार की एक जमाअत हैं।

क़ुरैशियों ने कहा, मुक़ाबले में आने वाले आप शरीफ़ लोग हैं, लेकिन हमें आपसे कोई सरोकार नहीं। हम तो अपने चचेरे भाइयों को चाहते हैं।

फिर उनके आवाज़ लगाने वाले ने आवाज़ लगाई, मुहम्मद! हमारे पास हमारी क़ौम के बराबर के लोगों को भेजो।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उबैदा बिन

हारिस ! उठो, हमज़ा ! उठिए, अली ! उठो। जब ये लोग उठे और क़ुरैशियों के क़रीब पहुंचे, तो उन्होंने पूछा, आप कौन लोग हैं ?

उन्होंने अपना परिचय कराया।

क़ुरैशियों ने कहा, हां, आप लोग सही मुक़ाबले के हैं।

इसके बाद लड़ाई शुरू हुई।

हज़रत उबैदा ने, जो सब में ज़्यादा उम्र वाले थे, उत्बा बिन रबीआ से मुक़ाबला किया, हज़रत हमज़ा ने शैबा से और हज़रत अली रज़ि० न वलीद से।[1]

हज़रत हमज़ा रज़ि० और हज़रत अली रज़ि० ने तो अपने-अपने मुक़ाबले वालों को झट मार लिया, लेकिन हज़रत उबैदा और उनके मुक़ाबले के बीच एक-एक वार का तबादला हुआ और दोनों में से हर एक ने दूसरे को गहरा घाव लगाया। इतने में हज़रत अली और हज़रत हमज़ा रज़ि० अपने-अपने शिकार से फ़ारिग़ होकर आ गए, आते ही उत्बा पर टूट पड़े, उसका काम तमाम कर दिया और हज़रत उबैदा को उठा लाए। उनका पांव कट गया था और आवाज़ बन्द हो गई थी, जो बराबर बन्द रही, यहां तक कि लड़ाई के चौथे या पांचवें दिन जब मुसलमान मदीना वापस होते हुए सफ़रा की घाटी से गुज़र रहे थे, उनका इंतिक़ाल हो गया।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु अल्लाह की क़सम खाकर फ़रमाया करते थे कि यह आयत हमारे ही बारे में उतरी—

'ये वह दो फ़रीक़ हैं, जिन्होंने अपने रब के बारे में झगड़ा किया है।' (22/19)

आम भीड़

इस ललकार का नतीजा मुश्रिकों के लिए एक बुरी शुरूआत थी। वे एक ही छलांग में अपने तीन बेहतरीन घुड़सवारों और कमांडरों से हाथ धो बैठे थे, इसलिए उन्होंने गुस्से से बेक़ाबू होकर एक आदमी की तरह एक साथ हमला कर दिया।

दूसरी ओर मुसलमान अपने रब से मदद और हिमायत की दुआ करने और उसके हुज़ूर गिड़गिड़ा कर फ़रियाद करने के बाद अपनी-अपनी जगहों पर जमे और अपनी-अपनी हिफ़ाज़त का तरीक़ा अपनाते हुए मुश्रिकों के ताबड़-तोड़ हमलों को रोक रहे थे और उन्हें ख़ासा नुक़्सान पहुंचा रहे थे, ज़ुबान पर 'अहद-अहद' का कलिमा था।

---

1. इब्ने हिशाम, मुस्नद अहमद और अबू दाऊद की रिवायत में है कि उबैदा ने वलीद को ललकारा, अली ने शैबा को और हमज़ा ने उत्बा को। मिश्कात 2/343

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पंक्तियों को ठीक करके वापस आते ही अपने पाक परवरदिगार से मदद का वायदा पूरा करने की दुआ मांगने लगे। आपकी दुआ यह थी—

'ऐ अल्लाह! तूने मुझसे जो वायदा किया है, उसे पूरा फ़रमा दे। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरा वचन और तेरे वायदे का सवाल कर रहा हूं।'

फिर जब घमासान की लड़ाई शुरू हो गई, बड़े ज़ोर का रन पड़ा और लड़ाई पूरी तरह भड़क उठी, तो आपने यह दुआ फ़रमाई—

'ऐ अल्लाह! अगर आज यह गिरोह हलाक हो गया तो तेरी इबादत न की जाएगी। ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो आज के बाद तेरी इबादत कभी न की जाए।'

आपने ख़ूब-ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआ की, यहां तक कि दोनों कंधों से चादर गिर गई। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने चादर ठीक की और अर्ज़ किया—

'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! बस फ़रमाइए। आपने अपने रब से बहुत गिड़गिड़ा कर दुआ फ़रमा ली।'

उधर अल्लाह ने फ़रिश्तों को वह्य की कि—

'मैं तुम्हारे साथ हूं, तुम ईमान वालों के क़दम जमाओ, मैं काफ़िरों के दिलों में रौब डाल दूंगा।'

और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वह्य भेजी कि—

'मैं एक हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करूंगा, जो आगे-पीछे आएंगे।' (8-9)

फ़रिश्तों का आना

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक झपकी आई, फिर आपने सिर उठाया और फ़रमाया, 'अबूबक्र ख़ुश हो जाओ। यह जिब्रील हैं, गर्द-धूल में अटे हुए।

इब्ने इस्हाक़ की रिवायत में यह है कि आपने फ़रमाया, अबू बक्र! ख़ुश हो जाओ, तुम्हारे पास अल्लाह की मदद आ गई। यह जिब्रील अलैहिस्सलाम हैं अपने घोड़े की लगाम थामे और उसके आगे-आगे चलते हुए आ रहे हैं और धूल-गर्द में अटे हुए हैं।

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम छप्पर के

दरवाज़े से बाहर तशरीफ़ लाए। आपने कवच पहन रखी थी। आप पूरे जोश के साथ आगे बढ़ रहे थे और फ़रमाते जा रहे थे—

'बहुत जल्द यह जत्था हार जाएगा और पीठ फेर कर भागेगा।' (54-45)

इसके बाद आपने एक मुट्ठी कंकरीली मिट्टी ली और क़ुरैश की ओर रुख़ करके फ़रमाया, 'चेहरे बिगड़ जाएं'—और साथ ही मिट्टी उनके चेहरों की ओर फेंक दी, फिर मुश्रिकों में से कोई भी न था, जिसकी दोनों आंखों, नथनो और मुंहों में उस एक मुट्ठी मिट्टी में से कुछ न कुछ न गया हो। इसी के बारे में अल्लाह का इर्शाद है—

'जब आपने फेंका, तो वास्तव में आपने नहीं फेंका, बल्कि अल्लाह ने फेंका।' (8 : 17)

जवाबी हमला

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाबी हमले का हुक्म दिया और लड़ाई पर उभारते हुए फ़रमाया, 'चढ़ दौड़ो, उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, उनसे जो आदमी भी डटकर, सवाब समझकर, आगे बढ़कर लड़ेगा और मारा जाएगा, अल्लाह उसे ज़रूर जन्नत में दाखिल करेगा।

आपने लड़ाई पर उभारते हुए यह भी फ़रमाया, उस जन्नत की ओर उठो, जिसका फैलाव आसमान और ज़मीन के बराबर है।

(आपकी यह बात सुनकर) उमैर बिन हमाम ने कहा, बहुत ख़ूब, बहुत ख़ूब।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम बहुत ख़ूब, बहुत ख़ूब क्यों कह रहे हो?

उन्होंने कहा, नहीं, ख़ुदा की क़सम! ऐ अल्लाह के रसूल! कोई बात नहीं सिवाए इसके कि मुझे उम्मीद है कि मैं भी उस जन्नत वालों में से हूंगा।

आपने फ़रमाया, तुम भी उस जन्नत वालों में से हो।

इसके बाद वह अपने तोशादान से कुछ खजूरें निकालकर खाने लगे, फिर बोले, अगर मैं इतनी देर तक ज़िंदा रहा कि अपनी ये खजूरें खा लूं, तो यह तो लम्बी ज़िंदगी हो जाएगी।

चुनांचे उनके पास जो खजूरें थीं, उन्हें फेंक दिया, फिर मुश्रिकों से लड़ते-लड़ते शहीद हो गए।[1]

---

1. मुस्लिम, 2/139, मिश्कात 2/331

इसी तरह प्रसिद्ध महिला अफ़रा के बेटे औफ़ बिन हारिस ने मालूम किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! पालनहार अपने बन्दे की किस बात से (ख़ुश होकर) मुस्कराता है, आपने फ़रमाया—

'इस बात से कि बन्दा ख़ाली जिस्म (बिना हिफ़ाज़ती हथियार पहने) अपना हाथ दुश्मन के अन्दर डुबो दे।'

यह सुनकर औफ़ ने अपने देह से कवच उतार फेंका और तलवार लेकर दुश्मन पर टूट पड़े और लड़ते-लड़ते शहीद हो गए।

जिस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाबी हमले का आदेश दिया, दुश्मन के हमलों की तेज़ी जा चुकी थी और उनका जोश व ख़रोश ठंडा पड़ रहा था, इसलिए यह हिक्मत भरी योजना मुसलमानों की पोज़ीशन मज़बूत करने में बड़ी प्रभावी सिद्ध हुई, क्योंकि सहाबा किराम रज़ि० को जब हमलावर होने का हुक्म मिला और अभी उनका जिहादी जोश यौवन पर था, तो उन्होंने बड़ा ही तेज़ और सफ़ाया कर देने वाला हमला कर दिया।

वे पंक्तियों की पंक्तियां चीरते और गरदनें काटते आगे बढ़े। उनके हौसले और उत्साह में यह देखकर और ज़्यादा तेज़ी आ गई कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद ही कवच पहने सिपाहियों जैसी शान से उछलते-कूदते तशरीफ़ ला रहे हैं और सबसे आगे निकल गए हैं। उनसे ज़्यादा मुश्रिकों के कोई क़रीब नहीं है[1] और पूरे भरोसे और विश्वास के साथ कह रहे हैं कि—

'बहुत जल्द यह जत्था मुंह की खाएगा और पीठ फेरकर भागेगा।'

इसलिए मुसलमानों ने पूरे उत्साह और उमंग के साथ लड़ाई लड़ी और फ़रिश्तों ने भी उनकी मदद फ़रमाई।

चुनांचे इब्ने साद की रिवायत में हज़रत इक्रिमा रज़ि० से रिवायत है कि उस दिन आदमी का सर कट कर गिरता और यह पता न चलता कि उसे किसने मारा और आदमी का हाथ कट कर गिरता और यह पता न चलता कि उसे किसने काटा।

इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक मुसलमान एक मुश्रिक को दौड़ा रहा था कि अचानक उस मुश्रिक के ऊपर कोड़े की मार पड़ने की आवाज़ आई और एक घुड़सवार की आवाज़ सुनाई पड़ी जो कह रहा था कि हीज़ूम ! आगे बढ़।

मुसलमान ने मुश्रिक को अपने आगे देखा कि वह चित गिरा, लपककर देखा तो उसकी नाक पर चोट का निशान था। चेहरा फटा हुआ था, जैसे कोड़े से मारा

1. मुस्नद अबू याला 1/329 हदीस न० 412

गया हो और यह सब का सब हरा पड़ गया था।

उस अंसारी मुसलमान ने आकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूरा क़िस्सा बयान किया, तो आपने फ़रमाया, 'तुम सच कहते हो, यह तीसरे आसमान की मदद थी।'[1]

अबू दाऊद माज़नी कहते हैं कि मैं एक मुश्रिक को मारने के लिए दौड़ रहा था कि अचानक उसका सर मेरी तलवार पहुंचने से पहले ही कट कर गिर गया। मैं समझ गया कि इसे मेरे बजाए किसी और ने क़त्ल किया है।

एक अंसारी हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब को क़ैद करके लाया, तो हज़रत अब्बास कहने लगे, अल्लाह की क़सम! मुझे इसने क़ैद नहीं किया था, मुझे तो एक बे-बाल के सर वाले आदमी ने क़ैद किया है, जो बहुत ही सुन्दर था और एक चितकबरे घोड़े पर सवार था। अब मैं उसे लोगों में देख नहीं रहा हूं।

अंसारी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इन्हें मैंने क़ैद किया है।

आपने फ़रमाया, ख़ामोश रहो। अल्लाह ने एक बुज़ुर्ग फ़रिश्ते से तुम्हारी मदद फ़रमाई है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मुझसे और अबूबक्र रज़ि० से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बद्र के दिन फ़रमाया कि तुममें से एक के साथ जिब्रील और दूसरे के साथ मीकाईल हैं और इसराफ़ील भी एक महान फ़रिश्ता है जो लड़ाई में हाज़िर होता है।[2]

मैदान से इबलीस का भागना

जैसा कि हम बता चुके हैं, लानतज़दा इबलीस सुराक़ा बिन मालिक बिन जासम मुदलजी की शक्ल में आया था और मुश्रिकों से अब तक अलग नहीं हुआ था, लेकिन जब उसने मुश्रिकों के ख़िलाफ़ फ़रिश्तों की कार्रवाइयां देखीं तो उलटे पांव पलट कर भागने लगा, पर हारिस बिन हिशाम ने उसे पकड़ लिया। वह समझ रहा था कि यह वाक़ई सुराक़ा ही है, लेकिन इबलीस ने हारिस के सीने पर ऐसा घूंसा मारा कि वह गिर गया और इबलीस निकल भागा।

मुश्रिक कहने लगे, सुराक़ा कहां जा रहे हो? क्या तुमने यह नहीं कहा था

---

1. मुस्लिम 2/93, वग़ैरह
2. मुस्नद अहमद 1/147, बज़्ज़ार (1467), मुस्तदरक हाकिम 3/134, हाकिम ने उसे सही कहा है और ज़हबी ने साथ दिया है, साथ ही मुस्नद अबू याला 1/284 हदीस नं० 340

कि तुम हमारे मददगार हो, हमसे अलग न होगे ?

उसने कहा, मैं वह चीज़ देख रहा हूं जिसे तुम नहीं देखते। मुझे अल्लाह से डर लगता है और अल्लाह बड़ी सख़्त सज़ा वाला है। इसके बाद भाग कर समुद्र में जा रहा।

ज़बरदस्त हार

थोड़ी देर बाद मुश्रिकों की फ़ौज में नाकामी और बेचैनी के चिह्न उभरने लगे। उनकी पंक्तियां मुसलमानों के सख़्त और ताबड़ तोड़ हमलों से टूटने-फूटने लगीं और लड़ाई अंजाम के क़रीब जा पहुंची। फिर मुश्रिकों के जत्थे बे-तर्तीबी के साथ पीछे हटे और उनमें भगदड़ मच गई। मुसलमानों ने मारते-काटते और पकड़ते-बांधते उनका पीछा किया, यहां तक कि उनकी भरपूर हार हो गई।

अबू जहल की अकड़

लेकिन दुश्मने इस्लाम अबू जह्ल ने जब अपनी पंक्तियों में बेचैनी की शुरू की निशानियां देखीं, तो चाहा कि इस बाढ़ के सामने डट जाए। चुनांचे वह अपनी सेना को ललकारता हुआ अकड़ और अभिमान के साथ कहता जा रहा था कि सुराक़ा के भाग जाने से तुम्हें हिम्मत नहीं छोड़नी चाहिए, क्योंकि उसने मुहम्मद के साथ पहले से सांठ-गांठ कर रखी थी। तुम पर उत्बा, शैबा और वलीद के क़त्ल का हौल भी सवार नहीं होना चाहिए, क्योंकि इन लोगों ने जल्दबाज़ी से काम लिया था। लात व उज़्ज़ा की क़सम ! हम वापस न होंगे, यहां तक कि इन्हें रस्सियों में जकड़ लें। देखो ! तुम्हारा कोई आदमी उनके किसी आदमी को क़त्ल न करे, बल्कि उन्हें पकड़ो और गिरफ़्तार करो, ताकि हम उनकी बुरी हरकत का उन्हें मज़ा चखाएं।

लेकिन उसे इस घमंड की हक़ीक़त का बहुत जल्द पता चल गया, क्योंकि कुछ ही क्षणों के बाद मुसलमानों के जवाबी हमले की तेज़ी के सामने मुश्रिकों की पंक्तियां फटनी शुरू हो गईं।

अलबत्ता अबू जह्ल अब भी अपने चारों ओर मुश्रिकों का एक जत्थ लिए जमा हुआ था। इस जत्थे ने अबू जह्ल के चारों ओर तलवारों की बाड़ और नेज़ों का जंगल क़ायम कर रखा था, लेकिन इस्लामी भीड़ की आंधी ने इस बाड़ को भी बिखेर दिया और इस जंगल को भी उखाड़ लिया। इसके बाद यह दुश्मन दिखाई पड़ा। मुसलमानों ने देखा कि वह एक घोड़े पर चक्कर काट रहा है। इधर उसकी मौत दो अंसारी जवानों के हाथों उसका ख़ून चूसने के इंतिज़ार में थी।

अबू जहल का क़त्ल

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि मैं बद्र की लड़ाई के दिन पंक्ति के भीतर था कि अचानक मुड़ा तो क्या देखता हूं कि दाहिने-बाएं दो कम उम्र नवजवान हैं। मैं उनके मौजूद रहने से सन्तुष्ट न हुआ कि इतने में एक ने अपने साथी से छिपा कर मुझसे कहा—

'चचा जान ! मुझे अबू जह्ल को दिखा दीजिए।'

मैंने कहा, भतीजे ! तुम उसे क्या करोगे ?

उसने कहा, मुझे बताया गया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देता है। उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर मैंने उसको देख लिया, तो मेरा वजूद उसके वजूद से अलग न होगा, यहां तक कि हममें जिसकी मौत पहले लिखी है, वह मर जाएगा।

वह कहते हैं कि मुझे इस पर ताज्जुब हुआ।

इतने में दूसरे व्यक्ति ने मुझे इशारे से मुतवज्जह करके यही बात कही।

उनका बयान है कि मैंने कुछ ही क्षणों बाद देखा कि अबू जह्ल लोगों के बीच चक्कर काट रहा है। मैंने कहा, अरे देखते नहीं, यह रहा तुम दोनों का शिकार, जिसके बारे में तुम पूछ रहे थे।

उनका बयान है कि यह सुनते ही वे दोनों अपनी तलवारें लिए झपट पड़े और उसे मार कर क़त्ल कर दिया, फिर पलट कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए। आपने फ़रमाया, तुम में से किसने क़त्ल किया है ?

दोनों ने कहा, मैंने क़त्ल किया है।

आपने फ़रमाया, अपनी-अपनी तलवारें पोंछ चुके हो ?

बोले नहीं।

आपने दोनों ही तलवारें देखीं और फ़रमाया, तुम दोनों ने क़त्ल किया है। अलबत्ता अबू जह्ल का सामान मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह को दिया।

दोनों हमलावरों का नाम मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह और मुआज़ बिन अफ़रा है।[1]

---

1. सहीह बुख़ारी 1/444, 2/568, मिश्कात 2/352। कुछ दूसरी रिवायतों में दूसरा नाम मुअव्वज़ बिन अफ़रा बताया गया है। (इब्ने हिशाम 1/635) साथ ही अबू जह्ल का सामान सिर्फ़ एक ही आदमी को इसलिए दिया गया कि बाद में हज़रत मुआज़

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह ने फ़रमाया, मैंने मुश्रिकों को सुना, वे अबू जह्ल के बारे में, जो घने पेड़ों जैसी, नेज़ों और तलवारों की बाड़ में था, कह रहे थे कि अबुल हकम तक किसी की पहुंच न हो।

मुआज बिन अम्र कहते हैं कि मैंने यह बात सुनी तो उसे अपने निशाने पर ले लिया और उसकी ओर आंखें जमाए रहा। जब गुंजाइश मिली तो मैंने हमला कर दिया और ऐसी चोट लगाई कि उसका पांव आधी पिंडुली से उड़ गया। अल्लाह की क़सम, जिस वक़्त यह पांव उड़ा है, तो मैं उसकी मिसाल उस गुठली से दे सकता हूं जो मूसल की मार पड़ने पर छटक कर उड़ जाए।

उनका बयान है कि इधर मैंने अबू जह्ल को मारा और उधर उनके बेटे इक्रिमा ने मेरे कंधे पर तलवार चलाई, जिससे मेरा हाथ कट कर मेरे बाज़ू के चमड़े से लटकने लगा और लड़ाई में रुकावट पैदा करने लगा। मैंने उसे अपने पीछे घसीटते हुए आम वक़्तों में लड़ाई की, लेकिन जब वह मुझे कष्ट पहुंचाने लगा, तो मैंने उस पर अपना पांव रखा और उसे ज़ोर से खींचकर अलग कर दिया।[1]

इसके बाद अबू जह्ल के पास मुअव्वज़ बिन अफ़रा पहुंचे। यह घायल था ही। उस पर ऐसी ज़बरदस्त चोट मारी कि वह वहीं ढेर हो गया, सिर्फ़ सांस आती-जाती रही। इसके बाद मुअव्वज़ बिन अफ़रा ख़ुद भी लड़ते हुए शहीद हो गए।

जब लड़ाई ख़त्म हो गई, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कौन है जो देखे कि अबू जह्ल का अंजाम क्या हुआ?

इसके बाद सहाबा किराम रज़ि० उसकी खोज में बिखर गये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे इस हालत में पाया कि अभी सांस आ-जा रही थी। उन्होंने उसकी गरदन पर पांव रखा और सर काटने के लिए दाढ़ी पकड़ी और फ़रमाया—

'ओ अल्लाह के दुश्मन! आख़िर अल्लाह ने तुझे रुसवा किया ना?'

उसने कहा, मुझे काहे को रुसवा किया। क्या जिस आदमी को तुम लोगों ने क़त्ल किया है, उससे भी बुलन्द रुत्बा कोई आदमी है? या जिसको तुम लोगों ने

(मुअव्वज़) बिन अफ़रा उसी लड़ाई में शहीद हो गए थे, अलबत्ता अबू जह्ल की तलवार हज़रत अब्दुल्लाह बिन मऊअद रज़ि० को दी गई, क्योंकि उन्हीं ने उस (अबू जह्ल) का सर तन से अलग किया था।

(देखिए सुनने अबू दाऊद बाब अन अजा-ज़ अला जुरैहिन 2/373)

1. हज़रत मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह हज़रत उस्मान रज़ि० की ख़िलाफ़त तक ज़िंदा रहे।

क़त्ल किया, उससे भी ऊपर कोई आदमी है?

फिर बोला, काश! मुझे किसानों के बजाए किसी और ने क़त्ल किया होता?

इसके बाद कहने लगा, मुझे बताओ, आज जीत किसकी हुई?

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ने फ़रमाया, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की।

इसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से, जो उसकी गरदन पर पांव रख चुके थे, कहने लगा, 'ओ बकरी के चरवाहे! तू बड़ी ऊंची और मुश्किल जगह पर चढ़ गया। स्पष्ट रहे कि अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का में बकरियां चराया करते थे।

इस बातचीत के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसका सर काट लिया और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लाकर हाज़िर करते हुए अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! यह रहा अल्लाह के दुश्मन अबू जह्ल का सर। आपने तीन बार फ़रमाया, वाक़ई! उस ख़ुदा की क़सम, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। इसके बाद फ़रमाया—

'अल्लाहु अक्बर, तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जिसने अपना वायदा सच कर दिखाया, अपने बन्दे की मदद फ़रमाई, और अकेले सारे गिरोहों को हरा दिया।'

फिर फ़रमाया, चलो, मुझे उसकी लाश दिखाओ।

हमने आपको ले जाकर लाश दिखाई। आपने फ़रमाया, यह इस उम्मत का फ़िरऔन है।

ईमान की रोशन निशानियां

हज़रत उमैर बिन हम्माम और हज़रत औफ़ बिन हारिस बिन अफ़रा के ईमान भरे कारनामों का उल्लेख पिछले पृष्ठों में आ चुका है। सच तो यह है कि इस लड़ाई में क़दम-क़दम पर ऐसे दृश्य देखने को मिले, जिनमें अक़ीदे की ताक़त और नियम की दृढ़ता साफ़ झलक रही थी। इस लड़ाई में बाप और बेटे में, भाई और भाई में लड़ाई हुई, नियमों के मतभेद पर तलवारें म्यान से बाहर हो गईं और मज़्लूम और मक़्हूर ने ज़ालिम व क़ाहिर से टकरा कर अपने गुस्से की आग बुझाई।

1. इब्ने इस्हाक़ ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम से फ़रमाया, मुझे मालूम है कि बनू हाशिम वग़ैरह के कुछ लोग ज़बरदस्ती लड़ाई के मैदान में लाए गए हैं। उन्हें

हमारी लड़ाई से कुछ लेना-देना नहीं है, इसलिए बनू हाशिम का कोई आदमी निशाने पर आ जाए, तो वह उसे क़त्ल न करे और अब्दल बख़्तरी बिन हिशाम किसी के निशाने पर आ जाए, तो वह उसे क़त्ल न करे और अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब किसी के निशाने पर आ जाएं तो वह भी उन्हें क़त्ल न करे, क्योंकि वह ज़बरदस्ती लाए गए हैं।

इस पर उत्बा के बेटे हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, क्या हम अपने बाप, बेटों, भाइयों और कुंबे-क़बीले के लोगों को क़त्ल करेंगे और अब्बास को छोड़ देंगे ? ख़ुदा की क़सम ! अगर उससे मेरा आमना-सामना हो गया, तो मैं तो उसे तलवार की लगाम पहना दूंगा।

यह ख़बर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पहुंची, तो आपने उमर बिन ख़त्ताब से फ़रमाया, क्या अल्लाह के रसूल सल्ल० के चचा के चेहरे पर तलवार मारी जाएगी ?

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे छोड़िए, मैं तलवार से इस आदमी की गरदन उड़ा दूं, क्योंकि अल्लाह की क़सम ! यह आदमी मुनाफ़िक़ हो गया है।

बाद में अबू हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु कहा करते थे, उस दिन मैंने जो बात कह दी थी, उसकी वजह से मैं सन्तुष्ट नहीं हूं, बराबर डर लगा रहता है, सिर्फ़ यही शक्ल है कि मेरी शहादत इसका बदला बन जाए और आख़िरकार वह यमामा की लड़ाई में शहीद हो ही गए।

2. अबुल बख़्तरी को क़त्ल करने से इसलिए मना किया गया था कि मक्का में यह व्यक्ति सबसे ज़्यादा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कष्ट पहुंचाने से अपना हाथ रोके हुए था। आपको किसी भी क़िस्म की तक्लीफ़ न पहुंचाता था और न उसकी ओर से कोई नागवार बात सुनने में आती थी और यह उन लोगों में से था, जिन्होंने बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब के बहिष्कार का काग़ज़ टुकड़े-टुकड़े कर डाला था।

लेकिन इन सबके बावजूद अबुल बख़्तरी क़त्ल कर दिया गया। हुआ यह कि हज़रत मुजि़्ज़र बिन ज़ियाद बलवी से इसका टकराव हो गया। उसके साथ उसका एक और साथी भी था। दोनों साथ-साथ लड़ रहे थे।

हज़रत मुजि़्ज़र ने कहा, अबुल बख़्तरी! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें आपको क़त्ल करने से मना किया है।

उसने कहा, और मेरा साथी ?

हज़रत मुज्ज़िर ने कहा, नहीं। खुदा की क़सम, हम आपके साथी को नहीं छोड़ सकते।

उसने कहा, ख़ुदा की क़सम! तब मैं और वह दोनों मरेंगे। इसके बाद दोनों ने लड़ाई शुरू कर दी। मुज्ज़िर रज़ि० ने मजबूरन उसे भी क़त्ल कर दिया।

3. मक्के के अन्दर अज्ञानता-युग से हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु और उमैया बिन ख़लफ़ में आपस में दोस्ती थी। बद्र की लड़ाई के दिन उमैया अपने लड़के अली का हाथ पकड़े खड़ा था कि इतने में उधर से हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० का गुज़र हुआ। वह दुश्मन से कुछ कवचें छीन कर लादे लिए जा रहे थे। उमैया ने उन्हें देखकर कहा, क्या तुम्हें मेरी ज़रूरत है? मैं तुम्हारी इन कवचों से बेहतर हूं। आज जैसा दृश्य तो मैंने देखा ही नहीं। क्या तुम्हें दूध की ज़रूरत नहीं? मतलब यह था कि जो मुझे क़ैद करेगा, मैं उसे फ़िदए में ख़ूब दुधारी ऊंटनियां दूंगा।

यह सुनकर अब्दुरहान बिन औफ़ ने कवचें फेंक दीं और दोनों को गिरफ़्तार करके आगे बढ़े।

हज़रत अब्दुर्रहान कहते हैं कि मैं उमैया और उसके बेटे के दर्मियान चल रहा था कि उमैया ने पूछा, आप लोगों में वह कौन-सा आदमी था जो अपने सीने पर शुतुरमुर्ग़ का पर लगाए हुए था?

मैंने कहा, वह हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब थे।

उमैया ने कहा, यही आदमी है जिसने हमारे अन्दर तबाही मचा रखी थी।

हज़रत अब्दुर्रहमान कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! मैं इन दोनों को लिए जा रहा था कि अचानक हज़रत बिलाल रज़ि० ने उमैया को मेरे साथ देख लिया, याद रहे कि उमैया हज़रत बिलाल रज़ि० को मक्का में बहुत सताया करता था, हज़रत बिलाल रज़ि० ने कहा, ओहो, कुफ़्र का सर! उमैया बिन ख़लफ़! अब या तो मैं बचूंगा या यह बचेगा?

मैंने कहा, ऐ बिलाल! यह मेरा क़ैदी है।

उन्होंने कहा, अब या तो मैं रहूंगा या यह रहेगा।

मैंने कहा, कलौटी के बेटे! सुन रहे हो, उन्होंने कहा, अब या तो मैं रहूंगा या यहं रहेगा।

फिर बड़ी ऊंची आवाज़ में पुकार कर कहा, ऐ अल्लाह के अंसारो! यह रहा कुफ़्र का सर उमैया बिन ख़लफ़। अब या तो मैं रहूंगा या यह रहेगा।

हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० कहते हैं कि इतने में लोगों ने हमें कंगन की तरह

घेरे में ले लिया। मैं उनका बचाव कर रहा था। मगर एक आदमी ने तलवार सौंत कर उसके बेटे के पांव पर चोट लगाई। वह चकरा कर गिर पड़ा। उधर उमैया ने इतने ज़ोर की चीख़ मारी कि मैंने वैसी चीख़ कभी सुनी ही न थी। मैंने कहा, निकल भागो! मगर आज भागने की गुंजाइश नहीं। ख़ुदा की क़सम! मैं तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकता।

हज़रत अब्दुर्रहमान का बयान है कि लोगों ने अपनी तलवारों से इन दोनों को काट कर उनका काम तमाम कर दिया।

इसके बाद हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० कहा करते थे, अल्लाह बिलाल पर रहम करे, मेरे कवच भी गए और मेरे क़ैदी के बारे में मुझे तड़पा भी दिया।

इमाम बुख़ारी ने अब्दुर्रहमान बिन औफ़ से रिवायत की है, उनका बयान है कि मैंने उमैया बिन ख़लफ़ से तै किया कि वह मक्का में मेरे माल और मुताल्लिक़ चीज़ों की हिफ़ाज़त करेगा। बद्र के दिन जब लोगों ने राहत महसूस की तो मैं एक पहाड़ की तरफ़ निकला कि उसे (क़ैदियों) में समेट लूं, लेकिन बिलाल ने उसे देख लिया और निकलकर अंसार की एक मज्लिस पर जा खड़े हुए और कहने लगे, उमैया बिन ख़ल्फ़ है। अब या तो वह रहेगा या मैं रहूंगा। इस पर अंसार के एक गिरोह ने उनके साथ निकलकर हमारा पीछा कर लिया। जब मैंने देखा कि वह हमें पा लेंगे तो मैंने उमैया के बेटे को पीछे छोड़ दिया, ताकि वे उसी में लग जाएं मगर उन्होंने उसे क़त्ल करके फिर हमारा पीछा कर लिया। उमैया भारी भरकम आदमी था। जब उन्होंने हमें पा लिया, तो मैंने उससे कहा, बैठ जाओ। वह बैठ गया और मैंने अपने आपको उसके ऊपर डाल दिया, ताकि उसे बचा सकूं; मगर लोगों ने मेरे नीचे से तलवार मार-मारकर उसे क़त्ल कर दिया। किसी की तलवार मेरे पांव को भी जा लगी। चुनांचे अब्दुर्रहमान अपने पांव की पीठ पर उसका निशान दिखाया करते थे।[1]

4. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने मामूं आस बिन हिशाम बिन मुग़ीरह को क़त्ल किया और रिश्तेदारी की कोई परवाह न की, लेकिन जब वापस आए, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत अब्बास से—जो क़ैद में थे—कहा कि ऐ अब्बास! इस्लाम लाइए। अल्लाह की क़सम! आपका मुसलमान हो जाना मेरे नज़दीक ख़त्ताब के मुसलमान होने से ज़्यादा पसन्दीदा है और यह सिर्फ़ इसलिए कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा है कि उनके नज़दीक आपका

1. सहीह बुख़ारी, किताबुल वकाला, 1/308

इस्लाम लाना पसन्दीदा है।[1]

5. हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु ने अपने बेटे अब्दुर्रहमान को, जो उस वक़्त मुश्रिकों के साथ थे, पुकार कर कहा, ओ ख़बीस ! मेरा माल कहां है ?

अब्दुर्रहमान ने कहा, हथियार, तेज रफ़्तार घोड़े और इस तलवार के सिवा कुछ बाक़ी नहीं, जो गुमराह बूढ़ों का अन्त करती है।

6. जिस वक़्त मुसलमानों ने मुश्रिकों की गिरफ़्तारी शुरू की, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम छप्पर में तशरीफ़ रखते थे और हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु तलवार लिए दरवाज़े पर पहरा दे रहे थे।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देखा कि हज़रत साद रज़ि० के चेहरे पर लोगों की इस हरकत का नागवार असर पड़ रहा है, आपने फ़रमाया, ऐ साद ! ख़ुदा की क़सम ! ऐसा महसूस होता है कि आपको मुसलमानों का यह काम नागवार है।

उन्होंने कहा, जी हां ! ख़ुदा की क़सम, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह शिर्क वालों के साथ पहली लड़ाई है जिसका मौक़ा अल्लाह ने हमें दिया है। इसलिए शिर्क वालों को बाक़ी छोड़ने के बजाए मुझे यह बात ज़्यादा पसन्द है कि उन्हें ख़ूब क़त्ल किया जाए, और अच्छी तरह कुचल दिया जाए।

7. इस लड़ाई में हज़रत उकाशा बिन मोहसिन असदी रज़ियल्लाहु अन्हु की तलवार टूट गई। वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आपने उन्हें लकड़ी का एक फट्टा थमा दिया और फ़रमाया—

'उकाशा ! इसी से लड़ाई करो।'

उकाशा ने उसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लेकर हिलाया तो वह एक लम्बी, मज़बूत और चमचम करती हुई सफ़ेद तलवार में बदल गया। फिर उन्होंने उसी से लड़ाई की, यहां तक कि अल्लाह ने मुसलमानों को जीत दिला दी। इस तलवार का नाम औन (यानी मदद) रखा गया था।

यह तलवार स्थाई रूप से हज़रत उकाशा रज़ि० के पास रही और वह इसी को लड़ाइयों में इस्तेमाल करते रहे, यहां तक कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० के ज़माने में इस्लाम से विमुख (मुर्तद्द) लोगों के ख़िलाफ़ लड़ते हुए शहीद हो गए। उस वक़्त भी यह तलवार उनके पास ही थी।

---

1. इसे हाकिम ने मुस्तदरक में रिवायत किया है। (देखिए फ़त्हुल क़सीर शौकानी 2/327)

8. लड़ाई के ख़त्म पर हज़रत मुसअब बिन उमैर अब्दरी रज़ियल्लाहु अन्हु अपने भाई अबू अज़ीज़ बिन उमैर अब्दरी के पास से गुज़रे। अबू अज़ीज़ ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ी थी और उस वक़्त एक अंसारी सहाबी उसका हाथ बांध रहे थे। हज़रत मुसअब रज़ि० ने उस अंसारी से कहा—

'इस व्यक्ति द्वारा अपने हाथ मज़बूत करना। इसकी मां बड़ी मालदार है, वह शायद तुम्हें अच्छा फ़िदया देगी।'

इस पर अबू अज़ीज़ ने अपने भाई मुसअब से कहा, क्या मेरे बारे में तेरी यही वसीयत है?

हज़रत मुसअब ने फ़रमाया, (हां!) तुम्हारे बजाए यह अंसारी मेरा भाई है।

9. जब मुश्रिकों की लाशों को कुंएं में डालने का हुक्म दिया गया और उत्बा बिन रबीआ को कुंएं की ओर घसीट कर ले जाया जाने लगा, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके लड़के अबू हुज़ैफ़ा (रज़ि०) के चेहरे पर नज़र डाली, देखा तो दुखी थे, चेहरा बदला हुआ था।

आपने फ़रमाया, अबू हुज़ैफ़ा! शायद अपने बाप के सिलसिले में तुम्हारे मन की कुछ भावनाएं हैं?

उन्होंने कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मेरे अन्दर अपने बाप के बारे में और उसके क़त्ल के बारे में तनिक भी कोई बात नहीं, अलबत्ता मैं अपने बाप के बारे में जानता था कि उसमें सूझ-बूझ है, दूरदर्शिता और बुद्धि है, इसलिए मैं आशा किए बैठा था ये ख़ूबियां उसे इस्लाम तक पहुंचा देंगी, लेकिन अब उनका अंजाम देखकर और अपनी आशा के विपरीत कुफ़्र पर उसका ख़ात्मा देखकर मुझे अफ़सोस है।

इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ि० के हक़ में दुआ फ़रमाई और उनसे भली बात कही।

दोनों ओर के क़त्ल किए गए लोग

यह लड़ाई, मुश्रिकों की ज़बरदस्त हार, और मुसलमानों की खुली जीत पर ख़त्म हुई और इसमें चौदह मुसलमान शहीद हुए। छः मुहाजिरों में से और आठ अंसार में से, लेकिन मुश्रिकों को भारी नुक़्सान उठाना पड़ा। उनके सत्तर आदमी मारे गए और सत्तर क़ैद किए गए, जो आम तौर पर नेता, सरदार और बड़े ऊंचे लोग थे।

लड़ाई ख़त्म होने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

क़त्ल किए गए लोगों के पास खड़े होकर फ़रमाया—

'तुम लोग अपने नबी के लिए कितना बड़ा कुंबा और क़बीला थे। तुमने मुझे झुठलाया, जबकि औरों ने मेरी तस्दीक़ की। तुमने मुझे बे-यार व मददगार छोड़ा, जबकि औरों ने मेरी ताईद की, तुमने मुझे निकाला, जबकि औरों ने मुझे पनाह दी।' इसके बाद आपने हुक्म दिया और उन्हें घसीट कर बद्र के कुंएं में डाल दिया गया।

हज़रत अबू तलहा रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म से बद्र के दिन कुरैश के चौबीस बड़े-बड़े सरदारों की लाशें बद्र के एक गन्दे ख़बीस कुंएं में फेंक दी गईं।

आपका तरीक़ा था कि आप जब किसी क़ौम पर विजयी होते तो तीन दिन लड़ाई के मैदान में ठहरे रहते। चुनांचे जब बद्र में तीसरा दिन आया तो आपके आदेशानुसार आपकी सवारी तैयार की गई। इसके बाद आप पैदल चले और पीछे-पीछे सहाबा किराम रज़ि० भी चले, यहां तक कि आप कुंएं की बाड़ पर खड़े हो गए, फिर उन्हें और उनके बाप का नाम ले-लेकर पुकारना शुरू किया, ऐ फ़्लां बिन फ़्लां और ऐ फ़्लां बिन फ़्लां! क्या अच्छा होता कि तुमने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की इताअत की होती? क्योंकि हमसे हमारे रब ने जो वायदा किया था, उसे हमने सच पाया, तो क्या तुम्हारे रब ने जो वायदा किया था, उसे तुमने सच पाया?

हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप ऐसे जिस्मों से क्या बातें कर रहे हैं, जिनमें रूह ही नहीं?

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, मैं जो कुछ कह रहा हूं उसे तुम लोग इनसे ज़्यादा नहीं सुन रहे हो।

और एक रिवायत में है कि तुम लोग उनसे ज़्यादा सुनने वाले नहीं, लेकिन ये लोग जवाब नहीं दे सकते।[1]

मक्के में हारने की ख़बर

मुश्रिकों ने बद्र के मैदान से भागते हुए तितर-बितर होकर घबराहट की हालत में मक्का का रुख़ किया। शर्म और लाज की वजह से उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि किस तरह मक्के में दाख़िल हों।

---

1. बुख़ारी-मुस्लिम, मिश्कात 2/345

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि सबसे पहले जो व्यक्ति क़ुरैश के हारने की ख़बर लेकर मक्का में दाख़िल हुआ, वह हैसमान बिन अब्दुल्लाह ख़ुज़ाई था।

लोगों ने उससे पूछा कि पीछे की क्या ख़बर है?

उसने कहा, उत्बा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, अबुल हकम बिन हिशाम, उमैया बिन ख़लफ़ (और कुछ और सरदारों का नाम लेते हुए) ये सब क़त्ल कर दिए गये। जब उसने क़त्ल किए गए लोगों की सूची में क़ुरैश के सरदारों को गिनाना शुरू किया, तो सफ़वान बिन उमैया ने जो हतीम में बैठा था, कहा, ख़ुदा की क़सम, अगर यह होश में है, तो इससे मेरे बारे में पूछो।

लोगों ने पूछा, सफ़वान बिन उमैया का क्या हुआ?

उसने कहा, वह तो वह देखो हतीम में बैठा हुआ है। ख़ुदा की क़सम! उसके बाप और उसके भाई को क़त्ल होते हुए मैंने ख़ुद देखा है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दास अबू राफ़ेअ का बयान है कि मैं उन दिनों हज़रत अब्बास रज़ि० का ग़ुलाम था। हमारे घर में इस्लाम दाख़िल हो चुका था। हज़रत अब्बास रज़ि० मुसलमान हो चुके थे, उम्मुल फ़ज़्ल मुसलमान हो चुकी थीं, मैं भी मुसलमान हो चुका था, अलबत्ता हज़रत अब्बास रज़ि० ने अपना इस्लाम छिपा रखा था। उधर अबू लहब बद्र की लड़ाई में हाज़िर न हुआ था, जब उसे ख़बर मिली तो अल्लाह ने उस पर ज़िल्लत और रुसवाई डाल दी। मैं कमज़ोर आदमी था, तीर बनाया करता था और ज़मज़म के हुजरे में बैठा तीर के दस्ते छीलता रहता था। अल्लाह की क़सम! उस वक़्त मैं हुजरे में बैठा अपने तीर छील रहा था। मेरे पास उम्मुल फ़ज़्ल बैठी हुई थीं और जो ख़बर आई थी, उससे हम ख़ुश थे कि इतने में अबू लहब अपने दोनों पांव बुरी तरह घसीटता हुआ आ पहुंचा और हुजरे के किनारे पर बैठ गया। उसकी पीठ मेरी पीठ की तरफ़ थी।

अभी वह बैठा ही हुआ था कि अचानक शोर हुआ—यह अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब आ गया।

अबू लहब ने कहा, भतीजे बताओ, लोगों का क्या हाल रहा?

उसने कहा, कुछ नहीं। बस लोगों से हमारा टकराव हुआ और हमने अपने कंधे उनके हवाले कर दिए। वे हमें जैसे चाहते थे, क़त्ल करते थे और जैसे चाहते थे, क़ैद करते थे, और ख़ुदा की क़सम! मैं इसके बावजूद लोगों को मलामत नहीं कर सकता। सच तो यह है कि हमारा टकराव कुछ ऐसे गोरे-चट्टे लोगों से हुआ था, जो आसमान व ज़मीन के बीच चितकबरे घोड़ों पर सवार थे।

ख़ुदा की क़सम, न वे किसी चीज़ को छोड़ते थे और न कोई चीज़ उनके मुक़ाबले में टिक पाती थी।

अबू राफ़ेअ कहते हैं कि मैंने अपने हाथ से ख़ेमे का किनारा उठाया, फिर कहा, वे ख़ुदा की क़सम फ़रिश्ते थे।

यह सुनकर अबू लहब ने अपना हाथ उठाया और मेरे चेहरे पर ज़ोरदार थप्पड़ रसीद किया। मैं उससे लड़ पड़ा, लेकिन उसने मुझे उठा कर ज़मीन पर पटक दिया। फिर मेरे ऊपर घुटने के बल बैठकर मुझे मारने लगा। मैं तो कमज़ोर ठहरा, लेकिन इतने में उम्मुल फ़ज़्ल ने उठ कर ख़ेमे का एक खम्बा लिया और उसे ऐसी मार मारी कि सर में बुरी तरह चोट आ गई और साथ ही बोली, इसका मालिक नहीं है, इसलिए इसे कमज़ोर समझ रखा है।

अबू लहब रुसवा होकर उठा और चला गया। इसके बाद सिर्फ़ रात गुज़ारी थी कि अल्लाह ने उसे अदसा (एक क़िस्म के ताऊन) की मार मारी और उसका ख़ात्मा कर दिया। अदसा की गिलटी को अरब बहुत मनहूस (अशुभ) समझते थे, चुनांचे (मरने के बाद) उसके बेटों ने भी उसे यों ही छोड़ दिया और वह तीन दिन बे-कफ़न-दफ़न पड़ा रहा। कोई उसके क़रीब न जाता था और न उसे दफ़नाने की कोशिश करता था।

जब उसके बेटों को खतरा महसूस हुआ कि इस तरह छोड़ने पर लोग उसकी निन्दा करेंगे, तो एक गढ़ा खोदकर उसी में लकड़ी से उसकी लाश धकेल दी और दूर ही से पत्थर फेंक कर छिपा दिया।

ग़रज़ इस तरह मक्का को बद्र के मैदान में बुरी हार का मुंह देखना पड़ा और उनकी तबियत पर इसका बहुत ही बुरा असर पड़ा, यहां तक कि उन्होंने मक़्तूलों पर नौहा करने पर रोक लगा दी, ताकि मुसलमानों को बुरा-भला कहने का मौक़ा न मिले।

इस सिलसिले की एक रोचक घटना यह है कि बद्र की लड़ाई में अस्वद बिन अब्दुल मुत्तलिब के तीन बेटे मारे गए, इसलिए वह उन पर रोना चाहता था। वह अंधा आदमी था। एक रात उसने एक नौहा करने वाली औरत की आवाज़ सुनी। झट अपने दास को भेजा और कहा, तनिक देखो, क्या नौहा करने की इजाज़त मिल गई है? क्या क़ुरैश अपने क़त्ल किए गए लोगों पर रो रहे हैं, ताकि मैं भी अपने बेटे अबू हकीमा पर रोऊं, क्योंकि मेरा सीना जल रहा है।

दास ने वापस आकर बताया कि यह औरत तो अपने एक गुम ऊंट पर रो रही है। अस्वद यह सुनकर अपने आप पर क़ाबू न पा सका और बे-अख़्तियार कह पड़ा—

'क्या वह इस बात पर रोती है कि उसका ऊंट ग़ायब हो गया? और उस पर दुःस्वप्न ने उसकी नींद हराम कर रखी है? तो ऊंट पर न रो, बल्कि बद्र पर रो, जहां भाग्य फूट गए। हां, हां, बद्र पर रो जहां बनी हसीस, बनी मख़्ज़ूम और अबुल वलीद के क़बीले के ऊंचे लोग हैं। अगर रोना ही है, तो अक़ील पर रो और हारिस पर रो जो शेरों का शेर था, तू उन लोगों पर रो और सबका नाम न ले और अबू हकीमा का तो कोई बराबर का न था, देखो, इनके बाद ऐसे-ऐसे लोग सरदार हो गए कि अगर बद्र का दिन न होता, तो वे सरदार न हो सकते थे।'

मदीना में जीत की ख़ुशख़बरी

इधर मुसलमानों की जीत पूरी हुई तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना वालों को जल्द से जल्द ख़ुशख़बरी देने के लिए दो दूत भेजे—

एक हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु, जिन्हें अवाली (ऊपरी मदीना) के निवासियों के पास भेजा गया था,

और दूसरे हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु, जिन्हें निचले मदीना के निवासियों के पास भेजा गया था।

इस बीच यहूदियों और मुनाफ़िक़ों ने झूठा प्रचार कर करके मदीने में हलचल मचा रखी थी, यहां तक कि यह भी उड़ा रखा था कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़त्ल कर दिए गए हैं, चुनांचे जब एक मुनाफ़िक़ ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऊंटनी क़सवा पर सवार आते देखा तो बोल पड़ा, वाक़ई मुहम्मद सल्ल० क़त्ल कर दिए गए हैं। देखो, यह तो उन्हीं की ऊंटनी है, हम उसे पहचानते हैं और यह ज़ैद बिन हारिसा है, हार कर भागा है और इतना रौब खाया हुआ है कि उसकी समझ में नही आता कि क्या कहे।

बहरहाल जब दोनों दूत पहुंचे तो मुसलमानों ने उन्हें घेर लिया और उनसे सविस्तार जानने की कोशिश करने लगे, यहां तक कि उन्हें यक़ीन आ गया कि मुसलमान विजयी हुए हैं।

इसके बाद हर ओर ख़ुशी की लहर दौड़ गई और मदीने के दर व दीवार अल्लाहु अक्बर के नारों से गूंज उठे और जो ऊंचे क़िस्म के मुसलमान मदीना में रह गए थे, वे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस खुली जीत की मुबारकबाद देने के लिए बद्र के रास्ते पर निकल पड़े।

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि हमारे पास उस वक़्त ख़बर पहुंची जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी

हज़रत रुक़ैया रज़ि० को, जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के निकाह में थीं, दफ़न करके क़ब्र पर मिट्टी बराबर कर चुके थे। उनकी देखभाल के लिए हज़रत उस्मान रज़ि० के साथ मुझे भी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीने ही में छोड़ दिया था।

ग़नीमत के माल की समस्या

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लड़ाई ख़त्म होने के बाद तीन दिन बद्र में रुके रहे और अभी आपने लड़ाई के मैदान से कूच नहीं फ़रमाया था कि ग़नीमत के माल के बारे में सेना में मतभेद हो गया और जब यह मतभेद बहुत बढ़ गया तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि जिसके पास जो कुछ है, वह आपके हवाले कर दे। सहाबा किराम रज़ि० ने इस आदेश का पालन किया और इसके बाद अल्लाह की वह्य के ज़रिए इस मसले का हल उतरा—

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि हम लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मदीना से निकले और बद्र में पहुंचे। लोगों से लड़ाई हुई और अल्लाह ने दुश्मन को हराया, फिर एक गिरोह उनके पीछे लग गया और उन्हें खदेड़ने और क़त्ल करने लगा और एक गिरोह ग़नीमत के माल पर टूट पड़ा और उसे बटोरने और समेटने लगा और एक गिरोह ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आस-पास घेरा डाले रखा, कि शायद दुश्मन धोखे से आपको कोई कष्ट पहुंचा दे।

जब रात आई और लोग पलट-पलट कर एक दूसरे के पास पहुंचे तो ग़नीमत का माल जमा करने वालों ने कहा कि हमने इसे जमा किया है, इसलिए इसमें किसी और का हिस्सा नहीं।

दुश्मन का पीछा करने वालों ने कहा, तुम लोग हमसे बढ़कर इसके हक़दार नहीं, क्योंकि इस माल से दुश्मन को भगाने और दूर रखने का काम हमने किया था और जो लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त फ़रमा रहे थे, उन्होंने कहा, हमें यह ख़तरा था कि दुश्मन आपको ग़फ़लत में पाकर कोई पीड़ा न पहुंचा दे, इसलिए हम आपकी हिफ़ाज़त में रहे। इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

'लोग आपसे ग़नीमत के माल के बारे में पूछते हैं। कह दो, ग़नीमत अल्लाह और रसूल सल्ल० के लिए है, पस अल्लाह से डरो और अपने आपसी ताल्लुक़ात सुधार लो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो, अगर

वाक़ई तुम लोग ईमान वाले हो।' (8 : 1)

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (मदीना वापस आते हुए) ग़नीमत के माल को मुसलमानों में बांट दिया।[1]

इस्लामी फ़ौज मदीना के रास्ते में

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन दिन बद्र में ठहर कर मदीना के लिए चल पड़े। आपके साथ मुश्रिक क़ैदी भी थे और मुश्रिकों से हासिल किया हुआ ग़नीमत का माल भी। आपने हज़रत अब्दुल्लाह बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु को इसकी निगरानी सौंपी थी।

जब आप सफ़रा घाटी के दर्रे से बाहर निकले तो दर्रे और नाज़िया के बीच में एक टीले पर पड़ाव डाला और वहीं ख़ुम्स (पांचवां हिस्सा) अलग करके ग़नीमत का बाक़ी माल मुसलमानों में बराबर-बराबर बांट दिया।

सफ़रा घाटी ही में आपने यह हुक्म दिया कि नज़्र बिन हारिस को क़त्ल कर दिया जाए। उस व्यक्ति ने बद्र की लड़ाई में मुश्रिकों का झंडा उठा रखा था और यह क़ुरैश के बड़े मुजरिमों में से था। इस्लाम दुश्मनी में और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पीड़ा पहुंचाने में हद दर्जा आगे बढ़ा हुआ था। आपके हुक्म पर हज़रत अली रज़ि० ने उसकी गरदन मार दी।

इसके बाद जब आप इर्क़ुज़्ज़बीया पहुंचे तो उक़्बा बिन अबी मुऐत के क़त्ल का हुक्म दिया। यह व्यक्ति जिस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पीड़ा पहुंचाया करता था, उसका कुछ उल्लेख पीछे हो चुका है।

यही व्यक्ति है जिसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सललम की पीठ पर नमाज़ की हालत में ऊंट की ओझ डाली थी और इसी व्यक्ति ने चादर में आपकी गरदन लपेट कर आपको क़त्ल करना चाहा था और अगर अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ठीक वक़्त पर आ न गए होते, तो उसने (अपने जानते-बूझते) आपका गला घोंट कर मार ही डाला था।

जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके क़त्ल का हुक्म दिया, तो कहने लगा, ऐ मुहम्मद ! बच्चों के लिए कौन है ?

आपने फ़रमाया, आग।[2]

---

1. मुस्नद अहमद, 5/323-324, हाकिम 2/326
2. यह हदीस की किताबों में रिवायत की गई है, जैसे, देखिए सुनने अबू दाऊद, मय शरह औनुल माबूद 3/12

इसके बाद हज़रत आसिम बिन साबित अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने (और कहा जाता है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने) उसकी गरदन मार दी।

सामरिक दृष्टिकोण से इन दोनों बड़े दुश्मनों का क़त्ल किया जाना ज़रूरी था, क्योंकि ये सिर्फ़ लड़ाई में पकड़े गए क़ैदी न थे, बल्कि पारिभाषिक शब्दों में युद्ध-अपराधी भी थे।

मुबारकबाद पेश करने वाले

इसके बाद जब आप रौहा नामी स्थान पर पहुंचे, तो उन मुसलमान सरदारों से मुलाक़ात हुई जो दोनों दूतों से जीत की ख़बर सुनकर आपका स्वागत करने और आपको जीत पर मुबारकबाद पेश करने के लिए मदीना से निकल पड़े थे।

जब उन्होंने मुबारकबाद पेश की, तो हज़रत सलमा बिन सलामा रज़ि० ने कहा, आप लोग हमें किस बात की मुबारकबाद दे रहे हैं। हमारा टकराव तो ख़ुदा की क़सम, गंजे सर के बूढ़ों से हुआ था जो ऊंट जैसे थे।

इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुस्करा कर फ़रमाया, 'भतीजे ! यही लोग क़ौम के सरदार थे।'

इसके बाद हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहना शुरू किया—

'ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! अल्लाह ही के लिए हैं तमाम तारीफ़ें कि उसने आपको कामियाबी दी और आपकी आंखों को ठंडक बख़्शी। ख़ुदा की क़सम ! मैं यह समझते हुए बद्र से पीछे न रहा था कि आपका टकराव दुश्मन से होगा। मैं तो समझ रहा था कि बस क़ाफ़िले का मामला है और अगर मैं यह समझता कि दुश्मन से वास्ता पड़ेगा, तो मैं पीछे न रहता।'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, सच कहते हो।

इसके बाद आप मदीना मुनव्वरा में इस तरह विजयी सेना के रूप में दाख़िल हुए कि शहर और आस-पास के सारे दुश्मनों पर आपकी धाक बैठ चुकी थी। इस विजय के कारण मदीना के बहुत से लोग इस्लाम की गोद में आ गए और इसी मौक़े पर अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथियों ने भी दिखावे के लिए इस्लाम क़ुबूल किया।

आपके मदीना आने के एक दिन बाद क़ैदियों का आना हुआ, आपने उन्हें सहाबा किराम रज़ि० में बांट दिया और उनके साथ सद्व्यवहार की वसीयत फ़रमाई। इस वसीयत का नतीजा यह था कि सहाबा किराम रज़ि० ख़ुद खाते थे, लेकिन क़ैदियों को रोटी पेश करते थे। (स्पष्ट रहे कि मदीने में खजूर बे-हैसियत चीज़ थी और रोटी ज़्यादा क़ीमती)

क़ैदियों की समस्या

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना पहुंच गए तो आपने सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन से क़ैदियों के बारे में मश्विरा किया। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ये लोग चचेरे भाई और कुंबे-क़बीले के लोग हैं। मेरी राय यह है कि आप इनसे फ़िदया ले लें। इस तरह जो कुछ हम लेंगे, वह कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ हमारी ताक़त का ज़रिया होगा और यह भी उम्मीद की जाती है कि अल्लाह उन्हें हिदायत दे दे और वे हमारे बाज़ू बन जाएं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इब्ने ख़त्ताब ! तुम्हारी क्या राय है ?

उन्होंने कहा, ख़ुदा की क़सम, मेरी वह राय नहीं है जो अबबक्र की है। मेरी राय है कि आप फ़्लां को, जो हज़रत उमर रज़ि० का क़रीबी था, मेरे हवाले करें और मैं उसकी गरदन मार दूं। अक़ील बिन अबी तालिब को अली के हवाल करें वह उसकी गरदन मारें और फ़्लां को जो हमज़ा का भाई है, हमज़ा के हवाले करें और वह उसकी गरदन मार दें, यहां तक कि अल्लाह को मालूम हो जाए कि हमारे दिलों में मुश्रिकों के लिए नर्म कोना नहीं है और ये लोग मुश्रिकों के बड़े और सरदार हैं।

हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की बात पसन्द फ़रमाई और मेरी बात पसन्द नहीं फ़रमाई, चुनांचे क़ैदियों से फ़िदया लेना तै कर लिया गया।

इसके बाद जब अगला दिन आया, तो मैं सुबह ही सुबह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अबूबक्र रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। वे दोनों रो रहे थे। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे बताएं आप और आपके साथी क्यों रो रहे हैं ? अगर मुझे भी रोने की वजह मालूम हुई तो रोऊंगा और न मालूम हो सकी तो आप लोगों के रोने की वजह से रोऊंगा।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, फ़िदया क़ुबूल करने की वजह से तुम्हारे लोगों पर जो चीज़ पेश की गई है, उसी की वजह से रो रहा हूं।'

और आपने एक क़रीबी पेड़ की ओर इशारा करते हुए फ़रमाया, मुझ पर इनका अज़ाब इस पेड़ से भी ज़्यादा क़रीब पेश किया गया।[1] और अल्लाह ने

---

1. तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब, इब्ने जौज़ी, पृ० 36

यह आयत उतारी—

'किसी नबी के लिए सही नहीं कि उसके पास क़ैदी हों, यहां तक कि वह धरती अच्छी तरह ख़ूंरेज़ी कर ले। तुम लोग दुनिया का सामान चाहते हो और अल्लाह आख़िरत चाहता है और अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है। अगर अल्लाह की ओर से लिखी चीज़ पहले न आ चुकी होती तो तुम लोगों ने जो कुछ लिया है, उस पर तुमको सख़्त अज़ाब पकड़ लेता।' (8 : 67-68)

और अल्लाह की ओर से जो लिखा पहले आ चुका था, कहा जाता है कि वह यह था—

'मुश्रिकों को लड़ाई में क़ैद करने के बाद या तो एहसान करो या फ़िदया ले लो।' (47 : 4)

चूंकि इस लिखे में क़ैदियों से फ़िदया लेने की इजाज़त दी गई है, इसलिए सहाबा किराम को फ़िदया क़ुबूल करने पर अज़ाब नहीं दिया गया, बल्कि सिर्फ़ डांटा गया और डांट भी इसलिए कि उन्होंने कुफ़्फ़ार को अच्छी तरह कुचलने से पहले क़ैदी बना लिया था और कहा जाता है कि उपरोक्त आयत बाद में उतरी और जो लिखा अल्लाह की ओर से पहले आ चुका था, उससे तात्पर्य अल्लाह का यह फ़ैसला है कि इस उम्मत के लिए ग़नीमत का माल हलाल है।

बहरहाल चूंकि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की राय के मुताबिक़ मामला तै हो चुका था, इसलिए मुश्रिकों से फ़िदया लिया गया। फ़िदए की मात्रा चार हज़ार और तीन हज़ार दिरहम से लेकर एक हज़ार दिरहम तक थी। मक्के के लोग लिखना-पढ़ना भी जानते थे, जबकि मदीना के लोग लिखना-पढ़ना नहीं जानते थे। इसलिए यह भी तै किया गया कि जिसके पास फ़िदया न हो, वह मदीना के दस-दस बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखा दे। जब ये बच्चे अच्छी तरह सीख जाएं, तो यही उसका फ़िदया होगा।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कई क़ैदियों पर एहसान भी फ़रमाया और उन्हें फ़िदया लिए बग़ैर भी रिहा कर दिया। इस सूची में मुत्तलिब बिन हंतब, सैफ़ी बिन अबी रिफ़ाआ और अबू उज़्ज़ा जुम्ही के नाम आते हैं। आख़िरी नाम को अगली लड़ाई में क़ैद और क़त्ल किया गया। (विस्तृत विवेचन आगे आ रहा है)

आपने अपने दामाद अबुल आस को इस शर्त पर बिना फ़िदया छोड़ दिया कि वह हज़रत ज़ैनब रज़ि० की राह न रोकेंगे। इसकी वजह यह हुई कि हज़रत ज़ैनब रज़ि० ने अबुल आस के फ़िदए में कुछ माल भेजा था, जिसमें एक हार भी

था। यह हार हक़ीक़त में हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का था और जब उन्होंने हज़रत ज़ैनब को अबुल आस के पास विदा किया था, तो यह हार उन्हें दे दिया था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे देखा तो आपका दिल भर आया और आपने सहाबा किराम रज़ि० से इजाज़त चाही कि अबुल आस को छोड़ दें। सहाबा किराम ने इसे पूरी रज़ामंदी के साथ क़ुबूल कर लिया और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबुल आस को इस शर्त पर छोड़ दिया कि वह हज़रत ज़ैनब रज़ि० की राह छोड़ देंगे। चुनांचे हज़रत अबुलआस ने उनका रास्ता छोड़ दिया और हज़रत ज़ैनब रज़ि० ने हिजरत फ़रमाई।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा और एक अंसरी सहाबा को भेज दिया कि तुम दोनों बत्न याजज में रहना। जब ज़ैनब रज़ि० तुम्हारे पास से गुज़रें तो साथ हो लेना।

ये दोनों तशरीफ़ ले गए और हज़रत ज़ैनब रज़ि० को साथ लेकर मदीना वापस आए।

हज़रत ज़ैनब रज़ि० की हिजरत की घटना बड़ी लम्बी और दुखद है।

क़ैदियों में सुहैल बिन अम्र भी था जो बड़ा ज़ोरदार वक्ता था। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, 'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! सुहैल बिन अम्र के अगले दो दांत तुड़वा दीजिए। उसकी ज़ुबान लिपट जाया करेगी और वह किसी जगह वक्ता बनकर आपके ख़िलाफ़ कभी खड़ा न हो सकेगा, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी यह विनती ठुकरा दी, क्योंकि यह अंग-भंग की श्रेणी में आता है, जिस पर क़ियामत के दिन अल्लाह की ओर से पकड़ का ख़तरा था।

हज़रत साद बिन नोमान रज़ियल्लाहु अन्हु उमरा करने के लिए निकले, तो उन्हें अबू सुफ़ियान ने क़ैद कर लिया। अबू सुफ़ियान का बेटा अम्र भी बद्र की लड़ाई के क़ैदियों में था। चुनांचे अम्र को अबू सुफ़ियान के हवाले कर दिया गया और उसने हज़रत साद रज़ि० को छोड़ दिया।

क़ुरआन की समीक्षा

इसी लड़ाई के ताल्लुक़ से सूरः अनफ़ाल उतरी जो वास्तव में उस लड़ाई पर अल्लाह की एक समीक्षा है, (अगर यह अर्थ-निरूपण सही हो) और यह समीक्षा

बादशाहों और कमांडरों आदि की विजयी समीक्षाओं से बिल्कुल ही अलग है। इस समीक्षा की कुछ बातें थोड़े में इस तरह हैं—

अल्लाह ने सबसे पहले मुसलमानों का ध्यान उन कोताहियों और नैतिक त्रुटियों की ओर खींचा जो उनमें कुछ बाक़ी रह गई थीं और जिनमें से कुछ इस मौक़े पर ज़ाहिर हुई थीं। इस तवज्जोह देने का मक़्सूद यह था कि मुसलमान अपने आपको इन कमज़ोरियों से पाक-साफ़ करके अपने को पूर्ण कर लें।

इसके बाद इस जीत में अल्लाह की जो ताईद और ग़ैबी मदद शामिल थी, उसका उल्लेख किया। इससे अभिप्रेत यह था कि मुसलमान अपनी बहादुरी के धोखे में न आ जाएं, जिसके नतीजे में तबीयतों में दंभ और अभिमान पैदा हो जाता है, बल्कि वे अल्लाह पर भरोसा करें और उसके और पैग़म्बर के आज्ञाकारी बने रहें।

फिर उन उच्च उद्देश्यों का उल्लेख किया गया है, जिनके लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस भयानक और ख़ूनी लड़ाई में क़दम रखा था और इसी सिलसिले में उस चरित्र व आचरण की निशानदेही की गई है, जो लड़ाइयों में जीत की वजह बनते हैं।

फिर मुश्रिकों और मुनाफ़िक़ों को और यहूदियों और लड़ाई के क़ैदियों को सम्बोधित करके ऐसा ज़ोरदार उपदेश दिया गया है कि वे सत्य के सामने झुक जाएं और उसके पाबन्द बन जाएं।

इसके बाद मुसलमानों को ग़नीमत के माल के मामले में सम्बोधित करते हुए उन्हें इस समस्या के तमाम मौलिक नियम और सिद्धान्त बताए गए हैं।

फिर इस मरहले पर इस्लामी दावत को लड़ाई और समझौता के जिन क़ानूनों की ज़रूरत थी उनको स्पष्ट किया गया, ताकि मुसलमानों की लड़ाई और अज्ञानियों की लड़ाई में अन्तर किया जा सके और चरित्र व आचरण के मैदान में मुसलमानों को श्रेष्ठता मिली रहे और दुनिया अच्छी तरह जान ले कि इस्लाम मात्र एक सिद्धान्त नहीं है, बल्कि वह जिन नियमों और सिद्धान्तों की दावत देता है, उनके मुताबिक़ अपने मानने वालों की व्यावहारिक ट्रेनिंग भी करता है।

फिर इस्लामी राज्य के नियमों की कई धाराएं बयान की गई हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि इस्लामी राज्य की सीमाओं में बसने वाले मुसलमानों और उस सीमा से बाहर रहने वाले मुसलमानों में क्या अन्तर है।

भिन्न-भिन्न घटनाएं

सन् 02 हि० में रमज़ान का रोज़ा और सदक़ा-ए-फ़ित्र फ़र्ज़ किया गया और

ज़कात के विभिन्न निसाबों का निर्धारण किया गया। सदक़ा-ए-फ़ित्र के फ़र्ज़ होने और ज़कात के निसाब के निर्धारण से उस बोझ और परिश्रम में बड़ी कमी आ गई, जिससे धनहीन मुहाजिरों की एक बड़ी तायदाद दोचार थी, क्योंकि वह रोज़ी की चाह में ज़मीन में दौड़-धूप की संभावनाओं से वंचित थी।

फिर बड़ा ही सुन्दर संयोग यह था कि मुसलमानों ने अपनी ज़िंदगी में पहली ईद जो मनाई, वह शव्वाल सन् 02 की ईद थी जो बद्र की लड़ाई की खुली जीत के बाद पेश आई। कितनी प्रिय थी वह मुबारक ईद, जिसका सौभाग्य अल्लाह ने मुसलमानों के सर पर विजय का मुकुट रखने के बाद दिया था और कितना ईमान बढ़ाने वाला था ईद का दृश्य, जिसे मुसलमानों ने अपने घरों से निकल कर अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर की आवाज़ ऊंची करते हुए मैदान में जाकर अदा किया था।

उस वक़्त हालत यह थी कि मुसलमानों के दिल अल्लाह की दी हुई नेमतों और उसकी दी हुई ताईद की वजह से उसकी रहमत और रज़ामंदी के शौक़ से भरे-पुरे और उसकी ओर चाहत की भावनाओं से ओत-प्रोत थे। और उनके माथे उनका शुक्र अदा करने के लिए झुके हुए थे। अल्लाह ने इस नेमत का उल्लेख इस आयत में किया है—

'और याद करो जब तुम थोड़े थे, ज़मीन में कमज़ोर बनाकर रखे गए थे, डरते थे कि लोग तुम्हें उचक ले जाएंगे, पस उसने तुम्हें ठिकाना दे दिया और अपनी मदद के ज़रिए तुम्हारी ताईद की और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ों से रोज़ी दी, ताकि तुम लोग उसका शुक्र अदा करो।' (8-26)

बद्र के बाद की जंगी सरगर्मियां

बद्र की लड़ाई मुसलमानों और मुश्रिकों का सबसे पहला सशस्त्र टकराव और निर्णायक लड़ाई थी, जिसमें मुसलमानों को खुली जीत मिली और उसे सारे अरब ने देखा।

इस लड़ाई के नतीजों को सबसे ज़्यादा उन्हीं लोगों को भुगतना पड़ा था, जिन्हें प्रत्यक्ष रूप से यह हानि सहनी पड़ी, यानी मुश्रिक या उन लोगों को जो मुसलमानों के ग़लबा और सरबुलन्दी को अपने धार्मिक और आर्थिक अस्तित्व के लिए ख़तरा महसूस करते थे, यानी यहूदी। चुनांचे जब से मुसलमानों ने बद्र की लड़ाई जीती थी, ये दोनों गिरोह मुसलमानों के ख़िलाफ़ ग़म-ग़ुस्सा, दुख-अफ़सोस से जल-भुन रहे थे, जैसा कि इर्शाद है—

'तुम ईमान वालों का सबसे बड़ा दुश्मन यहूदियों को पाओगे और मुश्रिकों को।'

(5 : 82)

मदीने में कुछ लोग इन दोनों गिरोहों की हां में हां मिलाने वाले और साथ देने वाले मौजूद थे। उन्होंने जब देखा कि अपनी प्रतिष्ठा बाक़ी रखने का अब कोई रास्ता बाक़ी नहीं रह गया है, तो ऊपरी तौर पर इस्लाम में दाख़िल हो गए। यह अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथियों का गिरोह था। यह भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ यहूदियों और मुश्रिकों से कम ग़म व ग़ुस्सा न रखता था।

इनके अलावा एक चौथा गिरोह भी था। यानी वे बद्दू जो मदीना के बाहरी हिस्से में रहते-सहते थे, उन्हें कुफ़्र व इस्लाम से कोई दिलचस्पी न थी, लेकिन ये लुटेरे और डाकू थे, इसलिए बद्र की कामियाबी से इन्हें भी दुख और बेचैनी थी। इन्हें ख़तरा था कि मदीने में एक ताक़तवर हुकूमत क़ायम हो गई, तो इनकी लूट-खसूट का रास्ता बन्द हो जाएगा, इसलिए इनके दिलों में भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ कीना जाग उठा और ये भी मुसलमानों के दुश्मन हो गए।

इससे स्पष्ट होता है कि बद्र की जीत यहां मुसलमानों की शौकत और इज़्ज़त और सरबुलन्दी की वजह थी, वहीं अनेक गिरोहों के ग़ुस्से और भड़काव की भी वजह थी और यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि हर फ़रीक़ वह उपाय करे जो उसके विचार से उसके हितों को पूरा करने वाला था।

चुनांचे मदीना वालों ने इस्लाम ज़ाहिर करके पीठ पीछे षड्यंत्रों और आपस में लड़ा-भिड़ा देने की राह अपनाई। यहूदियों के एक गिरोह ने खुल्लम खुल्ला रंज, दुश्मनी और ग़म व ग़ुस्सा ज़ाहिर किया। मक्के वालों ने कमर तोड़ मार

मारने की धमकियां देनी शुरू कीं और बदला लेने का खुला एलान किया। उनकी जंगी तैयारियां भी खुलेआम हो रही थीं, मानो वे मुसलमानों तक यह सन्देश पहुंचाना चाहते थे कि—

'एक ऐसा रोशन और चमकता दिन ज़रूरी है जिसके बाद एक लम्बी मुद्दत तक नौहा करने वालियों का नौहा सुनता रहूं।'

और साल भर के बाद वे अमलन एक ऐसी लड़ाई के लिए मदीना की सीमाओं तक चढ़ आए जो इतिहास में उहुद की लड़ाई के नाम से जाना जाता है और जिसका मुसलमानों के नाम और साख पर बुरा असर पड़ा था।

इन ख़तरों से निपटने के लिए मुसलमानों ने बड़े अहम क़दम उठाए, जिनसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के महान नेतृत्व का पता चलता है और यह स्पष्ट होता है कि मदीना का नेतृत्व आस-पास के इन ख़तरों के सिलसिले में कितना जागरूक था, और उनसे निपटने के लिए कितनी व्यापक योजनाएं रखता था। आगे आने वाले पृष्ठों में इसी की एक संक्षिप्त रूप-रेखा प्रस्तुत की जा रही है।

1. ग़ज़वा बनी सुलैम

बद्र की लड़ाई के बाद सबसे पहली खबर जो मदीने के सूचना विभाग ने दी, वह यह थी कि ग़तफ़ान क़बीले की शाखा बनू सुलैम के लोग मदीने पर चढ़ाई के लिए फ़ौज जमा कर रहे हैं। इसके जवाब में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो सौ सवारों के साथ उन पर.खुद उनके अपने इलाक़े में अचानक धावा बोल दिया और कुद्र[1] नामी जगह में उनकी मंज़िलों तक जा पहुंचे।

बनू सुलैम में इस अचानक हमले से भगदड़ मच गई और अफ़रा तफ़री की हालत में घाटी के अन्दर पांच सौ ऊंट छोड़ कर भाग गए, जिस पर मदीने की फ़ौज ने क़ब्ज़ा कर लिया और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका पांचवां भाग निकालकर ग़नीमत का बाक़ी माल मुजाहिदों में बांट दिया। हर व्यक्ति के हिस्से में दो-दो ऊंट आए। इस लड़ाई में यसार नाम का एक ग़ुलाम हाथ आया, जिसे आपने आज़ाद कर दिया। इसके बाद आप बनू सुलैम के इलाक़ों में तीन दिन ठहर कर मदीना पलट आए।

---

1. कुद्र असल में मटियाले रंग की एक चिड़िया होती है, लेकिन यहां बनू सुलैम का सोता मुराद है, जो नज्द में मक्का से (नज्द के रास्ते में) शाम जाने वाले राजमार्ग पर स्थित है।

यह लड़ाई शव्वाल 02 हि० में बद्र से वापसी के सिर्फ़ सात दिन बाद या मुहर्रम के आधे में पेश आई। इस लड़ाई के समय में सबाअ बिन अरफ़ता को और कहा जाता है कि इब्ने उम्मे मक्तूम को मदीना का इन्तिज़ाम सौंपा गया था।[1]

2. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल का षड्यंत्र

बद्र की लड़ाई में हारने के बाद मुश्रिक ग़ुस्से से बे-क़ाबू थे और पूरा मक्का नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ हांडी की तरह खौल रहा था। आख़िरकार मक्के के दो बहादुर नवजवानों ने तै किया कि वे (अपनी समझ से) इस फूट, बिखराव की बुनियाद और इस ज़िल्लत व रुसवाई की जड़ यानी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़ात्मा कर देंगे।

चुनांचे बद्र की लड़ाई के कुछ ही दिनों बाद की घटना है कि उमैर बिन वह्ब जुम्ही, जो क़ुरैश के शैतानों में से था और मक्के में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० को पीड़ाएं पहुंचाया करता था और अब उसका बेटा वह्ब बिन उमैर बद्र की लड़ाई में गिरफ़्तार होकर मुसलमानों की क़ैद में था।

इस उमैर ने एक दिन सफ़वान बिन उमैया के साथ हतीम में बैठ कर बातें करते हुए बद्र के कुंएं में फेंके जाने वालों की मुसीबत का उल्लेख किया। इस पर सफ़वान ने कहा, ख़ुदा की क़सम! इनके बाद जीने में कोई आनन्द नहीं।

जवाब में उमैर ने कहा, ख़ुदा की क़सम! तुम सच कहते हो। देखो, ख़ुदा की क़सम! अगर मेरे ऊपर क़र्ज़ न होता, जिसे अदा करने के लिए मेरे पास कुछ नहीं और बाल-बच्चे न होते, जिनके बारे में डर है कि मेरे बाद बर्बाद हो जाएंगे, तो मैं सवार होकर मुहम्मद के पास जाता और उसे क़त्ल कर डालता, क्योंकि मेरे लिए वहां जाने की वजह मौजूद है। मेरा बेटा उनके यहां क़ैद है।

सफ़वान ने इस स्थिति को ग़नीमत समझते हुए कहा, अच्छा, चलो, तुम्हारा क़र्ज़ मेरे ज़िम्मे है। मैं इसे तुम्हारी ओर से अदा कर दूंगा और तुम्हारे बीवी-बच्चे मेरे बीवी-बच्चे हैं। जब तक वे मौजूद रहेंगे, मैं उनकी देखभाल करता रहूंगा। ऐसा नहीं हो सकता कि मेरे पास कोई चीज़ मौजूद हो और उनको न मिले।

उमैर ने कहा, अच्छा तो अब मेरे और अपने इस मामले को रहस्य समझना।

सफ़वान ने कहा, ठीक है, मैं ऐसा ही करूंगा।

---

1. ज़ादुल मआद 2/90, इबने हिशाम 2/43-44, मुख़्तसरुस्सीरः शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 236

इसके बाद उमैर ने अपनी तलवार पर सान रखाई और ज़हर में बुझाया, फिर रवाना हुआ और मदीना पहुंचा। लेकिन अभी वह मस्जिद के दरवाज़े पर अपनी ऊंटनी बिठा ही रहा था कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब की निगाह उस पर पड़ गई। वह कुछ मुसलमानों के साथ बद्र की लड़ाई में अल्लाह की प्रदान की हुई प्रतिष्ठा के बारे में बातें कर रहे थे। उन्होंने देखते ही कहा—

'यह कुत्ता, अल्लाह का दुश्मन उमैर, किसी बुरे इरादे ही से आया है।' फिर उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया—

'ऐ अल्लाह के नबी ! यह अल्लाह का दुश्मन उमैर अपनी तलवार लटकाए आया है।'

आपने फ़रमाया, 'उसे मेरे पास ले आओ।'

उमैर आया तो हज़रत उमर रज़ि० ने उसकी तलवार के परतले को उसके गले के पास से पकड़ लिया और अंसार के कुछ लोगों से कहा कि तुम लोग अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास अन्दर जाओ और वहीं बैठ जाओ और आपके ख़िलाफ़ इस दुष्ट के ख़तरे से चौकन्ना रहो, क्योंकि यह इत्मीनान के क़ाबिल नहीं है।

इसके बाद वे उमैर को अन्दर ले गए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब यह स्थिति देखी कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उसकी गरदन में उसकी तलवार का परतला लपेट कर पकड़े हुए हैं, तो फ़रमाया कि उमर ! इसे छोड़ दो और उमैर ! तुम क़रीब आ जाओ।

उसने क़रीब आकर कहा, आप लोगों की सुबह बख़ैर हो।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह ने हमें एक ऐसा सलाम दिया है जो तुम्हारे इस सलाम से बेहतर है ओर जो जन्नतियों का सलाम है।

इसके बाद आपने फ़रमाया, ऐ उमैर ! तुम क्यों आए हो ?

उसने कहा, यह क़ैदी जो आप लोगों के क़ब्ज़े में हैं, उसी के लिए आया हूं। आप लोग उसके बारे में एहसान कीजिए।

आपने फ़रमाया, फिर यह तुम्हारी गरदन में तलवार क्यों है ?

उसने कहा, अल्लाह इन तलवारों का बुरा करे, क्या ये हमारे कुछ काम आ सकीं ?

आपने फ़रमाया, सच-सच बताओ, क्यों आए हो ?

उसने कहा, बस सिर्फ़ इसी क़ैदी के लिए आया हूं।

आपने फ़रमाया, नहीं, बल्कि तुम और सफ़वान बिन उमैया हतीम में बैठे बातें

कर रहे थे। उसने क़ुरैश के जो मक़्तूल कुंएं में फेंके गए थे, उनका उल्लेख किया, फिर तुमने कहा, अगर मुझ पर क़र्ज़ न होता और मेरे घरवाले न होते तो मैं यहां से जाता और मुहम्मद को क़त्ल कर देता। इस पर सफ़वान ने तुम्हारे क़र्ज़ और बाल-बच्चों की ज़िम्मेदारी ली, बशर्तेकि तुम मुझको क़त्ल कर दो। लेकिन याद रखो कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच एक रोक है।

उमैर ने कहा, मैं गवाही देता हूं कि आप अल्लाह के रसूल हैं। ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप हमारे पास आसमान की जो ख़बरें लाते थे और आप पर जो वह्य उतरती थी, उसे हम झुठला दिया करते थे, लेकिन यह तो ऐसा मामला है जिसमें मेरे और सफ़वान के सिवा कोई मौजूद ही न था, इसलिए अल्लाह की क़सम ! मुझे यक़ीन है कि यह बात अल्लाह के सिवा और किसी ने आप तक नहीं पहुंचाई है। पस अल्लाह की तारीफ़ें हैं जिसने मुझे इस्लाम की हिदायत दी और यहां तक हांक कर पहुंचाया।

फिर उमैर ने कलिमा पढ़ लिया और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम को मुख़ातब करके फ़रमाया, अपने भाई को दीन समझाओ, क़ुरआन पढ़ाओ और इसके क़ैदी को आज़ाद कर दो।

इधर सफ़वान लोगों से कहता फिर रहा था कि यह ख़ुशख़बरी सुन लो कि कुछ ही दिनों में एक ऐसी घटना घटित होने वाली है, जो बद्र की मुसीबतें भुलवा देगा। साथ ही वह आने-जाने वालों से उमैर के बारे में पूछता ही रहता था। आख़िरकार उसे एक सवार ने बताया कि उमैर मुसलमान हो चुका है। यह सुनकर सफ़वान ने क़सम खाई कि उससे कभी बात न करेगा और न कभी फ़ायदा पहुंचाएगा।

उधर उमैर ने इस्लाम सीख कर मक्का का रास्ता लिया और वहीं ठहर कर इस्लाम की दावत देनी शुरू की। उनके हाथ पर बहुत से लोग मुसलमान हुए।[1]

3. ग़ज़वा बनी क़ैनुक़ाअ

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना तशरीफ़ लाने के बाद यहूदियों के साथ जो समझौता किया था, उसकी धाराओं का उल्लेख पिछले पृष्ठों में हो चुका है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पूरी कोशिश और ख़्वाहिश थी कि इस समझौते में जो कुछ तै पा गया है, वह लागू रहे। चुनांचे मुसलमानों की ओर से कोई ऐसा क़दम उठाया नहीं गया जो उस

1. इब्ने हिशाम 1/661, 662, 663

समझौते की किसी एक धारा के ख़िलाफ़ हो।

लेकिन यहूदी जिनकी तारीख धोखा, ख़ियानत और वायदा ख़िलाफ़ी से भरी हुई है, वे बहुत जल्द अपने पुराने स्वभाव की ओर पलट गए और मुसलमानों के अन्दर लगाई-बुझाई, षड्यंत्र, लड़ाने-भिड़ाने और हंगामा और बेचैनी पैदा करने की कोशिशें शुरू कर दीं। लगे हाथों एक मिसाल भी सुनते चलिए।

यहूदियों की मक्कारी का एक नमूना

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि बूढ़ा यहूदी शाश बिन क़ैस, जो क़ब्र में पांव लटकाए हुए था, बड़ा ज़बरदस्त काफ़िर था और मुसलमानों से ज़बरदस्त दुश्मनी और जलन रखता था, एक बार सहाबा किराम की एक मज्लिस के पास से गुज़रा, जिसमें औस व ख़ज़रज दोनों ही क़बीले के लोग बैठे आपस में बातें कर रहे थे। उसे यह देखकर कि अब उनके अन्दर अज्ञानता-युग की आपसी दुश्मनी की जगह इस्लाम की मुहब्बत और भाईचारा ने ले लिया है और उनकी पुरानी रंजिशों का ख़ात्मा हो गया है, बड़ा रंज हुआ, कहने लगा—

'ओह ! इस इलाक़े में बनूक़ैला के लोग एक हो गए हैं, ख़ुदा की क़सम ! इनके मिलन के बाद तो हमारा यहां गुज़र नहीं।'

चुनांचे उसने एक नवजवान यहूदी को, जो उसके साथ था, हुक्म दिया कि उनकी सभाओं में जाए और उनके साथ बैठ कर फिर बुआस की लड़ाई और उससे पहले के हालात का वर्णन करे और इस सिलसिले में दोनों ओर से जो काव्य कहा गया है, कुछ पद उनमें से पढ़कर सुनाए। उस यहूदी ने ऐसा ही किया।

उसके नतीजे में औस व खज़रज में तू-तू मैं-मैं शुरू हो गई। लोग झगड़ने लगे और अपने को बड़ा बताने लगे, यहां तक कि दोनों क़बीलों के एक-एक आदमी ने घुटनों के बल बैठकर रद्द व कद्द शुरू कर दी, फिर एक ने अपने सामने के व्यक्ति से कहा, अगर चाहो, तो हम इस लड़ाई को फिर जवान करके पलटा दें। मक़्सद यह था कि हम इस आपसी लड़ाई के लिए फिर तैयार हैं, जो इससे पहले लड़ी जा चुकी है।

इस पर दोनों फ़रीक़ को ताव आ गया और बोले, चलो हम तैयार हैं। हर्रा में मुक़ाबला होगा। हथियार . . . हथियार !

और लोग हथियार लेकर हर्रा की ओर निकल पड़े। क़रीब था कि ख़ूनी लड़ाई हो जाती, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसकी ख़बर हो गई। आप अपने मुहाजिर सहाबा को साथ लेकर झट उनके पास

पहुंचे और फ़रमाया—

'ऐ मुसलमानों की जमाअत! अल्लाह! अल्लाह! क्या मेरे रहते हुए जाहिलियत की पुकार, और वह भी इसके बाद कि अल्लाह तुम्हें इस्लाम की हिदायत दे चुका है और इसके ज़रिए से तुमसे जाहिलियत का मामला काट कर और तुम्हें कुफ़्र से निजात दिलाकर तुम्हारे दिलों को आपस में जोड़ चुका है।'

आपकी नसीहत सुनकर सहाबा को एहसास हुआ कि उनकी हरकत शैतान का एक झटका और दुश्मन की एक चाल थी। चुनांचे वे रोने लगे और औस व ख़ज़रज के लोग एक दूसरे से गले मिले, फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ फ़रमांबरदार बनकर इस हालत में वापस आए कि अल्लाह ने उनके दुश्मन शास बिन क़ैस की मक्कारी की आग बुझा दी थी।[1]

यह है एक नमूना उन हंगामों और बेचैनियों का, जिन्हें यहूदी मुसलमानों के अन्दर पैदा करने की कोशिश करते थे और यह है एक मिसाल उस रोड़े की, जिसे ये यहूदी इस्लामी दावत के रास्ते में अटकाते रहते थे। इस काम के लिए उन्होंने विभिन्न योजनाएं बना रखी थीं। वे झूठे प्रोपगंडे करते थे, सुबह मुसलमान होकर शाम को फिर काफ़िर हो जाते थे, ताकि कमज़ोर और सादा दिल क़िस्म के लोगों के दिलों में शक व शुबहे के बीज बो सकें।

किसी के साथ माली ताल्लुक़ होता और वह मुसलमान हो जाता तो उस पर खाने-कमाने की राहें तंग कर देते। चुनांचे अगर उसके ज़िम्मे कुछ बक़ाया होता, तो सुबह व शाम तक़ाज़े करते, और अगर ख़ुद उस मुसलमान का कुछ बक़ाया उन पर होता, तो उसे अदा न करते, बल्कि ग़लत तरीक़े पर खा जाते और कहते कि तुम्हारा क़र्ज़ तो हमारे ऊपर उस वक़्त था, जब तुम अपने बाप-दादा के दीन पर थे, लेकिन अब जबकि तुमने अपना दीन बदल दिया है, तो अब हमारे और तुम्हारे लिए कोई राह नहीं।[2]

स्पष्ट रहे कि यहूदियों ने ये सारी हरकतें बद्र से पहले ही शुरू कर दी थीं और इस समझौते के होते हुए शुरू कर दी थीं जो उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कर रखा था, मगर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० का यह हाल था कि वे इन यहूदियों की हिदायत पाने की उम्मीद में इन सारी बातों पर सब्र करते जा रहे

1. इब्ने हिशाम 1/555-556
2. टीकाकारों ने सूरः आले इम्रान आदि की व्याख्या में उनकी इस क़िस्म की हरकतों के नमूने दिए हैं।

थे। इसके अलावा यह भी अभिप्रेत था कि इलाक़े में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहे।

बनू क़ैनुक़ाअ का वचन-भंग

जब यहूदियों ने देखा कि अल्लाह ने बद्र के मैदान में मुसलमानों की ज़बरदस्त मदद फ़रमाकर उन्हें इज़्ज़त और दबदबा दिया है और उनका रौब व दबदबा दूर व नज़दीक हर जगह रहने वालों के दिलों में बैठ गया है, तो उनकी दुश्मनी और जलन की हांडी फूट पड़ी। उन्होंने खुल्लम खुल्ला दुश्मनी दिखाई और एलानिया बग़ावत और पीड़ा पहुंचाने पर उतर आए।

इनमें सबसे ज़्यादा दुश्मनी दिखाने वाला और सबसे बड़ा दुष्ट काब बिन अशरफ़ था, जिसका ज़िक्र आगे आ रहा है। इसी तरह तीनों यहूदी क़बीलों में सबसे ज़्यादा बदमाश बनू क़ैनुक़ाअ का क़बीला था। ये लोग मदीना के अन्दर ही रहते थे और उनका मुहल्ला इन्हीं के नाम से जाना जाता था। ये लोग पेशे के लिहाज़ से सोनार, लोहार और बरतन बनाने वाले थे। इन पेशों की वजह से इनके हर आदमी के पास भारी मात्रा में लड़ाई का सामान मौजूद था। इनके लड़ने वाले मर्दों की तायदाद सात सौ थी और ये मदीने के सबसे बहादुर यहूदी थे। इन्हीं ने सबसे पहले समझौता भंग किया। इसका विवरण इस तरह है—

जब अल्लाह ने बद्र के मैदान में मुसलमानों को विजय दिलाई, तो उनकी सरकशी और बढ़ गई। उन्होंने अपनी शरारतों, हरकतों और लड़ाने-भिड़ाने की कोशिशों में तेज़ी पैदा कर ली और हंगामा मचाना शुरू कर दिया।

चुनांचे जो मुसलमान उनके बाज़ार में जाता, उसकी वे खिल्ली उड़ाते और उसे कष्ट पहुंचाते, यहां तक कि मुसलमान औरतों से भी छेड़छाड़ शुरू कर दी।

इसी तरह जब स्थिति अधिक संगीन हो गई और उनकी सरकशी बहुत ज़्यादा बढ़ गई, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें जमा फ़रमाकर वाज़ व नसीहत की, और सही रास्ते की दावत देते हुए ज़ुल्म व बग़ावत के अंजाम से डराया, लेकिन इससे उनकी बदमाशी और अहं में कुछ और बढ़ोत्तरी ही हो गई।

चुनांचे इमाम अबू दाऊद वग़ैरह ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत की है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ुरैश को बद्र के दिन परास्त किया और आप मदीना तशरीफ़ लाए तो क़ैनुक़ाअ के बाज़ार में यहूदियों को जमा किया और फ़रमाया—

'ऐ यहूदियो! इससे पहले इस्लाम क़ुबूल कर लो कि तुम पर भी वैसी ही

मार पड़े जैसी क़ुरैश पर पड़ चुकी है।'

उन्होंने कहा, ऐ मुहम्मद! तुम्हें इस कारण भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए कि तुम्हारा टकराव क़ुरैश के अनाड़ी और नातजुर्बेकार लोगों से हुआ था और तुमने उन्हें मार लिया। अगर तुम्हारी लड़ाई हमसे हो गई तो पता चल जाएगा कि हम मर्द हैं और हमारे जैसे लोगों से तुम्हें पाला न पड़ा था। इसके जवाब में अल्लाह ने यह आयत उतारी—

'इन काफ़िरों से कह दो कि बहुत जल्द मग़्लूब किए जाओगे और जहन्नम की ओर हांके जाओगे और वह बुरा ठिकाना है। जिन दो गिरोहों में टक्कर हुई, उनमें तुम्हारे लिए निशानी है। एक गिरोह अल्लाह की राह में लड़ रहा था और दूसरा काफ़िर था। ये उनको अपनी आंखों देखने में दोगुना देख रहे थे और अल्लाह अपनी मदद के ज़रिए, जिसकी ताईद चाहता है, करता है। इसके अन्दर यक़ीनन नज़र वालों के लिए सबक़ है।' (3/12-13)[1]

बहरहाल बनू क़ैनुक़ाअ ने जो जवाब दिया था, उसका मलतब लड़ाई का साफ़-साफ़ एलान था, लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना ग़ुस्सा पी लिया और सब्र किया। मुसलमानों ने भी सब्र किया और आने वाले हालात का इन्तिज़ार करने लगे।

इधर इस नसीहत के बाद बनू क़ैनुक़ाअ के यहूदियों की जुर्रात और बढ़ गई। चुनांचे थोड़े ही दिन गुज़रे थे कि उन्होंने मदीने में बलवा और हंगामा खड़ा का दिया, जिसके नतीजे में उन्होंने अपने ही हाथों अपनी क़ब्र खोद ली और अपने ऊपर जीने का रास्ता बन्द कर लिया।

इब्ने हिशाम ने अबू औन से रिवायत की है कि एक अरब औरत बनू क़ैनुक़ाअ के बाज़ार में दूध लेकर आई और बेचकर (किसी ज़रूरत के लिए) एक सोनार के पास, जो यहूदी था, बैठ गई। यहूदियों ने उसका चेहरा खोलवाना चाहा, मगर उसने इंकार कर दिया।

इस पर उस सोनार ने चुपके से उसके कपड़े का किनारा उसकी पीठ पर गांठ दिया और उसे कुछ ख़बर न हुई। जब वह उठी, तो उसकी शर्मगाह खुल गई और यहूदियों ने ज़ोर का ठहाका लगाया।

इस पर उस औरत ने चीख़-पुकार मचाई, जिसे सुनकर एक मुसलमान ने उस सोनार पर हमला किया और उसे मार डाला। जवाब में यहूदियों ने उस मुसलमान पर हमला करके उसे मार डाला।

---

1. सुनने अबी दाऊद मय औनुल माबूद 3/115, इब्ने हिशाम 1/552

इसके बाद मक़्तूल (क़त्ल किए गए) मुसलमान के घरवालों ने शोर मचाया और यहूदियों के ख़िलाफ़ मुसलमानों से फ़रियाद की। नतीजा यह हुआ कि मुसलमान और बनू क़ैनुक़ाअ के यहूदियों में बलवा हो गया।[1]

घेराव, समर्पण और देश निकाला

इस घटना के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सब्र का पैमाना लबालब भर गया। आपने मदीने का इन्तिज़ाम अबू लुबाबा बिन अब्दुल मुंज़िर को सौंपा और खुद हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब के हाथ में मुसलमानों का झंडा देकर अल्लाह की फ़ौज के साथ बनू क़ैनुक़ाअ का रुख़ किया।

उन्होंने आपको देखा तो गढ़ियों में क़िलाबन्द हो गए। आपने उनका ज़ोरदार घेराव कर लिया। यह जुमा का दिन था और शव्वाल 03 हिजरी की 15 तारीख़। पन्द्रह दिन तक, यानी ज़ीक़ादा चांद के निकलने तक, घेराव जारी रहा। फिर अल्लाह ने उनके दिलों में रौब डाल दिया।

चुनांचे बनू क़ैनुक़ाअ ने इस शर्त पर हथियार डाल दिए कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इनकी जान व माल, आल-औलाद और औरतों के बारे में जो फ़ैसला करेंगे, उन्हें मंज़ूर होगा। इसके बाद आपके हुक्म से इन सबको बांध लिया गया।

लेकिन यही मौक़ा था जब अब्दुल्लाह बिन उबई ने अपना मुनाफ़िक़ाना पार्ट अदा किया। उसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूरा ज़ोर देकर और बार-बार कहा कि आप इनके बारे में माफ़ी का हुक्म करें। चुनांचे उसने कहा, ऐ मुहम्मद ! मेरे दोस्तों के बारे में एहसान कीजिए। स्पष्ट रहे कि बनू क़ैनुक़ाअ ख़ज़रज के मित्र थे। लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देर की। इस पर उसने अपनी बात दोहराई।

मगर इस बार आपने उससे अपना रुख़ फेर लिया। लेकिन उस व्यक्ति ने आपके कुरते के गरेबान में हाथ डाल दिया।

आपने फ़रमाया, मुझे छोड़ दो और ऐसे ग़ज़बनाक हुए कि लोगों ने गुस्से की परछाइयां आपके चेहरे पर देखीं।

फिर आपने फ़रमाया, तुझ पर अफ़सोस, मुझे छोड़।

लेकिन यह मुनाफ़िक़ अपना आग्रह करता रहा और बोला, नहीं, ख़ुदा की क़सम ! मैं आपको नहीं छोड़ूंगा, यहां तक कि आप मेरे मित्रों के बारे में एहसान

---

1. इब्ने हिशाम, 2/47-48

फ़रमा दें। चार सौ खुले जिस्म के जवान और तीन सौ कवचधारी, जिन्होंने मुझे लाल व काले से बचाया था, आप उन्हें एक ही सुबह में काट कर रख देंगे? अल्लाह की क़सम! मैं ज़माने की चाल का ख़तरा महसूस कर रहा हूं।

आख़िरकार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस मुनाफ़िक़ के साथ (जिसके इस्लाम ज़ाहिर करने पर अभी कोई एक ही महीना गुज़रा था) रियायत का मामला किया और उसके लिए इन सबकी जान बख़्शी कर दी। अलबत्ता उन्हें हुक्म दिया कि वे मदीने से निकल जाएं और आपके पड़ोस में न रहें।

चुनांचे ये सब अज़रआत शाम की ओर चले गए और थोड़े ही दिनों बाद वहां अक्सर की मौत वाक़े हो गई।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके माल ज़ब्त कर लिए, जिनमें से तीन कमानें, दो कवच, तीन तलवारें और तीन नेज़े अपने लिए चुन लिए और ग़नीमत के माल में से पांचवां हिस्सा निकाला। ग़नीमत का माल जमा करने का काम मुहम्मद बिन मुस्लिमा ने अंजाम दिया।[1]

4. ग़ज़वा सवीक़

एक ओर सफ़वान बिन उमैया, यहूदी और मुनाफ़िक़ अपनी-अपनी साज़िशों में लगे हुए थे, तो दूसरी ओर अबू सुफ़ियान भी कोई ऐसी कार्रवाई कर बैठना चाहता था, जिसमें बोझ कम से कम पड़े, लेकिन प्रभाव अधिक पड़े।

वह ऐसी कार्रवाई जल्द से जल्द अंजाम देकर अपनी क़ौम की आबरू की हिफ़ाज़त और अपनी ताक़त का प्रदर्शन करना चाहता था। उसने मन्नत मान रखी थी कि नापाकी की वजह से उसके सर को पानी न छू सकेगा, यहां तक कि मुहम्मद सल्ल० से लड़ाई कर ले।

चुनांचे वह अपनी क़सम पूरी करने के लिए दो सौ सवारों को लेकर रवाना हुआ और क़नात घाटी के सिरे पर स्थित नीब नामी एक पहाड़ी के दामन में पड़ाव डाल दिया। मदीना से उसकी दूरी कोई बारह मील है, लेकिन चूंकि अबू सुफ़ियान को मदीने पर खुल्लम खुल्ला हमले की हिम्मत न हुई, इसलिए उसने एक ऐसी कार्रवाई अंजाम दी जिसे डाका से मिलती-जुलती कार्रवाई कहा जा सकता है।

इसका विस्तृत विवरण यह है कि वह रात के अंधेरे में मदीना के बाहरी

---

1. ज़ादुल मआद 2/71, 91, इब्ने हिशाम 2/47, 48, 49

हिस्से में दाखिल हुआ और हुइ बिन अख़तब के पास जाकर उसका दरवाज़ा खोलवाया। हुइ ने अंजाम के डर से इंकार कर दिया।

अबू सुफ़ियान पलट कर बनू नज़ीर के एक दूसरे सरदार सलाम बिन मुश्कम के पास पहुंचा जो बनू नज़ीर का ख़ज़ानची भी था। अबू सुफ़ियान ने अन्दर आने की इजाज़त चाही, उसने इजाज़त भी दी और सत्कार भी किया। खाने के अलावा शराब भी पिलाई और लोगों के ख़ुफ़िया हालात की ख़बर भी दे दी।

रात के पिछले पहर अबू सुफ़ियान वहां से निकल कर अपने साथियों में पहुंचा और उनका एक दस्ता भेजकर मदीने के बाहर अरीज़ नाम की एक जगह पर हमला करा दिया। इस टुकड़ी ने वहां खजूर के कुछ पेड़ काटे और जलाए और एक अंसारी और उसके साथी को उनके खेत में पाकर क़त्ल कर दिया और तेज़ी से मक्का वापस भाग निकला।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वारदात की ख़बर मिलते ही तेज़ रफ़्तारी से अबू सुफ़ियान और उसके साथियों का पीछा किया, लेकिन वे इससे भी ज़्यादा तेज़ रफ़्तारी से भागे, चुनांचे वे लोग तो मिले नहीं, लेकिन उन्होंने बोझ हलका करने के लिए सत्तू, तोशे और बहुत-सा साज़ व सामान फेंक दिया था, जो मुसलमानों के हाथ लगा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कर्रतुल कदर तक पीछा करके वापसी की राह ली। मुसलमान सत्तू वग़ैरह लाद-फांद कर वापस हुए और इस मुहिम का नाम ग़ज़वा सवीक़ रख दिया यानी सवीक़ की लड़ाई (सवीक़ अरबी में सत्तू को कहते हैं)

यह ग़ज़वा बद्र की लड़ाई के सिर्फ़ दो महीने बाद ज़िलहिज्जा सन् 03 हि० में पेश आया। इस ग़ज़वे के दौरान मदीना का इन्तिज़ाम अबू लुबाबा बिन अब्दुल मुंज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु को सौंपा गया था।[1]

5. ग़ज़वा ज़ी अम्र

बद्र और उहुद के बीच की मुद्दत में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नेतृत्व में यह सबसे बड़ी फ़ौजी मुहिम थी, जो मुहर्रम 03 हि० में पेश आई।

इसकी वजह यह थी कि मदीना के सूचना-साधनों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह सूचना दी कि बनू सालबा और यसरिब का बहुत बड़ा जत्था मदीने पर छापा मारने के लिए इकट्ठा हो रहा है।

---

1. ज़ादुल मआद 2/90-91, इब्ने हिशाम 2/44, 45

यह सूचना मिलते ही अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों को तैयारी का हुक्म दिया और सवार व पैदल पर सम्मिलित साढ़े चार सौ की तायदाद लेकर रवाना हुए और हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना में अपना जानशीन मुक़र्रर फ़रमाया।

रास्ते में सहाबा ने बनू सालबा के जब्बार नाम के एक आदमी को गिरफ़्तार करके अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर किया। आपने उसे इस्लाम की दावत दी। उसने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। इसके बाद आपने उसे हज़रत बिलाल रज़ि० के साथ कर दिया और उसने रास्ता जानने की हैसियत से मुसलमानों को दुश्मन की ज़मीन तक का रास्ता बता दिया।

इधर दुश्मनोंको मदीना की फ़ौज के आने की ख़बर हुई, तो वे आस-पास की पहाड़ियों में बिखर गए, लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आगे बढ़ते रहना जारी रखा और फ़ौज के साथ उस जगह तक तशरीफ़ ले गए जिसे दुश्मन ने अपने जत्थे के जमा करने के लिए चुना था। यह सच में एक चश्मा था जो 'ज़ीअम्र' के नाम से मशहूर था।

आपने वहां बद्दुओं पर रौब व दबदबा क़ायम करने और उन्हें मुसलमानों की ताक़त का एहसास दिलाने के लिए सफ़र (सन् 03 हि०) का पूरा या लगभग पूरा महीना गुज़ार दिया और उसके बाद मदीना तशरीफ़ लाए।[1]

6. काब बिन अशरफ़ का क़त्ल

यहूदियों में यह वह आदमी था जिसे इस्लाम और मुसलमानों से बड़ी दुश्मनी और जलन थी। यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पीड़ा पहुंचाया करता था और आपके खिलाफ़ लड़ाई लड़ने की खुल्लम खुल्ला दावत देता फिरता था।

इसका ताल्लुक़ क़बीला तै की शाखा बनू नभान से था और इसकी मां क़बीला बनी नज़ीर से थी। यह मालदार और पूंजीपति था। अरब में इसकी सुन्दरता भी बहुत मशहूर थी। यह एक विख्यात कवि भी था। इसका क़िला मदीने के दक्षिण में बनू नज़ीर की आबादी के पीछे स्थित था।

---

1. इब्ने हिशाम 2/46, ज़ादुल मआद 2/91, कहा जाता है कि दासूर या ग़ौरस मुहारबी ने इसी ग़ज़्वे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने की कोशिश की थी, लेकिन सही यह है कि यह घटना एक दूसरे ग़ज़्वे में घटी, देखिए सहीह बुख़ारी 2/593

इसे बद्र की लड़ाई में मुसलमानों की जीत और क़ुरैश के सरदारों के क़त्ल की पहली ख़बर मिली तो बे-साख़्ता बोल उठा, क्या सच में ऐसा ही हुआ है? ये तो अरब के प्रतिष्ठित लोग और लोगों के बादशाह थे, अगर मुहम्मद ने इनको मार लिया है तो धरती का पेट उसकी पीठ से बेहतर है।

और जब निश्चित रूप से इस ख़बर का ज्ञान उसे हो गया तो अल्लाह का यह दुश्मन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों की बुराई करने और इस्लाम के दुश्मनों की तारीफ़ करने पर उतर आया और उन्हें मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़काने लगा। इससे भी उसकी भावनाएं न सन्तुष्ट हुई तो सवार होकर क़ुरैश के पास पहुंचा और मुत्तलिब बिन वदाआ सह्मी का मेहमान हुआ, फिर मुश्रिकों की ग़ैरत भड़काने, उनके बदले की आग तेज़ करने और उन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए कविताएं कह-कहकर क़ुरैश के उन सरदारों का नौहा व मातम शुरू कर दिया, जिन्हें बद्र के मैदान में क़त्ल किए जाने के बाद कुंएं में फेंक दिया गया था।

मक्का में उसकी मौजूदगी के दौरान अबू सुफ़ियान और मुश्रिकों ने उससे मालूम किया कि हमारा दीन (धर्म) तुम्हारे नज़दीक ज़्यादा पसन्दीदा है या मुहम्मद और उसके साथियों का? और दोनों में से कौन-सा फ़रीक़ ज़्यादा हिदायत पाए हुए है?

काब बिन अशरफ़ ने कहा, तुम लोग इनसे ज़्यादा हिदायत पाए हुए और बड़े हो। इसी सिलसिले में अल्लाह ने यह आयत उतारी—

'तुमने उन्हें नहीं देखा, जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया है कि वे जिब्त और ताग़ूत पर ईमान रखते हैं और काफ़िरों के बारे में कहते हैं कि ये लोग ईमान वालों से बढ़कर हिदायत पाए हुए हैं।' (4 : 151)

काब बिन अशरफ़ यह सब कुछ करके मदीना वापस आया, तो वहां आकर सहाबा किराम रज़ि० की औरतों के बारे में गन्दी कविताएं कहनी शुरू कर दीं ओर अपनी गन्दी बातों और बड़बोलों के ज़रिए बड़ी पीड़ा पहुंचाई।

यही हालात थे, जिनसे तंग आकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कौन है जो काब बिन अशरफ़ से निपटे, क्योंकि उसने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० को पीड़ा पहुंचाई है?

इसके जवाब में मुहम्मद बिन मस्लमा, उबाद बिन बिश्र, अबू नाइला (जिनका नाम सलकान बिन सलामा था और जो काब के दूध-शरीक भाई थे) हारिस बिन औस और अबू हब्स बिन जब्र ने अपनी सेवाएं प्रस्तुत कीं। इस छोटी-सी कम्पनी के कमांडर मुहम्मद बिन मस्लमा थे।

काब बिन अशरफ़ के क़त्ल के बारे में रिवायत का सार यह है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह फ़रमाया कि काब बिन अशरफ़ से कौन निपटेगा? क्योंकि उसने अल्लाह और उसके रसूल को पीड़ा पहुंचाई है, तो मुहम्मद बिन मस्लमा ने उठकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं हाज़िर हूं। क्या आप चाहते हैं कि मैं उसे क़त्ल कर दूं?

आपने फ़रमाया, हां।

उन्होंने अर्ज़ किया, तो आप मुझे कुछ कहने की इजाज़त दें?

आपने फ़रमाया, कह सकते हो।

इसके बाद मुहम्मद बिन मस्लमा, काब बिन अशरफ़ के पास तशरीफ़ ले गए, और बोले, 'उस शख़्स ने (इशारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर था) हमसे सदक़ा तलब किया है और सच तो यह है कि उसने हमें मशक़्क़त में डाल रखा है।'

काब ने कहा, अल्लाह की क़सम ! अभी तुम लोग और भी उकता जाओगे।

मुहम्मद बिन मस्लमा ने कहा, अब जबकि हम उसकी पैरवी करने वाले बन ही चुके हैं, तो मुनासिब नहीं मालूम होता कि उसका साथ छोड़ दें, जब तक कि देख न लें कि उसका अंजाम क्या होता है? अच्छा, हम चाहते हैं कि आप हमें एक वसक़ (एक पैमाना) या दो वसक़ अनाज दे दें।

काब ने कहा, मेरे पास कुछ रेहन रखो।

मुहम्मद बिन मस्लमा ने कहा, आप कौन-सी चीज़ पसन्द करेंगे?

काब ने कहा, अपनी औरतों को मेरे पास रेहन रख दो।

मुहम्मद बिन मस्लमा ने कहा, भला, हम अपनी औरतें आपके पास कैसे रेहन रख दें, जबकि आप अरब के सबसे ख़ूबसूरत इंसान हैं !

उसने कहा, तो फिर अपने बेटों को ही रेहन रख दो।

मुहम्मद बिन मस्लमा ने कहा, हम अपने बेटों को कैसे रेहन रख दें। अगर ऐसा हो गया तो उन्हें गाली दी जाएगी कि यह एक वसक़ या दो वसक़ के बदले रेहन रखा गया था। यह हमारे लिए शर्म की बात है। अलबत्ता हम आपके पास हथियार रेहन रख सकते हैं।

इसके बाद दोनों में तै हो गया कि मुहम्मद बिन मस्लमा (हथिरयार लेकर) उसके पा आएंगे।

उधर अबू नाइला ने भी इसी तरह का क़दम उठाया, यानी काब बिन अशरफ़

के पास आए, कुछ देर इधर-उधर की कविताएं सुनते-सुनाते रहे, फिर बोले, भाई इब्ने अशरफ़! मैं इस ज़रूरत से आया हूं, उसे कहना चाहता हूं, लेकिन उसे आप रहस्य ही समझेंगे, किसी से कहेंगे नहीं।

काब ने कहा, ठीक है, मैं ऐसा ही करूंगा।

अबू नाइला ने कहा, भाई! उस व्यक्ति (इशारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर था) का आना क्या हुआ, हमारे लिए आज़माइश बन गया है। सारा अरब हमारा दुश्मन हो गया है। सबने हमें एक कमान से मारा है। हमारी राहें बन्द हो गई हैं। ख़ानदान के ख़ानदार बर्बाद हो रहे हैं, जानों पर बन आई है। हम और हमारे बाल, बच्चे मशक़्क़तों से चूर हैं।

इसके बाद उन्होंने भी कुछ उसी ढंग की बातें कीं, जैसी मुहम्मद बिन मस्लमा ने की थी।

बात करते-करते अबू नाइला ने यह भी कहा कि मेरे कुछ साथी हैं, जिनके विचार भी मेरे ही जैसे हैं। मैं उन्हें भी आपके पास लाना चाहता हूं। आप उनके हाथ भी कुछ बेचें और उन पर एहसान करें।

मुहम्मद बिन मस्लमा और अबू नाइला अपनी-अपनी बातों के ज़रिए जो मक़्सद हासिल करना चाहते थे, उसमें कामियाब रहे, क्योंकि इस बातचीत और मामले के बाद हथियार और साथियों सहित इन दोनों के आने पर काब बिन अशरफ़ चौंक नहीं सकता था।

शुरू के इस मरहले को पूरा कर लेने के बाद 14 रबीउल अव्वल 03 हिजरी की चांदनी रात को यह छोटा-सा जत्था अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जमा हुआ। आप बक़ीअ ग़रक़द तक उनके साथ गए, फिर फ़रमाया—

जाओ, बिस्मिल्लाह! ऐ अल्लाह! इनकी मदद फ़रमा।

फिर आप अपने घर लौट आए और नमाज़ और दुआ में लग गए।

इधर यह जत्था काब बिन अशरफ़ के क़िले के दामन में पहुंचा, तो उसे अबू नाइला ने ज़रा ज़ोर से आवाज़ दी।

अवाज़ सुनकर वह उनके पास आने के लिए उठा, तो उसकी बीवी ने, (जो अभी नई नवेली दुल्हन थी) कहा, इस वक़्त कहां जा रहे हैं? ऐसी आवाज़ सुन रही हूं जिससे मानो ख़ून टपक रहा है।

काब ने कहा, यह तो मेरा भाई मुहम्मद बिन मस्लमा और मेरा दूध का साथी अबू नाइला है! इज़्ज़तदार आदमी को अगर नेज़े की मार की ओर बुलाया जाए,

तो उस पुकार पर भी वह जाता है। इसके बाद वह बाहर आ गया। ख़ुशबू में बसा हुआ था और सर से ख़ुशब की लहरें फूट रही थीं।

अबू नाइला ने अपने साथियों से कह रखा था कि जब वह आ जाएगा, तो मैं उसके बाल पकड़ कर सूंघूंगा। जब तुम देखना कि मैंने उसका सर पकड़ कर उसे क़ाबू में कर लिया है तो उस पर पिल पड़ना और उसे मार डालना।

चुनांचे जब काब आया तो कुछ देर बातें रहीं। फिर अबू नाइला ने कहा, इब्ने अशरफ़! क्यों न शेबे अजूज़ तक चलें। ज़रा आज रात बातें की जाएं।

उसने कहा, तुम लोग चाहो तो चलो।

इस पर सब लोग चल पड़े।

बीच रास्ते में अबू नाइला ने कहा, आज जैसी अच्छी ख़ुशबू तो मैंने कभी सूंघी ही नहीं।

यह सुनकर काब का सीना गर्व से तन गया। कहने लगा, मेरे पास अरब की सबसे ज़्यादा ख़ुशबू वाली औरत है।

अबू नाइला ने कहा, इजाज़त हो तो ज़रा आपका सर सूंघ लूं?

वह बोला, हां, हां।

अबू नाइला ने उसके सर में अपना हाथ डाला, फिर ख़ुद भी सूंघा और साथियों को भी सुंघाया।

कुछ और चले, तो अबू नाइला ने कहा, भई एक बार और।

काब ने कहा, हां, हां।

अबू नाइला ने फिर वह हरकत की, यहां तक कि वह सन्तुष्ट हो गया।

इसके बाद कुछ और चले तो अबू नाइला ने फिर कहा कि भई एक बार और।

उसने कहा, ठीक है।

अब की बार अबू नाइला ने उसके सर में हाथ डालकर ज़रा अच्छी तरह पकड़ लिया, तो बोले, ले लो अल्लाह के इस दुश्मन को।

इतने में उस पर कई तलवारें पड़ीं, लेकिन कुछ काम न दे सकीं।

यह देखकर मुहम्मद बिन मस्लमा ने झट अपनी कुदाल ली और उसके पेडू पर लगा कर चढ़ बैठे। कुदाल आर-पार हो गई और अल्लाह का यह दुश्मन वहीं ढेर हो गया।

हमले के दौरान उसने इतनी ज़बरदस्त चीख़ लगाई थी कि आस-पास में हलचल मच गई थी और कोई ऐसा क़िला बाक़ी न बचा था जिस पर आग न

रोशन की गई हो। (लेकिन हुआ कुछ नहीं।)

कार्रवाई के दौरान हज़रत हारिस बिन औस रज़ि० को कुछ साथियों की तलवार की नोक लग गई थी, जिससे वह घायल हो गए थे और उनके देह से ख़ून बह रहा था। चुनांचे वापसी में जब वह जत्था हर्रा अरीज़ पहुंचा तो देखा कि हारिस साथ नहीं हैं, इसलिए सब लोग वहीं रुक गए।

थोड़ी देर बाद हारिस भी उनके पद-चिह्नों को देखते हुए आ पहुंचे। वहां से लोगों ने उन्हें उठा लिया और बक़ीअ ग़रक़द पहुंचकर इस ज़ोर का नारा लगाया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सललम को भी सुनाई पड़ा।

आप समझ गए कि उन लोगों ने उसे मार लिया है। चुनांचे आपने भी अल्लाहु अक्बर कहा।

फिर जब ये लोग आपकी ख़िदमत में पहुंचे, तो आपने फ़रमाया, ये चेहरे कामियाब रहें।

उन लोगों ने कहा, आपका चेहरा भी ऐ अल्लाह के रसूल! और इसके साथ ही उस ताग़ूत (उद्दंड बैरी) का सर आपके सामने रख दिया।

आपने उसके क़त्ल पर अल्लाह के गुणगान किए और हारिस के घाव पर अपना थूक लगा दिया, जिससे वह चंगे हो गए और आगे कभी तक्लीफ़ न हुई।[1]

इधर यहूदियों को जब अपने सरदार काब बिन अशरफ़ के क़त्ल का इल्म हुआ तो उनके हठधर्म और जिद्दी दिलों में रौब की लहर दौड़ गई। उनकी समझ में आ गया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब यह महसूस कर लेंगे कि अम्न व अमान के साथ खिलवाड़ करने वालों, हंगामे और बेचैनी पैदा करने वालों और वचन को पूरा न करने वालों पर नसीहत काम नहीं कर रही है, तो आप ताक़त के इस्तेमाल से भी न चूकेंगे। इसलिए उन्होंने अपने इस ताग़ूत के दुश्मन पर चूं न किया, बल्कि एकदम दम साधे पड़े रहे। वचन के पूरा करने का प्रदर्शन किया और हिम्मत हार बैठे, यानी सांप तेज़ी के साथ अपने बिलों में जा घुसे।

इस तरह एक मुद्दत तक के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना से बाहर पेश आने वाले ख़तरों का सामना करने के लिए फ़ारिग़ हो गए और मुसलमान इन बहुत से अन्दरूनी झंझटों के बोझ से बच गए जिनकी

---

1. इस घटना का विवरण इब्ने हिशाम 2/51-57, सहीह बुख़ारी, 1/341-425, 2/577, सुनने अबू दाऊद मय औनुल माबूद 2/42-43, और ज़ादुल मआद 2/91 से लिया गया है।

आशंका उन्हें हो रही थी और जिनकी गन्ध वे कभी-कभी सूंघते रहते थे।

7. ग़ज़वा बहरान

यह एक बड़ी फ़ौजी मुहिम थी जिसकी तायदाद तीन सौ थी। इस सेना को लेकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रबीउल आख़र सन् ०३ हि० में बहरान नामी एक इलाक़े की ओर तशरीफ़ ले गए थे। (यह हिजाज़ के बाहरी हिस्से में एक खनिज पदार्थों से भरी जगह है और रबीउल आख़र और जुमादल ऊला के दो महीने वहीं ठहरे रहे। इसके बाद मदीना वापस तशरीफ़ लाए। किसी क़िस्म की लड़ाई से साबक़ा पेश न आया।[1]

8. सरीया ज़ैद बिन हारिसा

उहुद की लड़ाई से पहले मुसलमानों की यह आख़िरी और सबसे कामियाब मुहिम थी, जो जुमादल उख़रा सन् 03 हि० में पेश आई।

घटना इस प्रकार है कि क़ुरैश बद्र की लड़ाई के बाद से बेचैनी के शिकार तो थे ही, पर जब गर्मी का मौसम आ गया और शाम देश की व्यापारिक यात्रा का समय आ गया, तो उन्हें एक और चिन्ता ने आ घेरा।

इसका स्पष्टीकरण इससे होता है कि सफ़वान बिन उमैया ने, जिसे क़ुरैश की ओर से इस साल शाम देश जाने वाले व्यापारिक क़ाफ़िले का मुखिया बनाया था, क़ुरैश से कहा—

'मुहम्मद और उनके साथियों ने हमारा व्यापारिक राजमार्ग हमारे लिए बड़ा कठिन बना दिया है। समझ में नहीं आता कि हम उसके साथियों से कैसे निमटें। वे तट छोड़कर हटते ही नहीं और तट पर बसने वालों ने उनसे समझौता कर लिया है। आम लोग भी उन्हीं के साथ हो गये हैं। अब समझ में नहीं आता कि हम कौन-सा रास्ता अपनाएं? और अगर हम घरों ही में बैठे रहें तो अपनी मूल पूंजी भी खा जाएंगे, कुछ बाक़ी न बचेगा, क्योंकि मक्का में हमारी ज़िंदगी का आश्रय इस पर है कि गर्मी में शाम और जाड़े में हब्शा से व्यापार करें।'

---

1. इब्ने हिशाम 2/50-51, ज़ादुल मआद 2/91। इस ग़ज़वे की वजहें तै करने के अलग-अलग स्रोत हैं। कहा जाता है कि मदीना में यह ख़बर पहुंची कि बनू सुलैम मदीना और मदीना के आस-पास के इलाक़ों पर हमला करने के लिए बड़े पैमाने पर जंगी तैयारियां कर रहे हैं और कहा जाता है कि आप क़ुरैश के किसी क़ाफ़िले की खोज में निकले थे। इब्ने हिशाम ने सही वजह लिखी है और इब्ने क़ैयिम ने भी इसी को अपनाया है। चुनांचे पहली वजह का सिरे से उल्लेख ही नहीं किया है।

सफ़वान के इस सवाल पर इस विषय पर विचार-विमर्श शुरू हो गया। आख़िर अस्वद बिन अब्दुल मुत्तलिब ने सफ़वान से कहा, तुम तट का रास्ता छोड़कर इराक़ के रास्ते आया करो।

स्पष्ट रहे कि यह रास्ता बहुत लम्बा है, नज्द से होकर शाम जाता है और मदीने के पूरब में ख़ासी दूरी से गुज़रता है। क़ुरैश इस रास्ते को बिल्कुल नहीं जानते थे, इसलिए अस्वद बिन अब्दुल मुत्तलिब ने सफ़वान को मश्विरा दिया कि वह फ़रात बिन हय्यान को, जो क़बीला बिक्र बिन वाइल से ताल्लुक़ रखता था, रास्ता बताने के लिए गाइड रख ले। वह इस सफ़र में उसकी रहनुमाई कर देगा।

इस व्यवस्था के बाद क़ुरैश का कारवां सफ़वान बिन उमैया के नेतृत्व में नए रास्ते से रवाना हुआ, मगर इस कारवां और इसके सफ़र की पूरी योजना की ख़बर मदीना पहुंच गई।

हुआ यह कि सुलैत बिन नोमान, जो मुसलमान हो चुके थे, नईम बिन मसऊद के साथ जो अभी मुसलमान नहीं हुए थे, शराब पीने-पिलाने की एक सभा में जमा हुए। (यह शराब के हराम किए जाने से पहले की घटना है) जब नईम पर नशे का ग़लबा हुआ तो उन्होंने क़ाफ़िले और उसके सफ़र की पूरी योजना का विवरण बता डाला। सुलैत पूरी तेजी से नबी सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुए और सारा विवरण कह सुनाया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुरन्त हमले की तैयारी शुरू की और सौ सवारों का एक दस्ता हज़रत ज़ैद बिन हारिसा कलबी रज़ियल्लाहु अन्हु की कमान में देकर रवाना कर दिया।

हज़रत ज़ैद रज़ि० ने बड़ी तेज़ी से रास्ता तै किया और अभी क़ुरैश का क़ाफ़िला बिल्कुल बेख़बरी की हालत में क़र्द: नामी एक सोते पर पड़ाव डालने के लिए उतर रहा था कि उसे जा लिया और अचानक धावा बोलकर पूरे कारवां पर क़ब्ज़ा कर लिया।

सफ़वान बिन उमैया और कारवां के दूसरे सुरक्षाकर्मियों को भागने के अलावा कोई रास्ता नज़र न आया।

मुसलमानों ने कारवां के गाइड फ़रात बिन हय्यान को, और कहा जाता है कि और दो आदमियों को गिरफ़्तार कर लिया। बर्तन और चांदी की बहुत बड़ी मात्रा जो कारवां के पास थी, और जिसका अन्दाज़ा, एक लाख दिरहम था, ग़नीमत के तौर पर हाथ आई।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पांचवां हिस्सा निकाल

कर ग़नीमत का माल जत्थे के लोगों में बांट दिया और फ़रात बिन हय्यान ने नबी सल्ल० के मुबारक हाथ पर इस्लाम कुबूल कर लिया।[1]

बद्र के बाद क़ुरैश के लिए यह सबसे दुखद बात थी, जिससे उनका दुख और बढ़ गया। अब उनके सामने दो ही रास्ते थे, या तो अपना दंभ व अभिमान छोड़कर मुसलमानों से समझौता कर लें या भरपूर लड़ाई लड़कर अपने पुराने आदर और प्रतिष्ठा को वापस लाएं और मुसलमानों की ताक़त को इस तरह तोड़ दें कि वे दोबारा सर न उठा सकें।

मक्का ने इसी दूसरे रास्ते को चुना। चुनांचे इस घटना के बाद क़ुरैश के बदले की भावना कुछ और बढ़ गई और उसने मुसलमानों से टक्कर लेने और उनके घर में घुसकर उन पर हमला करने के लिए भरपूर तैयारी शुरू कर दी। इस तरह पिछली घटनाओं के अलावा यह घटना भी उहुद की लड़ाई की ख़ास वजह बन गई है।

---

1. इब्ने हिशाम 2/50-51, रहमतुललिल आलमीन 2/219

उहुद की लड़ाई

बदले की लड़ाई के लिए क़ुरैश की तैयारियां

मक्का वालों को बद्र की लड़ाई में जो पसपाई और अपने बड़ों के क़त्ल का जो दुख सहन करना पड़ा था, उसकी वजह से वह मुसलमानों के खिलाफ़ ग़म और गुस्से से खौल रह थे, यहां तक कि उन्होंने अपने मरने वालों पर आह-वाह करने से भी रोक दिया था और क़ैदियों के फ़िदए की अदाएगी में भी जल्दबाज़ी दिखाने से मना कर दिया था, ताकि मुसलमान उनके रंज और ग़म की ज़्यादती का अन्दाज़ा न कर सकें।

फिर उन्होंने बद्र की लड़ाई के बाद सर्वसम्मति से यह फ़ैसला किया कि मुसलमानों से भरपूर लड़ाई लड़कर अपना कलेजा ठंडा करें और अपने भड़के गुस्से को तस्कीन दें और इसके साथ ही इस क़िस्म की लड़ाई की तैयारी भी शुरू कर दी। इस मामले में क़ुरैश के सरदारों में से इक्रिमा बिन अबू जह्ल, सफ़वान बिन उमैया, अबू सुफ़ियान बिन हर्ब और अब्दुल्लाह बिन रबीआ ज़्यादा जोश में और सबसे आगे-आगे थे।

इन लोगों ने इस सिलसिले में पहला काम यह किया कि अबू सुफ़ियान का वह क़ाफ़िला जो बद्र की लड़ाई की वजह बना था और जिसे अबू सुफ़ियान बचा कर निकाल ले जाने में कामियाब हो गया था, उसका सारा माल जंगी खर्चों के लिए रोक लिया और जिन लोगों का माल था, उनसे कहा कि—

'ऐ क़ुरैश के लोगो ! तुम्हें मुहम्मद ने कड़ा झटका दिया है और तुम्हारे चुने हुए सरदारों को क़त्ल कर डाला है, इसलिए उनसे लंड़ने के लिए इस माल के ज़रिए मदद करो, मुम्किन है कि हम बदला चुका लें।'

क़ुरैश के लोगों ने उसे मंज़ूर कर लिया। चुनांचे यह सारा माल जिसका योग एक हज़ार ऊंट और पचास हज़ार दीनार था, लड़ाई की तैयारी के लिए बेच डाला गया। इसी के बारे में अल्लाह ने यह आयत उतारी है—

'जिन लोगों ने कुफ़्र किया, वे अपने माल अल्लाह के रास्ते से रोकने के लिए ख़र्च करेंगे, तो ये ख़र्च तो करेंगे, लेकिन फिर यह उनके लिए हैरानी की वजह होगा, फिर मग़लूब किए जाएंगे।' (8 : 36)

फिर उन्होंने स्वयं सेवा के रूप में जंगी खिदमत का दरवाज़ा खोल दिया कि जो अहाबीश किनाना और तिहामा के लोग लड़ाई में शरीक होना चाहें, वे क़ुरैश के झंडे तले जमा हो जाएं। उन्होंने इस उद्देश्य के लिए लोभ-लालच दिलाने की

बहुत-सी शक्लें भी अपनाई, यहां तक कि अबू उज़्ज़ा नामी कवि, जो बद्र की लड़ाई में क़ैद हुआ था, और जिससे अल्लाह के रसूल ने यह वचन लेकर कि वह अब आपके ख़िलाफ़ कभी नहीं उठेगा, एहसान के तौर पर बिला फ़िदया छोड़ दिया था, उसे सफ़वान बिन उमैया ने उभारा कि वह क़बीलों को मुसलमानों के ख़िलाफ़ उभारने का काम करे और उससे यह वचन लिया कि अगर वह लड़ाई से बचकर ज़िंदा व सलामत वापस आ गया, तो उसे मालामाल कर देगा, वरना उसकी लड़कियों को पाले-पोसेगा।

चुनांचे अबू उज़्ज़ा ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिए वचन को पीठ पीछे डालकर भावनाओं को उभारने वाली कविताओं द्वारा क़बीलों को भड़काना शुरू कर दिया। इसी तरह क़ुरैश के एक और कवि मुसाफ़े बिन अब्दे मुनाफ़ जुमही को इस मुहिम के लिए तैयार किया।

इधर अबू सुफ़ियान ने ग़ज़वा सवीक़ से नाकाम व नामुराद, बल्कि रसद के सामान की एक बहुत बड़ी मात्रा से हाथ धोकर वापस आने के बाद मुसलमानों के ख़िलाफ़ लोगों को उभारने और भड़काने में कुछ ज़्यादा ही सरगर्मी दिखाई।

फिर आख़िर में सरीया ज़ैद बिन हारिसा की घटना से क़ुरैश को जिस संगीन और आर्थिक रूप से कमर तोड़ घाटे से दोचार होना पड़ा और उन्हें जितना ज़्यादा दुख और ग़म पहुंचा, उसने आग पर तेल का काम किया और इसके बाद मुसलमानों से एक निर्णायक लड़ाई लड़ने के लिए क़ुरैश की तैयारी की रफ़्तार में बड़ी तेज़ी आ गई।

क़ुरैश की फ़ौज, लड़ाई का सामान और कमान

चुनांचे साल पूरा होते-होते क़ुरैश की तैयारी पूरी हो गई। उनके अपने लोगों के अलावा उनके साथी और मित्र क़बीलों को मिलाकर कुल तीन हज़ार की फ़ौज तैयार हुई।

क़ुरैशी सरदारों की राय हुई कि अपने साथ औरतें भी ले चलें, ताकि उनकी इज़्ज़त व आबरू को बचाए रखने का एहसास कुछ ज़्यादा ही वीरता के साथ लड़ने की वजह बने। इसलिए इस फ़ौज में कुछ औरतें भी शामिल हुईं, जिनकी तायदाद पन्द्रह थी। सवारी के लिए और माल ढोने के लिए तीन हज़ार ऊंट थे और फ़ौज के लिए दो सौ घोड़े।[1]

---

1. ज़ादुल मआद, 2/92, यही मशहूर है, लेकिन फ़त्हुल बारी 7/346 में घोड़ों की तायदाद एक सौ बताई गई है।

इन घोड़ों को ताज़ादम रखने के लिए इन्हें पूरे रास्ते बाज़ू में ले जाया गया यानी इन पर सवारी नहीं की गई। सुरक्षा-शस्त्रों में सात सौ कवच थे।

अबू सुफ़ियान को पूरी फ़ौज का सेनापति मुक़र्रर कर दिया गया। फ़ौज की कमान ख़ालिद बिन वलीद को दी गई और इक्रिमा बिन अबू जह्ल को उनका सहयोगी बनाया गया। झंडा तैशुदा क़ायदे के मुताबिक़ क़बीला बनी अब्दुद्दार के हाथ में दिया गया।

मक्के की फ़ौज चल पड़ी

इस भरपूर तैयारी के बाद मक्के की फ़ौज ने इस हालत में मदीने का रुख़ किया कि मुसलमानों के ख़िलाफ़ ग़म व ग़ुस्सा और बदले की भावना उनके दिलों में शोला बनकर भड़क रही थी। इससे अन्दाज़ा हो रहा था कि आने वाली लड़ाई में कितनी ख़ूंरेज़ी और तेज़ी पैदा होने वाली है।

मदीना में सूचना

हज़रत अब्बास रज़ि० क़ुरैश की इन सारी चलत-फिरत, सरगर्मियों और जंगी तैयारियों का बड़ी मुस्तैदी और गहराई से अध्ययन कर रहे थे। चुनांचे जैसे ही यह फ़ौज हरकत में आई, हज़रत अब्बास रज़ि० ने एक ख़त के ज़रिए उसका पूरा विवरण नबी सल्ल० की ख़िदमत में भेज दिया।

हज़रत अब्बास रज़ि० का दूत सन्देश पहुंचाने में बड़ा फुर्तीला साबित हुआ। उसने मक्का से मदीना तक कोई पांच सौ किलोमीटर की दूरी सिर्फ़ तीन दिन में तै करके उनका पत्र नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हवाले किया। उस वक़्त आप मस्जिदे क़ुबा में तशरीफ़ रखते थे।

यह पत्र हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्ल० को पढ़कर सुनाया। आपने उन्हें राज़दारी बरतने की ताकीद की और झट मदीना तशरीफ़ लाकर अंसार और मुहाजिरों के सरदारों से सलाह व मश्विरा किया।

आपातकालीन स्थिति के मुक़ाबले की तैयारी

इसके बाद मदीना में आम लामबन्दी की स्थिति पैदा हो गई। लोग किसी भी स्थिति से निपटने के लिए हर वक़्त हथियार बन्द रहने लगे, यहां तक कि नमाज़ में भी हथियार अलग नहीं किया जाता था।

उधर अंसार की एक छोटी-सी टुकड़ी, जिसमें साद बिन मुआज़, उसैद बिन हुज़ैर और साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हुम थे, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम की निगरानी पर तैनात हो गई। ये लोग हथियार पहनकर सारी रात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरवाज़े पर गुज़ार देते थे।

कुछ और टुकड़ियां इस ख़तरे को देखते हुए कि ग़फ़लत में अचानक कोई हमला न हो जाए, मदीने में दाख़िले के अलग-अलग रास्तों पर तैनात हो गई।

कुछ दूसरी टुकड़ियों ने दुश्मन की गतिविधियों का पता लगाने के लिए जासूसी का काम शुरू कर दिया। ये टुकड़ियां उन रास्तों पर गश्त करती रहती थीं, जिनसे गुज़रकर मदीने पर छापा मारा जा सकता था।

मक्का की फ़ौज, मदीने की तलैटी में

उधर मक्के की फ़ौज, जाने-पहचाने राजमार्ग पर चलती रही। जब अबवा पहुंची, तो अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्द बिन्त उत्बा ने यह प्रस्ताव रखा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मां की क़ब्र उखाड़ दी जाए।

लेकिन इस दरवाज़े को खोलने के जो संगीन नतीजे निकल सकते थे, उसके डर से सरदारों ने यह प्रस्ताव मंज़ूर नहीं किया।

इसके बाद फ़ौज ने अपना सफ़र पहले की तरह जारी रखा, यहां तक कि मदीना के क़रीब पहुंचकर पहले अक़ीक़ की घाटी से गुज़री, फिर किसी क़दर दाहिनी ओर कतरा कर उहुद पहाड़ी के क़रीब ऐनैन नाम की एक जगह पर, जो मदीना के उत्तर में क़नात घाटी के किनारे एक ऊसर ज़मीन है, पड़ाव डाल दिया। यह शुक्रवार 06 शव्वाल सन् 03 हि० की घटना है।

मदीना की रक्षात्मक रणनीति के लिए मज्लिसे शूरा (सलाहकार समिति) की मीटिंग

मदीना के सूचना-सूत्र मक्की सेना की एक-एक ख़बर पहुंचा रहे थे, यहां तक कि उसके पड़ाव के बारे में आख़िरी ख़बर भी पहुंचा दी। उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ौजी हाई कमान की मज्लिसे शूरा की मीटिंग बुलाई, जिसमें यथोचित रणनीति अपनाने के लिए सलाह-मश्विरा करना था।

आपने उन्हें अपना देखा हुआ एक सपना बतलाया। आपने क़सम खाकर बताया कि मैंने एक भली चीज़ देखी। मैंने देखा कि कुछ गाएं ज़िब्ह की जा रही हैं और मैंने देखा कि मेरी तलवार के सिरे पर कुछ टूट-फूट है और यह भी देखा कि मैंने अपना हाथ एक सुरक्षित कवच में डाल रखा है।

फिर आपने गाय का यह स्वप्नफल बताया कि कुछ सहाबा क़त्ल किए

जाएंगे। तलवार में टूट-फूट का यह स्वप्नफल बताया कि आपके घर का कोई आदमी शहीद होगा और सुरक्षित कवच का यह स्वप्नफल बताया कि इससे मुराद मदीना शहर है।

फिर आपने सहाबा किराम के सामने रक्षात्मक रणनीति के बारे में अपनी राय पेश की कि मदीने से बाहर न निकलें, बल्कि शहर के अन्दर ही क़िलाबन्द हो जाएं। अब अगर मुश्रिक अपने कैम्प में ठहरे रहते हैं, तो बे-मक़्सद और बुरा ठहरना होगा और अगर मदीने में दाख़िल होते हैं, तो मुसलमान गली-कूचों के नाकों पर उनसे लड़ेंगे और औरतें छतों के ऊपर से उन पर ईंट-पत्थर बरसाएंगी।

यही सही राय थी और इसी राय से अब्दुल्लाह बिन उबई (मुनाफ़िक़ों के सरदार) ने भी सहमति दिखाई, जो इस मीटिंग में ख़जरज के एक बड़े नुमाइन्दे की हैसियत से शरीक था। लेकिन उसकी सहमति का आधार यह न था कि सामरिक दृष्टिकोण से यह बात सही थी, बल्कि उसका मक़्सद यह था कि वह लड़ाई से दूर भी रहे और किसी को इसका एहसास भी न हो।

लेकिन अल्लाह को कुछ और ही मंजूर था। उसने यह चाहा कि यह व्यक्ति अपने साथियों सहित पहली बार भरे बाज़ार में रुसवा हो जाए और उनके कुफ़्र व निफ़ाक़ पर जो परदा पड़ा हुआ है, वह हट जाए और मुसलमानों को अपनी सबसे कठिन घड़ी में मालूम हो जाए कि उनकी आस्तीन में कितने सांप पल रहे हैं।

चुनांचे मान्य सहाबा की एक जमाअत ने, जो बद्र में शरीक होने से रह गई थी, बढ़कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मश्विरा दिया कि मैदान में तशरीफ़ ले चलें और उन्होंने अपनी इस राय पर बड़ा आग्रह किया, यहां तक कि कुछ सहाबा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम तो इस दिन की तमन्ना किया करते थे और अल्लाह से इसकी दुआएं मांगा करते थे। अब अल्लाह ने इसका मौक़ा दिया है और मैदान में निकलने का वक़्त आ गया है, तो फिर आप दुश्मन के मुक़ाबले ही के लिए तशरीफ़ ले चलें। वे यह न समझें कि हम डर गए हैं।

इन अति उत्साही लोगों में खुद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु सबसे आगे थे, जो बद्र की लड़ाई में अपनी तलवार का जौहर दिखा चुके थे। उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि उस ज़ात की क़सम! जिसने आप पर किताब उतारी, मैं कोई खाना न खाऊंगा, यहां तक कि मदीने से बाहर अपनी तलवार के लिए उनसे दो-दो हाथ न कर लूं।[1]

---

1. सीरते तैयिबा 2/14

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन गर्मजोश लोगों के आग्रह पर अपनी राय छोड़ दी और आखिरी फ़ैसला यही हुआ कि मदीने से बाहर निकलकर खुले मैदान में लड़ाई लड़ी जाए।

इस्लामी फ़ौज की तर्तीब और लड़ाई के मैदान के लिए रवानगी

इसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुमा की नमाज़ पढ़ाई तो वाज़ व नसीहत (उपदेश) की, जद्दोजेहद पर उभारा और बतलाया कि सब्र और जमाव से ही ग़लबा मिल सकता है। साथ ही हुक्म दिया कि दुश्मन से मुक़ाबले के लिए तैयार हो जाएं।

यह सुनकर लोगों में ख़ुशी की लहर दौड़ गई।

इसके बाद जब आपने अस्र की नमाज़ पढ़ी, तो उस वक़्त तक लोग जमा हो चुके थे। अवाली के लोग भी आ चुके थे। नमाज़ के बाद आप अन्दर तशरीफ़ ले गए। साथ ही अबूबक्र व उमर भी थे। उन्होंने आपके सर पर अमामा बांधा और कपड़े पहनाए। आपने नीचे-ऊपर दो कवच पहने, तलवार लटकाई और हथियार से सज कर लोगों के सामने तशरीफ़ लाए।

लोग आपके आने के इन्तिज़ार में थे ही। लेकिन इस बीच हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० और उसैद बिन हुज़ैर ने लोगों से कहा कि आप लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मैदान में निकलने पर ज़बरदस्ती तैयार किया है, इसलिए मामला आप ही के हवाले कर दीजिए।

ऐसा सुनकर सबने शर्मिंदगी महसूस की और जब आप बाहर तशरीफ़ ले आए तो आपसे अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमें आपसे मतभेद नहीं करना चाहिए था, आपको जो पसन्द हो वही कीजिए। अगर आपको यह पसन्द है कि मदीने में रहें तो आप ऐसा ही कीजिए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कोई नबी जब अपना हथियार पहन ले, तो मुनासिब नहीं कि उसे उतारे, यहां तक कि अल्लाह उसके दर्मियान और उसके दुश्मन के दर्मियान फ़ैसला फ़रमा दे।[1]

इसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ौज को तीन हिस्सों में बांट दिया—

1. मुहाजिरों का दस्ता, इसका झंडा हज़रत मुसअब बिन उमैर अब्दरी

---

1. मुस्नद अहमद, नसई 3/351, हाकिम, इब्ने इस्हाक़, बुख़ारी ने भी इसे किताबुल एतसाम बाब 28 तर्जमतुल बाब में ज़िक्र किया है।

रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया।

2. औस क़बीले (अंसार) का दस्ता, इसका झंडा हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया।

3. खज़रज क़बीले (अंसार) का दस्ता, इसका झंडा हुबाब बिन मुन्ज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया।

पूरी फ़ौज में कुल एक हज़ार लड़ने वाले योद्धा थे, जिनमें एक सौ कवचधारी थे और कहा जाता है कि घुड़सवार कोई भी न था।[1]

हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु को इस काम पर मुक़र्रर फ़रमाया कि वह मदीने के अन्दर रह जाने वालों को नमाज़ पढ़ाएंगे।

इसके बाद कूच करने का एलान फ़रमा दिया और फ़ौज उत्तर की ओर चल पड़ी। हज़रत साद बिन मुआज़ और साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हुमा कवच पहने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगे-आगे चल रहे थे।

सनीयतुल वदाअ से आगे बढ़े तो एक दस्ता नज़र आया, जो बहुत अच्छे हथियार पहने हुए था और पूरी फ़ौज से अलग-थलग था।

आपने मालूम किया तो बतलाया गया कि ख़ज़रज के मित्र यहूदी हैं,[२] जो मुश्रिकों के ख़िलाफ़ लड़ाई में शरीक होना चाहते हैं।

आपने मालूम किया, क्या ये मुसलमान हो चुके हैं?

लोगों ने कहा, नहीं।

इस पर आपने शिर्क वालों के ख़िलाफ़ कुफ़्र वालों की मदद लेने से इंकार कर दिया।

फ़ौज का मुआयना

फिर आपने शेख़ान नाम की एक जगह पर पहुंचकर फ़ौज का मुआयना

---

1. इब्ने क़य्यिम ने ज़ादुल मआद 2/92 में कहा है कि पचास सवार थे। हाफ़िज़ इब्ने हजर कहते हैं कि यह भारी ग़लती है। मूसा बिन अक़बा ने पूरे विश्वास से कहा है कि मुसलमानों के साथ उहुद की लड़ाई में सिरे से कोई घोड़ा था ही नहीं। वाक़दी का बयान है कि सिर्फ़ दो घोड़े थे। एक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास और एक अबू बुरदा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास।(फ़त्हुल बारी 7/350)
2. इस घटना का उल्लेख इब्ने साद ने किया है। इसमें यह भी बताया गया है कि यह बनू क़ैनुक़ाअ के यहूदी थे (2/34) लेकिन यह सही नहीं है, क्योंकि बनू क़ैनुक़ाअ को बद्र की लड़ाई के कुछ ही दिनों बाद घर से बे-घर कर दिया गया था।

फ़रमाया। जो लोग छोटे या लड़ने के क़ाबिल नज़र आए, उन्हें वापस कर दिया। उनके नाम ये हैं—

1. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, 2. उसामा बिन ज़ैद, 3. उसैद बिन ज़ुहैर, 4. ज़ैद बिन साबित, 5. ज़ैद बिन अरक़म, 6. उराबा बिन औस, 7. अम्र बिन हज़्म, 8. अबू सईद खुदरी, 9. ज़ैद बिन हारिसा और 10. साद बिन हुब्बा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हुम। इस सूची में बरा बिन आज़िब का नाम भी लिया जाता है, लेकिन सहीह बुख़ारी में उनकी जो रिवायत उल्लिखित है, उससे स्पष्ट होता है कि वह उहुद के मौक़े पर लड़ाई में शरीक थे।

अलबत्ता कम उम्र होने के बावजूद हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज और समुरा बिन जुन्दुब को लड़ाई में शरीक होने की इजाज़त मिल गई। इसकी वजह यह हुई कि हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज बड़े माहिर तीरंदाज़ थे, इसलिए उन्हें इजाज़त मिल गई।

जब उन्हें इजाज़त मिल गई तो हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मैं तो राफ़ेअ से ज़्यादा ताक़तवर हूं। मैं उसे पछाड़ सकता हूं।

चुनांचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसकी ख़बर दी गई तो आपने अपने सामने दोनों से कुश्ती लड़वाई और सचमुच समुरा ने राफ़ेअ को पछाड़ दिया। इसलिए उन्हें भी इजाज़त मिल गई।

उहुद और मदीने के दर्मियान रात बिताई

यहीं शाम हो चुकी थी, इसलिए आपने यहीं मग़रिब और फिर इशा की नमाज़ पढ़ी, और यहीं रात भी गुज़ारने का फ़ैसला किया।

पहरे के लिए पचास सहाबा चुने गए जो कैम्प के चारों ओर गश्त लगाते जाते थे। इनके नेता मुहम्मद बिन मस्लमा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु थे। यह वही बुज़ुर्ग हैं जिन्होंने काब बिन अशरफ़ को ठिकाने लगाने वाली टीम का नेतृत्व किया था।

ज़क्वान बिन अब्दुल्लाह बिन क़ैस खास नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहरा दे रहे थे।

अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथियों की सरकशी

सुबह होने से कुछ पहले आप फिर चल पड़े और शौत नामी जगह पर पहुंच कर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी। अब आप दुश्मन के बिल्कुल क़रीब थे और दोनों एक दूसरे को देख रहे थे। यहीं पहुंचकर अब्दुल्लाह बिन उबई ने सरकशी अख़्तियार

की और कोई एक तिहाई फ़ौज यानी तीन सौ लोगों को लेकर यह कहता हुआ वापस चला गया कि हम नहीं समझते कि क्यों ख़ामख़ाही अपनी जान दें। उसने इस बात पर भी रोष व्यक्त किया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी बात नहीं मानी और दूसरों की बात मान ली।

यक़ीनन इस अलगाव की वजह वह नहीं थी, जो इस मुनाफ़िक़ ने ज़ाहिर की थी कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी बात नहीं मानी, क्योंकि इस शक्ल में नबी सल्ल० की फ़ौज के यहां तक उसके आने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता था। उसे फ़ौज के चलने के पहले ही क़दम पर अलग हो जाना चाहिए था। इसलिए सच्चाई वह नहीं है, जो उसने ज़ाहिर की थी, बल्कि सच्चाई यह थी कि वह इस नाज़ुक मोड़ पर अलग होकर इस्लामी फ़ौज में ऐसे वक़्त बेचैनी और खलबली मचाना चाहता था, जब दुश्मन उसकी एक-एक हरकत देख रहा हो, ताकि एक ओर तो आम फ़ौजी नबी सल्ल० का साथ छोड़ दें, और जो बाक़ी रह जाएं उनके हौसले टूट जाएं।

दूसरी ओर इस दृश्य को देखकर दुश्मन की हिम्मतें बंधें और उसके हौसले बुलन्द हों। इसलिए यह कार्रवाई नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके सच्चे साथियों के ख़ात्मे का एक प्रभावी उपाय था, जिसके बाद उस मुनाफ़िक़ को उम्मीद थी कि उसकी और उसके साथियों की सरदारी के लिए मैदान साफ़ हो जाएगा।

क़रीब था कि यह मुनाफ़िक़ अपने कुछ उद्देश्यों को पाने में सफल हो जाता, क्योंकि दो और गिरोहों यानी औस क़बीले में से बनू हारिसा और ख़ज़रज क़बीले में से बनू सलमा के क़दम भी उखड़ चुके थे और वे वापसी की सोच रहे थे। लेकिन अल्लाह ने उनका हाथ पकड़ा और दोनों गिरोह बेचैनी और वापसी के इरादे के बाद जम गए। इन्हीं के बारे में अल्लाह का इर्शाद है—

'जब तुम में से दो गिरोहों ने इरादा किया कि भीरुता दिखाएं और अल्लाह उनका वली है और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।'

(2 : 122)

बहरहाल मुनाफ़िक़ों ने वापसी का फ़ैसला किया तो सबसे नाज़ुक मौक़े पर हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु के पिता हज़रत अब्दुल्लाह बिन हराम ने उन्हें उनका फ़र्ज़ याद दिलाना चाहा।

चुनांचे वह उन्हें डांटते हुए, वापसी पर उभारते हुए और यह कहते हुए उनके पीछे-पीछे चले कि आओ, अल्लाह की राह में लड़ो या रक्षा करो। मगर उन्होंने जवाब में कहा, अगर हम जानते कि आप लोग लड़ाई करेंगे, तो हम वापस न होते।

यह जवाब सुनकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन हराम रज़ि० यह कहते हुए वापस हुए कि ओ अल्लाह के दुश्मनो ! तुम पर अल्लाह की मार। याद रखो, अल्लाह अपने नबी को तुमसे उदासीन कर देगा।

इन्हीं मुनाफ़िक़ों के बारे में अल्लाह का इर्शाद है कि—

'... और ताकि अल्लाह इन्हें भी जान ले, जिन्होंने मुनाफ़क़त (छल-कपट) की और उनसे कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में लड़ाई करो या रक्षा करो, तो उन्होंने कहा कि अगर हम लड़ाई जानते, तो यक़ीनन तुम्हारी पैरवी करते। ये लोग आज ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र से ज़्यादा क़रीब हैं। मुंह से ऐसी बात कहते हैं जो दिल में नहीं है ओर ये जो कुछ छिपाते हैं, अल्लाह उसे जानता है।' (3 : 167)

बाक़ी इस्लामी फ़ौज उहुद की तलैटी में

इस सरकशी और वापसी के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बाक़ी फ़ौज को लेकर, जिसकी तायदाद सात सौ थी, दुश्मन की ओर क़दम बढ़ा दिया। दुश्मन का पड़ाव आपके दर्मियान और उहुद के बीच कई दिशा से रोक बना हुआ था। इसलिए आपने मालूम किया कि कोई आदमी है जो हमें दुश्मन के पास से गुज़रे बिना किसी क़रीबी रास्ते से ले चले।

इसके जवाब में अबू ख़ैसमा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं इसके लिए हाज़िर हूं।

फिर उन्होंने एक छोटा-सा रास्ता अपनाया, जो मुश्रिकों की फ़ौज को पश्चिम में छोड़ता हुआ बनी हारिसा के बाग़ों और खेतों से गुज़रता था।

इस रास्ते से जाते हुए फ़ौज का गुज़र मुरब्बा बिन क़ैज़ी के बाग़ से हुआ। यह व्यक्ति मुनाफ़िक भी था और अंधा भी। उसने फ़ौज का आना महसूस किया, तो मुसलमानों के चेहरों पर धूल फेंकने लगा और कहने लगा कि अगर आप अल्लाह के रसूल हैं तो याद रखें कि आपको मेरे बाग़ में आने की इजाज़त नहीं।

लोग उसे क़त्ल करने को लपके, लेकिन आपने फ़रमाया कि उसे क़त्ल न करो। यह दिल और आंख दोनों का अंधा है।

फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे बढ़कर घाटी के आख़िरी सिरे पर स्थित उहुद पहाड़ की तलैटी में उतर पड़े और वहीं अपनी फ़ौज का कैम्प लगवाया। सामने मदीना था और पीछे उहुद का काफ़ी ऊंचा पहाड़।

इस तरह दुश्मन की फ़ौज मुसलमानों और मदीने के बीच एक सीमा-रेखा बन गई।

प्रतिरक्षात्मक योजना

यहां पहुंचकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ौज को ख़ास तर्तीब दी और सामरिक दृष्टिकोण से उसे कई लाइनों में बांट दिया। माहिर तीरंदाज़ों का एक दस्ता भी ठीक-ठाक किया, जो पचास योद्धाओं पर सम्मिलित था। इनकी कमान हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर बिन नोमान अंसारी दौसी बदरी रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में थी और उन्हें क़नात घाटी के दक्षिणी किनारे पर स्थित एक छोटी-सी पहाड़ी पर, जो इस्लमाी फ़ौज के कैम्प से कोई डेढ़ सौ मीटर दक्षिण-पूर्व मे स्थित है और अब रमात पहाड़ के नाम से मशहूर है, तैनात फ़रमाया।

इसका उद्देश्य इन शब्दों से स्पष्ट है जो आपने इन तीरंदाज़ों को हिदायत देते हुए इर्शाद फ़रमाए। आपने इनके क़मांडर को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया—

'घुड़सवारों को तीर मारकर इनसे दूर रखो। वे पीछे से हम पर चढ़ न आएं। हम जीतें या हारें, तुम अपनी जगह रहना। तुम्हारी ओर से हम पर हमला न होने पाए।'[1]

फिर आपने तीरंदाज़ों को सम्बोधित करके फ़रमाया—

'हमारे पीछे की हिफ़ाज़त करना। अगर देखो कि हम मारे जा रहे हैं तो हमारी मदद को न आना और अगर देखो कि हम ग़नीमत का माल समेट रहे हैं, तो हमारे साथ शरीक न होना।'[2]

और सहीह बुख़ारी के शब्दों के अनुसार आपने यों फ़रमाया—

'अगर तुम लोग देखो कि हमें चिड़ियां उचक रही हैं, तो भी अपनी जगह न छोड़ना, यहां तक कि मैं बुला भेजूं और अगर तुम लोग देखो कि हमने क़ौम को हरा दिया है और उन्हें कुचल दिया है, तो भी अपनी जगह न छोड़ना, यहां तक कि मैं बुला भेजूं।'[3]

इन कड़े से कड़े फ़ौजी आर्डरों और हिदायतों के साथ उस टुकड़ी को उस पहाड़ी पर तैनात करके अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह एकमात्र दराड़ बन्द कर दी, जिसमें दाख़िल होकर मुश्रिकों का दस्ता मुसलमानों की सफ़ों के पीछे पहुंच सकता था, और उनको घेरे और नरग़े में ले सकता था।

---

1. इब्ने हिशाम, 2/65-66
2. अहमद, तबरानी, हाकिम, देखिए फ़त्हुल बारी 7/350
3. सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद 1/426

बाक़ी फ़ौज की तर्तीब यह थी कि मैमना (दाहिने बाज़ू) पर हज़रत मुंज़िर बिन अम्र मुक़र्रर हुए और मैसरा (बाएं बाज़ू) पर हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम, और उनका सहायक हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद रज़ि० को बनाया गया।

हज़रत ज़ुबैर को यह मुहिम भी सौंपी गई थी कि वह ख़ालिद बिन वलीद के घुड़सवारों की राह रोके रखें। इस तर्तीब के अलावा सफ़ के अगले हिस्से में ऐसे विख्यात और चुनिंदा वीर योद्धा रखे गए जिनकी वीरता प्रसिद्ध थी और जिन्हें हज़ारों के बराबर माना जाता था।

बड़ी बारीकी और हिम्मत के साथ यह योजना तैयार हुई थी, जिससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के महान सैनिक नेतृत्त्व का पता चलता है और साबित होता है कि कोई कमांडर कितना ही योग्य क्यों न हो, आपसे ज़्यादा बारीक और हिक्मत से भरी योजना तैयार नहीं कर सकता, क्योंकि आप दुश्मन की फ़ौज के आने के बाद वहां पहुंचे थे, लेकिन आपने अपनी फ़ौज के लिए वह स्थान चुना जो सामरिक दृष्टिकोण से रण-क्षेत्र में सबसे अच्छी जगह थी।

यानी आपने पहाड़ की ऊंचाइयों की ओट लेकर अपना पीछा और दाहिना बाज़ू सुरक्षित कर लिया और बाएं बाज़ू से लड़ाई के बीच जिस इकलौते दरार से हमला करके पीछे तक पहुंचा जा सकता था, उसे तीरंदाज़ों के ज़रिए बन्द कर दिया और पड़ाव के लिए एक ऊंची जगह चुन ली कि अगर ख़ुदा न करे हार का सामना करना पड़े तो भागने और पीछा करने वालों की क़ैद में जाने के बजाए कैम्प में पनाह ली जा सके और अगर दुश्मन कैम्प पर क़ब्ज़े के लिए आगे बढ़े तो उसे बड़ा ज़बरदस्त घाटा पहुंचाया जा सके।

इसके विपरीत आपने दुश्मन को अपने कैम्प के लिए एक ऐसी निचली जगह क़ुबूल करने पर मजबूर कर दिया कि अगर वह ग़ालिब आ जाए तो जीत का कोई ख़ास फ़ायदा न उठा सके और अगर मुसलमान ग़ालिब आ जाएं तो वे पीछा करने वालों की पकड़ से बच न सके।

इसी तरह आपने प्रसिद्ध योद्धाओं की एक टीम बनाकर फ़ौजी तायदाद की कमी पूरी कर दी।

यह थी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फ़ौज की तर्तीब और तंज़ीम, जो 7 शव्वाल शनिवार को सुबह अमल में आई।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़ौज में प्राण फूंका

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एलान फ़रमाया कि जब तक आप सल्ल० हुक्म न दें, लड़ाई शुरू न की जाए। आपने

ऊपर-नीचे दो कवच पहन रखे थे।

अब आपने सहाबा किराम को लड़ाई पर उभारते हुए ताकीद फ़रमाई कि जब दुश्मन से टकराव हो, तो साहस और धैर्य से काम लें। आपने उनमें वीरता और बहादुरी का प्राण फूंकते हुए एक बड़ी तेज़ नंगी तलवार को चमकाया और फ़रमाया, कौन है जो इस तलवार को लेकर इसका हक़ अदा करे?

इस पर कई सहाबा तलवार लेने के लिए लपक पड़े, जिनमें अली बिन अबी तालिब रज़ि०, ज़ुबैर बन अव्वाम रज़ि० और उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० भी थे। लेकिन अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा रज़ियल्लाहु अन्हु ने आगे बढ़कर अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इसका हक़ क्या है?

आपने फ़रमाया, इससे दुश्मन के चेहरे को मारो, यहां तक कि यह टेढ़ी हो जाए,

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं इस तलवार को लेकर इसका हक़ अदा करना चाहता हूं।

आपने तलवार उन्हें दे दी।

अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हु बड़े जांबाज़ थे। लड़ाई के वक़्त अकड़ कर चलते थे। उनके पास एक लाल पट्टी थी। जब उसे बांध लेते तो लोग समझ जाते कि वह अब मौत तक लड़ते रहेंगे।

चुनांचे जब उन्होंने तलवार ली तो सर पर पट्टी भी बांध ली और दोनों फ़रीक़ों की सफ़ों के दर्मियान अकड़ कर चलने लगे। यही मौक़ा था, जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि यह चाल अल्लाह को नापसन्द है, लेकिन इस जैसे मौक़े पर नहीं।

मक्की फ़ौज का गठन

मुश्रिकों ने भी सफ़बन्दी ही के नियम पर अपनी फ़ौज को तर्तीब दिया था और उसका गठन किया था। उनका सेनापति अबू सुफ़ियान था, जिसने फ़ौज के बीच में अपना केन्द्र बनाया था। दाहिने बाजू पर खालिद बिन वलीद थे जो अभी तक मुश्रिक थे। बाएं बाज़ू पर इक्रिमा बिन अबू जह्ल था। पैदल फ़ौज की कमान सफ़वान बिन उमैया के पास थी और तीरंदाज़ों पर अब्दुल्लाह बिन रबीआ मुक़र्रर हुए।

झंडा बनू अब्दुद्दार की एक छोटी-सी टुकड़ी के हाथ में था। यह पद उन्हें उसी वक़्त से हासिल था जब बनू अब्द मुनाफ़ ने क़ुसई से विरासत में पाए हुए

पदों को आपस में बांट लिया था, जिसका विवरण शुरू किताब में गुज़र चुका है। फिर बाप-दादा से जो चलन चला आ रहा था, उसे देखते हुए कोई व्यक्ति इस पद के बारे में उनसे झगड़ भी नहीं सकता था।

लेकिन सेनापति अबू सुफ़ियान ने उन्हें याद दिलाया कि बद्र के मैदान में उनका झंडाबरदार नज़्र बिन हारिस गिरफ़्तार हुआ तो क़ुरैश को किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था और इस बात को याद दिलाने के साथ ही उनका गुस्सा भड़काने के लिए कहा,

'ऐ बनी अब्दुद्दार! बद्र के दिन आप लोगों ने हमारा झंडा ले रखा था, तो हमें जिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, वह आपने देख ही लिया है। वास्तव में फ़ौज पर झंडे की ही ओर ज़ोर होता है। जब झंडा गिर पड़ता है, तो फ़ौज के क़दम उखड़ जाते हैं। पस अब की बार या तो आप लोग झंडा ठीक तौर से संभालें या हमारे और झंडे के बीच से हट जाएं। हम इसका इंतिज़ाम खुद कर लेंगे।'

इस बातचीत से अबू सुफ़ियान का जो उद्देश्य था, उसमें वह सफल रहा, क्योंकि उसकी बात सुनकर बनू अब्दुद्दार को बड़ा ताव आया। उन्होंने धमकियां दीं, लगता था कि उस पर पिल पड़ेंगे।

कहने लगे, हम अपना झंडा तुम्हें देंगे? कल जब टक्कर होगी तो देख लेना कि हम क्या करते हैं?

और वाक़ई जब लड़ाई शुरू हुई तो वे पूरी बहादुरी से जमे रहे, यहां तक कि उनका एक-एक आदमी मौत के घाट उतर गया।

क़ुरैश की राजनीतिक चाल

लड़ाई शुरू होने से कुछ पहले क़ुरैश ने मुसलमानों की पंक्ति में फूट डालने और टकराव पैदा करने की कोशिश की। इस मक़्सद के लिए अबू सुफ़ियान ने अंसार के पास यह सन्देश भेजा कि आप लोग हमारे और हमारे चचेरे भाई (मुहम्मद) के बीच से हट जाएं, तो हमारा रुख़ भी आपकी ओर न होगा, क्योंकि हमें आप लोगों से लड़ने की कोई ज़रूरत नहीं। लेकिन जिस ईमान के आगे पहाड़ भी नहीं ठहर सकते, उसके आगे यह चाल कैसे सफल हो सकती थी? चुनांचे अंसार ने उसे बहुत कड़ा जवाब दिया और खूब कडुवा-कसैला सुनाया।

फिर शून्य समय क़रीब आ गया और दोनों सेनाएं एक-दूसरे से क़रीब आ गई तो क़ुरैश ने इस मक़्सद के लिए एक और कोशिश की, यानी उनका एक घटिया व्यक्ति अबू आमिर फ़ासिक़ मुसलमानों के सामने ज़ाहिर हुआ। उस व्यक्ति का नाम

अब्द अम्र बिन सैफ़ी था और उसे राहिब (सन्यासी) कहा जाता था, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका नाम फ़ासिक़ रख दिया।

यह अज्ञानता-युग में औस क़बीले का सरदार था, लेकिन जब इस्लाम का आना-आना हुआ, तो इस्लाम उसके गले की फांस बन गया और वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ खुलकर दुश्मनी पर उतर गया। चुनांचे वह मदीना से निकलकर क़ुरैश के पास पहुंचा और उन्हें आपके ख़िलाफ़ भड़का-भड़का कर लड़ाई पर तैयार कर लिया और यक़ीन दिलाया कि मेरी क़ौम के लोग मुझे देखेंगे तो मेरी बात मान कर मेरे साथ हो जाएंगे।

चुनांचे यह पहला व्यक्ति था जो उहुद के मैदान में अहाबीश और मक्का वासियों के दासों के साथ मुसलमानों के सामने आया और अपनी क़ौम को पुकार कर अपना परिचय कराते हुए कहा—

'औस क़बीले के लोगो! मैं अबू आमिर हूं।'

उन लोगों ने कहा, 'ओ फ़ासिक़! अल्लाह तेरी आंख को ख़ुशी न नसीब करे।'

उसने यह जवाब सुना तो कहा, ओहो! मेरी क़ौम मेरे बाद शरारत पर उतर आई है। (फिर जब लड़ाई शुरू हुई तो उस व्यक्ति ने बड़ी ज़ोरदार लड़ाई लड़ी और मुसलमानों पर जमकर पत्थर बरसाए।)

इस तरह क़ुरैश की ओर से ईमान वालों की सफ़ों में फूट डालने की दूसरी कोशिश भी नाकाम रही। इससे अन्दाज़ा किया जा सकता है कि तायदाद की अधिकता और साज़ व सामान की बहुतायत के बावजूद मुश्रिकों के दिलों पर मुसलमानों का कितना भय और उनका कैसा आतंक छाया हुआ था।

जोश और हिम्मत दिलाने के लिए क़ुरैशी औरतों की कोशिशें

उधर क़ुरैशी औरतें भी लड़ाई में अपना हिस्सा अदा करने उठीं। उनका नेतृत्त्व अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्द बिन्त उत्बा कर रही थी। इन औरतों ने सफ़ों में घूम-घूमकर और दफ़ पीट-पीटकर लोगों को जोश दिलाया, लड़ाई के लिए भड़काया, योद्धाओं के स्वाभिमान को ललकारा और नेज़ा मारने, तलवार चलाने, मार-धाड़ करने और तीर चलाने के लिए भावनाओं को उभारा, कभी वे झंडाबरदारों को सम्बोधित करके यों कहतीं—

'देखो बनी अब्दुद्दार!

देखो पीठ के पासदार!

ख़ूब करो तलवार का वार !

और कभी अपनी क़ौम को लड़ाई का जोश दिलाते हुए यों कहतीं—

'अगर आगे बढ़ोगे तो हम गले लगाएंगी,

और क़ालीनें बिछाएंगी,

और अगर पीछे हटोगे, तो रूठ जाएंगी,

और अलग हो जाएंगी।'

लड़ाई का पहला ईंधन

इसके बाद दोनों फ़रीक़ बिल्कुल आमने-सामने और क़रीब आ गए और लड़ाई का मरहला शुरू हो गया।

लड़ाई का पहला ईंधन मुश्रिकों का झंडाबरदार तलहा बिन अबी तलहा अब्दरी बना। यह व्यक्ति कुरैश का अति वीर योद्धा था। उसे मुसलमान 'कबशुल कतीबा' (फ़ौज का मेंढा) कहते थे। यह ऊंट पर सवार होकर निकला और लड़ने के लिए ललकारा।

उसकी वीरता देखते हुए आम सहाबा कतरा गए। लेकिन हज़रत ज़ुबैर रज़ि० आगे बढ़े और एक क्षण देर किए बिना शेर की तरह छलांग लगा कर ऊंट पर जा चढ़े। फिर उसे अपनी पकड़ में लेकर ज़मीन में कूद गए और तलवार से उसका वध कर दिया।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह उत्साहवर्द्धक दृश्य देखा तो मारे ख़ुशी के अल्लाहु अक्बर का नारा लगाया। मुसलमानों ने अल्लाहु अक्बर का नारा लगाया, फिर आपने हज़रत ज़ुबैर रज़ि० की प्रशंसा की और फ़रमाया कि हर नबी का एक हवारी होता है और मेरे हवारी ज़ुबैर हैं।[1]

लड़ाई का केन्द्र-बिन्दु और झंडा बरदारों का सफ़ाया

इसके बाद हर ओर लड़ाई के शोले भड़क उठे और पूरे मैदान में जोरदार मार-धाड़ शुरू हो गई। मुश्रिकों का झंडा लड़ाई का केन्द्र-बिन्दु था। बनू अब्दुद्दार ने अपने कमांडर तलहा बिन अबी तलहा के क़त्ल के बाद एक-एक करके झंडा संभाला, लेकिन सबके सब मारे गए।

सबसे पहले तलहा के भाई उस्मान बिन अबी तलहा ने झंडा उठाया और यह

1. इसका उल्लेख साहिबे सीरत हलबीया ने किया है, वरना हदीसों में यह वाक्य दूसरे अवसर पर कहा गया मिलता है।

कहते हुए आगे बढ़ा—'झंडे वालों का कर्त्तव्य है कि नेज़ा (खून से) रंगीन हो जाए, या टूट जाए।'

उस व्यक्ति पर हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हमला किया और उसके कंधे पर ऐसी तलवार मारी कि वह हाथ समेत कंधे को काटती और देह को चीरती हुई नाफ़ तक जा पहुंची, यहां तक कि फेफड़ा दिखाई देने लगा।

इसके बाद अबू साद बिन अबी तलहा ने झंडा उठाया। उस पर हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीर चलाया और वह ठीक उसके गले पर लगा जिससे उसकी जीभ बाहर निकल आई और वह उसी वक़्त मर गया।

लेकिन कुछ सीरत लिखने वालों का कहना है कि अबू साद ने बाहर निकल कर लड़ने के लिए ललकारा और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने आगे बढ़कर मुक़ाबला किया। दोनों ने एक दूसरे पर तलवार का एक-एक वार किया, लेकिन हज़रत अली रज़ियल्लहु अन्हु ने अबू साद को मार लिया।

इसके बाद मुसाफ़िह बिन तलहा बिन अबी तलहा ने झंडा उठाया, लेकिन उसे आसिम बिन साबित बिन अबी अफ़्लह रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीर मारकर क़त्ल कर दिया।

इसके बाद उसके भाई किलाब बिन तलहा बिन अबी तलहा ने झंडा उठाया, पर उस पर हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु टूट पड़े और लड़-भिड़कर उसका काम तमाम कर दिया, फिर इन दोनों के भाई जलास बिन तलहा बिन अबी तलहा ने झंडा उठाया, मगर उसे तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० ने नेज़ा मारकर ख़त्म कर दिया और कहा जाता है कि आसिम बिन साबित बिन अबी अफ़्लह रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीर मारकर ख़त्म कर दिया।

ये एक ही घर के छः लोग थे। यानी सबके सब अबू तलहा अब्दुल्लाह बिन उस्मान बिन अब्दुद्दार के बेटे या पोते थे, जो मुश्रिकों के झंडे की हिफ़ाज़त करते हुए मारे गए। इसके बाद क़बीला अब्दुद्दार के एक और व्यक्ति अरतात बिन शुरहबील ने झंडा संभाला, लेकिन उसे हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने, और कहा जाता है कि हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़त्ल कर दिया।

इसके बाद शुरैह बिन क़ारिज़ ने झंडा उठाया, पर उसे क़ुज़मान ने क़त्ल कर दिया। क़ुज़मान मुनाफ़िक़ था और इस्लाम के बजाए क़बीले की हमीयत के जोश में मुसलमानों के साथ लड़ने आया था।

शुरैह के बाद अबू ज़ैद अम्र बिन अब्दे मुनाफ़ अब्दरी ने झंडा उठाया, पर उसे भी क़ुज़मान ने ठिकाने लगा दिया।

फिर शुरहबील बिन हाशिम अब्दरी के एक लड़के ने झंडा उठाया, पर वह भी क़ुज़मान के हाथों मारा गया।

यह बनू अब्दुद्दार के दस लोग हुए, जिन्होंने मुश्रिकों का झंडा उठाया और सबके सब मारे गए। इसके बाद उस क़बीले का कोई आदमी न बचा, जो झंडा उठाता, लेकिन इस मौक़े पर उनके एक हबशी ग़ुलाम ने, जिसका नाम सवाब था, लपक कर झंडा उठा लिया और ऐसी बहादुरी से लड़ा कि अपने से पहले झंडा उठाने वाले अपने आक़ाओं से भी बाज़ी ले गया, यानी यह व्यक्ति बराबर लड़ता रहा, यहां तक कि उसके दोनों हाथ एक-एक करके काट दिए गए, लेकिन इसके बाद भी उसने झंडा न गिरने दिया, बल्कि घुटने के बल बैठ कर सीने और गरदन की मदद से खड़ा रखा, यहां तक कि जान से मार डाला गया और उस वक़्त भी यह कह रहा था कि ऐ अल्लाह! अब तो मैंने कोई उज़्र बाक़ी न छोड़ा?

उस दास (सवाब) की हत्या के बाद झंडा ज़मीन पर गिर गया और उसे कोई उठाने वाला न बचा, इसलिए वह गिरा ही रहा।

बाक़ी हिस्सों में लड़ाई की स्थिति

एक ओर मुश्रिकों का झंडा लड़ाई का केन्द्र-बिन्दु था, तो दूसरी ओर मैदान के दूसरे बाक़ी हिस्सों में तेज़ लड़ाई चल रही थी। मुसलमानों की सफ़ों पर ईमान की रूह छाई हुई थी, इसलिए वे शिर्क और कुफ़्र की फ़ौज पर उस बाढ़ की तरह टूटे पड़ रहे थे, जिसके सामने कोई बांध ठहर नहीं पाता। मुसलमान इस मौक़े पर 'अमित-अमित' कह रहे थे और इस लड़ाई में यही उनकी पहचान थी।

इधर अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी लाल पट्टी बांध अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तलवार थामे और उसका हक़ अदा करने का संकल्प लिए आगे बढ़ते रहे और लड़ते हुए दूर जा घुसे। वह जिस किसी मुश्रिक से टकराते, उसका सफ़ाया कर देते थे। उन्होंने मुश्रिकों की सफ़ों की सफ़ें उलट दीं।

हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि जब मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तलवार मांगी और आपने मुझे न दी, तो मेरे दिल पर उसका असर हुआ और मैंने अपने जी में सोचा कि आपकी फूफी हज़रत सफ़िया का बेटा हूं, क़ुरैशी हूं और मैंने आपके पास जाकर अबू दुजाना से पहले तलवार मांगी, लेकिन आपने मुझे न दी और उन्हें दे दी,

इसलिए ख़ुदा की क़सम ! मैं देखूंगा कि वह इससे क्या काम लेते हैं ?

चुनांचे मैं उनके पीछे लग गया। उन्होंने यह किया कि पहले अपनी लाल पट्टी निकाली, और सर पर बांधी। इस पर अंसार ने कहा, अबू दुजाना ने मौत की पट्टी निकाल ली है। फिर वह यह कहते हुए मैदान की ओर बढ़े—

'मैंने इस मरुद्यान में अपने ख़लील (मित्र, सल्ल०) को वचन दिया है कि कभी सफ़ों के पीछे न रहूंगा, (बल्कि आगे बढ़कर) अल्लाह और उसके रसूल की तलवार चलाऊंगा।'

इसके बाद उन्हें जो भी मिल जाता, उसको क़त्ल कर देते। इधर मुश्रिकों में एक व्यक्ति था जो हमारे किसी भी घायल को पा जाता, तो उसका अन्त कर देता था। ये दोनों धीरे-धीरे क़रीब हो रहे थे। मैंने अल्लाह से दुआ की कि दोनों में टक्कर हो जाए और सच में टक्कर हो गई। दोनों ने एक दूसरे पर एक-एक वार किया। पहले मुश्रिक ने अबू दुजाना पर तलवार चलाई, लेकिन अबु दुजाना ने यह हमला ढाल पर रोक लिया और मुश्रिक की तलवार ढाल में फंस कर रह गई। इसके बाद अबू दुजाना ने तलवार चलाई और मुश्रिक को वहीं ढेर कर दिया।[1]

इसके बाद अबू दुजाना सफ़ों पर सफ़ें चीरते हुए आगे बढ़े, यहां तक कि क़ुरैशी औरतों की कमांडर तक जा पहुंचे। उन्हें मालूम था कि यह औरत है। चुनांचे उनका बयान है कि मैंने एक इंसान को देखा, वह लोगों को बड़े जोर व शोर से जोश और वलवला दिला रहा है। इसलिए मैंने उसको निशाने पर ले लिया, लेकिन जब तलवार से हमला करना चाहा तो उसने हाय-पुकार मचाई और पता चला कि औरत है। मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तलवार को बट्टा न लगने दिया कि उससे किसी औरत को मारूं।

यह औरत हिन्द बिन उत्बा थी। चुनांचे हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि मैंने अबू दुजाना को देखा, उन्होंने हिन्द बिन उत्बा के सर के बीचों बीच तलवार बुलन्द की और फिर हटा ली। (किसी ने कारण जानना चाहा, तो) मैंने कहा, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० बेहतर जानते हैं।[2]

इधर हज़रत हमज़ा रज़ि० भी बिफरे हुए शेर की तरह लड़ाई लड़ रहे थे और अपूर्व मार-धाड़ के साथ सेना के बीच के हिस्से की ओर बढ़े और चढ़े जा रहे थे। उनके सामने से बड़े-बड़े बहादुर इस तरह बिखर जाते थे, जैसे चौमुखी

---

1. इब्ने हिशाम, 2/68-69
2. इब्ने हिशाम, 2/69

हवा में पत्ते उड़ रहे हों। उन्होंने मुश्रिकों के झंडा बरदारों के सफ़ाए में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के अलावा उनके बड़े-बड़े योद्धाओं का भी हाल ख़राब कर रखा था, लेकिन अफ़सोस कि इसी हाल में उनकी शहादत हो गई, मगर उन्हें बहादुरों की तरह आमने-सामने लड़ कर शहीद नहीं किया गया, बल्कि डरपोकों की तरह छिप-छिपाकर बेख़बरी की हालत में मारा गया।

अल्लाह के शेर हज़रत हमज़ा की शहादत

हज़रत हमज़ा रज़ि० के क़ातिल का नाम वहशी बिन हर्ब था। हम उनकी शहादत की घटना उसी की ज़ुबानी नक़ल करते हैं। उसका बयान है कि—

'मैं जुबैर बिन मुतइम का दास था और उसका चचा तुऐमा बिन अदी बद्र की लड़ाई में मारा गया था। जब क़ुरैश उहुद की लड़ाई के लिए रवाना होने लगे, तो जुबैर बिन मुतइम ने मुझसे कहा, अगर तुम मुहम्मद के चचा हमज़ा को मेरे चचा के बदले में क़त्ल कर दो, तो तुम आज़ाद हो।'

वहशी का बयान है कि (इस पेशकश के नतीजे में) मैं भी लोगों के साथ रवाना हुआ। मैं हब्शी आदमी था और हब्शियों की तरह नेज़ा फेंकने में माहिर था। निशाना कम ही चूकता था। जब लोगों में लड़ाई छिड़ गई तो मैं निकलकर हमज़ा को देखने लगा। मेरी निगाहें उन्हीं की खोज में थीं। आख़िरकार मैंने उन्हें लोगों की भीड़ में देख लिया। वह ख़ाकस्तरी ऊंट मालूम हो रहे थे। लोगों को दरहम-बरहम करते जा रहे थे। उनके सामने कोई चीज़ टिक नहीं पाती थी।

ख़ुदा की क़सम! मैं अभी उनके इरादे से तैयार ही हो रहा था और एक पेड़ या पत्थर की आड़ में छिपकर उन्हें क़रीब आने का मौक़ा देना चाहता था कि इतने में सबाअ बिन अब्दुल उज़्ज़ा मुझसे आगे बढ़कर उनके पास जा पहुंचा।

हमज़ा रज़ि० ने उसे ललकारते हुए कहा, ओ शर्मगाह की चमड़ी काटने वाली के बेटे! यह ले। और साथ ही इस ज़ोर की तलवार मारी कि मानो उसका सर था ही नहीं।

वहशी का बयान है कि उसके साथ ही मैंने अपना नेज़ा तोला और जब मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ हो गया तो उनकी तरफ़ उछाल दिया। नेज़ा नाफ़ के नीचे लगा और दोनों पांवों के बीच से पार हो गया। उन्होंने मेरी ओर उठना चाहा, लेकिन चकरा कर गिर पड़े। मैंने उनको उसी हाल में छोड़ दिया, यहां तक कि वह फ़ौत हो गए।

इसके बाद मैंने उनके पास जाकर अपना नेज़ा निकाल लिया और फ़ौज में वापस जाकर बैठ गया। (मेरा काम ख़त्म हो चुका था) मुझे उनके सिवा और

किसी से कोई मतलब नहीं था। मैंने उन्हें सिर्फ़ इसलिए क़त्ल किया था कि आज़ाद हो जाऊं। चुनांचे जब मैं मक्का आया तो मुझे आज़ादी मिल गई।[1]

मुसलमानों का पल्ला भारी रहा

अल्लाह के शेर और रसूल सल्ल० के शेर हज़रत हमज़ा रज़ि० की शहादत के नतीजे में मुसलमानों को जो बड़ा संगीन घाटा और न पूरा किया जाने वाला नुक़्सान पहुंचा, इसके बावजूद लड़ाई में मुसलमानों ही का पल्ला भारी रहा। हज़रत अबूबक्र व उमर, ज़ुबैर, मुसअब बिन उमैर, तलहा बिन उबैदुल्लाह, अब्दुल्लाह बिन जह्श, साद बिन मुआज़, साद बिन उबादा, साद बिन रबीअ और नज़्र बिन अनस वग़ैरह रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने लड़ाई में ऐसी वीरता दिखाई कि मुश्रिकों के छक्के छूट गए, हौसले पस्त हो गए और उनका मनोबल टूट गया।

औरत की गोद से तलवार की धार पर

और आइए, ज़रा इधर देखें। इन्हीं जां फ़रोश शहबाज़ों में एक और बुज़ुर्ग हज़रत हंज़ला अल-ग़सील रज़ियल्लाहु अन्हु नज़र आ रहे हैं, जो आज एक निराली शान से लड़ाई के मैदान में आए हैं। आप उसी अबू आमिर राहिब के बेटे हैं, जो बाद में फ़ासिक़ के नाम से जाना जाने लगा और जिसका ज़िक्र हम पिछले पृष्ठों में कर चुके हैं।

हज़रत हंज़ला ने अभी नई-नई शादी की थी। लड़ाई का एलान हुआ तो वह बीवी की गोद में थे। आवाज़ सुनते ही गोद से निकलकर जिहाद के लिए चल पड़े। और जब मुश्रिकों के साथ लड़ाई गरम हुई तो उनकी लाइनें चीरते-फाड़ते, उनके सेनापति अबू सुफ़ियान तक जा पहुंचे और क़रीब था कि उसका काम तमाम कर देते, पर अल्लाह ने ख़ुद उनके लिए शहीद होना मुक़द्दर कर रखा था। चुनांचे उन्होंने ज्यों ही अबू सुफ़ियान को निशाने पर लेकर तलवार ऊंची की, शद्दाद बिन औस ने देख लिया और झट हमला कर दिया, जिससे ख़ुद हज़रत हंज़ला शहीद हो गए।

---

1. इब्ने हिशाम, 2/69-72, सहीह बुख़ारी 2/583। वह्शी ने तायफ़ की लड़ाई के बाद इस्लाम क़ुबूल किया और अपने उसी नेज़े से हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० के दौर में यमामा की लड़ाई में मुसैलमा कज़्ज़ाब (झूठी नुबूवत के दावेदार) को क़त्ल किया। रूमियों के ख़िलाफ़ यरमूक की लड़ाई में भी शिरकत की।

तीरंदाज़ों का कारनामा

रमात पहाड़ी पर जिन तीरंदाज़ों को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तैनात फ़रमाया था, उन्होंने भी लड़ाई की रफ़्तार मुसलमानों के हक़ में चलाने में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मक्की शहसवारों ने खालिद बिन वलीद के नेतृत्त्व में और अबू आमिर फ़ासिक़ की मदद से इस्लामी फ़ौज का बायां बाज़ू तोड़कर मुसलमानों के पीछे तक पहुंचने और उनकी सफ़ों में खलबली मचाकर भरपूर हार का मज़ा चखाने के लिए तीन बार ज़ोरदार हमले किए, लेकिन मुसलमान तीरंदाज़ों ने इन्हें इस तरह तीरों से छलनी किया कि उनके तीनों हमले असफल हो गए।[1]

मुश्रिकों की हार

कुछ देर इसी तरह तेज़-तेज़ लड़ाई होती रही और छोटी-सी इस्लामी फ़ौज, लड़ाई की रफ़्तार पर पूरी तरह छाई रही। आख़िरकार मुश्रिकों के हौसले टूट गए, उनकी लाइनें दाएं, बाएं, आगे-पीछे से बिखरने लगीं, गोया तीन हज़ार मुश्रिकों को सात सौ नहीं, बल्कि तीस हज़ार मुसलमानों का सामना है।

इधर मुसलमान थे कि ईमान व यक़ीन और बहादुरी और वीरता का पहाड़ बने तीर-तलवार के जौहर दिखा रहे थे।

जब क़ुरैश ने मुसलमानों के ताबड़-तोड़ हमले रोकने के लिए अपनी भरपूर ताक़त लगा देने के बावजूद मजबूरी और बेबसी महसूस की और उनका मनोबल इस हद तक टूट गया कि सवाब के क़त्ल के बाद किसी को साहस न हुआ कि लड़ाई का सिलसिला जारी रखने के लिए अपने गिरे हुए झंडे के क़रीब जाकर उसे उठा ले, तो उन्होंने पसपा होना शुरू कर दिया और पीछे भागने का रास्ता अपना लिया और बदला लेने और खोई प्रतिष्ठा बहाल करने की जो बातें उन्होंने सोच रखी थीं, उन्हें वे बिल्कुल ही भूल गए।

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि अल्लाह ने मुसलमानों पर अपनी मदद उतारी और उनसे अपना वायदा पूरा किया। चुनांचे मुसलमानों ने तलवारों से मुश्रिकों की ऐसी कटाई की कि वे कैम्प से भी परे भाग गए और निस्सन्देह उन्हें ज़बरदस्त हार का मुंह देखना पड़ा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० का बयान है कि उनके पिता ने फ़रमाया,

1. देखिए फ़त्हुल बारी 7/346

ख़ुदा की क़सम, मैंने देखा कि हिन्द बिन्त उत्बा और उसकी साथी औरतों की पिंडुलियां नज़र आ रही हैं। वे कपड़े उठाए भागी जा रही हैं। उनकी गिरफ़्तारी में थोड़ा या ज़्यादा कोई चीज़ भी रोक नहीं।[1]

सहीह बुख़ारी में हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि जब मुश्रिकों से हमारी टक्कर हुई तो मुश्रिकों में भगदड़ मच गई, यहां तक कि मैंने औरतों को देखा कि पिंडलियों से कपड़े उठाए पहाड़ में तेज़ी से भाग रही थीं। उनके पाज़ेब दिखाई पड़ रहे थे और इस भगदड़ की स्थिति में मुसलमान मुश्रिकों पर तलवार चलाते और माल समेटते हुए उनका पीछा कर रहे थे।

तीरंदाज़ों की भयानक ग़लती

लेकिन ठीक उस वक़्त जबकि यह छोटी-सी इस्लामी फ़ौज मक्का वालों के ख़िलाफ़ इतिहास के पन्नों पर एक और शानदार जीत दर्ज करा रही थी जो अपनी चमक-दमक में बद्र की लड़ाई की जीत से किसी तरह कम न थी, तीरंदाज़ों की बड़ी संख्या ने एक भयानक ग़लती कर दी जिसकी वजह से लड़ाई का पांसा पलट गया। मुसलमानों को ज़बरदस्त नुक़्सान उठाना पड़ा और ख़ुद नबी करीम सल्ल० शहादत से बाल-बाल बचे और इसकी वजह से मुसलमानों की वह साख और वह रौब जाता रहा जो बद्र की लड़ाई के नतीजे में उन्हें हासिल हुआ था।

पिछले पन्नों में बीत चुका है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीरंदाज़ों को हार या जीत हर हाल में अपने पहाड़ी मोर्चे पर डटे रहने की कितनी ज़बरदस्त ताकीद फ़रमाई थी, लेकिन इन सारे ताकीदी हुक्मों के बावजूद जब उन्होंने देखा कि मुसलमान दुश्मन का माले ग़नीमत लूट रहे हैं, तो उन पर दुनिया की मुहब्बत का कुछ असर ग़ालिब आ गया। चुनांचे किसी ने किसी से कहा, ग़नीमत. . .! ग़नीमत. . . .! तुम्हारे साथी जीत गए. . . .! अब किस चीज़ का इन्तिज़ार है!

इस आवाज़ के उठते ही उनके कमांडर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने उन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश याद दिलाए और फ़रमाया कि क्या तुम लोग भूल गए कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुम्हें क्या आदेश दिया था?

लेकिन उनकी बड़ी तायदाद ने इस याददेहानी पर कान न धरा और कहने

---

1. सहीह बुख़ारी 2/579

लगे, ख़ुदा की क़सम! हम भी लोगों के पास ज़रूर जाएंगे और कुछ माले ग़नीमत ज़रूर हासिल करेंगे।[1]

इसके बाद चालीस तीरंदाज़ों ने अपने मोर्चे छोड़ दिए और माले ग़नीमत समेटने के लिए आम फ़ौज में जा शामिल हुए। इस तरह मुसलमानों का पिछला भाग ख़ाली हो गया और वहां सिर्फ़ अब्दुल्लाह बिन जुबैर और उनके नौ साथी बाक़ी रह गए जो इस संकल्प के साथ अपने मोर्चे पर डटे रहे कि या तो इन्हें इजाज़त दी जाएगी या वे अपनी जान दे देंगे।

इस्लामी फ़ौज मुश्रिकों के घेरे में

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद, जो इससे पहले तीन बार इस मोर्चे को क़ाबू में करने की कोशिश कर चुके थे, इस सुनहरे मौक़े से फ़ायदा उठाते हुए बड़ी तेज़ी से चक्कर काट कर इस्लामी फ़ौज के पिछले हिस्से में पहुंचे और कुछ क्षणों में अब्दुल्लाह बिन जुबैर और उनके साथियों का सफ़ाया करके मुसलमानों पर पीछे से टूट पड़े। उनके घुड़सवारों ने एक नारा लगाया, जिससे हारे हुए मुश्रिकों को इस नई तब्दीली का पता लग गया और वे भी मुसलमानों पर टूट पड़े।

इधर क़बीला बनू हारिस की एक औरत उमरा बिन्त अलक़मा ने लपक कर ज़मीन पर पड़ा हुआ मुश्रिकों का झंडा उठा लिया। फिर क्या था! बिखरे हुए मुश्रिक उसके आस-पास सिमटने लगे और एक ने दूसरे को आवाज़ दी, जिसके नतीजे में वे मुसमलानों के ख़िलाफ़ इकट्ठा हो गए और जम कर लड़ाई शुरू कर दी।

अब मुसलमान आगे और पीछे दोनों ओर से घेरे में आ चुके थे, मानो चक्की के दो पाटों के बीच में पड़ गए थे।

अल्लाह के रसूल सल्ल० का ख़तरे से भरा फ़ैसला और वीरतापूर्ण क़दम

उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सिर्फ़ नौ[2] सहाबा की नफ़री के साथ पीछे तशरीफ़[3] रखते थे और मुसलमानों की मार-धाड़ और

---

1. यह बात सहीह बुख़ारी में हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० से रिवायत की गई है। देखिए 1/426
2. सहीह मुस्लिम (2/107) में रिवायत है कि आप उहुद के दिन सिर्फ़ सात अंसार और दो क़ुरैशी साथियों के दर्मियान रह गए थे।
3. इसकी दलील अल्लाह का यह इर्शाद है कि 'रसूल तुम्हारे पीछे से तुम्हें बुला रहे थे।'

मुश्रिकों के खदेड़े जाने का दृश्य देख रहे थे कि आपको अचानक ख़ालिद बिन वलीद के घुड़सवार दिखाई दिए।

इसके बाद आपके सामने दो ही रास्ते थे, या तो आप अपने नौ साथियों के साथ तेज़ी से भाग कर किसी सुरक्षित जगह चले जाते और अपनी फ़ौज को जो अब घेरे में आया ही चाहती थी, उसके भाग्य पर छोड़ देते या अपनी जान ख़तरे में डालकर अपने सहाबा को बुलाते और उनकी एक बड़ी तायदाद अपने पास जमा करके एक मज़बूत मोर्चा जमाते और उसके ज़रिए मुश्रिकों का घेरा तोड़ कर अपनी फ़ौज के लिए उहुद की ऊंचाई की ओर जाने का रास्ता बनाते।

आज़माइश की इस सबसे नाज़ुक घड़ी में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से विवेक और अपूर्व वीरता का प्रदर्शन हुआ, क्योंकि आपने जान बचाकर भागने के बजाए अपनी जान ख़तरे में डालकर सहाबा किराम की जान बचाने का फ़ैसला किया।

चुनांचे आपने ख़ालिद बिन वलीद के घुड़सवारों को देखते ही बड़ी ऊंची आवाज़ में सहाबा को पुकारा, 'अल्लाह के बन्दो, इधर....'

हालांकि आप जानते थे कि यह आवाज़ मुसलमानों से पहले मुश्रिकों तक पहुंच जाएगी और यही हुआ भी।

चुनांचे यह आवाज़ सुनकर मुश्रिकों को मालूम हो गया कि आप यहीं मौजूद हैं। इसलिए उनका एक दस्ता मुसलमानों से पहले आपके पास पहुंच गया और बाक़ी घुड़सवारों ने तेज़ी के साथ मुसलमानों को घेरना शुरू कर दिया।

अब हम दोनों मोर्चे का विवेचन अलग-अलग कर रहे हैं।

मुसलमानों में बिखराव

जब मुसलमान घेरे में आ गए, तो एक गिरोह तो होश खो बैठा। उसे सिर्फ़ अपनी जान की पड़ी थी। चुनांचे उसने लड़ाई का मैदान छोड़कर भागने का रास्ता अपनाया। उसे कुछ ख़बर न थी कि पीछे क्या हो रहा है? उनमें से कुछ तो भाग कर मदीने में जा घुसे और कुछ पहाड़ के ऊपर चढ़ गए।

एक और गिरोह पीछे की ओर पलटा तो मुश्रिकों में मिल गया। दोनों फ़ौजें गड्ड-मड्ड हो गईं और एक को दूसरे का पता न चल सका। इसके नतीजे में ख़ुद मुसलमानों के हाथों कुछ मुसलमान मार डाले गए।

चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत आइशा रज़ि॰ से रिवायत है कि उहुद के दिन (पहले) मुश्रिकों की ज़ोरदार हार हुई, इसके बाद इब्लीस ने आवाज़ लगाई

कि अल्लाह के बन्दो ! पीछे. . . .! इससे अगली लाइन पलटी और पिछली लाइन से गुथ गई।

हुज़ैफ़ा ने देखा कि उनके पिता यमान पर हमला हो रहा है, वह बोले, 'अल्लाह के बन्दो ! मेरे पिता हैं।' लेकिन ख़ुदा की क़सम ! लोगों ने उनसे हाथ न रोका, यहां तक कि उन्हें मार ही डाला।

हुज़ैफ़ा ने कहा, अल्लाह आप लोगों की मग़्फ़िरत करे।

हज़रत उर्व: का बयान है कि ख़ुदा की क़सम ! हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० में हमेशा ख़ैर बाक़ी रहा, यहां तक कि वह अल्लाह से जा मिले।[1]

तात्पर्य यह कि इस गिरोह की सफ़ों में बिखराव और अफ़रा-तफ़री पैदा हो गई थी। बहुत से लोग चकित और स्तब्ध थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि किधर जाएं। इसी बीच एक पुकारने वाले की पुकार सुनाई दी कि मुहम्मद क़त्ल कर दिए गए हैं। इससे रहा-सहा होश भी जाता रहा। अक्सर लोगों के हौसले टूट गए। कुछ ने लड़ाई से हाथ रोक लिया, और दुखी होकर हथियार फेंक दिए।

कुछ और लोगों ने सोचा कि मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई से मिलकर कहा जाए कि वह अबू सुफ़ियान से उनके लिए अमान तलब कर दे।

कुछ क्षणों के बाद इन लोगों के पास से हज़रत अनस बिन नज़्र रज़ियल्लाहु अन्हु का गुज़र हुआ। देखा कि हाथ पर हाथ धरे पड़े हैं। पूछा, किस बात का इन्तिज़ार है ?

जवाब दिया, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़त्ल कर दिए गए।

हज़रत अनस बिन नज़्र ने कहा, तो अब आपके बाद तुम लोग ज़िंदा रहकर क्या करोगे ? उठो और जिस चीज़ पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जान दे दी, उस पर तुम भी जान दे दो।

इसके बाद कहा, ऐ अल्लाह ! इन लोगों ने (यानी मुसलमानों ने) जो कुछ किया

---

1. सहीह बुख़ारी 1/539, 2/581, फ़त्हुल बारी 7/351, 362, 363, बुख़ारी के अलावा कुछ रिवायतों में ज़िक्र किया गया है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनकी दियत देनी चाही, लेकिन हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने कहा, मैंने उनकी दियत मुसलमानों पर सदक़ा कर दी। इसकी वजह से नबी सल्लल्लाहु व सल्लम के नज़दीक हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० के ख़ैर में और बढ़ोत्तरी हो गई। देखिए मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह नज्दी पृष्ठ 246।

है, उस पर मैं तेरे हुज़ूर माज़रत करता हूं और उन लोगों ने (यानी मुश्रिकों ने) जो कुछ किया है, उससे अलगाव अपनाता हूं और यह कहकर आगे बढ़ गए।

आगे हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० से मुलाक़ात हो गई। उन्होंने मालूम किया, अबू उमर ! कहां जा रहे हो?

हज़रत अनस रज़ि० ने जवाब दिया, आहा ! जन्नत की ख़ुशबू का क्या कहना, ऐ साद ! मैं इसे उहुद के परे महसूस कर रहा हूं। इसके बाद और आगे बढ़े और मुश्रिकों से लड़ते हुए शहीद हो गए।

लड़ाई के अन्त में उन्हें पहचाना न जा सका, यहां तक कि उनकी बहन ने उन्हें सिर्फ़ उंगुलियों के पोर से पहचाना। उनको नेज़े, तलवार और तलवार के अस्सी से ज़्यादा घाव आए थे।[1]

इसी तरह साबित बिन दह्दाह रज़ि० ने अपनी क़ौम को पुकार कर कहा, अगर मुहम्मद सल्ल० क़त्ल कर दिए गए हैं, तो अल्लाह तो ज़िंदा है, वह तो नहीं मर सकता। तुम अपने दीन के लिए लड़ो। अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें विजय भी देगा।

इस पर अंसार की एक जमाअत उठ खड़ी हुई और हज़रत साबित रज़ि० ने उनकी मदद से ख़ालिद की टुकड़ी पर हमला कर दिया और लड़ते-लड़ते ख़ालिद के हाथों नेज़े से शहीद हो गए।

उन्हीं की तरह उनके साथियों ने भी लड़ते-लड़ते शहादत का दर्जा हासिल कर लिया।[2]

एक मुहाजिर सहाबी एक अंसारी सहाबी के पास से गुज़रे, जो ख़ून में लत-पत थे।

मुहाजिर ने कहा, भाई फ्लां ! आपको मालूम हो चुका है कि मुहम्मद क़त्ल कर दिए गए?

अंसारी ने कहा, अगर मुहम्मद क़त्ल कर दिए गए, तो वह अल्लाह का दीन पहुंचा चुके हैं। अब तुम्हारा काम है कि उस दीन की हिफ़ाज़त के लिए लड़ो।[3]

इस तरह की हौसला बढ़ाने वाली और मनोबल ऊंचा करने वाली बातों से इस्लामी फ़ौज के हौसले बहाल हो गए और उनके होश व हवास अपनी जगह आ

---

1. ज़ादुल मआद, 2/93-96, सहीह बुख़ारी, 2/579
2. अस्सीरतुल हलबीया, 2/22
3. ज़ादुल मआद, 2/96

गए। चुनांचे उन्होंने हथियार डालने या इब्ने उबई से मिलकर अमान की तलब की बात सोचने के बजाए हथियार उठा लिए और मुश्रिकों के तेज़ तूफ़ान से टकरा कर उनका घेरा तोड़ने और नेतृत्व-केन्द्र तक रास्ता बनाने की कोशिश में लग गए।

इसी बीच यह भी मालूम हो गया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के क़त्ल की ख़बर सिर्फ़ झूठ और गढ़ी हुई है, इससे उनकी ताक़त और बढ़ गई, उनका हौसला बढ़ा और मनोबल और ऊंचा हो गया, चुनांचे वे एक भयानक और ख़ूनी लड़ाई के बाद घेरा तोड़कर निकलने और एक मज़बूत सेन्टर के क़रीब जमा होने में कामियाब हो गए।

इस्लामी फ़ौज का तीसरा गिरोह वह था जिसे सिर्फ़ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चिन्ता थी। यह गिरोह घेराव की कार्रवाई को जानते ही अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर पलटा। उनमें कई आगे-आगे और सबसे पहले अबू बक्र सिद्दीक़, उमर बिन ख़त्ताब और अली बिन अबी तालिब जैसे सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन थे।

ये लोग लड़ने वालों में भी सबसे आगे थे और जब नबी सल्ल० की पवित्र हस्ती के लिए ख़तरा पैदा हुआ तो आपकी रक्षा और प्रतिरक्षा करने वालों में भी सबसे आगे आ गए।

अल्लाह के रसूल सल्ल० के आस-पास ख़ूनी लड़ाई

ठीक उस वक़्त जबकि इस्लामी फ़ौज घेरे में आकर मुश्रिकों की चक्की के दो पाटों में पिस रही थी, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आस-पास भी ख़ूनी लड़ाई चल रही थी। हम बता चुके हैं कि मुश्रिकों ने घेराव की कार्रवाई शुरू की तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सिर्फ़ नौ आदमी थे और जब आपने मुसलमानों को यह कहकर पुकारा कि आओ, मेरी ओर आओ, मैं अल्लाह का रसूल हूं, तो आपकी आवाज़ मुश्रिकों ने सुन ली और आपको पहचान लिया। (क्योंकि उस वक़्त वे मुसलमानों से भी ज़्यादा आपके क़रीब थे) चुनांचे उन्होंने झपट कर आप पर हमला कर दिया और किसी मुसलमान के आने से पहले-पहले अपना पूरा बोझ डाल दिया।

इस फ़ौरी हमले के नतीजे में इन मुश्रिकों और वहां पर मौजूद नौ सहाबा के बीच बड़ी घमासान की लड़ाई शुरू हो गई, जिसमें मुहब्बत, फ़िदाकारी और वीरता की बड़ी अनोखी घटनाएं घटीं।

सहीह मुस्लिम में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उहुद के दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सललम सात अंसार और दो क़ुरैशी

साथियों के साथ अलग-थलग रह गए थे। जब हमलावर आपके बिल्कुल क़रीब पहुंच गए, तो आपने फ़रमाया, 'कौन है जो इन्हें हम से दूर करे? ऐसे व्यक्ति के लिए जन्नत है।' या (यह फ़रमाया कि) 'वह जन्नत में मेरा साथी होगा।'

इसके बाद एक अंसारी सहाबी आगे बढ़े और लड़ते-लड़ते शहीद हो गए। इसके बाद फिर मुश्रिक आपके बिल्कुल क़रीब आ गए और फिर यही हुआ। इस तरह बारी-बारी सातों अंसारी सहाबी शहीद हो गए। इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने दो बाक़ी साथियों यानी क़ुरैशियों से फ़रमाया, हमने अपने साथियों से इंसाफ़ नहीं किया।[1]

इन सातों में से आख़िरी सहाबी हज़रत अम्मारा बिन यज़ीद बिन सुक्न थे। वह लड़ते रहे, लड़ते रहे, यहां तक कि घावों से चूर होकर गिर पड़े।[2]

इब्ने सुक्न के गिरने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सिर्फ़ दोनों क़ुरैशी सहाबी रह गए थे।

चुनांचे बुख़ारी-मुस्लिम दोनों में अबू उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान रिवायत किया गया है कि जिन दिनों में आपने लड़ाइयां लड़ी हैं, उनमें से एक लड़ाई में आपके साथ तलहा बिन उबैदुल्लाह और साद बिन वक़्क़ास के सिवा कोई न रह गया था।[3]

यह क्षण अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन का बड़ा ही नाज़ुक क्षण था, जबकि मुश्रिकों के लिए बड़ा ही सुनहरा मौक़ा था और यह भी सच है कि मुश्रिकों ने इस मौक़े से फ़ायदा उठाने में कोई कोताही नहीं की। उन्होंने अपना ताबड़ तोड़ हमला नबी सल्ल० पर बनाए रखा और चाहा कि आपका काम तमाम कर दें।

इसी हमले में उत्बा बिन अबी वक़्क़ास ने आपको पत्थर मारा, जिससे आप

---

1. सहीह मुस्लिम, बाब ग़ज़वा उहुद 2/107
2. थोड़ी देर बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास सहाबा किराम की एक टीम आ गई। उन्होंने कुफ़्फ़ार को हज़रत अम्मारा से पीछे धकेला और उन्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़रीब ले गए। आपने उन्हें अपने पांवों पर टेक लिया और उन्होंने इस हालत में दम तोड़ दिया कि उनका गाल अल्लाह के रसूल सल्ल० के पांव पर था। (इब्ने हिशाम 2/81) गोया यह आरज़ू हक़ीक़त बन गई कि—
   निकल जाए दम तेरे क़दमों के 'ऊपर' यही दिल की हसरत, यही आरज़ू है।
3. सहीह बुख़ारी 1/527, 2/581

पहलू के बल गिर गए। आपका दाहिना निचला रुबाई[1] दांत टूट गया और आपका निचला होंठ ज़ख़्मी हो गया।

अब्दुल्लाह बिन शिहाब ज़ोहरी ने आगे बढ़कर आपकी पेशानी (माथा) घायल कर दिया। एक और अड़ियल सवार अब्दुल्लाह बिन क़ुम्मा ने लपक कर आपके कंधे पर ऐसी ज़ोरदार तलवार मारी कि एक महीने से ज़्यादा दिनों तक उसकी तक्लीफ़ महसूस करते रहे। अलबत्ता आपका दोहरा कवच न कट सका।

इसके बाद उसने पहले की तरह फिर एक ज़ोरदार तलवार मारी, जो आंख से नीचे की उभरी हुई हड्डी पर लगी और उसकी वजह से ख़ूद[2] की दो कड़ियां चेहरे के अन्दर धंस गईं। साथ ही उसने कहा, 'मैं क़ुम्मा (तोड़ने वाले) का बेटा हूं।'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नं चेहरे से ख़ून पोंछते हुए फ़रमाया, अल्लाह तुझे तोड़ डाले।[3]

सहीह बुख़ारी में रिवायत है कि आपका रुबाई दांत तोड़ दिया गया और सर चोटीला कर दिया गया। उस वक़्त आप अपने चेहरे से ख़ून पोंछते जा रहे थे और कहते जा रहे थे, वह क़ौम कैसे कामियाब हो सकती है, जिसने अपने नबी के चेहरे को घायल कर दिया और उसका दांत तोड़ दिया, हालांकि वह उन्हें अल्लाह की ओर दावत दे रहा था। इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

'आपको कोई अख़्तियार नहीं, अल्लाह चाहे तो इन्हें तौफ़ीक़ दे और चाहे तो अज़ाब दे कि वे ज़ालिम हैं।'[4]

---

1. मुंह के बिल्कुल बीचोंबीच ऊपर के दो-दो दांत सनाया कहलाते हैं और इनके दाएं-बाएं, नीचे-ऊपर के एक-एक दांत रुबाई कहलाते हैं, जो किचली के नोकीले दांत से पहले होते हैं।
2. लोहे या पत्थर की टोपी जिसे लड़ाई में सर और चेहरे की हिफ़ाज़त के लिए ओढ़ा जाता है।
3. अल्लाह ने आपकी यह दुआ सुन ली। चुनांचे इब्ने आइज़ से रिवायत है कि इब्ने क़ुम्मा लड़ाई से घर वापस जाने के बाद अपनी बकरियां देखने के लिए निकला तो ये बकरियां पहाड़ की चोटी पर मिलीं। यह व्यक्ति वहां पहुंचा तो एक पहाड़ी बकरी ने हमला कर दिया और सींग मार-मार कर पहाड़ की ऊंचाई से नीचे लुढ़का दिया (फ़त्हुल बारी 7/373) और तबरानी की रिवायत है कि अल्लाह ने उस पर एक पहाड़ी बकरा मुसल्लत कर दिया जिसने सींग मार-मारकर उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया। (फ़त्हुल बारी 7/366)
4. सहीह बुख़ारी 2/582, सहीह मुस्लिम 2/108

तबरानी की रिवायत है कि आपने उस दिन फ़रमाया—

'उस क़ौम पर अल्लाह का सख़्त अज़ाब हो, जिसने अपने पैग़म्बर का चेहरा ख़ून से भर दिया, फिर थोड़ी देर रुक कर फ़रमाया, 'ऐ अल्लाह ! मेरी क़ौम को बख़्श दे। वह नहीं जानती।'[1]

सहीह मुस्लिम की रिवायत में भी यही है कि आप बार-बार कह रहे थे—

'ऐ पालनहार ! मेरी क़ौम को बख़्श दे, वह नहीं जानती।'[2]

क़ाज़ी अयाज़ की शिफ़ा में ये शब्द हैं—

'ऐ अल्लाह ! मेरी क़ौम को हिदायत दे, वह नहीं जानती।'[3]

इसमें सन्देह नहीं कि मुश्रिक आपका काम तमाम कर देना चाहते थे, मगर दोनों क़ुरैशी सहाबा यानी हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास और तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने बेमिसाल जांबाज़ी और अपूर्व वीरता से काम लेकर सिर्फ़ दो होते हुए भी मुश्रिकों की कामियाबी नामुम्किन बना दी। ये दोनों अरब के सबसे माहिर तीरंदाज़ थे। उन्होंने तीर मार-मारकर मुश्रिक हमलावरों को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से परे रखा।

जहां तक साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु का ताल्लुक़ है तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने तीरकश के सारे तीर इनके लिए बिखेर दिए और फ़रमाया—

'चलाओ, तुम पर मेरे मां-बाप फ़िदा हों।'[4]

उनकी योग्यताओं का अन्दाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके सिवा किसी और के लिए मां-बाप के फिदा होने की बात नहीं कही।[5]

और जहां तक हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु का ताल्लुक़ है, तो उनके कारनामे का अन्दाज़ा नसई की एक रिवायत से लगाया जा सकता है, जिसमें हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मुश्रिकों के उस वक़्त के हमले का उल्लेख किया है, जब आप

---

1. फ़त्हुल बारी 7/373
2. सहीह मुस्लिम, बाब ग़ज़वा उहुद 2/108
3. किताबुश-शिफ़ा ब-तारीफ़े हुक़ूक़ुल मुस्तफ़ा 1/81
4. सहीह बुख़ारी 1/407, 2/580, 581
5. सहीह बुख़ारी 1/407, 2/580, 581

अन्सार की थोड़ी-सी नफ़री के साथ तशरीफ़ रखते थे।

हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि मुश्रिकों ने अल्लाह के रसूल सल्ल० को जा लिया तो आपने फ़रमाया, कौन है जो इनसे निमटे ?

हज़रत तलहा रज़ि० ने कहा, मैं।

इसके बाद हज़रत जाबिर रज़ि० ने अंसार के आगे बढ़ने और एक-एक करके शहीद होने का वह विवरण दिया है जिसे हम सहीह मुस्लिम के हवाले से बयान कर चुके हैं। हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब ये सब शहीद हो गए तो हज़रत तलहा आगे बढ़े और ग्यारह आदमियों के बराबर तंहा लड़ाई की, यहां तक कि उनके हाथ पर तलवार की एक ऐसी चोट लगी जिससे उनकी उंगलियां कट गईं। इस पर उनके मुंह से आवाज़ निकली 'हिस' (सी)

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम बिस्मिल्लाह कहते तो तुम्हें फ़रिश्ते उठा लेते और लोग देखते।

हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि फिर अल्लाह ने मुश्रिकों को पलटा दिया।[1]

अक्लील में हाकिम की रिवायत है कि उन्हें उहुद के दिन 39 या 35 घाव आए और उनकी बिचली और शहादत की उंगलियां शल हो गईं।[2]

इमाम बुख़ारी ने क़ैस बिन अबी हाज़िम से रिवायत की है कि उन्होंने कहा, मैंने हज़रत तलहा का हाथ देखा कि वह शल था। उससे उहुद के दिन उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बचाया था।[3]

तिर्मिज़ी की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके बारे में उस दिन फ़रमाया, जो व्यक्ति किसी शहीद को धरती पर चलता हुआ देखना चाहे, वह तलहा बिन उबैदुल्लाह को देख ले।[4]

और अबू दाऊद त्यालसी ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत की है कि अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु जब उहुद की लड़ाई का उल्लेख करते तो कहते कि यह लड़ाई पूरी की पूरी तलहा के लिए थी।[5] (यानी इसमें नबी सल्ल० की सुरक्षा का असल कारनामा उन्हीं ने अंजाम दिया था।)

---

1. फ़त्हुल बारी 7/361, सुनने नसई 2/52-53
2. फ़त्हुल बारी 7/361
3. सहीह बुख़ारी 1/527, 581
4. तिर्मिज़ी : मनाक़िब, हदीस न० 3740, इब्ने माजा, मुक़दमा हदीस न० 125
5. फ़त्हुल बारी 7/361

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने उनके बारे में यह भी कहा—

'ऐ तलहा बिन उबैदुल्लाह ! तुम्हारे लिए जन्नतें वाजिब हो गईं और तुमने अपने यहां बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूर का ठिकाना बना लिया।'[1]

ऐसे ही सबसे नाज़ुक और सबसे कठिन क्षण में अल्लाह ने ग़ैब से अपनी मदद फ़रमाई। चुनांचे मुस्लिम व बुख़ारी में हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उहुद के दिन देखा, आपके साथ दो आदमी थे, सफ़ेद कपड़े पहने हुए। ये दोनों आपकी ओर से बड़ी ज़ोरदार लड़ाई लड़ रहे थे। मैंने इससे पहले और इसके बाद इन दोनों को कभी नहीं देखा।

एक और रिवायत में है कि ये दोनों हज़रत जिब्रील और हज़रत मीकाईल थे।[2]

अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास सहाबा के इकट्ठा होने की शुरूआत

यह सारी घटना कुछ ही क्षणों में बिल्कुल अचानक और बड़ी तेज़ रफ्तारी से घटी, वरना नबी सल्ल० के चुने हुए सहाबा किराम जो लड़ाई के दौरान पहली पंक्ति में थे, लड़ाई की स्थिति को बदलते ही या नबी सल्ल० की आवाज़ सुनते ही आपकी ओर बेतहाशा दौड़ कर आए कि कहीं आपको कोई अप्रिय घटना का सामना न करना पड़ जाए।

मगर ये लोग पहुंचे तो प्यारे नबी सल्ल० ज़ख्मी हो चुके थे। छः अंसारी शहीद हो चुके थे, सातवें घायल होकर गिर चुके थे और हज़रत साद और हज़रत तलहा रज़ि० जान तोड़ कर प्रतिरक्षा कर रहे थे।

इन लोगों ने पहुंचते ही अपने जिस्मों और हथियारों से नबी सल्ल० के चारों ओर एक बाड़ तैयार कर दी और दुश्मन के ताबड़ तोड़ हमलों को रोकने में बड़ी वीरता से काम लिया। लड़ाई की पंक्ति से पलट कर आने वाले सबसे पहले सहाबी आपके ग़ार के साथी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु थे।

इब्ने हब्बान ने अपनी सहीह में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत की है कि अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, उहुद के दिन सारे लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पलट गए थे, (यानी रक्षकों के अलावा तमाम

---

1. मुख़्तसर तारीख़े दमिश्क़ 7/82,
2. सहीह बुख़ारी, 2/580, अल-मुस्लिम : फ़ज़ाइल हदीस न० 46, 47 (4/1802)

सहाबा आपको आपके ठहरने की जगह पर छोड़कर लड़ाई की अगली पंक्तियों में चले गए थे, फिर घेराव की घटना के बाद) मैं पहला व्यक्ति था, जो नबी सल्ल० के पास पलट कर आया। देखा तो आपके सामने एक आदमी था, जो आपकी ओर से लड़ रहा था और आपको बचा रहा था। मैंने (जी ही जी में) कहा, तुम तलहा हो, तुम पर मेरे मां-बाप फ़िदा हों, तुम तलहा हो, तुम पर मेरे मां-बाप फ़िदा हों।' (चूंकि मुझसे यह क्षण फ़ौत हो गया था, इसलिए मैंने कहा कि मेरी क़ौम ही का एक आदमी हो, तो यह ज़्यादा पसन्दीदा बात है।)[1]

इतने में अबू उबैदा बिन जर्राह मेरे पास आ गए, वह इस तरह दौड़ रहे थे, मानो चिड़िया (उड़ रही) है, यहां तक कि मुझसे आ मिले। अब हम दोनों नबी सल्ल० की ओर दौड़े। देखा, तो आपके आगे तलहा बिछे पड़े हैं।

आपने फ़रमाया, अपने भाई को संभालो, इसने जन्नत वाजिब कर ली।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० का बयान है कि (हम पहुंचे तो) नबी सल्ल० का मुबारक चेहरा ज़ख़्मी हो चुका था और ख़ूद की दो कड़ियां आंख के नीचे गालों में धंस चुकी थीं। मैंने उन्हें निकालना चाहा, तो अबू उबैदा ने कहा, ख़ुदा का वास्ता है, मुझे निकालने दीजिए।

इसके बाद उन्होंने मुंह से एक कड़ी पकड़ी और धीरे-धीरे निकालनी शुरू की, ताकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पीड़ा न पहुंचे और आख़िरकार एक कड़ी अपने मुंह से खींच कर निकाल दी। लेकिन (इस कोशिश में) उनका एक निचला दांत गिर गया।

अब दूसरी मैंने खींचनी चाही, तो अबू उबैदा ने फिर कहा, अबूबक्र! ख़ुदा का वास्ता देता हूं, मुझे खींचने दीजिए। इसके बाद दूसरी भी धीरे-धीरे खींची, लेकिन उनका दूसरा निचला दांत भी गिर गया।

फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अपने भाई तलहा को संभालो। (उसने जन्नत) वाजिब कर ली।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अब हम तलहा की ओर फिरे और उन्हें संभाला, उनको दस से ज़्यादा घाव लग चुके थे।[2] तहज़ीब तारीख़ दमिश्क़ में है कि हम उनके पास कुछ क्षणो में आए तो क्या देखते हैं कि उन्हें नेज़े, तीर और तलवार के कम व बेश साठ घाव लगे हुए हैं और उनकी

---

1. तहज़ीब तारीख़े दमिश्क़ 7/77, तलहा बिन उबैदुल्लाह भी हज़रत अबूबक्र के क़बीला बनू तीम से थे।
2. ज़ादुल मआद 2/95

उंगली कट गई है। हमने किसी हद तक उनका हाल ठीक किया।[1] (इससे भी अन्दाज़ा होता है कि हज़रत तलहा ने उस दिन प्रतिरक्षा और लड़ाई में कैसी जांबाज़ी और बे-जिगरी से काम लिया था।)

फिर इन्हीं सबसे नाज़ुक क्षणों के दौरान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आस-पास जांबाज़ सहाबा की एक टीम भी आ पहुंची, जिनके नाम ये हैं—

1. अबु दुजाना, 2. मुसअब बिन उमैर, 3. अली बिन अबी तालिब, 4. सह्ल बिन हुनैफ़, 5. मालिक बिन सिनान (अबू सईद ख़ुदरी के पिता), 6. उम्मे अम्मारा नुसैबा बिन्त काब माज़िनीया, 7. क़तादा बिन नोमान; 8. उमर बिन ख़त्ताब, 9. हातिब बिन अबी बलतआ, और 10. अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन०

ये लोग कैसे-कैसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुंचे होंगे, इसका एक हल्का-सा अन्दाज़ा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के इस बयान से हो सकता है कि उहुद के दिन जब लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हताश हो गए तो मैंने क़त्ल किए हुए लोगों में देखा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नज़र न आए। मैंने जी में कहा, अल्लाह की क़सम! आप भाग नहीं सकते और क़त्ल किए गए लोगों में आपको देख नहीं रहा हूं, इसलिए मैं समझता हूं कि हमने जो कुछ किया है, उससे अल्लाह ने ग़ज़बनाक होकर अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उठा लिया है। इसलिए मेरे लिए इससे बेहतर कोई शक्ल नहीं कि लड़ते-लड़ते शहीद हो जाऊं। फिर क्या था मैंने तलवार की म्यान तोड़ दी और क़ुरैश पर इस ज़ोर का हमला किया कि उन्होंने जगह ख़ाली कर दी। अब क्या देखता हूं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके दर्मियान (घेरे में) मौजूद हैं।[2]

मुश्रिकों के दबाव में बढ़ौत्तरी

इधर मुश्रिकों की तायदाद भी हर क्षण बढ़ती जा रही थी, जिसके नतीजे में उनके हमले बड़े सख़्त होते जा रहे थे और उनका दबाव बढ़ता जा रहा था, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन कुछ गढ़ों में से एक गढ़े में जा गिरे, जिन्हें अबू आमिर फ़ासिक़ ने इस क़िस्म की शरारत के लिए

---

1. तह्ज़ीब तारीख़े दमिश्क़ 7/78
2. मुस्नद अबी याला 1/416, हदीस न० 546,

खोद रखा था, और उसके नतीजे में आपका घुटना मोच खा गया।

चुनांचे हज़रत अली रज़ि० ने आपका हाल थामा और तलहा बिन उबैदुल्लाह ने (जो ख़ुद भी घावों से चूर थे) आपको गोद में लिया, तब आप बराबर खड़े हो सके।

नाफ़ेअ बिन जुबैर कहते हैं, मैंने एक मुहाजिर सहाबी को सुना, फ़रमा रहे थे, मैं उहुद की लड़ाई में हाज़िर था। मैंने देखा कि हर ओर से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर तीर बरस रहे हैं और आप तीरों के बीच में हैं, लेकिन सारे तीर आपसे फेर दिए जाते हैं। (यानी आगे घेरा डाले हुए सहाबा उन्हें रोक लेते थे) और मैंने देखा कि अब्दुल्लाह बिन शिहाब ज़ोहरी कह रहा था, मुझे बताओ, मुहम्मद कहां है? अब या तो मैं रहूंगा या वह रहेगा?

हालांकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बाज़ू में थे। आपके साथ कोई भी न था, फिर वह आपसे आगे निकल गया। इस पर सफ़वान ने उसे मलामत की।

जवाब में उसने कहा, ख़ुदा की क़सम! मैंने उसे देखा ही नहीं। ख़ुदा की क़सम! वह हमसे सुरक्षित कर दिया गया है। इसके बाद हम चार आदमी यह संकल्प लेकर चले कि उन्हें क़त्ल कर देंगे, लेकिन उन तक न पहुंच सके।[1]

अपूर्व वीरता

बहरहाल इस मौक़े पर मुसलमानों ने ऐसी अपूर्व वीरता दिखाई और ज़बरदस्त क़ुर्बानियों से काम लिया, जिसकी मिसाल तारीख़ में नहीं मिलती। चुनांचे अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने आपको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगे ढाल बना लिया। वह अपना सीना ऊपर उठा लिया करते थे, ताकि आपको दुश्मन के तीरों से सुरक्षित रख सकें।

हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि उहुद के दिन लोग (यानी आम मुसलमान) हार कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास (आने के बजाए इधर-उधर) भाग गए और अबू तलहा आपके आगे अपनी एक ढाल लेकर सपर बन गए। वह माहिर तीरंदाज़ थे, बहुत खींच कर तीर चलाते थे, चुनांचे उस दिन दो या तीन कमानें तोड़ डालीं।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से कोई आदमी तीरों का तिरकश लिए गुज़रता तो आप फ़रमाते कि इन्हें अबू तलहा के लिए बिखेर दो।

---

1. ज़ादुल मआद 2/97

नबी सल्ल० क़ौम की ओर सर उठा कर देखते तो अबू तलहा कहते, मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान ! आप सर उठा कर न झांकें। आपको क़ौम का कोई तीर न लग जाए। मेरा सीना आपके सीने के आगे है।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से यह रिवायत भी है कि हज़रत अबू तलहा नबी सल्ल० समेत एक ही ढाल से बचाव कर रहे थे और अबू तलहा बहुत अच्छे तीरंदाज़ थे। जब वह तीर चलाते तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गरदन उठा कर देखते कि उनका तीर कहां गिरा ?[2]

हज़रत अबू दुजाना रज़ि०-नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगे खड़े हो गए और अपनी पीठ को आपके लिए ढाल बना दिया, उन पर तीर पड़ रहे थे, लेकिन वह हिलते न थे।

हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ ने उत्बा बिन अबी वक़्क़ास का पीछा किया, जिसने नबी सल्ल० का मुबारक दांत शहीद किया था और उसे इस ज़ोर से तलवार मारी कि उसका सर छटक गया। फिर उसके घोड़े और तलवार पर क़ब्ज़ा कर लिया।

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० बहुत ज़्यादा चाहते थे कि अपने उस भाई, उत्बा को क़त्ल करें, पर वह सफल न हो सके, बल्कि यह सौभाग्य तो हज़रत हातिब को मिलना था और मिला।

हज़रत सह्ल बिन हुनैफ़ भी बड़े जांबाज़ तीरंदाज़ थे। उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम से मौत पर बैअत की और इसके बाद मुश्रिकों को बड़ी वीरता के साथ दूर ही रखा।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद भी तीर चला रहे थे। चुनांचे हज़रत क़तादा बिन नोमान रज़ि० की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी कमान से इतने तीर चलाए कि उसका किनारा टूट गया। फिर उस कमान को हज़रत क़तादा बिन नोमान ने ले लिया और वह उन्हीं के पास रही।

उस दिन यह घटना भी घटी कि हज़रत क़तादा की आंख चोट खाकर चेहरे पर ढलक आई। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे अपने हाथ से पपोटे के अन्दर दाख़िल कर दिया। इसके बाद इनकी दोनों आंखों में यही ज़्यादा ख़ूबसूरत लगती थी और इसी की रोशनी ज़्यादा तेज़ थी।

---

1. सहीह बुख़ारी 2/581
2. सहीह बुख़ारी 1/406

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने लड़ते-लड़ते मुंह में चोट खाई, जिससे उनके सामने का दांत टूट गया और उन्हें बीस या बीस से ज़्यादा घाव लगे, जिनमें से कुछ घाव पांव में लगे और वह लंगड़े हो गए।

अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु के पिता मालिक बिन सिनान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरे से ख़ून चूस कर साफ़ किया। आपने फ़रमाया, इसे थूक दो।

उन्होंने कहा, ख़ुदा की क़सम! इसे तो मैं हरगिज़ न थूकूंगा। इसके बाद पलट कर लड़ने लगे।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो व्यक्ति किसी जन्नती आदमी को देखना चाहता है, वह इन्हें देखे। इसके बाद वह लड़ते-लड़ते शहीद हो गए।

एक अनोखा कारनामा महिला साथी हज़रत उम्मे अम्मारा नसीबा बिन्त काब रज़ि० ने अंजाम दिया। वह कुछ मुसलमानों के बीच लड़ती हुई इब्ने क़ुम्मा के सामने अड़ गईं। इब्ने क़ुम्मा ने उनके कंधे पर ऐसी तलवार मारी कि गहरा घाव हो गया। उन्होंने भी इब्ने क़ुम्मा को अपनी तलवार से कई चोटें मारीं, मगर कमबख़्त दो कवचें पहने हुए था, इसलिए बच गया।

हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ि० ने लड़ते-भिड़ते बारह घाव खाए।

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० ने भी लड़ाई में बड़ी वीरता से हिस्सा लिया। वे इब्ने क़ुम्मा और उसके साथियों के ताबड़ तोड़ हमलों से अल्लाह के रसूल सल्ल० की बराबर रक्षा किए जा रहे थे। उन्हीं के हाथ में इस्लामी फ़ौज का झंडा था। ज़ालिमों ने उनके दाहिने हाथ पर इस ज़ोर की तलवार मारी कि हाथ कट गया। इसके बाद उन्होंने बाएं हाथ में झंडा थाम लिया और मुक़ाबला करते रहे। आख़िरकार उनका बायां हाथ भी काट दिया गया। इसके बाद उन्होंने झंडे पर घुटने टेक कर उसे सीने और गरदन के सहारे लहराए रखा और इसी हाल में शहीद कर दिए गए।

उनका क़ातिल इब्ने क़ुम्मा था। वह समझ रहा था कि वह मुहम्मद है, क्योंकि हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० आपसे मिलते-जुलते थे। चुनांचे वह मुसअब बिन उमैर रज़ि० को शहीद करके मुश्रिकों की ओर वापस चला गया और चिल्ला-चिल्लाकर एलान किया कि मुहम्मद क़त्ल कर दिए गए।[1]

---

1. देखिए इब्ने हिशाम 2/73, 80-83, ज़ादुल मआद 2/97

नबी सल्ल० की शहादत की ख़बर का प्रभाव लड़ाई पर

उसके इस एलान से नबी सल्ल० की शहादत की ख़बर मुसलमानों और मुश्रिकों दोनों में फैल गई और यही वह नाज़ुक घड़ी थी, जिसमें अल्लाह के रसूल सल्ल० से अलग-थलग घेरे में आए हुए बहुत से सहाबा किराम के हौसले टूट गए। उनके इरादे ठंडे पड़ गए और उनकी लाइनें उथल-पुथल और बिखराव का शिकार हो गईं।

मगर आपकी शहादत की यही ख़बर इस हैसियत से फ़ायदेमंद साबित हुई कि इसके बाद मुश्रिकों के जोश भरे हमले में कुछ कमी आ गई, क्योंकि वे महसूस कर रहे थे कि उनका आख़िरी मक़्सद पूरा हो चुका है। चुनांचे अब बहुत से मुश्रिकों ने हमला बन्द करके मुसलमान शहीदों की लाशों का मुसला (विकृत) करना शुरू कर दिया।

अल्लाह के रसूल सल्ल० की लगातार जद्दोजेहद से हालात पर क़ाबू पा लिया गया

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० की शहादत के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने झंडा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया। उन्होंने जमकर लड़ाई की। वहां पर मौजूद बाक़ी सहाबा किराम ने भी अपूर्व वीरता का परिचय दिया, जमकर मुक़ाबला भी किया और हमला भी, जिससे आख़िरकार इस बात की संभावना पैदा हो गई कि अल्लाह के रसूल सल्ल० मुश्रिकों की सफ़ें चीर कर घेरे में आए हुए सहाबा किराम की ओर रास्ता बनाएं।

चुनांचे आपने क़दम आगे बढ़ाया और सहाबा किराम की ओर तशरीफ़ ले गए।

सबसे पहले हज़रत काब बिन मालिक रज़ि० ने आपको पहचाना, ख़ुशी से चीख पड़े, मुसलमानो ख़ुश हो जाओ, यह हैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!

आपने इशारा फ़रमाया कि ख़ामोश रहो, ताकि मुश्रिकों को आपकी मौजूदगी और मौजूद होने की जगह का पता न लग सके। मगर उनकी आवाज़ मुसलमानों के कान तक पहुंच चुकी थी। चुनांचे मुसलमान आपकी पनाह में आना शुरू हो गए और धीरे-धीरे लगभग तीस सहाबा जमा हो गए।

जब इतनी तायदाद जमा हो गई, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहाड़ की घाटी यानी कैम्प की तरफ़ हटना शुरू किया, मगर चूंकि इस

वापसी का अर्थ यह था कि मुश्रिकों ने मुसलमानों को घेरे में लेने की जो कार्रवाई की थी, वह विफल हो जाए इसलिए मुश्रिकों ने इस वापसी को नाकाम बनाने के लिए अपने ताबड़-तोड़ हमले जारी रखे, मगर आपने इन हमलावरों की भीड़ चीर कर रास्ता बना ही लिया और इस्लाम के शेरों की बहादुरी के सामने उनकी एक न चली।

इसी बीच मुश्रिकों का एक अड़ियल घुड़सवार उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन मुगीरह यह कहते हुए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर आगे बढ़ा कि या तो मैं रहूंगा या वह रहेगा। इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी दो-दो हाथ करने के लिए ठहर गए, पर मुक़ाबले की नौबत न आई, क्योंकि उसका घोड़ा एक गढ़े में गिर गया।

इतने में हारिस बिन सुम्मा ने उसके पास पहुंचकर उसे ललकारा और उसके पांव पर इस ज़ोर की तलवार मारी कि वहीं बिठा दिया। फिर उसका काम तमाम करके उसका हथियार ले लिया और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में आ गए।

पर इतने में मक्की फ़ौज के एक दूसरे सवार अब्दुल्लाह बिन जाबिर ने पलटकर हज़रत हारिस बिन सुम्मा पर हमला कर दिया और उनके कंधे पर तलवार मारकर घायल कर दिया, पर मुसलमानों ने लपककर उन्हें उठा लिया।

उधर ख़तरों से खेलने वाले मर्द मुजाहिद हज़रत अबु दुजाना रज़ि०, जिन्होंने आज लाल पट्टी बांध रखी थी, अब्दुल्लाह बिन जाबिर पर टूट पड़े और उसे ऐसी तलवार मारी कि उसका सर उड़ गया।

प्रकृति का चमत्कार देखिए कि इसी ख़ूनी मार-धाड़ के दौरान मुसलमानों को नींद की झपकियां भी आ रही थीं और जैसा कि क़ुरआन ने बताया है, यह अल्लाह की ओर से शान्ति थी।

अबू तलहा का बयान है कि मैं भी उन लोगों में था जिन पर उहुद के दिन नींद छा रही थी, यहां तक कि मेरे हाथ से कई बार तलवार गिर गई। हालत यह थी कि वह गिरती थी और मैं पकड़ता था, फिर गिरती थी और फिर पकड़ता था।[1]

सार यह कि इस तरह की जांबाज़ी और बहादुरी के साथ यह दस्ता संगठित रूप से पीछे हटता हुआ पहाड़ की घाटी में स्थित कैम्प तक जा पहुंचा और बाक़ी सेना के लिए भी उस सुरक्षित स्थान पर पहुंचने का रास्ता बना दिया।

1. सहीह बुख़ारी 8/582

चुनांचे बाक़ी फ़ौज भी अब आपके पास आ गई और ख़ालिद बिन वलीद की रणनीति अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रणनीति के सामने नाकाम हो गई।

उबई बिन ख़ल्फ़ का क़त्ल

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घाटी में तशरीफ़ ला चुके तो उबई बिन ख़ल्फ़ यह कहता हुआ आया कि मुहम्मद कहां है? या तो मैं रहूंगा या वह रहेगा।

सहाबा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या हममें से कोई उस पर हमला कर दे?

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उसे आने दो।

जब क़रीब आया तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हारिस बिन सुम्मा से एक छोटा-सा नेज़ा लिया और लेने के बाद झटका दिया तो इस तरह लोग इधर-उधर उड़ गए, जैसे ऊंट अपने बदन को झटका देता है, तो मक्खियां उड़ जाती हैं। इसके बाद आप उसके मुक़ाबले में पहुंच गए। उसकी ख़ूद (कड़ी) और ज़िरह (कवच) के बीच हलक़ के पास थोड़ी-सी जगह खुली दिखाई दी।

आपने उसी पर टिका कर ऐसा नेज़ा मारा कि वह घोड़े से कई बार लुढ़क लुढ़क गया। जब क़ुरैश के पास गया (हाल यह था कि गरदन में कोई बड़ी खरोंच न थी, अलबत्ता ख़ून बन्द था और बहता न था) तो कहने लगा, ख़ुदा की क़सम ! मुझे मुहम्मद ने क़त्ल कर दिया।

लोगों ने कहा, ख़ुदा की क़सम ! तुम्हारा दिल चला गया है, वरना तुम्हें कोई ख़ास चोट नहीं है।

उसने कहा, वह मक्के में मुझसे कह चुका था कि मैं तुम्हें क़त्ल करूंगा[1], इसलिए ख़ुदा की क़सम ! अगर वह मुझ पर थूक देता, तो भी मेरी जान चली जाती। आख़िरकार अल्लाह का वह दुश्मन मक्का वापस होते हुए सर्फ़ नामी

---

1. यह घटना इस तरह है कि जब मक्का में उबई की मुलाक़ात अल्लाह के रसूल सल्ल० से होती, तो वह आपसे कहता, ऐ मुहम्मद ! मेरे पास औस नामी एक घोड़ा है। मैं उसे हर दिन तीन साअ (7 $\frac{1}{2}$ किलो) दाना खिलाता हूं। उसी पर बैठकर तुम्हें क़त्ल करूंगा। जवाब में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते, 'बल्कि इनशाअल्लाह मैं तुम्हें क़त्ल करूंगा।'

जगह पर पहुंचकर मर गया।[1]

अबुल अस्वद ने हज़रत उर्वः से रिवायत की है कि यह बैल की तरह आवाज़ निकालता था और कहता था, उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, जो तक्लीफ़ मुझे है, अगर वह ज़िल मजाज़ के सारे लोगों को होती, तो वे सबके सब मर जाते।[2]

हज़रत तलहा रज़ि० नबी सल्ल० को उठाते हैं

पहाड़ की ओर नबी सल्ल० की वापसी के दौरान एक चट्टान पड़ गई। आपने उस पर चढ़ने की कोशिश की, मगर चढ़ न सके, क्योंकि एक तो आपका जिस्म भारी हो चुका था, दूसरे आपने दोहरा कवच पहन रखा था और फिर आपको सख़्त चोटें भी आई थीं। इसलिए हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० नीचे बैठ गए और आपको सवार करके खड़े हो गए। इस तरह आप चट्टान पर पहुंच गए। आपने फ़रमाया, 'तलहा ने (जन्नत) वाजिब कर ली।'[3]

मुश्रिकों का आख़िरी हमला

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घाटी के अन्दर अपनी क़ियादतगाह (कमांडिंग रूम) में पहुंच गए, तो मुश्रिकों ने मुसलमानों को आख़िरी नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश की।

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि इस बीच कि अल्लाह के रसूल सल्ल० घाटी के अन्दर ही तशरीफ़ रखते थे, अबू सुफ़ियान और ख़ालिद बिन वलीद के नेतृत्व में मुश्रिकों का एक दस्ता चढ़ आया। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! ये हमसे ऊपर न जाने पाएं।

फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० और मुहाजिरों की एक टीम ने लड़कर उन्हें पहाड़ से नीचे उतार दिया।[4]

मग़ाज़ी उमवी का बयान है कि मुश्रिक पहाड़ पर चढ़ आए तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत साद रज़ि० से फ़रमाया, 'इनके हौसले पस्त करो।' (यानी

---

1. इब्ने हिशाम 2/84, जादुल मआद 2/97
2. मुस्तदरक हाकिम 2/327
3. इब्ने हिशाम 2/86, तिर्मिज़ी हदीस न० 1693, (जिहाद) 3739 (मनाक़िब) मुस्नद अहमद 1/165, हाकिम ने (3/374 में) इसे सही कहा है और ज़हबी ने इसकी ताईद की है।
4. इब्ने हिशाम 2/86

इन्हें पीछे धकेल दो)

उन्होंने कहा, मैं अकेले इनके हौसले कैसे पस्त करूं ?

इस पर आपने तीन बार यही बात दोहराई।

आख़िरकार हज़रत साद रज़ि० ने अपने तिरकश से एक तीर निकाला और एक व्यक्ति को मारा तो वह वहीं ढेर हो गया।

हज़रत साद कहते हैं कि मैंने फिर अपना तीर लिया, उसे पहचानता था और उससे दूसरे को मारा, तो उसका भी काम तमाम हो गया।

इसके बाद फिर तीर लिया, उसे पहचानता था और उससे एक तीसरे को मारा तो उसकी भी जान जाती रही।

इसके बाद मुश्रिक नीचे उतर आए। मैंने कहा यह मुबारक तीर है। फिर मैंने उसे अपने तिरकश में रख लिया। यह तीर ज़िंदगी भर हज़रत साद के पास रहा और उनके बाद उनकी औलाद के पास रहा।[1]

शुहीदों का मुसला

यह आख़िरी हमला था, जो मुश्रिकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ किया था, चूंकि आपके बारे में यही मालूम न था, बल्कि आपके शहीद किए जाने का लगभग यक़ीन था, इसलिए उन्होंने अपने कैम्प की ओर पलट कर मक्का वापसी की तैयारी शुरू कर दी। कुछ मुश्रिक मर्द और औरतें मुसलमान शुहीदों के मुसले में लग गए, यानी शहीदों की शर्मगाहें और कान, नाक वग़ैरह काट लिए, पेट चीर दिए।

हिन्द बिन्त उत्बा ने हज़रत हमज़ा रज़ि० का कलेजा चाक कर दिया और मुंह में डाल कर चबाया। निगलना चाहा, लेकिन निगल न सकी, तो थूक दिया और कटे हुए कानों और नाकों का पाज़ेब और हार बनाया।[2]

आख़िर तक लड़ने के लिए मुसलमानों की मुस्तैदी

फिर इस आख़िरी वक़्त में दो ऐसी घटनाएं हुईं जिनसे यह अन्दाज़ा लगाना कठिन नहीं है कि जांबाज़ व सरफ़रोश मुसलमान आख़िर तक लड़ाई लड़ने के लिए कितने मुस्तैद थे और अल्लाह की राह में जान देने का कैसा हौसला रखते थे—

---

1. ज़ादुल मआद 2/95
2. इब्ने हिशाम 2/90

1. हज़रत काब बिन मालिक रज़ि० का बयान है कि मैं उन मुसलमानों में था जो घाटी से बाहर आए थे। मैंने देखा कि मुश्रिकों के हाथों मुसलमान शहीदों का मुसला किया जा रहा है, तो रुक गया। फिर आगे बढ़ा, क्या देखता हूं कि एक मुश्रिक जो भारी-भरकम कवच पहने शहीदों के बीच से गुज़र रहा है और कहता जा रहा है कि कटी हुई बकरियों की तरह ढेर हो गए और एक मुसलमान उसकी राह तक रहा है। वह भी कवच पहने हुए है।

मैं कुछ क़दम और बढ़कर उसके पीछे हो लिया, फिर खड़े होकर आंखों ही आंखों में काफ़िर और मुस्लिम को तौलने लगा। महसूस हुआ कि काफ़िर अपने डील-डोल और साज़ व सामान दोनों पहलुओं से बेहतर है। अब मैं दोनों का इन्तिज़ार करने लगा। आख़िरकार दोनों में टक्कर हो गई और मुसलमान ने काफ़िर को ऐसी तलवार मारी कि वह पांव तक काटती चली गई। मुश्रिक दो टुकड़े होकर गिरा।

फिर मुसलमान ने अपना चेहरा खोला और कहा, ओ काब! कैसी रही? मैं अबू दुजाना हूं।[1]

2. लड़ाई के ख़ात्मे पर कुछ मुसलमान औरतें जिहाद के मैदान में पहुंचीं। चुनांचे हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि मैंने हज़रत आइशा बिन्त अबूबक्र रज़ि०और उम्मे सुलैम को देखा कि पिंडली के पाज़ेब तक कपड़े चढ़ाए पीठ पर मशक लाद-लादकर ला रही थीं और क़ौम के मुंह में उंडेल रही थीं।[2]

हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि उहुद के दिन हज़रत उम्मे सलीत रज़ि० हमारे लिए मशक भर-भरकर ला रही थीं।[3]

इन्हीं औरतों में हज़रत उम्मे ऐमन भी थीं। उन्होंने जब हार खाए मुसलमानों को देखा कि मदीने में घुसना चाहते हैं, तो उनके चेहरों पर मिट्टी फेंकने लगीं और कहने लगीं, यह सूत कातने का तकला लो और हमें तलवार दो।[4]

इसके बाद तेज़ी से लड़ाई के मैदान में पहुंचीं और घायलों को पानी पिलाने

---

1. अल-बिदाया वन्निहाया 4/17
2. सहीह बुख़ारी 1/403, 2/581
3. सहीह बुख़ारी 1/403
4. सूत कातना औरतों का ख़ास काम था। इसलिए सूत कातने का तकला यानी फिरकी औरतों का वैसा ही ख़ास सामान था, जैसे हमारे देश में चूड़ी। इस मौक़े पर उक्त मुहावरे का ठीक वही अर्थ है जो हमारी भाषा के इस मुहावरे का है कि 'चूड़ी लो और तलवार दो'।

लगीं। इन पर हिबान बिन अरक़ा ने तीर चलाया। वह गिर पड़ीं और परदा खुल गया। इस पर अल्लाह के दुश्मन ने भरपूर ठट्ठा लगाया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह बात बहुत बोझ महसूस हुई। आपने हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० को एक बेरेश तीर देकर फ़रमाया, इसे चलाओ।

हज़रत साद ने चलाया तो वह तीर हिबान के हलक़ पर लगा और वह चित गिरा। उसका परदा खुल गया। इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस तरह हंसे कि जड़ के दांत दिखाई देने लगे। फ़रमाया, साद ने उम्मे ऐमन का बदला चुका लिया, अल्लाह उनकी दुआ क़ुबूल करे।[1]

घाटी में चैन मिलने के बाद

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को घाटी के अन्दर अपनी जगह पर तनिक सुकून मिला, तो हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० महरास से अपनी ढाल में पानी भर लाए। (कहा जाता है कि महरास पत्थर में बना हुआ वह गढ़ा होता है, जिसमें ज़्यादा पानी आ सकता हो और कहा जाता है कि यह उहुद में एक चश्मे का नाम है।) बहरहाल हज़रत अली रज़ि० ने वह पानी नबी सल्ल० की ख़िदमत में पीने के लिए पेश किया।

आपने कुछ उसमें नागवार गंध महसूस की, इसलिए उसे पिया तो नहीं, अलबत्ता उससे चेहरे का ख़ून धो लिया और सर पर भी डाल लिया। इस हालत में आप फ़रमा रहे थे, उस व्यक्ति पर अल्लाह का बड़ा प्रकोप है, जिसने उसके नबी के चेहरे को ख़ून से भर दिया।[2]

हज़रत सह्ल रज़ि० फ़रमाते हैं, मुझे मालूम है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का घाव किसने धोया? पानी किसने बहाया? और इलाज किस चीज़ से किया? आपकी प्यारी बेटी आपका घाव धो रही थीं, हज़रत अली रज़ि० ढाल से पानी बहा रहे थे। जब हज़रत फ़ातिमा ने देखा कि पानी की वजह से ख़ून बढ़ता ही जा रहा है, तो चटाई का एक टुकड़ा लिया और उसे जलाकर चिपका दिया, जिससे ख़ून रुक गया।[3]

इधर हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हु मीठा और स्वादिष्ट पानी

---

1. अस्सीरतुल हलबीया 2/22
2. इब्ने हिशाम 2/85
3. सहीह बुख़ारी 2/584

लाए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे पिया और दुआ दी।[1] घाव की वजह से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ुहर की नमाज़ बैठे-बैठे पढ़ी और सहाबा किराम रज़ि० ने भी आपके पीछे बैठकर नमाज़ पढ़ी।[2]

अबू सुफ़ियान की बकवास और हज़रत उमर रज़ि० का जवाब

मुश्रिकों ने वापसी की तैयारी पूरी कर ली तो अबू सुफ़ियान उहुद पहाड़ पर नमूदार हुआ और ऊंची आवाज़ से बोला, क्या तुममें मुहम्मद हैं?

लोगों ने कोई जवाब नहीं दिया।

उसने फिर कहा, क्या तुममें अबू क़हाफ़ा के बेटे (अबूबक्र रज़ि०) हैं?

लोगों ने कोई जवाब नहीं दिया।

उसने फिर सवाल किया, क्या तुममें उमर बिन ख़त्ताब हैं?

लोगों ने इस बार भी कोई जवाब न दिया, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम को जवाब देने से मना फ़रमा दिया था।

अबू सुफ़ियान ने इन तीन के सिवा किसी और के बारे में न पूछा, क्योंकि उसे और उसकी क़ौम को मालूम था कि इस्लाम इन्हीं तीनों से क़ायम है। बहरहाल जब कोई जवाब न मिला तो उसने कहा, चलो, इन तीनों से फ़ुर्सत हुई।

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० बेक़ाबू हो गए और बोले, ओ अल्लाह के दुश्मन! जिनका तूने नाम लिया है, वे सब ज़िंदा हैं और अल्लाह ने अभी तेरी रुसवाई का सामान बाक़ी रखा है।

इसके बाद अबू सुफ़ियान ने कहा, तुम्हारे क़त्ल किए गए लोगों का मुसला हुआ है, लेकिन मैंने न उसका हुक्म दिया है, और न उसका बुरा मनाया है। फिर नारा लगाया, 'हुबल बुलन्द हो।'

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम लोग जवाब क्यों नहीं देते?

सहाबा ने अर्ज़ किया, क्या जवाब दें?

आपने फ़रमाया, कहो 'अल्लाह बुलन्द व बरतर है।'

फिर अबू सुफ़ियान ने नारा लगाया, 'हमारे लिए उज़्ज़ा है और तुम्हारे लिए उज़्ज़ा नहीं।'

---

1. अस्सीरतुल हलबीया 2/30
2. इब्ने हिशाम 2/87

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जवाब क्यों नहीं देते ?

सहाबा ने पूछा, क्या जवाब दें ?

आपने फ़रमाया, कहो, 'अल्लाह हमारा मौला है, और तुम्हारा कोई मौला नहीं।'

इसके बाद अबू सुफ़ियान ने कहा, कितना अच्छा कारनामा रहा। आज का दिन बद्र की लड़ाई के दिन का बदला है और लड़ाई डोल है।[1]

हज़रत उमर रज़ि० ने जवाब में कहा, बराबर नहीं। हमारे मारे गए लोग जन्नत में हैं और तुम्हारे मारे गए लोग जहन्नम में।

इसके बाद अबू सुफ़ियान ने कहा, उमर ! मेरे क़रीब आओ।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जाओ, देखो, क्या कहता है ?

वह क़रीब आए, तो अबू सुफ़ियान ने कहा, उमर ! मैं ख़ुदा का वास्ता देकर पूछता हूं क्या हमने मुहम्मद सल्ल० को क़त्ल कर दिया है ?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम ! नहीं। बल्कि इस वक़्त वह तुम्हारी बातें सुन रहे हैं।

अबू सुफ़ियान ने कहा, तुम मेरे नज़दीक इब्ने क़ुम्मा से ज़्यादा सच्चे हो।[2]

बद्र में एक और लड़ाई का वायदा

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि अबू सुफ़ियान और उसके साथी वापस होने लगे, तो अबू सुफ़ियान ने कहा, अगले साल बद्र में लड़ने का इरादा है।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने एक सहाबी से फ़रमाया, कह दो, ठीक है। अब यह बात हमारे और तुम्हारे दर्मियान तै हो गई।[3]

मुश्रिकों के विचारों की जांच

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु को रवाना किया और फ़रमाया, क़ौम के पीछे-पीछे जाओ और देखो वे क्या कर रहे हैं ? और उनका इरादा क्या है ? अगर उन्होंने घोड़े पहलू में रखे हों और ऊंटों पर सवार हों और ऊंट हांक कर ले

---

1. यानी कभी एक फ़रीक़ ग़ालिब आता है और कभी दूसरा, जैसे डोल कभी कोई खींचता है, कभी कोई।
2. इब्ने हिशाम 2/93, 94, ज़ादुल मआद 2/94, सहीह बुख़ारी 2/579
3. इब्ने हिशाम 2/94

जाएं तो मदीने का इरादा है। फिर फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम ! जिसके हाथ में मेरी जान है ! अगर उन्होंने मदीने का इरादा किया, तो मैं मदीना में जाकर उनसे दो-दो हाथ करूंगा।

हज़रत अली रज़ि० का बयान है कि इसके बाद मैं उनके पीछे निकला तो देखा, उन्होंने घोड़े पहलू में कर रखे हैं, ऊंटों पर सवार हैं और मक्के का रुख़ है।[1]

शहीदों और घायलों की देखभाल

क़ुरैश की वापसी के बाद मुसलमान अपने शहीदों और घायलों की खोज-ख़बर लेने के लिए निकले।

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि उहुद के दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे भेजा कि मैं साद बिन रुबीअ को खोजूं और फ़रमाया कि अगर वह दिखाई पड़ जाएं, तो उन्हें मेरा सलाम कहना और यह कहना कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मालूम कर रहे हैं कि तुम अपने आपको कैसा पा रहे हो ?

हज़रत ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि मैं शहीदों के दर्मियान चक्कर लगाते हुए उनके पास पहुंचा तो उनकी आख़िरी सांस आ-जा रही थी। उन्हें नेज़े, तलवार और तीर के सत्तर से ज़्यादा घाव आए थे। मैंने कहा, ऐ सांद ! अल्लाह के रसूल सल्ल० आपको सलाम कहते हैं और मालूम करना चाहते हैं कि बताओ, अब आप अपने को कैसा पा रहे हो ?

उन्होंने कहा, अल्लाह के रसूल सल्ल० को सलाम। आपसे अर्ज़ करो कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जन्नत की ख़ुशबू पा रहा हूं और मेरी क़ौम अंसार से कहो कि अगर तुममें से किसी की एक आंख भी हिलती रही और दुश्मन अल्लाह के रसूल सल्ल० तक पहुंच गया, तो तुम्हारे लिए अल्लाह के नज़दीक कोई उज़्र न होगा और उसी वक़्त उनकी रूह जिस्म से जुदा हो गई।[2]

लोगों ने घायलों में उसैरिम को भी पाया, जिनका नाम अम्र बिन साबित था। इनमें थोड़ी-सी जान बाक़ी थी। इससे पहले उन्हें इस्लाम की दावत दी जाती थी, मगर वह क़ुबूल नहीं फ़रमाते थे, इसलिए लोगों ने (आश्चर्य के साथ) कहा कि

---

1. इब्ने हिशाम, 2/94 ! हाफ़िज़ इब्ने हजर ने फ़त्हुल बारी (7/347) में लिखा है कि मुश्रिकों के इरादों का पता लगाने के लिए हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ ले गए थे।
2. ज़ादुल मआद, 2/96

यह उसैरिम कैसे आया है? उसे तो हमने इस हालत में छोड़ा था कि वह दीन का इंकारी था। चुनांचे उनसे पूछा गया कि तुम्हें यहां क्या चीज़ ले आई? क़ौम का साथ देने का जोश या इस्लाम से चाव?

उन्होंने कहा, इस्लाम से चाव। सच तो यह है कि मैं अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० पर ईमान ले आया और उसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० की हिमायत में लड़ाई में शरीक हुआ, यहां तक कि अब इस हालत से दोचार हूं जो आप लोगों की आंखों के सामने है और उसी वक़्त उनकी जान निकल गई।

लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्ल० से इसका ज़िक्र किया, तो आपने फ़रमाया, वह जन्नतियों में से है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं, जबकि उसने अल्लाह के लिए एक वक़्त की भी नमाज़ नहीं पढ़ी थी।[1] (क्योंकि इस्लाम लाने के बाद अभी किसी नमाज़ का वक़्त आया ही न था कि शहीद हो गए।)

इन्हीं घायलों में क़ुज़मान भी मिला। उसने इस लड़ाई में बड़ी वीरता दिखाई थी और अकेले सात या आठ मुश्रिकों को क़त्ल किया था। वह जब मिला तो घावों से चूर था। लोग उसे उठा कर बनू ज़ुफ़र के मुहल्ले में ले गए तो मुसलमानों ने ख़ुशख़बरी सुनाई।

कहने लगा, अल्लाह की क़सम! मेरी लड़ाई तो सिर्फ़ अपनी क़ौम की नाक के लिए थी। अगर यह बात न होती, तो मैं लड़ता ही नहीं। इसके बाद जब उसके घावों में और उभार आया तो उसने अपने आपको ज़िब्ह करके आत्महत्या कर ली।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जब भी उसका ज़िक्र किया जाता तो फ़रमाते, वह जहन्नमी है।[2] (और इस घटना ने आपकी भविष्यवाणी पर मुहर लगा दी) सच तो यह है कि अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने के बजाए क़ौम या किसी भी दूसरी राह में लड़ने वालों का अंजाम यही है, चाहे वे इस्लाम के झंडे तले, बल्कि रसूल सल्ल० और सहाबा की फ़ौज में शरीक होकर क्यों न लड़ रहे हों।

इसके बिल्कुल विपरीत मारे जाने वालों में बनू सालबा का एक यहूदी था। उसने उस वक़्त जबकि लड़ाई के बादल उमड़-घुमड़कर आ रहे थे, अपनी क़ौम से कहा, ऐ यहूदियो! ख़ुदा की क़मस, तुम जानते हो कि मुहम्मद (सल्ल०) की मदद तुम पर फ़र्ज़ है।

---

1. ज़ादुल मआद 2/94, इब्ने हिशाम 2/90
2. ज़ादुल मआद 2/97, 98, इब्ने हिशाम 2/88

यहूदियों ने कहा, मगर आज सब्त (शनिवार) का दिन है।

उसने कहा, तुम्हारे लिए कोई सब्त नहीं। फिर उसने अपनी तलवार ली, साज़ व सामान उठाया और बोला, अगर मैं मारा जाऊं तो मेरा माल मुहम्मद के लिए है, वह उसमें जो चाहेंगे, करेंगे। इसके बाद लड़ाई के मैदान में गया और लड़ते-भिड़ते मारा गया।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, मुख़ैरीक़ बेहतरीन यहूदी था।[1]

शहीदों को जमा करके दफ़न किया गया

इस मौक़े पर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने खुद भी शहीदों का मुआयना किया और फ़रमाया कि मैं इन लोगों के हक़ में गवाह रहूंगा। सच तो यह है कि जो व्यक्ति अल्लाह के रास्ते में घायल किया जाता है, उसे अल्लाह क़ियामत के दिन इस हालत में उठाएगा कि उसके घाव से ख़ून बह रहा होगा। रंग तो ख़ून ही का होगा, लेकिन ख़ुशबू मुश्क की ख़ुशबू होगी।[2]

कुछ सहाबा ने अपने शहीदों को मदीना पहुंचा दिया था। आपने उन्हें हुक्म दिया कि अपने शहीदों को वापस लाकर उनकी शहादतगाहों में दफ़न करें। साथ ही शहीदों के हथियार और पोस्तीन के पहनावे उतार लिए जाएं, फिर उन्हें नहलाए बिना जिस हालत में हों, उसी हालत में दफ़न कर दिया जाए।

आप दो-दो तीन-तीन शहीदों को एक-एक क़ब्र में दफ़ना रहे थे और दो-दो आदमियों को एक ही कपड़े में इकट्ठा लपेट देते थे और मालूम करते थे कि इनमें से किसको क़ुरआन ज़्यादा याद है? लोग जिस ओर इशारा करते उसे क़ब्र में आगे करते और फ़रमाते कि मैं क़ियामत के दिन इन लोगों के बारे में गवाही दूंगा।

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हराम और अम्र बिन जमूह एक ही क़ब्र में दफ़न किए गए, क्योंकि इन दोनों में दोस्ती थी।[3]

हज़रत हंज़ला की लाश ग़ायब थी। खोजने के बाद एक जगह इस हालत में मिली कि ज़मीन से ऊपर थी और उससे पानी टपक रहा था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम को बताया कि फ़रिश्ते उन्हें ग़ुस्ल दे

---

1. इब्ने हिशाम 2/88, 89
2. वही, 2/98
3. सहीह बुख़ारी मय फ़त्हुल बारी 3/248, हदीस न० 1343, 1346, 1347, 1348, 1353, 4079, सहीह बुख़ारी 2/584

रहे हैं। फिर फ़रमाया, उनकी बीवी से पूछो, क्या मामला है?

उनकी बीवी से मालूम किया गया, तो उन्होंने वाक़िया बतलाया। यहीं से हज़रत हंज़ला का नाम 'ग़सीलुल मलाइका' (फ़रिश्तों के ग़ुस्ल दिए हुए) पड़ गया।[1]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चचा हज़रत हमज़ा का हाल देखा तो बड़े दुखी हुए। आपकी फूफी हज़रत सफ़िया रज़ि० तशरीफ़ लाईं, वह भी अपने भाई हज़रत हमज़ा रज़ि० को देखना चाहती थीं, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके बेटे हज़रत ज़ुबैर रज़ि० से कहा कि उन्हें वापस ले जाएं, वह अपने भाई का हाल देख न लें।

मगर हज़रत सफिया ने कहा, आख़िर ऐसा क्यों? मुझे मालूम हो चुका है कि मेरे भाई का मुस्ला किया गया है, लेकिन यह अल्लाह की राह में है, इसलिए जो कुछ हुआ, हम उस पर पूरी तरह राज़ी हैं। मैं सवाब समझते हुए इनशाअल्लाह ज़रूर सब्र करूंगी।

इसके बाद वह हज़रत हमज़ा रज़ि० के पास आईं, उन्हें देखा, उनके लिए दुआ की। इन्ना लिल्लाहि पढ़ी और अल्लाह से माफ़ी की दुआ की। फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हुक्म दिया कि उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श के साथ दफ़न कर दिया जाए। वह हज़रत हमज़ा के भांजे थे और दूध शरीक भाई भी।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब पर जिस तरह रोए, उससे बढ़कर रोते हुए हमने आपको कभी नहीं देखा। आपने उन्हें क़िब्ले की ओर रखा, फिर उनके जनाज़े पर खड़े हुए और इस तरह रोए कि आवाज़ बुलन्द हो गई।[2]

वास्तव में शहीदों का दृश्य था ही बड़ा हृदय विदारक और हिला देने वाला। चुनांचे हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त का बयान है कि हज़रत हमज़ा के लिए एक काली धारियों वाली चादर के सिवा कोई कफ़न न मिल सका। यह चादर सर पर डाली जाती तो पांव खुल जाते और पांव पर डाली जाती तो सर खुल जाता, आख़िरकार चादर से सर ढक दिया गया और पांव पर इज़ख़र[3] घास डाल

---

1. ज़ादुल मआद 2/94
2. यह इब्ने शाज़ान की रिवायत है, देखिए मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 255
3. यह बिल्कुल मूज के शक्ल की एक खुशबूदार घास होती है। बहुत-सी जगहों पर चाय में डाल कर पकाई भी जाती है। अरब में इसका पौधा हाथ-डेढ़ हाथ से ज़्यादा लम्बा

दी गई।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ का बयान है कि मुसअब बिन उमैर रज़ि० की शहादत हुई, और वह मुझसे बेहतर थे, तो उन्हें एक चादर के अन्दर कफ़नाया गया। हालत यह थी कि अगर उनका सर ढांका जाता तो पांव खुल जाते और पांव ढांपे जाते तो सर खुल जाता था।

उनकी यही स्थिति हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० ने भी बयान की है और इतना और बढ़ा दिया है कि (इस स्थिति को देखकर) नबी सल्ल० ने हमसे फ़रमाया कि चादर से उनका सर ढांक दो और पांव पर इज़ख़र डाल दो।[2]

रसूलुल्लाह सल्ल० अल्लाह का गुणगान करते और उससे दुआ करते हैं

इमाम अहमद की रिवायत है कि उहुद के दिन जब मुश्रिक वापस चले गए तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने सहाबा किराम रज़ि० से फ़रमाया, बराबर हो जाओ, ज़रा मैं अपने रब का गुणगान कर लूं। इस हुक्म पर सहाबा किराम ने आपके पीछे सफ़ें बांध लीं और आपने यों फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह! तेरी ही सारी प्रशंसाएं हैं। ऐ अल्लाह! तू जिस चीज़ को फैला दे, उसे कोई तंग नहीं कर सकता और जिस चीज़ को तू तंग कर दे, उसे कोई फैला नहीं सकता। जिस व्यक्ति को तू गुमराह कर दे, उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता और जो चीज़ तू दे दे, उसे कोई रोक नहीं सकता। जिस चीज़ को तू दूर कर दे उसे कोई क़रीब नहीं कर सकता, और जिस चीज़ को तू क़रीब कर दे, उसे कोई दूर नहीं कर सकता। ऐ अल्लाह! हमारे ऊपर अपनी बरकतें, रहमतें, मेहरबानी और रोज़ी फैला दे।

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे से बाक़ी रहने वाली नेमत का सवाल करता हूं, जो न टले और न ख़त्म हो। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे ग़रीबी में मदद का और ख़ौफ़ में अम्न का सवाल करता हूं। ऐ अल्लाह! जो कुछ तू ने हमें दिया है उसके शर से और जो कुछ नहीं दिया है, उसके भी शर से तेरी पनाह चाहता हूं। ऐ अल्लाह! हमारे नज़दीक ईमान को प्रिय बना दे और उसे हमारे दिलों में ख़ुशनुमा बना दे

नहीं होता, जबकि भारत में एक मीटर से भी लम्बा होता है।

1. मुस्नद अहमद, मिश्कात 1/140
2. सहीह बुख़ारी, 2/579, 584, मय फ़त्हुल बारी 3/170, हदीस न० 1276, 3897, 3913, 3914, 4047, 4082, 6432, 6448

और कुफ़्र, फ़िस्क़ और नाफ़रमानी को नागवार बना दे और हमें हिदायत पाए हुए लोगों में कर दे। ऐ अल्लाह ! हमें मुसलमान रखते हुए वफ़ात दे और मुसलमान ही रखते हुए ज़िंदा रख और रुसवाई और फ़ित्ने से दो चार किए बग़ैर भले लोगों में शामिल फ़रमा। ऐ अल्लाह ! तू इन काफ़िरों को मार और इन पर सख़्ती और अज़ाब कर, जो तेरे पैग़म्बरों को झुठलाते और तेरी राह से रोकते हैं। ऐ अल्लाह ! उन काफ़िरों को भी मार जिन्हें किताब दी गई, ऐ सच्चे ख़ुदा।[1]

मदीने की वापसी

शहीदों के दफ़न करने के बाद और अल्लाह के गुणगान और दुआ के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीने का रुख़ फ़रमाया। जिस तरह लड़ाई के दौरान सहाबा से मुहब्बत और वीरता की अनोखी घटनाएं घटित हुई थीं, उसी तरह रास्ते में सहाबी औरतों से सच्चाई और जान लगा देने की विचित्र घटनाएं घटीं।

चुनांचे रास्ते में प्यारे नबी सल्ल० की मुलाक़ात हज़रत हमना बिन्त जहश से हुई। उन्हें उनके भाई अब्दुल्लाह बिन जहश की शहादत की ख़बर दी गई। उन्होंने 'इन्ना लिल्लाहि' पढ़ी और मग़्फ़िरत की दुआ की। फिर उनके मामूं हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब की शहादत की ख़बर दी गई। उन्होंने फिर इन्नालिल्लाह पढ़ी और मग़्फ़िरत की दुआ की। इसके बाद इनके शौहर मुसअब बिन उमैर रज़ि० की शहादत की ख़बर दी गई, तो तड़प कर चीख उठीं, और धाड़ें मार-मार कर रोने लगीं।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, औरत का शौहर उसके यहां एक विशेष स्थान रखता है।[2]

इसी तरह आपका गुज़र बनू दीनार की एक महिला के पास से हुआ, जिसके पति, भाई और पिता तीनों शहीद हो चुके थे। जब उन्हें इन लोगों की शहादत की ख़बर दी गई तो कहने लगीं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० का क्या हुआ?

लोगों ने कहा, फ़्लां की मां ! हुज़ूर सल्ल० ख़ैरियत से हैं और अल्लाह का शुक्र है जैसा तुम चाहती हो, वैसे ही हैं।

महिला ने कहा, ज़रा मुझे दिखा दो। मैं भी आपका मुबारक चेहरा देख लूं।

लोगों ने उन्हें इशारे से बताया। जब उनकी नज़र आप पर पड़ी, तो

---

1. बुख़ारी, अदबुल मुफ़रद, मुस्नद अहमद 3/324
2. इब्ने हिशाम 2/98

बे-अख़्तियार पुकार उठीं, 'आपके बाद हर मुसीबत बे-क़ीमत है।'[1]

रास्ते ही में हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु की मां आपके पास दौड़ती हुई आईं, उस वक़्त हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० अल्लाह के रसूल के घोड़े की लगाम थामे हुए थे। कहने लगे, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरी मां हैं।

आपने फ़रमाया, इन्हें मुबारक हो। इसके बाद उनके स्वागत के लिए रुक गए। जब वह क़रीब आ गईं तो आपने उनके सुपुत्र अम्र बिन मुआज़ की शहादत पर शोक व्यक्त किया और उन्हें तसल्ली दी और सब्र की नसीहत फ़रमाई।

कहने लगीं, जब मैंने आपको देख लिया, तो मेरे लिए हर मुसीबत बे-क़ीमत है।

फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उहुद के शहीदों के लिए दुआ फ़रमाई और फ़रमाया, ऐ उम्मे साद ! तुम ख़ुश हो जाओ और शहीदों के घरवालों को ख़ुशख़बरी सुना दो कि उनके शहीद सब के सब एक साथ जन्नत में हैं और अपने घरवालों के बारे में उन सबकी शफ़ाअत क़ुबूल कर ली गई है।

कहने लगीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उनके छोड़े हुए लोगों के लिए भी दुआ फ़रमा दीजिए।

आपने फ़रमाया, अल्लाह उनके दिलों का ग़म दूर कर, उनकी मुसीबत का बदला दे और बचे हुए लोगों की बेहतरीन देखभाल फ़रमा।[2]

अल्लाह के रसूल सल्ल० मदीने में

उसी दिन, यानी शनिवार 7 शव्वाल सन् 03 हि० को शाम ही को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना पहुंचे। घर पहुंच कर अपनी तलवार हज़रत फ़ातिमा को दी और फ़रमाया, बेटी ! इसका ख़ून धो दो। ख़ुदा की क़सम ! यह आज मेरे लिए बहुत सही साबित हुई।

फिर हज़रत अली रज़ि० ने भी तलवार लपकाई और फ़रमाया, इसका भी ख़ून धो दो। अल्लाह की क़सम ! यह भी आज बहुत सही साबित हुई।

इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अगर तुमने बे-लाग लड़ाई लड़ी है, तो तुम्हारे साथ सह्ल बिन हुनैफ़ और अबू दुजाना ने भी बे-लाग लड़ाई लड़ी है।[3]

---

1. इब्ने हिशाम 2/99
2. अस्सीरतुल हलबीया 2/47
3. इब्ने हिशाम 2/100

अधिकतर रिवायतें एक मत हैं कि मुसलमान शहीदों की तायदाद 70 थी, जिनमें बड़ी संख्या अंसार की थी, यानी उनके 65 आदमी शहीद हुए थे, 41 ख़ज़रज से और 24 औस से। एक आदमी यहूदियों में से क़त्ल हुआ था और मुहाजिर शहीदों की तायदाद कुल 4 थी।

बाक़ी रहे कुरैश के मारे गए लोग, तो इब्ने इस्हाक़ के बयान के मुताबिक़ उनकी तायदाद 22 थी, लेकिन लड़ाइयों के माहिर और सीरत लिखने वालों ने इस लड़ाई का जो विवेचन किया है और जिनमें छुट-पुट लड़ाई के अलग-अलग मरहलों में क़त्ल होने वाले मुश्रिकों का उल्लेख किया है, उन पर गहरी नज़र रखते हुए पूरी बारीकी के साथ हिसाब लगाया जाए, तो यह तायदाद 22 नहीं, बल्कि 37 होती है। (ख़ुदा बेहतर जाने।)[1]

मदीने में आपातकाल

मुसलमानों ने उहुद की लड़ाई से वापस आकर (8 शव्वाल 03 हि० शनिवार, रविवार के बीच की) रात आपातकाल में बिताई। लड़ाई ने उन्हें चूर-चूर कर रखा था, इसके बावजूद वे रात भर मदीने के रास्तों और राजमार्गों पर पहरा देते रहे और अपने सेनापति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशेष रक्षा पर तैनात रहे, क्योंकि उन्हें हर ओर से शंकाएं थीं।

ग़ज़वा हमरउल असद

इधर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने पूरी रात लड़ाई से पैदा हुई स्थिति पर विचार करते हुए गुज़ारी। आपको भय था कि अगर मुश्रिकों ने सोचा कि लड़ाई के मैदान में अपना पल्ला भारी रहते हुए भी हमने कोई लाभ नहीं उठाया तो उन्हें निश्चय ही शर्मिंदगी होगी और वे रास्ते से पलट कर दोबारा मदीना पर हमला करेंगे, इसलिए आपने फ़ैसला किया कि बहरहाल मक्की सेना का पीछा किया जाना चाहिए।

चुनांचे सीरत लिखने वालों का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उहुद की लड़ाई के दूसरे दिन यानी रविवार 8 शव्वाल सन् 03 हि० को सुबह सवेरे एलान फ़रमारया कि दुश्मन के मुक़ाबले के लिए चलना है और साथ ही यह भी एलान फ़रमाया कि हमारे साथ सिर्फ़ वही आदमी चल सकता है जो उहुद की लड़ाई में मौजूद था, फिर भी अब्दुल्लाह बिन उबई ने इजाज़त चाही

---

1. देखिए इब्ने हिशाम 2/122-129, फ़त्हुल बारी 7/351 और ग़ज़वा उहुद, लेखक मुहम्मद अहमद बाशमील पृ० 278, 279, 290

कि आपके साथ चले, मगर आपने इजाज़त न दी।

इधर जितने मुसलमान थे, अगरचे घावों से चूर, ग़म से निढाल और भय और आशंका से दो चार थे, लेकिन बिना किसी संकोच के इताअत का सर झुका दिया।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ने भी इजाज़त चाही जो उहुद की लड़ाई में शरीक न थे, सेना में उपस्थित हुए, बोले, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं चाहता हूं कि आप जिस किसी लड़ाई में तशरीफ़ ले जाएं, मैं भी सेवा में लगा रहूं। और चूंकि (इस लड़ाई में) मेरे बाप ने मुझे अपनी बच्चियों की देखभाल के लिए घर पर रोक दिया था, इसलिए आप मुझे इजाज़त दे दें कि मैं भी आपके साथ चलूं। इस पर आपने उन्हें इजाज़त दे दी।

प्रोग्राम के मुताबिक़ रसूलुल्लाह सल्ल० मुसलमानों को साथ लेकर चले और मदीने से आठ मील दूर हमरउल असद पहुंचकर पड़ाव डाल दिया।

ठहरने के दौरान माबद बिन अबी माबद ख़ुज़ाई अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर मुसलमान हो गए। और कहा जाता है कि वह अपने शिर्क ही पर क़ायम था, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० का भला चाहने वाला था, क्योंकि ख़ुज़ाआ और बनू हाशिम के बीच हलफ़ (यानी दोस्ती का वचन) था।

बहरहाल उसने कहा, ऐ मुहम्मद (सल्ल०) ! आपको और आपके साथियों को कष्ट पहुंचा है, तो अल्लाह की क़सम ! हमको भी इससे सदमा पहुंचा है। हमारी आरज़ू थी कि अल्लाह आपको सकुशल रखता।

इस तरह सहानुभूति दिखाने पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे फ़रमाया कि वह अबू सुफ़ियान के पास जाए और उसका मनोबल गिराए।

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो आशंका जताई थी कि मुश्रिक मदीने की ओर पलटने की बात सोचेंगे, वह बिल्कुल सही थी। चुनांचे मुश्रिकों ने मदीने से ३६ मील दूर रौहा नामी जगह पर पहुंचकर जब पड़ाव डाला तो आपस में एक दूसरे को धिक्कारने लगे। कहने लगे, तुम लोगों ने कुछ नहीं किया, उनकी ताक़त तोड़ कर भी उन्हें यों ही छोड़ दिया, हालांकि अभी उनके इतने सर बाक़ी हैं, कि वे तुम्हारे लिए फिर सर दर्द बन सकते हैं, इसलिए वापस चलो और उन्हें जड़ से साफ़ कर दो।

लेकिन ऐसा लगता है कि यह उचटती राय थी, जो उन लोगों की ओर से पेश की गई थी, जिन्हें दोनों फ़रीक़ों की ताक़त और उनके हौसलों का अन्दाज़ा न

था। इसलिए एक ज़िम्मेदार अफ़सर सफ़वान बिन उमैया ने इसका विरोध किया और कहा, लोगो ! ऐसा न करो। मुझे ख़तरा है कि जो (मुसलमान उहुद की लड़ाई में) नहीं आए थे, वे भी तुम्हारे ख़िलाफ़ जमा हो जाएंगे। इसलिए इस हालत में वापस चलो कि जीत तुम्हारी है, वरना मुझे ख़तरा है कि मदीने पर फिर चढ़ाई करोगे, तो चक्कर में पड़ जाओगे, लेकिन भारी संख्या में लोगों ने यह राय क़ुबूल न की और फ़ैसला किया कि मदीना वापस चलेंगे।

लेकिन अभी पड़ाव छोड़कर अबू सुफ़ियान और उसके फ़ौजी हिले भी न थे कि माबद बिन अबी माबद खुज़ाई पहुंच गया। अबू सुफ़ियान को मालूम न था कि वह मुसलमान हो गया है, उसने पूछा, माबद ! पीछे की क्या ख़बर है ?

माबद ने प्रचार का ज़ोरदार हथकंडा इस्तेमाल करते हुए कहा, मुहम्मद अपने साथियों को लेकर तुम्हारा पीछा करने के लिए निकल चुके हैं। उनकी फ़ौज इतनी बड़ी है कि मैंने ऐसी फ़ौज कभी देखी ही नहीं। सारे लोग तुम्हारे ख़िलाफ़ ग़ुस्से से कबाब हुए जा रहे हैं। उहुद में पीछे रह जाने वाले भी आ गए हैं। वे जो कुछ बर्बाद कर चुके, उस पर बहुत ज़्यादा शर्मिंदगी है और तुम्हारे ख़िलाफ़ इतने भड़के हुए हैं कि मैंने इसकी मिसाल देखी ही नहीं।

अबू सुफ़ियान ने कहा, अरे भाई ! यह क्या कह रहे हो ?

माबद ने कहा, अल्लाह की क़सम ! मेरा ख़्याल है कि तुम कूच करने से पहले-पहले घोड़ों की पेशानियां देख लोगे या फ़ौज का आगे का दस्ता इस टीले के पीछे से ज़ाहिर हो जाएगा।

अबू सुफ़ियान ने कहा, ख़ुदा की क़सम ! हमने फ़ैसला किया है कि उन पर पलट कर फिर हमला करें और उनकी जड़ काट कर रख दें।

माबद ने कहा, ऐसा न करना, मैं तुम्हारे भले की बात कर रहा हूं।

ये बातें सुनकर मक्की फ़ौज के हौसले टूट गए। उन पर घबराहट और रौब छा गया, और उन्हें इसी में कुशलता नज़र आई कि मक्का की ओर अपनी वापसी जारी रखें। अलबत्ता अबू सुफ़ियान ने इस्लामी फ़ौज का पीछा करने से रोकने और इस तरह दोबारा सशस्त्र टकराव से बचने के प्रोपगंडे का एक जवाबी हमला किया।

शक्ल यह हुई कि अबू सुफ़ियान के पास से क़बीला अब्दुल क़ैस का एक क़ाफ़िला गुज़रा। अबू सुफ़ियान ने कहा, क्या आप लोग मेरा एक पैग़ाम मुहम्मद को पहुंचा देंगे ? मेरा वायदा है कि इसके बदले जब आप लोग मक्का आएंगे, तो उकाज़ के बाज़ार में आप लोगों को इतनी किशमिश दूंगा, जितनी आपकी यह

ऊंटनी उठा सकेगी।

उन लोगों ने कहा, जी हां।

अबू सुफ़ियान ने कहा, मुहम्मद को यह ख़बर पहुंचा दें कि हमने उनकी और उनके साथियों की जड़ काट देने के लिए दोबारा पलट कर हमले का फ़ैसला किया है।

इसके बाद जब यह क़ाफ़िला हमरउल असद में रसूलुल्लाह सल्ल० और सहाबा किराम रज़ि० के पास से गुज़रा, तो उनसे अबू सुफ़ियान का पैग़ाम कह सुनाया और कहा कि लोग तुम्हारे ख़िलाफ़ जमा हैं, उनसे डरो।

मगर उनकी बातें सुनकर मुसलमानों का ईमान और बढ़ गए और उन्होंने कहा, 'हस्बुनल्लाहु व निअमल वकील०' (अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है और वह बेहतरीन कर्त्ता-धर्त्ता है।) (इस ईमानी ताक़त की बदौलत) वे लोग अल्लाह की नेमत और मेहरबानी के साथ पलटे। उन्हें किसी बुराई ने न छुआ और उन्होंने अल्लाह की रज़ामंदी की पैरवी की और अल्लाह बड़ी मेहरबानियों वाला है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रविवार को हमरउल असद तशरीफ़ ले गए थे। सोमवार, मंगलवार, बुधवार यानी 9, 10, 11 शव्वाल सन् 03 हि० तक वहीं ठहरे रहे। इसके बाद मदीना वापस आए।

मदीना वापसी से पहले अबू अज़्ज़ा जुमही आपकी पकड़ में आ गया। यह वही व्यक्ति है जिसे बद्र में गिरफ़्तार किए जाने के बाद उसके उपवास और लड़कियों की ज़्यादा तायदाद होने की वजह से इस शर्त पर बिना कुछ लिए-दिए छोड़ दिया गया कि वह रसूलुल्लाह सल्ल० के ख़िलाफ़ किसी की मदद नहीं करेगा। लेकिन उस व्यक्ति ने वायदा के ख़िलाफ़ काम किया और अपनी कविताओं द्वारा नबी सल्ल० और सहाबा किराम के ख़िलाफ़ लोगों की भावनाओं को भड़काया (जिसका उल्लेख पीछे पन्नों में किया जा चुका है), फिर मुसलमानों से लड़ने के लिए ख़ुद भी उहुद की लड़ाई में आया।

जब यह गिरफ़्तार करके अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लाया गया, तो कहने लगा, मुहम्मद (सल्ल०)! मेरी ग़लती माफ़ कर दो, मुझ पर एहसान कर दो और मेरी बच्चियों के लिए मुझे छोड़ दो। मैं वचन देता हूं कि अब दोबारा ऐसी हरकत नहीं करूंगा।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अब यह नहीं हो सकता कि तुम मक्का जाकर अपने गाल पर हाथ फेरो और कहो कि मैंने मुहम्मद को दो बार धोखा दिया। मोमिन एक बिल से दो बार नहीं डसा जा सकता। इसके बाद

हज़रत ज़ुबैर या हज़रत आसिम बिन साबित को हुक्म दिया और उन्होंने उसकी गरदन मार दी।

इसी तरह मक्के का एक जासूस भी मारा गया। उसका नाम मुआविया बिन मुग़ीरह बिन अबिल आस था और वह अब्दुल मलिक बिन मरवान का नाना था। यह व्यक्ति इस तरह निशाने पर आया कि जब उहुद के दिन मुश्रिक वापस चले गये तो यह अपने चचेरे भाई हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु से मिलने आया, हज़रत उस्मान ने उसके लिए रसूलुल्लाह सल्ल० से अमान तलब की।

आपने इस शर्त पर अमान दे दी कि अगर वह तीन दिन के बाद पाया गया, तो क़त्ल कर दिया जाएगा, लेकिन जब मदीना इस्लामी फ़ौज से ख़ाली हो गया, तो यह आदमी क़ुरैश की जासूसी के लिए तीन दिन से ज़्यादा ठहर गया और जब फ़ौज वापस आई तो भागने की कोशिश की। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० और अम्मार बिन यासिर रज़ि० को हुक्म दिया और उन्होंने उस आदमी का पीछा करके उसकी जान ले ली।[1]

ग़ज़वा हमरउल असद का उल्लेख अगरचे एक अलग नाम से किया जाता है, पर सच तो यह है कि यह कोई अलग से ग़ज़वा न था, बल्कि ग़ज़वा उहुद का एक भाग या उसका पूरक था और उसी के पृष्ठों में से एक पृष्ठ था।

उहुद की लड़ाई की हार-जीत का एक विश्लेषण

यह है ग़ज़वा उहुद, अपने तमाम मरहलों और पूरे विवेचन के साथ।

इस ग़ज़वे के अंजाम के बारे में बड़ी लम्बी-चौड़ी बहसें की गई हैं कि क्या इसे मुसलमानों की हार माना जाए या नहीं?

जहां तक तथ्यों का ताल्लुक़ है, तो इसमें शक नहीं कि लड़ाई के दूसरे राउंड में मुश्रिकों को श्रेष्ठता प्राप्त थी और लड़ाई का मैदान उन्हीं के हाथ में था। जानी नुक़्सान भी मुसलमानों का ही ज़्यादा हुआ और बड़े भयानक रूप में हुआ। मुसलमानों का एक गिरोह तो यक़ीनन हार खा कर भागा और लड़ाई की गति

---

1. ग़ज़वा उहुद और ग़ज़वा हमरउल असद का सविस्तार विवरण इब्ने हिशाम 2/60-129, ज़ादुल मआद 2/91-108, फ़त्हुल बारी मय सहीह बुख़ारी 7/345-377, मुख़्तसरुस्सीरः लेख–शेख़ अब्दुल्लाह पृ० 242-257 से जमा की गई हैं और दूसरी पुस्तकों के हवाले सम्बन्धित जगहों ही पर दे दिए गए हैं।

मक्की सेना के पक्ष में रही, लेकिन इन सबके बावजूद कुछ बातें ऐसी हैं जिनकी बुनियाद पर हम इसे मुश्रिकों की जीत नहीं कह सकते।

एक तो यही बात क़तई तौर पर मालूम है कि मक्की सेना मुसलमानों के कैम्प पर क़ब्ज़ा नहीं कर सकी थी और मदनी फ़ौज के बड़े हिस्से ने सख़्त उथल-पुथल और अव्यवस्था के बावजूद पलायन नहीं किया था, बल्कि बड़ी वीरता से लड़ते हुए अपने सेनापति के पास जमा हो गया था, साथ ही मुसलमानों का पल्ला इस हद तक नहीं हल्का हुआ था कि मक्की सेना उनका पीछा करती। इसके अलावा कोई एक भी मुसलमान उनकी क़ैद में नहीं गया, न कुफ़्फ़ार ने ग़नीमत का कोई माल हासिल किया।

फिर कुफ़्फ़ार लड़ाई के तीसरे राउंड के लिए तैयार नहीं हुए, हालांकि इस्लामी फ़ौज अभी अपने कैम्प ही में थी।

इसके अलावा कुफ़्फ़ार लड़ाई के मैदान में एक या दो दिन या तीन दिन भी नहीं ठहरे, हालांकि उस ज़माने के विजेताओं का यही चलन था और विजय की यह एक बड़ी ज़रूरी निशानी थी, मगर कुफ़्फ़ार ने बिल्कुल झट-पट वापसी कर ली और मुसलमानों से पहले ही लड़ाई का मैदान ख़ाली कर दिया। उन्हें माल लूटने के लिए मदीने में भी दाख़िल होने की हिम्मत न हुई, हालांकि यह शहर कुछ ही क़दम के फ़ासले पर था और फ़ौज से पूरी तरह ख़ाली और एकदम खुला पड़ा था। रास्ते में कोई रुकावट भी न थी।

इन सारी बातों का सार यह है कि क़ुरैश को ज़्यादा से ज़्यादा सिर्फ़ यह मिला कि उन्होंने एक वक़्ती मौक़े से फ़ायदा उठा कर मुसलमानों को ज़रा कड़ी किस्म की परेशानी में डाल दिया, वरना इस्लामी फ़ौज को घेर लेने के बाद उसे पूरे तौर पर क़त्ल कर देने या क़ैद कर लेने का जो फ़ायदा उन्हें सामरिक दृष्टि से अनिवार्य रूप से होना चाहिए था, उसमें वे फ़ेल हो गए और इस्लामी फ़ौज कुछ बड़ा नुक़्सान उठाने के बावजूद घेरा तोड़कर निकल गई और इस तरह का घाटा तो बहुत ही बार ख़ुद विजेताओं को सहन करना पड़ता है, इसलिए इस मामले को मुश्रिकों की विजय का नाम नहीं दिया जा सकता।

बल्कि वापसी के लिए अबू सुफ़ियान की जल्दी इस बात का पता देती है कि उसे ख़तरा था कि अगर लड़ाई का तीसरा दौर शुरू हो गया तो उसकी फ़ौज बड़ी तबाही और हार से दोचार हो जाएगी। इसकी पुष्टि अबू सुफ़ियान के उस निर्णय से होती है जो उसने ग़ज़वा हमरउल असद के बारे में अपनाया था।

ऐसी स्थिति में हम इस ग़ज़वे को किसी एक फ़रीक़ की विजय और दूसरे की पराजय कहने के बजाए अनिर्णीत लड़ाई कह सकते हैं, जिसमें हर फ़रीक़ ने

सफलता और विफलता से अपना अपना हिस्सा हासिल किया, फिर लड़ाई से मैदान से भागे बिना और अपने कैम्प को दुश्मन के क़ब्ज़े के लिए छोड़े बिना लड़ाई से दामन बचा लिया और अनिर्णीत लड़ाई कहते ही इसी को हैं। यही संकेत अल्लाह के इस इर्शाद से भी निकलता है—

'(मुश्रिक) क़ौम का पीछा करने में ढीले न पड़ो। अगर तुम दुख महसूस कर रहे हो तो तुम्हारी ही तरह वे भी दुख महसूस कर रहे हैं और तुम लोग अल्लाह से उस चीज़ की उम्मीद रखते हो जिसकी वे उम्मीद नहीं रखते।' (4 : 104)

इस आयत में अल्लाह ने स्पष्ट संकेत दिया है कि दोनों फ़रीक़ एक ही जैसी स्थिति में हैं और दोनों फ़रीक़ इस हालत में वापस हुए हैं कि कोई भी विजयी नहीं।

इस ग़ज़वे पर क़ुरआन की समीक्षा

बाद में क़ुरआन मजीद की आयतें उतरीं तो उसमें इस लड़ाई के एक-एक मरहले पर रोशनी डाली गई और समीक्षा करते हुए उन कारणों को बताया गया, जिनके नतीजे में मुसलमानों को उस बड़े नुक़्सान का सामना करना पड़ा था। और बतलाया गया कि इस तरह के निर्णायक अवसरों पर ईमान वाले और यह उम्मत, जिसे दूसरों के मुक़ाबले में ख़ैरे उम्मत होने का दर्जा हासिल है, जिन ऊंचे और अहम मक़्सद के लिए वजूद में लाई गई है, उनके लिहाज़ से अभी ईमान वालों के अलग-अलग ग्रुपों में क्या-क्या कमज़ोरियां रह गई हैं।

इसी तरह क़ुरआन मजीद ने मुनाफ़िक़ों की सोच का उल्लेख करते हुए उनके चेहरे पर से परदा उठाया। उनके सीनों में ख़ुदा और रसूल के ख़िलाफ़ छिपी हुई दुश्मनी स्पष्ट की और भोले-भाले मुसलमानों में इन मुनाफ़िक़ों और इनके भाई यहूदियों ने जो वस्वसे फैला रखे थे, उन्हें दूर किया और उन प्रशंसनीय हिक्मतों और मक़्सदों की ओर इशारा फ़रमाया, जो इस लड़ाई का सार थीं।

इस लड़ाई के बारे में सूरः आले इम्रान की साठ आयतें उतरीं। सबसे पहले लड़ाई के शुरू के मरहले का उल्लेख हुआ। कहा गया—

'याद करो जब अपने घर से निकल कर (उहुद के मैदान में गए और वहां) ईमान वालों को लड़ाई के लिए जगह-जगह तैनात कर रहे थे।' (3 : 121)

फिर आखिर में इस लड़ाई के नतीजों और हिक्मतों पर भरपूर रोशनी डाली गई और कहा गया—

'ऐसा नहीं हो सकता कि अल्लाह ईमान वालों को इसी हालत पर छोड़ दे, जिस पर तुम लोग हो, यहां तक कि गन्दे को पाक से अलग कर दे और ऐसा

नहीं हो सकता कि अल्लाह तुम्हें अनदेखी चीज़ों का पता दे दे, लेकिन वह अपने पैग़म्बरों में से जिसे चाहता है, चुन लेता है। पस अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और अगर तुम ईमान लाए और तक़्वा अपनाया, तो तुम्हारे लिए बड़ा बदला है।' (3 : 179)

ग़ज़वे में काम कर रही अल्लाह की हिक्मतें

अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने इस विषय पर बहुत विस्तार से लिखा है।[1]

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फ़रमाते हैं, उलेमा ने कहा है कि ग़ज़वा उहुद और उसके अन्दर मुसलमानों को पेश आने वाली परेशानी में रब की बड़ी ज़बरदस्त हिक्मतें और फ़ायदे काम कर रहे थे, जैसे मुसलमानों को मुसीबत के बुरे अंजाम और ग़लत काम करने के अंजाम से ख़बरदार करना। क्योंकि तीरंदाज़ों को अपने केन्द्र पर रहने का जो हुक्म अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दिया था, उन्होंने उसके ख़िलाफ़ काम करते हुए केन्द्र छोड़ दिया था (और इसी वजह से परेशानियों का सामना करना पड़ा था)।

एक हिक्मत पैग़म्बरों की इस सुन्नत को ज़ाहिर करना था कि पहले वे आज़माइश में डाले जाते हैं, फिर आख़िरकार उन्हीं को कामियाबी मिलती है और इसमें यह हिक्मत छिपी हुई है कि उन्हें अगर हमेशा सफलता ही सफलता मिले, तो ईमान वालो की सफ़ों में वे लोग भी घुस आएंगे जो ईमान वाले नहीं हैं। फिर सच्चे और झूठे में अन्तर न किया जा सकेगा और अगर हमेशा हारते ही रहें तो उनके भेजे जाने का मक़्सद ही पूरा न हो सकेगा, इसलिए हिक्मत का तक़ाज़ा यही है कि दोनों शक्लें पेश आएं ताकि सच्चे-झूठे का अन्तर मालूम हो सके।

मुनाफ़िक़ों का निफ़ाक़ मुसलमानों से छिपा हुआ था। जब यह घटना घटी और निफ़ाक़ वालों ने अपनी कथनी-करनी ज़ाहिर कर दी, तो इशारा साफ़ सामने आ गया और मुसलमानों को मालूम हो गया कि ख़ुद उनके अपने घरों में भी उनके दुश्मन मौजूद हैं, इसलिए मुसलमान उनसे निमटने के लिए मुस्तैद और उनकी ओर से सावधान हो गए।

एक हिक्मत यह भी थी कि कहीं-कहीं मदद के आने में देर से विनम्रता पैदा होती है और मन का अहं टूटता है। चुनांचे जब ईमान वाले आज़माइश से दो चार हुए, तो उन्होंने सब्र से काम लिया, अलबत्ता मुनाफ़िक़ों में रोना-पीटना शुरू हो गया।

---

1. देखिए ज़ादुल मआद 2/99-108

एक हिक्मत यह भी थी कि अल्लाह ने ईमान वालों के लिए अपने रुत्बे के घर (यानी जन्नत) में कुछ ऐसे दर्जे तैयार कर रखे हैं जहां तक उनके कामों की पहुंच नहीं होती। इसलिए आज़माइशों की भी कुछ वज्हें तै कर रखी हैं, ताकि उनकी वजह से इन दर्जों तक ईमान वालों की पहुंच हो सके।

एक हिक्मत यह भी थी कि शहादत अल्लाह के औलिया का सबसे ऊंचा दर्जा है, इसलिए यह दर्जा उनके लिए जुटा दिया गया।

एक हिक्मत यह भी थी कि अल्लाह अपने दुश्मनों को हलाक करना चाहता था, इसलिए उनके लिए ऐसी वज्हें जुटा दी गईं, यानी कुफ़्र और ज़ुल्म और अल्लाह के औलिया (प्रिय लोग) को कष्ट पहुंचाने में हद से बढ़ी हुई सरकशी, फिर (उनके इसी काम के नतीजे में) ईमान वालों को गुनाहों से पाक-साफ़ कर दिया और काफ़िरों को हलाक व बर्बाद कर दिया।[1]

---

1. फ़त्हुल बारी 7/347

उहुद के बाद की फ़ौजी मुहिमें

मुसलमानों के नाम और साख पर उहुद की नाकामी का बहुत बुरा असर पड़ा। उनकी हवा उखड़ गई और विरोधियों के दिलों से उनका रौब जाता रहा। इसके नतीजे में मुसलमानों की अन्दरूनी और बाहरी कठिनाइयों में बढ़ौत्तरी हो गई। मदीने पर हर ओर से ख़तरे मंडराने लगे। यहूदियों, मुनाफ़िक़ों और बद्दुओं ने खुलकर दुश्मनी दिखाई और हर गिरोह ने मुसलमानों को तक्लीफ़ पहुंचाने की कोशिश की, बल्कि यह उम्मीद भी करने लगा कि वह मुसलमानों का काम तमाम कर सकता है और उन्हें जड़-बुनियाद से उखाड़ सकता है।

चुनांचे इस ग़ज़वे पर अभी दो महीने भी नहीं गुज़रे थे कि बनू असद ने मदीना पर छापा मारने की तैयारी की। फिर सफ़र 04 हि० में अज़्ल और क़ारा के क़बीलों ने एक ऐसी मक्कारी भरी चाल चली कि दस सहाबा की क़ीमती जानें चली गईं।

और ठीक उसी महीने में रईस बनू आमिर ने इसी तरह की दग़ाबाज़ी के ज़रिए से सत्तर सहाबा किराम को शहीद करा दिया। यह घटना बेरे मऊना के नाम से मशहूर है।

इस बीच बनू नज़ीर भी खुली दुश्मनी दिखा चुके थे, यहां तक कि उन्होंने रबीउल अव्वल 04 हि० में ख़ुद नबी करीम सल्ल० को शहीद करने की कोशिश की।

इधर बनू ग़त्फ़ान की जुर्रात इतनी बढ़ गई थी कि उन्होंने जुमादल ऊला 04 हि० में मदीने पर हमले का प्रोग्राम बना लिया।

ग़रज़ मुसलमानों की जो साख ग़ज़वा उहद में उखड़ गई थी, उसके नतीजे में मुसलमान एक मुद्दत तक लगातार ख़तरों को झेलते रहे। लेकिन वह तो नबी करीम की हिक्मत थी, जिसने सारे ख़तरों का रुख़ फेरकर मुसलमानों का पुराना रौब वापस दिला दिया और उन्हें दोबारा उसी बुलन्दी पर पहुंचा दिया जहां वह पहले थे।

इस सिलसिले में आपका सबसे पहला क़दम हमरउल असद तक मुश्रिकों का पीछा करना था। इस कार्रवाई से आपकी फ़ौज की आबरू बड़ी हद तक बाक़ी रह गई, क्योंकि यह ऐसा प्रतिष्ठा और वीरता पर आधारित फ़ौजी क़दम था कि विरोधी, ख़ास तौर पर मुनाफ़िक़ों और यहूदियों का मुंह हैरत से खुला का खुला रह गया।

फिर आपने लगातार ऐसी जंगी कार्रवाइयां कीं कि उनसे मुसलमानों की सिर्फ़ पिछली हालत ही बहाल नहीं हुई, बल्कि उसमें और बढ़ौत्तरी हो गई। अगले पृष्ठों में इन्हीं का उल्लेख हो रहा है।

1. सरीया अबू सलमा

उहुद की लड़ाई के बाद मुसलमानों के ख़िलाफ़ सबसे पहले बनू असद बिन ख़ुज़ैमा का क़बीला उठा। उसके बारे में मदीना में यह ख़बर पहुंची कि खुवैलद के दो बेटे तलहा और सलमा अपनी क़ौम और अपने मानने वालों को लेकर बनू असद को रसूलुल्लाह पर हमले की दावत देते फिर रहे हैं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने झट डेढ सौ अंसार और मुहाजिरों का एक दस्ता तैयार फ़रमाया और हज़रत अबू सलमा रज़ि० को उसका झंडा देकर सेनापति बनाकर रवाना कर दिया।

हज़रत अबू सलमा ने बनू असद के हरकत में आने से पहले ही उन पर इतना अचानक हमला किया कि वे भाग कर इधर-उधर बिखर गए। मुसलमानों ने उनके ऊंटों और बकरियों पर क़ब्ज़ा कर लिया और सकुशल मदीना वापस आ गए। उन्हें आमने-सामने की लड़ाई भी नहीं लड़नी पड़ी।

यह सरीया मुहर्रम 04 हि० के चांद निकलने पर रवाना किया गया था। वापसी के बाद हज़रत अबू सलमा का एक घाव, जो उन्हें उहुद में लगा था, फूट पड़ा और उसकी वजह से वह जल्द ही वफ़ात पा गए।[1]

2. अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ि० की मुहिम

इसी माह मुहर्रम सन् 04 हि० की 5 तारीख़ को यह ख़बर मिली कि ख़ालिद बिन सुफ़ियान हुज़ली मुसलमानों पर हमला करने के लिए फ़ौज जमा कर रहा है। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उसके ख़िलाफ़ कार्रवाई के लिए अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ि० को रवाना फ़रमाया।

अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना से 18 दिन बाहर रहकर 23 मुहर्रम को वापस तशरीफ़ लाए। वह ख़ालिद को क़त्ल करके उसका सर भी साथ लाए थे। जब नबी सल्ल० की सेवा में हाज़िर होकर उन्होंने यह सर आपके सामने पेश किया तो आपने उन्हें एक डंडा दिया और फ़रमाया कि यह मेरे और तुम्हारे दर्मियान क़ियामत के दिन निशानी रहेगा। चुनांचे जब उनकी वफ़ात का

---

1. ज़ादुल मआद, 2/108

वक़्त आया तो उन्होंने वसीयत की कि यह डंडा भी उनके साथ उनके कफ़न में लपेट दिया जाए।[1]

3. रजीअ का हादसा

इसी साल 04 हि० के सफ़र महीने में अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास अज़्ल और क़ारा के कुछ लोग हाज़िर हुए और ज़िक्र किया कि उनके अन्दर इस्लाम की कुछ चर्चा है, इसलिए आप उनके साथ कुछ लोगों को दीन सिखाने और क़ुरआन पढ़ाने के लिए रवाना फ़रमा दें।

आपने इब्ने इस्हाक़ के अनुसार 6 लोगों को और सहीह बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ दस लोगों को रवाना फ़रमाया और इब्ने इस्हाक़ के अनुसार मुर्सद बिन अबी मुर्सद ग़नवी को और सहीह बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ आसिम बिन उमर बिन ख़त्ताब के नाना हज़रत आसिम बिन साबित को उनका अमीर मुक़र्रर फ़रमाया।

जब ये लोग राबिग़ और जद्दा के बीच क़बीला हुज़ैल के रजीअ नामी एक चश्मे पर पहुंचे, तो उन पर अज़्ल और क़ारा के उक्त लोगों ने क़बीला हुज़ैल की एक शाखा बनू लह्यान को चढ़ा दिया और बनू लह्यान के कई सौ तीरंदाज़ उनके पीछे लग गए और पद-चिह्नों को देख-देखकर उन्हें जा लिया। ये सहाबा किराम एक टीले पर चढ़ गए।

बनू लह्यान ने उन्हें घेर लिया और कहा, तुम्हारे लिए वचन है कि अगर हमारे पास उतर आओ, तो हम तुम्हारे किसी आदमी को क़त्ल नहीं करेंगे।

हज़रत आसिम ने उतरने से इंकार कर दिया और अपने साथियों समेत उनसे लड़ाई शुरू कर दी। सात आदमी शहीद हो गए और सिर्फ़ तीन आदमी हज़रत ख़ुबैब, ज़ैद बिन दस्ना और एक और सहाबी बाक़ी बचे।

अब फिर बनू लह्यान ने अपना वचन दोहराया और उस पर तीनों सहाबी उनके पास उतर कर आए, लेकिन उन्होंने क़ाबू पाते ही वचन भंग कर दिया और उन्हें अपनी कमानों की तांत से बांध लिया।

इस पर तीसरे सहाबी ने यह कहते हुए कि पहली बार ही वचन भंग कर दिया गया है, उनके साथ जाने से इंकार कर दिया। उन्होंने खींच घसीट कर ले जाने की कोशिश की, लेकिन कामियाब न हुए, तो उन्हें क़त्ल कर दिया। हज़रत

---

1. ज़ादुल मआद, 2/109, इब्ने हिशाम 2/619, 620

ख़ुबैब और ज़ैद रज़ि० को ले जाकर बेच दिया। इन दोनों सहाबा ने बद्र के दिन मक्का के सरदारों को क़त्ल किया था।

हज़रत ख़ुबैब रज़ि० कुछ दिनों मक्का वालों की क़ैद में रहे। फिर मक्का वालों ने उनके क़त्ल का इरादा किया और उन्हें हरम से बाहर तनअीम ले गए। जब सूली पर चढ़ाना चाहा, तो उन्होंने फ़रमाया, मुझे छोड़ दो, ज़रा दो रक्अत नमाज़ पढ़ लूं।

मुश्रिकों ने छोड़ दिया और आपने दो रक्अत नमाज़ पढ़ी। जब सलाम फेर चुके तो फ़रमाया, ख़ुदा की क़सम ! अगर तुम लोग यह न कहते कि जो कुछ कर रहा हूं, घबराहट की वजह से कर रहा हूं, तो मैं नमाज़ और कुछ लम्बी करता। इसके बाद फ़रमाया, ऐ अल्लाह! इन्हें एक-एक करके गिन ले, फिर इन्हें बिखेरकर मारना और इनमें से किसी एक को बाक़ी न छोड़ना, फिर ये पद पढ़े—

'लोग मेरे चारों ओर गिरोह दर गिरोह जमा हो गए हैं, अपने क़बीलों को चढ़ा लाए हैं और बहुत बड़ी भीड़ जमा कर रखी है। अपने बेटों और औरतों को भी बुला लाए हैं और मुझे एक लम्बे मज़बूत तने के क़रीब कर दिया गया है। मैं अपनी बे-वतनी और बेकसी की शिकायत और अपनी क़त्लगाह के पास गिरोहों की जमा की हुई आफ़तों की फ़रियाद अल्लाह ही से कर रहा हूं।'

'ऐ अर्श वाले ! मेरे ख़िलाफ़ दुश्मनों के जो इरादे हैं, उस पर मुझे सब्र दे। इन्होंने मुझे बोटी-बोटी कर दिया है और मेरी ख़ूराक बुरी हो गई है। इन्होंने मुझे कुफ़्र अपनाने को कहा है, हालांकि मौत इससे कमतर और आसान है।'

'मेरी आंखें आंसू के बिना उमंड आईं। मैं मुसलमान मारा जाऊं तो मुझे परवाह नहीं कि अल्लाह की राह में किस पहलू पर क़त्ल हूंगा। यह तो अल्लाह की ज़ात के लिए है और वह चाहे तो बोटी-बोटी किए हुए अंगों के जोड़-जोड़ में बरकत दे।'

इसके बाद अबू सुफ़ियान ने हज़रत ख़ुबैब से कहा, क्या तुम्हें यह बात पसन्द आएगी, कि (तुम्हारे बदले) मुहम्मद (सल्ल०) हमारे पास होते, हम उनकी गरदन मारते और तुम अपने बाल-बच्चों में रहते ?

उन्होंने कहा, नहीं ! अल्लाह की क़सम ! मुझे तो यह भी गवारा नहीं कि मैं अपने बाल-बच्चों में रहूं और (इसके बदले) मुहम्मद सल्ल० को, जहां आप हैं, वहीं रहते हुए कांटा चुभ जाए और वह आपको तक्लीफ़ दे।

इसके बाद मुश्रिकों ने उन्हें सूली पर लटका दिया और उनकी लाश की निगरानी के लिए आदमी मुक़र्रर कर दिए। लेकिन हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी

रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए और रात में झांसा देकर लाश उठा ले गए और उसे दफ़न कर दिया।

हज़रत ख़ुबैब का हत्यारा उक़्बा बिन हारिस था। हज़रत ख़ुबैब ने उसके बाप हारिस को बद्र की लड़ाई में क़त्ल किया था।

सहीह बुख़ारी की रिवायत है कि हज़रत ख़ुबैब पहले बुज़ुर्ग हैं, जिन्होंने क़त्ल के मौक़े पर दो रक्अत नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा जारी किया। उन्हें क़ैद में देखा गया कि वह अंगूर के गुच्छे खा रहे थे, हालांकि उन दिनों मक्के में खजूर भी नहीं मिलती थी।

दूसरे सहाबी जो इस घटना में गिरफ़्तार हुए थे, यानी हज़रत ज़ैद बिन दसना, उन्हें सफ़वान बिन उमैया ने ख़रीद कर अपने बाप के बदले क़त्ल कर दिया।

क़ुरैश ने इस मक़्सद के लिए भी आदमी भेजे कि हज़रत आसिम के जिस्म का कोई टुकड़ा लाएं, जिससे उन्हें पहचाना जा सके, क्योंकि उन्होंने बद्र की लड़ाई में क़ुरैश के किसी बड़े आदमी को क़त्ल किया था, लेकिन अल्लाह ने उन पर भिड़ों का झुंड भेज दयिा, जिसने क़ुरैश के आदमियों से उनकी लाश की हिफ़ाज़त की और ये लोग उनका कोई हिस्सा हासिल करने पर क़ुदरत न पा सके।

वास्तव में हज़रत आसिम रज़ि० ने अल्लाह से यह अह्द व पैमान कर रखा था कि न उन्हें कोई मुश्रिक छुएगा, न वे किसी मुश्रिक को छुएंगे। बाद में जब हज़रत उमर रज़ि० को यह घटना मालूम हुई, तो फ़रमाया करते थे कि अल्लाह मोमिन बन्दे की हिफ़ाज़त उसकी वफ़ात के बाद भी करता है, जैसे उसकी ज़िंदगी में करता है।[1]

4. बेरे मऊना की दुर्घटना

जिस महीने रजीअ की घटना घटित हुई, ठीक उसी महीने बेरे मऊना की दुर्घटना भी हुई, जो रजीअ की घटना से कहीं ज़यादा संगीन थी।

इस घटना का सार यह है कि अबू बरा आमिर बिन मालिक, जो 'नेज़ों से खेलने वाला' की उपाधि से जाना जाता था, हुज़ूर सल्ल० की सेवा में मदीना आया। आपने उसे इस्लाम की दावत दी। उसने इस्लाम तो क़ुबूल नहीं किया, लेकिन दूरी भी नहीं अपनाई।

उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर आप अपने साथियों को

---

1. इब्ने हिशाम 2/169-179, ज़ादुल मआद 2/9-10, सहीह बुख़ारी 2/568, 569, 585

दीन की दावत के लिए नज्द वालों के पास भेजें, तो मुझे उम्मीद है कि वे लोग आपकी दावत क़ुबूल कर लेंगे।

आपने फ़रमाया, मुझे अपने सहाबियों के बारे में नज्द वालों से ख़तरा है।

अबू बरा ने कहा, वे मेरी पनाह में होंगे।

इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इब्ने इस्हाक़ के कहने के मुताबिक़ चालीस और सहीह बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ सत्तर आदमियों को उसके साथ भेज दिया। सत्तर ही की रिवायत ठीक है।

मुंज़िर बिन अम्र को, जो बनू साइदा से ताल्लुक़ रखते थे और 'मौत के लिए आगे-आगे' की उपाधि से मशहूर थे, उनका अमीर बना दिया। ये लोग विद्वान, क़ारी और चुने हुए सहाबा रज़ि० में से थे। दिन में लकड़ियां काट कर उसके बदले सुफ़्फ़ा वालों के लिए अनाज ख़रीदते और क़ुरआन पढ़ते-पढ़ाते थे और रात में अल्लाह के हुज़ूर मुनाजात और नमाज़ के लिए खड़े हो जाते थे।

इस तरह चलते-चलाते मऊना के कुंएं पर जा पहुंचे। यह कुंवां बनू आमिर और हुर्रा बनी सुलैम के बीच एक भू-भाग में स्थित है।

वहां पड़ाव डालने के बाद इन सहाबा किराम ने उम्मे सुलैम के भाई हराम बिन मलहान को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़त देकर ख़ुदा के दुश्मन आमिर बिन तुफ़ैल के पास रवाना किया, लेकिन उसने ख़त को देखा तक नहीं और एक आदमी को इशारा कर दिया, जिसने हज़रत हराम को पीछे से इस ज़ोर का नेज़ा मारा कि वह नेज़ा आर-पार हो गया।

ख़ून देखकर हज़रत हराम रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाहु अक्बर! काबा के रब की क़सम! मैं कामियाब हो गया।

इसके बाद तुरन्त ही अल्लाह के उस दुश्मन आमिर ने बाक़ी सहाबा पर हमला करने के लिए अपने क़बीले बनू आमिर को आवाज़ दी, मगर उन्होंने अबू बरा की पनाह को देखते हुए उसकी आवाज़ पर कान न धरे। उधर से निराश होकर उस आदमी ने बनू सुलैम को आवाज़ दी। बनू सुलैम के तीन क़बीलों असीया, रअल और ज़कवान ने उस पर लब्बैक कहा और झट आकर इन सहाबा किरामं का घेराव कर लिया।

जवाब में सहाबा किराम ने भी लड़ाई की, मगर सबके सब शहीद हो गए, सिर्फ़ हज़रत क़ाब बिन ज़ैद बिन नज्जार रज़ियल्लाहु अन्हु ज़िंदा बचे। उन्हें शहीदों के बीच से घायल हालत में उठा लाया गया और वह ख़ंदक़ की लड़ाई तक ज़िंदा रहे।

इनके अलावा दो और सहाबा हज़रत अम्र बिन ज़मरी और हज़रत मुंज़िर

बिन उक़्बा बिन आमिर रज़ि० ऊंट चरा रहे थे। उन्होंने घटना-स्थल पर चिड़ियों को मंडलाते देखा, तो सीधे घटना-स्थल पर पहुंचे।

फिर हज़रत मुंज़िर तो अपने साथियों के साथ मिलकर मुश्रिकों से लड़ते हुए शहीद हो गए और हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी को क़ैद कर लिया गया, लेकिन जब बताया गया कि उनका ताल्लुक़ क़बीला मुज़र से है तो आमिर ने उनके माथे के बाल कटवा कर अपनी मां की ओर से, जिस पर एक गरदन आज़ाद कराने की नज़्र थी, आज़ाद कर दिया।

हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी रज़ि० इस दर्दनाक दुर्घटना की ख़बर लेकर मदीना पहुंचे। सत्तर 'बड़े' मुसलमानों की शहादत का यह हादसा, जिसने उहुद की लड़ाई का चरका ताज़ा कर दिया और वह भी इस अन्तर के साथ कि उहुद के शहीद तो एक खुली हुई और आमने-सामने की लड़ाई में मारे गए थे, मगर ये बेचारे एक शर्मनाक ग़द्दारी की भेंट चढ़ गए।

हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी वापसी में क़नात घाटी पर स्थित जगह क़रक़रा पहुंचे तो एक पेड़ के साए में उतर पड़े। वहीं बनू किलाब के दो आदमी भी आकर उतर गए। जब वे बेख़बर सो रहे तो हज़रत अम्र बिन उमैया ने उन दोनों का अन्त कर दिया। उनका विचार था कि वह अपने साथियों का बदला ले रहे हैं, हालांकि उन दोनों के पास अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का समझौता था, पर हज़रत अम्र जानते न थे।

चुनांचे जब मदीना आकर उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को अपनी इस कार्रवाई की ख़बर दी, तो आपने फ़रमाया कि तुमने ऐसे दो आदमियों को क़त्ल किया है, जिनकी दियत मुझे अनिवार्य रूप से देनी होगी।

इसके बाद आप मुसलमानों और उनके यहूदी मित्रों से दियत वसूल करने में लग गए[1] और यही ग़ज़वा बनी नज़ीर की वजह बना, जैसा कि आगे आ रहा है।

अल्लाह के रसूल सल्ल० को मऊना और रजीअ की इन दुखद घटनाओं से, जो कुछ ही दिनों में आगे-पीछे घटी थीं[2], इतना दुख पहुंचा और आप इतने दुखी और बेचैन हुए[3] कि जिन क़ौमों और क़बीलों ने इन सहाबा किराम के साथ द्रोह

---

1. देखिए इब्ने हिशाम 2/183-188, ज़ादुल मआद 2/109-110, सहीह बुख़ारी 2/584, 586
2. इब्ने साद ने लिखा है कि रजीअ और मऊना दोनों घटनाओं की ख़बर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक ही रात में मिली थी। (2/53)
3. इब्ने साद ने हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

और हत्या का यह दुर्व्यवहार किया था, आपने उन पर एक महीने तक बद-दुआ फ़रमाई।

चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत मिलती है कि जिन लोगों ने आपके सहाबा को बेरे मऊना पर शहीद किया था, आपने उन पर तीस दिन तक बद-दुआ की। आप फ़ज्र की नमाज़ में राल, ज़कवान, लह्यान और उसैया के लिए बद-दुआ करते थे और फ़रमाते थे कि असीमा ने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की। अल्लाह ने इस बारे में अपने नबी पर क़ुरआन उतारा, जो बाद में निरस्त हो गया, वह क़ुरआन यह था, हमारी क़ौम को यह बतला दो कि अपने रब से मिले, तो वह हमसे राज़ी है और हम उससे राज़ी हैं।' इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अपनी यह दुआ छोड़ दी।[1]

5. ग़ज़वा बनी नज़ीर

हम बता चुके हैं कि यहूदी इस्लाम और मुसलमानों से जलते-भुनते थे, मगर चूंकि वे मैदान के आदमी न थे, साज़िशी लोग थे, इसलिए लड़ाई के बजाए कीना और दुश्मनी का प्रदर्शन करते थे और मुसलमानों से वायदों और समझौतों के बावजूद पीड़ा पहुंचाने के लिए तरह-तरह के हीले और चालें चला करते थे। अलबत्ता बनू क़ैनुक़ाअ का देश निकाला और काब बिन अशरफ़ की हत्या की घटना घटी तो उनका मनोबल टूट गया और उन्होंने डरकर चुप्पी साध ली, लेकिन उहुद की लड़ाई के बाद उनकी हिम्मत फिर पलट आई। उन्होंने खुल्लम खुल्ला दुश्मनी की और वचन-भंग किया। मदीना के मुनाफ़िक़ों और मक्का के मुश्रिकों से परदे के पीछे सांठ-गांठ की गई और मुसलमानों के ख़िलाफ़ मुश्रिकों के समर्थन में काम किया।[2]

नबी सल्ल० ने सब कुछ जानते हुए सब्र से काम लिया, लेकिन रजीअ और मऊना की दुर्घटनाओं के बाद उनकी जुर्रात बहुत ज़्यादा बढ़ गई और उन्होंने नबी सल्ल० ही के ख़ात्मे का प्रोग्राम बना लिया।

इसका विवरण यह है कि नबी सल्ल० अपने कुछ साथियों के साथ यहूदियों के पास तशरीफ़ ले गए और उनसे बनू किलाब के इन दोनों मारे गए लोगों की दियत

अलैहि व सल्लम जितने बेरे मऊना वालों पर दुखी हुए, मैंने किसी और पर आपको इतना दुखी होते नहीं देखा। (2/54)

1. सहीह बुख़ारी 2/586, 587, 588
2. सुनन अबू दाऊद, बाब ख़बरुन्नज़ीर की रिवायत से यह बात ली गई है, देखिए सुनने अबू दाऊद मय शरह औनुल माबूद 2/116, 117

में मदद के लिए बातचीत की। (जिन्हें हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी ने ग़लती से क़त्ल कर दिया था) उन पर समझौते के अनुसार यह मदद ज़रूरी थी।

उन्होंने कहा, अबुल क़ासिम ! हम ऐसा ही करेंगे। आप यहां तशरीफ़ रखिए। हम आपकी ज़रूरत पूरी किए देते हैं। आप उनके एक घर की दीवार से टेक लगाकर बैठ गए और उनके वायदे के पूरा करने का इन्तिज़ार करने लगे। आपके साथ हज़रत अबूबक्र रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत अली रज़ि० और सहाबा किराम रज़ि० की एक जमाअत भी थी।

इधर यहूदी तंहाई में जमा हुए तो उन पर शैतान सवार हो गया और जो दुर्भाग्य उनका लिखा बन चुका था, उसे शैतान ने सुन्दर बनाकर पेश किया यानी इन यहूदियों ने आपस में मश्विरा किया कि क्यों न नबी सल्ल० ही को क़त्ल कर दिया जाए।

चुनांचे उन्होंने कहा, कौन है जो इस चक्की को लेकर ऊपर जाए और आपके सर पर गिराकर आपको कुचल दे ?

इस पर एक भाग्यहीन यहूदी अम्र बिन जह्हश ने कहा, 'मैं'।

इन लोगों से सलाम बिन मुश्कम ने कहा भी कि ऐसा न करो, क्योंकि ख़ुदा की क़सम ! इन्हें तुम्हारे इरादों की ख़बर दे दी जाएगी और फिर हमारे और उनके बीच जो वायदा-समझौता है, यह उसके ख़िलाफ़ भी है, लेकिन उन्होंने एक न सुनी और अपने मंसूबे को अमली जामा पहनाने पर उतर आए।

इधर अल्लाह की ओर से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास हज़रत जिब्रील तशरीफ़ लाए और आपको यहूदियों के इरादे से ख़बरदार किया। आप तेज़ी से उठे और मदीने के लिए चल पड़े। बाद में सहाबा किराम भी आपसे आ मिले और कहने लगे आप उठ आए और हम समझ न सके।

आपने बताया कि यहूदियों का इरादा क्या था।

मदीना वापस आकर आपने तुरन्त ही मुहम्मद बिन मस्लमा को बनी नज़ीर के पास रवाना फ़रमाया और उन्हें यह नोटिस दिया कि तुम लोग मदीने से निकल जाओ। अब यहां मेरे साथ नहीं रह सकते, तुम्हें दस दिन की मोहलत दी जाती है। इसके बाद जो व्यक्ति पाया जाएगा, उसकी गरदन मार दी जाएगी। इस नोटिस के बाद यहूदियों के देश-निकाला के सिवा कोई रास्ता समझ में न आया।

चुनांचे वे कुछ दिन तक सफ़र की तैयारी करते रहे। लेकिन इसी बीच अब्दुल्लाह बिन उबई, मुनाफ़िक़ों के सरदार ने कहला भेजा कि अपनी जगह बरक़रार रहो, डट जाओ और घर-बार न छोड़ो। मेरे पास दो हज़ार लड़ने वाले

मर्द हैं, जो तुम्हारे साथ क़िले में दाखिल होकर तुम्हारी हिफ़ाज़त में जान दे देंगे और अगर तुम्हें निकाला ही गया तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जाएंगे और तुम्हारे बारे में हरगिज़ किसी से नहीं दबेंगे और अगर तुमसे लड़ाई की गई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे और बनू क़ुरैज़ा और बनू ग़तफ़ान जो तुम्हारे मित्र हैं, वे भी तुम्हारी मदद करेंगे।

यह पैग़ाम सुनकर यहूदियों का आत्मविश्वास पलट आया और उन्होंने तै कर लिया कि देश निकाला लेने के बजाए टक्कर ली जाएगी। उनके सरदार हुइ बिन अख़तब को उम्मीद थी कि मुनाफ़िक़ों के सरदार ने जो कुछ कहा है वह पूरा करेगा, इसलिए उसने रसूलुल्लाह सल्ल० के पास जवाबी सन्देश भेज दिया कि हम अपने घरों से नहीं निकलते। आपको जो करना हो कर लें।

इसमें सन्देह नहीं कि मुसलमानों की दृष्टि से यह स्थिति नाज़ुक थी, क्योंकि उनके लिए अपने इतिहास के इस नाज़ुक और पेचीदा मोड़ पर दुश्मनों से टकराव कुछ ज़्यादा सन्तोषजनक न था। अंजाम ख़तरनाक हो सकता था। सारा अरब मुसलमानों के ख़िलाफ़ था और मुसलमानों के दो प्रचार दल बड़ी बेदर्दी से मारे जा चुके थे।

फिर बनू नज़ीर के यहूदी इतने ताक़तवर थे कि उनका हथियार डालना आसान न था और उनसे लड़ाई मोल लेने में तरह-तरह की आशंकाएं थीं। पर बेरे मऊना की दुखद घटना से पहले और उसके बाद के हालात ने जो नई करवट ली थी, उसकी वजह से मुसलमान क़त्ल और वचन-भंग करने जैसे अपराधों के सिलसिले में, ज़्यादा भावुक हो गए थे और इन अपराध के करने वालों के ख़िलाफ़ मुसलमानों की प्रतिशोध-भावना बढ़ गई थी, इसलिए उन्होंने तै कर लिया कि चूंकि बनू नज़ीर ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हत्या का प्रोग्राम बनाया था, इसलिए उनसे बहरहाल लड़ना है भले ही इसके कुछ भी नतीजे निकलें।

चुनांचे जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हुइ बिन अख़तब का जवाबी पैग़ाम मिला तो आपने और सहाबा किराम रज़ि० ने कहा, अल्लाहु अक्बर और फिर लड़ाई के लिए उठ खड़े हुए और हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ि० को मदीने का इन्तिज़ाम सौंप कर बनू नज़ीर के इलाक़े की ओर रवाना हो गए। हज़रत अली रज़ि० के हाथ में झंडा था। बनू नज़ीर के इलाक़े में पहुंचकर उन्हें घेर लिया गया।

इधर बनू नज़ीर ने अपने क़िलों और गढ़ियों में पनाह ली और क़िला बन्द रहकर फ़सील से तीर और पत्थर बरसाते रहे, चूंकि खजूर के बाग़ उनके लिए

ढाल का काम दे रहे थे, इसलिए आपने हुक्म दिया कि इन पेड़ों को काट कर जला दिया जाए। बाद में इसी की तरफ़ इशारा करके हज़रत हस्सान रज़ि० ने फ़रमाया था—

'बनी लुवी के सरदारों के लिए यह मामूली बात थी कि बुवैरा में आग के शोले भड़कें' (बुवैरा बनू नज़ीर के मरुद्यान का नाम था) और उसी के बारे में अल्लाह का यह इर्शाद भी आया—

'तुमने जो खजूर के पेड़ काटे या जिन्हें अपने तनों पर खड़ा रहने दिया वह सब अल्लाह ही के हुक्म से था और ऐसा इसलिए किया गया ताकि इन नाफ़रमानों को रुसवा करे।' (59/5)

बहरहाल जब उनका घेराव कर लिया गया, तो बनू क़ुरैज़ा उनसे अलग-थलग रहे। अब्दुल्लाह बिन उबई ने भी धोखा दिया और उनके मित्र ग़तफ़ान भी मदद को न आए। ग़रज़ कोई भी इन्हें मदद देने या इनकी मुसीबत टालने पर तैयार न हुआ, इसीलिए अल्लाह ने उनकी घटना की मिसाल यों बयान फ़रमाई—

'जैसे शैतान उनसे कहता है, कुफ़्र करो और जब वह कुफ़्र कर बैठता है, तो शैतान कहता है, मैं तुमसे बरी हूं।' (59/61)

घेराव कुछ ज़्यादा लम्बा नहीं हुआ, बल्कि सिर्फ़ छः रात, या कुछ लोगों के कहने के अनुसार पन्द्रह रात चला कि इस बीच अल्लाह ने उनके दिलों में रौब डाल दिया। उनका मनोबल टूट गया, वे हथियार डालने पर तैयार हो गए और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहलवा भेजा कि हम मदीने से निकलने को तैयार हैं। आपने उनके देश निकाला के प्रस्ताव को मान लिया और यह भी मान लिया कि वे हथियार के अलावा बाक़ी जितना साज़ व सामान ऊंटों पर लाद सकते हों, सब लेकर बाल-बच्चों समेत चले जाएं।

बनू क़ुरैज़ा ने इस मंज़ूरी के बाद हथियार डाल दिए और अपने हाथों अपने मकान उजाड़ डाले, ताकि दरवाज़े और खिड़कियां भी लाद ले जाएं, बल्कि कुछ ने तो छत की कड़ियां और दीवारों की खूंटियां भी लाद लीं, फिर औरतों और बच्चों को सवार किया और छः सौ ऊंटों पर लद-लदा कर रवाना हो गए।

ज़्यादातर यहूदियों और उनके सरदारों ने जैसे, हुइ बिन अख़तब और सलाम बिन अबी हुक़ैक़ ने ख़ैबर का रुख किया। एक जमाअत शामदेश रवाना हुई, सिर्फ़ दो आदमियों यानी यामीन बिन अम्र और अबू सईद बिन वह्ब ने इस्लाम क़ुबूल किया। इसलिए उनके माल को हाथ नहीं लगाया गया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शर्त के मुताबिक़ बनू

नज़ीर के हथियार, ज़मीन, घर और बाग़ अपने क़ब्ज़े में ले लिए। हथियार में पचास ज़िरहें (कवच), पचास ख़ूद और तीन सौ चालीस तलवारें थीं।

बनू नज़ीर के ये बाग़, ज़मीन और मकान, खालिस अल्लाह के रसूल सल्ल० का हक़ था। आपको अधिकार था कि आप इसे अपने लिए बचा के रखें या जिसे चाहें दे दें। चुनांचे आपने (ग़नीमत के माल की तरह) इन मालों का पांचवां हिस्सा नहीं निकाला, क्योंकि अल्लाह ने इसे आपको फ़ै के तौर पर दिया था। मुसलमानों ने इस पर घोड़े और ऊंट दौड़ा कर इसे (तलवार के बल पर) नहीं हासिल किया था। इसलिए आपने अपने इस विशेषाधिकार के तहत इस पूरे माल को सिर्फ़ शुरू के मुहाजिरों में बांट दिया, अलबत्ता दो अंसारी सहाबा यानी अबू दुजाना और सहल बिन हुनैफ़ रज़ि० को उनकी तंगदस्ती की वजह से उसमें से कुछ दे दिया।

इसके अलावा आपने अपने लिए (एक छोटा सा टुकड़ा बचा लिया, जिसमें से आप) अपनी बीवियों का साल भर का ख़र्च निकालते थे और इसके बाद जो कुछ बचता था, उसे जिहाद की तैयारी के लिए हथियार और घोड़ों के जुटाने में लगा दिया करते थे।

ग़ज़वा बनी नज़ीर रबीउल अव्वल 04 हि०, तद० अगस्त सन् 625 ई० में पेश आया और अल्लाह ने इस ताल्लुक़ से पूरी सूरः हश्र उतारी, जिसमें यहूदियों को देश निकाला दिए जाने का चित्र खींचते हुए मुनाफ़िक़ों की रीति-नीति पर से परदा उठा दिया गया है और फ़ै माल के हुक्मों का बयान फ़रमाते हुए मुहाजिर और अंसार की सराहना की गई है और यह भी बताया गया है कि लड़ाई की मस्लहतों को देखते हुए दुश्मन के पेड़ काटे जा सकते हैं और उनमें आग लगाई जा सकती है। ऐसा करना 'धरती में बिगाड़ पैदा करना' नहीं है।

फिर ईमान वालों को तक़्वा अपनाने और आख़िरत की तैयारी की ताकीद की गई है।

इन सब के बाद अल्लाह ने अपना गुणगान करते हुए अपने गुणों का बखान करते हुए सूरः ख़त्म फ़रमा दी है।

इब्ने अब्बास रज़ि० इस सूरः (हश्र) के बारे में फ़रमाया करते थे कि इसे सूरः बनी नज़ीर कहो।[1]

यह उस लड़ाई के बारे में इब्ने इस्हाक़ और सीरत पर लिखने वाले आम विद्वानों के बयान का सार है। इमाम अबू दाऊद और अब्दुर्रज़्ज़ाक आदि ने इस

1. इब्ने हिशाम 2/190, 191, 192, ज़ादुल मआद 2/71, 110, सहीह बुख़ारी 2/574, 575

लड़ाई की एक दूसरी वजह रिवायत की है और वह यह है कि जब बद्र की लड़ाई पेश आई तो उस बद्र की लड़ाई के बाद क़ुरैश ने यहूदियों को लिखा कि तुम लोगों के पास कवच और क़िले हैं, इसलिए तुम लोग हमारे साहब (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से लड़ाई करो वरना हम तुम्हारे साथ ऐसा और ऐसा करेंगे और हमारे और तुम्हारे पाज़ेब के दर्मियान कोई चीज़ रुकावट न बन सकेगी। जब यहूदियों को यह ख़त मिला तो बनू नज़ीर ने ग़दर का फ़ैसला कर लिया, चुनांचे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहला भेजा कि आप अपने साथियों में से तीस आदमी को साथ लेकर हमारी ओर तशरीफ़ लाएं और हमारी ओर से भी तीस आमिल निकलें, फ़्लां जगह जो हमारे और आपके बीच है, मुलाक़ात हो और वे आंपकी बात सुनें। इसके बाद अगर वह आपको सच्चा मान लें और आप पर ईमान ले आएं तो हम सब आप पर ईमान ले आएंगे।

इस प्रस्ताव के अनुसार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीस सहाबा रज़ि० के साथ तशरीफ़ ले गए और यहूदियों के भी तीस आलिम आए। एक खुली जगह पहुंचकर कुछ यहूदियों ने कुछ से कहा, देखो, इनके साथ तीस आदमी होंगे, जिनमें से हर एक इनसे पहले मरना पसन्द करेगा। ऐसी स्थिति में तुम उन तक कैसे पहुंच सकते हो? इसके बाद उन्होंने कहला भेजा कि हम साठ आदमी होंगे, तो आप कैसे समझाएंगे और हम कैसे समझेंगे? बेहतर है कि आप अपने तीन साथियों के साथ आएं और हमारे भी तीन आलिम के पास जाएं। और वे आपकी बात सुनें। अगर वे ईमान लाएंगे तो हम सब ईमान लाएंगे और आपकी पुष्टि करेंगे। चुनांचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने तीन सहाबा के साथ तशरीफ़ ले गए। उधर यहूदी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल के इरादे से ख़ंजर छिपाकर लाए, लेकिन बनू नज़ीर की एक हितैषी औरत ने अपने भतीजे के पास, जो एक अंसारी मुसलमान था—अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बनू नज़ीर के ग़द्र के इरादे की ख़बर भेजी। वह तेज़ रफ़्तारी से आया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उन तक पहुंचने से पहले ही पा लिया और कानों में उनकी ख़बर सुनाई। आप वहीं से वापस आ गए और दूसरे दिन सहाबा किराम के दस्ते लेकर तशरीफ़ ले गए और उनका घेराव कर लिया और फ़रमाया कि तुम लोग जब तक मुझे अह्द व पैमान न दे दो, भरोसे योग्य नहीं। उन्होंने किसी भी प्रकार का अह्द देने से इन्कार कर दिया। इस पर आपने और मुसलमानों ने उस दिन उनसे लड़ाई की। दूसरे दिन घोड़े और दस्ते लेकर आप बनू क़ुरैज़ा के पास तशरीफ़ ले गए और बनू नज़ीर को उनके हाल पर छोड़ दिया। बनू क़ुरैज़ा को अह्द व पैमान करने की दावत दी। उन्होंने समझौता कर लिया, इसलिए आप उनसे पलट

आए और दूसरे दिन दस्तों के साथ फिर बनू नज़ीर का रुख़ किया और उनसे लड़ाई लड़ी। आख़िर में उन्होंने इस शर्त पर देश निकाला मंज़ूर कर लिया कि हथियारों के सिवा जो कुछ ऊंटों पर लादा जा सकता है, उसे हम ले जा सकेंगे । चुनांचे बनू नज़ीर आए और अपने साज़ व सामान, घरों के दरवाज़े और लकड़ियां, ग़रज़ यह कि जो कुछ भी ऊंटों से उठ सकता था, उसे लाद लिया, इसके लिए उन्होंने ख़ुद अपने हाथों अपने घर बर्बाद किए और उन्हें ढाया और जो लकड़ियां काम की हुईं, उन्हें लाद लिया। यह देश निकाला शाम देश की तरफ़ उन लोगों का पहला जमाव या पहला हांका और जमाव था।[1]

6. ग़ज़वा नज्द

ग़ज़वा बनी नज़ीर में किसी क़ुरबानी के बग़ैर मुसलमानों को शानदार कामियाबी हासिल हुई। इससे मदीने में मुसलमानों की सत्ता मज़बूत हो गई और मुनाफ़िक़ों पर निराशा छा गई। अब उन्हें कुछ खुलकर करने की जुर्रात नहीं हो रही थी।

इस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन बद्दुओं की ख़बर लेने के लिए यकसू हो गए, जिन्होंने उहुद के बाद ही से मुसलमानों को बड़ी कठिनाइयों में उलझा रखा था और बड़े ज़ालिमाना तरीक़े से अल्लाह की दावत देने वालों पर हमले कर करके उन्हें मौत के घाट उतार चुके थे और अब उनकी जुर्रात इस हद तक बढ़ चुकी थी कि वे मदीने पर चढ़ाई की सोच रहे थे।

चुनांचे ग़ज़वा बनी नज़ीर से छूटने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अभी इन झूठों को सिखाने के लिए उठे भी न थे कि आपको सूचना मिली कि बनू ग़तफ़ान के दो क़बीले बनू मुहारिब और बनू सालबा लड़ाई के लिए बद्दुओं और अरब के देहातियों के लोगों को जमा कर रहे हैं।

इस ख़बर के मिलते ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नज्द पर धावा बोलने का फ़ैसला किया और नज्द के रेगिस्तानों में दूर तक घुसते चले गए, जिसका मक़्सद यह था कि इन संगदिल बद्दुओं पर भय छा जाए और दोबारा मुसलमानों के ख़िलाफ़ पहले जैसी संगीन कार्रवाइयों को दोहराने की जुर्रात न करें।

इधर उद्दंड बद्दू, जो लूटमार की तैयारियां कर रहे थे, मुसलमानों के इस यकायकी धावे की ख़बर सुनते ही डरकर भाग खड़े हुए और पहाड़ो की चोटियों

---

1. लेखक अब्दुर्रज़्ज़ाक़ 8/358-360, हदीस 9733, सुनन अबी दाऊद किताबुल ख़िराज वल फ़ै वल आरा बाब फ़ी ख़बरुन नज़ीर 2/154

में जा दुबके।

मुसलमानों ने लुटेरे क़बीलों पर अपना रौब व दबदबा क़ायम करने के बाद अम्न व अमान के साथ वापस मदीने की राह ली।

सीरत लिखने वालों ने इस सिलसिले में एक निश्चित ग़ज़वे का नाम लिया है, जो रबीउल आख़िर या जुमादल ऊला सन् 04 हि० में नज्द भू-भाग पर पेश आरया था और वे इसी ग़ज़वा को ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ क़रार देते हैं।

जहां तक तथ्यों और प्रमाणों का ताल्लुक़ है, तो इसमें सन्देह नहीं कि इन दिनों में नज्द के अन्दर एक ग़ज़वा पेश आया था, क्योंकि मदीना के हालात ही कुछ ऐसे थे। अबू सुफ़ियान ने उहुद की लड़ाई से वापसी के वक़्त अगले साल बद्र के मैदान में लड़ाई के लिए ललकारा था और जिसे मुसलमानों ने मंज़ूर कर लिया था। अब उसका वक़्त क़रीब आ रहा था और सामरिक दृष्टि से यह बात किसी तरह मुनासिब न थी कि बद्दुओं और अरब देहातियों को उनकी सरकशी और उद्दंडता पर क़ायम छोड़कर बद्र जैसी ज़ोरदार लड़ाई में जाने के लिए मदीना ख़ाली कर दिया जाए, बल्कि ज़रूरी था कि बद्र के मैदान में जिस भयानक लड़ाई की उम्मीद थी, उसके लिए निकलने से पहले, इन बद्दुओं की उछल-कूद पर ऐसी चोट लगाई जाए कि उन्हें मदीना का रुख़ करने की जुर्रात न हो।

बाक़ी रही यह बात कि यही ग़ज़वा जो रबीउल आख़र या जुमादल ऊला सन् 04 हि० में पेश आया था, ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ था, हमारी खोज के मुताबिक़ सही नहीं, क्योंकि ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० और हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० मौजूद थे और अबू हुरैरह रज़ि० ख़ैबर की लड़ाई से कुछ दिन पहले इस्लाम लाए थे।

इसी तरह हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० मुसलमान होकर यमन से रवाना हुए तो उनकी सवारी साहिल हब्शा से जा लगी थी और वह हब्शा से उस वक़्त वापस आए थे जब नबी सल्ल० ख़ैबर में तशरीफ़ रखते थे। इस तरह वह पहली बार ख़ैबर ही के अन्दर नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हो सके थे। पस ज़रूरी है कि ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ ग़ज़वा ख़ैबर के बाद पेश आया हो।

सन् 04 हि० के एक अर्से के बाद ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ के पेश आने की एक निशानी यह भी है कि नबी सल्ल० ने ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ में ख़ौफ़ की नमाज़[1]

---

1. लड़ाई की हालत में पढ़ी गई नमाज़ को 'ख़ौफ़ की नमाज़' कहते हैं, जिसका एक तरीक़ा यह है कि आधी फ़ौज हथियार बन्द होकर इमाम के पीछे नमाज़ पढ़े, बाक़ी आधी फ़ौज हथियार बांधे दुश्मन पर नज़र रखे। एक रक्अत के बाद यह फ़ौज इमाम

पढ़ी थी और ख़ौफ़ की नमाज़ पहले पहल ग़ज़वा अस्फ़ान में पढ़ी गई और इसमें कोई मतभेद नहीं कि ग़ज़वा अस्फ़ान का ज़माना ग़ज़वा ख़ंदक़ के भी बाद का है, जबकि ग़ज़वा ख़ंदक़ का ज़माना सन् 05 हि० के आख़िर का है।

सच तो यह है कि ग़ज़वा अस्फ़ान हुदैबिया के सफ़र की एक छोटी-सी घटना है और हुदैबिया का सफ़र सन् 06 हि० के आख़िर में हुआ था, जिससे वापस आकर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ख़ैबर का रास्ता लिया था, इसलिए इस दृष्टि से भी ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ का ज़माना ख़ैबर के ज़माने के बाद का ही साबित होता है।

7. ग़ज़वा बद्र द्वितीय

अरब देहातियों के दबदबे को कम करने और बद्दुओं की शरारत से सन्तुष्ट हो जाने के बाद मुसलमानों ने अपने बड़े दुश्मन (क़ुरैश) से लड़ाई की तैयारी शुरू कर दी, क्योंकि साल तेज़ी से ख़त्म हो रहा था और उहुद के मौक़े पर तै किया हुआ वक़्त क़रीब आता जा रहा था, और मुहम्मद सल्ल० और सहाबा किराम का फ़र्ज़ था कि लड़ाई के मैदान में अबू सुफ़ियान और उसकी क़ौम से दो-दो हाथ करने के लिए निकलें और लड़ाई की चक्की इस हिम्मत के साथ चलाएं कि जो फ़रीक़ ज़्यादा हिदायत पाने और मज़बूत रहने का हक़दार हो, हालात का रुख़ पूरी तरह उसके हक़ में हो जाए।

चुनांचे शाबान 04 हि०, (तद० जनवरी 626 ई०) में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीने का इंतिज़ाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु को सौंप कर उस तैशुदा लड़ाई के लिए बद्र का रुख़ फ़रमाया। आपके साथ डेढ़ हज़ार की फ़ौज और दस घोड़े थे। आपने फ़ौज का झंडा हज़रत अली रज़ि० को दिया और बद्र पहुंच कर मुश्रिकों के इन्तिज़ार में पड़ाव डाल लिया।

दूसरी ओर अबू सुफ़ियान भी पचास सवार समेत दो हज़ार मुश्रिकों की फ़ौज लेकर रवाना हुआ और मक्का से एक मरहला दूर मर्रज़्ज़हरान घाटी पहुंच कर मजन्ना नाम के सोते पर पड़ाव डाला, लेकिन वह मक्का ही से बोझल और बद-दिल था। बार-बार मुसलमानों के साथ होने वाली लड़ाई का अंजाम सोचता

के पीछे आ जाए और पहली फ़ौज दुश्मन पर नज़र रखने चली जाए। इमाम दूसरी रक्अत पूरी कर ले, तो बारी-बारी फ़ौज के दोनों हिस्से अपनी-अपनी नमाज़ें पूरी करें। इस नमाज़ के इससे मिलते-जुलते और भी कई तरीक़े हैं जो लड़ाई के मौक़ों को देखते हुए अपनाए जाते हैं, सविस्तार जानने के लिए हदीस की किताबें पढ़िए।

था और आतंक और दबदबे से कांप उठता था। मर्रज़्ज़हरान पहुंच कर उसकी हिम्मत जवाब दे गई और वह वापसी के बहाने सोचने लगा। आख़िरकार अपने साथियों से कहा, क़ुरैश के लोगो ! लड़ाई उस वक़्त सही होती है, जब ख़ुशहाली और हरियाली हो कि जानवर भी चर सकें और तुम भी दूध पी सको। इस समय सूखा चल रहा है, इसलिए मैं वापस जा रहा हूं, तुम भी वापस चले चलो।

ऐसा मालूम होता है कि सारी फ़ौज पर भय और आतंक छाया हुआ था, क्योंकि अबू सुफ़ियान के इस मश्विरे पर किसी प्रकार के विरोध के बिना ही सब ने वापसी का रास्ता लिया और किसी ने भी सफ़र जारी रखने और मुसलमानों से लड़ाई लड़ने की राय न दी।

उधर मुसलमानों ने बद्र में आठ दिन तक ठहर कर दुश्मन का इंतिज़ार किया और इस बीच अपने व्यापार का सामान बेचकर एक दिरहम के सौ दिरहम बनाते रहे। इसके बाद इस शान से मदीना वापस आए कि लड़ाई में आगे बढ़ने की बागडोर उनके हाथ में आ चुकी थी। दिलों पर उनकी धाक बैठ चुकी थी और वातावरण भर उनकी पकड़ मज़बूत हो चुकी थी। यह ग़ज़्वा बद्र, मौअिद, बद्र द्वितीय, बद्र आख़िर और छोटी बद्र के नामों से जाना जाता है।[1]

ग़ज़्वा दूमतुल जन्दल

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बद्र से वापस हुए तो हर ओर सुख-शान्ति थी और पूरे इस्लामी राज्य में ठंडी हवा चल रही थी। अब आप अरब की अन्तिम सीमाओं तक तवज्जोह फ़रमाने के लिए फ़ारिग़ हो चुके थे और इसकी ज़रूरत भी थी, ताकि हालात पर मुसलमानों का ग़लबा और कन्ट्रोल रहे और दोस्त व दुश्मन सभी उसको महसूस करें और मानें।

चुनांचे छोटी बद्र के बाद छः महीने तक आप इत्मीनान से मदीने में ठहरे रहे। इसके बाद आपको सूचनाएं मिलीं कि शाम के क़रीब दूमतुल जन्दल के पास आबाद क़बीले आने-जाने वाले क़ाफ़िलों पर डाके डाल रहे हैं और वहां से गुज़रने वाली चीज़ें लूट लेते हैं। यह भी मालूम हुआ कि उन्होंने मदीने पर हमला करने के लिए एक बड़ा जत्था जुटा लिया है। इन सूचनाओं को देखते हुए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सबाअ बिन अरफ़ता ग़िफ़ारी रज़ि० को मदीने में अपना जानशीं बनाकर एक हज़ार मुसलमानों की फ़ौज के

---

1. इस लड़ाई को सविस्तार जानने के लिए देखिए इब्ने हिशाम, 2/209, 210, ज़ादुल मआद 2/112

साथ कूच फ़रमाया। यह 25 रबीउल अव्वल सन् 05 हि० की घटना है। रास्ता बताने के लिए बनू अज़रा का एक आदमी रख लिया गया, जिसका नाम मज़्कूर था।

इस ग़ज़वे में आपका तरीक़ा था कि आप रात में सफ़र फ़रमाते और दिन में छिपे रहते थे, ताकि दुश्मन पर बिल्कुल अचानक और बेख़बरी में टूट पड़ें। क़रीब पहुंचे तो मालूम हुआ कि वे लोग बाहर निकल गए हैं, इसलिए उनके मवेशियों और चरवाहों पर हल्ला बोल दिया। कुछ हाथ आए, कुछ निकल भागे।

जहां तक दूमतुल जन्दल के निवासियों का ताल्लुक़ है, तो जिसका जिधर सींग समाया, भाग निकला। जब मुसलमान दूमा के मैदान में उतरे, तो कोई न मिला। आपने कुछ दिन ठहर कर इधर-उधर कई दस्ते रवाना किए, लेकिन कोई भी हाथ न आया। आख़िरकार आप मदीना पलट आए।

इस ग़ज़वे में उऐना बिन हिस्न से समझौता भी हुआ। दूमा शामदेश की सीमा पर स्थित एक शहर है। यहां से दमिश्क़ का रास्ता पांच रात का और मदीने का पन्द्रह रात का है।

इन अचानक और निर्णायक क़दमों और सूझ-बूझ और विवेक पर आधारित योजनाओं द्वारा नबी सल्ल० ने इस्लामी राज्य में अम्न व अमान बहाल करने और स्थिति पर क़ाबू पाने में सफलता पाई और समय की चाल का रुख़ मुसलमानों की ओर मोड़ दिया और उन बराबर पाई जाने वाली अन्दरूनी और बाहरी कठिनाइयों की तेज़ी कम की जो हर ओर से उन्हें घेरे हुए थीं, चुनांचे मुनाफ़िक़ चुप और निराश होकर बैठ गए। यहूदियों का एक क़बीला देश-निकाला दे दिया गया। दूसरे क़बीलों ने पड़ोसी होने का हक़ अदा करने का वचन दिया। बद्दू और क़ुरैश ढीले पड़ गए और मुसलमानों को इस्लाम फैलाने और रब्बुल आलमीन के पैग़ाम (सन्देश) का प्रचार करने के मौक़े मिल गए।

ग़ज़वा अहज़ाब

एक साल से ज़्यादा अर्से की लगातार फ़ौजी महिमों और कार्रवाइयों के बाद अरब प्रायद्वीप पर शान्ति छा गई थी और हर ओर सुख-शान्ति का दौर-दौरा था, पर यहूदियों को, जो अपनी दुष्टाओं, षड्यंत्रों और विद्वेष भावनाओं के नतीजे में तरह-तरह के अपमान और रुसवाई का मज़ा चख चुके थे, अब भी होश नहीं आया था। उन्होंने धोखादेही, चालें और षड्यंत्र के अप्रिय परिणामों से कोई सबक़ नहीं सीखा था, चुनांचे ख़ैबर चले जाने के बाद पहले तो उन्होंने यह इन्तिज़ार किया कि देखें मुसलमानों और बुतपरस्तों में जो सैनिक संघर्ष चल रहा है, उसका नतीजा क्या होता है, लेकिन जब देखा कि मुसलमानों के लिए हालात उनके पक्ष में जा रहे हैं, वे फैल रहे हैं, बढ़ रहे हैं और उनका प्रभाव दूर-दूर तक फैल गया है, तो उन्हें जलन हुई।

उन्होंने नए सिरे से साज़िश की और मुसलमानों पर एक करारी चोट लगाने की तैयारी में लग गए, ताकि मुसलमान हमेशा के लिए ख़त्म कर दिए जाएं, लेकिन उन्हें मुसलमानों से सीधे-सीधे टकराने का साहस नहीं था, इसलिए इस मक़्सद के लिए एक बड़ी ही भयानक योजना बनाई।

इसका विवरण यह है कि बनू नज़ीर के बीस सरदार और नेता मक्का में क़ुरैश के पास हाज़िर हुए और उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ लड़ाई पर उभारते हुए अपनी मदद का यक़ीन दिलाया। क़ुरैश ने उनकी बात मान ली। चूंकि वे उहुद के दिन बद्र के मैदान में मुसलमानों के ख़िलाफ़ मैदान में आने का एलान और वायदा करके उसके विरुद्ध काम कर चुके थे, इसलिए उनका विचार था कि अब इस प्रस्तावित लड़ाई द्वारा वे अपनी ख्याति भी वापस ले आएंगे और अपनी कही हुई बात भी पूरी कर देंगे।

इसके बाद यहूदियों की यह टोली बनू ग़तफ़ान के पास गई और क़ुरैश ही की तरह उन्हें भी लड़ाई पर तैयार किया। वे भी तैयार हो गए। फिर इस मंडली ने अरब के बाक़ी क़बीलों में घूम-घूम कर लोगों को लड़ाई पर उभारा और इन क़बीलों के भी बहुत से लोग तैयार हो गए।

ग़रज़ इस तरह यहूदी सियासतकारों (कूटनीतिज्ञों) ने पूरी कामियाबी के साथ कुफ़्र के ताम बड़े-बड़े जत्थों और गिरोहों को नबी सल्ल० और आपकी दावत और मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़का कर लड़ाई के लिए तैयार कर लिया।

इसके बाद तैशुदा प्रोग्राम के मुताबिक़ दक्षिण से क़ुरैश, किनाना और तिहामा

में आबाद दूसरे मित्र क़बीलों ने मदीने की ओर कूच किया। इन सबका प्रधान सेनापति अबू सुफ़ियान था और उनकी तायदाद चार हज़ार थी। यह फ़ौज मर्रज़्ज़हरान पहुंची तो बनू सुलैम भी उसमें आ शामिल हुए।

उधर उसी वक़्त पूरब की ओर से ग़तफ़ानी क़बीले फ़ज़ारा, मुर्रा और अशजअ ने कूच किया। फ़ज़ारा का सेनापति उऐना बिन हिस्न था, बनू मुर्रा का हारिस बिन औफ़ और बनू अशजअ का मिसअर बिन रख़ीला। इनके अलावा बनू असद और दूसरे क़बीलों के बहुत से लोग भी आए थे।

इन सारे क़बीलों ने एक निश्चित समय और निश्चित प्रोग्राम के मुताबिक़ मदीने का रुख़ किया था, इसलिए कुछ दिन के अन्दर-अन्दर मदीने के पास दस हज़ार फ़ौजियों की एक सेना जमा हो गयी। यह इतनी बड़ी सेना थी कि शायद मदीना की पूरी आबादी (औरतों, बच्चों, बूढ़ों और जवानों को मिलाकर भी) इसके बराबर न थी।

अगर हमलावरों का यह ठाठें मारता समुद्र मदीना की चारदीवारी तक अचानक पहुंच जाता, तो मुसलमानों के लिए सख़्त ख़तरनाक साबित होता। कुछ असंभव नहीं, उनकी जड़ कट जाती और उनका पूरा सफ़ाया हो जाता, लेकिन मदीने का नेतृत्व बड़ा चौकस और मुस्तैद नेतृत्व था। उसकी उंगलियां हमेशा हालात की नब्ज़ पर रहती थीं, और वह परिस्थिति का विश्लेषण करके आने वाली घटनाओं का ठीक-ठीक अन्दाज़ा भी लगाता था और उनसे निमटने के लिए सर्वथा उचित क़दम भी उठाता था, चुनांचे कुफ़्फ़ार की भारी फ़ौज ज्यों ही अपनी जगह से हरकत में आई, मदीने के मुख़्बिरों ने अपने नेतृत्व को इसकी सूचना दे दी।

सूचना मिलते ही रसूलुल्लाह सल्ल० ने हाई कमान की मज्लिसे शूरा बुला ली और प्रतिरक्षात्मक योजनाओं पर सलाह-मश्विरा किया।

मज्लिसे शूरा ने सोच-विचार के बाद हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० का एक प्रस्ताव पूर्ण सहमति से मंजूर कर लिया। यह प्रस्ताव हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० ने इन शब्दों में पेश किया था कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! फ़ारस में जब हमारा घेराव किया जाता था, तो हम अपने चारों ओर खाई खोद लेते थे।

यह बड़ी हिक्मत भरी प्रतिरक्षात्मक चाल थी। अरब के लोग इसे जानते न थे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस प्रस्ताव को तुरन्त अमली जामा पहनाते हुए हर दस आदमी को चालीस हाथ खाई खोदने का काम सौंप दिया और मुसलमानों ने पूरा दिल लगाकर भरपूर मेहनत के साथ खाई खोदनी शुरू कर दी।

प्यारे नबी सल्ल० इस काम पर उभारते भी थे और अमली तौर पर इस काम में पूरी तरह शरीक भी रहते थे। चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत सह्ल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हम लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ खाई में थे, लोग खोद रहे थे और हम कंधों पर मिट्टी ढो रहे थे कि (इस बीच) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह! ज़िंदगी तो बस आख़िरत की ज़िंदगी है, पस मुहाजिरों और अंसार को बख़्श दे।'[1]

एक दूसरी रिवायत में हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ंदक़ (खाई) की ओर तश्रीफ़ लाए तो देखा कि मुहाजिरीन व अंसार एक ठंडी सुबह में खोदने का काम कर रहे थे, उनके पास ग़ुलाम न थे कि उनके बजाए ये काम ग़ुलाम कर देते। आपने उनकी मेहनत और भूख देखकर फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह! ज़िंदगी तो बस आख़िरत की ज़िंदगी है, पस मुहाजिरों और अंसार को बख़्श दे।'

अंसार और मुहाजिरों ने उसके जवाब में कहा—

'हम वह है कि हमने हमेशा के लिए, जब तक कि बाक़ी रहें, मुहम्मद सल्ल० से जिहाद पर बैअत की है।'[2]

सहीह बुख़ारी ही में एक रिवायत हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० की भी मिलती है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आप ख़ंदक़ से मिट्टी ढो रहे थे, यहां तक कि धूल ने आपके पेट की खाल ढांक दी थी। आपके बाल बहुत ज़्यादा थे। मैंने (इसी हालत में) आपको अब्दुल्लाह बिन रवाहा के जोशीले पदों को पढ़ते सुना। आप मिट्टी ढोते जाते थे और यह कहते जाते थे—

'ऐ अल्लाह! अगर तू न होता तो हम हिदायत न पाते, न सदक़ा देते, न नमाज़ पढ़ते, पस हम पर सन्तोष उतार और अगर टकराव हो जाए, तो हमारे क़दम जमाए रख। उन्होंने हमारे ख़िलाफ़ लोगों को भड़काया है। अगर उन्होंने कोई फ़ित्ना चाहा, तो हम हरगिज़ सर न झुकाएंगे।'

हज़रत बरा फ़रमाते हैं कि अन्तिम शब्द खींच कर कहते थे।

---

1. सहीह बुख़ारी बाब ग़ज़वतुल ख़ंदक़, 2/588
2. सहीह बुख़ारी 1/397, 2/588

एक रिवायत में अन्तिम पद इस तरह है—

'उन्होंने हम पर ज़ुल्म किया है और अगर वे हमें फ़िले में डालना चाहेंगे, तो हम हरगिज़ सर न झुकाएंगे।'[1]

मुसलमान एक ओर इस उत्साह के साथ काम कर रहे थे, तो दूसरी ओर इतने ज़ोर की भूख सहन कर रहे थे कि उसे सोच कर ही कलेजा मुंह को आता है।

चुनांचे हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि (ख़ंदक़ खोदने वालों) के पास दो पसर जौ लाया जाता था और उसे हीक देती हुई चिकनाई के साथ बनाकर लोगों के सामने रख दिया जाता था, लोग भूखे होते थे, इसलिए हलक़ के नीचे उतार लेते हैं हालांकि वह बे-लज़्ज़त होता था। इससे महक फूटती रहती थी।[2]

अबू तलहा कहते हैं कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भूख की शिकायत की और अपने पेट खोलकर एक-एक पत्थर दिखाए, तो रसूल सल्ल० ने अपना पेट खोलकर दो पत्थर दिखलाया।[3]

ख़ंदक़ की खुदाई के दौरान नुबूवत की नई निशानियां भी सामने आईं। सहीह बुख़ारी की रिवायत है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० ने नबी सल्ल० के अन्दर कड़ी भूख की निशानियां देखीं, तो बकरी का एक बच्चा ज़िब्ह किया और उनकी बीवी ने एक साअ (लगभग ढाई किलो) जौ पीसा, फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने राज़दारी के साथ खुफ़िया तौर पर गुज़ारिश की कि अपने कुछ साथियों के साथ तशरीफ़ लाएं, लेकिन नबी सल्ल० तमाम ख़ंदक़ वालों को जिनकी तायदाद एक हज़ार थी, साथ लेकर चल पड़े।

सब लोगों ने उसी थोड़े से खाने को पेट भरकर खाया, फिर भी गोश्त की हांडी अपनी हालत पर बाक़ी रही और भरी की भरी जोश मारती रही और गूंधा हुआ आटा अपनी हालत पर बाक़ी रहा। उससे रोटी पकाई जाती रही।[4]

हज़रत नोमान बिन बशीर की बहन ख़ंदक़ के पास दो पसर खजूर लेकर आईं कि उनके भाई और मामूं खा लेंगे, लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल० के पास से गुज़रीं तो आपने उनसे वह खजूर मांग ली और एक कपड़े के ऊपर बिखेर दी, फिर ख़ंदक़ वालों को दावत दी। ख़ंदक़ वाले उसे खाते गए और वह बढ़ती गई, यहां तक कि सारे ख़ंदक़ वाले खा-खाकर चले गए और खजूर थी कि कपड़ों के

---

1. सहीह बुख़ारी, 2/589
2. वही 2/588
3. जामेअ तिर्मिज़ी, मिश्कातुल मसाबीह 2/448
4. यह घटना सहीह बुख़ारी में रिवायत की गई है, देखिए 2/588, 589

किनारों से बाहर गिर रही थी।[1]

इन्हीं दिनों में इन दोनों घटनाओं से कहीं बढ़कर एक और घटना घटी, जिसे इमाम बुख़ारी ने हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत की है। हज़रत जाबिर का बयान है कि हम लोग खंदक़ खोद रहे थे कि एक बड़ा पत्थर मिला, टुकड़ा आड़े आ गया। लोग नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि यह चट्टाननुमा टुकड़ा खंदक़ में रुकावट बन गया है। आपने फ़रमाया, मैं उतर रहा हूं। इसके बाद आप उठे। आपने पेट पर पत्थर बांधा हुआ था—हमने तीन दिन से कुछ चखा न था—फिर नबी सल्ल० ने कुदाल लेकर मारा, तो वह चट्टाननुमा टुकड़ा भुरभुरे ढेर में बदल गया।[2]

हज़रत बरा रज़ि० का बयान है कि खंदक़ (की खुदाई) के मौक़े पर कुछ हिस्सों में एक बड़ी चट्टान आ पड़ी, जिससे कुदाल उचट जाती थी, कुछ टूटता ही न था। हमने रसूलुल्लाह से इसकी शिकायत की। आप तशरीफ़ लाए, कुदाल ली और बिस्मिल्लाह कहकर एक चोट मारी, (तो एक टुकड़ा टूट गया) और फ़रमाया, अल्लाहु अक्बर! मुझे शामदेश की कुंजियां दी गई हैं। अल्लाह की क़सम! मैं इस वक़्त वहां के लाल महलों को देख रहा हूं।

फिर दूसरी चोट लगाई तो एक और टुकड़ा कट गया और फ़रमाया, अल्लाहु अक्बर! मुझे फ़ारस दिया गया है। अल्लाह की क़सम! मैं इस वक़्त मदाइन का सफ़ेद महल देख रहा हूं।

फिर तीसरी चोट लगाई और फ़रमाया, बिस्मिल्लाह! तो बाक़ी चट्टान भी कट गई, फिर फ़रमाया अल्लाहु अक्बर! मुझे यमन की कुंजियां दी गई हैं। अल्लाह की क़सम! मैं इस वक़्त अपनी इस जगह से सनआ के फाटक देख रहा हूं।[3]

इब्न इस्हाक़ ने ऐसी ही रिवायत हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु से ज़िक्र की है।[4]

चूंकि मदीना उत्तर के अलावा बाक़ी दिशाओं से हर्रे (लावे की चट्टानों) पहाड़ों और खजूर के बाग़ों से घिरा हुआ है और नबी सल्ल० एक माहिर और

---

1. इब्ने हिशाम, 2/218
2. सहीह बुख़ारी 2/588
3. सुनने नसई 2/56, मुस्नद अहमद। ये शब्द नसई के नहीं हैं और नसई में 'सहाबा में से किसी एक व्यक्ति' का उल्लेख है।
4. इब्ने हिशाम 2/219

अनुभवी फ़ौजी की हैसियत से यह जानते थे कि मदीना पर इतनी बड़ी फ़ौज का हमला केवल उत्तर ही से हो सकता है। इसलिए आपने सिर्फ़ उत्तर दिशा ही में ख़ंदक़ खुदवाई।

मुसलमानों ने ख़ंदक़ खोदने का काम बराबर जारी रखा। दिन भर खुदाई करते और शाम को घर पलट आते, यहां तक कि मदीने की दीवारों तक कुफ़्फ़ार की भारी फ़ौज के पहुंचने से पहले निश्चित प्रोग्राम के मुताबिक़ ख़ंदक़ तैयार हो गई।[1]

उधर क़ुरैश अपनी चार हज़ार की फ़ौज लेकर मदीना पहुंचे तो रौमा, जर्फ़ और ज़ग़ाबा के बीच मजमउल अस्याल में पड़ाव डाला और दूसरी ओर ग़तफ़ान और उनके नज्दी साथी छः हज़ार की फ़ौज लेकर आये, तो उहुद के पूर्वी किनारे पर स्थित ज़ंब नक़मी में पड़ाव डाल दिया।

'और जब ईमान वालों ने इन जत्थों को देखा, तो कहा, यह तो वही चीज़ है जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वायदा किया था और अल्लाह और उसके रसूल ने सच ही फ़रमाया था और इस (हालत) ने उनके ईमान और आज्ञापालन-भाव को और बढ़ा दिया।' (33/22)

लेकिन मुनाफ़िक़ों और कमज़ोर नफ़्स लोगों की नज़र उस फ़ौज पर पड़ी तो उनके दिल दहल गए—

'और जब मुनाफ़िक़ और वे लोग जिनके दिलों में बीमारी है, कह रहे थे कि अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे जो वायदा किया था, वह मात्र धोखा था।' (33/12)

बहरहाल उस फ़ौज से मुक़ाबले के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन हज़ार मुसलमानों की फ़ौज लेकर तशरीफ़ लाए और सलअ पहाड़ी की ओर पीठ करके क़िलाबन्दी की शक्ल अख़्तियार कर ली। सामने ख़ंदक़ थी, जो मुसलमानों और कुफ़्फ़ार के बीच रुकावट थी। मुसलमान का कोड शब्द यह था 'हामीम! इनकी मदद न की जाए।'

मदीने का प्रबन्ध हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम के हवाले किया गया था और औरतों और बच्चों को मदीने के क़िलों और गढ़ियों में सुरक्षित कर दिया गया था।

जब मुश्रिक हमले की नीयत से मदीने की ओर बढ़े तो क्या देखते हैं कि एक चौड़ी-सी ख़ंदक़ उनके और मदीना के बीच रोक बन गई है। मजबूर होकर उन्हें घेराव डालना पड़ा, हालांकि वे घरों से चलते वक़्त इसके लिए तैयार होकर

---

1. इब्ने हिशाम 3/220, 221

नहीं आए थे, क्योंकि प्रतिरक्षा की यह योजना, ख़ुद उनके कहने के मुताबिक़, एक ऐसी चाल थी जिसे अरब जानते ही न थे, इसलिए उन्होंने इस मामले को सिरे से अपने हिसाब में दाख़िल ही न किया था।

मुश्रिक ख़ंदक़ के पास पहुंच कर ग़ुस्से में भरे हुए चक्कर काटने लगे। उन्हें ऐसे कमज़ोर बिन्दु की खोज थी जहां से वे उतर सकें।

इधर मुसलमान उनकी चलत-फिरत पर पूरी-पूरी नज़र रखे हुए थे और उन पर तीर बरसाते रहते थे, ताकि उन्हें ख़ंदक़ के क़रीब आने की हिममत न हो, वे इसमें न कूद सकें और न मिट्टी डालकर पार करने के लिए रास्ता बना सकें।

उधर क़ुरैश के घुड़सवारों को गवारा न था कि ख़ंदक़ के पास घेराव के नतीजों के इंतिज़ार में वे बे-फ़ायदा पड़े रहें। यह उनकी आदत और शान के ख़िलाफ़ बात थी। चुनांचे उनकी एक टीम ने, जिनमें अम्र बिन अब्दे वुद्द, इक्रिमा बिन अबू जह्ल और ज़ुरार बिन ख़त्ताब वग़ैरह थे एक तंग जगह से ख़ंदक़ पार कर ली और उनके घोड़े ख़ंदक़ और सलअ के बीच चक्कर काटने लगे।

इधर से हज़रत अली रज़ि० कुछ मुसलमानों के साथ निकले और जिस जगह से उन्होंने घोड़े कुदाए थे, उसे क़ब्ज़े में लेकर उनकी वापसी का रास्ता बन्द कर दिया। इस पर अम्र बिन अब्दे वुद्द ने लड़ने के लिए ललकारा। हज़रत अली रज़ि० दो-दो हाथ करने के लिए मुक़ाबले में पहुंचे और एक ऐसा जुमला फेंका कि वह गुस्से में आकर घोड़े से कूद पड़ा और उसकी कूचें काटकर, चेहरा मारकर हज़रत अली के आमने-सामने आ गया। बड़ा बहादुर और शहज़ोर था। दोनों में ज़ोरदार टक्कर हुई। एक ने दूसरे पर बढ़-चढ़कर वार किए, आख़िर में हज़रत अली रज़ि० ने उसका काम तमाम कर दिया। बाक़ी मुश्रिक भाग कर ख़ंदक़ पार चले गए। वे इतने आतंकित थे कि इक्रिमा ने भागते हुए अपना नेज़ा भी छोड़ दिया।

मुश्रिकों ने किसी-किसी दिन ख़ंदक़ पार करने या उसे पाट कर रास्ता बनाने की बड़ी ज़बरदस्त कोशिश की, लेकिन मुसलमानों ने बड़ी अच्छी तरह उन्हें दूर रखा और उन्हें इस तरह तीरों से छीला और ऐसी हिम्मत से उनकी तीरंदाज़ी का मुक़ाबला किया, कि उनकी हर कोशिश नाकाम हो गई।

इसी तरह के ज़ोरदार मुक़ाबलों के बीच अल्लाह के रसूल सल्ल० और सहाबा किराम रज़ि० की कुछ नमाज़ें भी फ़ौत हो गई थीं।

चुनांचे बुख़ारी-मुस्लिम दोनों में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की गई है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ख़ंदक़ के दिन आए और कुफ़्फ़ार को सख़्त-सुस्त कहने लगे कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आज मैं बड़ी

मुश्किल से सूरज डूबते-डूबते नमाज़ पढ़ सका।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, और मैंने तो अल्लाह की क़सम! अभी नमाज़ पढ़ी ही नहीं है। इसके बाद हम लोग नबी सल्ल० के साथ बुतहान में उतरे। आपने नमाज़ के लिए वुज़ू फ़रमाया और हमने भी वुज़ू किया। फिर आपने अस्र की नमाज़ पढ़ी। यह सूरज डूब चुकने की बात है। इसके बाद मग़्रिब की नमाज़ पढ़ी।[1]

नबी सल्ल० को इस नमाज़ के फ़ौत होने का इतना मलाल था कि आपने मुश्रिकों के लिए बद-दुआ कर दी। चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने ख़ंदक़ के दिन फ़रमाया, अल्लाह इन मुश्रिकों समेत इनके घरों और क़ब्रों को आग से भर दे। जिस तरह इन्होंने हमको बीच की नमाज़ को अदा करने से रोके रखा, यहां तक कि सूरज डूब गया।[2]

मुस्नद अहमद और मुस्नद शाफ़ई में रिवायत है कि मुश्रिकों ने आपको ज़ुहर, अस्र, मग़्रिब और इशा की नमाज़ों के वक़्त लड़ाई में लगाए रखा, चुनांचे आपने ये सारी नमाज़ें इकट्ठा पढ़ीं।

इमाम नववी फ़रमाते हैं कि इन रिवायतों में मेल की शक्ल यह है कि ख़ंदक़ की लड़ाई का सिलसिला कई दिन तक जारी रहा। पस किसी दिन एक स्थिति का सामना करना पड़ा और किसी दिन दूसरी।[3]

यहीं से यह बात भी निकलती है कि मुश्रिकों की ओर से ख़ंदक़ पार करने की कोशिश और मुसलमानों की ओर से लगातार प्रतिरक्षा कई दिन तक चलती रही, मगर चूंकि दोनों फ़ौजों के बीच ख़ंदक़ रोक थी, इसलिए आमने-सामने की ख़ूनी लड़ाई की नौबत न आ सकी, बल्कि सिर्फ़ तीरंदाज़ी होती रही।

इसी तीरंदाज़ी में दोनों फ़रीक़ों के कुछ लोग मारे भी गए, लेकिन उन्हें उंगलियों पर गिना जा सकता है यानी छः मुसलमान और दस मुश्रिक, जिनमें से एक या दो आदमी तलवार से क़त्ल किए गए थे।

इसी तीरंदाज़ी के दौरान हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को भी एक तीर लगा, जिससे उनके दस्ते की शह रग कट गई। उन्हें हबान बिन अरक़ा नामी एक क़ुरैशी मुश्रिक का तीर लगा था।

---

1. सहीह बुख़ारी 2/590
2. सहीह बुख़ारी 2/590
3. मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह पृ० 287, शरह मुस्लिम, नववी 1/227

हज़रत साद ने (घायल होने के बाद) दुआ की कि ऐ अल्लाह ! तू जानता है कि जिस क़ौम ने तेरे रसूल को झुठलाया और उन्हें निकाल बाहर किया, उनसे तेरी राह में जिहाद करना मुझे जितना प्रिय है, उतना किसी और क़ौम से नहीं है। ऐ अल्लाह ! मैं समझता हूं कि अब तूने हमारी और उनकी लड़ाई को आख़िरी मरहले तक पहुंचा दिया है, पस अगर क़ुरैश की लड़ाई कुछ बाक़ी रह गई हो, तो मुझे उनके लिए बाक़ी रख कि मैं उनसे तेरी राह में जिहाद करूं और अगर तूने लड़ाई ख़त्म कर दी है, तो इसी घाव को जारी करके इसे मेरी मौत की वजह बना दे ।[1]

उनकी इस दुआ का आख़िरी टुकड़ा यह था (लेकिन) मुझे मौत न दे, यहां तक कि बनू क़ुरैज़ा के मामले में मेरी आंखों को ठंडक हासिल हो जाए ।[2]

बहरहाल एक ओर मुसलमान लड़ाई के मोर्चे पर इन परेशानियों को सहन कर रहे थे, तो दूसरी ओर षड्यंत्र के सांप अपने बिलों में हरकत कर रहे थे और इस कोशिश में थे कि मुसलमानों के देह में अपना विष उतार दें।

चुनांचे बनू नज़ीर का सबसे बड़ा अपराधी, हुइ बिन अख़तब, बनू क़ुरैज़ा के मुहल्ले में आया और उनके सरदार काब बिन असद क़ुरज़ी के पास हाज़िर हुआ। यह काब बिन असद वही आदमी है जो बनू क़ुरैज़ा की ओर से वायदा-इक़रार करने का अधिकारी था और जिसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह समझौता किया था कि लड़ाई के मौक़ों पर आपकी मदद करेगा। (जैसा कि पीछे के पन्नों में गुज़र चुका है।)

हुइ ने आकर उसके दरवाज़े पर दस्तक दी, तो उसने दरवाज़ा अन्दर से बंद कर लिया। मगर हुइ उससे ऐसी-ऐसी बातें करता रहा कि आख़िरकार उसने दरवाज़ा खोल ही दिया।

हुइ ने कहा, ऐ काब ! मैं तुम्हारे पास ज़माने की इज़्ज़त और चढ़ा हुआ समुद्र लेकर आया हूं। मैंने क़ुरैश को उसके सरदारों और नेताओं सहित लाकर रूमा के मजमउल अस्याल में उतार दिया है और बनू ग़तफ़ान से उनके सरदारों और नेताओं समेत उहुद के पास ज़म्ब नक़मी में पड़ाव डलवा दिया है। इन लोगों ने मुझसे वायदा-इक़रार किया है कि वे मुहम्मद (सल्ल०) और उनके साथियों का पूरा सफ़ाया किए बिना यहां से न टलेंगे।

काब ने कहा, ख़ुदा की क़सम ! तुम मेरे पास ज़माने की ज़िल्लत और बरसा हुआ बादल लेकर आए हो जो सिर्फ़ गरज-चमक रहा है, पर उसमें कुछ रह नहीं

1. सहीह बुख़ारी, 2/591
2. इब्ने हिशाम 2/227

गया है। हुइ! तुझ पर अफ़सोस! मुझे मेरे हाल पर छोड़ दे। मैंने मुहम्मद में सच्चाई और वफ़ादारी के सिवा कुछ नहीं देखा है।

मगर हुइ उसको बराबर चोटी और कंधे में बटता और लपेटता रहा, यहां तक कि उसे राम कर ही लिया। अलबत्ता उसे इस मक़्सद के लिए वायदा व इक़रार करना पड़ा कि अगर क़ुरैश ने मुहम्मद को ख़त्म किए बग़ैर वापसी की राह ली, तो मैं भी तुम्हारे साथ तुम्हारे क़िले में दाख़िल हो जाऊंगा, फिर जो अंजाम तुम्हारा होगा, वही मेरा भी होगा।

हुइ के इस क़ौल-क़रार के बाद काब बिन असद ने रसूलुल्लाह सल्ल० से किया हुआ समझौता तोड़ दिया और मुसलमानों के साथ तै की हुई ज़िम्मेदारियों से बरी होकर उनके ख़िलाफ़ मुश्रिकों की ओर से लड़ाई में शरीक हो गया।[1]

इसके बाद क़ुरैज़ा के यहूदी अमली तौर पर जंगी कार्रवाइयों में लग गए।

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि हज़रत सफ़िया बिन्त अब्दुल मुत्तलिब रज़ि०, हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि० के फ़ारेअ नामी क़िले के अन्दर थीं। हज़रत हस्सान औरतों और बच्चों के साथ वहीं थे।

हज़रत सफ़िया रज़ि० कहती हैं कि हमारे पास से एक यहूदी गुज़रा और क़िले का चक्कर काटने लगा। यह उस वक़्त की बात है, जब बनू क़ुरैज़ा रसूलुल्लाह सल्ल० से किया हुआ वायदा-क़रार तोड़कर आपसे लड़ने पर उतर आए थे और हमारे और उनके दर्मियान कोई न था, जो हमारी रक्षा करता. . . रसूलुल्लाह सल्ल० मुसलमानों समेत दुश्मन से मुक़ाबला करने में लगे हुए थे। अगर इस पर कोई हमलावर हो जाता, तो आप उन्हें छोड़कर आ नहीं सकते थे। इसलिए मैंने कहा, ऐ हस्सान! यह यहूदी, जैसा कि आप देख रहे हैं, क़िले का चक्कर लगा रहा है और मुझे ख़ुदा की क़सम! डर है कि यह बाक़ी यहूदियों को भी हमारी कमज़ोरी से आगाह कर देगा। उधर रसूलुल्लाह सल्ल० और सहाबा किराम रज़ि० इस तरह फंसे हुए हैं कि हमारी मदद को नहीं आ सकते, इसलिए आप जाइए और उसे क़त्ल कर दीजिए।

हज़रत हस्सान ने कहा, अल्लाह की क़सम! आप जानती ही हैं कि मैं इस काम का आदमी नहीं।

हज़रत सफ़िया कहती हैं, अब मैंने ख़ुद अपनी कमर बांधी, फिर स्तून की एक लकड़ी ली और इसके बाद क़िले से उतरकर उस यहूदी के पास पहुंची और उसे लकड़ी मार-मारकर उसका ख़ात्मा कर दिया।

---

1. इब्ने हिशाम 2/220, 221

इसके बाद क़िले में वापस आई और हस्सान से कहा, जाइए, इसका हथियार और सामान उतार लीजिए, चूंकि वह मर्द है, इसलिए मैंने उसका हथियार नहीं उतारा।

हस्सान ने कहा, मुझे उसके हथियार और सामान की कोई ज़रूरत नहीं।[1]

सच तो यह है कि मुसलमान बच्चों और औरतों की हिफ़ाज़त पर रसूलुल्लाह सल्ल० की फूफी के इस वीरतापूर्ण कार्य का बड़ा गहरा और अच्छा असर पड़ा। इस कार्रवाई से शायद यहूदियों ने समझा कि इस क़िले और गढ़ियों में भी मुसलमानों की रक्षात्मक सेना मौजूद है, हालांकि वहां कोई फ़ौज न थी, इसलिए यहूदियों को दोबारा इस क़िस्म की जुर्रात न हुई। अलबत्ता वे बुतपरस्त हमलावरों के साथ अपने वायदे व क़रार के मुताबिक़ उन्हें बराबर रसद पहुंचाते रहे, यहां तक कि मुसलमानों ने उनकी रसद के बीस ऊंटों पर क़ब्ज़ा भी कर लिया।

बहरहाल यहूदियों के वचन-भंग करने की ख़बर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम हुई तो आपने तुरन्त उसकी खोज की ओर तवज्जोह फ़रमाई, ताकि बनू क़ुरैज़ा के इरादे मालूम हो जाएं और उसकी रोशनी में फ़ौजी दृष्टिकोण से जो क़दम उठाना मुनासिब हो, उसे उठाया जाए।

चुनांचे आपने इस ख़बर की पड़ताल के लिए हज़रत साद बिन मुआज़, साद बिन उबादा, अब्दुल्लाह बिन रवाहा और ख़्वात बिन जुबैर रज़ि० को रवाना फ़रमाया और हिदायत की कि जाओ, देखो, बनी क़ुरैज़ा के बारे में जो कुछ मालूम हुआ है, वह वाक़ई सही है या नहीं। अगर सही है, तो वापस आकर सिर्फ़ मुझे बता देना और वह भी इशारों-इशारों में, लोगों के बाज़ू मत तोड़ना और अगर वे वायदा-क़रार पर क़ायम रहें, तो फिर लोगों के दर्मियान एलानिया उसका ज़िक्र कर देना।

जब ये लोग बनू क़ुरैज़ा के क़रीब पहुंचे, तो उन्हें बड़ी ढिठाई और दुष्टता पर उतारू पाया। उन्होंने एलानिया गालियां बकीं, दुश्मनी की बातें कीं और रसूलुल्लाह सल्ल० की तौहीन की। कहने लगे, अल्लाह का रसूल कौन? हमारे और मुहम्मद के बीच न क़ौल है न क़रार।

यह सुनकर वे लोग वापस आ गए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में पहुंचकर स्थिति की ओर इशारा करते हुए सिर्फ़ इतना कहा, अज़्ल व क़ारा। उद्देश्य यह था कि जिस तरह अज़्ल व क़ारा ने रजीअ के लोगों के साथ ग़द्दारी की थी, उसी तरह यहूदी भी ग़द्दारी पर तुले हुए हैं।

---

1. इब्ने हिशाम 2/228

इसके बावजूद कि इन सहाबा किराम ने सच छिपाने की कोशिश की, लेकिन आम लोगों को स्थिति का पता लग गया और इस तरह एक भयानक ख़तरा उनके सामने आ खड़ा हुआ।

सच तो यह है कि उस वक़्त मुसलमान बड़ी संगीन परिस्थितियों से गुज़र रहे थे। पीछे बनू क़ुरैज़ा थे, जिनका हमला रोकने के लिए उनके और मुसलमानों के बीच में कोई न था? आगे मुश्रिकों की भारी फ़ौज थी, जिन्हें छोड़कर हटना मुम्किन न था, फिर मुसलमान बच्चे और औरतें थीं जो किसी सुरक्षा के बिना ग़द्दार यहूदियों के क़रीब ही थे। इसलिए लोगों में बड़ी बेचैनी पैदा हुई, जिसकी स्थिति इस आयत में बयान की गई है—

'और निगाहें टेढ़ी हो गईं, दिल हलक़ में आ गए और तुम लोग अल्लाह के साथ तरह-तरह के गुमान करने लगे। उस वक़्त ईमान वालों की आज़माइश की गई और उन्हें बहुत तेज़ झिंझोड़ा गया।' (33/101)

फिर इसी मौक़े पर कुछ मुनाफ़िक़ों के निफ़ाक़ ने भी सर निकाला। चुनांचे वे कहने लगे कि मुहम्मद तो हमसे वायदे करते थे कि हम क़ैसर व किसरा के ख़ज़ाने खाएंगे और यहां यह हालत है कि पेशाब-पाख़ाने के लिए निकलने में भी जान की ख़ैर नहीं।

कुछ और मुनाफ़िक़ों ने अपनी क़ौम के बड़ों के सामने यहां तक कहा कि हमारे घर दुश्मन के सामने खुले पड़े हैं। हमें इजाज़त दीजिए कि हम अपने घरों को वापस चले जाएं, क्योंकि हमारे घर शहर से बाहर हैं।

नौबत यहां तक पहुंच चुकी थी कि बनू सलमा के क़दम उखड़ रहे थे और वे पसपाई की सोच रहे थे। इन्हीं लोगों के बारे में अल्लाह ने इर्शाद फ़रमाया है—

'और जब मुनाफ़िक़ और वे लोग जिनके दिलों में बीमारी है, कह रहे थे कि हमसे अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ने जो वायदा किया है, वह फ़रेब के सिवा कुछ नहीं और जब उनकी एक जमाअत ने कहा कि ऐ यसरिब वालो! तुम्हारे लिए ठहरने की गुंजाइश नहीं, इसलिए वापस चलो और उनका एक फ़रीक़ नबी से इजाज़त मांग रहा था, कहता था, हमारे घर ख़ाली पड़े हैं, हालांकि वे ख़ाली नहीं पड़े थे, ये लोग सिर्फ़ फ़रार चाहते थे।' (33 : 12-13)

एक ओर फ़ौज का यह हाल था, दूसरी ओर रसूलुल्लाह सल्ल० की यह स्थिति थी कि आपने बनू क़ुरैज़ा के वचन-भंग की ख़बर सुनकर अपना सर और चेहरा कपड़े से ढक लिया और देर तक चित लेटे रहे। इस स्थिति को देखकर लोगों की बेचैनी और ज़्यादा बढ़ गई, लेकिन इसके बाद आप पर आशा की लहर छा गई। और आप अल्लाहु अक्बर कहते हुए खड़े हुए और फ़रमाया,

मुसलमानो ! अल्लाह की मदद और जीत की ख़ुशख़बरी सुन लो।

इसके बाद आपने पेश आने वाले हालात से निमटने का प्रोग्राम बनाया और इसी प्रोग्राम के एक हिस्से के तौर पर मदीना की निगरानी के लिए फ़ौज का एक हिस्सा रवाना फ़रमाते रहे, ताकि मुसलमानों को ग़ाफ़िल देखकर यहूदियों की ओर से औरतों और बच्चों पर अचानक कोई हमला न हो जाए।

लेकिन इस मौक़े पर एक निर्णायक क़दम उठाने की ज़रूरत थी, जिसके ज़रिए दुश्मन के अलग-अलग गिरोहों को एक दूसरे से बे-ताल्लुक़ कर दिया जाए। इस मक़्सद के लिए आपने सोचा कि बनू ग़तफ़ान के दोनों सरदारों उऐना बिन हिस्न और हारिस बिन औफ़ से मदीना की एक तिहाई पैदावार पर समझौता कर लें, ताकि ये दोनों सरदार अपने-अपने क़बीले लेकर वापस चले जाएं और मुसलमान अकेले क़ुरैश पर जिनकी ताक़त का बार-बार अन्दाज़ा लगाया जा चुका था, भारी चोट लगाने के लिए फ़ारिग़ हो जाएं।

इस तज्वीज़ पर कुछ बातें भी हुईं, पर जब आपने हज़रत साद बिन मुआज़ और हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० से इस तज्वीज़ के बारे में मश्विरा किया तो उन दोनों ने एक ज़ुबान होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर अल्लाह ने आपको इसका हुक्म दिया है तो तब बिना कुछ कहे-सुने हम इसे मान लेते हैं और अगर आप सिर्फ़ हमारे लिए ऐसा करना चाहते हैं, तो हमें इसकी ज़रूरत नहीं। जब हम लोग और ये लोग दोनों शिर्क और बुतपरस्ती कर रहे थे, तब तो वे लोग मेज़बानी (सत्कार) या क्रय-विक्रय के अलावा किसी और तरीक़े से किसी एक दाने का भी लालच नहीं कर सकते थे, तो भला अब जबकि अल्लाह ने हमें इस्लाम जैसी नेमत दी है और आपके ज़रिए इज़्ज़त बख़्शी है, हम इन्हें अपना माल देंगे ? ख़ुदा क़ी क़सम, हम इन्हें सिर्फ़ अपनी तलवार देंगे।

आपने इन दोनों की राय को दुरुस्त पाया और फ़रमाया कि जब मैंने देखा कि सारा अरब एक कमान खींचकर तुम पर पिल पड़ा है, तो केवल तुम्हारे लिए मैंने यह काम करना चाहा था।

फिर अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि दुश्मन में फूट पड़ गई। उनका मोर्चा टूट गया। उनकी धार कुंठित हो गई।

हुआ यह कि बनू ग़तफ़ान के एक साहब, जिनका नाम नुऐम बिन मसऊद बिन आमिर अशजई था, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं मुसलमान हो गया हूं, लेकिन मेरी क़ौम को मेरे इस्लाम लाने का पता नहीं है, इसलिए आप मुझे कोई हुक्म फ़रमाइए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम सिर्फ़ एक आदमी हो (इसलिए कोई फ़ौजी क़दम नहीं उठा सकते, अलबत्ता) जितना संभव हो, उनमें फूट डालो, और उनका मनोबल गिराओ, क्योंकि लड़ाई तो चालबाज़ी का नाम है।

इस पर हज़रत नुऐम तुरन्त ही बनू क़ुरैज़ा के पास पहुंचे। अज्ञानता-युग में उनसे उनका बड़ा मेल-जोल था। वहां पहुंचकर उन्होंने कहा, आप लोग जानते हैं कि मुझे आप लोगों से मुहब्बत और ख़ास ताल्लुक़ है।

उन्होंने कहा, जी हां।

नुऐम ने कहा, अच्छा तो सुनिए कि क़ुरैश का मामला आप लोगों से अलग है। यह इलाक़ा आपका अपना इलाक़ा है। यहां आपका घर-बार है, माल व दौलत है, बाल-बच्चे हैं, आप इन्हें छोड़कर कहीं और नहीं जा सकते, मगर जब क़ुरैश और ग़तफ़ान मुहम्मद से लड़ने आए, तो आपने मुहम्मद के ख़िलाफ़ उनका साथ दिया। ज़ाहिर है, उनका यहां न घर-बार है, न माल व दौलत है, न बाल-बच्चे हैं, इसलिए उन्हें मौक़ा मिला तो क़दम उठाएंगे, वरना बोरिया-बिस्तर बांधकर चल देंगे। फिर आप लोग होंगे और मुहम्मद होंगे, इसलिए वह जैसे चाहेंगे, बदला लेंगे।

इस पर बनू क़ुरैज़ा चौंके और बोल, नुऐम! बताइए, अब क्या किया जा सकता है?

उन्होंने कहा, देखिए! क़ुरैश जब तक आप लोगों को अपने कुछ आदमी बंधक के तौर पर न दें, आप उनके साथ लड़ाई में न शरीक हों।

क़ुरैज़ा ने कहा, आपने बहुत मुनासिब राय दी है।

इसके बाद हज़रत नुऐम सीधे क़ुरैश के पास पहुंचे और बोले, आप लोगों से मुझे जो मुहब्बत और ख़ैरख़्वाही का जज़्बा है, उसे तो आप जानते ही हैं?

उन्होंने कहा, जी हां।

हज़रत नुऐम ने कहा, अच्छा तो सुनिए कि यहूदियों ने मुहम्मद और उनके साथियों से जो अपने क़ौल व क़रार तोड़े थे, इस पर वे लज्जित हैं और अब उनमें यह बात चल रही है कि वे (यहूदी) आप लोगों से कुछ बंधक लेकर उन (मुहम्मद) के हवाले कर देंगे और फिर आप लोगों के ख़िलाफ़ मुहम्मद से अपना मामला मज़बूत करेंगे, इसलिए अगर वे बंधक मांगें तो आप हरगिज़ न दें।

इसके बाद ग़तफ़ान के पास भी जाकर यही बात दोहराई। (उनके भी कान खड़े हो गए)

इसके बाद जुमा (शुक्रवार) और सनीचर के बीच की रात को क़ुरैश ने

यहूदियों के पास यह सन्देश भेजा कि हमारा ठहराव किसी सही और उचित जगह पर नहीं है, घोड़े और ऊंट मर रहे हैं, इसलिए उधर से आप और इधर से हम लोग उठें और मुहम्मद पर हमला कर दें।

लेकिन यहूदियों ने जवाब में कहलाया कि आज सनीचर का दिन है और आप जानते हैं कि हमसे पहले जिन लोगों ने इस दिन के बारे में शरीअत के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी की थी, उन्हें कैसे अज़ाब से दोचार होना पड़ा था। इसके अलावा आप लोग जब तक अपने कुछ आदमी हमें बंधक के रूप में न दे दें, हम लड़ाई में शरीक न होंगे।

दूत जब यह जवाब लेकर वापस आए, तो क़ुरैश और ग़तफ़ान ने कहा, अल्लाह की क़सम! नुऐम ने सच ही कहा था। चुनांचे उन्होंने यहूदियों को कहला भेजा कि ख़ुदा की क़सम! हम आपको कोई आदमी न देंगे, बस, आप लोग हमारे साथ ही निकल पड़ें और (दोनों ओर से) मुहम्मद पर हल्ला बोल दिया जाए।

यह सुनकर क़ुरैज़ा ने आपस में कहा, अल्लाह की क़सम! नुऐम! तुमने सच ही कहा था, इस तरह दोनों फ़रीक़ का एतबार एक दूसरे से उठ गया। उनकी सफ़ों में फूट पड़ गई और उनके हौसले टूट गए।

इस बीच मुसलमान अल्लाह से यह दुआ कर रहे थे—

'ऐ अल्लाह! हमारी परंदापोशी फ़रमा और हमें ख़तरों से बचा ले।'

और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ फ़रमा रहे थे—

'ऐ अल्लाह! किताब उतारने वाले और जल्द हिसाब लेने वाले, इन फ़ौजों को पसपा कर। ऐ अल्लाह! इन्हें परास्त कर और झिंझोड़कर रख दे।'[1]

आख़िरकार अल्लाह ने अपने रसूल सल्ल० और मुसलमानों की दुआएं सुन लीं, चुनांचे मुश्रिकों की सफ़ों में फूट पड़ जाने और बद-दिली और पस्तहिम्मती आ जाने के बाद अल्लाह ने उन पर तेज़ हवाओं का तूफ़ान भेज दिया, जिसने उनके ख़ेमे उखाड़ दिए, हांडियां उलट दीं, ख़ेमों की खूंटियां उखाड़ दीं, किसी चीज़ को क़रार न रहा और उसके साथ फ़रिश्तों की फ़ौज भेज दी, जिसने उन्हें हिला डाला और उनके दिलों में रौब और डर डाल दिया।

इसी ठंडी और कड़कड़ाती रात में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि० को कुफ़्फ़ार की ख़बर लाने के लिए भेजा, वह उनके मोर्चे में पहुंचे, तो वहां ठीक यही हालत पाई जा रही थी और

---

1. सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद 1/144, किताबुल मग़ाज़ी 2/590

मुश्रिक वापसी के लिए तैयार हो चुके थे। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने नबी सल्ल० की सेवा में वापस आकर उनके रवाना होने की ख़बर दी।

चुनांचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुबह की तो (देखा कि मैदान साफ़ है) अल्लाह ने दुश्मन को किसी भलाई के हासिल होने का मौक़ा दिए बिना उसको ग़म व ग़ुस्सा के साथ वापस कर दिया है और उनसे लड़ने के लिए अकेले काफ़ी हुआ है।

ग़रज़ यह कि इस तरह अल्लाह ने अपना वायदा पूरा किया, अपनी फ़ौज को सुर्ख़रू किया, अपने बन्दे की मदद की और अकेले उस भारी फ़ौज को पसपा किया।

चुनांचे इसके बाद आप मदीना वापस आ गए।

ग़ज़्वा ख़ंदक़ सबसे सही कथन के अनुसार शव्वाल 05 हि० में पेश आया था और मुश्रिकों ने एक महीने या लगभग एक महीने तक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों का घेराव किए रखा था।

कुल मिलाकर, तमाम स्रोतों पर नज़र डालने से मालूम होता है कि घेराव की शुरुआत शव्वाल में हुई थी और अन्त ज़ीक़ादा में।

इब्ने साद का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० जिस दिन ख़ंदक़ से वापस हुए, बुध का दिन था और ज़ीक़ादा के ख़त्म होने में सिर्फ़ सात दिन बाक़ी थे।

अहज़ाब की लड़ाई (ख़ंदक़ का ग़ज़्वा) सच तो यह है कि घाटों की लड़ाई न थी, बल्कि तनावों की लड़ाई थी। इसमें कोई ख़ूनी झड़प नहीं हुई, फिर भी यह इस्लामी तारीख़ (इतिहास) की एक निर्णायक लड़ाई थी।

चुनांचे इसके नतीजे में मुश्रिकों के हौसले टूट गए और यह स्पष्ट हो गया कि अरब की कोई भी ताक़त मुसलमानों की इस छोटी सी ताक़त को, जो मदीने में पनप रही थी, ख़त्म नहीं कर सकती, क्योंकि अहज़ाब की लड़ाई में जितनी बड़ी ताक़त जुटा ली गई थी, अब अरबों के बस की बात न थी, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अहज़ाब की वापसी के बाद फ़रमाया—

'अब हम उन पर चढ़ाई करेंगे, वे हम पर चढ़ाई न करेंगे। अब हमारी फ़ौज उनकी ओर जाएगी।'[1]

---

1. सहीह बुख़ारी 5/290

ग़ज़वा बनू क़ुरैज़ा

जिस दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ंदक़ से वापस तशरीफ़ लाए, उसी दिन ज़ुहर के वक़्त, जबकि आप हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के मकान में ग़ुस्ल फ़रमा रहे थे, हज़रत जिब्रील तशरीफ़ लाए और फ़रमाया—

'क्या आपने हथियार रख दिए, हालांकि अभी फ़रिश्तों ने हथियार नहीं रखे और मैं भी क़ौम का पीछा करके बस वापस चला आ रहा हूं। उठिए और अपने साथियों को लेकर बनू क़ुरैज़ा का रुख़ कीजिए। मैं आगे-आगे जा रहा हूं। उनके क़िलों में भूकम्प पैदा करूंगा और उनके दिलों में रौब और आतंक डालूंगा।'

यह कहकर हज़रत जिब्रील फ़रिश्तों को साथ लेकर रवाना हो गए।

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी से मुनादी कराई कि जो आदमी 'सुनने और मानने' पर क़ायम है, वह अस्र की नमाज़ बनू क़ुरैज़ा ही में पढ़े। इसके बाद मदीना का इन्तिज़ाम हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम को सौंपा और हज़रत अली को लड़ाई का फरेरा देकर आगे भेज दिया। वे बनू क़ुरैज़ा के क़िलों के क़रीब पहुंचे, तो बनू क़ुरैज़ा ने अल्लाह के रसूल सल्ल० पर गालियों की बौछार शुरू कर दी।

इतने में अल्लाह के रसूल सल्ल० भी मुहाजिरों और अंसार के साथ रवाना हो चुके थे। आप बनू क़ुरैज़ा के क़रीब ही 'अना' नामी एक कुंएं पर ठहर गए। आम मुसलमानों ने भी लड़ाई का एलान सुनकर तुरन्त बनी क़ुरैज़ा के इलाक़े का रुख़ किया।

रास्ते में अस्र की नमाज़ का हुक्म हो गया, तो कुछ ने कहा कि हम, जैसा कि हमें हुक्म दिया गया है, बनू क़ुरैज़ा पहुंच कर ही अस्र की नमाज़ पढ़ेंगे, यहां तक कि कुछ ने अस्र की नमाज़ इशा के बाद पढ़ी, लेकिन कुछ दूसरे साथियों ने कहा कि आप (सल्ल०) का अभिप्राय यह नहीं था, बल्कि यह था कि हम जल्द से जल्द चल पड़ें। इसलिए उन्होंने रास्ते ही में नमाज़ पढ़ ली। अलबत्ता (जब अल्लाह के रसूल सल्ल० के सामने यह विवाद आया तो) आपने किसी भी फ़रीक़ को सख़्त-सुस्त नहीं कहा।

बहरहाल अलग-अलग टुकड़ियों में बंटकर इस्लामी फ़ौज बनू क़ुरैज़ा के क़रीब पहुंची और नबी सल्ल० के साथ जा शामिल हुई। फिर बनू क़ुरैज़ा के क़िलों का घेराव कर लिया। इस फ़ौज़ की कुल तायदाद तीन हज़ार थी और

उसमें तीन घोड़े थे।

जब घेराव कड़ा हो गया तो यहूदियों के सरदार काब बिन असद ने उनके सामने तीन प्रस्ताव रखे—

1. या तो इस्लाम क़ुबूल कर लें और मुहम्मद के दीन में दाख़िल होकर अपनी जान, माल और बाल-बच्चों को बचा लें। काब बिन असद ने इस प्रस्ताव को रखते हुए यह भी कहा कि अल्लाह की क़सम! तुम लोगों पर यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि वह वाक़ई नबी और रसूल हैं और वही हैं जिन्हें तुम अपनी किताब में पाते हो।

2. या अपने बीवी-बच्चों को ख़ुद अपने हाथों से क़त्ल कर दें, फिर तलवार सौंत कर नबी सल्ल० की ओर निकल पड़ें और पूरी ताक़त से टकरा जाएं, इसके बाद या तो जीत जाएं या सबके सब मारे जाएं।

3. या फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० और सहाबा किराम रज़ि० पर धोखे से सनीचर के दिन पिल पड़ें, क्योंकि उन्हें इत्मीनान होगा कि आज लड़ाई नहीं होगी।

लेकिन यहूदियों ने इन तीनों में से कोई भी प्रस्ताव नहीं माना, जिस पर उनके सरदार काब बिन असद ने (झल्लाकर) कहा, तुममें से किसी ने मां की कोख से जन्म लेने के बाद एक रात भी होशमंदी से नहीं गुज़ारी है।

इन तीनों प्रस्तावों को रद्द कर देने के बाद बनू क़ुरैज़ा के सामने सिर्फ़ एक ही रास्ता रह जाता था कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के सामने हथियार डाल दें और अपनी क़िस्मत का फ़ैसला आप पर छोड़ दें, लेकिन उन्होंने चाहा कि हथियार डालने से पहले अपने कुछ मुसलमान मित्रों से सम्पर्क बना लें। संभव है, पता लग जाए कि हथियार डालने का नतीजा क्या होगा।

चुनांचे उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल० के पास सन्देश भेजा कि आप अबू लुबाबा को हमारे पास भेज दें। हम उनसे मश्विरा करना चाहते हैं। अबू लुबाबा उनके मित्र थे और उनके बाग़ और बीवी-बच्चे भी उसी इलाक़े में थे।

जब अबू लुबाबा वहां पहुंचे, तो मर्द लोग उन्हें देखकर उनकी ओर दौड़ पड़े और औरतें और बच्चे उनके सामने धाड़े मार-मारकर रोने लगे। इस स्थिति को देखकर हज़रत अबू लुबाबा पर काफ़ी प्रभाव पड़ा।

यहूदियों ने कहा, अबू लुबाबा! क्या आप उचित समझते हैं कि हम मुहम्मद (सल्ल०) के फ़ैसले पर हथियार डाल दें?

उन्होंने कहा, हां। वरना साथ ही हाथ से हलक़ की ओर इशारा भी कर दिया

जिसका मतलब यह था कि ज़िब्ह कर दिए जाओगे। लेकिन उन्हें फ़ौरन एहसास हुआ कि यह अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के साथ ख़ियानत है।

चुनांचे वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वापस जाने के बजाए सीधे मस्जिदे नबवी पहुंचे और अपने आपको मस्जिद के एक खम्भे से बांध लिया और क़सम खाई कि उन्हें अब रसूलुल्लाह सल्ल० ही अपने मुबारक हाथों से खोलेंगे और वे आगे कभी बनू क़ुरैज़ा की धरती में दाख़िल न होंगे।

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम महसूस कर रहे थे कि उनकी वापसी में देर हो रही है। फिर जब सविस्तार बातें मालूम हुईं तो फ़रमाया, अगर वह मेरे पास आ गए होते मैं उनके लिए मग़्फ़िरत की दुआ कर दिए होता, लेकिन जब वह वही काम कर बैठे हैं, तो अब मैं भी उन्हें उनकी जगह से खोल नहीं सकता, यहां तक कि अल्लाह उनकी दुआ क़ुबूल फ़रमा ले।

उधर अबू लुबाबा के इशारे के बावजूद बनी क़ुरैज़ा ने यही तै किया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के सामने हथियार डाल दें और वह जो फ़ैसला मुनासिब समझें, करें, हालांकि बनू क़ुरैज़ा एक लम्बी मुद्दत तक घेराव सहन कर सकते थे, क्योंकि एक ओर उनके पास भारी मात्रा में खाने-पीने का पर्याप्त सामान था, पानी के सोते और कुंएं थे, मज़बूत और सुरक्षित क़िले थे और दूसरी ओर मुसलमान खुले मैदान में ख़ून में जमाव पैदा करने वाले जाड़े और भूख की सख़्तियां सह रहे थे और ग़ज़वा ख़ंदक़ की शुरुआत से भी पहले से बराबर लड़ाइयों में लगे रहने की वजह से थकन से चूर-चूर थे, लेकिन बनू क़ुरैज़ा की लड़ाई एक मानसिक लड़ाई थी। अल्लाह ने उनके दिलों में रौब डाल दिया था और उनके हौसले टूटते जा रहे थे।

फिर मनोबल का टूटना उस वक़्त अपनी सीमा को पहुंच गया, जब हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० और हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम ने पेशक़दमी फ़रमाई और हज़रत अली रज़ि० ने गरजकर यह एलान कर दिया कि ईमान के फ़ौजियो! ख़ुदा की क़सम! अब मैं भी या तो वही चखूंगा जो हमज़ा ने चखाया या उनका क़िला जीत कर रहूंगा।

चुनांचे हज़रत अली रज़ि० का यह संकल्प सुनकर बनू क़ुरैज़ा ने जल्दी से अपने आपको अल्लाह के रसूल सल्ल० के हवाले कर दिया कि आप जो फ़ैसला मुनासिब समझें, करें।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने हुक्म दिया कि मर्दों को बांध दिया जाए। चुनांचे मुहम्मद बिन मस्लमा अंसारी रज़ि० की निगरानी में इन सबके हाथ बांध दिए गए

और औरतों और बच्चों को मर्दों से अलग कर दिया गया।

क़बीला औस के लोग अल्लाह के रसूल सल्ल० से अर्ज़ करने लगे कि आपने बनू क़ैनुक़ाअ के साथ जो व्यवहार किया था, वह आपको याद ही है। बनू क़ैनुक़ाअ हमारे भाई ख़ज़रज के मित्र थे और ये लोग हमारे मित्र हैं, इसलिए इन पर एहसान फ़रमाएं।

आपने फ़रमाया, क्या आप लोग इस पर राज़ी नहीं कि इनके बारे में आप ही का एक आदमी फ़ैसला करे?

उन्होंने कहा, क्यों नहीं?

आपने फ़रमाया, तो यह मामला साद बिन मुआज़ के हवाले है।

औस के लोगों ने कहा, हम इस पर राज़ी हैं।

इसके बाद आपने हज़रत साद बिन मुआज़ को बुला भेजा। वह मदीना में थे। फ़ौज के साथ आए नहीं थे, क्योंकि ख़ंदक़ की लड़ाई के दौरान हाथ की नस कटने की वजह से घायल हो गए थे। उन्हें एक गधे पर सवार करके रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में लाया गया। जब क़रीब पहुंचे, तो उनके क़बीले के लोगों ने उन्हें दोनों ओर से घेर लिया और कहने लगे, साद! अपने मित्रों के बारे में अच्छाई और एहसान से काम लीजिएगा। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने आपको मध्यस्थ इसीलिए बनाया है कि आप उनसे सद्व्यवहार करें। मगर वह चुपचाप थे, कोई जवाब न दे रहे थे। जब लोगों ने गुज़ारिश की भरमार कर दी, तो बोले—

'अब वक़्त आ गया है कि साद को अल्लाह के बारे में किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह न हो।'

यह सुनकर कुछ लोग उसी वक़्त मदीना आ गए और क़ैदियों की मौत का एलान कर दिया।

इसके बाद जब हज़रत साद रज़ि० नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहुंचे, तो आपने फ़रमाया, अपने सरदार की ओर उठकर बढ़ो।

(लोगों ने बढ़कर) जब उन्हें उतार लिया, तो कहा, ऐ साद! ये लोग आपके फ़ैसले पर उतरे हैं।

हज़रत साद ने कहा, क्या मेरा फ़ैसला इन पर लागू होगा?

लोगों ने कहा, जी हां।

उन्होंने कहा, मुसलमानों पर भी।

लोगों ने कहा, जी हां।

उन्होंने फिर कहा, और जो यहां हैं, उन पर भी ?

उनका इशारा रसूलुल्लाह सल्ल० की आरामगाह की ओर था, मगर मान-सम्मान की वजह से चेहरा दूसरी ओर कर रखा था।

आपने फ़रमाया, जी हां, मुझ पर भी।

हज़रत साद ने कहा, तो इनके बारे में मेरा फ़ैसला यह है कि मर्दों को क़त्ल कर दिया जाए, औरतों और बच्चों को क़ैदी बना लिया जाए और माल बांट दिया जाए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुमने इनके बारे में वही फ़ैसला किया है, जो सात आसमानों के ऊपर से अल्लाह का फ़ैसला है।

हज़रत साद का यह फ़ैसला बड़े इंसाफ़ वाला था, क्योंकि बनू क़ुरैज़ा ने मुसलमानों की मौत और ज़िंदगी के सबसे नाज़ुक क्षणों में जो ख़तरनाक बद-अह्दी की थी, वह तो थी ही, इसके अलावा उन्होंने मुसलमानों को ख़त्म करने के लिए डेढ़ हज़ार तलवारें, दो हज़ार नेज़े, तीन सौ कवच और पांच सौ ढाल जुटा रखे थे, जिस पर विजय के बाद मुसलमानों ने क़ब्ज़ा किया।

इस फ़ैसले के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म पर बनू क़ुरैज़ा को मदीना लाकर बनू नज्जार की एक औरत के, जो हारिस की बेटी थीं, घर में क़ैद कर दिया गया और मदीना के बाज़ार में ख़ंदक़ें खोदी गईं, फिर उन्हें एक-एक टुकड़ी करके ले जाया गया और इन ख़ंदक़ों (खाइयों) में उनकी गरदनें मार दी गईं।

कार्रवाई शुरू होने के थोड़ी देर बाद बाक़ी क़ैदियों ने अपने सरदार काब बिन असद से मालूम किया कि आपका क्या अन्दाज़ा है? हमारे साथ क्या हो रहा है?

उसने कहा, क्या तुम लोग किसी भी जगह समझ-बूझ नहीं रखते? देखते नहीं कि पुकारने वाला रुक नहीं रहा है और जाने वाला पलट नहीं रहा है? यह ख़ुदा की क़सम! क़त्ल है। बहरहाल इन सबकी (जिनकी तायदाद छः और सात सौ के बीच थी) गरदनें मार दी गईं।

इस कार्रवाई के ज़रिए धोखादेही और ख़ियानत के उन सांपों का पूरी तरह ख़ात्मा कर दिया गया, जिन्होंने पक्का अह्द व क़रार तोड़ा था, मुसलमानों को ख़त्म करने के लिए उनकी ज़िंदगी के बड़े संगीन और नाज़ुक क्षणों में दुश्मन को मदद देकर लड़ाई के बड़े अपराधियों की भूमिका निभाई थी और अब वे सचमुच मुक़दमे और फांसी के हक़दार हो चुके थे।

बनू क़ुरैज़ा की इस तबाही के साथ ही बनू नज़ीर का शैतान और ग़ज़्वा अह्ज़ाब का एक बड़ा अपराधी हुइ बिन अख़तब भी अपने नतीजे को पहुंच गया।

यह आदमी उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा का बाप था। क़ुरैश और ग़तफ़ान की वापसी के बाद जब बनू क़ुरैज़ा का घेराव किया गया और उन्होंने क़िलाबन्दी की, तो यह भी उनके साथ क़िलाबन्द हो गया था, क्योंकि ग़ज़वा अह्ज़ाब के दिनों में यह आदमी जब काब बिन असद को धोखादेही और ख़ियानत पर तैयार करने के लिए आया था, तो उसका वायदा कर रखा था और अब इसी वायदे को निबाह रहा था।

उसे जिस वक़्त नबी सल्ल० की ख़िदमत में लाया गया, एक जोड़ा पहने हुए था, जिसे ख़ुद ही हर ओर से एक-एक अंगुल फाड़ रखा था, ताकि उसे माले ग़नीमत में न रखवा लिया जाए। उसके दोनों हाथ गरदन के पीछे रस्सी से एक साथ बंधे हुए थे। उसने रसूलुल्लाह सल्ल० को सम्बोधित करके कहा, सुनिए, मैंने आपकी दुश्मनी पर अपने आपको मलामत नहीं की, लेकिन जो अल्लाह से लड़ता है, मग़लूब होता है।

फिर लोगों को ख़िताब करते हुए कहा, लोगो! अल्लाह के फ़ैसले में कोई हरज नहीं। यह तो भाग्य का लिखा है और एक बड़ी हत्या है जो अल्लाह ने बनी इसराईल पर लिख दिया था। इसके बाद वह बैठा और उसकी गरदन मार दी गई।

इस घटना में बनू क़ुरैज़ा की एक औरत भी क़त्ल की गई। उसने हज़रत ख़ल्लाद बिन सुवैद रज़ियल्लाहु अन्हु पर चक्की का पाट फेंककर उन्हें क़त्ल कर दिया था। इसी के बदले उसे क़त्ल कर दिया गया।

रसूलुल्लाह सल्ल० का हुक्म था कि जिसके नाफ़ के नीचे बाल आ चुके हों, उसे क़त्ल कर दिया जाए। चूंकि हज़रत अतीया क़ुरज़ी को अभी बाल नहीं आए थे, इसलिए उन्हें ज़िंदा छोड़ दिया गया। चुनांचे उन्होंने मुसलमान होकर सहाबी होने का शरफ़ हासिल किया।

हज़रत साबित बिन क़ैस ने निवेदन किया कि ज़ुबैर बिन बाता और उसके बाल-बच्चों को उनको भेंट स्वरूप दे दिया जाए, इसकी वजह यह थी कि ज़ैद ने साबित पर कुछ एहसान किए थे। उनका निवेदन स्वीकार कर लिया गया। इसके बाद साबित बिन क़ैस ने ज़ुबैर से कहा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने तुझको और तुम्हारे बाल-बच्चों को मुझे भेंट स्वरूप दे दिया है और मैं इन सबको तुम्हारे हवाले करता हूं। (यानी तुम बाल-बच्चों समेत आज़ाद हो)

लेकिन जब ज़ुबैर बिन बाता को मालूम हुआ कि उसकी क़ौम क़त्ल कर दी गई है, तो उसने कहा, साबित! तुम पर मैंने जो उपकार किया था उसका वास्ता देकर कहता हूं कि मुझे भी दोस्तों तक पहुंचा दो। चुनांचे उसकी भी गरदन मार

कर उसे उसके यहूदी दोस्तों तक पहुंचा दिया गया। अलबत्ता हज़रत साबित ने ज़ुबैर बिन बाता के लड़के अब्दुर्रहमान को ज़िंदा रखा, चुनांचे वह इस्लाम लाकर सहाबी के रुत्बे को पहुंचे।

इसी तरह बनू नज्जार की एक महिला हज़रत उम्मुल मुंज़िर सलमा बिन्त क़ैस ने निवेदन किया समुवाल क़ुरज़ी के लड़के रिफ़ाआ को उनके लिए भेंट स्वरूप दे दिया जाए। उनका निवेदन भी मान लिया गया और रिफ़ाआ को उनके हवाले कर दिया गया। उन्होंने रिफ़ाआ को ज़िंदा रखा और वह भी इस्लाम लाकर सहाबी के रुत्बे को पहुंचे।

कुछ और लोगों ने भी उसी रात हथियार डालने की कार्रवाई से पहले इस्लाम अपना लिया था, इसलिए उनकी भी जान व माल और औलाद बची रही।

उसी रात अम्र नामी एक और व्यक्ति, जिसने बनू क़ुरैज़ा की बद-अह्दी में शिर्कत नहीं की थी, बाहर निकला। उसे पहरेदारों के कमांडर मुहम्मद बिन मस्लमा ने देख लिया, लेकिन पहचान कर छोड़ दिया, फिर मालूम नहीं वह कहां गया?

बनू क़ुरैज़ा के माल को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पांचवां भाग निकालकर बांट दिया। घुड़सवारों को तीन हिस्से दिए, एक हिस्सा उसका अपना, और दो हिस्सा घोड़ों का और पैदल को एक हिस्सा दिया। क़ैदियों और बच्चों को हज़रत साद बिन ज़ैद अंसारी रज़ि० की निगरानी में नज्द भेजकर उनके बदले घोड़े और हथियार ख़रीद लिए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने लिए बनू क़ुरैज़ा की औरतों में से हज़रत रैहाना बिन्त अम्र बिन ख़नाफ़ा को चुना। यह इब्ने इस्हाक़ के अनुसार आपकी वफ़ात तक आपकी मिल्कियत में रहीं।[1] लेकिन कलबी का बयान है कि नबी सल्ल० ने उन्हें सन् 06 हि० में आज़ाद करके शादी कर ली थी। फिर जब हज्जतुल विदाअ से वापस तशरीफ़ लाए तो उनका देहान्त हो गया और आपने उन्हें बक़ीअ में दफ़न कर दिया।[2]

जब बनू क़ुरैज़ा का काम पूरा हो चुका तो नेक बन्दे हज़रत साद बिन मुआज़ की उस दुआ के क़ुबूल होने का वक़्त आ गया, जिसका ज़िक्र ग़ज़वा अह्ज़ाब के दौरान आ चुका है। चुनांचे उनका घाव फूट गया। उस वक़्त वह मस्जिदे नबवी में थे। नबी सल्ल० ने उनके लिए वहीं ख़ेमा लगवा दिया था, ताकि क़रीब ही से उनका पूछना कर लिया करें।

---

1. इब्ने हिशाम 2/245
2. तलक़ीहुल फ़ुहूम, पृ० 12

हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि घाव उनके लुब्बे से फूट कर बहा। मस्जिद में बनू ग़िफ़ार के भी कुछ ख़ेमे थे। वे यह देखकर चौंके कि उनकी ओर ख़ून बहकर आ रहा है। उन्होंने कहा, ख़ेमे वालो! यह क्या है जो तुम्हारी ओर से हमारी ओर आ रहा है?

देखा तो हज़रत साद के घाव से ख़ून की धार बह रही थी, फिर उसी से उनकी मौत हो गई।[1]

सहीह मुस्लिम और सहीह बुख़ारी में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया गया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि साद बिन मुआज़ रज़ि० की मौत से रहमान का अर्श हिल गया।[2]

इमाम तिर्मिज़ी ने हज़रत अनस रज़ि० से एक हदीस रिवायत की है और उसे सही भी क़रार दिया है कि जब हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु का जनाज़ा उठाया गया, तो मुनाफ़िक़ों ने कहा, इनका जनाज़ा कितना हल्का है।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, उसे फ़रिश्ते उठाए हुए थे।[3]

बनू क़ुरैज़ा के घेराव के दौरान एक मुसलमान शहीद हुए, जिनका नाम ख़ल्लाद बिन सुवैद है। यह वही सहाबी हैं जिन पर बनू क़ुरैज़ा की एक औरत ने चक्की का पाट फेंक मारा था। इनके अलावा हज़रत उकाशा के भाई अबू सनान बिन मुहसिन ने घेराव के दौरान वफ़ात पाई।

जहां तक हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु अन्हु का मामला है, तो वह छः रात लगातार स्तून से बंधे रहे। उनकी बीवी हर नमाज़ के वक़्त आकर खोल देती थीं और वह नमाज़ से फ़ारिग़ होकर फिर उसी स्तून से बंध जाते थे।

इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सुबह तड़के उनकी तौबा उतरी। उस वक़्त आप उम्मे सलमा रज़ि० के मकान में थे।

हज़रत अबू लुबाबा का बयान है कि उम्मे सलमा ने अपने हुजरे के दरवाज़े पर खड़े होकर मुझसे कहा, ऐ अबू लुबाबा! ख़ुश हो जाओ, अल्लाह ने तुम्हारी तौबा क़ुबूल कर ली।

यह सुनकर सहाबा उनहें खोलने के लिए उछल पड़े, लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया कि उन्हें रसूलुल्लाह सल्ल० के अलावा कोई और न खोलेगा। चुनांचे

---

1. सहीह बुख़ारी 2/591
2. वही, 1/536, सहीह मुस्लिम 2/294, जामेअ तिर्मिज़ी 2/225
3. जामेअ तिर्मिज़ी 2/225

जब नबी सल्ल० फ़ज्र की नमाज़ के लिए निकले और वहां से गुज़रे तो उन्हें खोल दिया।

यह ग़ज़वा ज़ीक़ादा में पेश आया, पचीस दिन तक क़ायम रहा।[1] अल्लाह ने इस ग़ज़वे और ग़ज़वा ख़ंदक़ के बारे में सूरः अह्ज़ाब में बहुत-सी आयतें उतारीं और दोनों ग़ज़वों के अहम अंशों पर अपनी राय दी। मोमिनों और मुनाफ़िक़ों के हालात बयान फ़रमाए, दुश्मन के अलग-अलग गिरोहों में फूट और पस्त हिम्मती का ज़िक्र किया और अह्ले किताब की बद-अह्दी के नतीजों को स्पष्ट किया।

---

1. इब्ने हिशाम 2/237, 238, ग़ज़वे के सविस्तार विवरण के लिए देखिए इब्ने हिशाम 2/233-273, सहीह बुख़ारी 2/590-591, ज़ादुल मआद 2/72-73, 74 मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह पृ० 287, 288, 289, 290

ग़ज़वा अहज़ाब और क़ुरैज़ा के बाद की जंगी मुहिमें

1. सलाम बिन अबी हुक़ैक़ का क़त्ल

सलाम बिन अबी हुक़ैक़ का उपनाम अबू राफ़ेअ था, यहूदियों के उन बड़े अपराधियों में था, जिन्होंने मुसलमानों के ख़िलाफ़ मुश्रिकों को भड़काने में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था और माल और रसद से उनकी मदद की थी।[1]

इसके अलावा रसूलुल्लाह सल्ल० को कष्ट भी पहुंचाया था, इसलिए जब मुसलमान बनू क़ुरैज़ा से फ़ारिग़ हो चुके, तो क़बीला ख़ज़रज के लोगों ने रसूलुल्लाह सल्ल० से उसके क़त्ल की इजाज़त चाही। चूंकि इससे पहले काब बिन अशरफ़ का क़त्ल क़बीला औस के कुछ सहाबियों के हाथों हो चुका था, इसलिए क़बीला ख़ज़रज की ख़्वाहिश थी कि ऐसा ही कोई कारनामा हम भी अंजाम दें। इसलिए उन्होंने इजाज़त मांगने में जल्दी की।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें इजाज़त दे दी, लेकिन ताकीद फ़रमा दी कि औरतों और बच्चों को क़त्ल न किया जाए। इसके बाद पांच आदमियों पर आधारित एक छोटी से टुकड़ी अपनी मुहिम पर रवाना हुई। ये सबके सब क़बीला ख़ज़रज की शाखा बनू सलमा से ताल्लुक़ रखते थे और उनके कमांडर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अतीक थे।

इस टुकड़ी ने सीधे ख़ैबर का रुख़ किया, क्योंकि अबू राफ़ेअ का क़िला वहीं था। जब क़रीब पहुंचे तो सूरज डूब चुका था और लोग अपने ढोर-डंगर लेकर वापस हो चुके थे। अब्दुल्लाह बिन अतीक ने कहा, तुम लोग यहीं ठहरो, मैं जाता हूं और दरवाज़े के पहरेदार के साथ कोई चुभता बहाना अपनाता हूं, मुम्किन है अन्दर हो जाऊं।

इसके बाद वह तशरीफ़ ले गए और दरवाज़े के क़रीब जाकर सर पर कपड़ा डालकर यों बैठ गए, जैसे ज़रूरत पूरी कर रहे हैं। पहरेदार ने ज़ोर से पुकारकर कहा, ओ ऐ अल्लाह के बन्दे! अगर अन्दर आना हो तो आ जाओ, वरना मैं दरवाज़ा बन्द करने जा रहा हूं।

अब्दुल्लाह बिन अतीक कहते हैं मैं अन्दर घुस गया और छिप गया। जब सब

---

1. देखिए फ़त्हुल बारी 7/343

लोग अन्दर आ गए तो पहरेदार ने दरवाज़ा बन्द करके एक खूंटी पर चाबियां लटका दीं। (कुछ देर बाद जब हर ओर सुकून हो गया तो) मैंने उठकर चाबियां लीं और दरवाज़ा खोल दिया। अबू राफ़ेअ ऊपर छत पर रहता था और वहां मज्लिस जमा करती थी। जब मज्लिस के लोग चले गए तो मैं उसके कोठे की ओर चढ़ा। मैं जो कोई भी दरवाज़ा खोलता था, उसे अन्दर की ओर से बन्द कर लेता था।

मैंने सोचा कि अगर लोगों को मेरा पता लग भी गया, तो अपने पास उनके पहुंचने से पहले पहले अबू राफ़ेअ को क़त्ल कर लूंगा। इस तरह मैं उसके पास पहुंच तो गया (लेकिन) वह अपने बाल-बच्चों के बीच एक अंधेरे कमरे में था और मुझे मालूम न था कि वह उस कमरे में किस जगह है।

इसलिए मैंने कहा अबू राफ़ेअ!

उसने कहा, यह कौन है?

मैंने झट आवाज़ की तरफ़ लपक कर उस पर तलवार की एक चोट लगाई, लेकिन मैं उस वक़्त हड़बड़ाया हुआ था, इसलिए कुछ न कर सका। इधर उसने ज़ोर की चीख़ मारी। मैं झट कमरे से बाहर निकल गया और ज़रा दूर ठहरकर फिर आ गया और (आवाज़ बदलकर) बोला—

अबू राफ़ेअ! यह कैसी आवाज़ थी?

उसने कहा, तेरी मां बर्बाद हो। एक आदमी ने अभी मुझे इस कमरे में तलवार मारी है।

अब्दुल्लाह बिन अतीक कहते हैं कि अब मैंने एक ज़ोरदार चोट लगाई, जिससे वह ख़ून में लत-पत हो गया, लेकिन अब भी मैं उसे क़त्ल न कर सका था, इसलिए मैंने तलवार की नोक उसके पेट पर रखकर दबा दिया और वह उसकी पीठ तक जा रहा। मैं समझ गया कि मैंने उसे क़त्ल कर दिया है, इसलिए अब मैं एक-एक दरवाजा खोलता हुआ वापस हुआ और एक सीढ़ी के पास पहुंचकर यह समझते हुए कि ज़मीन तक पहुंच चुका हूं, पांव रखा, तो नीचे गिर पड़ा। चांदनी रात थी, पिंडुली सरक गई। मैंने पगड़ी से उसे कस कर बांधा, और दरवाज़े पर आकर बैठ गया और जी ही जी में कहा कि आज जब तक यह मालूम न हो जाए कि मैंने उसे क़त्ल कर दिया है, यहां से नहीं निकलूंगा।

चुनांचे मुर्ग़ ने जब बांग दी तो मौत की ख़बर देनेवाला क़िले की दीवार पर चढ़ा और ऊंची आवाज़ से पुकारा कि मैं हिजाज़ वालों के ताजिर (व्यापारी) अबू राफ़ेअ की मौत की ख़बर दे रहा हूं।

अब मैं अपने साथियों के पास पहुंचा और कहा, भाग चलो। अल्लाह ने अबू

राफ़ेअ का काम तमाम कर दिया। चुनांचे मैं नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपको पूरी बात बताई, तो आपने फ़रमाया, अपना पांव फैलाओ।

मैंने अपना पांव फैलाया। आपने उस पर अपना मुबारक हाथ फेरा, फिर ऐसा लगा, जैसे कोई पीड़ा थी ही नहीं।[1]

यही सहीह बुख़ारी की रिवायत है। इब्ने इस्हाक़ की रिवायत यह है कि अबू राफ़ेअ के घर में पांचों सहाबी घुसे थे और सबने उसके क़त्ल में शिर्कत की थी और जिस सहाबी ने उसके ऊपर तलवार का बोझ डालकर क़त्ल किया था, वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस थे।

उस रिवायत में यह भी बताया गया है कि उन लोगों ने अबू राफ़ेअ को रात में क़त्ल कर दिया और अब्दुल्लाह बिन अतीक की पिंडुली टूट गई तो उन्हें उठा लाए और क़िले की दीवार के आर-पार एक जगह चश्मे की नहर गई हुई थी, उसी में घुस गए।

उधर यहूदियों ने आग जलाई और हर ओर दौड़-दौड़कर देखा, जब निराश हो गए तो मक़्तूल के पास वापस पलट आए।

सहाबा किराम रज़ि० वापस हुए तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अतीक को लादकर रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में ले आए।[2]

इस सरीया (फ़ौजी मुहिम) की रवानगी ज़ीक़ादा या ज़िलहिज्जा सन् 05 हि० में अमल में आई थी।[3]

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अहज़ाब और क़ुरैज़ा की लड़ाइयों से फ़ारिग़ हो गए और जंगी अपराधियों से निमट चुके तो उन क़बीलों और बद्दुओं को सिखाने के लिए हमले शुरू किए जो सुख-शान्ति स्थापित नहीं होने दे रहे थे और ताक़त के इस्तेमाल के बग़ैर शांत नहीं रह सकते थे।

नीचे इसी सिलसिले की लड़ाइयों और मुहिमों का थोड़े में ज़िक्र किया जा रहा है।

2. सरीया मुहम्मद बिन मस्लमा

अहज़ाब व क़ुरैज़ा की लड़ाइयों से फ़ारिग़ होने के बाद यह पहला सरीया है, जिसकी रवानगी अमल में आई। यह तीस आदमियों पर सम्मिलित मुहिम थी।

---

1. सहीह बुख़ारी 2/577
2. इब्ने हिशाम 2/274, 275
3. रहमतुल लिल आलमीन 2/223, और ग़ज़वा अहज़ाब में बताये गए दूसरे स्रोत

इस सरीया को नज्द के अन्दर बकरात के इलाक़े में ज़रीया के आस-पास क़रता नामी जगह पर भेजा गया था। ज़रीया और मदीना के दर्मियान सात रात का फ़ासला है। रवानगी 10 मुहर्रम सन् 06 हि० को अमल में आई थी और निशाना बनू बक्र बिन किलाब की एक शाखा थी।

मुसलमानों ने छापा मारा तो दुश्मन के सारे लोग भाग निकले। मुसलमानों ने बकरियां और चौपाए हांक लिए और मुहर्रम में एक दिन बाक़ी था कि मदीना आ गए। ये लोग बनू हनीफ़ा के सरदार समामा बिन असाल हनफ़ी को भी गिरफ़्तार कर लाए थे। वह मुसैलमा कज़्ज़ाब के हुक्म से भेष बदलकर नबी सल्ल० को क़त्ल करने निकले थे।[1] लेकिन मुसलमानों ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया और मदीना लाकर मस्जिदे नबवी के एक खम्भे से बांध दिया।

नबी सल्ल० तशरीफ़ लाए तो पूछा, समामा तुम्हारे नज़दीक क्या है?

उन्होंने कहा, ऐ मुहम्मद! मेरे नज़दीक ख़ैर (भलाई) है। अगर तुम क़त्ल करो तो एक ख़ून वाले को क़त्ल करोगे और अगर एहसान करो तो एक क़द्र करने वाले पर एहसान करोगे और अगर माल चाहते हो, तो जो चाहे मांग लो।

इसके बाद आपने उन्हें उसी हाल पर छोड़ दिया।

फिर आप दोबारा गुज़रे तो फिर वही सवाल किया और समामा ने फिर वही जवाब दिया।

इसके बाद आप तीसरी बार गुज़रे, तो फिर वही सवाल और जवाब हुआ।

आपने सहाबा से फ़रमाया कि समामा को आज़ाद कर दो। उन्होंने आज़ाद कर दिया। समामा मस्जिदे नबवी के क़रीब खजूर के एक बाग़ में गए, ग़ुस्ल किया और आपके पास वापस आकर मुसलमान हो गए, फिर कहा, ख़ुदा की क़सम! इस धरती पर कोई चेहरा मेरे नज़दीक आपके चेहरे से ज़्यादा नापसन्दीदा न था, लेकिन अब आपका चेहरा दूसरे तमाम चेहरों से पसन्दीदा और प्रिय हो गया है और ख़ुदा की क़सम! धरती पर कोई दीन मेरे नज़दीक आपके दीन से ज़्यादा पसन्दीदा न था, मगर अब आपका दीन दूसरे तमाम दीनों से ज़्यादा पसन्दीदा हो गया है। आपके सवारों ने मुझे इस हालत में गिरफ़्तार किया था कि मैं उमरे का इरादा कर रहा था।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने उन्हें ख़ुशख़बरी दी और हुक्म दिया कि उमरा कर लें। जब वह क़ुरैश के शहर में पहुंचे तो उन्होंने कहा कि समामा! तुम बद-बदीन

1. सीरत हलबीया 2/297

हो गए हो ?

समामा ने कहा, नहीं, बल्कि मैं मुहम्मद सल्ल० के हाथ पर मुसलमान हो गया हूं। और सुनो, ख़ुदा की क़सम ! तुम्हारे पास से गेहूं का एक दाना नहीं आ सकता, जब तक कि रसूलुल्लाह सल्ल० उसकी इजाज़त न दे दें।

यमामा मक्का वालों के लिए खेत की हैसियत रखता था। हज़रत समामा ने वतन जाकर मक्का के लिए ग़ल्ला रवाना करना बन्द कर दिया, जिससे क़ुरैश बड़ी कठिनाई में पड़ गए और रसूलुल्लाह सल्ल० को रिश्तेदारी का वास्ता देते हुए लिखा कि समामा को लिख दें कि वह ग़ल्ले की रवानगी बन्द न करें। रसूलुल्लाह सल्ल० ने ऐसा ही किया।[1]

3. ग़ज़वा बनू लह्यान

बनू लह्यान वही हैं जिन्होंने रजीअ नामी जगह पर दस सहाबा किराम रज़ि० को धोखे से घेरकर आठ को क़त्ल कर दिया था और दो को मक्का वालों के हाथों बेच दिया था, जहां वे बेदर्दी से क़त्ल कर दिए गए थे, लेकिन चूंकि उनका इलाक़ा हिजाज़ के अन्दर बहुत दूर मक्का की सरहदों से क़रीब बाक़े था और उस वक़्त मुसलमानों और क़ुरैश और अरबों के दर्मियान बड़ा संघर्ष चल रहा था, इसलिए रसूलुल्लाह सल्ल० उस इलाक़े में बहुत अन्दर तक घुसकर 'बड़े दुश्मन' के क़रीब चले जाना मुनासिब नहीं समझते थे, लेकनि जब कुफ़्फ़ार के अलग-अलग गिरोहों के दर्मियान फूट पड़ गई, उनके इरादे कमज़ोर पड़ गए और उन्होंने हालात के सामने बड़ी हद तक घुटने टेक दिए, तो आपने महसूस किया कि अब बनू लह्यान से रजीअ के मक़्तूलों का बदला लेने का वक़्त आ गया है।

चुनांचे आपने रबीउल अव्वल या जुमादल ऊला सन् 06 हि० में दो सौ सहाबा के साथ उनका रुख़ किया, मदीना में हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम को अपना जानशीं बनाया और ज़ाहिर किया कि आप शाम देश का इरादा रखते हैं।

इसके बाद आप धावा बोलते हुए अमज और असफ़ान के दर्मियान बत्नेग़रान नामी एक घाटी में, जहां आपके सहाबा किराम को शहीद किया गया था, पहुंचे और उनके लिए रहमत की दुआएं कीं।

उधर बनू लह्यान को आपके आने की ख़बर हो गई थी, इसलिए वे पहाड़ की चोटियों पर निकल भागे और उनका कोई भी आदमी पकड़ में न आ सका।

आप उनकी धरती पर दो दिन ठहरे रहे। इस बीच सरीए भी भेजे, लेकिन

---

1. ज़ादुल मआद 2/119, सहीह बुख़ारी, हदीस न० 4372 आदि फ़त्हुल बारी 7/688

बनू लह्यान न मिल सके।

इसके बाद आपने अस्फ़ान का रुख़ किया और वहां से दस घुड़सवार कराग़ुल ग़मीम भेजे ताकि क़ुरैश को भी आपके आने की ख़बर हो जाए। इसके बाद आप कुल चौदह दिन मदीने से बाहर गुज़ारकर मदीना वापस आ गए।

इस मुहिम से फ़ारिग़ होकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक के बाद एक फ़ौजी मुहिमें और सरीए रवाना किए। नीचे उनका संक्षेप में उल्लेख किया जाता है।

4. सरीया ग़म्र

रबीउल अव्वल या रबीउल आख़र सन् 06 हि० में हज़रत उकाशा बिन मेहरून रज़ि० को चालीस व्यक्तियों की कमान देकर ग़म्र नामी जगह की ओर रवाना किया। यह बनू असद के एक चश्मे का नाम है। मुसलमानों के आने की ख़बर सुनकर दुश्मन भाग गया और मुसलमान उनके दो सौ ऊंट मदीना हांक लाए।

5. सरीया ज़ुल क़िस्सा न० 1

उसी रबीउल अव्वल या रबीउल आख़र सन् 06 हि० में हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा के नेतृत्व में दस लोगों की एक टुकड़ी ज़ुलक़िस्सा की ओर रवाना की गई। यह जगह बनू सालबा के पड़ोस में स्थित थी। दुश्मन जिसकी तायदाद एक सौ थी, इधर-उधर छिप गया और जब सहाबा किराम सो गए, तो अचानक हमला करके उन्हें क़त्ल कर दिया, सिर्फ़ मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हु बच निकलने में सफल हो सके, वह भी घायल होकर।

6. सरीया ज़ुल क़िस्सा न० 2

मुहम्मद बिन मस्लमा के साथियों की शहादत के बाद रबीउल आख़र सन् 06 हि० ही में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु को ज़ुल क़िस्सा की ओर भेजा। वह चालीस लोगों को साथ लेकर उक्त सहाबा किराम की शहादतगाह की ओर चले और रात पैदल सफ़र करके सुबह सवेरे ही, बनू सालबा के पास पहुंचते ही छापा मार दिया, लेकिन बनू सालबा इस तेज़ी से पहाड़ों में भागे कि मुसलमानों की पकड़ में न आ सके, सिर्फ़ एक आदमी पकड़ा गया और वह मुसलमान हो गया, अलबत्ता मवेशी और बकरियां हाथ आईं।

7. सरीया जमूम

यह सरीया ज़ैद बिन हारिसा के नेतृत्व में रबीउल आख़र सन् 06 हि० में जमूम की ओर रवाना किया गया। जमूम मर्रज़्ज़हरान (वर्तमान फ़ातिमा घाटी) में बनू सुलैम के एक चश्मे का नाम है।

हज़रत ज़ैद रज़ि० वहां पहुंचे तो क़बीला मुज़ैना की एक औरत, जिसका नाम हलीमा था, पकड़ में आ गई। उसने बनू सुलैम की एक जगह का पता बताया, जहां से बहुत से मवेशी, बकरियां और क़ैदी हाथ आए। हज़रत ज़ैद यह सब लेकर मदीना वापस आए। रसूलुल्लाह सल्ल० ने उस मुज़नी औरत को आज़ाद करके उससे शादी कर ली।

8. सरीया ओस

यह सरीया एक सौ सत्तर सवारों पर सम्मिलित था और इसे भी हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० के नेतृत्व में जुमादल ऊला सन् 06 हि० में ओस की ओर भेजा गया था। इस मुहिम में क़ुरैश के एक क़ाफ़िले का माल हाथ आया, जो रसूलुल्लाह के दामाद हज़रत अबुल आस के नेतृत्व में सफ़र कर रहा था। अबुल आस उस वक़्त तक मुसलमान न हुए थे। वह गिरफ़्तार तो न हो सके, लेकिन भाग कर सीधे मदीना पहुंचे और हज़रत ज़ैनब की पनाह लेकर उनसे कहा कि वह रसूलुल्लाह सल्ल० से कहकर क़ाफ़िले का माल वापस दिला दें।

हज़रत जैनब रज़ि० ने रसूलुल्लाह सल्ल० के सामने यह बात पेश की तो आपने किसी तरह का दबाव डाले बिना सहाबा किराम से इशारा किया कि माल वापस कर दें। सहाबा किराम रज़ि० ने थोड़ा-ज़्यादा, छोटा-बड़ा जो कुछ था, सब वापस कर दिया।

अबुल आस सारा माल लेकर मक्का पहुंचे, अमानतें उनके मालिकों के हवाले कीं, फिर मुसलमान होकर मदीना तशरीफ़ लाए। रसूलुल्लाह सल्ल० ने पहले ही निकाह पर हज़रत ज़ैनब को उनके हवाले कर दिया, जैसा कि सहीह हदीस से साबित है।[1]

आपने पहले ही निकाह की बुनियाद पर इसलिए हवाले किया था कि उस वक़्त तक कुफ़्फ़ार पर मुसलमान औरतों के हराम किए जाने का हुक्म उतरा नहीं था और एक हदीस में यह जो आया है कि आपने नए निकाह के साथ विदा

---

1. देखिए सुनन अबू दाऊद, मय शरह औनुल माबूद, बाब इला मता तुरद्दु अलैहि इमरातुहू इज़ा अस ल-म बादहा

किया था या यह कि छः वर्ष के बाद विदा किया था, तो यह न मानी के एतबार से सही है, न सनद के एतबार से[1], बल्कि दोनों पहलुओं से कमज़ोर है।

और जो लोग इसी कमज़ोर हदीस के क़ायल हैं, वे एक विचित्र आपस में टकराने वाली बात कहते हैं। वह कहते हैं कि अबुल आस सन् 08 हि० के आख़िर में मक्का-विजय से कुछ पहले मुसलमान हुए थे। फिर यह भी कहते हैं कि सन् 08 हि० के शुरू में हज़रत ज़ैनब का इंतिक़ाल हो गया था, हालांकि अगर ये दोनों बातें सही मान ली जाएं, तो विरोधाभास बिल्कुल स्पष्ट है।

सवाल यह है कि ऐसी स्थिति में अबुल आस के इस्लाम लाने और हिजरत करके मदीना पहुंचने के वक़्त हज़रत ज़ैनब रज़ि० ज़िंदा ही कहां थीं कि उन्हें उनके पास नए निकाह के ज़रिए या पुराने निकाह की बुनियाद पर अबुल आस के हवाले किया जाता।

हमने इस विषय पर बुलूग़ुल मराम में बड़े विस्तार में वार्ता की है।[2]

इसके अलावा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सोचा भी नहीं जा सकता कि आप हुदैबिया का समझौता कर लेने के बावजूद क़ुरैश के क़ाफ़िले पर छापा मारने के लिए मुसलमानों को भेजेंगे। सीरत लिखने वाले तमाम विद्वान इस पर सहमत हैं। इस समझौते को मुसलमानों ने नहीं, बल्कि क़ुरैश ने भंग किया था।

मशहूर साहिबे मग़ाज़ी मूसा बिन उक़बा का रुझान इस ओर है कि यह घटना सन् 07 हि० में अबू बसीर और उनके साथियों के हाथों घटी, लेकिन यह न सहीह हदीस के अनुसार है, न कमज़ोर हदीस के।

9. सरीया तुरफ़या तुरक़

यह सरीया भी हज़रत ज़ैद बिन हारिसा के नेतृत्व में जुमादल आख़र में तुरफ़ या तुरक़ नामी जगह की ओर भेजा गया। यह जगह बनू सालबा के इलाक़े में थी। हज़रत ज़ैद के साथ सिर्फ़ पन्द्रह आदमी थे, लेकिन बद्दुओं ने ख़बर पाते ही भागने का रास्ता अपना लिया। उन्हें ख़तरा था कि अल्लाह के रसूल सल्ल० तशरीफ़ ला रहे थे। हज़रत ज़ैद को चार ऊंट हाथ लगे और दो चार दिन बाद वापस आए।

---

1. दोनों हदीसों पर कलाम के लिए देखिए तोहफ़तुल अहवज़ी 2/195, 196
2. इस सरीया को इब्नुल हजर ने भी फ़त्हुल बारी में सन् 06 हि० की घटनाओं में गिना है। (7/498)

10. सरीया वादिल क़ुरा

यह सरीया बारह आदमियों पर सम्मिलित था और इसके कमांडर भी हज़रत ज़ैद ही थे। वह रजब सन् 06 हि० में वादिल क़ुरा की ओर रवाना हुए। मक़्सद दुश्मन की गतिविधियों का पता लगाना था, मगर वादिल क़ुरा के रहने वालों ने उन पर हमला करके नौ सहाबा को शहीद कर दिया और सिर्फ़ तीन बच सके, जिनमें एक ख़ुद हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु थे।[1]

11. सरीया ख़ब्त

इस सरीया का ज़माना रजब 08 हि० बताया जाता है, पर सन्दर्भ बताता है कि यह हुदैबिया से पहले की घटना है।

हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमारे तीन सौ सवारों की टीम भेजी। हमारे अमीर अबू उबैदा बिन जर्राह थे। क़ुरैश के एक क़ाफ़िले का पता लगाना था। हम इस हदीस के दौरान ज़बरदस्त भूख से दोचार हुए, यहां तक कि पत्ते झाड़-झाड़कर खाने पड़े। इसीलिए इसका नाम जैश (सेना की टुकड़ी) ख़ब्त (झाड़े जाने वाले पत्ते) पड़ गया।

आख़िर एक आदमी ने तीन ऊंट ज़िब्ह किए, लेकिन इसके बाद अबू उबैदा ने उसे मना कर दिया। फिर इसके बाद ही समुद्र ने अंबर नामी एक मछली फेंक दी, जिसे हम आधे महीने तक खाते रहे और उसका तेल भी लगाते रहे, यहां तक कि हमारे जिस्म हमारी ओर फिर पलट आए और तन्दुरुस्त हो गए।

अबू उबैदा रज़ि० ने उसकी पसली का एक कांटा लिया और फ़ौज के अन्दर सबसे लम्बे ऊंट को देखकर आदमी को उस पर सवार किया और वह (सवार होकर) कांटे के नीचे से गुज़र गया। हमने उसके गोश्त के टुकड़े तोशे के तौर पर रख लिए और जब मदीना पहुंचे तो रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर उसका उल्लेख किया।

आपने फ़रमाया, यह एक रोज़ी थी, जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए निकाली थी। उसका मांस तुम्हारे पास हो तो हमें भी खिलाओ।

---

1. रहमतुल लिल आलमीन 2/226, इन सरायों को विस्तार में जानने के लिए रहमतुल लिल आलमीन, ज़ादुल मआद 2/120, 121, 122, और तलक़ीह फ़हूम अहलुल असर की टिप्पणियां 28, 29 देखी जा सकती है।

हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में कुछ गोश्त भेज दिया[1], घटना का विवरण ख़त्म हुआ।

ऊपर जो यह कहा गया कि इस घटना का सन्दर्भ बताता है कि यह हुदैबिया से पहले का है, इसकी वजह यह है कि हुदैबिया की सुलह के बाद मुसलमान क़ुरैश के किसी क़ाफ़िले से छेड़छाड़ नहीं करते थे।

---

1. सहीह बुख़ारी 2/625, 626, सहीह मुस्लिम 2/145, 146

ग़ज़वा बनी मुस्तलिक़ या ग़ज़वा मुरीसीअ
सन् 05 हि० या सन् 06 हि०

यह ग़ज़वा (लड़ाई) सामरिक दृष्टि से भारी-भरकम ग़ज़वा नहीं है, पर इस हैसियत से इसका बड़ा महत्व है कि इसमें कुछ ऐसी घटनाएं घटीं जिनकी वजह से इस्लामी समाज में बेचैनी और हलचल मच गई और जिसके नतीजे में एक ओर मुनाफ़िक़ों का परदा खुला, तो दूसरी ओर ऐसे ताज़ीरी क़ानून उतरे, जिनसे इस्लामी समाज को बुलंदी और पाकीज़गी की एक ख़ास शक्ल मिली। हम पहले ग़ज़वे का ज़िक्र करेंगे, इसके बाद उन घटनाओं का विवरण देंगे।

यह ग़ज़वा, आम तौर से सीरत लिखने वालों के मुताबिक़ सन् 05 हि० में और इब्ने इस्हाक़ के कथनानुसार सन् 06 हि०[1] में हुआ। इसकी वजह यह हुई

---

1. इसकी दलील यह दी जाती है कि इसी ग़ज़वे से वापसी में इफ़्क (हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर झूठी तोहमत लगाए जाने) की घटना घटी और मालूम है कि यह घटना हज़रत ज़ैनब रज़ि० से नबी सल्ल० की शादी और मुसलमान औरतों के लिए परदे का हुक्म आ चुकने के बाद घटी थी। चूंकि हज़रत ज़ैनब की शादी सन् 05 हि० के बिल्कुल आख़िर में यानी ज़ीक़ादा या ज़िलहिज्जा 05 हि० में हुई थी और इस बात पर सभी सहमत हैं कि यह ग़ज़वा शाबान ही के महीने में पेश आया था, इसलिए यह 05 हि० का शबान नहीं, बल्कि 06 हि० का शाबान हो सकता है।
   दूसरी ओर जो लोग इस ग़ज़वे का ज़माना शाबान 05 हि० बताते हैं, उनकी दलील यह है कि इफ़्क वाली हदीस के अन्दर इफ़्क वालों के सिलसिले में हज़रत साद बिन मुआज़ और साद बिन उबादा रज़ि० के बीच तेज़-तेज़ बातों का ज़िक्र मौजूद है और मालूम है कि साद बिन मुआज रज़ि० सन् 05 हि० के आख़िर में ग़ज़वा बनी क़ुरैज़ा के बाद मौत की गोद में चले गए थे, इसलिए इफ़्क की घटना के वक़्त उनकी मौजूदगी इस बात की दलील है कि यह घटना और यह ग़ज़वा सन् 06 हि० में नहीं, बल्कि सन् 05 हि० में पेश आया।
   इसका उत्तर पहले फ़रीक़ ने यह दिया है कि हदीसे इफ़्क में हज़रत साद रज़ि० का उल्लेख रिवायत करने वाले का भ्रम है, क्योंकि यही हदीस हज़रत आइशा रज़ि० से इब्ने इस्हाक़ ने ज़ोहरी की सनद से नक़ल की है, तो इसमें साद बिन मुआज़ के बजाए उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० का उल्लेख है। चुनांचे इमाम अबू मुहम्मद बिन हज़्म फ़रमाते हैं कि बेशक यही सही है और साद बिन मुआज़ का उल्लेख भ्रम है।
   (देखिए ज़ादुल मआद 2/115)
   लेखक का कहना है कि यद्यपि पहले फ़रीक़ की दलीलों का महत्व है (और इसीलिए

कि नबी सल्ल० को यह सूचना मिली कि बनू मु तक़िल का सरदार हारिस बिन अबी ज़रार आपसे लड़ने के लिए अपने क़बीले और कुछ दूसरे अरबों को साथ लेकर आ रहा है। आपने बुरैदा बिन हुसैब अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु को हाल मालूम करने के लिए रवाना फ़रमाया। उन्होंने इस क़बीले में जाकर हारिस बिन अबी ज़ुरार से मुलाक़ात और बातचीत की और वापस आकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हालात से ख़बरदार किया।

जब आपको ख़बर के सही होने का पूरी तरह विश्वास हो गया, तो आपने सहाबा किराम को तैयारी का हुक्म दिया और बहुत जल्द रवाना हो गए। 2 शाबान को रवानगी हुई।

इस ग़ज़वे में आपके साथ मुनाफ़िक़ों की भी एक जमाअत थी, जो इससे पहले किसी ग़ज़वे में नहीं गई थी।

आपने मदीना का इंतिज़ाम हज़रत ज़ैद बिन हारिसा को (और कहा जाता है कि हज़रत अबूज़र को और कहा जाता है कि नुमैला बिन अब्दुल्लाह लैसी को) सौंपा था।

हारिस बिन अबी ज़ुरार ने इस्लामी फ़ौज की ख़बर लाने के लिए एक जासूस भेजा था, लेकिन मुसलमानों ने उसे गिरफ़्तार करके क़त्ल कर दिया।

ज़ब हारिस बिन अबी ज़ुरार और उसके साथियों को अल्लाह के रसूल सल्ल० की रवानगी और अपने जासूस के क़त्ल किए जाने का पता चला, तो वे बड़े भयभीत हुए और जो अरब उनके साथ थे, वे सब बिखर गए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुरीसीअ चश्मे तक पहुंचे[1] तो बनू मुस्तलिक़ लड़ने पर तैयार हो गए।

शुरू में हम भी उसी से सहमत थे) लेकिन ध्यान दीजिए तो मालूम होगा कि इन दलीलों का केन्द्र-बिन्दु यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हज़रत ज़ैनब रज़ि० की शादी सन् 05 हि० के आख़िर में हुई थी, जबकि कुछ अनुमानों के अलावा इस पर कोई ठोस गवाही मौजूद नहीं है, जबकि इफ़्क की घटना में और इसके बाद हज़रत साद बिन मुआज़ (मृत्यु 05 हि०) का मौजूद होना कई सही रिवायतों से साबित है, जिन्हें भ्रम कहना कठिन है। जबकि हज़रत ज़ैनब की शादी 04 हि० के आख़िर में या सन् 05 के शुरू में होने का ज़िक्र पाया जाता है, इसलिए इफ़्क की घटना और बनू मुस्तलिक़ का ग़ज़वा शाबान 05 हि० में होना बिल्कुल संभव है।

1. मुरीसीअ—क़दीद के चारों तरफ समुद्र-तट के क़रीब बनू मुस्तलिक़ के एक चश्मे का नाम था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम ने भी सफ़बन्दी कर ली। पूरी इस्लामी फ़ौज के झंडाबरदार हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु थे और ख़ास अंसार का फरेरा हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में था, कुछ देर फ़रीक़ों में तीरों का तबादला हुआ।

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म से सहाबा किराम ने अचानक एक साथ हमला कर दिया और जीत गये। मुश्रिक हारे, उनमें से कुछ मारे भी गए। औरतों और बच्चों को क़ैद कर लिया गया। मवेशी और बकरियां भी हाथ आई। मुसलमानों का सिर्फ़ एक आदमी मारा गया, जिसे एक अंसारी ने दुश्मन का आदमी समझकर मार दिया था।

इस ग़ज़वे के बारे में सीरत लिखने वालों का बयान यही है, लेकिन अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने लिखा है कि यह भ्रम है, क्योंकि इस ग़ज़वे में लड़ाई नहीं हुई थी। बल्कि आपने चश्मे के पास उन पर छापा मारकर औरतों-बच्चों और माल-मवेशी पर क़ब्ज़ा कर लिया था, जैसा कि सहीह के अन्दर है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनुल मुस्तलिक़ पर छापा मारा और वे ग़ाफ़िल थे (आख़िर तक)[1]

क़ैदियों में हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा भी थीं, जो बनुल मुस्तलिक़ के सरदार हारिस बिन ज़रार की बेटी थीं। वह साबित बिन क़ैस के हिस्से में आई। साबित ने उन्हें मुकातिब बना लिया।[2]

फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी ओर से तैशुदा रक़म अदा करके उनसे शादी कर ली। इस शादी की वजह से मुसलमानों ने बनुल मुस्तलिक़ के एक सौ घरानों को, जो मुसलमान हो चुके थे, आज़ाद कर दिया, कहने लगे कि ये लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ससुराल के लोग हैं।[3]

यह है इस ग़ज़वे की कहानी। बाक़ी रहीं वे घटनाएं, जो इस ग़ज़वे में घटीं, तो चूंकि उनकी बुनियाद अब्दुल्लाह बिन उबई, मुनाफ़िक़ों का सरदार और उसके साथी थे, इसलिए ग़लत न होगा कि पहले इस्लामी समाज के भीतर उनकी भूमिका और रवैए की एक झलक पेश कर दी जाए और बाद में घटनाओं का

1. देखिए सहीह बुख़ारी, किताबुल इत्क़ 1/345, फ़त्हुल बारी 5/303, 7/431
2. मुकातिब उस ग़ुलाम या लौंडी को कहते हैं जो अपने मालिक से यह तै कर ले कि वह एक तैशुदा रक़म मालिक को अदा करके आज़ाद हो जाएगा।
3. ज़ादुल मआद 2/112, 113, इब्ने हिशाम 2/289, 290, 294, 295

सविस्तार उल्लेख हो।

ग़ज़वा बनी मुस्तलिक़ से पहले मुनाफ़िक़ों का रवैया

हम कई बार उल्लेख कर चुके हैं कि अब्दुल्लाह बिन उबई को इस्लाम और मुसलमानों से आम तौर से और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़ास तौर से बड़ी चिढ़ थी। चूंकि औस और ख़ज़रज उसके नेतृत्व पर सहमत हो चुके थे और उसकी ताजपोशी के लिए मूंगों का ताज बनाया जा रहा था कि इतने में मदीने में इस्लाम की किरणें पहुंच गईं और लोगों की तवज्जोह इब्ने उबई से हट गई, इसलिए उसे एहसास था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी बादशाही छीन ली है।

उसकी यह जलन और चिढ़ हिजरत के शुरू ही से स्पष्ट थी, जबकि अभी उसने इस्लाम ज़ाहिर भी नहीं किया था, फिर इस्लाम ज़ाहिर करने से पहले एक बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गधे पर सवार हज़रत साद बिन उबादा के पूछने के लिए तशरीफ़ ले जा रहे थे कि रास्ते में एक मज्लिस से गुज़र हुआ, जिसमें अब्दुल्लाह बिन उबई भी था। उसने अपनी नाक ढक ली और बोला—

'हम पर धूल न उड़ाओ।'

फिर जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मज्लिस वालों पर क़ुरआन की तिलावत फ़रमाई तो कहने लगा, आप अपने घर में बैठिए, हमारी मज्लिस में हमें न घेरिए।[1]

यह इस्लाम के ज़ाहिर करने से पहले की बात है, लेकिन बद्र की लड़ाई के बाद जब उसने हवा का रुख़ देखकर इस्लाम ज़ाहिर कर दिया, तब भी वह अल्लाह, उसके रसूल और ईमान वालों का दुश्मन ही रहा और इस्लामी समाज में बिखराव पैदा करने और इस्लाम की आवाज़ कमज़ोर करने के लगातार उपाय सोचता रहा। वह इस्लाम के दुश्मनों से बड़ा निष्ठापूर्वक संपर्क रखता था, चुनांचे बनू क़ैनुक़ाअ के मामले में बड़े बेढंगेपन से हस्तक्षेप किया था। (जिसका उल्लेख पिछले पन्नों में आ चुका है)

इसी तरह उसने उहुद के ग़ज़वे में भी दुष्टताई, वायदे का पूरा न करना, मुसलमानों में फूट, उनकी सफ़ों में बेचैनी, और खलबली पैदा करने की कोशिशें की थीं, (इसका भी उल्लेख हो चुका है)

---

1. इब्ने हिशाम 1/584, 587, सहीह बुख़ारी 2/924, सहीह मुस्लिम 2/109

उस मुनाफ़िक़ के मकर व फ़रेब का यह आलम था कि यह अपने इज़्हारे इस्लाम के बाद हर शुक्रवार को जब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शिक्षा देने के लिए तशरीफ़ लाते तो पहले खुद खड़ा हो जाता और कहताः लोगों यह तुम्हारे मध्य अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। अल्लाह ने उनके द्वारा तुम्हें इज़्ज़त व इहतेराम बख़्शा है। इसलिए उनकी मदद करो। उन्हें ताक़त पहुंचाओ और उनकी बात सुनो और मानो। उसके बाद बैठ जाता और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उठ कर शिक्षा देते। फिर उसकी ढिटाई और बे हयाई उस समय इन्तेहा को पहुँच गई जब जंगे उहुद के बाद प्रथम शुक्रवार आया क्योंकि-यह मनुष्य इस युद्ध में अपनी बदतरीन दगाबाज़ी के बावजूद शिक्षा से पहले-फिर खड़ा हो गया और वही बातें दोहरानी आरम्भ कीं जो इससे पहले कहा करता था। लेकिन अबकी बार मुसलमानों ने हर प्रकार से उसका कपड़ा पकड़ लिया और कहाः ओ अल्लाह के दुशमन बैठ जा। तूने जो हरकतें की हैं उसके बाद अब तू इस लायक नहीं रह गया है। इस पर वह लोगों की गरदनें फंलाँगता हुआ और यह बड़बड़ाता हुआ बाहर निकल गया कि मैं उन साहब की ताईद के लिए उठा तो मालूम होता है कि मैंने कोई मुजरिमाना बात कह दी। इत्तेफ़ाक़ से दरवाज़े पर एक अन्सारी से मुलाक़ात हो गयी। उन्होंने कहा तेरा नष्ट हो। वापिस चल! रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म तेरे लिए मग़्फ़ेरत की दुआ कर देंगे। उसने कहा खुदा की क़सम मैं नहीं चाहता कि वह मेरे लिए दुआऐ मग़फ़िरत करें।

इसके पश्चात ईब्न उबई ने बनो नज़ीर से भी राब्ता क़ायम कर रखा था। और उनसे मिलकर मुसलमानों के ख़िलाफ़ दर परदह साज़िशें किया करता था।

इसी तरह ईब्न उबई और उसके साथियों ने ख़न्दक़ की लड़ाई में मुसलमानां के अन्दर बेचैनी और खलबली मचाने और उन्हें मरउब व दहशत ज़दह करने के लिए तरह तरह के जतन किये थे। जिसका उल्लेख अल्लाह तआला ने सुरह अहज़ाब की आयात में किया है।

"और जब मुनाफ़िक़ीन तथा वह लोग जिनके दिलों में बीमारी है कह रहे थे कि हमसे अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो वायदे किया था वह झूठा थाः और जब उनमें से एक गुरूह कह रहा था कि ऐ यसरबि वालों! अब तुम्हारे लिए ठहरने की गुंजाइश नहीं, इसलिए पलट चलो। उधर

लिए ठहरने की गुंजाइश नहीं, इसलिए पलट चलो और उनका एक फ़रीक़ यह कहकर नबी से इजाज़त तलब कर रहा था कि हमारे घर खुले पड़े हैं, (यानी उनकी हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम नहीं) हालांकि वे खुले पड़े न थे, ये लोग सिर्फ़ भागना चाहते थे और अगर शहर के हर तरफ़ से उन पर धावा बोल दिया गया होता और उनसे फ़िले (में शिर्कत) का सवाल किया गया होता, तो ये उसमें जा पड़ते और मुश्किल ही से कुछ रुकते। उन्होंने इससे पहले अल्लाह को वचन दिया था कि पीठ न फेरेंगे और अल्लाह को दिए गए वचन की पूछताछ होकर रहनी है। आप कह दीजिए कि तुम मौत या क़त्ल से भागोगे, तो यह भगदड़ तुम्हें फ़ायदा न देगी और ऐसी शक्ल में फ़ायदा उठाने का थोड़ा ही मौक़ा दिया जाएगा। आप कह दें कि कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता है, अगर वह तुम्हारे लिए बुरा इरादा करे या तुम पर मेहरबानी करना चाहे और ये लोग अल्लाह के सिवा किसी और को हामी व मददगार नहीं पाएंगे। अल्लाह तुममें से उन लोगों को अच्छी तरह जानता है, जो रोड़े अटकाते हैं और अपने भाइयों से कहते हैं कि हमारी ओर आओ और जो लड़ाई में सिर्फ़ थोड़ा-सा हिस्सा लेते हैं, जो तुम्हारा साथ देने में बड़े कंजूस हैं। जब ख़तरा आ पड़े तो आप देखेंगे कि आपकी ओर इस तरह दीदे फेर-फेरकर देखते हैं, जैसे मरने वाले पर मौत छा रही है और जब ख़तरा टल जाए तो माल व दौलत के लालच में आपका स्वागत तेज़ी के साथ चलती हुई ज़ुबानों से करते हैं। ये लोग सच तो यह है कि ईमान ही नहीं लाए हैं, इसलिए अल्लाह ने इनके अमल अकारत कर दिए और अल्लाह पर यह बात आसान है। ये समझते हैं कि हमलावर गिरोह अभी गए नहीं हैं और अगर वे (फिर पलट कर) आ जाएं, तो ये चाहेंगे कि बद्दुओं के बीच बैठे तुम्हारी ख़बर पूछते रहें और अगर ये तुम्हारे बीच रहें, तो कम ही लड़ाई में हिस्सा लेंगे।' (33 : 13-20)

इन आयतों में मौक़े के मुताबिक़ मुनाफ़िक़ों की सोच, व्यवहार, मनोविज्ञान, स्वार्थ, और अवसरवाद का एक व्यापक चित्र खींच दिया गया है।

इन सबके बावजूद यहूदियों, मुनाफ़िक़ों और मुश्रिकों, तात्पर्य यह कि सारे ही इस्लाम-विरोधियों को यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि इस्लाम के ग़लबे की वजह भौतिक समृद्धि, हथियार, फ़ौज और तायदाद की ज़्यादती नहीं है, बल्कि इसकी वजह वह ख़ुदापरस्ती और नैतिक मूल्य हैं, जिनसे पूरा इस्लामी समाज और इस्लाम धर्म से ताल्लुक़ रखने वाला हर व्यक्ति लाभ उठा रहा है। इन इस्लाम विरोधियों को यह भी मालूम था कि इस फ़ैज़ (पवित्र लाभ) का स्रोत अल्लाह के रसूल सल्ल० का शुभ व्यक्तित्व है, जो इन नैतिक मूल्यों का

चमत्कार की हद तक सबसे श्रेष्ठ आदर्श है।

इसी तरह ये इस्लाम शत्रु चार-पांच साल तक संघर्षरत रहकर यह भी समझ चुके थे कि इस दीन और इसके पोषकों को हथियारों के बल पर मिटाना संभव नहीं हैं, इसलिए उन्होंने शायद यह तै किया कि नैतिक पहलू को बुनियाद बनाकर इस धर्म के ख़िलाफ़ बड़े पैमाने पर प्रोपगंडे की लड़ाई छेड़ दी जाए और इसका पहला ख़ास निशाना अल्लाह के रसूल सल्ल० के व्यक्तित्व को बनाया जाए।

चूंकि मुनाफ़िक़ मुसलमानों की पंक्ति में पांचवां कालम थे, मदीना ही के अन्दर रहते थे, मुसलमानों से निःसंकोच मिल-जुल सकते थे और उनकी भावनाओं को किसी भी 'उचित' समय पर आसानी से भड़का सकते थे, इसलिए इस प्रचार की ज़िम्मेदारी उन मुनाफ़िक़ों ने अपने सर ली, या उनके सर डाली गई और अब्दुल्लाह बिन उबई, मुनाफ़िक़ों के सरदार ने इसके नेतृत्व का बेड़ा उठाया।

उनका यह प्रोग्राम उस वक़्त ज़रा ज़्यादा खुलकर सामने आया, जब हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० ने हज़रत ज़ैनब रज़ि० को तलाक़ दी और नबी सल्ल० ने उनसे शादी की।

चूंकि अरब का चलन यह चला आ रहा था कि वे मुतबन्ना (मुंहबोले बेटे) को अपने सगे लड़के का दर्जा देते थे और उसकी बीवी को सगे बेटे की बीवी की तरह हराम समझते थे, इसलिए जब नबी सल्ल० ने हज़रत ज़ैनब से शादी की, तो मुनाफ़िक़ों को नबी सल्ल० के ख़िलाफ़ हल्ला-दंगा करने के लिए अपनी समझ से दो कमज़ोर पहलू हाथ आए—

एक यह कि हज़रत ज़ैनब आपकी पांचवीं बीवी थीं, जबकि क़ुरआन ने चार से ज़्यादा बीवियां रखने की इजाज़त नहीं दी है, इसलिए यह शादी कैसे सही हो सकती है?

दूसरे यह कि ज़ैनब आपके बेटे, यानी मुंहबोले बेटे की बीवी थीं, इसलिए अरब चलन के मुताबिक़ उनसे शादी करना बड़ा संगीन जुर्म और ज़बरदस्त गुनाह था। चुनांचे इस सिलसिले में ख़ूब प्रचार किया गया और तरह-तरह की कहानियां गढ़ी गईं। कहने वालों ने यहां तक कहा कि मुहम्मद ने ज़ैनब को अचानक देखा और उनके सौन्दर्य से इतने प्रभावित हुए कि नक़द दिल दे बैठे और उनके बेटे ज़ैद को इसका ज्ञान हुआ तो उन्होंने ज़ैनब का रास्ता मुहम्मद के लिए ख़ाली कर दिया।

मुनाफ़िक़ों ने इस कहानी का इतनी ताक़त से प्रचार किया कि इसका प्रभाव हदीस की किताबों और तफ़्सीरों में अब तक देखा जा सकता है। उस वक़्त यह

सारा प्रचार कमज़ोर और भोले-भाले मुसलमानों के अन्दर इतना प्रभावी हुआ कि आख़िरकार क़ुरआन मजीद में इसके बारे में स्पष्ट आयतें उतरीं, जिनमें छिपे सन्देहों की बीमारी का पूरा-पूरा इलाज था। इस प्रकार के फैलाव का अन्दाज़ा इससे किया जा सकता है कि सूरः अहज़ाब का आरंभ ही इस आयत से हुआ—

'ऐ नबी सल्ल० ! अल्लाह से डरो और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से न दबो, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है।' (33 : 1)

यह मुनाफ़िक़ों की हरकतों और कार्रवाइयों की ओर एक उचटता-सा इशारा और उनकी एक छोटी-सी रूपरेखा है। नबी सल्ल० ये सारी हरकतें सब्र, नर्मी और मुरव्वत के साथ सहन कर रहे थे, क्योंकि उन्हें तजुर्बा था कि मुनाफ़िक़ क़ुदरत की ओर से रह-रहकर रुसवा किए जाते रहेंगे, चुनांचे इर्शाद है—

'वे देखते नहीं कि उन्हें हर साल एक बार या दो बार फ़िले में डाला जाता है, फिर न तो वे तौबा करते हैं और न नसीहत पकड़ते हैं।' (9 : 126)

ग़ज़वा बनू मुस्तलिक़ में मुनाफ़िक़ों की भूमिका

जब ग़ज़वा बनू मुस्तलिक़ पेश आया और मुनाफ़िक़ भी उसमें शरीक हुए, तो उन्होंने ठीक वही किया जो अल्लाह ने इस आयत में फ़रमाया है—

'अगर वे तुम्हारे अन्दर निकलते, तो तुम्हें और ज़्यादा बिगाड़ ही से दोचार करते और फ़िले की खोज में तुम्हारे अन्दर दौड़-भाग करते।' (9 : 47)

चुनांचे इस ग़ज़वे में उन्हें भड़ास निकालने के दो अवसर मिले, जिससे फ़ायदा उठाकर उन्होंने मुसलमानों की सफ़ों में ख़ाली बेचैनी और बिखराव पैदा कर दिया और नबी सल्ल० के ख़िलाफ़ सबसे गन्दा प्रचार किया। इन दोनों मौक़ों का कुछ विवेचन इस तरह है—

1. मदीना से सबसे ज़्यादा ज़लील आदमी को निकालने की बात

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ग़ज़वा बनू मुस्तलिक़ से फ़ारिग़ होकर अभी मरीसीअ सोते पर ठहरे ही थे कि कुछ लोग पानी लेने गए। उन्हीं में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का एक मज़दूर भी था, जिसका नाम जहजाह ग़िफ़ारी था। पानी पर एक और व्यक्ति सनान बिन वब्र जोहनी से उसकी धक्कम-धक्का हो गई और दोनों लड़ पड़े, फिर जोहनी ने पुकारा—

'ऐ अंसार के लोगो ! मदद को पहुंचो।'

और जहजाह ने आवाज़ दी, 'ऐ मुहाजिरो ! मदद को आओ।'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (ख़बर पाते ही वहां तशरीफ़

ले गए और फ़रमाया मैं तुम्हारे अन्दर मौजूद हूं और जाहिलियत की पुकार पुकारी जा रही है? इसे छोड़ दो, यह बदबूदार है।

इस घटना की ख़बर अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल को हुई, तो ग़ुस्से से भडक उठा, और बोला, क्या इन लोगों ने ऐसी हरकत की है? ये हमारे इलाक़े में आकर अब हमारे ही विरोधी और दुश्मन बन गए हैं। ख़ुदा की क़सम, हमारी और उनकी हालत पर वही कहावत सही उतरती है, जो पहलों ने कही हैं कि अपने कुत्तों को पाल-पोसकर मोटा-ताज़ा करो, ताकि वह तुमको फाड़ खाए। सुनो, ख़ुदा की क़सम! अगर हम मदीना वापस हुए, तो हममें का सबसे इज़्ज़तदार आदमी सबसे ज़लील आदमी को निकाल बाहर करेगा, फिर हाज़िर लोगों की तरफ़ तवज्जोह करके बोला—

'यह मुसीबत तुमने खुद मोल ली है। तुमने इन्हें अपने शहर में उतारा और अपने माल बांट कर दिए। देखो, तुम्हारे हाथों में जो कुछ है अगर उसे देना बन्द कर दो, तो ये तुम्हारा शहर छोड़कर कहीं और चलते बनेंगे।'

उस वक़्त मज्लिस में एक नवजवान सहाबी हज़रत ज़ैद बिन अरक़म भी मौजूद थे। उन्होंने आकर अपने चचा को पूरी बात कह सुनाई। उनके चचा ने अल्लाह के रसूल स़ल्ल० को ख़बर दी।

उस वक़्त हज़रत उमर रज़ि० भी मौजूद थे, बोले, हुज़ूर सल्ल०! अब्बास बिन बिश्च से कहिए कि उसे क़त्ल कर दें।

आपने फ़रमाया, उमर! यह कैसे मुनासिब रहेगा, लोग कहेंगे कि मुहम्मद अपने साथियों को क़त्ल कर रहा है। नहीं, बल्कि तुम कूच का एलान कर दो।

यह ऐसा वक़्त था जिसमें आप कूच नहीं फ़रमाया करते थे। लोग चल पड़े तो हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० ख़िदमत में हाज़िर हुए और सलाम करके अर्ज़ किया कि आज आपने बे-वक़्त कूच फ़रमाया है।

आपने फ़रमाया, क्या तुम्हारे साहब (यानी इब्ने उबई) ने जो कुछ कहा है, तुम्हें उसकी ख़बर नहीं हुई?

उन्होंने मालूम किया कि उसने क्या कहा है?

आपने फ़रमाया, उसका ख़्याल है कि अगर वह मदीना वापस हुआ तो सबसे इज़्ज़तदार आदमी सबसे ज़लील आदमी को मदीना से निकाल बाहर करेगा।

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप अगर चाहें तो उसे मदीने से निकाल बाहर करें। ख़ुदा की क़सम! वह ज़लील है और आप इज़्ज़तदार हैं। इसके बाद उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! उसके साथ नर्मी बरतिए, क्योंकि

ख़ुदा की क़सम ! अल्लाह आपको हमारे पास उस वक़्त ले आया, जब उसकी क़ौम उसकी ताजपोशी के लिए मूंगों का ताज तैयार कर रही थी। इसलिए अब वह समझता है कि आपने उससे उसकी बादशाही छीन ली है।

फिर आप शाम तक पूरा दिन और सुबह तक पूरी रात चलते रहे, बल्कि अगले दिन के आरंभिक समयों में इतनी देर तक सफ़र जारी रखा कि धूप से तक्लीफ़ होने लगी। इसके बाद उतरकर पड़ाव डाला गया तो लोग धरती पर देह रखते ही बेख़बर सो गए। आपका मक़्सद भी यही था कि लोगों को सुकून के साथ बैठकर गप लड़ाने का मौक़ा न मिले।

इधर अब्दुल्लाह बिन उबई को जब पता चला कि ज़ैद बिन अरक़म ने भांड़ा फोड़ दिया है तो वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में आया और अल्लाह की क़सम खाकर कहने लगा कि उसने जो बात आपको बताई है, वह बात मैंने नहीं कही है और न उसे ज़ुबान पर लाया हूं।

उस वक़्त वहां अंसार के जो लोग मौजूद थे, उन्होंने भी कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अभी वह लड़का है, मुम्किन है उसे भ्रम हो गया हो और उस व्यक्ति ने जो कुछ कहा था, उसे ठीक-ठीक याद न रख सका हो। इसलिए आपने इब्ने उबई की बात सच मान ली।

हज़रत ज़ैद का बयान है कि इस पर मुझे ऐसा दुख हुआ कि ऐसा दुख मुझे कभी न हुआ होगा। मुझे ऐसा सदमा पहुंचा कि मैं अपने घर में बैठा रहा, यहां तक कि अल्लाह ने सूरः मुनाफ़िक़ीन उतारी, जिसमें दोनों बातों का उल्लेख है—

'ये मुनाफ़िक़ वही हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं, उन पर ख़र्च न करो, यहां तक कि वे चलते बनें।'

'और ये मुनाफ़िक़ कहते हैं कि अगर हम मदीना वापस हुए तो उससे इज़्ज़त वाला ज़िल्लत वाले को निकाल बाहर करेगा।'

हज़रत ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि (इसके बाद) अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मुझे बुलवाया, और ये आयतें पढ़कर सुनाईं, फिर फ़रमाया, 'अल्लाह ने तुम्हारी पुष्टि कर दी।'[1]

इस मुनाफ़िक़ के बेटे, जिनका नाम अब्दुल्लाह ही था, इसके बिल्कुल विपरीत बहुत ही नेक और बेहतर सहाबा में से थे। उन्होंने अपने बाप से अलगाव अपना

---

1. देखिए सहीह बुख़ारी 1/499, 2/227, 228 229, सहीह मुस्लिम हदीस न० 2584, तिर्मिज़ी, हदीस न० 3312, इब्ने हिशाम 2/290, 291, 292

लिया और मदीना के दरवाज़े पर तलवार सौंत कर खड़े हो गए। जब उनका बाप अब्दुल्लाह बिन उबई वहां पहुंचा, तो उससे बोले, ख़ुदा की क़सम! आप यहां से आगे नहीं बढ़ सकते, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्ल० इजाज़त दे दें, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० इज़्ज़त वाले हैं और आप ज़लील हैं।

इसके बाद जब नबी सल्ल० वहां तशरीफ़ लाए तो आपने उसको मदीना में दाख़िल होने की इजाज़त दी और तब बेटे ने बाप का रास्ता छोड़ा।

अब्दुल्लाह बिन उबई के उन्हीं बेटे हज़रत अब्दुल्लाह ने आपसे यह भी अर्ज़ किया था कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप इसे क़त्ल करने का इरादा रखते हों, तो मुझे फ़रमाइए, ख़ुदा की क़सम! मैं उसका सर आपकी सेवा में हाज़िर कर दूंगा।[1]

2. इफ़्क की घटना

इस ग़ज़्वे की दूसरी महत्वपूर्ण घटना इफ़्क की घटना है। इस घटना का सार यह है कि—

अल्लाह के रसूल सल्ल० का चलन यह था कि सफ़र में जाते हुए पाक बीवियों के बीच कुरआ डालते, जिसका कुरआ निकल आता, उसे साथ ले जाते। इस ग़ज़्वे में हज़रत आइशा रज़ि० का नाम निकला और आप उन्हें साथ ले गए।

ग़ज़्वे से वापसी में एक जगह पड़ाव डाला गया, हज़रत आइशा रज़ि० अपनी ज़रूरत के लिए गईं और अपनी बहन का हार, जिसे मांगकर ले गई थीं, खो बैठीं। एहसास होते ही तुरन्त वहां वापस गईं, जहां हार ग़ायब हुआ था।

इसी बीच वे लोग आए जो आपका हौदज ऊंट पर लादा करते थे। उन्होंने समझा आप हौदज के भीतर मौजूद हैं, इसलिए उसे ऊंट पर लाद दिया और हौदज के हल्केपन पर न चौंके, क्योंकि हज़रत आइशा रज़ि० अभी नव उम्र थीं। बदन मोटा और बोझल न था। साथ ही यह बात भी थी कि कई आदमियों ने मिलकर हौदज उठाया था, इसलिए भी हल्केपन पर ताज्जुब न हुआ। अगर सिर्फ़ एक या दो आदमी उठाते, तो उन्हें ज़रूर महसूस हो जाता।

बहरहाल हज़रत आइशा रज़ि० हार ढूंढकर पड़ाव पर पहुंचीं, तो पूरी फ़ौज जा चुकी थी और मैदान ख़ाली पड़ा था, न कोई पुकारने वाला था, न जवाब देनेवाला। वे इस ख़्याल से वहीं बैठ गईं कि लोग उन्हें न पाएंगे, तो पलटकर वहीं खोजने आएंगे, लेकिन अल्लाह की क़ुदरत हर जगह ग़ालिब है, वह अर्श से

---

1. इब्ने हिशाम, वही, मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 277

जो तदबीर चाहता है, करता है।

चुनांचे हज़रत आइशा रज़ि० की आंख लग गई और वह सो गईं। फिर सफ़वान बिन मुअत्तल रज़ियल्लाहु अन्हु की यह आवाज़ सुनकर जागीं कि 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन० अल्लाह के रसूल सल्ल० की बीवी. . . ?

सफ़वान फ़ौज के पिछले हिस्से में सोए थे, उनकी आदत भी ज़्यादा सोने की थी। उन्होंने जब हज़रत आइशा रज़ि० को देखा तो पहचान लिया, क्योंकि वह परदे का हुक्म आने से पहले भी उन्हें देख चुके थे। उन्होंने 'इन्ना लिल्लाहि. . .' पढ़ी और अपनी सवारी बिठा कर हज़रत आइशा रज़ि० के क़रीब कर दी। हज़रत आइशा रज़ि० चुपचाप उस पर सवार हो गईं।

हज़रत सफ़वान ने इन्ना लिल्लाहि के सिवा ज़ुबान से एक शब्द न निकाला। चुपचाप सवारी की नकेल थामी और पैदल चलते हुए फ़ौज में आ गए।

यह ठीक दोपहर का वक़्त था और फ़ौज पड़ाव डाल चुकी थी। उन्हें इस स्थिति में आता देखकर अलग-अलग लोगों ने अपने-अपने ढंग से समीक्षा की और अल्लाह के दुश्मन ख़बीस अब्दुल्लाह बिन उबई को भड़ास निकालने का एक ओर मौक़ा मिल गया।

चुनांचे उसके मन में निफ़ाक़ और जलन की जो चिंगारी सुलग रही थी, उसने उसके इस छिपे रोग को और उभार दिया, यानी बदकारी की तोहमत गढ़कर घटनाओं के ताने-बाने बुनना, तोहत के ख़ाके में रंग भरना और उसे फैलाना, बढ़ाना और उधेड़ना और बुनना शुरू किया। उसके साथी भी इसी बात को बुनियाद बनाकर उसका क़रीबी आदमी बनने की कोशिश करने लगे और जब मदीना आए तो इन तोहमत तराशों ने ख़ूब जमकर प्रचार किया।

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुप थे, कुछ बोल नहीं रहे थे, लेकिन जब लम्बे अर्से तक वह्य न आई, तो आपने हज़रत आइशा रज़ि० से अलग हो जाने के बारे में अपने ख़ास सहाबा से मश्विरा किया।

हज़रत अली रज़ि० ने स्पष्ट शब्दों में कहे बग़ैर इशारों-इशारों में मश्विरा दिया कि आप उनसे अलगाव अपनाकर किसी और से शादी कर लें, लेकिन हज़रत उसामा रज़ि० वग़ैरह ने मश्विरा दिया कि आप उनसे अलग न हों और दुश्मनों की बात पर कान न धरें।

इसके बाद आपने मिंबर पर खड़े होकर अब्दुल्लाह बिन उबई की दी जा रही पीड़ाओं से निजात दिलाने की ओर तवज्जोह दिलाई। इस पर हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० ने अपना रुझान बताया और कहा, इजाज़त दीजिए उसे क़त्ल कर दें, लेकिन हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० में, जो अब्दुल्लाह बिन उबई के क़बीला

ख़ज़रज के सरदार थे, क़बीला गत अभिमान जाग गया और दोनों ओर से तेज़-तेज़ बातें हो गईं, जिसके नतीजे में दोनों क़बीले भड़क उठे।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें बड़ी मुश्किल से चुप किया, फिर ख़ुद भी चुप हो गए।

उधर हज़रत आइशा रज़ि० का हाल यह था कि वह ग़ज़वे से वापस आते ही बीमार पड़ गईं और एक महीने तक बराबर बीमार रहीं। उन्हें इस तोहमत के बारे में कुछ भी मालूम न था। अलबत्ता उन्हें यह बात खटकती रहती थी कि बीमारी की हालत में अल्लाह के रसूल सल्ल० की ओर जो मेहरबानी होनी चाहिए थी, अब वह नज़र नहीं आ रही है।

बीमारी ख़त्म हुई, तो वह एक रात उम्मे मिस्तह के साथ ज़रूरत पूरी करने के लिए मैदान में गईं। संयोग कि उम्मे मिस्तह अपनी चादर में फंसकर फिसल गईं, इस पर उन्होंने अपने बेटे को बद-दुआ दी।

हज़रत आइशा रज़ि० ने इस हरकत पर उन्हें टोका, तो उन्होंने हज़रत आइशा रज़ि० को यह बतलाने के लिए कि मेरा बेटा भी प्रोपगंडे के जुर्म में शरीक है, तोहमत की पूरी घटना कह सुनाई।

हज़रत आइशा रज़ि० ने वापस आकर इस ख़बर का ठीक-ठीक पता लगाने के उद्देश्य से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मां-बाप के पास जाने की इजाज़त चाही, फिर इजाज़त पाकर मां-बाप के पास तशरीफ़ ले गईं और स्थिति स्पष्ट रूप से मालूम हो गई, तो बे-अख़्तियार रोने लगीं और फिर दो दिन और एक रात रोते-रोते गुज़र गए। इस बीच न नींद का सुर्मा लगाया, न आंसू की झड़ी रुकी।

वह महसूस करती थीं कि रोते-रोते कलेजा फट जाएगा। इसी हालत में रसूलुल्लाह सल्ल० तशरीफ़ लाए। कलिमा शहादत के बाद ख़ुत्बा दिया और इसके बाद यह फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि० ! मुझे तुम्हारे बारे में ऐसी और ऐसी बात का पता लगा है। अगर तुम इससे बरी हो, तो अल्लाह बहुत जल्द तुम्हारे बरी होने का एलान फ़रमा देगा और अगर ख़ुदा न करे तुमसे कोई गुनाह हो गया है, तो तुम अल्लाह से माफ़ी मांगो और तौबा करो, क्योंकि बन्दा जब अपने गुनाह का इक़रार करके अल्लाह के हुज़ूर तौबा करता है, तो अल्लाह उसकी तौबा क़ुबूल कर लेता है।

उस वक़्त हज़रत आइशा रज़ि० के आंसू एकदम थम गए और अब उन्हें आंसू की एक बूंद भी महसूस न हो रही थी।

उन्होंने अपने मां-बाप से कहा कि वे आपको जवाब दें। लेकिन उनकी समझ में न आया कि क्या जवाब दें। इसके बाद हज़रत आइशा रज़ि० ने ख़ुद ही कहा, अल्लाह की क़सम! मैं जानती हूं कि यह बात सुनते-सुनते आप लोगों के दिलों में अच्छी तरह बैठ गई है और आप लोगों ने इसे बिल्कुल सच समझ लिया है, इसलिए अगर मैं यह कहूं कि मैं बरी हूं—और अल्लाह ख़ूब जानता है कि मैं बरी हूं—तो आप लोग मेरी बात सच न समझेंगे और अगर मैं किसी बात को मान लूं, हालांकि अल्लाह ख़ूब जानता है कि मैं उससे बरी हूं, तो आप लोग सही मान लेंगे। ऐसी स्थिति में, ख़ुदा की क़सम! मेरे लिए और आप लोगों के लिए वही मसल है कि जिसे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के वालिद (पिता) ने कहा था कि—

'सब्र ही बेहतर है और तुम लोग जो बनाते हो, इस पर अल्लाह की मदद चाहिए।'

इसके बाद हज़रत आइशा रज़ि० दूसरी ओर पलटकर लेट गईं और उसी वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वह्य उतरने का सिलसिला शुरू हो गया।

फिर जब यह सिलसिला बन्द हुआ, तो आप मुस्करा रहे थे और आपने पहली बात जो फ़रमाई, वह यह थी कि 'ऐ आइशा! अल्लाह ने तुम्हें बरी कर दिया।'

इस पर (ख़ुशी से) उनकी मां बोलीं (आइशा!) हुज़ूर सल्ल० की जानिब उठो (शुक्रिया अदा करो)।

उन्होंने अपने बरी होने पर और अल्लाह के रसूल सल्ल० की मुहब्बत पर पूरा भरोसा करते हुए नाज़ भरे अन्दाज़ में कहा, 'अल्लाह की क़सम! मैं तो उनकी ओर न उठूंगी और सिर्फ़ अल्लाह का गुणगान करूंगी।'

इस मौक़े पर इफ़्क की घटना से मुताल्लिक़ जो आयतें अल्लाह ने उतारीं, वे सूरः नूर की दस आयतें हैं जो 'इन्नल्लज़ी-न जाअ बिल इफ़्कि. . . से शुरू होती हैं।

इसके बाद तोहमत लगाने के जुर्म में मिस्तह बिन असासा, हस्सान बिन साबित और हम्ना बिन्त जहश को अस्सी-अस्सी कोड़े मारे गए[1], अलबत्ता ख़बीस अब्दुल्लाह बिन उबई की पीठ इस सज़ा से बच गई, हालांकि तोहमत लगाने वालों में वही सूची में सबसे ऊपर था और उसने इस मामले में सबसे महत्वपूर्ण

---

1. इस्लामी क़ानून यही है कि जो व्यक्ति किसी पर ज़िना की तोहमत लगाए और सबूत न पेश करे, उसे अस्सी कोड़े मारे जाएं।

भूमिका निभाई थी।

उसे सज़ा न देने की वजह या तो यह थी कि जिन लोगों पर हदें क़ायम कर दी जाती हैं (यानी शरई सज़ा दे दी जाती है), वह उनके लिए आख़िरत के अज़ाब में कमी और गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती हैं और अब्दुल्लाह बिन उबई को अल्लाह ने आख़िरत में बड़ा अज़ाब देने का एलान फ़रमा दिया था, या फिर वही मस्लहत काम कर रही थी, जिसकी वजह से उसे क़त्ल नहीं किया गया।[1]

इस तरह एक महीने के बाद मदीने का वातावरण शंका-संदेह, और दुख-बेचैनी के बादलों से साफ़ हो गया और अब्दुल्लाह बिन उबई इस तरह रुसवा हुआ कि दोबारा सर न उठा सका।

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि इसके बाद जब वह कोई गड़बड़ करता, तो ख़ुद उसकी क़ौम के लोग उस पर ग़ुस्सा होते, उसकी पकड़ करते और उसे सख़्त-सुस्त कहते। इस स्थिति को देखकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, ऐ उमर! क्या ख़्याल है? अल्लाह की क़सम! अगर तुमने उस व्यक्ति को उस दिन क़त्ल कर दिया होता, जिस दिन तुमने मुझसे उसे क़त्ल करने की बात कही थी, तो उस पर बहुत सी नाकें फड़क उठतीं, लेकिन अगर आज उन्हीं नाकों को उसके क़त्ल का हुक्म दिया जाए, तो वे उसे क़त्ल कर देंगी।

हज़रत उमर ने कहा, अल्लाह की क़सम! मेरी समझ में ख़ूब आ गया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मामला मेरे मामले से ज़्यादा बरकतों वाला है।[2]

---

1. सहीह बुख़ारी 1/364, 2/696, 698, ज़ादुल मआद 2/113, 114, 115, इब्ने हिशाम 2/297-307
2. इब्ने हिशाम 2/293

ग़ज़वा मुरीसीअ के बाद की फ़ौजी मुहिमें

1. सरीया दयारे बनी कल्ब, इलाक़ा दूमतुल जन्दल

यह सरीया हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ के नेतृत्व में शाबान सन् 06 हि० में भेजा गया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें अपने सामने बिठा कर ख़ुद अपने मुबारक हाथों से पगड़ी बांधी और लड़ाई में सबसे अच्छी शक्ल अपनाने की वसीयत फ़रमाई और फ़रमाया कि अगर वे लोग तुम्हारी इताअत कर लें तो तुम उनके बादशाह की लड़की से शादी कर लेना।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने वहां पहुंचकर तीन दिन लगातार इस्लाम की दावत दी, आख़िरकार क़ौम ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। फिर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने तमाज़र बिन्त असबग़ से शादी की। यही हज़रत अब्दुर्रहमान के सुपुत्र अबू सलमा की मां हैं। इनके बाप अपनी क़ौम के सरदार और बादशाह थे।

2. सरीया दयार बनी साद, इलाक़ा फ़िदक

यह सरीया शाबान सन् 06 हि० में हज़रत अली रज़ि० के नेतृत्व में भेजा गया। इसकी वजह यह हुई कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम हुआ कि बनू साद का एक गिरोह यहूदियों को कुमक पहुंचाना चाहता है, इसलिए आपने हज़रत अली रज़ि० को दो सौ आदमी देकर रवाना फ़रमाया। ये लोग रात में सफ़र करते और दिन में छिपे रहते थे, आख़िर एक जासूस पकड़ में आया और उसने इक़रार किया कि उन लोगों ने ख़ैबर की खजूर के बदले में सहायता जुटाने की बात कही है। जासूस ने यह भी बतलाया कि बनू साद ने किस जगह जत्थबन्दी की है।

चुनांचे हज़रत अली रज़ि० ने उन पर छापा मारकर पांच सौ ऊंट और दो हज़ार बकरियों पर क़ब्ज़ा कर लिया, अलबत्ता बनू साद अपनी औरतों-बच्चों समेत भाग निकले। उनका सरदार वब्र बिन अलीम था।

3. सरीया वादिल क़ुरा

यह सरीया हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० या हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० के नेतृत्व में रमज़ान सन् 06 हि० में रवाना किया गया। इसकी वजह यह थी कि

बनू फ़ज़ारा की एक शाखा ने धोखे से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने का प्रोग्राम बनाया था। इसलिए आपने अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को रवाना किया।

हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ि० का बयान है कि इस सरीए में मैं भी आपके साथ था। जब हम सुबह की नमाज़ पढ़ चुके तो आपके हुक्म से हम लोगों ने छापा मारा और चश्मे पर धावा बोल दिया। अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने कुछ लोगों को क़त्ल किया। मैंने गिरोह को देखा जिसमें औरतें और बच्चे भी थे। मुझे डर हुआ कि कहीं ये लोग मुझसे पहले पहाड़ पर न पहुंच जाएं, इसलिए मैंने उनको जा लिया और उनके और पहाड़ के बीच एक तीर चलाया। तीर देखकर ये लोग ठहर गए। इनमें उम्मे क़रफ़ा नामी एक औरत थी, जिसके ऊपर एक पुरानी पोस्तीन थी। उसके साथ उसकी बेटी भी थी जो अरब की सबसे ख़ूबसूरत औरतों में से थी। मैं इन सबको हांकता हुआ अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० के पास ले आया। उन्होंने वह लड़की मुझे दी, लेकिन मैंने उसका कपड़ा न खोला। बाद में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह लड़की हज़रत सलमा बिन अकबअ से मांगकर मक्का भेज दी और उसके बदले में वहां के कई मुसलमान क़ैदियों को रिहा करा लिया।[1]

उम्मे क़रफ़ा एक शैतान औरत थी, नबी सल्ल० के क़त्ल के उपाय किया करती थी और इस मक़्सद के लिए उसने अपने ख़ानदान के तीस सवार भी तैयार किए थे, इसलिए उसे ठीक बदला मिल गया और उसके तीसों सवार मारे गए।

4. सरीया उरनी यीन

यह सरीया सन् 06 हि० में हज़रत कर्ज़ बिन जाबिर फ़हरी रज़ि०[2] के नेतृत्व में भोजा गया। इसकी वजह यह हुई कि अक्ल और उरैना के कुछ लोगों ने मदीना आकर इस्लाम का इज़्हार किया और मदीना ही में ठहर गए, लेकिन उनके लिए मदीना की जलवायु सही न साबित हुई और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें कुछ ऊंटों के साथ चरागाह भेज दिया और हुक्म दिया कि ऊंटों का दूध और पेशाब पिएं।

जब ये लोग तन्दुरुस्त हो गए तो अल्लाह के रसूल सल्ल० के चरवाहे को

---

1. देखिए सहीह मुस्लिम 2/89। कहा जाता है कि यह सरीया सन् 07 में पेश आया।
2. यह वही हज़रत कर्ज़ बिन जाबिर फ़हरी हैं जिन्होंने बद्र की लड़ाई से पहले ग़ज़वा सफ़वान में मदीना के जानवरों पर छापा मारा था। बाद में उन्होंने इस्लाम कुबूल किया और मक्का विजय के मौक़े पर शहादत के दर्जे को पहुंचे।

क़त्ल कर दिया। ऊंटों को हांक ले गए और इस्लाम ज़ाहिर करने के बाद अब फिर कुफ़्र अपना लिया, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनकी खोज के लिए कर्ज़ बिन जाहिर फ़हरी को बीस सहाबा के साथ रवाना किया और यह दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! उर्नीयों पर रास्ता अंधा कर दे और कंगन से भी ज़्यादा तंग बना दे।

अल्लाह ने दुआ क़ुबूल फ़रमाई। उन पर रास्ता अंधा कर दिया, चुनांचे वे पकड़ लिए गए और उन्होंने मुसलमान चरवाहों के साथ जो कुछ किया था, उसके बदले के तौर पर उनके हाथ-पांव काट दिए गए, आंखें दाग़ दी गईं और उन्हें हर्रा के एक कोने में छोड़ दिया गया, जहां वे ज़मीन कुरेदते-कुरेदते अपने नतीजे को पहुंच गए।[1] इनकी घटना सहीह बुख़ारी वग़ैरह में हज़रत अनस रज़ि० से भी रिवायत की गई है।[2]

सीरत लिखने वाले इसके बाद एक और सरीया का ज़िक्र करते हैं, जिसे हज़रत अम्र बिन उमैया ज़मरी रज़ि० ने हज़रत सलमा बिन अबी सलमा के साथ शव्वाल सन् 06 हि० में सफल बनाया था। इसका विस्तृत विवेचन यह है कि हज़रत अम्र बिन उमैया ज़मरी अबू सुफ़ियान को क़त्ल करने के लिए मक्का तशरीफ़ ले गए थे, क्योंकि अबू सुफ़ियान ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने के लिए एक देहाती बद्दू को मदीना भेजा था। अलबत्ता दोनों फ़रीक़ों में से कोई भी अपनी मुहिम में सफल न हो सका।

सीरत लिखने वाले यह भी कहते हैं कि इसी सफ़र में हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी ने तीन काफ़िरों को क़त्ल किया और हज़रत ख़ुबैब की लाश उठाई थी, हालांकि हज़रत ख़ुबैब की शहादत की घटना रजीअ के कुछ दिन या कुछ महीने बाद की है और रजीअ की घटना सफ़र 04 हि० की है, इसलिए मैं यह समझने में असमर्थ हूं कि क्या ये दोनों दो-दो अलग-अलग सफ़र की घटनाएं हैं? मगर सीरत लिखने वाले गड़बड़ा गए और उन्होंने दोनों का एक ही सफ़र में उल्लेख कर दिया या यह कि सच में दोनों घटनाएं एक ही सफ़र में घटीं, लेकिन सीरत लिखने वालों से सन् तै करने में ग़लती हो गई और उन्होंने उसे 04 हिजरी के बजाए सन् 06 हि० में लिख दिया।

हज़रत अल्लामा मंसूरपुरी रह० ने भी इस घटना को जंगी मुहिम या सरीया मानने से इंकार कर दिया है। (वल्लाहु आलम)

---

1. ज़ादुल मआद 2/122, (कुछ इज़ाफ़ों के साथ)
2. सहीह बुख़ारी 2/602 वग़ैरह

ये हैं वे सरीए और ग़ज़वे जो ग़ज़वा अहज़ाब और बनी क़ुरैज़ा के बाद पेश आए। इनमें से किसी भी सरीए या ग़ज़वे में कोई तेज़ लड़ाई नहीं हुई, सिर्फ़ कुछ-कुछ में मामूली क़िस्म की झड़पें हुईं, इसलिए इन मुहिमों को लड़ाई के बाजए झड़पें, फ़ौजी गश्त और 'सिखाने वाली' गतिविधियां कहा जा सकता है, जिसका मक़्सद ढीठ बद्दुओं और अकड़े हुए दुश्मनों को डराना-धमकाना था। हालात पर विचार करने से मालूम होता है कि ग़ज़वा अहज़ाब के बाद स्थिति बदलनी शुरू हो गई थी और इस्लाम दुश्मनों के हौसले टूटते जा रहे थे। अब उन्हें यह उम्मीद बाक़ी न रह गई थी कि इस्लाम की दावत को तोड़ा और उसकी शौकत को पामाल किया जा सकता है, पर यह तब्दीली तनिक अच्छी तरह खुलकर उस वक़्त सामने आई जब मुसलमान हुदैबिया समझौते से फ़ारिग़ हो चुके। यह समझौता असल में इस्लामी ताक़त का मान लेना था और इस बात की पुष्टि थी कि अब इस ताक़त को अरब प्रायद्वीप में बाक़ी और बरक़रार रखने से कोई ताक़त नहीं रोक सकती।

हुदैबिया का समझौता

(ज़ीक़ादा सन् 06 हि०)

हुदैबिया के उमरे की वजह

जब अरब प्रायद्वीप में हालात बड़ी हद तक मुसलमानों के पक्ष में हो गए, तो इस्लामी दावत की कामियाबी और महान विजय के चिह्न धीरे-धीरे प्रकट होने शुरू हुए और मस्जिदे हराम में जिसका दरवाज़ा मुश्रिकों ने मुसलमानों पर छः वर्ष से बन्द कर रखा था, मुसलमानों के लिए इबादत का हक़ मान लिए जाने की प्रस्तावना शुरू हो गई।

अल्लाह के रसूल सल्ल० को मदीना में यह सपना दिखाया गया कि आप और आपके सहाबा किराम मस्जिदे हराम में दाख़िल हुए। आपने ख़ाना काबा की चाबी ली और सहाबा किराम सहित बैतुल्लाह का तवाफ़ और उमरा किया। फिर कुछ लोगों ने सर के बाल मुंडाए और कुछ ने कटवाने को काफ़ी समझा।

आपने सहाबा किराम रज़ि० को इस सपने की सूचना दी तो उन्हें बड़ी ख़ुशी हुई और उन्होंने यह समझा कि इस साल मक्का में दाख़िला मिलेगा। आपने सहाबा किराम को यह भी बतलाया कि आप उमरा अदा फ़रमाएंगे। इसलिए सहाबा किराम भी सफ़र के लिए तैयार हो गए।

मुसलमानों में रवानगी का एलान

आपने मदीना और आस-पास की आबादियों में यह एलान फ़रमा दिया कि लोग आपके साथ जाएं, लेकिन बहुत से लोगों ने देर की। इधर आपने अपने कपड़े धोए। मदीना पर इब्ने उम्मे मक्तूम या नुमैला लैसी को अपना जानशीं मुक़र्रर फ़रमाया और अपनी क़सवा नामी ऊंटनी पर सवार होकर पहली ज़ीक़ादा सन् 06 हि० को सोमवार को रवाना हो गए। आपके साथ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० भी थीं। चौदह सौ (और कहा जाता है कि पन्द्रह सौ लोग साथ थे।) आपने मुसाफ़िरों का हथियार यानी म्यान के अन्दर बन्द तलवारों के सिवा और किसी क़िस्म का हथियार नहीं लिया था।

मक्का की ओर मुसलमान चल पड़े

आपका रुख़ मक्का की ओर था। ज़ुल हुलैफ़ा पहुंचकर आप हदयि[1]

1. हदयि : वह जानवर जिसे हज व उमरा करने वाले मक्का या मिना में ज़िब्ह करते हैं,

(क़ुरबानी के जानवर) के क़लादे पहनाए, कोहान चीर कर निशान बनाया और उमरे का एहराम बांधा, ताकि लोगों को इत्मीनान रहे कि आप लड़ाई नहीं लड़ेंगे।

आगे-आगे क़बीला ख़ुज़ाआ का एक जासूस भेज दिया, ताकि वह क़ुरैश के इरादों की ख़बर लाए। अस्फ़ान के क़रीब पहुंचे तो उस जासूस ने आकर सूचना दी कि मैं काब बिन लुई को इस हालत में छोड़कर आ रहा हूं कि उन्होंने आपसे मुक़ाबला करने के लिए अहाबीश[1] (मित्र क़बीलों) को जमा कर रखा है और भी जत्थ जुटा लिए हैं और वे आपसे लड़ने और आपको बैतुल्लाह से रोकने का संकल्प किए हुए हैं।

इस सूचना के मिलने के बाद नबी सल्ल० ने सहाबा किराम रज़ि० से मश्विरा किया और फ़रमाया, क्या आप लोगों की यह राय है कि ये लोग जो क़ुरैश की सहायता पर कमर कसे हुए हैं, हम उनके घरवालों पर टूट पड़ें और क़ब्ज़ा कर लें? इसके बाद अगर वे ख़ामोश बैठते हैं, तो इस हालत में ख़ामोश बैठते हैं कि लड़ाई की मार और दुख और ग़म से दोचार हो चुके हैं और भागते हैं तो वह भी इस हालत में कि अल्लाह एक गरदन काट चुका होगा? या आप लोगों की यह राय है कि हम ख़ाना काबा का रुख़ करें और जो राह में रोक बने, उससे लड़ाई करें?

इस पर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने अर्ज़ किया कि अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं, मगर हम उमरा करने आए हैं, किसी से लड़ने नहीं आए हैं। अलबत्ता जो हमारे और बैतुल्लाह के दर्मियान रोक बनेगा, उससे लड़ाई करेंगे।

जाहिलियत के ज़माने में अरब में चलन था कि हदयि का जानवर अगर भेड़ या बकरी है, तो निशानी के तौर पर गले में क़लादा डाल दिया जाता था और अगर ऊंट है, तो कोहान चीरकर ख़ून पोत दिया जाता था। ऐसे जानवर से कोई व्यक्ति छेड़छाड़ न करता था। शरीअत ने इस चलन को बाक़ी रखा।

1. ये हब्शी लोग नहीं हैं, जबकि शब्द से इसका भास हो सकता है, जबकि बनू कनाना और दूसरे अरब क़बीलों की कुछ शाखाएं हैं। इनका ताल्लुक़ हुबशी पहाड़ से है जो वादी नोमान अराक से नीचे स्थित है। यहां से मक्का का फ़ासला छः मील है। इस पहाड़ के दामन में बनू हारिस बिन अब्दे मनार बिन कनाना, बनू मुस्तलिक़, हय्या बिन साद बिन उमर बनुल हौन बिन ख़ुज़ैमा ने इकट्ठे होकर क़ुरैश को वचन दिया था और सबने मिलकर अल्लाह की क़सम खाई थी कि जब तक रात अंधेरी और दिन रोशन है और हुबशी पहाड़ अपनी जगह बरक़रार है, हम सब दूसरों के ख़िलाफ़ एक साथ होंगे। (मोजमुल बुलदान 2/214, अल मुनमिक़ 275)

नबी सल्ल० ने फ़रमाया, अच्छा तब चलो। चुनांचे लोगों ने सफ़र जारी रखा।

बैतुल्लाह से मुसलमानों को रोकने की कोशिश

इधर क़ुरैश को अल्लाह के रसूल सल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम की रवानगी का पता चला, तो उसने एक मज्लिसे शूरा (सलाहकार परिषद) बनाई और तै किया कि जैसे भी संभव हो, मुसलमानों को बैतुल्लाह से दूर रखा जाए। चुनांचे जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अहाबीश से कतरा कर अपना सफ़र जारी रखा, तो बनी काब के एक आदमी ने आकर आपको ख़बर दी कि क़ुरैश ने ज़ी तुवा नामी जगह पर पड़ाव डाल रखा है और ख़ालिद बिन वलीद दो सौ सवारों का दस्ता लेकर कुराउल ग़मीम में तैयार खड़े हैं। (कुराउल ग़मीम मक्का जाने वाली केन्द्रीय और कारवानी राजमार्ग पर स्थित है) ख़ालिद ने मुसलमानों को रोकने की भी कोशिश की। चुनांचे उन्होंने अपने सवारों को ऐसी जगह तैनात किया, जहां से दोनों फ़रीक़ एक दूसरे को देख रहे थे।

ख़ालिद ने ज़ुहर की नमाज़ में यह भी देखा कि मुसलमान रुकूअ और सज्दे कर रहे हैं, तो कहने लगे कि ये लोग ग़ाफ़िल थे, हमने हमला कर दिया होता तो इन्हें मार लिया होता। इसके बाद तै किया कि अस्त्र की नमाज़ में मुसलमानों पर अचानक टूट पड़ेंगे लेकिन अल्लाह ने इसी बीच नमाज़े ख़ौफ़ (लड़ाई की हालत की ख़ास नमाज़) का हुक्म उतार दिया और ख़ालिद के हाथ से मौक़ा जाता रहा।

ख़ूनी टकराव से बचने की कोशिश और रास्ते की तब्दीली

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुराउल ग़मीम का केन्द्रीय मार्ग छोड़कर एक दूसरा पेचदार रास्ता अपनाया जो पहाड़ी घाटियों के बीच से होकर गुज़रता था, यानी आप अपने दाहिनी ओर कतरा कर हम्श के बीच से गुज़रते हुए एक ऐसे रास्ते पर चले, जो सनीयतुल मरार पर निकलता था। सनीयतुल मरार से हुदैबिया में उतरते हैं और हुदैबिया मक्का के निचले हिस्से में स्थित है।

इस रास्ते को अपनाने का फ़ायदा यह हुआ कि कुराउल ग़मीम का वह केन्द्रयी मार्ग जो तनईम से गुज़रकर हरम तक जाता था और जिस पर ख़ालिद बिन वलीद की टुकड़ी तैनात थी, वह बाईं ओर छूट गई। ख़ालिद ने मुसलमानों के धूल को देखकर जब यह महसूस किया कि उन्होंने रास्ता बदल दिया है, तो घोड़े को एड़ लगाई और क़ुरैश को इस नई स्थिति के ख़तरे से आगाह करने के लिए भागम भाग मक्का पहुंचे।

इधर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना सफ़र पहले की

तरह जारी रखा। जब सनीयतुल मरार पहुंचे, तो ऊंटनी बैठ गई। लोगों ने कहा, हल-हल, लेकिन वह बैठी ही रही। लोगों ने कहा, क़सवा अड़ गई है।

आपने फ़रमाया, क़सवा अड़ी नहीं है और न उसकी यह आदत है, लेकिन उसे उस हस्ती ने रोक रखा है, जिसने हाथी को रोक दिया था। फिर आपने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, ये लोग किसी भी ऐसे मामले की मांग नहीं करेंगे, जिसमें अल्लाह की हुरमतों का आदर कर रहे हों, लेकिन मैं उसे ज़रूर मान लूंगा। इसके बाद आपने ऊंटनी को डांटा तो वह उछल कर खड़ी हो गई। फिर आपने रास्ते में थोड़ी सी तब्दीली की और हुदैबिया के पास एक चश्मे पर उतरे, जिसमें थोड़ा-सा पानी था और उसे लोग ज़रा-ज़रा सा ले रहे थे। चुनांचे कुछ ही क्षणों में सारा पानी ख़त्म हो गया। अब लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्ल० से प्यास की शिकायत की। आपने तिरकश से एक तीर निकाला और हुक्म दिया कि चश्मे में डाल दें। लोगों ने ऐसा ही किया। इसके बाद अल्लाह की क़सम! उस चश्मे से बराबर पानी उबलता रहा, यहां तक कि तमाम लोग प्यास बुझा कर वापस हो गए।

बुदैल बिन वरक़ा की मध्यस्थता

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सन्तुष्ट हो चुके, तो बुदैल बिन वरक़ा ख़ुज़ाअी अपने क़बीला ख़ुज़ाआ के कुछ लोगों के साथ हाज़िर हुआ। तिहामा के निवासियों में यही क़बीला (ख़ुज़ाआ) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हितैषी था।

बुदैल ने कहा, मैं काब बिन लुई को देखकर आ रहा हूं कि वे हुदैबिया के काफ़ी पानी पर पड़ाव डाले हुए हैं। उनके साथ औरतें और बच्चे भी हैं। वे आपसे लड़ने और आपको बैतुल्लाह से रोकने का तहैया किए हुए हैं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हम किसी से लड़ने नहीं आए हैं। क़ुरैश को लड़ाइयों ने तोड़ डाला है और बहुत नुक़्सान पहुंचाया है, इसलिए अगर वे चाहें, तो उनसे एक मुद्दत तै कर लूं और वे मेरे और लोगों के बीच से हट जाएं और अगर वे चाहें तो जिस चीज़ में लोग दाख़िल हुए हैं, उसमें वे भी दाख़िल हो जाएं, वरना उनको राहत तो हासिल ही रहेगी।

और अगर उन्हें लड़ाई के सिवा कुछ मंज़ूर नहीं, तो उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं अपने दीन के मामले में उनसे उस वक़्त तक लड़ता रहूंगा, जब तक कि मेरी गरदन अलग न हो जाए या जब तक अल्लाह

अपना फ़ैसला लागू न कर दे।

बुदैल ने कहा, आप जो कुछ कर रहे हैं, मैं उसे क़ुरैश तक पहुंचा दूंगा। इसके बाद वह क़ुरैश के पास पहुंचा और बोला, मैं उन साहब के पास से आ रहा हूं। मैंने उनसे एक बात सुनी है, अगर चाहो तो पेश कर दूं।

इस पर मूर्खों ने कहा, हमें कोई ज़रूरत नहीं कि तुम हमसे उनकी कोई बातचीत करो, लेकिन जो लोग सूझ-बूझ रखते थे, उन्होंने कहा, लाओ सुनाओ, तुमने क्या सुना है ?

बुदैल ने कहा, मैंने उन्हें यह और यह बात कहते सुना है। इस पर क़ुरैश ने मिक्रज़ बिन हफ़्स को भेजा, उसे देखकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यह बद-अह्द आदमी है।

चुनांचे जब उसने आपके पास आकर बातें कीं, तो आपने उससे वही बात कही जो बुदैल और उसके साथियों से कही थी। उसने वापस पलट कर क़ुरैश को पूरी बात बता दी।

क़ुरैश के दूत

इसके बाद हुलैस बिन अलक़मा नामी बनू कनाना के एक आदमी ने कहा, मुझे इनके पास जाने दो।

लोगों ने कहा, जाओ, जब वह आया, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा से फ़रमाया, यह फ़्लां आदमी है। यह ऐसी क़ौम से ताल्लुक़ रखता है, जो क़ुरबानी के जानवरों का बहुत आदर करती है। इसलिए जानवरों को खड़ा कर दो।

सहाबा ने जानवरों को खड़ा कर दिया और ख़ुद भी लब्बैक पुकारते हुए उसका स्वागत किया।

उस व्यक्ति ने यह स्थिति देखी, तो कहा, सुब्हानल्लाह ! इन लोगों को बैतुल्लाह से रोकना कदापि मुनासिब नहीं और वहीं से अपने साथियों के पास वापस पलट गया और बोला, मैंने क़ुरबानी के जानवर देखे हैं, जिनके गलों में क़लादे (बन्धन) हैं और जिनकी कोहानें चिरी हुई हैं। इसलिए मैं मुनासिब नहीं समझता कि उन्हें बैतुल्लाह से रोका जाए। इस पर क़ुरैश और उस व्यक्ति में कुछ ऐसी बातें हुईं कि वह ताव में आ गया।

इस मौक़े पर उर्वः बिन मसऊद सक़फ़ी ने हस्तक्षेप किया और बोला, उस व्यक्ति (मुहम्मद सल्ल०) ने तुम्हारे सामने एक अच्छा प्रस्ताव रखा है, इसलिए

उसे क़ुबूल कर लो और मुझे उनके पास जाने दो।

लोगों ने कहा, जाओ।

चुनांचे वह आपके पास हाज़िर हुआ और बातें शुरू कीं। नबी सल्ल० ने उससे भी वही बात कही जो बुदैल से कही थी।

इस पर उर्वः ने कहा, ऐ मुहम्मद ! यह बताइए कि अगर आपने किसी क़ौम का सफ़ाया भी कर दिया तो क्या अपने आपसे पहले किसी अरब के बारे में सुना है कि उसने अपनी क़ौम का सफ़ाया कर दिया हो और अगर दूसरी, स्थिति हुई, तो ख़ुदा की क़सम ! मैं ऐसे चेहरे और ऐसे गुंडे लोगों को देख रहा हूं जो इसी क़ाबिल हैं कि आपको छोड़कर भाग जाएं।

इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, लात के गुप्तांग का लटकता हुआ चमड़ा चूस। हम हुज़ूर सल्ल० को छोड़कर भागेंगे ?

उर्वः ने कहा, यह कौन है ?

लोगों ने कहा, अबूबक्र हैं।

इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० को सम्बोधित करके कहा, देखो, उस ज़ात की क़सम ! जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर ऐसी बात न होती कि तुमने मुझ पर एक एहसान किया था और मैंने उसका बदला नहीं दिया है, तो मैं यक़ीनन तुम्हारी इस बात का जवाब देता।

इसके बाद उर्वः फिर नबी सल्ल० से बातें करने लगा। वह जब बातें करता, तो आपकी दाढ़ी पकड़ लेता। मुग़ीरह बिन शोबा रज़ि० नबी सल्ल० के पास ही खड़े थे, हाथ में तलवार थी और सर पर ख़ूद।

उर्वः जब नबी सल्ल० की दाढ़ी पर हाथ बढ़ाता तो वह तलवार के मुठ से उसके हाथ पर मारते और कहते कि अपना हाथ नबी सल्ल० की दाढ़ी से परे रख। आख़िर उर्वः ने अपना सर उठाया और बोला, यह कौन है ?

लोगों ने कहा, मुग़ीरह बिन शोबा हैं। इस पर उसने कहा, ओ बद-अह्द ! क्या मैं तेरी बद-अह्दी के सिलसिले में दौड़-धूप नहीं कर रहा हूं ?

घटना इस तरह घटी थी कि अज्ञानता-काल में हज़रत मुग़ीरह कुछ लोगों के साथ थे, फिर उन्हें क़त्ल करके उनका माल ले भागे थे और आकर मुसलमान हो गए थे। इस पर नबी सल्ल० ने फ़रमाया था कि मैं इस्लाम तो क़ुबूल कर लेता हूं, लेकिन माल से मेरा कोई ताल्लुक़ नहीं। (इस मामले में उर्वः के दौड़-धूप की वजह यह थी कि हज़रत मुग़ीरह रज़ि० उसके भतीजे थे।)

इसके बाद उर्वः नबी सल्ल० के साथ सहाबा किराम के गहरे ताल्लुक़ और

उनकी श्रद्धा को देखने लगे। फिर अपने साथियों के पास वापस आया और बोला, ऐ क़ौम ! ख़ुदा की क़सम ! मैं क़ैसर व किसरा और नजाशी जैसे बादशाहों के पास जा चुका हूं। ख़ुदा की क़सम ! मैंने किसी बादशाह को नहीं देखा कि उसके साथी उसका इतना आदर करते हों, जितनी मुहम्मद के साथी मुहम्मद का आदर करते हैं। ख़ुदा की क़सम ! वह खंखार भी थूकते थे तो किसी न किसी आदमी के हाथ पर पड़ता था और वह व्यक्ति उसे अपने चेहरे और जिस्म पर मल लेता था और जब वह कोई हुक्म देते थे तो उसे पूरा करने के लिए सब दौड़ पड़ते थे और जब वुज़ू करते थे तो मालूम होता था कि उनके वुज़ू के पानी के लिए लोग लड़ पड़ेंगे ? और जब कोई बात बोलते थे, तो सब अपनी आवाज़ें पस्त कर लेते थे और अति आदर की वजह से उन्हें भरपूर नज़र से न देखते थे और उन्होंने तुम पर एक अच्छा प्रस्ताव पेश किया है, इसलिए उसे मान लो।

वही है जिसने उनके हाथ तुमसे रोके

जब क़ुरैश के जोशीले और लड़ने-भिड़ने वाले नवजवानों ने देखा कि उनके बड़े लोग समझौता करना चाहते हैं, तो उन्होंने समझौते में रुकावट डालने का प्रोग्राम बनाया और यह तै किया कि रात में यहां से निकलकर चुपके से मुसलमानों के कैम्प में घुस जाएं और ऐसा हंगामा मचाएं कि लड़ाई की आग भड़क उठे।

फिर उन्होंने इस प्रोग्राम को लागू करने के लिए अमली क़दम भी उठया। चुनांचे रात के अंधेरे में सत्तर या अस्सी नवजवानों ने जबले तनईम से उतरकर मुसलमानों के कैम्प में चुपके से घुसने की कोशिश की, लेकिन इस्लामी पहरेदारों के कमांडर मुहम्मद बिन मस्लमा ने इन सबको गिरफ़्तार कर लिया, फिर नबी सल्ल० ने समझौते के लिए इन सबको माफ़ करते हुए आज़ाद कर दिया। इसी के बारे में अल्लाह का यह इर्शाद आया—

'वही है, जिसने बले मक्का में उनके हाथ तुमसे रोके और तुम्हारे हाथ उनसे रोके, इसके बाद कि तुमको उन पर क़ाबू दे चुका था।' (48 : 24)

हज़रत उस्मान रज़ि० दूत बनाकर भेजे गए

अब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सोचा कि एक दूत रवाना फ़रमाएं, जो क़ुरैश के सामने सविस्तार आपके ताज़ा सफ़र के उद्देश्य को स्पष्ट कर दे। इस काम के लिए आपने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को बुलाया, लेकिन उन्होंने यह कहते हुए विवशता दिखाई कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर मुझे

कष्ट दिया गया तो मक्का में बनी काब का एक व्यक्ति भी ऐसा नहीं जो मेरे समर्थन में बिगड़ सकता हो। आप हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान को भेज दें। उनका कुंबा-क़बीला मक्का में ही है। वह आपका पैग़ाम अच्छी तरह पहुंचा देंगे।

आपने हज़रत उस्मान रज़ि० को बुलाया और क़ुरैश के पास रवानगी का हुक्म देते हुए फ़रमाया, इन्हें बतला दो कि हम लड़ने नहीं आए हैं, उमरा करने आए हैं। इन्हें इस्लाम की दावत भी दो। आपने हज़रत उस्मान को यह हुक्म भी दिया कि वह मक्का में ईमान वाले मर्दों और औरतों के पास जाकर उन्हें विजय की शुभ-सूचना सुना दें और यह बतला दें कि अल्लाह अब अपने दीन को मक्का में जाहिर व ग़ालिब करने वाला है, यहां तक कि ईमान की वजह से किसी को यहां छिपे रहने की ज़रूरत न होगी।

हज़रत उस्मान रज़ि० आपका पैग़ाम लेकर रवाना हुए। बलदह नामी जगह पर क़ुरैश के पास से गुज़रे, तो उन्होंने पूछा, कहां का इरादा है?

फ़रमाया, मुझे अल्लाह के रसूल सल्ल० ने यह और यह पैग़ाम देकर भेजा है।

क़ुरैश ने कहा, हमने आपकी बात सुन ली। आप अपने काम पर जाइए।

इधर सईद बिन आस ने उठकर हज़रत उस्मान को धन्यवाद दिया और अपने घोड़े पर ज़ीन कसकर आपको सवार किया और साथ बिठाकर अपनी पनाह में मक्का ले गया। वहां जाकर हज़रत उस्मान रज़ि० क़ुरैश के सरदारों को अल्लाह के रसूल सल्ल० का सन्देश सुनाया। इससे छूटे तो क़ुरैश ने कहा कि आप बैतुल्लाह का तवाफ़ कर लें, मगर आपने इसे ठुकरा दिया और यह गवारा न किया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के तवाफ़ करने से पहले ख़ुद तवाफ़ कर लें।

हज़रत उस्मान रज़ि० की शहादत की अफ़वाह और बैअते रिज़्वान

हज़रत उस्मान रज़ि० अपना काम पूरा कर चुके थे, लेकिन क़ुरैश ने उन्हें अपने पास रोक लिया। शायद वे चाहते थे कि स्थिति से निमटने के लिए कोई फाइनल फ़ैसला कर लें और हज़रत उस्मान रज़ि० को उनके लाए हुए पैग़ाम का जवाब देकर वापस करें, मगर हज़रत उस्मान रज़ि० के देर तक रुके रहने की वजह से मुसलमानों में यह अफ़वाह फैल गई कि उन्हें क़त्ल कर दिया गया है।

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० को इसकी ख़बर हुई तो आपने फ़रमाया कि हम इस जगह से टल नहीं सकते, यहां तक कि लोगों से लड़ लें। फिर आपने सहाबा किराम को बैअत की दावत दी। सहाबा किराम रज़ि० टूट पड़े और इस बात पर बैअत की कि लड़ाई का मैदान छोड़कर भाग नहीं सकते। एक जमाअत

ने मौत पर बैअत की, यानी मर जाएंगे, पर लड़ाई का मैदान न छोड़ेंगे।

सबसे पहले अबू सनान असदी ने बैअत की। हज़रत सलमा बिन अकवअ ने तीन बार बैअत की, शुरू मे, बीच में और आख़िर में। रसूलुल्लाह सल्ल० ने ख़ुद अपना हाथ पकड़ कर फ़रमाया, यह उस्मान का हाथ है।

फिर जब बैअत पूरी हो चुकी, तो हज़रत उस्मान रज़ि० भी आ गए और उन्होंने भी बैअत की। इस बैअत में सिर्फ़ एक आदमी ने जो मुनाफ़िक़ था, शिर्कत नहीं की। उसका नाम जद बिन क़ैस था।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने यह बैअत एक पेड़ के नीचे ली। हज़रत उमर रज़ि० मुबारक हाथ थामे हुए थे और हज़रत माक़ल बिन यसार रज़ि० ने पेड़ की कुछ टहनियां पकड़ कर रसूलुल्लाह सल्ल० के ऊपर से हटा रखी थीं। इसी बैअत का नाम बैअते रिज़्वान है और इसी के बारे में अल्लाह ने यह आयत उतारी है—

'अल्लाह ईमान वालों से राज़ी हुआ, जबकि वे पेड़ के नीचे बैअत कर रहे थे।' (48 : 18)

समझौता और समझौते की धाराएं

बहरहाल क़ुरैश ने स्थिति की विकटता महसूस कर ली, इसलिए झट सुहैल बिन अम्र को समझौते के मामलों को तै करने के लिए रवाना किया और यह ताकीद कर दी कि समझौते में ज़रूर ही यह बात तै की जाए कि आप इस साल वापस चले जाएं। ऐसा न हो कि अरब यह कहें कि आप हमारे शहर में ज़बरदस्ती दाख़िल हो गए।

इन हिदायतों को लेकर सुहैल बिन अम्र आपके पास हाज़िर हुआ। नबी सल्ल० ने उसे आता देखकर सहाबा किराम से फ़रमाया, तुम्हारा काम तुम्हारे लिए आसान कर दिया। इस आदमी को भेजने का मतलब ही यह है कि क़ुरैश समझौता चाहते हैं।

सुहैल ने आपके पास पहुंचकर देर तक बातें की और आख़िरकार दोनों तरफ़ से समझौते की धाराएं तै हो गईं, जो ये थीं—

1. अल्लाह के रसूल सल्ल० इस साल मक्का में दाख़िल हुए बिना वापस जाएंगे, अगले साल मुसलमान मक्का आएंगे और तीन दिन ठहरेंगे। उनके साथ सवार का हथियार होगा, म्यानों में तलवारें होंगी और उनसे किसी क़िस्म की छेड़ख़ानी न की जाएगी।

2. दस साल तक दोनों फ़रीक़ लड़ाई बन्द रखेंगे। इस मुद्दत में लोग अम्न

से रहेंगे, कोई किसी पर हाथ नहीं उठाएगा।

3. जो मुहम्मद के अह्द व पैमान में दाख़िल होना चाहे, दाख़िल हो सकेगा और जो क़ुरैश के अह्द व पैमान में दाख़िल होना चाहे, दाख़िल हो सकेगा, जो क़बीला जिस फ़रीक़ में शामिल होगा, उस फ़रीक़ का एक हिस्सा समझा जाएगा, इसलिए ऐसे किसी क़बीले पर ज़्यादती हुई, तो ख़ुद उस फ़रीक़ पर ज़्यादती समझी जाएगी।

4. क़ुरैश का जो आदमी अपने सरपरस्त की इजाज़त के बिना, यानी भागकर—मुहम्मद के पास जाएगा, मुहम्मद उसे वापस कर देंगे, लेकिन मुहम्मद के साथियों में से जो आदमी शरण लेने के लिए भाग कर क़ुरैश के पास आएगा, क़ुरैश उसे वापस न करेंगे।

इसके बाद आपने हज़रत अली रज़ि० को बुलाया कि लेख लिख दें और यह इमला कराया 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'

इस पर सुहैल ने कहा, हम नहीं जानते रहमान क्या है? आप यों लिखिए, 'बिस्मिल्लाहुम-म' (ऐ अल्लाह ! तेरे नाम से)

नबी सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० को हुक्म दिया कि यही लिखो। इसके बाद आपने यह इमला कराया, 'यह वह बात है जिस पर मुहम्मद रसूलुल्लाह ने समझौता किया।'

इस पर सुहैल ने कहा, अगर हम यह जानते कि आप अल्लाह के रसूल हैं, तो फिर न तो हम आपको बैतुल्लाह से रोकते और न लड़ते, लेकिन आप मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिखवाइए।

आपने फ़रमाया, मैं अल्लाह का रसूल हूं चाहे तुम झुठलाते रहो। फिर हज़रत अली रज़ि० को हुक्म दिया कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिखें और शब्द 'अल्लाह के रसूल' मिटा दें, लेकिन हज़रत अली ने गवारा न किया कि शब्द को मिटाएं। इसलिए नबी सल्ल० ने ख़ुद अपने हाथ से मिटा दिया। इसके बाद पूरी दस्तावेज़ लिखी गई।

फिर जब समझौता पूरा हो गया, तो बनू ख़ुज़ाआ रसूलुल्लाह सल्ल० के अह्द व पैमान में दाख़िल हो गए। ये लोग असल में अब्दुल मुत्तलिब के ज़माने ही से बनू हाशिम के मित्र थे, जैसा कि किताब के शुरू में ही गुज़र चुका है। इसलिए इस अह्द व पैमान में दाख़िला असल में उसी पुरानी मिताई की ताकीद थी और उसको पक्का करना था। दूसरी ओर बनू बक्र क़ुरैश के अह्द व पैमान में दाख़िल हो गए।

अबू जन्दल की वापसी

अभी समझौते की दस्तावेज़ तैयार ही हो रही थी कि सुहलै के बेटे अबू जन्दल अपनी बेड़ियां घसीटे आ पहुंचे। वह निचले मक्का से निकलकर आए थे। उन्होंने यहां पहुंचकर अपने आपको मुसलमानों के दर्मियान डाल दिया। सुहैल ने कहा, यह पहला आदमी है जिसके बारे में मैं आपसे मामला करता हूं कि आप इसे वापस कर दें।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अभी तो हमने लेख पूरा भी नहीं किया है।

उसने कहा, तब मैं आपसे किसी बात पर समझौते का कोई मामला ही न करूंगा।

नबी सल्ल० ने फ़रमाया, अच्छा तो तुम उसको मेरे लिए छोड़ दो।

उसने कहा, मैं आपके लिए भी नहीं छोड़ सकता।

आपने फ़रमाया, नहीं, नहीं, इतना तो कर ही दो।

उसने कहा, नहीं, मैं नहीं कर सकता। फिर सुहैल ने अबू जन्दल के चेहरे पर चांटा रसीद किया और मुश्रिकों की ओर वापस करने के लिए उनके कुरते का गला पकड़ कर घसीटा।

अबू जन्दल ज़ोर-ज़ोर से चीख़कर कहने लगे, मुसलमानो ! क्या मैं मुश्रिकों की ओर वापस किया जाऊंगा कि वे मुझे मेरे दीन के बारे में फ़ित्ने में डालें ?

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अबू जन्दल ! सब्र करो और इसे सवाब की वजह समझो। अल्लाह तुम्हारे लिए और तुम्हारे साथ जो दूसरे कमज़ोर मुसलमान हैं, उन सबके लिए फैलने और पनाह पाने की जगह बनाएगा। हमने क़ुरैश से समझौता कर लिया है और हमने उनको और उन्होंने हमको इस पर अल्लाह का अह्द दे रखा है, इसलिए हम बद-अह्दी नहीं कर सकते।

इसके बाद हज़रत उमर रज़ि० उछल कर अबू जन्दल के पास पहुंचे। वह उनके पहलू में चलते जा रहे थे और कहते जा रहे थे, अबू जन्दल ! सब्र करो। ये लोग मुश्रिक हैं, इनका ख़ून तो बस कुत्ते का ख़ून है ! और साथ ही साथ अपनी तलवार का दस्ता भी उनके क़रीब करते जा रहे थे। हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि मुझे उम्मीद थी कि वह तलवार लेकर अपने बाप (सुहैल) को उड़ा देंगे, लेकिन उन्होंने अपने बाप के बारे में कोताही से काम लिया और समझौता लागू हो गया।

उमरा से हलाल होने के लिए क़ुरबानी और बालों की कटाई

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम समझौता लिखा कर फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया, उठो और अपने-अपने जानवर क़ुरबान कर दो, लेकिन अल्लाह की क़सम ! कोई भी न उठा, यहां तक कि आपने यह बात तीन बार दोहराई, मगर फिर भी कोई न उठा, तो आप उम्मे सलमा रज़ि० के पास गए और लोगों के इस पेश आने वाले तरीक़े का ज़िक्र किया। उम्मुल मोमिनीन ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आप ऐसा चाहते हैं ? तो फिर आप तशरीफ़ ले जाइए और किसी से कुछ कहे बिना चुपचाप अपना जानवर ज़िब्ह कर दीजिए और अपने नाई को बुलाकर सर मुंडा लीजिए।

इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाए और किसी से कुछ कहे बिना यही किया, यानी अपना क़ुरबानी का जानवर ज़िब्ह कर दिया और नाई को बुलाकर सर मुंडा लिया। जब लोगों ने देखा तो ख़ुद भी अपने-अपने जानवर ज़िब्ह कर दिए और इसके बाद आपस में एक दूसरे का सर मूंडने लगे। हाल यह था कि मालूम होता था कि दुख की वजह से एक दूसरे का क़त्ल कर देंगे। इस मौक़े पर गाय और ऊंट सात-सात आदमियों की ओर से ज़िब्ह किए गए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू जह्ल का एक ऊंट ज़िब्ह किया, जिसकी नाक में चांदी का एक हलक़ा था। इसका मक़्सद यह था कि मुश्रिक जल-भुनकर रह जाएं। फिर रसूलुल्लाह सल्ल० ने सर मुंडाने वालों के लिए तीन बार मग़्फ़िरत की दुआ की और कैंची से कटाने वालों के लिए एक बार।

इसी सफ़र में अल्लाह ने हज़रत काब बिन उजरा के सिलसिले में यह हुक्म भी उतारा कि जो आदमी पीड़ा की वजह से अपना सर (एहराम की हालत में) मुंडा ले, वह रोज़े या सदक़े या ज़बीहे (क़ुरबानी के जानवर) की शक्ल में फ़िदया दे।

हिजरत करने वाली औरतों की वापसी से इंकार

इसके बाद कुछ मुसलमान औरतें आ गईं। उनके अभिभावकों ने मांग की कि हुदैबिया में जो समझौता पूरा हो चुका है, उसकी रोशनी में उन्हें वापस किया जाए, लेकिन आपने यह मांग इस दलील की बुनियाद पर रद्द कर दी कि इस धारा के बारे में समझौते में जो शब्द लिखा गया था, वह यह था—

'और (यह समझौता इस शर्त पर किया जा रहा है कि) हमारा जो आदमी आपके पास जाएगा आप उसे ज़रूर ही वापस कर देंगे, भले ही वह आप ही के

दीन पर क्यों न हो।'[1]

इसलिए औरतें इस समझौते में सिरे से दाख़िल ही न थीं। फिर अल्लाह ने इसी सिलसिले में यह आयत भी उतारी—

'ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारे पास ईमान वाली औरतें हिजरत करके आएं, तो उनका इम्तिहान लो। अल्लाह उनके ईमान को बेहतर जानता है, पस अगर इन्हें ईमान वाली जान लो तो दुश्मनों को न पलटाओ। न वे दुश्मनों के लिए हलाल हैं और न दुश्मन उनके लिए हलाल हैं। अलबत्ता उनके काफ़िर शौहरों ने जो मह्र उनको दिए थे, उसे वापस दे दो और (फिर) तुम पर कोई हरज नहीं कि उनसे निकाह कर लो, जबकि उन्हें उनके मह्र अदा कर दो और काफ़िर औरतों को अपने निकाह में न रखो।' (60/10)

इस आयत के आने के बाद जब कोई ईमान वाली हिजरत करके आती तो रसूलुल्लाह सल्ल० अल्लाह के इस इर्शाद की रोशनी में उसका इम्तिहान लेते कि—

'(ऐ नबी!) जब तुम्हारे पास ईमान वाली औरतें आएं और इस बात पर बैअत करें कि वह अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न करेंगी, चोरी न करेंगी, ज़िना न करेंगी, अपनी औलाद को क़त्ल न करेंगी, अपने हाथ-पांव के बीच में कोई बोहतान गढ़ कर न लाएंगी, और किसी भली बात में तुम्हारी नाफ़रमानी न करेंगी, तो उनसे बैअत ले लो और उनके लिए अल्लाह से मग़्फ़िरत की दुआ करो। यक़ीनन अल्लाह माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है।' (60/12)

चुनांचे जो औरतें इस आयत में ज़िक्र की हुई शर्तों की पाबन्दी का वचन देतीं, आप उनसे फ़रमाते कि मैंने तुमसे बैअत कर ली, फिर उन्हें वापस न पलटाते।

इस हुक्म के मुताबिक़ मुसलमानों ने अपनी काफ़िर बीवियों को तलाक़ दे दी, उस वक़्त हज़रत उमर की दो बीवियां थीं जो शिर्क पर क़ायम थीं, आपने उन दोनों को तलाक़ दे दी, फिर एक से मुआविया ने शादी कर ली और दूसरी से सफ़्वान बिन उमैया ने।

---

1. सहीह बुख़ारी 1/380

इस समझौते की धाराओं की उपलब्धि

यह है हुदैबिया का समझौता

जो व्यक्ति इसकी धाराओं का उस पृष्ठ भूमि सहित जायज़ा लेगा, उसे कोई शक न रहेगा कि यह मुसलमानों की महान विजय थी, क्योंकि क़ुरैश ने अब तक मुसलमानों का वजूद ही नहीं माना था और वे इन्हें नेस्त व नाबूद करने का तहैया किये बैठे थे। उन्हें इंतिज़ार था कि एक न एक दिन यह ताक़त दम तोड़ देगी।

इसके अलावा क़ुरैश अरब प्रायद्वीप के धार्मिक नेता और दुनिया के अगुवा होने की हैसियत से इस्लामी दावत और आम लोगों के दर्मियान पूरी ताक़त के साथ रोक बने रहने की कोशिशें करते रहते थे। इस पृष्ठभूमि में देखिए तो समझौते की ओर मात्र झुक जाना ही मुसलमानों की ताक़त का मान लिया जाना और इस बात का एलान था कि अब क़ुरैश इस ताक़त को कुचलने की सामर्थ्य नहीं रखते।

फिर तीसरी धारा के पीछे साफ़ तौर पर यह मनोविज्ञान काम करता नज़र आता है कि क़ुरैश की दुनिया वाली चौधराहट और धार्मिक नेतृत्व का जो पद प्राप्त था, उसे उन्होंने बिल्कुल भुला दिया था और अब उन्हें सिर्फ़ अपनी पड़ी थी। उनको इससे कोई सरोकार न था कि बाक़ी लोगों का क्या बनता है, यानी अगर सारे का सारा अरब प्रायद्वीप इस्लाम की गोद में आ जाए, तो क़ुरैश को इसकी कोई परवाह नहीं और वे इसमें किसी तरह का इस्तक्षेप न करेंगे। क्या क़ुरैश के इरादों और उद्देश्यों को देखते हुए यह उनकी ज़बरदस्त हार नहीं है? और मुसलमानों के उद्देश्यों को देखते हुए यह खुली जीत नहीं है? आख़िर इस्लाम वालों और इस्लाम विरोधियों के बीच जो ख़ूनी लड़ाइयां हुई थीं, उनका मंशा और मक़्सद इसके सिवा और क्या था कि अक़ीदे और दीन के बारे में लोगों को पूरी आज़ादी मिल जाए। यानी अपनी आज़ाद मर्ज़ी से जो व्यक्ति चाहे मुसलमान हो और जो चाहे काफ़िर रहे। कोई ताक़त उनकी मर्ज़ी और इरादे के सामने रोड़ा बनकर खड़ी न हो। मुसलमानों का यह मक़्सद तो हरगिज़ न था कि दुश्मन के माल ज़ब्त किए जाएं, उन्हें मौत के घाट उतारा जाए और उन्हें ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया जाए, यानी मुसलमानों का अभिप्राय केवल वही था, जिसे अल्लामा इक़बाल ने यों बयान किया है—

शहादत है मतलूब व मक़्सूद मोमिन
न माले ग़नीमत, न किशवर कुशाई

आप देख सकते हैं कि इस समझौते के ज़रिए मुसलमानों का ऊपर लिखा मक़्सद अपनी तमाम पहलुओं समेत हासिल हो गया और इस तरह हासिल हो गया कि कभी-कभी लड़ाई में खुली जीत पा लेने के बाद भी नहीं मिल पाता। फिर इस आज़ादी की वजह से मुसलमानों ने दावत व तब्लीग़ के मैदान में बहुत ज़बरदस्त कामियाबी हासिल की। चुनांचे मुसलमान फ़ौजों की तायदाद जो इस समझौते से पहले तीन हज़ार से ज़्यादा कभी न हो सकी थी, वह सिर्फ़ दो साल के भीतर मक्का-विजय के मौक़े पर दस हज़ार हो गई।

धारा 2 भी वास्तव में इस खुली जीत का एक हिस्सा है, क्योंकि लड़ाई की शुरुआत मुसलमानों ने नहीं, बल्कि मुश्रिकों ने की थी। अल्लाह का इर्शाद है—

'पहली बार उन्हीं लोगों ने तुम लोगों से शुरुआत की।'

जहां तक मुसलमानों की जासूसी और फ़ौजी गश्तों का ताल्लुक़ है, तो मुसलमानों का मक़्सूद उनसे सिर्फ़ यह था कि क़ुरैश अपने मूर्खता भरे घमंड से और अल्लाह का रास्ता रोकने से बाज़ आ जाएं, और बराबरी की शर्त पर मामला कर लें यानी हर फ़रीक़ अपनी-अपनी डगर पर चलता रहने के लिए आज़ाद रहे।

अब विचार कीजिए कि दस वर्षीय लड़ाई बन्द रखने का समझौता आख़िर इस घमंड और अल्लाह की राह में रुकावट से बाज़ आने ही का तो वचन है, जो इस बात की दलील है कि लड़ाई का शुरू करने वाला कमज़ोर और मजबूर होकर अपने मक़्सद में नाकाम हो गया।

जहां तक पहली धारा का ताल्लुक़ है, तो यह भी असल में मुसलमानों की नाकामी के बजाए कामियाबी की निशानी है, क्योंकि यह धारा वास्तव में उस पाबन्दी के ख़त्म करने का एलान है, जिसे क़ुरैश ने मुसलमानों पर मस्जिदे हराम में दाख़िले के बारे में लगा रखी थी। अलबत्ता इस धारा में क़ुरैश के लिए भी तसल्ली की इतनी सी बात थी कि वे उस एक साल मुसलमानों को रोकने में सफल रहे, पर ज़ाहिर है यह वक़्ती और बेहैसियत फ़ायदा था।

इसके बाद इस समझौते के सिलसिले में यह पहलू भी ध्यान देने का है कि क़ुरैश ने मुसलमानों को ये तीन रियायतें देकर सिर्फ़ एक रियायत हासिल की, जिसका ज़िक्र धारा 4 में है, लेकिन यह रियायत हददर्जा मामूली और बे-क़ीमत थी और इसमें मुसलमानों का कोई नुक़्सान न था, क्योंकि यह मालूम था कि जब तक मुसलमान रहेगा अल्लाह, रसूल और मदीनतुल इस्लाम से

भाग नहीं सकता। उसके भागने की सिर्फ़ एक ही शक्ल हो सकती है कि वह विधर्मी (मुर्तद) हो जाए, चाहे ज़ाहिर में, चाहे परदे के पीछे से और ज़ाहिर है कि जब मुर्तद हो जाए, तो मुसलमानों को इसकी ज़रूरत नहीं, बल्कि इस्लामी समाज में उसकी मौजूदगी से कहीं बेहतर है कि वह अलग हो जाए और यही वह ख़ास बात है, जिसकी ओर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अपने इस इर्शाद में इशारा फ़रमाया था—

'जो हमें छोड़कर इन मुश्रिकों की ओर भागा, उसे अल्लाह ने दूर (या बर्बाद) कर दिया।'[1]

बाक़ी रहे मक्के के वे निवासी, जो मुसलमान हो चुके थे या मुसलमान होने वाले थे, उनके लिए अगरचे इस समझौते के मुताबिक़ मदीना में शरण लेने की गुंजाइश न थी, लेकिन अल्लाह की ज़मीन तो बहरहाल फैली हुई थी। क्या हब्शा की ज़मीन ने ऐसे नाज़ुक वक़्त में मुसलमानों के लिए अपनी गोद नहीं खोल रखी थी, जबकि मदीना निवासी इस्लाम का नाम भी नहीं जानते थे। इसी तरह आज भी ज़मीन का कोई टुकड़ा मुसलमानों के लिए अपनी गोद खोल सकता था और यही बात थी जिसकी ओर रसूलुल्लाह सल्ल० ने अपने इस इर्शाद में इशारा फ़रमाया था—

'उनका जो आदमी हमारे पास आएगा, अल्लाह उसके लिए फैलाव और निकलने की जगह बना देगा।'[2]

फिर इस क़िस्म के रिज़र्वेशन से अगरचे ज़ाहिर में क़ुरैश ने मान-मर्यादा हासिल कर ली थी, पर सच तो यह है कि यह क़ुरैश की ज़बरदस्त मनोवैज्ञानिक घबराहट, परेशानी, दबाव और मात खाने की निशानी थी। इससे पता चलता है कि उन्हें अपने बुतपरस्त समाज के बारे में बड़ा डर लगा हुआ था और वे महसूस कर रहे थे कि उनका यह समाजी घरौंदा एक खाई के ऐसे खोखले और अन्दर से कटे हुए किनारे पर खड़ा है जो किसी भी दम गिरने वाला है, इसलिए उसकी हिफ़ाज़त के लिए इस तरह के रिजर्वेशन का हासिल कर लेना ज़रूरी है।

दूसरी ओर रसूलुल्लाह सल्ल० ने जिस खुले दिल से यह शर्त मंज़ूर की कि क़ुरैश के यहां पनाह लेने वाले किसी मुसलमान को वापस न तलब करेंगे वह इस बात की दलील है कि आपको अपने समाज के जमाव और पक्केपन पर पूरा-पूरा

---

1. सहीह मुस्लिम, बाब सुलहे हुदैबिया 2/105
2. सहीह मुस्लिम, 2/105

भरोसा था और इस क़िस्म की शर्त आपके लिए क़तई तौर पर किसी अंदेशे की वजह न थी।

मुसलमानों का ग़म

यह है समझौते की धाराओं की हक़ीक़त, लेकिन इन धाराओं में दो बातें देखने में ऐसी थीं कि इनकी वजह से मुसलमानों को बड़ा दुख हुआ। एक यह कि आपने बताया था कि आप बैतुल्लाह तशरीफ़ ले जाएंगे और उसका तवाफ़ करेंगे, लेकिन आप तवाफ़ किए बिना वापस हो रहे थे। दूसरे यह कि आप अल्लाह के रसूल हैं और हक़ पर हैं और अल्लाह ने अपने दीन को ग़ालिब करने का वायदा कर रखा है, फिर क्या वजह है कि आपने क़ुरैश का दबाव क़ुबूल किया और दबकर समझौता किया?

ये दोनों बातें तरह-तरह के सन्देह और गुमान पैदा कर रही थीं। इधर मुसलमानों के एहसास इतने चुटीले थे कि वे समझौते की धाराओं की गहराइयों और नतीजों पर ग़ौर करने के बजाए दुख और मलाल के बोझ तले दबे हुए थे और शायद सबसे ज़्यादा ग़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को था। चुनांचे उन्होंने प्यारे नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या हम लोग हक़ पर और वे लोग बातिल पर नहीं हैं?

आपने फ़रमाया, क्यों नहीं?

उन्होंने कहा, क्या हमारे मारे गए लोग जन्नत में और उनके मारे गए लोग जहन्नम में नहीं हैं?

आपने फ़रमाया, क्यों नहीं?

उन्होंने कहा, तो फिर क्यों हम अपने दीन के बारे में दबाव क़ुबूल करें और ऐसी हालत में पलटें कि अभी अल्लाह ने हमारे और उनके दर्मियान फ़ैसला नहीं किया है?

आपने फ़रमाया, ख़त्ताब के बेटे! मैं अल्लाह का रसूल हूं और उसकी नाफ़रमानी नहीं कर सकता। वह मेरी मदद करेगा और मुझे हरगिज़ बर्बाद न करेगा।

उन्होंने कहा, क्या आपने हमसे यह बयान नहीं किया था कि आप बैतुल्लाह के पास तशरीफ़ ले जाएंगे और उसका तवाफ़ करेंगे?

आपने फ़रमाया, क्यों नहीं? लेकिन क्या मैंने यह भी कहा था कि हम इसी साल आएंगे?

उन्होंने कहा, नहीं।

आपने फ़रमाया, तो बहरहाल तुम बैतुल्लाह के पास आओगे और उसका तवाफ़ करोगे।

इसके बाद हज़रत उमर रज़ि०. गुस्से में बिफरे हुए हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास पहुंचे और उनसे भी वही बातें कहीं जो अल्लाह के रसूल सल्ल० से कही थीं और उन्होंने भी ठीक वही जवाब दिया जो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने दिया था और आख़िर में इतना और बढ़ा दिया कि आप दामन थामे रहो, यहां तक कि मौत आ जाए, क्योंकि ख़ुदा की क़सम, आप हक़ पर हैं।

इसके बाद 'इन्ना फ़-तहना ल-क फ़त्हम मुबीना०' की आयतें उतरीं, जिनमें इस समझौते को खुली जीत कहा गया है। ये आयतें उतरीं तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को बुलाया और पढ़कर सुनाया, वह कहने लगे, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह जीत है?

फ़रमाया, हां, इससे उनके दिल को सुकून हुआ और वापस चले गए।

बाद में हज़रत उमर रज़ि० को अपनी ग़लती का एहसास हुआ, तो बड़े शर्मिंदा हुए। ख़ुद उनका बयान है कि मैंने उस दिन जो ग़लती की थी और जो बात कह दी थी, उससे डरकर मैंने बहुत से अमल किए, बराबर सदक़ा व ख़ैरात करता रहा, रोज़े रखता और नमाज़ पढ़ता रहा और ग़ुलाम आज़ाद करता रहा, यहां तक कि अब जाकर मुझे भलाई की उम्मीद है।[1]

कमज़ोर मुसलमानों का मसला हल हो गया

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना वापस तशरीफ़ लाकर सन्तुष्ट हो चुके तो एक मुसलमान, जिसे मक्के में पीड़ा दी जा रही थी, छूटकर भाग आया। उनका नाम अबू बसीर था। वह क़बीला सक़ीफ़ से ताल्लुक़ रखते थे और क़ुरैश के मित्र थे। क़ुरैश ने उनकी वापसी के लिए जो आदमी भेजे और यह कहलवाया कि हमारे और आपके दर्मियान जो अह्द व क़रार है, उसे पूरा कीजिए। नबी सल्ल० के अबू बसीर को उन दोनों के हवाले कर दिया।

ये दोनों उन्हें साथ लेकर रवाना हुए और ज़ुलहुलैफ़ा पहुंचकर उतरे और

---

1. हुदैबिया समझौते के स्रोत ये हैं, फ़त्हुल बारी 7/439-458, सहीह बुख़ारी 1/378-381, 2/598, 600, 717, सहीह मुस्लिम 2/104-105, 106, इब्ने हिशाम 2/308-322 ज़ादुल मआद 2/122-127, तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब, लेख इब्ने जौज़ी, पृ० 39-40

खजूर खाने लगे। अबू बसीर ने एक व्यक्ति से कहा, ऐ फ़्लां! ख़ुदा की क़सम ! मैं देखता हूं कि तुम्हारी यह तलवार बहुत अच्छी है।

उस व्यक्ति ने उसे म्यान से निकालकर कहा, हां, हां, अल्लाह की क़सम, यह बहुत अच्छी है। मैंने इसका बहुत बार तजुर्बा किया है।

अबू बसीर ने कहा, तनिक मुझे दिखाओ, मैं भी देखूं।

उस व्यक्ति ने अबू बसीर को तलवार दे दी और अबू बसीर ने तलवार लेते ही उसे मारकर ढेर कर दिया।

दूसरा व्यक्ति भागकर मदीना आया और दौड़ता हुआ मस्जिदे नबवी में घुस गया। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उसे देखकर फ़रमाया, इसने खतरा किया है।

वह व्यक्ति नबी सल्ल० के पास पहुंचकर बोला, मेरा साथी, ख़ुदा की क़सम ! क़त्ल कर दिया गया और मैं भी क़त्ल ही किया जाने वाला हूं। इतने में अबू बसीर आ गए और बोले, ऐ अल्लाह के रसूल ! अल्लाह ने आपका वायदा पूरा कर दिया। आपने मुझे उनकी ओर पलटा दिया, फिर अल्लाह ने मुझे उनसे नजात दे दी।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, उसकी मां की बर्बादी हो। उसे कोई साथी मिल जाए तो यह लड़ाई की आग भड़का देगा। यह बात सुनकर अबू बसीर समझ गए कि अब उन्हें फिर काफ़िरों के हवाले किया जाने वाला है, इसलिए वह मदीना से निकलकर समुद्र तट पर आ गए।

उधर अबू जन्दल बिन सुहैल भी छूट भागे और अबू बसीर से आ मिले। अब क़ुरैश का जो आदमी भी इस्लाम लाकर भागता, वह अबू बसीर से आ मिलता, यहां तक कि उनकी एक जमाअत इकट्ठा हो गई।

इसके बाद इन लोगों को शामदेश आने-जाने वाले किसी भी क़ुरैशी क़ाफ़िले का पता चलता तो वे उससे ज़रूर छेड़छाड़ करते और क़ाफ़िले वालों को मारकर उनका माल लूट लेते। क़ुरैश ने तंग आकर नबी सल्ल० को अल्लाह और रिश्तेदारी का वास्ता देते हुए यह पैग़ाम दिया कि आप इन्हें अपने पास बुला लें और अब जो भी आपके पास आएगा, पनाह में रहेगा। इसके बाद नबी सल्ल० ने उन्हें बुला लिया और वे मदीना आ गए।[1]

---

1. पिछले स्रोत ही देखें।

क़ुरैश के बड़ों का इस्लाम अपनाना

इस समझौते के बाद सन् 07 हि० के शुरू में हज़रत अम्र बिन आस, ख़ालिद बिन वलीद और उस्मान बिन तलहा रज़ि० मुसलमान हो गए। जब ये लोग नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने फ़रमाया, मक्का ने अपने सपूतों को हमारे हवाले कर दिया है।[1]

---

1. इस बारे में बड़ा मतभेद है कि ये सहाबा किराम किस सन् में इस्लाम लाए। अस्माउर्रिजाल की आम किताबों में इसे सन् 08 की घटना कहा गया है, लेकिन नजाशी के पास हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० के इस्लाम लाने की घटना मशहूर घटना है जो सन् 07 हि० की है और यह भी मालूम है कि हज़रत ख़ालिद और उस्मान बिन तलहा उस वक़्त मुसलमान हुए थे जब हज़रत अम्र बिन आस हब्शा से वापस आए थे, क्योंकि उन्होंने हब्शा से वापस आकर मदीने का इरादा किया तो रास्ते में इन दोनों से मुलाक़ात हुई और तीनों ने एक साथ नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम क़ुबूल किया। इसका मतलब यह है कि ये सभी लोग सन् 07 हि० के शुरू में मुसलमान हुए। (अल्लाह बेहतर जानता है)

दूसरा मरहला

नई तब्दीली

हुदैबिया का समझौता, असल में इस्लाम और मुसलमानों की ज़िंदगी में एक नई तब्दीली की शुरुआत थी, चूंकि इस्लाम की दुश्मनी में क़ुरैश सबसे ज़्यादा मज़बूत, हठधर्म और लड़ाका क़ौम की हैसियत रखते थे, इसलिए जब वे लड़ाई के मैदान में पसपा होकर अम्न व सलामती की ओर आ गए तो लड़ने वालों के तीन बाजुओं, क़ुरैश, ग़तफ़ान और यहूदी—में से सबसे मज़बूत बाज़ू टूट गया और चूंकि क़ुरैश ही पूरे अरब प्रायद्वीप में बुतपरस्ती के नुमाइन्दे और सरदार थे, इसलिए लड़ाई के मैदान से उनके हटते ही पुतपरस्तों की भावनाएं ठंडी पड़ गई और उनकी दुश्मनी भरे रवैए में बड़ी हद तक तब्दीली आ गई। चुनांचे हम देखते हैं कि इस समझौते के बाद ग़तफ़ान की ओर से भी किसी भी बड़ी कोशिश और शोर-शराबा का प्रदर्शन नहीं हुआ, बल्कि उन्होंने कुछ किया भी तो यहूदियों के भड़काने पर।

जहां तक यहूदियों का ताल्लुक़ है तो ये यसरिब से निकाले जाने के बाद ख़ैबर को अपनी चालों और षड्यंत्रों का अड्डा बना चुके थे, वहां उनके शैतान अंडे-बच्चे दे रहे थे और फ़िल्ने की आग भड़काने में लगे हुए थे। वे मदीना के आस-पास बद्दुओं को भड़काते रहते थे और नबी सल्ल० और मुसलमानों के ख़ात्मे या कम से कम उन्हें बड़े पैमाने पर पीड़ा पहुंचाने की तदबीरें सोचते रहते थे, इसलिए हुदैबिया के समझौते के बाद नबी सल्ल० ने सबसे पहला फ़ैसला करने वाला जो क़दम उठाया वह इसी फ़िल्ने और फ़साद के केन्द्र के ख़िलाफ़ किया।

बहरहाल शान्ति के इस मरहले पर जो हुदैबिया के समझौते के बाद शुरू हुआ था, मुसलमानों को इस्लामी दावत फैलाने और प्रचार करने का अहम मौक़ा हाथ आ गया था, इसलिए इस मैदान में उनकी गतिविधियां तेज़ से तेज़तर हो गईं जो लड़ाई की सरगर्मियों पर छाई रहीं, इसलिए मुनासिब होगा कि इस दौर की दो क़िस्में की जाएं—

1. तब्लीग़ी (प्रचार संबंधी) सरगर्मियां और बादशाहों और सरदारों के नाम पत्र,

2. जंगी सरगर्मियां (सामरिक गतिविधियां)

फिर अनुचित न होगा कि इस मरहले की जंगी सरगर्मियां पेश करने से पहले बादशाहों और सरदारों के नाम पत्रों का विवरण दे दिया जाए, क्योंकि स्वाभाविक रूप से इस्लाम दावत में प्रथम है, बल्कि यही वह मक़्सद है जिसके लिए मुसलमानों ने तरह-तरह की परेशानियों और मुसीबतों, लड़ाई और फ़िल्ने, हंगामे और कुढ़न सहन किए थे।

बादशाहों और सरदारों के नाम पत्र

सन् 06 हि० के अन्त में जब अल्लाह के रसूल सल्ल० हुदैबिया से तशरीफ़ लाए, तो आपने अलग-अलग बादशाहों के नाम पत्र लिखकर उन्हें इस्लाम की दावत दी।

आपने इन पत्रों के लिखने का इरादा फ़रमाया तो आपसे कहा गया कि बादशाह उसी शक्ल में पत्र स्वीकार करेंगे जब उन पर मुहर लगी हो, इसलिए नबी सल्ल० ने चांदी की अंगूठी बनवाई जिस पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लिखा हुआ था। यह लिखावट तीन लाइनों में थी। मुहम्मद एक लाइन में, रसूल एक लाइन में और अल्लाह एक लाइन में, ऊपर नीचे तीन लाइनें।[1]

फिर आपने जानकारी रखने वाले अनुभवी सहाबा रज़ि० को क़ासिद (दूत) के रूप में चुना और उन्हें बादशाहों के पास पत्र देकर रवाना फ़रमाया।

अल्लामा मंसूरपुरी ने पूरे विश्वास के साथ लिखा है कि आपने ये दूत अपने ख़ैबर कूच करने से कुछ दिन पहले पहली मुहर्रम सन् 07 हि० को भेजे थे।[2] आगे की पंक्तियों में ये पत्र और उनके कुछ प्रभावों को लिखा जा रहा है।

1. नजाशी शाह हब्श के नाम पत्र

इस नजाशी का नाम अस्हमा बिन अबजर था। नबी सल्ल० ने उसके नाम जो पत्र लिखा उसे अम्र बिन उमैया ज़ुमरी के हाथों सन् 06 हि० के आख़िर या सन् 07 हि० के शुरू में रवाना फ़रमाया—

तबरी ने इस पत्र का उल्लेख किया है, लेकिन उसे ग़ौर से देखने से अन्दाज़ा होता है कि यह वह पत्र नहीं है, जिसे रसूलुल्लाह सल्ल० ने हुदैबिया समझौते के बाद लिखा था, बल्कि शायद यह उस पत्र का हिस्सा है जिसे आपने मक्की दौर में हज़रत जाफ़र को उनकी हब्शा की हिजरत के वक़्त दिया था, क्योंकि पत्र के अन्त में उन मुहाजिरों का उल्लेख इन शब्दों में किया गया है—

'मैंने तुम्हारे पास अपने चचेरे भाई जाफ़र को मुसलमानों की एक जमाअत के साथ भेजा है। जब वे तुम्हारे पास पहुंचें तो उन्हें अपने पसा ठहराना और जब्र न अपनाना।'

---

1. सहीह बुख़ारी 2/872-873
2. रहमतुल लिल आलमीन 1/171

बैहक़ी ने इब्ने अब्बास रज़ि० से एक और पत्र का लिखा जाना नक़ल किया है, जिसे नबी सल्ल० ने नजाशी के पास रवाना किया था। उसका अनुवाद यह है—

'यह पत्र है मुहम्मद नबी की ओर से नजाशी असहम शाह हब्श के नाम

उस पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे और अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, उसने न कोई बीवी अपनाई, न लड़का (और मैं इसकी भी गवाही देता हूं कि) मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं और मैं तुम्हें इस्लाम की दावत देता हूं, क्योंकि मैं उसका रसूल हूं, इसलिए इस्लाम लाओ, सलामत रहोगे। 'ऐ अहले किताब! एक ऐसी बात की तरफ़ आओ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान बराबर है कि हम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत न करें, उसके साथ किसी को शरीक न ठहराएं और हममें से कोई किसी को रब न बनाए। पस अगर वे मुंह मोड़ें तो कह दो कि गवाह रहो, हम मुसलमान हैं।' अगर तुमने (यह दावत) क़ुबूल न की तो तुम पर अपनी क़ौम के नसारा का गुनाह है।'[1]

डा० हमीदुल्लाह साहब (पेरिस) ने एक और पत्र को नक़ल किया है जो निकट अतीत में मिला है और सिर्फ़ एक शब्द के अन्तर के साथ यही पत्र अल्लामा इब्ने क़य्यिम की पुस्तक 'ज़ादुल मआद' में भी मौजूद है। डाक्टर साहब ने उस पत्र की जांच-पड़ताल में बड़ी मेहनत की है, आज की जांच-पद्धति का फ़ायदा उठाया है और उस पत्र का फोटो भी पुस्तक में छाप दिया है।

उस पत्र का अनुवाद इस तरह है—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहम्मद रसूलुल्लाह की ओर से महान नजाशी हब्शा के नाम

उस व्यक्ति पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे। इसके बाद मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का गुणगान करता हूं, जिसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, जो क़ुद्दूस (अति पवित्र) और सलाम (सुख-शान्ति वाला) है, अम्न देनेवाला, रक्षक और निगरां है और मैं गवाही देता हूं कि ईसा बिन मरयम अल्लाह की रूह हैं और उसका कलिमा हैं। अल्लाह ने उन्हें पाकीज़ा, और पाकदामन मरयम बतूल की तरफ़ डाल दिया और उसकी रूह और फूंक से मरयम ईसा के लिए गर्भवती हुईं। जैसे अल्लाह ने आदम को अपने हाथ से पैदा किया। मैं एक अल्लाह की ओर और उसकी इताअत पर एक दूसरे की मदद की ओर दावत देता हूं और

---

1. दलाइलुन्नुबूवः, बैहक़ी 2/308, मुस्तदरक हाकिम 2/623

इस बात की ओर (बुलाता हूं) कि तुम मेरी पैरवी करो और जो कुछ मेरे पास आया है, उस पर ईमान लाओ, क्योंकि अल्लाह का रसूल हूं और मैं तुम्हें और तुम्हारी फ़ौज को अल्लाह की ओर बुलाता हूं और मैंने तब्लीग़ और नसीहत कर दी, इसलिए मेरी नसीहत क़ुबूल करो और उस व्यक्ति पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे।'[1]

डाक्टर हमीदुल्लाह साहब ने बड़े विश्वास के साथ कहा है कि यही वह पत्र है जिसे अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हुदैबिया के बाद नजाशी के पास रवाना फ़रमाया था, जहां तक इस पत्र की प्रामाणिकता का प्रश्न है, तो दलीलों पर नज़र डालने के बाद उसके सही होने में कोई सन्देह नहीं रहता, लेकिन इस बात की कोई दलील नहीं है कि नबी सल्ल० ने हुदैबिया के बाद यही पत्र भेजा था, बल्कि बैहक़ी ने जो पत्र इब्ने अब्बास रज़ि० की रिवायत से नक़ल किया है, उसकी शैली उन पत्रों से ज़्यादा मिलती-जुलती है, जिन्हें नबी सल्ल० ने हुदैबिया के बाद ईसाई बादशाहों और सरदारों के पास रवाना फ़रमाया था, क्योंकि जिस तरह आपने इन पत्रों से आयत 'या अह्लल-किताबि तआलौ इला कलिमतिन सवाइम बैनना. . . .' नक़ल किया था, उसी तरह बैहक़ी के नक़ल किए हुए इस पत्र में यह आयत लिखी हुई है। इसके अलावा इस पत्र में स्पष्ट रूप से असहमा का नाम भी मौजूद है, जबकि डा० हमीदुल्लाह साहब के नक़ल किए हुए पत्र में किसी का नाम नहीं है, इसलिए मेरा विचार है कि डाक्टर साहब का नक़ल किया हुआ वास्तव में वह पत्र है जिसे अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अस्हमा के देहान्त के बाद उसके उत्तराधिकारी के नाम लिखा था और शायद यही वजह है कि इसमें कोई नाम नहीं लिखा है।

इस क्रम की मेरे पास कोई दलील नहीं है, बल्कि इसकी बुनियाद केवल वे अन्दरूनी गवाहियां हैं जो इन पत्रों में मिल जाती हैं, अलबत्ता डाक्टर हमीदुल्लाह साहब पर ताज्जुब है कि उन्होंने इब्ने अब्बास रज़ि० की रिवायत से बैहक़ी के नक़ल किए हुए पूरे पत्र को पूरे विश्वास के साथ नबी सल्ल० का वह पत्र कहा है जो आपने अस्हमा की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी के नाम लिखा था। हालांकि इस पत्र में स्पष्ट रूप से अस्हमा का नाम मौजूद है। (ज्ञान तो अल्लाह का है)[2]

---

1. देखिए रसूले अकरम सल्ल० की सियासी ज़िंदगी, लेख, डा० हमीदुल्लाह साहब पृ० 108, 109, 122, 123, 124, 125 'जादुल मआद' में अन्तिम वाक्य 'वस्सलामु अला मनित्तबअिल' के बजाए 'अस्लिम अन-त' है, देखिए जादुल मआद 3/60
2. देखिए डा० हमीदुल्लाह साहब की किताब 'हुज़ूरे अकरम की सियासी ज़िंदगी', पृ० 108-114, 121-131

बहरहाल जब अम्र बिन उमैया ज़ुमरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्ल० का पत्र नजाशी के हवाले किया, तो नजाशी ने उसे लेकर आंख पर रखा और तख़्त से धरती पर उतर आया और हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब के हाथ पर इस्लाम क़ुबूल किया और नबी सल्ल के पास इस बारे में पत्र लिखा, जो यह है—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहम्मद रसूलुल्लाह की ख़िदमत में नजाशी असहमा की ओर से

ऐ अल्लाह नबी आप पर अल्लाह की ओर से सलाम और उसकी रहमत और बरकत हो, वह अल्लाह जिसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं। इसके बाद—

ऐ अल्लाह के रसूल ! मुझे आपका मान्य पत्र मिला। ज़िसमें आपने ईसा का मामले का ज़िक्र किया है, आसमान व ज़मीन के ख़ुदा क़ी क़सम ! आपने जो कुछ लिखा है, हज़रत ईसा उससे एक तिनका ज़्यादा न थे। वह वैसे हैं जैसे आपने ज़िक्र फ़रमाया है।[1] फिर जो कुछ हमारे पास भेजा है, हमने उसे जाना, और आपके चचेरे भाई और आपके सहाबा की मेहमानदारी की और मैं गवाही देता हूं कि आप अल्लाह के सच्चे और पक्के रसूल हैं और मैंने आपसे बैअत की और आपके चचेरे भाई से बैअत की और उनके हाथ पर अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए इस्लाम क़ुबूल किया।[2]

नबी सल्ल० ने नजाशी से यह भी कहा था कि वह हज़रत जाफ़र और हब्शा के दूसरे मुहाजिरों को रवाना कर दे। चुनांचे उसने हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी के साथ दो नावों में उनकी रवानगी का इन्तिज़ाम कर दिया। एक नाव के सवार जिसमें हज़रत जाफ़र और हज़रत अबू मूसा अशअरी और कुछ दूसरे सहाबा रज़ि० थे, सीधे ख़ैबर पहुंचकर नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और दूसरी नाव के सवार जिनमें ज़्यादातर बाल-बच्चे थे, सीधे मदीना पहुंचे।[3]

उसी नजाशी ने तबूक की लड़ाई के बाद रजब सन् 09 हि० में वफ़ात पाई। नबी सल्ल० ने उसकी वफ़ात ही के दिन सहाबा किराम रज़ि० को उसके मरने की सूचना दी और उस पर ग़ायबाना नमाज़े जनाज़ा पढ़ी।

उसकी वफ़ात के बाद दूसरा बादशाह उसका उत्तराधिकारी होकर राज-

---

1. हज़रत ईसा के बारे में ये वाक्य डा० हमीदुल्लाह साहब की इस राय की ताईद करते हैं कि उनका लिखा ख़त असहमा के नाम था।
2. ज़ादुल मआद 3/61
3. इब्ने हिशाम 2/359 वग़ैरह

सिंहासन पर बैठा, तो नबी सल्ल० ने उसके पास भी एक ख़त भेजा, लेकिन यह न मालूम हो सका कि उसने इस्लाम क़ुबूल किया या नहीं।[1]

2. मुक़ौक़िस, शाह मिस्र के नाम पत्र

नबी सल्ल० ने एक पत्र जुरैज बिन मत्ता[2] के नाम भेजा, जिसका लक़ब (उपाधि) मुक़ौक़िस था और जो मिस्र और स्कन्दरिया का बादशाह था। पत्र इस प्रकार है—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल मुहम्मद की ओर से मुक़ौकिस अज़ीम क़िब्त की ओर, उस पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे। इसके बाद—

मैं तुम्हें इस्लाम की दावत देता हूं, इस्लाम लाओ, सलामत रहोगे और इस्लाम लाओ, अल्लाह तुम्हें दोहरा अज्र देगा, लेकिन अगर तुमने मुंह मोड़ा तो तुम पर क़िब्त वालों का भी गुनाह होगा। ऐ क़िब्त वालो! एक ऐसी बात की तरफ़ आओ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान बराबर है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत करें और उसके साथ किसी चीज़ को न ठहराएं और हममें से कोई किसी को अल्लाह के बजाए रब न बनाए, पस अगर वे मुंह मोड़ें तो कहो कि गवाह रहो कि हम मुसलमान हैं।[3]

इस पत्र को पहुंचाने के लिए हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ को चुना गया। यह मुक़ौक़िस के दरबार में पहुंचे तो फ़रमाया, (इस ज़मीन पर) तुमसे पहले एक आदमी गुज़रा है जो अपने आपको सबसे बड़ा 'रब' समझता था। अल्लाह ने उसे आख़िर व अव्वल के लिए सबक़ बना दिया। पहले तो उसके ज़रिए लोगों से बदला लिया, फिर ख़ुद उसको बदले का निशाना बनाया, इसलिए

1. यह बात किसी क़दर सहीह मुस्लिम की रिवायत से ली जा सकती है जो हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत की गई है। (2.99)
2. इस नाम का अल्लामा मंसूरपुरी ने रहमतुल लिल आलमीन 2/178 में उल्लेख किया है। डा० हमीदुल्लाह साहब ने उसका नाम बिन यामीन बताया है। देखिए रसूले अक्रम की सियासी ज़िंदगी, पृ० 141
3. ज़ादुल मआद, लेख, इब्ने क़य्यिम 3/61, निकट अतीत में यह पत्र मिला है। डाक्टर हमीदुल्लाह साहब ने इसका जो फोटो छापा है, उसमें और ज़ादुल मआद के लेख में केवल दो अक्षरों का अन्तर है। ज़ादुल मआद में है 'अस्लिम तुस्लिम अस्लिम यूतिकल्लाहु' (आख़िर तक) और पत्र में फ़-अस्लिम तुस्लिम यूतिकल्लाहु। इसी तरह ज़ादुल मआद में है 'इस्मु अह्लिल क़िब्त' और पत्र में है 'इस्मुल क़िब्ति' देखिए रसूले अक्रम की सियासी ज़िंदगी पृ० 136/137

दूसरे से सबक़ लो, ऐसा न हो कि दूसरे तुमसे सबक़ लें।

मुक़ौक़िस ने कहा, हमारा एक दीन है, जिसे हम छोड़ नहीं सकते, जब तक कि उससे बेहतरीन दीन न मिल जाए।

हज़रत हातिब ने फ़रमाया, हम तुम्हें इस्लाम की दावत देते हैं, जिसे अल्लाह ने तमाम दीन के बदले में काफ़ी बना दिया है। देखो, इस नबी ने लोगों को (इस्लाम) की दावत दी तो उसके ख़िलाफ़ क़ुरैश सबसे ज़्यादा सख़्त साबित हुए। यहूदियों ने सबसे बढ़कर दुश्मनी की और ईसाई सबसे ज़्यादा क़रीब हैं। मेरी उम्र की क़सम! जिस तरह हज़रत मूसा ने हज़रत ईसा के लिए भविष्यवाणी की थी, उसी तरह हज़रत ईसा ने मुहम्मद सल्ल० के लिए भविष्वाणी की है और हम तुम्हें क़ुरआन मजीद की दावत इसी तरह देते हैं, जैसे तुम तौरात वालों को इंजील की दावत देते हो। जो नबी जिस क़ौम को पा जाता है, वह क़ौम उसकी उम्मत हो जाती है और उस पर ज़रूरी हो जाता है कि वह उस नबी की पैरवी करे और उसकी बात माने और तुमने इस नबी का दौर पा लिया है और फिर तुम्हें दीने मसीह से रोकते नहीं हैं, बल्कि हम तो उसी का हुक्म देते हैं।

मुक़ौक़िस ने कहा, मैंने इस नबी के मामले पर विचार किया, तो मैंने पाया कि वह किसी नापसन्दीदा बात का हुक्म नहीं देते और किसी पसन्दीदा बात से मना नहीं करते। वह न गुमराह जादूगर हैं और न झूठे काहिन, बल्कि मैं देखता हूं कि उनके साथ नुबूवत की यह निशानी है कि वह छिपे को निकालते और कानाफूसी की ख़बर देते हैं। मैं और आगे विचार करूंगा।

मुक़ौक़िस ने नबी सल्ल० का पत्र लेकर (आदर के साथ) हाथी दांत की एक डिबिया में रख दिया और मुहर लगाकर अपनी एक लौंडी के हवाले कर दिया। फिर अरबी लिखने वाले एक कातिब (लिखने वाले) को बुलाकर रसूलुल्लाह सल्ल० की सेवा में नीचे का पत्र लिखवाया—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के लिए मुक़ौक़िस अज़ीम क़िब्त की ओर से

आप पर सलाम, इसके बाद—

मैंने आपका पत्र पढ़ा और उसमें आपकी ज़िक्र की हुई बात और दावत को समझा। मुझे मालूम है कि अभी एक नबी का आना बाक़ी है। मैं समझता था वह शाम (सीरिया) से ज़ाहिर होगा। मैंने आपके दूत का सम्मान किया और आपकी ख़िदमत में दो लौंडियां भेज रहा हूं। जिन्हें क़िब्तियों में बड़ा दर्जा मिला हुआ है और कपड़े भेज रहा हूं और आपकी सवारी के लिए एक ख़च्चर भी भेंट कर रहा हूं। और आप पर सलाम।

मुक़ौक़िस ने इस पर कोई बढ़ोत्तरी नहीं की और इस्लाम नहीं लाया। दोनों लौंडियां मारिया और सीरीन थीं। ख़च्चर का नाम दुलदुल था, जो हज़रत मुआविया के समय तक बाक़ी रहा।[1]

नबी सल्ल० ने मारिया को अपने पास रखा और उनके पेट से नबी सल्ल० के साहबज़ादे (सुपुत्र) इब्राहीम पैदा हुए और सीरीन को हज़रत हस्सान बिन साबित अंसारी रज़ि० के हवाले कर दिया।

3. शाह फ़ारस ख़ुसरू परवेज़ के नाम पत्र

नबी सल्ल० ने एक पत्र बादशाह फ़ारस किसरा (खुसरो) के पास भेजा, जो यह था—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहम्मद रसूलुल्लाह की तरफ़ से किसरा अज़ीम फारस की ओर

उस आदमी पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे और अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए और गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं। मैं तुम्हें अल्लाह की ओर बुलाता हूं, क्योंकि मैं तमाम इंसानों की ओर अल्लाह का भेजा हुआ हूं, ताकि जो आदमी ज़िंदा है, उसे बुरे अंजाम से डराया जाए और काफ़िरों पर हक़ बात साबित हो जाए (यानी हुज्जत पूरी हो जाए) पस तुम इस्लाम लाओ, सालिम (सुरक्षित) रहोगे और अगर इससे इंकार किया तो तुम पर मजूस के गुनाह का बोझ भी होगा।'

इस पत्र को ले जाने के लिए आपने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी रज़ियल्लाहु अन्हु को चुना। उन्होंने यह पत्र बहरैन के अधिकारी को दिया। अब यह मालूम नहीं कि बहरैन के अधिकारी ने यह पत्र अपने किसी आदमी के ज़रिए किसरा के पास भेजा या ख़ुद हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी को रवाना किया। बहरहाल जब यह ख़त किसरा को पढ़कर सुनाया गया, तो उसने चाक कर दिया और घमंड में चूर होकर बोला, 'मेरी जनता में से एक तुच्छ दास अपना नाम मुझसे पहले लिखता है।'

रसूलुल्लाह सल्ल० को इस बात की ख़बर हुई, तो आपने फ़रमाया, 'अल्लाह उसकी बादशाही के टुकड़े-टुकड़े करे' और फ़िर वही हुआ जो आपने फ़रमाया था।

चुनांचे इसके बाद किसरा ने अपने यमन के गवर्नर बाज़ान को लिखा कि

1. ज़ादुल मआद 3/61

यह आदमी जो हिजाज़ में है, उसके यहां अपने दो मज़बूत और तन्दुरुस्त आदमी भेज दो कि वे उसे मेरे पास हाज़िर करें।

बाज़ान ने उसे पूरा करते हुए दो आदमी चुने एक उसका क़हरमान बानवीह जो गणितज्ञ था और फ़ारसी में लिखता था। दूसरा ख़ुसरो, यह भी फ़ारसी था।[1] और उन्हें एक पत्र देकर रसूलुल्लाह सल्ल० के पास रवाना किया, जिसमें आपको यह हुक्म दिया गया था कि उनके साथ किसरा के पास हाज़िर हो जाएं।

जब वे मदीना पहुंचे और नबी सल्ल० के सामने हाज़िर हुए तो एक ने कहा, शहंशाह किसरा ने शाह बाज़ान के एक पत्र के ज़रिए हुक्म दिया है कि वह आपके पास एक आदमी भेजकर आपको किसरा के सामने हाज़िर करे और बाज़ान ने इस काम के लिए मुझे आपके पास भेजा है कि आप मेरे साथ चलें। साथ ही दोनों ने धमकी भरी बातें भी कहीं। आपने उन्हें हुक्म दिया कि कल मुलाक़ात करें।

इधर ठीक उसी वक़्त जबकि मदीना में यह दिलचस्प 'मुहिम' चल रही थी, ख़ुद ख़ुसरो परवेज़ के घराने के अन्दर उसके ख़िलाफ़ एक ज़बरदस्त बग़ावत का शोला भड़क रहा था, जिसके नतीजे में क़ैसर की फ़ौज के हाथों फ़ौजों की बराबर मिलने वाली हार के बाद अब ख़ुसरो का बेटा शेरवैह अपने बाप को क़त्ल करके ख़ुद बादशाह बन बैठा था। यह मंगल की रात 10 जुमादल ऊला सन् 07 हि० की घटना है।[2]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस घटना का पता वह्य के ज़रिए चला, चुनांचे जब सुबह हुई और दोनों फ़ारसी नुमाइन्दे हाज़िर हुए, तो आपने उन्हें इस घटना की ख़बर दी। उन दोनों ने कहा, कुछ होश है, आप क्या कह रहे हैं? हमने इससे बहुत मामूली बात भी आपके अपराधों में गिन ली है, तो क्या हम आपकी यह बात बादशाह को लिख भेजें?

आपने फ़रमाया, हां, उसे मेरी बात की ख़बर कर दो और उससे यह भी कह दो कि मेरा दीन और मेरी हुकूमत वहां तक पहुंचकर रहेगी, जहां तक किसरा पहुंच चुका है, बल्कि इससे भी आगे बढ़ते हुए उस जगह जाकर रुकेगी जिससे आगे ऊंट और घोड़े के क़दम जा ही नहीं सकते। तुम दोनों उससे यह भी कह देना कि अगर तुम मुसलमान हो जाओ, तो जो कुछ तुम्हारे आधीन है, वह सब मैं तुम्हें दे दूंगा और तुम्हें तुम्हारी क़ौम का बादशाह बना दूंगा।

---

1. तारीख़े इब्ने ख़ल्लदून 2/37
2. फ़त्हुल बारी 8/127, तारीख़ इब्ने ख़ल्लदून 2/37

इसके बाद वे दोनों मदीना से चलकर बाज़ान के पास पहुंचे और उसे तमाम बातें बताईं। थोड़े दिनों बाद एक पत्र आया कि शरवैह ने अपने बाप को क़त्ल कर दिया है। शेरवैह ने अपने पत्र में यह भी हिदायत की थी कि जिस व्यक्ति के बारे में मेरे बाप ने तुम्हें लिखा था, उसे दूसरा आदेश आने तक छेड़ना मत।

इस घटना की वजह से बाज़ान और उसके फ़ारसी साथी (जो यमन में मौजूद थे) मुसलमान हो गए।[1]

4. क़ैसर शाहे रूम के नाम पत्र

सहीह बुख़ारी की एक लम्बी हदीस में उस पत्र का मूल पाठ लिखा हुआ है जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिरक़्ल शाहे रूम के पास रवाना फ़रमाया था, वह पत्र इस तरह है—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल मुहम्मद की ओर से हिरक़्ल अज़ीम रूम के नाम

उस व्यक्ति पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे, तुम इस्लाम लाओ सालिम रहोगे। इस्लाम लाओ अल्लाह तुम्हें तुम्हारा बदला दो बार देगा और अगर तुमने मुंह फेरा तो तुम पर अरीसियों (जनता) का भी गुनाह होगा। ऐ अह्ले किताब ! एक ऐसी बात की ओर आओ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान बराबर है कि हम अल्लाह के सिवा किसी और को न पूजें, उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करें और अल्लाह के बजाए हमारा कोई भी व्यक्ति किसी को रब न बनाए। पस अगर लोग रुख़ फेरें तो कह दो कि तुम लोग गवाह रहो, हम मुसलमान हैं।[2]

इस पत्र को पहुंचाने के लिए दिह्या बिन ख़लीफ़ा कलबी का चुनाव हुआ। आपने उन्हें हुक्म दिया कि वह यह पत्र सरबराह बसरी के हवाले कर दें और वह उसे क़ैसर के पास पहुंचा देगा। इसके बाद जो कुछ पेश आया, उसका विवेचन सहीह बुख़ारी में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में मिलता है। उनका इर्शाद है कि अबू सुफ़ियान बिन हर्ब ने उनसे बयान किया कि हिरक़्ल ने उसको क़ुरैश की एक जमाअत समेत बुलाया। यह जमाअत हुदैबिया समझौते के

---

1. मुहाज़राते ख़ज़री 1/147, फ़त्हुल बारी 8/127, 128, साथ ही देखिए रहमतुल- लिल आलमीन
2. सहीह बुख़ारी 1/4, 5

तहत अल्लाह के रसूल सल्ल० और क़ुरैश के कुफ़्फ़ार के दर्मियान तैशुदा अम्न की मुद्दत में शामदेश को तिजारत के लिए गई हुई थी। ये लोग एलिया (बैतुल मक़्दिस) में उसके पास हाज़िर हुए।[1]

हिरक़्ल ने उन्हें अपने दरबार में बुलाया। उस वक़्त उसके गिर्दा गिर्द रूम के बड़े-बड़े लोग थे। फिर उसने उनको और अपने तर्जुमान को बुलाकर कहा कि यह आदमी जो अपने आपको नबी समझता है, उससे तुम्हारा कौन-सा आदमी सबसे ज़्यादा क़रीब नसबी ताल्लुक रखता है?

अबू सुफ़ियान का बयान है कि मैंने कहा, मैं उसका सबसे ज़्यादा क़रीबी ख़ानदानी आदमी हूं।

हिरक़्ल ने कहा, इसे मेरे क़रीब कर दो और इसके साथियों को भी क़रीब करके उसकी पीठ के पीछे बिठा दो। इसके बाद हिरक़्ल ने अपने तर्जुमान के ज़रिए अबू सुफ़ियान के साथियों से कहा कि मैं इस आदमी से उस आदमी (नबी सल्ल०) के बारे में सवाल करूंगा। अगर यह झूठ बोले तो तुम लोग उसे झुठला देना।

अबू सुफ़ियान कहते हैं कि ख़ुदा की क़सम! अगर झूठ बोलने की बदनामी का डर न होता तो मैं आपके बारे में यक़ीनन झूठ बोलता।

अबू सुफ़ियान कहते हैं, इसके बाद पहला सवाल जो हिरक़्ल ने मुझसे आपके बारे में किया, वह यह था कि तुम लोगों में उसका ख़ानदान कैसा है?

मैंने कहा—वह ऊंचे ख़ानदान वाला है।

हिरक़्ल ने कहा—तो क्या यह बात इससे पहले भी तुममें से किसी ने कही थी?

मैंने कहा—नहीं।

---

1. उस वक़्त क़ैसर इस बात पर अल्लाह का शुक्र बजा लाने के लिए हम्स से एलिया (बैतुल मक़्दिस) गया हुआ था कि अल्लाह ने उसके हाथों फ़ारस वालों को ज़बरदस्त हार दी। (देखिए सहीह मुस्लिम 2/99) विस्तार में यों है कि फ़ारसियों ने ख़ुसरो परवेज़ को क़त्ल करने के बाद रूमियों से उनके क़ब्ज़े के इलाक़ों की वापसी की शर्त पर सुलह कर ली और वह क्रास भी वापस का दिया जिसके बारे में ईसाइयों का अक़ीदा है कि उसी पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को फांसी दी गई थी। क़ैसर इस समझौते के बाद क्रास को असल जगह लगाने और इस खुली जीत पर अल्लाह का शुक्र बजा लाने के लिए 629 ई० यानी सन् 07 हि० में एलिया (बैतुल मक़्दिस) गया था।

हिरक़्ल ने कहा—क्या इसके बाप-दादा में से कोई बादशाह गुज़रा है?

मैंने कहा—नहीं।

हिरक़्ल ने कहा—अच्छा तो बड़े लोगों ने उसकी पैरवी की है या कमज़ोरों ने?

मैंने कहा—बल्कि कमज़ोरों ने।

हिरक़्ल ने कहा—क्या इस दीन में दाख़िल होने के बाद कोई व्यक्ति इस दीन से घबराकर अलग भी हो गया है?

मैंने कहा—नहीं।

हिरक़्ल ने कहा—उसने जो बात कही है, क्या उसे कहने से पहले तुम लोग उसको झूठे के नाम से याद करते थे?

मैंने कहा, नहीं।

हिरक़्ल ने कहा, क्या वह बद-अह्दी भी करता है?

मैंने कहा, नहीं, अलबत्ता हम लोग इस वक़्त उसके साथ समझौते की एक मुद्दत गुज़ार रहे हैं, मालूम नहीं, इसमें वह क्या करेगा?

अबू सुफ़ियान कहते हैं कि इस एक वाक्य के सिवा मुझे और कहीं कुछ घुसेड़ने का कोई मौक़ा न मिला।

हिरक़्ल ने कहा—क्या तुम लोगों ने उससे लड़ाई लड़ी है?

मैंने कहा—जी हां।

हिरक़्ल ने कहा—तो तुम्हारी और उसकी लड़ाई कैसी रही?

मैंने कहा—लड़ाई हमारे और उसके बीच डोल है। वह हमें दुख दे लेता है और हम उसे दुख पहुंचा लेते हैं।

हिरक़्ल ने कहा—वह तुम्हें किन बातों का हुक्म देता है?

मैंने कहा—वह कहता है सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो। तुम्हारे बाप-दादा जो कुछ कहते थे, उसे छोड़ दो और वह हमें नमाज़, सच्चाई, परहेज़गारी, पाकदामनी और रिश्तेदारों के साथ अच्छे बर्ताव का हुक्म देता है।

इसके बाद हिरक़्ल ने अपने तर्जुमान से कहा, तुम इस आदमी (अबू सुफ़ियान) से कहो कि मैंने तुमसे उस व्यक्ति का ख़ानदान पूछा तो तुमने बताया कि वह ऊंचे ख़ानदान का है और क़ायदा यही है कि पैग़म्बर अपनी क़ौम के ऊंचे ख़ानदान में भेजे जाते हैं।

और मैंने मालूम किया कि क्या यह बात इससे पहले भी तो तुममें से किसी

ने कही थी। तुमने बतलाया नहीं। मैं कहता हूं कि अगर यह बात इससे पहले किसी और ने कही होती, तो मैं यह कहता कि यह आदमी एक ऐसी बात की नक़्क़ाली कर रहा है, जो इससे पहले कही जा चुकी है।

और मैंने मालूम किया कि क्या इसके बाप-दादों में कोई बादशाह गुज़रा है, तो तुमने बतलाया कि नहीं। मैं कहता हूं कि अगर उसके बाप-दादों में कोई बादशाह गुज़रा होता तो मैं कहता कि यह व्यक्ति अपने बाप की बादशाही चाहता है।

और मैंने यह मालूम किया कि क्या जो बात उसने कही है, उसे कहने से पहले तुम लोग उसमें झूठ पाते थे? तो तुमने बताया कि नहीं। और मैं अच्छी तरह जानता हूं कि ऐसा नहीं हो सकता कि वह लोगों पर तो झूठ न बोले और अल्लाह पर झूठ बोले।

मैंने यह भी मालूम किया कि बड़े लोग उसकी पैरवी कर रहे हैं या कमज़ोर। तो तुमने बताया कि कमज़ोरों ने उसकी पैरवी की और सच तो यही है कि यही लोग पैग़म्बरों के पैरोकार होते हैं।

मैंने पूछा कि क्या इस दीन में दाख़िल होने के बाद कोई व्यक्ति इससे पलटा भी है? तो तुमने बतलाया कि नहीं और सच तो यह है कि ईमान जब दिलों में घुस जाता है, तो ऐसा ही होता है।

और मैंने मालूम किया कि क्या वह बद-अह्दी भी करता है? तो तुमने बतलाया कि नहीं और पैग़म्बर ऐसे ही होते हैं, वे बद-अह्दी नहीं करते।

मैंने यह भी पूछा कि वह किन बातों का हुक्म देता है? तो तुमने बताया कि वह तुम्हें अल्लाह की इबादत करने और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराने का हुक्म देता है। बुतपरस्ती से मना करता है और नमाज़, सच्चाई, परहेज़गारी और पाकदामनी का हुक्म देता है।

तो जो कुछ तुमने बताया है, अगर वह सही है, तो यह व्यक्ति बहुत जल्द मेरे इन दोनों क़दमों की जगह का मालिक हो जाएगा। मैं जानता था कि यह नबी आने वाला है, लेकिन मेरा यह गुमान न था कि वह तुममें से होगा। अगर मुझे यक़ीन होता कि मैं उसके पास पहुंच सकूंगा, तो उससे मुलाक़ात की तक्लीफ़ उठाता और अगर उसके पास होता तो उसके दोनों पांव धोता। इसके बाद हिरक़्ल ने रसूलुल्लाह सल्ल० का पत्र मंगाकर पढ़ा। जब पत्र पढ़ चुका तो वहां आवाज़ें उठने लगीं और बड़ा शोर मचा। हिरक़्ल ने हमारे बारे में हुक्म दिया कि हम बाहर कर दिए जाएं। जब हम लोग बाहर लाए गए, तो मैंने अपने साथियों

से कहा, 'अबू कबशा[1] के बेटे का मामला बड़ा जोर पकड़ गया। इससे तो बनू असफ़र (रूमियों)[2] का बादशाह डरता है।' इसके बाद मुझे बराबर यक़ीन रहा कि रसूलुल्लाह सल्ल० का दीन ग़ालिब आकर रहेगा, यहां तक कि इस्लाम मेरे दिल की आवाज़ बन गया।[3]

यह क़ैसर पर नबी सल्ल० के पत्र का वह असर था, जिसके गवाह अबू सुफ़ियान भी थे। इस पत्र का एक असर यह भी हुआ कि क़ैसर ने अल्लाह के रसूल सल्ल० के इस मुबारक पत्र को पहुंचाने वाले यानी दिह्या कलबी रज़ि० को माल और उपहार दिया, लेकिन हज़रत दिह्या ये उपहार लेकर वापस हुए तो हुमा में क़बीला जुज़ाम के कुछ लोगों ने उन पर डाका डालकर सब कुछ लूट लिया।

हज़रत दिह्या मदीना पहुंचे तो अपने घर के बजाए सीधे मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुए और सारी बात कह सुनाई। पूरी बातें सुनकर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा के नेतृत्व में पांच सौ सहाबा किराम की एक जमाअत हुमा भेजी। हज़रत ज़ैद ने क़बीला जुज़ाम पर रात में छापा मारकर उनकी अच्छी-भली तायदाद को क़त्ल कर दिया और उनके जानवरों और औरतों को हांक लाए। जानवरों में एक हज़ार ऊंट और पांच हज़ार बकरियां थीं और क़ैदियों में एक सौ औरतें और बच्चे थे।

चूंकि नबी सल्ल० और क़बीला जुज़ाम में पहले से समझौता चला आ रहा था, इसलिए इस क़बीले के एक सरदार ज़ैद बिन रफ़ाआ जुज़ामी ने झट नबी सल्ल० की सेवा में अपना विरोध नोट कराया। ज़ैद बिन रफ़ाआ उस क़बीले के कुछ और लोगों समेत पहले ही मुसलमान हो चुके थे और जब हज़रत दिह्या पर डाका पड़ा था, तो उनकी मदद भी की थी, इसलिए नबी सल्ल० ने उनका विरोध

---

1. अबू कबशा के बेटे से मुराद नबी सल्ल० की ज़ाते गरामी है। अबू कबशा रजज़ बिन ग़ालिब ख़ुज़ाई की कुन्नियत (उपाधि) है। वह वह्ब बिन अब्दे मुनाफ़ के नाना थे। अबू कबशा मुश्रिक था, शाम गया तो ईसाई हो गया। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ुरैश के दीन का विरोध किया और हनीफ़ीया लेकर आए तो आपकी त्रुटि निकालने के लिए उसकी उपमा दी और उसकी तरफ़ जोड़ दिया। (दलाइलुन्नुबूवः, बैहक़ी 1/82, 83, सीरते नबवीया व अवी हातिम, पृ० 44) बहरहाल अबू कबशा अनजाना शब्द है और अरबों का तरीक़ा था कि जब किसी की निन्दा करनी होती तो उसके बाप-दादों में से किसी अनजाने व्यक्ति से उसे जोड़ देते।
2. रूमियों को बनू असफ़र कहा जाता है, क्योंकि रूम के जिस बेटे से रूमियों की नस्ल थी, वह किसी वजह से अस्फ़र (पीले) की उपाधि से जाना जाने लगा था।
3. सहीह बुख़ारी 1/4, सहीह मुस्लिम 2/79-99

स्वीकार करते हुए माले ग़नीमत और क़ैदी वापस कर दिए।

ग़ज़वे की तारीख़ लिखने वालों ने आम तौर से इस घटना को हुदैबिया समझौते से पहले बताया है, पर यह भारी ग़लती है, क्योंकि क़ैसर के पास जो पत्र भेजा गया, भेजने का यह काम हुदैबिया समझौते के बाद अमल में लाया गया था, इसीलिए अल्लामा इब्ने क़ैयिम ने लिखा है कि यह घटना बेशक हुदैबिया के बाद की है।[1]

5. मुंज़िर बिन सावी के नाम पत्र

नबी सल्ल० ने एक पत्र मुंज़िर बिन सावी, बहरैन के हाकिम के पास लिखकर उसे भी इस्लाम की दावत दी और इस पत्र को हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ि० के हाथों रवाना फ़रमाया। जवाब में मुंज़िर ने रसूलुल्लाह सल्ल० को लिखा—

'ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने आपका पत्र बहरैन वालों को पढ़कर सुना दिया। कुछ लोगों ने इस्लाम को मुहब्बत और पाकीज़गी की नज़र से देखा और उसे स्वीकार कर लिया और कुछ ने पसन्द नहीं किया और मेरी ज़मीन में यहूदी और मजूसी भी हैं, इसलिए आप इस बारे में अपना फ़रमान जारी कीजिए। इसके जवाब में रसूलुल्लाह सल्ल० ने यह पत्र लिखा—

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहम्मद रसूलुल्लाह की ओर से मुंज़िर बिन सावी की तरफ़

तुम पर सलाम हो। मैं तुम्हारी ओर अल्लाह की प्रशंसा करता हूं जिसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं।

इसके बाद मैं तुम्हें अल्लाह की याद दिलाता हूं। याद रहे कि जो व्यक्ति भलाई करेगा और भला चाहेगा, वह अपने ही लिए भलाई करेगा और जो व्यक्ति मेरे दूतों की इताअत और उनके हुक्म की पैरवी करे, उसने मेरी इताअत की और जो उनके साथ भला चाहे, उसने मेरा भला चाहा और मेरे दूतों ने तुम्हारी अच्छी तारीफ़ की है और मैंने तुम्हारी क़ौम के बारे में तुम्हारी सिफ़ारिश मान ली है, इसलिए मुसलमान जिस हाल पर ईमान लाए हैं उन्हें उस पर छोड़ दो और मैंने ख़ताकारों को माफ़ कर दिया है, इसलिए उनसे क़ुबूल कर लो और जब तक तुम सुधार का रास्ता अपनाए रहोगे, हम तुम्हें तुम्हारे काम से अलग न करेंगे और जो

1. देखिए ज़ादुल मआद 2/122, टिप्पणी तलक़ीहुल फ़हूम पृ० 29

यहूदी या मजूसी मत पर क़ायम रहे, उस पर जिज़या है।[1]

6. हौज़ा बिन अली, साहिबे यमामा के नाम पत्र

नबी सल्ल० ने हौज़ा बिन अली यमामा के हाकिम के नाम नीचे लिखा पत्र लिखा—

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहम्मद रसूलुल्लाह की ओर से हौज़ा बिन अली की तरफ़

उस आदमी पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि मेरा दीन ऊंटों और घोड़ों की पहुंच की आख़िरी हद तक ग़ालिब आकर रहेगा, इसलिए इस्लाम लाओ, सालिम (सुरक्षित) रहोगे और तुम्हारे मातहत जो कुछ है, उसे तुम्हारे लिए बरक़रार रखूंगा।'

इस पत्र को पहुंचाने के लिए क़ासिद की हैसियत से सुलैत बिन अम्र आमिरी का चुनाव किया गया, हज़रत सुलैत इस मुहर लगे हुए पत्र को लेकर हौज़ा के पास तशरीफ़ ले गए, तो उसने आपको मेहमान बनाया और मुबारकबाद दी। हज़रत सुलैत ने उसे पत्र पढ़कर सुनाया तो उसने दर्मियानी क़िस्म का जवाब दिया और नबी सल्ल० की सेवा में यह लिखा—

आप जिस चीज़ की दावत देते हैं, उसके बेहतर और अच्छा होने का क्या पूछना और अरब पर मेरा रौब बैठा हुआ है, इसलिए कुछ कारपरदाज़ी मेरे ज़िम्मे करें। मैं आपकी पैरवी करूंगा। उसने हज़रत सुलैत को उपहार भी दिए। उन्हें हिज्र का बना हुआ कपड़ा दिया।

हज़रत सुलैत ये उपहार लेकर नबी सल्ल० की ख़िदमत में वापस आए और सारी बातें सुनाईं। नबी सल्ल० ने उसका पत्र लेकर फ़रमाया, अगर वह ज़मीन का एक टुकड़ा भी मुझसे तलब करेगा, तो मैं उसे न दूंगा। वह ख़ुद भी तबाह होगा और जो कुछ उसके हाथ में है, वह भी तबाह होगा।

फिर जब अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्का जीतने के बाद वापस तशरीफ़ लाए, तो हज़रत जिब्रील अलै० ने यह ख़बर दी कि हौज़ा का देहान्त हो चुका है। नबी सल्ल० ने फ़रमाया, सुनो, यमामा में एक झूठा आदमी ज़ाहिर होने वाला

---

1. ज़ादुल मआद 3/61, 62 यह पत्र निकट अतीत में मिला है और डाक्टर हमीदुल्लाह साहब ने इसका फोटो छापा है। ज़ादुल मआद का लिखा और इस फोटो के लिखे में सिर्फ़ एक शब्द का अन्तर है, (यानी फोटो में) ला इला-ह इल्ला हु-व के बजाए ला इला-ह ग़ैरुहू है।

है, जो मेरे बाद क़त्ल किया जाएगा।

एक कहने वाले ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! उसे कौन क़त्ल करेगा?

आपने फ़रमाया, तुम और तुम्हारे साथी, और सचमुच ऐसा ही हुआ।[1]

7. हारिस बिन अबी शिम्र ग़स्सानी, दमिश्क़ के हाकिम के नाम पत्र

नबी सल्ल० ने उसके पास नीचे लिखा पत्र भेजा।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहम्मद रसूलुल्लाह की ओर से हारिस बिन अबी शिम्र की ओर

उस आदमी पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे और ईमान लाए और तस्दीक़ करे और मैं तुम्हें दावत देता हूं कि अल्लाह पर ईमान लाओ जो तंहा है और जिसका कोई शरीक नहीं और तुम्हारे लिए तुम्हारी बादशाही बाक़ी रहेगी।

यह पत्र क़बीला असद बिन ख़ुज़ैमा से ताल्लुक़ रखने वाले एक सहाबी हज़रत शुजाअ बिन वह्ब के हाथों रवाना किया गया। जब उन्होंने यह पत्र हारिस के हवाले किया, तो उसने कहा, 'मुझसे मेरी बादशाही कौन छीन सकता है? मैं उस पर धावा बोलने ही वाला हूं।' और वह इस्लाम न लाया,[2] बल्कि क़ैसर से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ लड़ाई की इजाज़त चाही, मगर उसने उसको उसके इरादे से बाज़ रखा, फिर हारिस ने शुजाअ बिन वह्ब को उपहार और ख़र्चा देकर, अच्छाई के साथ वापस कर दिया।

8. शाह अमान के नाम पत्र

नबी सल्ल० ने एक पत्र शाहे अमान जैफ़र और उसके भाई अब्द के नाम लिखा। इन दोनों के पिता का नाम जलन्दी था। पत्र का विषय यह था—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह की ओर से जलन्दी के दोनों बेटों जैफ़र और अब्द के नाम

उस व्यक्ति पर सलाम, जो हिदायत की पैरवी करे। इसके बाद, मैं तुम दोनों को इस्लाम की दावत देता हूं, इस्लाम लाओ, सलामत रहोगे, क्योंकि मैं तमाम इंसानों की ओर अल्लाह का रसूल हूं, ताकि जो ज़िंदा है, उसे अंजाम के ख़तरे से आगाह कर दूं और काफ़िरों पर क़ौल सही हो जाए। अगर तुम दोनों इस्लाम

1. ज़ादुल मआद 3/63
2. ज़ादुल मआद 3/63, मुहाज़रात तारीख़ुल उम्मुल इस्लामीया, ख़ज़रमी 1/146

का इक़रार कर लोगे, तो तुम्ही दोनों को अधिकारी और हाकिम बनाऊंगा और अगर तुम दोनों ने इस्लाम का इक़रार करने से बचने की कोशिश की तो तुम्हारी बादशाही ख़त्म हो जाएगी। तुम्हारी ज़मीन पर घोड़ों का धावा होगा और तुम्हारी बादशाही पर मेरी नुबूवत ग़ालिब आ जाएगी।

इस पत्र को ले जाने के लिए दूत की हैसियत से हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० का चुनाव हुआ। उनका बयान है कि मैं रवाना होकर अमान पहुंचा और अब्द से मुलाक़ात की। दोनों भाइयों में यह ज़्यादा दूरदर्शी और नम्र था। मैंने कहा, मैं तुम्हारे पास और तुम्हारे भाई के पास रसूलुल्लाह सल्ल० का दूत बनकर आया हूं।

उसने कहा, मेरा भाई उम्र और बादशाही दोनों में मुझसे बड़ा और मुझसे आगे है। इसलिए मैं तुमको उसके पास पहुंचा देता हूं कि वह तुम्हारा पत्र पढ़ ले। इसके बाद उसने कहा, अच्छा, तुम दावत किस बात की देते हो?

मैंने कहा, हम एक अल्लाह की ओर बुलाते हैं जो तंहा है, जिसका कोई शरीक नहीं और हम कहते हैं कि उसके अलावा जिसकी भी पूजा की जाती है, उसे छोड़ दो और यह गवाही दो कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।

अब्द ने कहा, ऐ अम्र! तुम अपनी क़ौम के सरदार के बेटे हो। बताओ, तुम्हारे बाप ने क्या किया? क्योंकि हमारे लिए उसका तरीक़ा पैरवी के लायक़ होगा?

मैंने कहा, वह तो मुहम्मद सल्ल० पर ईमान लाए बिना वफ़ात पा गए, लेकिन मुझे हसरत है कि काश, उन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया होता और आपकी तस्दीक़ की होती। मैं ख़ुद भी उन्हीं की राय पर था, लेकिन अल्लाह ने मुझे इस्लाम की हिदायत दे दी।

अब्द ने कहा, तुमने कब इनकी पैरवी की?

मैंने कहा, अभी जल्द ही।

उसने पूछा, तुम किस जगह इस्लाम लाए?

मैंने कहा, नजाशी के पास और बतलाया कि नजाशी भी मुसलमान हो चुका है।

अब्द ने पूछा, उसकी क़ौम ने उसकी बादशाही का क्या किया?

मैंने कहा, उसे बरक़रार रखा और उसकी पैरवी की।

उसने कहा, धार्मिक गुरुवों और राहिबों ने भी उसकी पैरवी की?

मैंने कहा, हां।

अब्द ने कहा, ऐ अम्र ! देखो, क्या कह रहे हो, क्योंकि आदमी की कोई भी आदत झूठ से ज़्यादा रुसवा करने वाली नहीं।

मैंने कहा, मैं झूठ नहीं कह रहा हूं और न हम इसे हलाल समझते हैं।

अब्द ने कहा, मैं समझता हूं, हिरक़्ल को नजाशी के इस्लाम लाने का पता नहीं।

मैंने कहा, क्यों नहीं ?

अब्द ने कहा, तुम्हें यह बात कैसे मालूम ?

मैंने कहा, नजाशी हिरक़्ल को टैक्स दिया करता था, लेकिन जब उसने इस्लाम क़ुबूल किया और मुहम्मद सल्ल० की तस्दीक़ की, तो बोला, ख़ुदा की क़सम ! अब अगर वह मुझसे एक दिरहम भी मांगेगा, तो मैं न दूंगा और इसकी सूचना हिरक़्ल को हुई तो उसके भाई यनाक़ ने कहा, क्या तुम अपने दास को छोड़ दोगे कि वह तुम्हें टैक्स न दे और तुम्हारे बजाए एक दूसरे आदमी का नया दीन अपना ले ?

हिरक़्ल ने कहा, यह एक आदमी है जिसने एक दीन को पसन्द किया और उसे अपने लिए अपना लिया, अब मैं इसका क्या कर सकता हूं? ख़ुदा की क़सम ! अगर मुझे अपनी बादशाही का लोभ न होता तो मैं भी वही करता जो उसने किया है।

अब्द ने कहा, अम्र ! देखो क्या कह रहे हो ?

मैंने कहा, अल्लाह की क़सम ! मैं तुमसे सच कह रहा हूं।

अब्द ने कहा, अच्छा मुझे बताओ वह किस बात का हुक्म देते हैं और किस चीज़ से मना करते हैं ?

मैंने कहा, अल्लाह की इताअत का हुक्म देते हैं और उसकी नाफ़रमानी से मना करते हैं, नेकी और रिश्तों के जोड़ने का हुक्म देते हैं और ज़ुल्म व ज़्यादती, ज़िनाकारी, शराबनोशी और पत्थर बुत और क्रास की इबादत से मना करते हैं।

अब्द ने कहा, यह कितनी अच्छी बात है जिसकी ओर वह बुलाते हैं। अगर मेरा भाई भी इस बात पर मेरा साथ देता, तो हम लोग सवार होकर (चल पड़ते), यहां तक कि मुहम्मद सल्ल० पर ईमान लाते और उनकी तस्दीक़ करते, लेकिन मेरा भाई अपनी बादशाही का इससे कहीं ज़यादा लोभी है कि उसे छोड़कर किसी का आधीन बन जाए।

मैंने कहा, अगर वह इस्लाम क़ुबूल कर ले तो रसूलुल्लाह उसकी क़ौम पर उसकी बादशाही बाक़ी रखेंगे, अलबत्ता उनके मालदारों से सदक़ा लेकर फ़क़ीरों में बांट देंगे।

अब्द ने कहा, यह तो बड़ी अच्छी बात है। अच्छा बताओ सदक़ा क्या है?

जवाब में मैंने अलग-अलग मालों के अन्दर रसूलुल्लाह के मुक़र्रर किए हुए सदक़ों की तफ़्सील बताई। जब ऊंट की बारी आई तो वह बोला, ऐ अम्र! हमारे इन मवेशियों में से भी सदक़ा लिया जाएगा, जो ख़ुद ही पेड़-पौधे चर लेते हैं।

मैंने कहा, हां।

अब्द ने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं नहीं समझता कि मेरी क़ौम अपने देश के फैलाव और तायदाद की ज़्यादती के बावजूद इसको मान लेगी।

हज़रत अम्र बिन आस का बयान है कि मैं उसकी डयोढ़ी में कुछ दिन ठहरा रहा। वह अपने भाई के पास जाकर मेरी सारी बातें बताता रहता था। फिर एक दिन उसने मुझे बुलाया और मैं अन्दर दाख़िल हुआ। दरबानों ने मेरे बाज़ू पकड़ लिए। उसने कहा, छोड़ दो और मुझे छोड़ दिया गया। मैंने बैठना चाहा तो दरबानों ने मुझे बैठने न दिया।

मैंने बादशाह की ओर देखा तो उसने कहा, अपनी बात कहो।

मैंने मुहरबन्द पत्र उसके हवाले कर दिया।

उसने मुहर तोड़कर पत्र पढ़ा। जब पूरा पत्र पढ़ चुका तो अपने भाई के हवाले कर दिया, भाई ने भी उसी तरह पढ़ा, मगर मैंने देखा कि उसका भाई उससे ज़्यादा नर्मदिल है।

बादशाह ने पूछा, मुझे बताओ, क़ुरैश ने क्या रवैया अपनाया है?

मैंने कहा, सब उनके इताअत गुज़ार हो गए हैं। किसी ने दीन से चाव की वजह से और किसी ने तलवार के डर से।

बादशाह ने पूछा, उनके साथ कौन लोग हैं?

मैंने कहा, सारे लोग हैं। उन्होंने पूरे चाव के साथ इस्लाम क़ुबूल कर लिया है और उसे तमाम दूसरी चीज़ों पर तर्जीह दी है। उन्हें अल्लाह की हिदायत और अपनी अक़्ल की रहनुमाई से यह बात मालूम हो गई है कि वे गुमराह थे। अब इस इलाक़े में मैं नहीं जानता कि तुम्हारे सिवा कोई और बाक़ी रह गया है और अगर तुमने इस्लाम क़ुबूल न किया और मुहम्मद की पैरवी न की तो तुम्हें सवार रौंद डालेंगे और तुम्हारी हरियाली का सफ़ाया कर देंगे, इसलिए इस्लाम क़ुबूल कर लो, सलामत रहोगे और अल्लाह के रसूल सल्ल० तुमको तुम्हारी क़ौम का हुक्मरां बना देंगे। तुम पर न सवार दाख़िल होंगे, न पैदल फ़ौजी।

बादशाह ने कहा, मुझे आज छोड़ दो और कल फिर आओ।

इसके बाद मैं उसके भाई के पास वापस आ गया।

उसने कहा, अम्र ! मुझे उम्मीद है कि अगर बादशाही का लोभ न छाए तो वह इस्लाम क़ुबूल कर लेगा।

दूसरे दिन बादशाह के पास गया, लेकिन उसने इजाज़त देने से इन्कार कर दिया, इसलिए मैं उसके भाई के पास वापस आ गया और बतलाया, बादशाह तक मेरी पहुंच न हो सकी। भाई ने मुझसे उसके यहां पहुंचा दिया।

उसने कहा, मैंने तुम्हारी दावत पर ग़ौर किया। अगर मैं बादशाही एक ऐसे आदमी के हवाले कर दूं जिसके सवार यहां पहुंचे भी नहीं, तो मैं अरब में सबसे कमज़ोर समझा जाऊंगा और अगर उसके सवार यहां पहुंच आए तो ऐसा रन पड़ेगा कि उन्हें कभी उससे वास्ता न पड़ा होगा।

मैंने कहा, अच्छा, तो कल मैं वापस जा रहा हूं।

जब उसे मेरी वापसी का यक़ीन हो गया, तो उसने भाई से अकेले में बात की और बोला, यह पैग़म्बर जिन पर ग़ालिब आ चुका है, उनके मुक़ाबले में हमारी कोई हैसियत नहीं और उसने जिस किसी के पास भी पैग़ाम भेजा है, उसने दावत क़ुबूल कर ली है, इसलिए दूसरे दिन सुबह ही मुझे बुलवाया गया और बादशाह और उसके भाई दोनों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और नबी सल्ल० की तस्दीक़ की और सदक़ा वसूल करने और लोगों के बीच फ़ैसले करने के लिए मुझे आज़ाद छोड़ दिया और जिस किसी ने मेरा विरोध किया, उसके ख़िलाफ़ मेरे मददगार साबित हुए।[1]

इस घटना के विस्तार में जाने के बाद मालूम होता है कि बाक़ी बादशाहों के मुक़ाबले में इन दोनों के पास पत्र विलम्ब से भेजा गया, शायद यह मक्का विजय के बाद की घटना है।

इन पत्रों के ज़रिए नबी सल्ल० ने अपनी दावत इस धरती के ज़्यादातर बादशाहों तक पहुंचा दी और उसके जवाब में कोई ईमान लाया, तो किसी ने कुफ़्र किया, लेकिन इतना ज़रूर हुआ कि कुफ़्र करने वालों की तवज्जोह भी इस ओर हो गई और उनके नज़दीक आपका दीन और आपका नाम एक जानी-पहचानी चीज़ बन गया।

---

1. ज़ादुल मआद 3/62, 66

हुदैबिया समझौते के बाद की सैनिक गतिविधियां

ग़ज़वा ग़ाबा या ग़ज़वा ज़ी क़िरद

यह ग़ज़वा वास्तव में बनू फ़ज़ारा की एक टुकड़ी का, जिसने अल्लाह के रसूल सल्ल० के मवेशियों पर डाका डाला था, पीछा करने पर आधारित है।

हुदैबिया के बाद और ख़ैबर से पहले यह पहला और अकेला ग़ज़वा है जो अल्लाह के रसूल सल्ल० को पेश आया। इमाम बुख़ारी ने इसका 'बाब' बांधते हुए बताया है कि यह ख़ैबर से सिर्फ़ तीन दिन पहले पेश आया था और यही बात इस ग़ज़वे के ख़ास कर्त्ता-धर्त्ता हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ि० से भी रिवायत की गई है, उनकी रिवायत सही मुस्लिम में देखी जा सकती है। ग़ज़वा के आम माहिरों का कहना है कि यह घटना हुदैबिया समझौते से पहले की है, लेकिन जो बात सहीह में बयान की गई है, माहिरों के बयान के मुक़ाबले में वही ज़्यादा सही है।[1]

इस ग़ज़वे के हीरो हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ि० से जो रिवायतें रिवायत की गई हैं, उनका सार यह है कि नबी सल्ल० ने अपनी सवारी के ऊंट अपने दास रिबाह के साथ चरने के लिए भेजे थे और मैं भी अबू तलहा के घोड़े समेत उनके साथ था कि अचानक बहुत सुबह अब्दुर्रहमान फ़ज़ारी ने ऊंटों पर छापा मारा और उन सबको हांक ले गया और चरवाहे को क़त्ल कर दिया।

मैंने कहा, रिबाह! यह घोड़ा लो, इसे अबू तलहा तक पहुंचा दो और रसूलुल्लाह सल्ल० को ख़बर कर दो और ख़ुद मैंने एक टीले पर खड़े होकर मदीना की तरफ़ रुख़ किया और तीन बार पुकार लगाई, या सबाहाह! हाय सुबह का हमला। फिर मैं हमलावरों के पीछे चल निकला। उन पर तीर बरसाता जाता था और यह पद पढ़ता जाता था—

---

1. देखिए सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वा ज़ाते क़िरद 2/603, सहीह मुस्लिम, बाब ग़ज़वा ज़ीक़िरद वग़ैरह, 2/113, 114, 115, फ़त्हुल बारी 7/460, 461, 462, ज़ादुल मआद, 2/120, हुदैबिया से इस लड़ाई के पीछे चले जाने पर हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० की एक और हदीस भी दलील के तौर पर सामने आती है। देखिए मुस्लिम, किताबुल हज्ज, बाबुत्तर्ग़ीब फ़ी सुन-नल मदी-नतिं वस्सब्रि अलल अवानि, हदीस न० 475, (1374) 2/1001

'मैं अकवअ का बेटा हूं और आज का दिन दूध पीने वाले का दिन है। (यानी आज पता लग जाएगा कि किसने अपनी मां का दूध पिया है।')

सलमा बिन अकवअ कहते हैं कि ख़ुदा की क़सम! मैं उन्हें बराबर तीरों से छलनी करता रहा। जब कोई सवार मेरी ओर पलटकर आता तो मैं किसी पेड़ की ओट में बैठ जाता। फिर उसे तीर मारकर घायल कर देता, यहां तक कि जब ये लोग पहाड़ के तंग रास्ते में दाख़िल हुए तो मैं पहाड़ पर चढ़ गया और पत्थरों से उनकी ख़बर लेने लगा। इस तरह मैंने लगातार उनका पीछा किए रखा, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जितने भी ऊंट थे, मैंने उन सबको अपने पीछे कर लिया और उन लोगों ने मेरे लिए उन ऊंटों को आज़ाद छोड़ दिया, लेकिन मैंने फिर भी उनका पीछा करना जारी रखा और उन पर तीर बरसाता रहा, यहां तक कि बोझ कम करने के लिए उन्होंने भी तीस से ज़्यादा चादरें और तीस से ज़्यादा नेज़ें फेंक दिए। वे लोग जो कुछ भी फेंकते थे, मैं उस पर (निशान के तौर पर) थोड़े से पत्थर डाल देता था, ताकि अल्लाह के रसूल सल्ल० और उनके साथी पहचान लें (कि यह दुश्मन से छीना हुआ माल है)

इसके बाद वे लोग एक घाटी के तंग मोड़ पर बैठकर दोपहर का खाना खाने लगे। मैं भी एक चोटी पर जा बैठा। यह देखकर उनके चार आदमी पहाड़ पर चढ़कर मेरी ओर आए। (जब इतने क़रीब आ गए कि बात सुन सकें तो) मैंने कहा, तुम लोग मुझे पहचानते हो। मैं सलमा बिन अकवअ हूं। तुममें से जिस किसी को दौड़ाऊंगा, बे-धड़क पा लूंगा और जो कोई मुझे दौड़ाएगा, हरगिज़ न पा सकेगा।

मेरी यह बात सुनकर चारों वापस चले गए और मैं अपनी जगह जमा रहा, यहां तक कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० के सवारों को देखा कि पेड़ों के बीच से चले आ रहे हैं। सबसे आगे अख़रम थे, उनके पीछे अबू क़तादा और उनके पीछे मिक़्दाद बिन अस्वद। (मोर्चे पर पहुंचकर अब्दुर्रहमान और अख़रम में टक्कर हुई। हज़रत अख़रम ने अब्दुर्रहमान के घोड़े को घायल कर दिया, लेकिन अब्दुर्रहमान ने नेज़ा मारकर हज़रत अख़रम को क़त्ल कर दिया और उनके घोड़े पर जा पलटा, मगर इतने में हज़रत अबू क़तादा अब्दुर्रहमान के सर पर जा पहुंचे और उसे नेज़ा मारकर घायल कर दिया। बाक़ी हमलावर पीठ फेरकर भागे और हमने उन्हें खदेड़ना शुरू कर दिया।

मैं अपने पांवों पर उछलता हुआ दौड़ रहा था। सूरज डूबने से कुछ पहले उन लोगों ने अपना रुख़ एक घाटी की ओर मोड़ा, जिसमें ज़ीक़िरद नाम का एक चश्मा था। ये लोग प्यासे थे और वहां पानी पीना चाहते थे, लेकिन मैंने उन्हें

चश्मे से परे ही रखा और वे एक बूंद भी न चख सके।

अल्लाह के रसूल सल्ल० और शहसवार सहाबा रज़ि० दिन डूबने के बाद मेरे पास पहुंचे। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ये सब प्यासे थे। अगर आप मुझे सौ आदमी दे दें तो मैं ज़ीन सहित उनके तमाम घोड़े छीन लूं और उनकी गरदनें पकड़ कर ख़िदमत में हाज़िर कर दूं।

आपने फ़रमाया, अकवअ के बेटे ! तुम क़ाबू पा गए हो, तो अब ज़रा नर्मी बरतो।

फिर आपने फ़रमाया कि इस वक़्त बनू ग़तफ़ान में उनका सत्कार हो रहा है।

(इस ग़ज़वे पर) अल्लाह के रसूल सल्ल० ने समीक्षा करते हुए कहा, आज हमारे सबसे बेहतर शहसवार अबू क़तादा और सबसे बेहतर प्यादा सलमा हैं और आपने मुझे दो हिस्से दिए, एक प्यादा का हिस्सा और एक शहसवार का हिस्सा और मदीना वापस होते हुए मुझे (यह शरफ़ बख़्शा कि) अपनी अज़बा नामी ऊंटनी पर अपने पीछे सवार कर लिया।

इस ग़ज़वे के दौरान अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मदीने का प्रबन्ध हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम को सौंपा था और इस ग़ज़वे का झंडा हज़रत मिक़्दाद बिन अम्र रज़ि० को अता फ़रमाया था।[1]

---

1. पिछले स्रोत, जो आ चुके।

ग़ज़वा ख़ैबर और ग़ज़वा वादिल क़ुरा

मुहर्रम सन् 07 हि०

ख़ैबर, मदीना के उत्तर में एक सौ सत्तर किलोमीटर की दूरी पर एक बड़ा शहर था, यहां क़िले भी थे और खेतियां भी। अब यह एक बस्ती रह गई है। इसकी जलवायु कुछ अस्वास्थ्यकर है।

लड़ाई की वजह

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हुदैबिया समझौते के नतीजे में अह्ज़ाब की लड़ाई के तीन बाज़ुओं में से सबसे मज़बूत बाज़ू (क़ुरैश) की ओर से पूरी तरह सन्तुष्ट और सुरक्षित हो गए, तो आपने चाहा कि बाक़ी दो बाज़ुओं—यहूदी और नज्द के क़बीलों—से भी हिसाब-किताब चुका लें, ताकि हर ओर से पूरी तरह अम्न और सलामती हासिल हो जाए और पूरे इलाक़े में सुकून का दौर दौरा हो और मुसलमान एक लगातार ख़ूनी संघर्ष से निजात पाकर अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाने और उसकी दावत देने से फ़ारिग़ हो जाएं।

चूंकि ख़ैबर षड्यंत्रों का गढ़, फ़ौजी भड़काव का केन्द्र और लड़ाने-भिड़ाने और लड़ाई की आग लगाने की खान था, इसलिए सबसे पहले यही स्थान मुसलमानों की तवज्जोह का हक़दार था।

रहा यह सवाल कि ख़ैबर सच में ऐसा था या नहीं, तो इस सिलसिले में हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वे ख़ैबर वाले ही थे जो ख़ंदक़ की लड़ाई में मुश्रिकों के तमाम गिरोहों को मुसलमानों पर चढ़ा लाए थे। फिर यही थे जिन्होंने बनू क़ुरैज़ा को विद्रोह करने पर तैयार किया था, साथ ही यही थे जिन्होंने इस्लामी समाज के पांचवें कालम मुनाफ़िक़ों से और अह्ज़ाब की लड़ाई के तीसरे बाज़ू—बनू ग़त्फ़ान और बद्दुओं—से बराबर सम्पर्क बनाए रखा था और ख़ुद भी लड़ाई की तैयारियां कर रहे थे और अपनी इन कार्रवाइयों के ज़रिए मुसलमानों को आज़माइशों में डाल रखा था, यहां तक कि नबी सल्ल० को भी शहीद करने का प्रोग्राम बना लिया था और इन हालात से मजबूर होकर मुसलमानों को बार-बार फ़ौजी मुहिमें भेजनी पड़ी थीं, और इन चालों और षड्यंत्रों के कर्त्ता-धर्त्ता जैसे सलाम बिन अबिल हुक़ैक़ और असीर बिन ज़ारिम का सफ़ाया करना पड़ा था, लेकिन इन यहूदियों के ताल्लुक़ से मुसलमानों का दायित्व सच में इससे भी कहीं बड़ा था, अलबत्ता मुसलमानों ने इस दायित्व के निभाने में कुछ देर इसलिए

की थी कि अभी एक ताक़त—यानी कुरैश—जो इन यहूदियों से ज़्यादा बड़े ताक़तवर, योद्धा और सरकश थे, मुसलमानों के मुक़ाबले में थे, इसलिए मुसलमान उसे नज़रअंदाज़ करके यहूदियों का रुख़ नहीं कर सकते थे, लेकिन ज्यों ही कुरैश के साथ इस मोर्चाबन्दी का अन्त हुआ, इन अपराधी यहूदियों से निबटने के लिए फ़िज़ा साफ़ हो गई और उनके हिसाब का दिन क़रीब आ गया।

ख़ैबर को रवानगी

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने हुदैबिया से वापस आकर ज़ुलहिज्जा का पूरा महीना और मुहर्रम के कुछ दिन मदीने में क़ियाम फ़रमाया। फिर मुहर्रम के बाक़ी दिनों में ख़ैबर के लिए रवाना हो गए।

टीकाकारों का कहना है कि ख़ैबर अल्लाह का वायदा था, जो उसने अपने इर्शाद के ज़रिए फ़रमाया था—

'अल्लाह ने तुमसे बहुत से माले ग़नीमत का वायदा किया है, जिसे तुम हासिल करोगे, तो उसको तुम्हारे लिए फ़ौरी तौर पर अता कर दिया।' (48, 20)

इससे तात्पर्य हुदैबिया समझौता है और बहुत से माले ग़नीमत से मुराद ख़ैबर है।

इस्लामी फ़ौज की तायदाद

चूंकि मुनाफ़िक़ और कमज़ोर ईमान के लोग हुदैबिया के सफ़र में अल्लाह के रसूल सल्ल० का साथ अपनाने के बजाए अपने घरों में बैठे रहे थे, इसलिए अल्लाह ने अपने नबी सल्ल० को इनके बारे में हुक्म देते हुए फ़रमाया—

'जब तुम ग़नीमत के माल हासिल करने के लिए जाने लगोगे, तो ये पीछे छोड़े गए लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने दो। ये चाहते हैं कि अल्लाह की बात बदल दें। इनसे कह देना कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चल सकते। अल्लाह ने पहले ही से यह बात कह दी है, (इस पर) ये लोग कहेंगे कि (नहीं), बल्कि तुम लोग हमसे जलन करते हो। (हालांकि सच तो यह है) कि ये लोग कम ही समझते हैं।' (48-15)

चुनांचे जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ख़ैबर जाने का इरादा फ़रमाया, तो एलान फ़रमा दिया कि आपके साथ सिर्फ़ वही आदमी रवाना हो सकता है, जिसे अल्लाह की क़सम, जिहाद का चाव और ख़्वाहिश है। इस एलान के नतीजे में आपके साथ सिर्फ़ वही लोग जा सके, जिन्होंने हुदैबिया में पेड़ के नीचे बैअते रिज़्वान की थी और उनकी तायदाद सिर्फ़ चौदह सौ थी।

इस ग़ज़वे के दौरान मदीना का इन्तिज़ाम हज़रत सबाअ बिन अरफ़ता ग़िफ़ारी को और इब्ने इस्हाक़ के मुताबिक़ नुमैता बिन अब्दुल्लाह लैसी को सौंपा गया था। शोधकर्ताओं के नज़दीक पहली बात ज़्यादा सही है।[1]

इसी मौक़े पर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० भी मुसलमान होकर मदीना तशरीफ़ लाए थे। उस वक़्त हज़रत सबाअ बिन अरफ़ता फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे। नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो हज़रत अबू हुरैरह उनकी ख़िदमत में पहुंचे। उन्होंने रास्ते का खाना दे दिया और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िरी के लिए ख़ैबर की ओर चल पड़े। जब नबी सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे (तो ख़ैबर जीता जा चुका था) अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मुसलमानों से बातें करके हज़रत अबू हुरैरह और उनके साथियों को भी ग़नीमत के माल में शरीक कर लिया।

यहूदियों के लिए मुनाफ़िक़ों की सरगर्मियां

इस मौक़े पर यहूदियों की हिमायत में मुनाफ़िक़ों ने भी अच्छी-भली कोशिशें कीं, चुनांचे मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई ने ख़ैबर के यहूदियों को यह पैग़ाम भेजा कि अब मुहम्मद ने तुम्हारा रुख़ किया है, इसलिए चौकन्ना हो जाओ, तैयारी कर लो और देखो, डरना नहीं, क्योंकि तुम्हारी तायदाद और तुम्हारा सामान ज़्यादा है और मुहम्मद के साथी बहुत थोड़े और बे-समान हैं और उनके पास हथियार भी बस थोड़े ही से हैं।

जब ख़ैबर वालों को इसका पता चला तो उन्होंने कनाना बिन अबी हुक़ैक़ और होज़ा बिन क़ैस को मदद हासिल करने के लिए बनू ग़तफ़ान के पास रवाना किया, क्योंकि वे ख़ैबर के यहूदियों के मित्र और मुसलमानों के ख़िलाफ़ उनके मददगार थे। यहूदियों ने इतना बढ़कर कहा कि अगर उन्हें मुसलमानों पर ग़लबा हासिल हो गया तो ख़ैबर की आधी पैदावार उन्हें दे दी जाएगी।

ख़ैबर का रास्ता

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ख़ैबर जाते हुए इस्र पहाड़ को पार किया। फिर सह्बा की घाटी से गुज़रे। इसके बाद एक और घाटी में पहुंचे, जिसका नाम रजीअ है (मगर वह यह रजीअ नहीं है, जहां अज़्ल व क़ारा की ग़द्दारी से बनू लह्यान के हाथों आठ सहाबा किराम की शहादत और हज़रत ज़ैद व ख़ुबैब रज़ि० की गिरफ़्तारी और फिर मक्का में शहादत की घटना घटी।)

रजीअ से बनू ग़तफ़ान की आबादी सिर्फ़ एक दिन और एक रात की दूरी पर

1. देखिए फ़त्हुल बारी 7/465, ज़ादुल मआद 2/133

स्थित थी और बनू ग़तफ़ान ने तैयार होकर यहूदियों की मदद के लिए ख़ैबर का रास्ता ले लिया था, लेकिन रास्ते ही में उन्हें अपने पीछे एक शोर-शराबा सुनाई दिया, तो उन्होंने समझा कि मुसलमानों ने उनके बाल-बच्चों और मवेशियों पर हमला कर दिया है, इसलिए वे वापस पलट गए और ख़ैबर को मुसलमानों के लिए आज़ाद छोड़ दिया।

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रास्ते के उन दोनों माहिरों को बुलाया जो फ़ौज को रास्ता बताने पर लगे थे, उनमें से एक का नाम हुसैल था। इन दोनों से आपने ऐसा उचित रास्ता मालूम करना चाहा जिसे अपना करके ख़ैबर में उत्तर की ओर से यानी मदीना के बजाए शाम की ओर से दाख़िल हो सकें, ताकि इस रणनीति के ज़रिए एक ओर तो यहूदियों को शाम भागने का रास्ता बन्द कर दें और दूसरी ओर बनू ग़तफ़ान और यहूदियों के बीच रोक बनकर उनकी ओर से किसी मदद के पहुंचने की संभावना ख़त्म कर दें।

एक रहनुमा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं आपको ऐसे ही रास्ते ले चलूंगा। चुनांचे वह आगे-आगे चला। एक जगह पर पहुंचकर जहां कई रास्ते फूटते थे, अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! इन सब रास्तों से आप मंज़िल तक पहुंच सकते हैं।

आपने फ़रमाया कि वह हर एक का नाम बताए।

उसने बताया कि एक का नाम हज़न (सख़्त और ख़ुरदरा) है, आपने उस पर चलना मंज़ूर न किया।

उसने बताया, दूसरे का नाम शाश (बेचैनी वाला) है। आपने उसे भी मंज़ूर न किया।

उसने बताया, तीसरे का नाम हातिब (लकड़हारा) है। आपने उस पर भी चलने से इंकार कर दिया।

हुसैल ने कहा, अब एक ही रास्ता बाक़ी रह गया है।

हज़रत उमर ने फ़रमाया, उसका नाम क्या है ?

हुसैल ने कहा, मरहब ! नबी सल्ल० ने उसी पर चलना पसन्द फ़रमाया।

रास्ते की कुछ घटनाएं

1. हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ि० का बयान है कि हम लोग नबी सल्ल० के साथ ख़ैबर रवाना हुए। रात में सफ़र तै हो रहा था। एक आदमी ने आमिर से कहा था, ऐ आमिर ! क्यों न हमें अपनी अनोखी बातें सुनाओ।

आमिर कवि थे, सवारी से उतरे और क़ौम की ख़ूबियां गा-गाकर बयान

करने लगे। पद ये थे—

'ऐ अल्लाह ! अगर तू न होता, तो हम हिदायत न पाते, न सदक़ा करते, न नमाज़ पढ़ते, हम तुझ पर क़ुरबान ! तू हमें बख़्श दे, जब तक हम तक़्वा (ईशभय, संयम) अपनाएं। और अगर हम टकराएं तो हमारे क़दमों को जमाए रख और हम पर शान्ति उतार। जब हमें ललकारा जाता है, तो हम अकड़ जाते हैं और ललकार में हम पर लोगों ने भरोसा किया है।'

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, यह कौन गीतकार है ?

लोगों ने कहा, आमिर बिन अकवअ।

आपने फ़रमाया, अल्लाह उस पर दया करे।

क़ौम के एक आदमी ने कहा, अब तो (उनकी शहादत) वाजिब हो गई। आपने उनके वजूद का हमें पता क्यों न दिया ?[1]

सहाबा किराम को मालूम था कि (लड़ाई के मौक़े पर) अल्लाह के रसूल सल्ल० किसी इंसान के लिए ख़ास तौर से मग़्फ़िरत की दुआ करें, तो वह शहीद हो जाता है।[2] और यही घटना ख़ैबर की लड़ाई में (हज़रत आमिर के साथ) घटी, इसीलिए उन्होंने अर्ज़ किया था कि क्यों न उनके लिए उम्र लम्बी होने की दुआ की गई उनके वजूद से हम कुछ और फ़ायदा उठाते।

2. ख़ैबर के बिल्कुल क़रीब सह्बा घाटी में आपने अस्र की नमाज़ पढ़ी, फिर रास्ते में खाने के सामान मंगवाए, तो सिर्फ़ सत्तू लाया गया और उसे आपके हुक्म से साना गया, फिर आपने खाया और सहाबा रज़ि० ने भी खाया। इसके बाद आप मग़रिब के लिए उठे, तो सिर्फ़ कुल्ली की। सहाबा ने भी कुल्ली की, फिर आपने नमाज़ पढ़ी और वुज़ू नहीं फ़रमाया।[3] (पिछले वुज़ू को ही काफ़ी समझा) फिर आपने इशा की नमाज़ अदा फ़रमाई।[4]

इस्लामी फ़ौज ख़ैबर के दामन में

मुसलमानों ने आख़िरी रात, जिसकी सुबह लड़ाई शुरू हुई, ख़ैबर के क़रीब गुज़ारी, लेकिन यहूदियों को कानों कान ख़बर न हुई।

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वा ख़ैबर 2/603, सहीह मुस्लिम बाब ग़ज़वा ज़ीक़िरद वग़ैरह 2/115,
2. सहीह मुस्लिम 2/115
3. वही, सहीह बुख़ारी 2/603
4. मुग़ाज़िल वाक़दी (ग़ज़वा ख़ैबर, पृ० 112)

नबी सल्ल० का क़ायदा था कि जब रात के वक़्त किसी क़ौम के पास पहुंचते, तो सुबह हुए बग़ैर उनके क़रीब न जाते। चुनांचे उस रात जब सुबह हुई तो आपने अंधेरे में फ़ज्र की नमाज़ अदा फ़रमाई। इसके बाद मुसलमान सवार होकर ख़ैबर की ओर बढ़े। उधर ख़ैबर वाले बेख़बरी में अपने फावड़े और खांची वग़ैरह लेकर अपनी खेती-बाड़ी के लिए निकले, तो अचानक फ़ौज देखकर चीख़ते हुए शहर की ओर भागे कि अल्लाह की क़सम! मुहम्मद फ़ौज समेत आ गए हैं। नबी सल्ल० ने (यह दृश्य देखकर) फ़रमाया, अल्लाहु अक्बर! ख़ैबर तबाह हुआ, अल्लाहु अक्बर, ख़ैबर तबाह हुआ। जब हम किसी क़ौम के मैदान में उतर पड़ते हैं, तो इन डराए हुए लोगों की सुबह बुरी हो जाती है।[1]

3. साथ ही जब आप ख़ैबर के इतने क़रीब पहुंच गए कि शहर दिखाई पड़ने लगा, तो आपने फ़रमाया, ठहर जाओ। फ़ौज ठहर गई और आपने यह दुआ फ़रमाई—

'ऐ अल्लाह! सातों आसमान और जिन पर वे साया डाले हुए हैं, उनके पालनहार! और सातों ज़मीन और जिनको वे उठाए हुए हैं, उनके पालनहार! और शैतानों और जिनको उन्होंने गुमराह किया, उनके पालनहार! हम तुझसे इस बस्ती की भलाई, इसके रहने वालों की भलाई और इसमें जो कुछ है, उसकी भलाई का सवाल करते हैं और इस बस्ती के शर से और इसके रहने वालों के शर से और इसमें जो कुछ है उसके शर से तेरी पनाह मांगते हैं।'

(इसके बाद फ़रमाया, चलो) अल्लाह के नाम से आगे बढ़ो।[2]

ख़ैबर के क़िले

ख़ैबर की आबादी दो मंडलों में बंटी हुई थी। एक मंडल में नीचे लिखे पांच क़िले थे—

1. हिस्ने नाइम, 2, हिस्न साब बिन मुआज़, 3. हिस्न क़िला ज़ुबैर, 4. हिस्न उबई, 5. हिस्ने नज़ार।

इनमें से पहले तीन क़िलों पर आधारित इलाक़ा नुज़रात कहलाता था और बाक़ी दो क़िलों पर आधारित इलाक़ा शक़ के नाम से मशहूर था।

ख़ैबर की आबादी का दूसरा मंडल कतीबा कहलाता था। इसमें सिर्फ़ तीन क़िले थे।

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वा ख़ैबर 2/603, 604
2. इब्ने हिशाम 2/329

1. हिस्न क़मूस, (यह क़बीला बनू नज़ीर के खानदान अबुल हुक़ैक़ का क़िला था, 2. हिस्ने वतीह, 3. हिस्ने सलालिम।

इन आठ क़िलों के अलावा ख़ैबर में कुछ और क़िले और गढ़ियां भी थीं, पर वे छोटी थीं, और ताक़त और हिफ़ाज़त में इन क़िलों जैसी न थीं।

जहां तक लड़ाई का ताल्लुक़ है, तो वह सिर्फ़ पहले मंडल में हुई। दूसरे मंडल के तीनों क़िले लड़ने वालों के ज़्यादा होने के बावजूद लड़ाई के बिना ही मुसलमानों के हवाले कर दिए गए।

नबी सल्ल० ने फ़ौज के पड़ाव के लिए एक जगह चुनी। इस पर हुबाब बिन मुंज़िर रज़ि० ने आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह बताइए कि इस जगह अल्लाह ने आपको पड़ाव डालने का हुक्म दिया है या यह सिर्फ़ आपकी लड़ाई की कोई तदबीर और राय है ?

आपने फ़रमाया, नहीं, यह सिर्फ़ एक राय और तदबीर है।

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह जगह क़िला नज़ात से बहुत ही क़रीब है और ख़ैबर के सारे योद्धा इसी क़िले में हैं। उन्हें हमारे हालात का पूरा-पूरा पता रहेगा और हमें उनके हालात की ख़बर न होगी। उनके तीर हम तक पहुंच जाएंगे और हमारे तीर उन तक न पहुंच सकेंगे। हम उनकी छापमारी से भी न बचे रहेंगे, फिर यह जगह खजूरों के बीच में है, नीचे के हिस्से में है और यहां की धरती भी महामारी वाली है, इसलिए मुनासिब होगा कि आप किसी ऐसी जगह पड़ाव डालने का हुक्म फ़रमाएं, जो इन ख़तरों से ख़ाली हों और हम उस जगह जाकर पड़ाव डालें।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुमने जो राय दी, बिल्कुल दुरुस्त है। इसके बाद दूसरी जगह चले गए।

लड़ाई की तैयारी और विजय की शुभ-सूचना

जिस रात ख़ैबर की सीमाओं में अल्लाह के रसूल सल्ल० दाख़िल हुए, फ़रमाया, मैं कल एक ऐसे आदमी को भेज दूंगा जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता है और जिससे अल्लाह और उसके रसूल मुहब्बत करते हैं। सुबह हुई तो सहाबा किराम नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हर एक यही आरज़ू बांधे और आस लगाए खड़ा था कि झंडा उसे मिल जाएगा। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, अली बिन अबी तालिब कहां है ?

सहाबा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! उनकी तो आंख आई हुई है।[1]

---

1. इसी बीमारी की वजह से पहले पहल आप पीछे रह गए थे, फिर फ़ौज से जा मिले।

फ़रमाया, उन्हें बुला लाओ। वह लाए गए। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनकी आंखों में होंठों का राल लगा दिया और दुआ फ़रमाई। वह स्वस्थ हो गये, मानो उन्हें तक्लीफ़ थी ही नहीं। फिर उन्हें झंडा अता फ़रमाया।

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं उनसे उस वक़्त तक लड़ूं कि वे हमारे जैसे हो जाएं।

आपने फ़रमाया, इत्मीनान से जाओ, यहां तक कि उनके मैदान में उतरो, फिर उन्हें सलाम की दावत दो और इस्लाम में अल्लाह के जो हक़ उन पर वाजिब होते हैं, उनसे सचेत करो। ख़ुदा की क़सम ! तुम्हारे ज़रिए अल्लाह एक आदमी को भी हिदायत दे दे, तो यह तुम्हारे लिए लाल ऊंटों से बेहतर है।[1]

लड़ाई की शुरूआत और क़िला नाइम की जीत

बहरहाल यहूदियों ने जब फ़ौज़ देखी तो सीधे शहर में भागे और अपने क़िलों में क़िलाबन्द हो गए और यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि लड़ाई के लिए तैयार हो जाएं। मुसलमानों ने सबसे पहले नाइम क़िले पर हमला किया, क्योंकि यह क़िला अपनी स्थिति की नज़ाकत और रणनीति की दृष्टि से यहूदियों की पहली रक्षा-पंक्ति की हैसियत रखता था और यही क़िला मरहब नामी शहज़ोर और जांबाज़ यहूदी का क़िला था, जिसे एक हज़ार मर्दों के बराबर जाना जाता था।

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु मुसलमानों की फ़ौज लेकर उस क़िले के सामने पहुंचे और यहूदियों को इस्लाम की दावत दी, तो उन्होंने यह दावत ठुकरा दी और अपने बादशाह मरहब की कमान में मुसलमानों के मुक़ाबले में आ खड़े हुए।

लड़ाई के मैदान में उतरकर पहले मरहब ने लड़ने की दावत दी, जिसकी दशा सलमा बिन अकवअ ने यों बयान की है कि जब हम लोग ख़ैबर पहुंचे तो उनका बादशाह मरहब अपनी तलवार लेकर घमंड में चूर इठलाता और यह कहता हुआ सामने आया—

ख़ैबर को मालूम है, मैं मरहब हूं, हथियारबन्द, बहादुर और तजुर्बेकार, जब

---

1. सहीह बुख़ारी बाब ग़ज़वा ख़ैबर 2/605, 606। कुछ रिवायतों से मालूम होता है कि ख़ैबर के एक क़िले की जीत में कई कोशिशों की नाकामी के बाद हज़रत अली को झंडा दिया गया था, लेकिन शोधकों के नज़दीक तर्जीह के क़ाबिल वही है जिसका ऊपर ज़िक्र किया गया।

लड़ाई की आग भड़क उठे।

इसके मुक़ाबले में मेरे चचा आमिर सामने आए और फ़रमाया—

'ख़ैबर जानता है मैं आमिर हूं, हथियारबन्द, वीर और योद्धा।'

फिर दोनों ने एक दूसरे पर वार किया। मरहब की तलवार मेरे चचा आमिर की ढाल में जा छिपी और आमिर ने उसे नीचे से मारना चाहा, लेकिन उसकी तलवार छोटी थी। उन्होंने यहूदी की पिंडली पर हमला किया तो तलवार का सिर पलटकर उनके घुटने पर आ लगा और आख़िरकार उसी घाव से उनकी मौत हो गई। नबी सल्ल० ने अपनी दो उंगलियां इकट्ठा करके उनके बारे में फ़रमाया कि उनके लिए दोहरा बदला है। वह बड़े जांबाज़ मुजाहिद थे, कम ही उन जैसा कोई अरब भू-भाग पर चला होगा।[1]

बहरहाल हज़रत आमिर के घायल होने के बाद मरहब के मुक़ाबले के लिए हज़रत अली तशरीफ़ ले गए। हज़रत सलमा बिन अकवअ का बयान है कि उस वक़्त हज़रत अली ने ये पद कहे—

'मैं वह व्यक्ति हूं कि मेरी मां ने मेरा नाम हैदर (शेर) रखा है, जंगल के शेर की तरह भयावह। मैं उन्हें साअ के बदले नेज़े की नाप पूरी करूंगा।' इसके बाद मरहब के सर पर ऐसी तलवार मारी कि वहीं ढेर हो गया। फिर हज़रत अली ही के हाथों जीत मिली।[2]

लड़ाई के दौरान हज़रत अली रज़ि० यहूदियों के क़रीब पहुंचे, तो एक यहूदी ने क़िले की चोटी से झांककर कहा, तुम कौन हो?

हज़रत अली ने कहा, मैं अली बिन अबू तालिब हूं।

यहूदियों ने कहा, उस किताब की क़सम जो मूसा पर उतारी गई, तुम लोग बुलंद हुए।

इसके बाद मरहब का भाई यासिर यह कहते हुए निकला कि कौन है जो मेरा मुक़ाबला करेगा। उसकी इस चुनौती पर हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु मैदान में उतरे। इस पर उनकी मां हज़रत सफ़िया रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल

---

1. सहीह मुस्लिम, बाब ग़ज़वा ख़ैबर 2/142, बाब ग़ज़वा ज़ीक़िरद वग़ैरह 2/115, सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वा ख़ैबर 2/602
2. मरहब के क़ातिल के बारे में स्रोतों में बड़ा मतभेद है और इसमें भी बड़ा मतभेद है कि वह किस दिन मारा गया और किस दिन यह क़िला जीता गया। बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायतों में किसी हद तक मतभेद पाया जाता है। हमने ऊपर जो कुछ बताया है, वह सहीह बुख़ारी की रिवायत को तर्जीह देने की वजह से है।

सल्ल० ! क्या मेरा बेटा क़त्ल किया जाएगा?

आपने फ़रमाया, बल्कि, तुम्हारा बेटा उसे क़त्ल करेगा। चुनांचे हज़रत ज़ुबैर ने यासिर को क़त्ल कर दिया।

इसके बाद हिस्ने नाइम के पास ज़ोरदार लड़ाई हुई, जिसमें कई बड़े यहूदी सरदार मारे गए और बाक़ी यहूदियों में मुक़ाबले की ताक़त न रही, चुनांचे वे मुसलमानों का हमला न रोक सके। कुछ सूत्रों से मालूम होता है कि यह लड़ाई कई दिन जारी रही और इसमें ज़बरदस्त मुक़ाबला करना पड़ा, फिर भी यहूदी मुसलमानों को हराने से निराश हो चुके थे, इसलिए चुपके-चुपके इस क़िले से निकलकर क़िला साब में चले गए और मुसलमानों ने क़िला नाइम पर क़ब्ज़ा कर लिया।

क़िला साब बिन मुआज़ की जीत

क़िला नाइम के बाद क़िला साब ताक़त और हिफ़ाज़त के लिहाज़ से दूसरा सबसे बड़ा मज़बूत क़िला था। मुसलमानों ने हज़रत हुबाब बिन मुंज़िर अंसारी रज़ि० की कमान में उस क़िले पर हमला किया और तीन दिन तक उसे घेरे में लिए रखा। तीसरे दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस क़िले की जीत के लिए ख़ास तौर से दुआ फ़रमाई।

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि क़बीला अस्लम की शाखा बनू सह्म के लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, हम लोग चूर हो गए हैं और हमारे पास कुछ नहीं है।

आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! तुझे इनका हाल मालूम है। तू जानता है कि इनके अन्दर ताक़त नहीं और मेरे पास भी कुछ नहीं कि मैं इन्हें दूं। इसलिए यहूदियों के ऐसे क़िले को जिता जो सबसे ज़्यादा काम का हो और जहां सब्से ज़्यादा ख़ुराक और चर्बी मिले। इसके बाद लोगों ने हमला किया और अल्लाह ने साब बिन मुआज़ पर जीत दिला दी। ख़ैबर में कोई ऐसा क़िला न था, जहां इस क़िले से ज़्यादा ख़ुराक और चर्बी रही हो।[1]

और जब दुआ फ़रमाने के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों से इस क़िले पर हमले की दावत दी, तो हमला करने में बनू अस्लम ही पेश-पेश थे। यहां भी क़िले के सामने लड़ाई और मार-पीट हुई। फिर उसी दिन सूरज डूबने से पहले-पहले क़िला जीत लिया गया और मुसलमानों ने उसमें

1. इब्ने हिशाम 2/332

कुछ मनजनीक़ और दबाबे[1] भी पाए।

इब्ने इस्हाक़ की इस रिवायत में जिसमें तेज़ भुखमरी का उल्लेख हुआ है, कहा गया है कि उसी का यह नतीजा था कि लोगों ने (जीत मिलते ही) गधे ज़िब्ह कर दिए और चूल्हों पर हंडिया चढ़ा दी, लेकिन जब अल्लाह के रसूल सल्ल० को इसका इल्म हुआ तो आपने घरेलू गधे के गोश्त से मना फ़रमा दिया।

क़िला ज़ुबैर की जीत

क़िला नाइम और क़िला मुसअब की जीत के बाद यहूदी नतात के सारे क़िलों से निकलकर क़िला ज़ुबैर में जमा हो गए। यह एक सुरक्षित क़िला था और पहाड़ की चोटी पर स्थित था। रास्ता इतना पेचदार और मुश्किल था कि यहां न सवारों की पहुंच हो सकती थी, न प्यादों की, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उसके चारों ओर घेरा डाल दिया और तीन दिन तक घेराव किए पड़े रहे। इसके बाद एक यहूदी ने आकर कहा, ऐ अबुल क़ासिम ! अगर आप एक महीने तक घेराव किए रहे हों, तो भी इन्हें कोई परवाह न होगी, अलबत्ता इनके पीने के पानी और चश्मे ज़मीन के नीचे हैं। ये रात में निकलते हैं, पानी पी लेते और ले लेते हैं, फिर क़िले में वापस चले जाते हैं और आपसे बचे रहते हैं। अगर आप इनका पानी बन्द कर दें, तो ये घुटने टेक देंगे।

इस सूचना पर आपने इनका पानी बन्द कर दिया। इसके बाद यहूदियों ने बाहर आकर ज़बरदस्त लड़ाई लड़ी, जिसमें कई मुसलमान मारे गए और लगभग दस यहूदी भी काम आए, लेकिन क़िला जीत लिया गया।

क़िला उबई की जीत

क़िला ज़ुबैर से हारने के बाद यहूदी किला उबई में क़िला बन्द हो गए। मुसलमानों ने उसका भी घेराव कर लिया। अब की बार दो वीर यहूदी एक के बाद एक लड़ाई की दावत देते हुए मैदान में उतरे और दोनों ही मुसलमान योद्धाओं के हाथों मारे गए। दूसरे यहूदी के क़ातिल लाल पट्टी वाले मशहूर योद्धा हज़रत अबू दुजाना समाक बिन ख़रशा अंसारी रज़ि० थे। वह दूसरे यहूदी को क़त्ल करके बहुत तेज़ी से क़िले में जा घुसे और उनके साथ ही इस्लामी

---

1. लकड़ी का एक सुरक्षित और बन्द गाड़ीनुमा डिब्बा बनाया जाता था, जिसमें नीचे से कई आदमी घुसकर क़िले की फ़सील को जा पहुंचते थे और दुश्मन की पहुंच से बचे रहते हुए फ़सील में शगाफ (छेद) करते थे, यही दबाबा कहलाता था। अब टैंक को दबाबा कहा जाता है।

फ़ौज भी क़िले में जा घुसी। क़िले के अन्दर कुछ देर तक तो ज़ोरदार लड़ाई हुई, लेकिन इसके बाद यहूदियों ने क़िले से खिसकना शुरू किया और आख़िर में सबके सब क़िला नज़ार में पहुंच गए जो ख़ैबर के पहले आधे (यानी पहले मंडल) का आख़िरी क़िला था।

क़िला नज़ार की जीत

यह क़िला इलाक़े का सबसे मज़बूत क़िला था और यहूदियों को लगभग यक़ीन था कि मुसलमान अपनी इंतिहाई कोशिशें लगा देने के बावजूद इस क़िले में दाख़िल नहीं हो सकते, इसलिए इस क़िले में वे सब औरतों और बच्चों समेत ठहरे, जबकि पिछले चार क़िलो में औरतों और बच्चों को नहीं रखा गया था।

मुसलमानों ने इस क़िले का सख़्ती से घेराव किया और यहूदियों पर कड़ा दबाव डाला, लेकिन क़िला चूंकि एक ऊंची और सुरक्षित पहाड़ी पर स्थित था, इसलिए इसमें दाख़िल होने की कोई शक्ल बन नहीं पड़ रही थी।

इधर यहूदी क़िले से बाहर निकलकर मुसलमानों से टकराने की जुर्रात नहीं कर रहे थे, अलबत्ता तीर बरसा-बरसाकर और पत्थर फेंक-फेंककर कड़ा मुकाबला कर रहे थे।

जब इस क़िले (नज़ार) की जीत मुसलमानों के लिए ज़्यादा कठिन महसूस होने लगी तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मिनजनीक़ के हथियारों को लगाने का हुक्म फ़रमाया और मालूम होता है कि मुसलमानों ने कुछ गोले फेंके भी, जिससे क़िले की दीवारों में सूराख़ हो गए और मुसलमान अन्दर घुस गए।

इसके बाद क़िले के भीतर ज़ोरदार लड़ाई हुई और यहूदियों को ज़बरदस्त हार का मुंह देखना पड़ा। वे बाक़ी क़िलों की तरह इस क़िले से चुपके-चुपके खिसककर न निकल सके, बल्कि इस तरह बकटुट भागे कि अपनी औरतों और बच्चों को भी साथ न ले जा सके और उन्हें मुसलमानों की रहम व करम पर छोड़ दिया।

इस मज़बूत क़िले की जीत के बाद ख़ैबर का पहला आधा यानी नतात और शक़ का इलाक़ा जीत लिया गया। इस इलाक़े में छोटे-छोटे कुछ और क़िले भी थे, लेकिन इस क़िले के जीतते ही यहूदियों ने इन बाक़ी क़िलों को भी ख़ाली कर दिया और शहर ख़ैबर के दूसरे मंडल यानी कुतैबा की ओर भाग गए।

ख़ैबर के दूसरे आधे की जीत

नतात और शक़ का इलाक़ा जीता जा चुका तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कुतैबा व तीह और सलालिम के इलाक़े का रुख़ किया। सलामिम बनू नज़ीर के

एक मशहूर यहूदी अबुल हुक़ैक़ का क़िला था। इधर नतात और शक़ के इलाक़े से हार कर भागने वाले सारे यहूदी भी यहीं पहुंचे हुए थे और बड़ी ठोस क़िलाबंदी कर ली थी।

युद्ध विद्या के विशेषज्ञों में मतभेद है कि यहां के तीनों क़िलों में से किसी क़िले पर लड़ाई हुई या नहीं? इब्ने इस्हाक़ के बयान से यह स्पष्ट है कि क़िला क़मूस को जीतने के लिए लड़ाई लड़ी गई, बल्कि उसे देखने से यह भी मालूम होता है कि यह क़िला सिर्फ़ लड़ाई लड़कर जीता गया था और यहूदियों की ओर से आत्म समर्पण के लिए यहां कोई बातचीत नहीं हुई थी।[1]

लेकिन वाक़दी ने दो टोक शब्दों में स्पष्ट किया है कि इस इलाक़े के तीनों क़िले बातचीत के ज़रिए मुसलमानों के हवाले किए गए। मुम्किन है कि क़िला क़मूस के समर्पण के लिए कुछ लड़ाई के बाद बातचीत हुई हो, अलबत्ता बाक़ी दोनों क़िले किसी लड़ाई के बग़ैर मुसलमानों के हवाले कर दिए गए।

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० इस इलाक़े कुतैबा में तशरीफ़ लाए तो वहां के निवासियों का कड़ाई से घेराव किया। यह घेराव चौदह दिन जारी रहा। यहूदी अपने क़िलों से निकल ही नहीं रहे थे, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इरादा किया कि मनजनीक़ लगा लें। जब यहूदियों को तबाही का यक़ीन हो गया तो उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल० से समझौते की बात शुरू की।

समझौते की बातचीत

पहले इब्ने अबिल हुक़ैक़ ने अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास पैग़ाम भेजा कि क्या मैं आपके पास आकर बातचीत कर सकता हूं?

आपने फ़रमाया, हां।

और जब यह जवाब मिला तो आपके पास हाज़िर होकर इस शर्त पर समझौता कर लिया कि क़िले में जो फ़ौज है उसकी जान बख़्शी कर दी जाएगी और उनके बाल-बच्चे उन्हीं के पास रहेंगे। (यानी उन्हें लौंडी और ग़ुलाम नहीं बनाया जाएगा।) बल्कि वे अपने बाल-बच्चों को लेकर ख़ैबर के भू-भाग से निकल जाएंगे और अपने माल, बाग़, ज़मीन, सोने, चांदी, घोड़े, ज़िरहें, अल्लाह के रसूल सल्ल० के हवाले कर देंगे। सिर्फ़ वह कपड़ा ले जाएंगे जो इंसान की पीठ पर होगा।[2]

---

1. देखिए, इब्ने हिशाम 2/331, 336, 337
2. लेकिन सुनने अबू दाऊद में यह खुलकर लिखा हुआ है कि आपने इस शर्त पर समझौता किया था कि मुसलमानों की ओर से यहूदियों को इजाज़त होगी कि ख़ैबर से

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, और अगर तुम लोगों ने मुझसे कुछ छिपाया, तो फिर अल्लाह और उसके रसूल की ज़िम्मेदारी न होगी।

यहूदियों ने यह शर्त मंज़ूर कर ली और समझौता हो गया।[1] इस समझौते के बाद तीनों क़िले मुसलमानों के हवाले कर दिए गए और इस तरह ख़ैबर की जीत पूरी हो गई।

अबुल हुक़ैक़ के दोनों बेटों की बद-अहदी और उनका क़त्ल

इस समझौते के बावजूद अबुल हुक़ैक़ के दोनों बेटों ने बहुत-सा माल ग़ायब कर दिया। एक खाल ग़ायब कर दी जिसमें माल और हुइ बिन अख़तब के गहने थे। उसे हुइ बिन अख़तब मदीने से निकाले जाने के वक़्त अपने साथ लाया था।

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कनाना बिन अबिल हुक़ैक़ लाया गया। उसके पास बनू नज़ीर का ख़ज़ाना था, लेकिन आपने मालूम किया तो उसने यह मानने से इंकार कर दिया कि इस ख़ज़ाने की जगह के बारे में कोई ज्ञान है। इसके बाद एक यहूदी ने आकर बताया कि मैं कनाना को हर दिन इस वीराने का चक्कर लगाते हुए देखता था, इस पर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कनाना से फ़रमाया, यह बताओ कि अगर यह ख़ज़ाना हमने तुम्हारे पास से बरामद कर लिया तो हम तुम्हें क़त्ल कर देंगे ना।

उसने कहा, जी हां।

आपने वीराना खोदने का हुक्म दिया और उससे कुछ ख़ज़ाना बरामद हुआ। फिर बाक़ी ख़ज़ाने के बारे में आपने मालूम किया, तो फिर उसने अदा करने से इंकार कर दिया। इस पर आपने उसे हज़रत ज़ुबैर के हवाले कर दिया और फ़रमाया, इसे सज़ा दो, यहां तक कि इसके पास जो कुछ है, वह सबका सब हमें हासिल हो जाए।

हज़रत ज़ुबैर ने उसके सीने पर चक़माक़ की ठोकरें मारीं, यहां तक कि उसकी जान पर बन आई, फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मुहम्मद बिन मस्लमा के हवाले कर दिया और उन्होंने महमूद बिन मस्लमा के बदले उसकी गरदन मार

निकलते हुए अपनी सवारियों पर जितना माल लाद सकें, ले जाएं। (देखिए अबू दाऊद, बाब मा जा-अ फ़ी हुक्मि अरज़ि ख़ैबर 2/76)

1. ज़ादुल मआद 2/136

दी। (महमूद साया हासिल करने के लिए क़िला नाइम की दीवार के नीचे बैठे थे कि उस आदमी ने उन पर चक्की का पाट गिराकर उन्हें क़त्ल कर दिया था।)

इब्ने क़य्यिम का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबुल हुक़ैक़ के दोनों बेटों को क़त्ल करा दिया था और उन दोनों के ख़िलाफ़ माल छिपाने की गवाही कनाना के चचेरे भाई ने दी थी।

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हुइ बिन अख़तब की बेटी हज़रत सफ़िया को क़ैदी बना लिया। वह कनाना बिन अबिल हुक़ैक़ के तहत थीं और अभी दुल्हन थीं। उन्हें हाल में ही विदा किया गया था।

ग़नीमत के माल का बंटवारा

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने यहूदियों को ख़ैबर से देश निकाला देने का इरादा फ़रमाया था और समझौता में यही तै भी हुआ था, मगर यहूदियों ने कहा, ऐ मुहम्मद ! हमें इसी धरती पर रहने दीजिए, हम इसकी देख-रेख करेंगे, क्योंकि हमें आप लोगों से ज़्यादा इसकी जानकारी है। इधर अल्लाह के रसूल सल्ल० और सहाबा किराम के पास इतने ग़ुलाम न थे जो इस धरती की देख-रेख करते और जोतने-बोने का काम कर सकते और न ख़ुद सहाबा किराम को इतनी फ़ुर्सत थी कि यह काम पूरा कर सकते। इसलिए आपने ख़ैबर की ज़मीन इस शर्त पर यहूदियों के हवाले कर दी कि सारी खेती और तमाम फलों की पैदावार का आधा यहूदियों को दिया जाएगा। और जब तक अल्लाह के रसूल सल्ल० की मर्ज़ी होगी, उस पर बरक़रार रखेंगे (और जब चाहेंगे देश-निकाला दे देंगे) इसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ि० ख़ैबर की पैदावार का अन्दाज़ा लगाया करते थे।

ख़ैबर का बंटवारा इस तरह किया गया कि उसे 36 हिस्सों में बांट दिया गया। हर हिस्सा एक सौ हिस्सों का योग था। इस तरह कुल तीन हज़ार छः सौ हिस्से हुए। इसमें से आधा यानी अठारह सौ हिस्से अल्लाह के रसूल सल्ल० और मुसलमानों के थे। आम मुसलमानों की तरह अल्लाह के रसूल सल्ल० का भी सिर्फ़ एक हिस्सा था, बाक़ी यानी अठारह सौ हिस्सों पर आधारित दूसरा आधा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों की सामूहिक ज़रूरतों के लिए अलग कर लिया था।

अठारह सौ हिस्सों पर ख़ैबर का बंटवारा इसलिए किया गया कि यह अल्लाह की ओर से हुदैबिया वालों के लिए एक उपहार था, जो मौजूद थे, उनके लिए भी और जो मौजूद नहीं थे, उनके लिए भी और हुदैबिया वालों की तायदाद

चौदह सौ थी। जो ख़ैबर आते हुए अपने साथ दो सौ घोड़े लाए थे, चूंकि सवार के अलावा खुद घोड़े को भी हिस्सा मिलता है और घोड़े का हिस्सा डबल यानी दो फ़ौजियों के बराबर होता है, इसलिए ख़ैबर को अठारह सौ हिस्सों पर बांटा गया तो दो सौ घुड़सवारों को तीन-तीन हिस्से के हिसाब से छः सौ मिले, और बारह सौ पैदल फ़ौज को एक-एक हिस्से के हिसाब से बारह सौ हिस्से मिले।[1]

ख़ैबर की ग़नीमत के माल के ज़्यादा होने का अन्दाज़ा सहीह बुख़ारी में लिखी हज़रत इब्ने उमर रज़ि० की उस रिवायत से होता है कि उन्होंने फ़रमाया, 'हम लोग आसूदा न हुए, यहां तक कि हमने ख़ैबर जीत लिया।'

इसी तरह हज़रत आइशा रज़ि० की उस रिवायत से मालूम होता है कि उन्होंने फ़रमाया, जब ख़ैबर जीता गया, तो हमने कहा, 'अब हमें पेट भरकर खजूर मिलेगी।'[2]

साथ ही जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना वापस तशरीफ़ लाए तो मुहाजिरों ने अंसार को खजूरों के वे पेड़ वापस कर दिए, जो अंसार ने इमदाद के तौर पर उन्हें दे रखे थे, क्योंकि उनके लिए ख़ैबर में माल और खजूर के पेड़ हो चुके थे।[3]

हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब और अशअरी सहाबा का आना

इसी लड़ाई में हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उनके साथ अशअरी मुसलमान यानी हज़रत अबू मूसा और उनके साथी भी थे।

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० का बयान है कि यमन में हमें अल्लाह के रसूल सल्ल० के ज़ाहिर होने का पता चला, तो हम लोग यानी मैं और मेरे दो भाई अपनी क़ौम के पचास आदमियों समेत अपने वतन से हिजरत करके एक नाव में सवार होकर आपकी सेवा में पहुंचने के लिए चले, लेकिन हमारी नाव ने हमें नजाशी के देश हब्शा में फेंक दिया। वहां हज़रत जाफ़र और उनके साथियों से मुलाक़ात हुई। उन्होंने बताया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हमें भेजा है और यहीं ठहरे रहने का हुक्म दिया है। आप लोग भी हमारे साथ ठहर जाइए।

चुनांचे हम लोग भी उनके साथ ठहर गए और नबी सल्ल० की ख़िदमत में

---

1. ज़ादुल मआद 2/137, 138, मय वज़ाहत
2. सहीह बुख़ारी 3/609
3. ज़ादुल मआद 2/148, सहीह मुस्लिम 2/96

उस वक़्त पहुंच सके जब आप ख़ैबर जीत चुके थे। आपने हमारा भी हिस्सा लगाया, लेकिन हमारे अलावा किसी भी आदमी का, जो ख़ैबर की जीत में मौजूद न था, कोई हिस्सा नहीं लगाया, सिर्फ़ लड़ाई में शरीक लोगों का ही हिस्सा लगाया। अलबत्ता हज़रत जाफ़र और उनके साथियों के साथ हमारी नाव वालों का भी हिस्सा लगाया और उनको भी ग़नीमत के माल का हिस्सा बांट कर दिया।[1]

और जब हज़रत जाफ़र नबी सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे तो आपने उनका स्वागत किया और उन्हें चूमकर फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जानता कि मुझे किस बात की ख़ुशी ज़्यादा है, ख़ैबर के जीतने की या जाफ़र के आने की।[2]

याद रहे कि इन लोगों को बुलाने के लिए अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी को नजाशी के पास भेजा था और उससे कहलवाया था कि वह उन लोगों को आपके पास रवाना कर दे। चुनांचे नजाशी ने दो नावों पर सवार करके उन्हें रवाना कर दिया। ये कुल सोलह आदमी थे और उनके साथ उनके बाक़ी बच्चे और औरतें भी थीं। बाक़ी लोग इससे पहले मदीना आ चुके थे।[3]

हज़रत सफ़िया से शादी

हम बता चुके हैं कि जब हज़रत सफ़िया का शौहर कनाना बिन अबू हुक़ैक़ अपनी बद-अह्दी की वजह से क़त्ल कर दिया गया तो हज़रत सफ़िया क़ैदी औरतों में शामिल कर ली गईं। इसके बाद जब ये क़ैदी औरतें जमा की गईं तो हज़रत दिह्या बिन ख़लीफ़ा कलबी रज़ि० ने नबी की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मुझे क़ैदी औरतों में से एक लौंडी दे दीजिए।

आपने फ़रमाया, जाओ और एक लौंडी ले लो।

उन्होंने जाकर हज़रत सफ़िया बिन्त हुइ को चुन लिया। इस पर एक आदमी ने आपके पास आकर अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के नबी! आपने बनी क़ुरैज़ा और बनी नज़ीर की सैयिदा (सरदारनी) सफ़िया को दिह्या के हवाले कर दिया, हालांकि वह सिर्फ़ आपकी शान के मुताबिक़ है।

आपने फ़रमाया, दिह्या को सफ़िया समेत बुलाओ।

---

1. सहीह बुख़ारी 1/443, साथ ही देखिए फ़त्हुल बारी 7/484-487
2. ज़ादुल मआद 2/139, अल-मोजम अस-सग़ीर अत-तबरानी 1/19
3. तारीख़ ख़ज़री 1/128

हज़रत दिह्या उनको साथ लिए हाज़िर हुए। आपने उन्हें देखकर हज़रत दिह्या से फ़रमाया कि क़ैदियों में से कोई दूसरी लौंडी ले लो। फिर आपने हज़रत सफ़िया पर इस्लाम पेश किया। उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। इसके बाद आपने उन्हें आज़ाद करके उनसे शादी कर ली और उनकी आज़ादी ही को उनका मह्र क़रार दिया। मदीना वापसी में सद्दे सहबा पहुंचकर वह हलाल हो गईं। इसके बाद उम्मे सुलैम रज़ि० ने उन्हें आपके लिए सजाया-संवारा और रात में आपके पास रुख़्सत कर दिया। आपने दूल्हे की हैसियत से उनके साथ सुबह की और खजूर, घी, और सत्तू सान कर वलीमा खिलाया और रास्ते में तीन रात उनके पास क़ियाम फ़रमाया।[1]

इस मौक़े पर आपने उनके चेहरों पर हरा निशान देखा, पूछा, यह क्या है ?

कहने लगीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपके ख़ैबर आने से पहले मैंने सपना देखा कि चांद अपनी जगह से टूटकर मेरी गोद में आ गिरा है। ख़ुदा की क़सम ! मुझे आपके बारे में कोई ख़्याल भी न था, लेकिन मैंने यह सपना अपने पति से बयान किया, तो उसने मेरे चेहरे पर थप्पड़ रसीद करते हुए कहा, यह बादशाह जो मदीना में है, तुम उसकी आरज़ू कर रही हो।[2]

विष में बुझी बकरी की घटना

ख़ैबर की जीत के बाद जब अल्लाह के रसूल सल्ल० सन्तुष्ट और एकाग्र हो चुके, तो सलाम बिन मश्कम की बीवी जैनब बिन्त हारिस ने आपके पास भुनी हुई बकरी भेंट की। उसने कुछ पूछ रखा था कि अल्लाह के रसूल सल्ल० कौन-सा अंग पसन्द करते हैं और उसे बताया गया था कि दस्ता। इसलिए उसने दस्ते में ख़ूब विष मिला दिया था, और उसके बाद बाक़ी हिस्सा भी विष में भर दिया था। फिर उसे लेकर वह अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास आई और आपके सामने रखा, तो आपने दस्ता उठाकर उसका एक टुकड़ा चबाया, लेकिन निगलने के बजाए थूक दिया, फिर फ़रमाया, यह हड्डी मुझे बता रही है कि इसमें विष घोला गया है।

इसके बाद आपने ज़ैनब को बुलाया तो उसने स्वीकार कर लिया। आपने पूछा, तुमने ऐसा क्यों किया ?

उसने कहा, मैंने सोचा, अगर यह बादशाह है तो हमें इससे राहत मिल

---

1. सहीह बुख़ारी 1/54, 2/604, 606, ज़ादुल मआद 2/437
2. वही, ज़ादुल मआद 2/137, इब्ने हिशाम 2/336

जाएगी, और अगर नबी है तो इसे ख़बर दे दी जाएगी। इस पर आपने उसे माफ़ कर दिया।

इस मौक़े पर आपके साथ हज़रत बिश्र बिन बरा बिन मारूर भी थे। उन्होंने एक लुक़्मा निगल भी लिया था, जिसकी वजह से उनकी मौत वाक़े हो गई।

रिवायतों में मतभेद है कि आपने उस औरत को माफ़ कर दिया था, या क़त्ल कर दिया था। तालमेल इस तरह पैदा किया जा सकता है कि पहले तो आपने माफ़ कर दिया था, लेकिन जब हज़रत बिश्र की मौत हो गई, तो फिर क़सास के तौर पर क़त्ल कर दिया।[1]

ख़ैबर की लड़ाई में दोनों फ़रीक़ के मारे गए लोग

ख़ैबर की अलग-अलग लड़ाइयों में कुल मुसलमान जो शहीद हुए, उनकी तायदाद सोलह है। चार क़ुरैश से, एक क़बीला अशजअ से, एक क़बीला अस्लम से, एक ख़ैबर वालों में से और बाक़ी अंसार से—

एक कथन यह भी है कि इन लड़ाइयों में कुल 18 मुसलमान शहीद हुए। अल्लामा मंसूरपुरी ने 19 लिखा है, फिर वह लिखते हैं,

'सीरत लिखने वालों ने ख़ैबर के शहीदों की तायदाद पन्द्रह लिखी है। मुझे खोजते हुए 23 नाम मिले। ज़नीफ़ बिन वाइला का नाम सिर्फ़ वाक़दी ने और ज़नीफ़ बिन हबीब का नाम सिर्फ़ तबरी ने लिया है। बिश्र बिन बरा बिन मारूर का इंतिक़ाल लड़ाई के ख़त्म होने के बाद विषैला मांस खाने से हुआ जो नबी सल्ल० के लिए ज़ैनब यहूदिया ने भेजा था। बिश्र बिन अब्दुल मुंज़िर के बारे में दो रिवायतें हैं, 1. बद्र में शहीद हुए, 2. ख़ैबर की लड़ाई में शहीद हुए। मेरे नज़दीक पहली रिवायत मज़बूत है।[2]

दूसरे फ़रीक़ यानी यहूदियों में क़त्ल होने वालों की तायदाद 93 है।

फ़िदक

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ख़ैबर पहुंचकर मुहैयसा बिन मस्अद रज़ि० को इस्लाम की दावत देने के लिए फ़िदक के यहूदियों के पास भेज दिया था, लेकिन फ़िदक वालों ने इस्लाम अपनाने में देर की, पर जब अल्लाह ने ख़ैबर पर जीत

---

1. देखिए, ज़ादुल मआद 2/139, 140, फ़त्हुल बारी 7/497, सहीह बुख़ारी 1/449 2/610, 860, इब्ने हिशाम 2/337, 338
2. रहमतुल लिल आलमीन 2/268, 269, 270

दिला दी, तो उनके दिलों में रौब पड़ गया और उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास आदमी भेजकर ख़ैबर वालों के मामले के मुताबिक़ फ़िदक की आधी पैदावार देने की शर्तों पर समझौते की पेशकश की। आपने पेशकश क़ुबूल कर ली और इस तरह फ़िदक की धरती ख़ालिस अल्लाह के रसूल सल्ल० के लिए हुई, क्योंकि मुसलमानों ने उस पर घोड़े और ऊंट नहीं दौड़ाए थे।[1] (यानी उसे तलवार से नहीं जीता था) फ़िदक का वर्तमान नाम हाइत है जो हाइल डिवीज़न में स्थित है और मदीना से कम व बेश ढाई किलोमीटर दूर है।

वादिल क़ुरा

अल्लाह के रसूल सल्ल० ख़ैबर से फ़ारिग़ हुए तो वादिल क़ुरा तशरीफ़ ले गए। वहां भी यहूदियों की एक जमाअत थी और उनके साथ अरब की एक जमाअत भी शामिल हो गई थी।

जब मुसलमान वहां उतरे, तो यहूदियों ने तीरों से स्वागत किया। वे पहले से पूरी तरह तैयार बैठे थे। अल्लाह के रसूल सल्ल० का एक ग़ुलाम मारा गया। लोगों ने कहा, उसके लिए जन्नत मुबारक हो।

नबी सल्ल० ने कहा, हरगिज़ नहीं। उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, उसने ख़ैबर की लड़ाई में ग़नीमत के माल के बंटने से पहले उसमें से जो चादर चुराई थी, वह आग बनकर उस पर भड़क रही है।

लोगों ने नबी सल्ल० का यह इर्शाद सुना तो एक आदमी एक तस्मा या दो तस्मा लेकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। नबी सल्ल० ने फ़रमाया, यह एक तस्मा या दो तस्मा आग का है।[2]

इसके बाद नबी सल्ल० ने लड़ाई के लिए सहाबा किराम की तर्तीब और संफ बंदी की। पूरी फ़ौज का झंडा हज़रत साद बिन उबादा के हवाले किया। एक झंडा हुबाब बिन मुंज़िर को दिया और तीसरा झंडा उबादा बिन बिश्र को दिया। इसके बाद आपने यहूदियों को इस्लाम की दावत दी। उन्होंने क़ुबूल न किया और उनका एक आदमी लड़ाई के मैदान में उतर आया।

इधर से हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० ज़ाहिर हुए और उसका काम तमाम कर दिया। फिर दूसरा आदमी निकला। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने उसे भी क़त्ल कर दिया। इसके बाद एक और आदमी मैदान में आया। उसके मुक़ाबले के लिए

1. इब्ने हिशाम 2/337, 353
2. सहीह बुख़ारी 2/608

हज़रत अली रज़ि० निकले और उसे क़त्ल कर दिया। इस तरह धीरे-धीरे उनके ग्यारह आदमी मारे गए। जब एक आदमी मारा जाता तो नबी सल्ल० बाक़ी यहूदियों को इस्लाम की दावत देते।

दिन में जब नमाज़ का वक़्त होता तो आप सहाबा किराम को नमाज़ पढ़ाते और फिर पलटकर यहूदियों के मुक़ाबले में चले जाते और उन्हें इस्लाम और अल्लाह और उसके रसूल की दावत देते। इस तरह लड़ते- लड़ते शाम हो गई।

दूसरे दिन सुबह आप फिर तशरीफ़ ले गए, लेकिन अभी सूरज नेज़ा बराबर भी ऊंचा न हुआ था कि उनके हाथ में जो कुछ था, उसे आपके हवाले कर दिया यानी आपने ताक़त के ज़ोर से जीत पाई और अल्लाह ने उनके माल आपको ग़नीमत में दिए। सहाबा किराम को बहुत सारा साज़ व सामान हाथ आया।

अल्लाह के रसूल सल्ल० वादिल क़ुरा में चार दिन ठहरे रहे। ग़नीमत का जो माल हाथ आया था, उसे सहाबा किराम रज़ि० में बांट दिया, अलबत्ता ज़मीन और खजूर के बाग़ों को यहूदियों के हाथ में रहने दिया और उसके बारे में उनसे भी (ख़ैबर वालों जैसा) मामला तै कर लिया।[1]

तैमा

तैमा के यहूदियों को जब ख़ैबर, फ़िदक और वादिल क़ुरा के रहने वालों के हथियार डालने की ख़बर मिली, तो उन्होंने मुसलमानों के ख़िलाफ़ किसी क़िस्म की मोर्चाबन्दी का प्रदर्शन करने के बजाए ख़ुद से आदमी भेजकर सुलह की पेशकश की। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनकी पेशकश क़ुबूल कर ली और यहूदी अपने मालों के साथ ठहरे रहे।[2] इसके बारे में एक काग़ज़ लिख दिया, जो इस तरह था—

'यह लेख है मुहम्मद रसूलुल्लाह की ओर से बनू आदया के लिए। उनके लिए ज़िम्मा है और उन पर जिज़या है, उन पर ज़्यादती न होगी, न उन्हें देश निकाला दिया जाएगा, रात मददगार होगी और दिन पक्का करने वाला (यानी यह समझौता हमेशा का होगा) और यह लेख ख़ालिद बिन सईद ने लिखा।[3]

मदीना को वापसी

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मदीना वापसी का रास्ता लिया।

---

1. ज़ादुल मआद 2/146, 147
2. ज़ादुल मआद 2/147
3. इब्ने साद 1/279

वापसी के दौरान लोग एक घाटी के क़रीब पहुंचे, तो ऊंची आवाज़ से अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहने लगे। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, अपने नफ़्सों के साथ आसानी मिलने पर तो तुम लोग किसी बहरे और ग़ायब को नहीं पुकार रहे हो, बल्कि उस हस्ती को पुकार रहे हो जो सुनने वाली और क़रीब है।[1]

साथ ही बीच रास्ते में एक बार रात भर सफ़र जारी रखने के बाद आपने आख़िर रात में रास्ते में किसी जगह पड़ाव डाला और हज़रत बिलाल को यह ताकीद कर सो रहे कि हमारे लिए रात पर नज़र रखना (यानी सुबह होते ही नमाज़ के लिए जगा देना) लेकिन हज़रत बिलाल रज़ि० की भी आंख लग गई। वह (पूरब की ओर मुंह करके) अपनी सवारी पर टेक लगाए बैठे थे कि सो गए, फिर कोई भी न जागा, यहां तक कि लोगों पर धूप आ गई।

इसके बाद सबसे पहले अल्लाह के रसूल सल्ल० जागे, फिर (लोगों को जगाया गया) और आप इस घाटी से निकलकर कुछ आगे तशरीफ़ ले गए, फिर लोगों को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई। कहा जाता है कि यह घटना किसी दूसरे सफ़र में घटी थी।[2]

ख़ैबर की लड़ाइयों पर विस्तार में विचार करने पर मालूम होता है कि नबी सल्ल० की वापसी या तो (सन् 07 हि० के) सफ़र के आखिर में हुई थी या फिर रबीउल अव्वल के महीने में।

सरीया अबान बिन सईद

नबी सल्ल० सारे सेनापतियों से ज़्यादा अच्छी तरह यह बात जानते थे कि हराम महीनों के ख़ात्मे के बाद मदीना को पूरे तौर पर ख़ाली छोड़ देना सूझ-बूझ के बिल्कुल ख़िलाफ़ है, जबकि मदीना के आस-पास ऐसे बद्दू मौजूद हैं जो लूट-मार और डाकाज़नी के लिए मुसलमानों की ग़फ़लत का इन्तिज़ार करते रहते हैं। इसके लिए जिन दिनों में आप ख़ैबर गए, उन्हीं दिनों में आपने बद्दुओं को डराने-धमकाने के लिए अबान बिन सईद की कमान में नज्द की ओर एक सरीया भेज दिया था। अबान बिन सईद अपना फ़र्ज़ अदा करके वापस लौटे, तो नबी सल्ल० से ख़ैबर में मुलाक़ात हुई, उस वक़्त आप ख़ैबर जीत चुके थे।

---

1. सहीह बुख़ारी 2/605
2. इब्ने हिशाम 2/340, यह घटना बहुत ज़्यादा मशहूर और हदीस की आम किताबों में लिखा हुई है। साथ ही देखिए ज़ादुल मआद 2/147

ज़्यादा गुमान यही है कि यह सरीया सफ़र 07 हि० में भेजा गया था। इसका उल्लेख सहीह बुख़ारी में आया है।[1]

हाफ़िज़ इब्ने हजर लिखते हैं कि मुझे इस सरीया का हाल न मालूम हो सका।[2]

---

1. देखिए सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़्वा ख़ैबर 2/608, 609
2. फ़त्हुल बारी 7/491

ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ

(सन् 07 हि०)

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० अह्ज़ाब के तीन बाज़ुओं में से दो मज़बूत बाज़ुओं को तोड़कर फ़ारिग़ हो गए, तो तीसरे बाज़ू की ओर तवज्जोह का भरपूर मौक़ा मिल गया। तीसरा बाज़ू वे बद्दू थे, जो नज्द के रेगिस्तान में रहते थे और रह-रहकर लूटमार की कार्रवाइयां करते रहते थे।

चूंकि ये बद्दू किसी आबादी या शहर के रहने वाले न थे और उनका निवास मकानों और क़िलों के अन्दर न था, इसलिए मक्का वालों और ख़ैबर के रहने वालों के मुक़ाबले में इन पर पूरी तरह क़ाबू पा लेना और इनके शर व फ़साद की आग पूरे तौर पर बुझा देना बहुत कठिन था, इसलिए इनके हक़ में आतंकित करने वाली सज़ा भरी कार्रवाइयां ही फ़ायदेमंद हो सकती थीं।

चुनांचे इन बद्दुओं पर रौब व दबदबा क़ायम करने की ग़रज़ से—और दूसरों के मुताबिक़ मदीने के चारों ओर छापा मारने के इरादे से जमा होने वाले बद्दुओं को बिखेर देने की ग़रज से—नबी सल्ल० ने सज़ा देने वाला हमला फ़रमाया, जो ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ के नाम से मशहूर है।

ग़ज़वा की तारीख़ लिखने वालों ने आमतौर से इस ग़ज़वे का उल्लेख 04 हि० में किया है। लेकिन इमाम बुख़ारी ने इसका ज़माना सन् 07 हि० बताया है। चूंकि इस ग़ज़वे में हज़रत अबू मूसा अशअरी और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने शिर्कत की थी, इसलिए यह इस बात की दलील है कि यह ग़ज़वा ख़ैबर के बाद पेश आया था। (महीना शायद रबीउल अव्वल का था), क्योंकि अबू हुरैरह रज़ि० उस वक़्त मदीना पहुंचकर मुसलमान हुए थे, जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ख़ैबर के लिए मदीना से जा चुके थे।

फिर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० मुसलमान होकर सीधे नबी सल्ल० की सेवा में ख़ैबर पहुंचे और जब पहुंचे तो ख़ैबर जीता जा चुका था।

इसी तरह हज़रत अबू मूसा अशअरी हब्श से उस वक़्त नबी सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे थे जब ख़ैबर जीता जा चुका था, इसलिए ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ में इन दोनों सहाबियों की शिर्कत इस बात की दलील है कि यह ग़ज़वा ख़ैबर के बाद ही किसी वक़्त पेश आया था।

सीरत लिखने वालों ने इस ग़ज़वा के बारे में जो कुछ लिखा है, उसका सार

यह है कि नबी सल्ल० ने क़बीला अनमार या बनू ग़तफ़ान की दो शाखाओं बनी सालबा और बनी मुहारिब के जमा होने की ख़बर सुनकर मदीना का इन्तिज़ाम हज़रत अबूज़र या हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान के हवाले किया और झट चार सौ या सात सौ सहाबा किराम को साथ लेकर नज्द के इलाक़े का रुख़ किया। फिर मदीने से दो दिन की दूरी पर नख़्ल नामी जगह पहुंचकर बनू ग़तफ़ान की एक टुकड़ी का सामना हुआ, लेकिन लड़ाई नहीं हुई। अलबत्ता आपने इस मौक़े पर लड़ाई की हालत वाली नमाज़ (सलाते ख़ौफ़) पढ़ाई। बुख़ारी की एक रिवायत में यह है कि नमाज़ की इक़ामत कही गई और आपने एक गिरोह को दो रक्अत नमाज़ पढ़ाई। यों अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चार रक्अतें हुईं और क़ौम की दो रक्अतें हुईं।[1]

सहीह बुख़ारी में हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० से रिवायत है कि हम लोग अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ निकले। हम छः आदमी थे और एक ही ऊंट था, जिस पर बारी-बारी सवार होते थे। इससे हमारे क़दम छलनी हो गए। मेरे भी दोनों पांव घायल हो गए और नाख़ून झड़ गया। चुनानंचे हम लोग अपने पांवों पर चीथड़े लपेटे रहते थे। इसलिए उसका नाम ज़ातुर्रिक़ाअ (चीथड़ों वाला) पड़ गया, क्योंकि हमने उस ग़ज़वे में अपने पांवों पर चीथड़े और पट्टियां बांध और लपेट रखी थीं।[2]

और सहीह बुख़ारी ही में हज़रत जाबिर रज़ि० से यह रिवायत है कि हम लोग ज़ातुर्रिक़ाअ में नबी सल्ल० के साथ थे। (चलन यह था कि) जब हम किसी छायादार पेड़ पर पहुंचते तो उसे नबी सल्ल० के लिए छोड़ देते थे।

(एक बार) नबी सल्ल० ने पड़ाव डाला और लोग पेड़ की छाया लेने के लिए इधर-उधर कांटेदार पेड़ों के बीच बिखर गए। रसूलुल्लाह सल्ल० भी एक पेड़ के नीचे उतरे और उसी पेड़ से तलवार लटका कर (सो गए)।

हज़रत जाबिर फ़रमाते हैं कि हमें बस एक नींद आई थी कि इतने में एक मुश्रिक ने आकर अल्लाह के रसूल सल्ल० की तलवार सौंत ली और बोला, तुम मुझसे डरते हो?

आपने फ़रमाया, नहीं।

उसने कहा, तब तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा?

---

1. सहीह बुख़ारी 1/407, 408, 2/593,
2. सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ 2/592, सहीह मुस्लिम, बाब ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ 2/118

आपने फ़रमाया, अल्लाह !

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हमें अचानक रसूलुल्लाह सल्ल० पुकार रहे थे। हम पहुंचे तो देखा एक बद्दू (आराबी) आपके पास बैठा है। आपने फ़रमाया, मैं सोया था और इसने मेरी तलवार सौंत ली। इतने में मैं जाग गया और सौंती हुई तलवार उसके हाथ में थी। इसने मुझसे कहा, तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा ?

मैंने कहा, अल्लाह ! तो अब यह वही आदमी बैठा हुआ है। फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उसे सज़ा न दी।

अबू अवाना की रिवायत में इतना और मिलता है कि (जब आपने उसके सवाल के जवाब में अल्लाह कहा, तो) तलवार उसके हाथ से गिर पड़ी। फिर वह तलवार अल्लाह के रसूल सल्ल०ने उठा ली और फ़रमाया, अब तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा ?

उसने कहा, आप अच्छे पकड़ने वाले होइए (यानी एहसान कीजिए)

आपने फ़रमाया, तुम गवाही देते हो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूं।

उसने कहा, मैं आपसे अह्द करता हूं कि आपसे लड़ाई नहीं करूंगा और न आपसे लड़ाई करने वालों का साथ दूंगा।

हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि इसके बाद आपने उसकी राह छोड़ दी और उसने अपनी क़ौम में जाकर कहा, मैं तुम्हारे यहां सबसे अच्छे इंसान के पास से आ रहा हूं।[1]

सहीह बुख़ारी की रिवायत में जिसे मुसद्दिद ने अबू अवाना से और उन्होंने अबू बिश्र से रिवायत किया है, बताया जाता है कि उस आदमी का नाम ग़ौस बिन हारिस था।[2]

इब्ने हजर कहते हैं कि वाक़दी के नज़दीक इस घटना के विस्तार में यह बयान किया गया है कि उस बद्दू (आराबी) का नाम दासूर था और उसने इस्लाम क़ुबूल कर लिया था, लेकिन वाक़दी के कलाम से ज़ाहिर में मालूम होता है कि ये अलग-अलग दो घटनाएं थीं, जो दो अलग-अलग ग़ज़्वों में घटी थीं।[3] (वल्लाहु आलम)

---

1. मुख़्तसरुस्सीरः लेख : शेख़ अब्दुल्लाह नज्दी, पृ० 264, साथ ही देखिए फ़त्हुल बारी 7/416
2. सहीह बुख़ारी 2/593
3. फ़त्हुल बारी 7/428

इस ग़ज़्वे से वापसी में सहाबा किराम ने एक मुश्रिक औरत को गिरफ़्तार कर लिया। इस पर उसके शौहर ने नज़्र मानी कि वह मुहम्मद के साथियों के अन्दर एक ख़ून बहाकर रहेगा। चुनांचे वह रात के वक़्त आया। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने दुश्मन से मुसलमानों की हिफ़ाज़त के लिए दो आदमियों यानी इबाद बिन बिश्र और अम्मार बिन यासिर रज़ि० को पहरे पर लगा रखा था।

जिस वक़्त वह आया, हज़रत इबाद खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे। उसने इसी हालत में उनको तीर मारा। उन्होंने नमाज़ तोड़े बग़ैर तीर निकालकर झटक दिया। उसने दूसरा और तीसरा तीर मारा, लेकिन उन्होंने नमाज़ न तोड़ी और सलाम फेरकर ही फ़ारिग़ हुए। फिर अपने साथी को जगाया।

साथी ने (हालात जानकर) कहा, सुब्हानल्लाह! आपने मुझे जगा क्यों न दिया?

उन्होंने कहा, मैं एक सूरः पढ़ रहा था। गवारा न हुआ कि उसे काट दूं।[1]

संगदिल आराब को आतंकित और भयभीत करने में इस ग़ज़्वे का बड़ा असर रहा। हम इस ग़ज़्वे के बाद पेश आने वाली सराया पर नज़र डालते हैं तो देखते हैं कि ग़तफ़ान के इन क़बीलों ने इस ग़ज़्वे के बाद सर उठाने की जुर्रत न की, बल्कि ढीले पड़ते-पड़ते ढह गए और आख़िर में इस्लाम क़ुबूल कर लिया, यहां तक कि इन बद्दुओं के कई क़बीले हमको फ़त्हे मक्का और ग़ज़्वा हुनैन में मुसलमानों के साथ नज़र आते हैं और उन्हें ग़ज़्वा हुनैन के माले ग़नीमत में से हिस्सा दिया जाता है। फिर फ़त्हे मक्का से वापसी के बाद इनके पास सदक़ा वसूल करने के लिए इस्लामी हुकूमत के कर्मचारी भेजे जाते हैं और वे बाक़ायदा अपने सदक़े वसूल करते हैं।

ग़रज़ इस रणनीति से वे तीनों बाज़ू टूट गए जो ख़ंदक़ की लड़ाई में मदीने पर हमलावर हुए थे और इसकी वजह से पूरे इलाक़े में सुख-शान्ति का दौर-दौरा हो गया।

इसके बाद कुछ क़बीलों ने कुछ इलाक़ों में जो हंगामे किए, उस पर मुसलमानों ने बड़ी आसानी से क़ाबू पा लिया, बल्कि इसी ग़ज़्वे के बाद बड़े-बड़े शहरों और देशों पर विजय पाने का रास्ता हमवार करना शुरू कर दिया, क्योंकि इस ग़ज़्वे के बाद देश के भीतर हालात पूरी तरह इस्लाम और मुसलमानों के लिए साज़गार हो चुके थे।

---

1. ज़ादुल मआद 2/112, इस ग़ज़्वे की विस्तृत जानकारी के लिए देखिए इब्ने हिशाम, 2/203-209, ज़ादुल मआद 2/110, 111-112, फ़त्हुल बारी 7/417-428

सन् 07 हि० के कुछ सराया (झड़पें)

इस ग़जवे से वापस आकर रसूलुल्लाह सल्ल० शव्वाल 07 हि० तक मदीना में ठहरे रहे और इस बीच बहुत से सराया (ऐसी टुकड़ियां जिसमें अल्लाह के रसूल सल्ल० शरीक नहीं होते थे) रवाना किए, कुछ का विवेचन यह है—

1. सरीया क़दीद (सफ़र या रबीउल अव्वल सन् 07 हि०)

यह सरीया ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह लैसी की कमान में क़दीद की ओर क़बीला बनू मलूह को सज़ा देने के लिए रवाना किया गया। वजह यह थी कि बनू मलूह ने बिश्र बिन सुवैद के साथियों को क़त्ल कर दिया था और उसी का बदला लेने के लिए इस सरीया की रवानगी अमल में आई थी। इस सरीया ने रात में छापा मारकर बहुत से लोगों को क़त्ल कर दिया और जानवर हांक लाए। पीछे से दुश्मन ने एक बड़ी फ़ौज के साथ पीछा किया, लेकिन जब मुसलमानों के क़रीब पहुंचे, तो वर्षा होने लगी और एक बड़ी बाढ़ आ गई जो दोनों फ़रीक़ों के बीच में रोक बन गई। इस तरह मुसलमानों ने बाक़ी रास्ता भी सलामती के साथ तै कर लिया।

2. सरीया हिसमी (जुमादल आख़िर 07 हि०)

इसका ज़िक्र दुनिया के बादशाहों के पत्र के अध्याय में हो चुका है।

3. सरीया तरबा (शाबान 07 हि०)

यह सरीया हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के नेतृत्व में भेजा गया। उनके साथ तीस आदमी थे, जो रात में सफ़र करते और दिन में छिप जाते थे, लेकिन हवाज़िन को पता चल गया और वे निकल भागे। हज़रत उमर रज़ि० उनके इलाक़े में पहुंचे तो कोई भी न मिला और वह मदीना पलट आए।

4. सरीया अतराफ़ फ़िदक (शाबान सन् 07 हि०)

यह सरीया हज़रत बशीर बिन साद अंसारी रज़ि० के नेतृत्व में तीस आदमियों के साथ बनू मुर्रा को सज़ा देने के लिए रवाना किया गया। हज़रत बशीर ने उनके इलाक़े में पहुंचकर भेड़-बकरियां और जानवर हांक लिए और वापस हो गए। रात में दुश्मन ने आ लिया। मुसलमानों ने जमकर तीरंदाज़ी की, लेकिन आख़िरकार बशीर और उनके साथियों के तीर ख़त्म हो गए, उनके हाथ खाली हो गए और उसके नतीजे में सबके सब क़त्ल कर दिए गए, सिर्फ़ बशीर ज़िंदा बचे। उन्हें घायल हाथ में उठाकर फ़िदक लाया गया और वहीं यहूदियों के

पास ठहरे, यहां तक कि उनके घाव भर गए। इसके बाद वह मदीना आए।

5. सरीया मीफ़अा (रमज़ान 07 हि०)

यह सरीया हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह लैसी के नेतृत्व में बनू अवाल और बनू अब्द बिन सालबा को सज़ा देने के लिए भेजा गया और कहा जाता है कि क़बीला जुहैना की शाखा हरक़ात की सज़ा के लिए रवाना किया गया। मुसलमानों की तायदाद 130 थी। उन्होंने दुश्मन पर एक जुट होकर हमला किया और जिसने भी सर उठाया, उसे क़त्ल कर दिया, फिर पशु और भेड़-बकरियां हांक लाए।

इसी सरीया में हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० ने नुहैक बिन मरदास को ला इला-ह इल्लल्लाहु कहने के बावजूद क़त्ल कर दिया था और इस पर नबी सल्ल० ने ग़ुस्से में फ़रमाया था कि तुमने उसका दिल चीरकर क्यों न मालूम कर लिया कि वह सच्चा था या झूठा?

6. सरीया ख़ैबर, शव्वाल 07 हि०

इसी सरीया में तीस सवार थे और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ि० के नेतृत्व में भेजा गया था। वजह यह थी कि असीर या बशीर बिन ज़राम बनू ग़तफ़ान को मुसलमानों पर चढ़ाई करने के लिए जमा कर रहा था। मुसलमानों ने असीर को यह उम्मीद दिलाकर कि अल्लाह के रसूल सल्ल० उसे ख़ैबर का गवर्नर बना देंगे, उसके तीस साथियों सहित अपने साथ चलने पर तैयार कर लिया, लेकिन क़रक़रा न्यार पहुंचकर दोनों फ़रीक़ों में बदगुमानी पैदा हो गई, जिसके नतीजे में असीर और उसके तीस साथियों को जान से हाथ धोना पड़ा।

7. सरीया यमन व जबार (21 शव्वाल 07 हि०)

जबार बनू ग़तफ़ान और कहा जाता है कि बनू फ़ज़ारा और बनू अज़रा के इलाक़े का नाम है। यहां हज़रत बशीर बिन काब अंसारी रज़ि० को तीन सौ मुसलमानों के साथ रवाना किया गया। मक़सद था एक बड़े जत्थे को बिखेर देना, जो मदीने पर हमलावर होने के लिए जमा हो रहा था। मुसलमान रातों रात सफ़र करते और दिन में छिपे रहते थे।

जब दुश्मन के हज़रत बशीर के आने की ख़बर हुई तो वह भाग खड़ा हुआ। हज़रत बशीर ने बहुत से जानवरों पर क़ब्ज़ा किया। दो आदमी भी क़ैद किए और जब इन दोनों को लेकर नबी सल्ल० की ख़िदमत में मदीना पहुंचे, तो दोनों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिंया।

8. सरीया ग़ाबा

इसे इमाम इब्ने क़य्यिम ने उमरा क़ज़ा से पहले सन् 07 हि० के सराया में गिना है।

इसका सार यह है कि क़बीला जश्म बिन मुआविया का एक व्यक्ति बहुत से लोगों को साथ लेकर ग़ाबा आया। वह चाहता था कि बनू क़ैस को मुसलमानों से लड़ने के लिए जमा करे। नबी सल्ल० ने हज़रत अबू हदरद को सिर्फ़ दो आदमियों के साथ रवाना फ़रमाया कि उसकी ख़बर और उसका पता लेकर आएं। वह सूर्य डूबने के वक़्त उन लोगों के पास पहुंचे। अबू हदरद एक ओर छिप गए और उनके दोनों साथी दोनों ओर छिप गए। उन लोगों के चरवाहे ने देर कर दी, यहां तक कि शाम की स्याही जाती रहीं, चुनांचे उनका रईस तंहा उठा, जब अबू हदरद के पास से गुज़रा तो उन्होंने तीर मारा जो दिल पर जाकर बैठा और वह कुछ बोले बग़ैर जा गिरा। अबू हदरद ने सर काटा और तक्बीर कहते हुए लश्कर की ओर दौड़ लगाई। उनके दोनों साथियों ने भी तक्बीर करते हुए दौड़ लगाई। दुश्मन भाग खड़ा हुआ और ये तीनों हज़रात बहुत से ऊंट ओर बकरियां हांक लाए।[1]

---

1. ज़ादुल मआद 2/149, 150। इब्ने हिशाम 2/629, 630, इब्ने हिशाम के यहां इब्ने अीब हदरद है। इन सराया का विस्तृत विवेचन रहमतुल लिल आलमीन 2/229, 230, 231, ज़ादुल मआद 2/148, 149, 150, तलक़ीहुल फ़हूम मय हाशिए पृ० 31 और मख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह नज्दी पृ० 322, 323, 324 में देखा जा सकता है।

उमरा क़ज़ा

इमाम हाकिम कहते हैं, यह ख़बर तवातुर के साथ साबित है कि जब ज़ीक़ादा का चांद हो गया, तो नबी सल्ल० ने अपने सहाबा किराम रज़ि० को हुक्म दिया कि अपने उमरे की क़ज़ा के तौर पर उमरा करें और कोई भी आदमी जो हुदैबिया में हाज़िर था, पीछे न रहे। चुनांचे (इस मुद्दत में) जो लोग शहीद हो चुके थे, उन्हें छोड़कर बाक़ी सभी लोग रवाना हो गए और हुदैबिया वालों के अलावा कुछ और लोग भी उमरा करने के लिए साथ निकले। इस तरह तायदाद दो हज़ार हो गई। औरतें और बच्चे इनके अलावा थे।[1]

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस मौक़े पर अबू रहम ग़िफ़ारी रज़ि० को मदीना में अपना जानशीं मुक़र्रर किया, साठ ऊंट साथ लिए और नाजिया बिन जुन्दुब अस्लमी को उनकी देखभाल का काम सौंपा। ज़ुल हुलैफ़ा से उमरे का एहराम बांधा और लब्बैक की सदा लगाई। आपके साथ मुसलमानों ने भी लब्बैक पुकारा और क़ुरैश की ओर से बद-अह्दी के अंदेशे की वजह से हथियार ओर योद्धाओं के साथ मुस्तैद होकर निकले।

जब याजिज घाटी पहुंचे तो सारे हथियार यानी ढाल, सपर, तीर, नेज़े सब रख दिए और उनकी हिफ़ाज़त के लिए औस बिन ख़ौला अंसारी रज़ि० की मातहती में दो सौ आदमी वहीं छोड़ दिए और सवार का हथियार और म्यान में रखी हुई तलवारें लेकर मक्का में दाखिल हुए।[2]

अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्का में दाख़िले के वक़्त अपनी क़सवा नामी ऊंटनी पर सवार थे। मुसलमानों ने तलवारें लटका रखी थीं और अल्लाह के रसूल सल्ल० को घेरे में लिए हुए लब्बैक-लब्बैक पुकार रहे थे।

मुश्रिक मुसलमानों का तमाशा देखने के लिए (घरों से) निकलकर काबा के उत्तर में वाक़े जबले क़ुऐक़आन पर (जा बैठे थे)। उन्होंने आपस में बातें करते हुए कि तुम्हारे पास एक ऐसी जमाअत आ रही है जिसे यसरिब के बुख़ार ने तोड़ डाला है, इसलिए नबी सल्ल० ने सहाबा किराम को हुक्म दिया कि वे पहले तीन चक्कर दौड़कर लगाएं। अलबत्ता रुक्ने यमानी और हजरे अस्वद के दर्मियान सिर्फ़ चलते हुए गुज़रें। कुल (सातों) चक्कर दौड़कर लगाने का सिर्फ़ हुक्म इसलिए नहीं दिया कि रहमत व शफ़क़त मक़्सूद था।

---

1. फ़त्हुल बारी 7/500
2. वही, मय ज़ादुल मआद 2/151

इस हुक्म का मंशा यह था कि मुश्रिक आपकी ताक़त देख लें।[1]

इसके अलावा नबी सल्ल० ने इज़्तिबाअ का भी हुक्म दिया था। इज़्तिबाअ का मतलब यह है दाहिना कंधा खुला रखें (और चादर दाहिनी बग़ल के नीचे से गुज़ारकर आगे-पीछे दोनों ओर से) उसका दूसरा किनारा बाएं कंधे पर डाल दें।

अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्का में उस पहाड़ी घाटी के रास्ते में दाख़िल हुए जो हजून पर निकलती है। मुश्रिकों ने आपको देखने के लिए लाइन लगा रखी थी। आप बराबर लब्बैक कह रहे थे, यहां तक कि (हरम पहुंचकर) अपनी छड़ी से हजरे अस्वद को छुआ, फिर तवाफ़ किया, मुसलमानों ने भी तवाफ़ किया। उस वक़्त हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ि० तलवार लटकाए अल्लाह के रसूल सल्ल० के आगे-आगे चल रहे थे और वीरता के ये पद पढ़ रहे थे—

'कुफ़्फ़ार के पोतो! इनका रास्ता छोड़ दो, रास्ता छोड़दो कि सारी भलाई उसके पैग़म्बर ही में है। रहमान ने अपनी तंज़ील को उतारा है, यानी अपनी किताबों में जिनकी तिलावत उसके पैग़म्बर पर की जाती है। ऐ पालनहार! मैं इनकी बात पर ईमान रखता हूं और इसे क़ुबूल करने को ही हक़ जानता हूं कि बेहतरीन क़त्ल वह है जो अल्लाह की राह में हो। आज हम उसकी तंज़ील के मुताबिक़ तुम्हें ऐसी मार मारेंगे कि खोपड़ी अपनी जगह से छटक जाएगी और दोस्त को दोस्त से बेख़बर कर देगी।'[2]

हज़रत अनस रज़ि० की रिवायत में इसका भी ज़िक्र है कि इस पर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने कहा, ऐ इब्ने रुवाहा! तुम अल्लाह के रसूल सल्ल० के सामने और अल्लाह के हरम में कविता कर रहे हो?

नबी सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उमर! इन्हें रहने दो। क्योंकि यह इनके अन्दर तीर की मार से भी ज़्यादा तेज़ है।[3]

अल्लाह के रसूल सल्ल० और मुसलमानों ने तीन चक्कर दौड़कर लगाए। मुश्रिकों ने देखा तो कहने लगे, ये लोग जिनके बारे में हम समझ रहे थे कि बुख़ार ने इन्हें तोड़ दिया है, ये तो ऐसे और ऐसे लोगों से भी ज़्यादा ताक़तवर है।[4]

---

1. सहीह बुख़ारी 1/218, 2/610, 611, सहीह मुस्लिम 1/412
2. रिवायतों में इन पदों पर इनके क्रम में बड़ा मतभेद है। हमने विभिन्न पदों को इकट्ठा कर दिया।
3. जामेअ तिर्मिज़ी, अबवाबुल इस्तीज़ान वल अदब, बाब मा जा-अ फ़ी इन शाइश-शेर 2/107
4. सहीह मुस्लिम 1/412

तवाफ़ से फ़ारिग़ होकर आपने सफ़ा और मर्वः की सई की। उस वक़्त आपकी हदयि यानी क़ुरबानी के जानवर मर्वः के पास खड़े थे। आपने ने सई से फ़ारिग़ होकर फ़रमाया, यह क़ुरबानगाह है और मक्के की सारी गलियां क़ुरबानगाह हैं। इसके बाद मर्वः (ही) के पास जानवरों को क़ुरबान कर दिया, फिर वहीं सर मुंडाया, मुसलमानों ने भी ऐसा ही किया, इसके बाद कुछ लोगों को याजिज भेज दिया गया कि वे हथियारों की हिफ़ाज़त करें और जो लोग हिफ़ाज़त पर लगे हुए थे, वे आकर अपना उमरा अदा कर लें।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में तीन दिन ठहरे रहे। चौथे दिन सुबह हुई तो मुश्रिकों ने हज़रत अली रज़ि० के पास आकर कहा, 'अपने साहब से कहो कि हमारे यहां से रवाना हो जाएं, क्योंकि मुद्दत गुज़र चुकी है। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्का से निकल आए और सर्फ़ नामी जगह पर उतरकर क़ियाम फ़रमाया—

मक्का से आपके रवाना होने के वक़्त पीछे-पीछे हज़रत हमज़ा रज़ि० की सुपुत्री भी चचा, चचा पुकारते हुए आ गईं। उन्हें हज़रत अली रज़ि० ने ले लिया। इसके बाद हज़रत अली, हज़रत जाफ़र और हज़रत ज़ैद के बीच उनके बारे में मतभेद उठ खड़ा हुआ। हर एक दावेदार था कि वही उनकी परवरिश का ज़्यादा हक़दार है। नबी सल्ल० ने हज़रत जाफ़र के हक़ में फ़ैसला किया, क्योंकि उस बच्ची की ख़ाला उन्हीं के घर में थीं।

इस उमरे में नबी सल्ल० ने हज़रत मैमूना बिन्त हारिस आमिरीया रज़ि० से विवाह किया। इस मक़्सद के लिए अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मक्का पहुंचने से पहले हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि० को अपने आगे हज़रत मैमूना के पास भेज दिया था और उन्होंने अपना मामला हज़रत अब्बास को सौंप दिया था। चूंकि हज़रत मैमूना की बहन हज़रत उम्मुल फ़ज़्ल उन्हीं की बीवी थीं। हज़रत अब्बास रज़ि० ने हज़रत मैमूना (रज़ि०) की शादी नबी सल्ल० से कर दी। फिर आपने मक्का से वापसी के वक़्त हज़रत राफ़ेअ को पीछे छोड़ दिया कि वह हज़रत मैमूना को सवार करके आपकी सेवा में ले आएं। चुनांचे आप सरफ़ पहुंचे तो वह आपकी सेवा में पहुंचा दी गईं।[1]

इस उमरे का नाम उमरा क़ज़ा या तो इसलिए पड़ा कि यह उमरा हुदैबिया की क़ज़ा के तौर पर था, या इसलिए कि यह उमरा हुदैबिया में तै किए हुए समझौते के मुताबिक़ किया गया था (और इस तरह के समझौते को अरबी में

1. ज़ादुल मआद 2/152

क़ज़ा और मुक़ाज़ात कहते हैं) इस दूसरी वजह को शोधकों ने तर्जीह के क़ाबिल क़रार दिया है।[1]

साथ ही इस उमरे को चार नामों से याद किया जाता है—उमरा क़ज़ा, उमरा क़ज़ीया, उमरा क़सास और उमरा सुलह।[2]

---

1. ज़ादुल मआद 2/172, फ़त्हुल बारी 7/500
2. वही, फ़त्हुल बारी 7/500

कुछ और सराया

1. सरीया अबुल औजा (ज़िलहिज्जा 07 हि०)

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने पचास आदमियों को हज़रत अबुल औजा के नेतृत्व में बनू सुलैम को इस्लाम की दावत देने के लिए रवाना किया, लेकिन जब बनू सुलैम को इस्लाम की दावत दी गई, तो उन्होंने जवाब में कहा कि तुम जिस बात की दावत देते हो, हमें इसकी कोई ज़रूरत नहीं। फिर उन्होंने सख़्त लड़ाई की जिसमें अबुल औजा घायल हो गए, फिर भी मुसलमानों ने दुश्मन के दो आदमी क़ैद किए।

2. सरीया ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह (सफ़र सन् 08 हि०)

इन्हें दो सौ आदमियों के साथ फ़िदक के आस-पास में हज़रत बशीर बिन साद के साथियों की शहादतगाह में भेजा गया था। इन लोगों ने दुश्मन के जानवरों पर क़ब्ज़ा किया और इनके कई लोग क़त्ल किए।

3. सरीया ज़ातु अतलह (रबीउल अव्वल सन् 08 हि०)

इस सरीया की तफ़्सील यह है कि बनू क़ुज़ाआ ने मुसलमानों पर हमला करने के लिए बड़ा जत्था जुटा रखा था। अल्लाह के रसूल सल्ल० को मालूम हुआ तो आपने काब बिन उमैर रज़ि० के नेतृत्व में सिर्फ़ पन्द्रह सहाबा किराम को उनकी तरफ़ रवाना फ़रमाया। सहाबा किराम ने सामना होने पर उन्हें इस्लाम की दावत दी, पर उन्होंने इस्लाम क़ुबूल करने के बजाए सहाबा को तीरों से छलनी करके सबको शहीद कर डाला, सिर्फ़ एक आदमी ज़िन्दा बचा जो क़त्ल किए गए लोगों के दर्मियान से उठा लाया गया।[1]

4. सरीया ज़ाते अर्क़ (रबीउल अव्वल सन् 08 हि०)

इसकी घटना यह है कि बनू हवाज़िन ने बार-बार दुश्मनों को कुमक पहुंचाई थी, इसलिए 25 आदमियों की कमान देकर हज़रत शुजाअ बिन वह्ब असदी रज़ि० को उनकी ओर रवाना किया गया। ये लोग दुश्मन के जानवर हांक लाए, लेकिन लड़ाई और छेड़छाड़ की नौबत नहीं आई।[2]

---

1. रहमतुल लिल आलमीन 2/231
2. वही, व तलक़ीहुल फ़ह्म, पृ० 3 (टिप्पणी)

मूता की लड़ाई

मूता जार्डन में बलक़ा के क़रीब एक आबादी का नाम है, जहां से बैतुल-मक़्दिस दो मंज़िल पर है। मूता की लड़ाई यहीं हुई थी।

यह सबसे बड़ी ख़ूनी लड़ाई थी जो मुसलमानों ने अल्लाह के रसूल सल्ल० की मुबारक ज़िंदगी में लड़ी, और यही लड़ाई ईसाई देशों की जीत का आरंभ-बिन्दु बनी। इसके होने का समय जुमादल ऊला सन् 08 हि० मुताबिक़ अगस्त या सितम्बर सन् 629 ई० है।

लड़ाई की वजह

इस लड़ाई की वजह यह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हारिस बिन उमैर अज्दी रज़ि० को अपना पत्र देकर बुसरा के हाकिम के पास रवाना किया, तो उन्हें क़ैसर रूम के गवर्नर शुरहबील बिन अम्र ग़स्सानी ने जो बलक़ा पर नियुक्त था, गिरफ़्तार कर लिया और मज़बूती के साथ बांधकर उनकी गरदन मार दी।

याद रहे कि दूतों की हत्या सबसे बुरा और घिनौना अपराध था जो लड़ाई के एलान जैसा, बल्कि उससे भी बढ़कर समझा जाता था, इसलिए जब अल्लाह के रसूल सल्ल० को इस घटना की सूचना दी गई तो आपको यह बात बड़ी बोझ हुई और आपने उस इलाक़े पर सैनिक कार्रवाई के लिए तीन हज़ार की फ़ौज तैयार की।[1] और यह सबसे बड़ी इस्लामी फ़ौज थी जो इससे पहले अहज़ाब की लड़ाई के अलावा किसी और लड़ाई में न जुटाई जा सकी थी।

फ़ौज के सरदार और अल्लाह के रसूल सल्ल० की वसीयत

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस सेना का सेनापति हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को मुक़र्रर किया और फ़रमाया कि अगर ज़ैद क़त्ल कर दिए जाएं तो जाफ़र और जाफ़र क़त्ल कर दिए जाएं तो अब्दुल्लाह बिन रुवाहा सेनापति होंगे।[2] आपने फ़ौज के लिए झंडा बांधा और उसे हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० के हवाले किया।

---

1. ज़ादुल मआद 2/155, फ़त्हुल बारी 7/511
2. सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वा मूता मिन अरज़िशाम 2/611

फ़ौज को आपने यह वसीयत फ़रमाई कि जिस जगह हज़रत हारिस बिन उमैर रज़ि० क़त्ल किए गए थे, वहां पहुंचकर उस जगह के रहने वालों को इस्लाम की दावत दें। अगर वे इस्लाम क़ुबूल कर लें तो बेहतर, वरना अल्लाह से मदद मांगें और लड़ाई करें।

आपने फ़रमाया कि अल्लाह के नाम से, अल्लाह की राह में अल्लाह के साथ कुफ़्र करने वालों से ग़ज़वा करो और देखो बद-अह्दी न करना, ख़ियानत न करना, किसी बच्चे और औरत और फ़ना के क़रीब पहुंचे बूढ़े को और गिरजा में रहने वाले सन्यासी को क़त्ल न करना, खजूर और कोई और पेड़ न काटना और किसी इमारत को न ढाना।[1]

इस्लामी फ़ौज की रवानगी और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा का रोना

जब इस्लामी फ़ौज रवानगी के लिए तैयार हो गई तो लोगों ने आ-आकर अल्लाह के रसूल सल्ल० के मुर्क़र किए गए सेनापतियों को विदाई दी और सलाम किया। उस वक़्त एक सेनापति हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ि० रोने लगे।

लोगों ने कहा, आप क्यों रो रहे हैं?

उन्होंने कहा, देखो, ख़ुदा की क़सम! (इसकी वजह) दुनिया की मुहब्बत या तुम्हारे साथ मेरा ताल्लुक़ नहीं है, बल्कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को अल्लाह की किताब की एक आयत पढ़ते हुए सुना है, जिसमें जहन्नम का उल्लेख है। आयत यह है—

'तुममें से हर व्यक्ति जहन्नम पर पहुंचने वाला है। यह तुम्हारे रब पर एक ज़रूरी और फ़ैसला की हुई बात है।' (19 : 17)

मैं नहीं जानता कि जहन्नम पर पहुंचने के बाद कैसे पलट सकूंगा?

मुसलमानों ने कहा, अल्लाह सलामती के साथ आप लोगों का साथी हो, आपकी ओर से प्रतिरक्षा करे और आपको हमारी ओर नेकी और ग़नीमत के साथ वापस लाए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा ने कहा—

'लेकिन मैं रहमान से मग़्फ़िरत का और हड्डियों को तोड़ने वाली, भेजा निकाल लेनेवाली तलवार की काट का या किसी नेज़ेबाज़ के हाथों, आंतों और

---

1. मुख़्तसरुस्सीरः लेख, शेख़ अब्दुल्लाह पृ० 327, यह हदीस घटना का उल्लेख किए बिना सहीह मुस्लिम, सुनने अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा आदि भिन्न-भिन्न शब्दों में रिवायत की गई है।

जिगर के पार उतर जाने वाले नेज़े की चोट का सवाल करता हूं ताकि जब लोग मेरी क़ब्र पर गुज़रें, तो कहें हाय वह ग़ाज़ी, जिसे अल्लाह ने हिदायत दी और जो हिदायत पाया हुआ रहा।'

इसके बाद फ़ौज रवाना हुई। अल्लाह के रसूल सल्ल० उसके साथ चलते हुए सनीयतुल विदाअ तक गए और वहीं उसे विदा किया।[1]

इस्लामी फ़ौज आगे बढ़ी और ख़ौफ़नाक हालत सामने आई

इस्लामी फ़ौज उत्तर की ओर बढ़ती हुई मआन पहुंची। यह जगह उत्तरी हिजाज़ से मिले हुए शामी (जोर्डनी) इलाक़े में वाक़े हैं। यहां फ़ौज ने पड़ाव डाला और यहीं जासूसों ने ख़बर दी कि हिरक़्ल क़ैसर रूम बलक़ा के क्षेत्र में मआब नामी जगह पर एक लाख रूमियों की फ़ौज लेकर पड़ाव डाले पड़ा है और उसके झंडे तले लख़्म व जज़्ज़ान, बिलक़ीन व बहरा और बली (अरब क़बीले) के और एक लाख लोग जमा हो गए हैं।

मआन में मज्लिसे शूरा

मुसलमानों के हिसाब में सिरे से यह बात थी ही नहीं कि उन्हें किसी ऐसी भारी सेना से मुक़ाबला करना पड़ेगा जिससे वे बहुत दूर की धरती पर एकदम अचानक दो चार हो गए थे। अब उनके सामने सवाल यह था कि तीन हज़ार की थोड़ी सी फ़ौज दो लाख के ठाठों मारते हुए समुद्र से टकरा जाए या क्या करे?

मुसलमान हैरान थे और इसी हैरानी में मआन के अन्दर दो रातें ग़ौर और मश्विरा करते हुए गुज़ार दीं। कुछ लोगों का विचार था कि हम अल्लाह के रसूल सल्ल० को लिखकर दुश्मन की तायदाद की ख़बर दें। इसके बाद या तो अपकी ओर से और कुमक मिलेगी या और कोई हुक्म मिलेगा और उसका पालन किया जाएगा।

लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस राय का विरोध किया और यह कहकर लोगों को गरमा दिया कि लोगो! ख़ुदा की क़सम! जिस चीज़ से आप कतरा रहे हैं, यह तो वही शहादत है जिसकी तलब में आप निकले हैं। याद रहे दुश्मन से हमारी लड़ाई तायदाद, ताक़त और सामान के बल पर नहीं है, बल्कि हम केवल उस दीन के बल पर लड़ते हैं, जिसे अल्लाह ने हमें दिया है। इसलिए चलिए, आगे बढ़िए। हमें दो भलाइयों में से एक भलाई हासिल होकर रहेगी। या तो हम ग़ालिब आएंगे या हमें शहादत नसीब होगी। आख़िर में हज़रत

---

1. इब्ने हिशाम 2/373, 374, ज़ादुल मआद 2/156,

अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ि० की पेश की हुई बात तै पा गई।

दुश्मन की ओर इस्लामी फ़ौज का आगे बढ़ना

ग़रज़ इस्लामी फ़ौज ने मआन में दो रातें गुजारने के बाद दुश्मन की ओर बढ़ना शुरू किया और बलक़ा की एक बस्ती में, जिसका नाम मशारिफ़ था, हिरक़्ल की फ़ौजों से उसका सामना हुआ। इसके बाद दुश्मन और ज़्यादा क़रीब आ गया और मुसलमानों ने 'मूता' की ओर सिमट कर पड़ाव डाल दिया, फिर फ़ौज की जंगी तर्तीब क़ायम की गई। दाएं हिस्से में क़ुतबा बिन क़तादा अज़्री मुक़र्रर किए गए और बाएं हिस्से में उबादा बिन मालिक अंसारी रज़ि०।

लड़ाई की शुरुआत और सेनापतियों का एक के बाद एक शहीद होना

इसके बाद मूता ही में दोनों फ़रीक़ों के बीच टकराव हुआ और बड़ी तेज़ लड़ाई शुरू हुई। तीन हज़ार की नफ़री दो लाख के टिड्डी दल के तूफ़ानी हमलों का मुक़ाबला कर रही थी। अनोखी लड़ाई थी, दुनिया फटी-फटी आंखों से देख रही थी, लेकिन जब ईमान की ठंडी हवा चलती है तो इसी तरह की अनोखी बातें ज़ाहिर होती हैं।

सबसे पहले अल्लाह के रसूल सल्ल० के चहेते हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० ने झंडा लिया और ऐसी बहादुरी से लड़े कि इस्लामी योद्धाओं के अलावा कहीं और उसकी मिसाल नहीं मिलती। वह लड़ते रहे, लड़ते रहे, यहां तक कि दुश्मन के नेज़ों में गुथ गए और शहीद होकर धरती पर आ रहे।

इसके बाद हज़रत जाफ़र रज़ि० की बारी थी। उन्होंने लपककर झंडा उठाया और बे-मिसाल लड़ाई शुरू कर दी। जब लड़ाई की तेज़ी चरम सीमा को पहुंची तो अपने लाल और काले घोड़े की पीठ से कूद पड़े, कूचें काट दीं और वार पर वार करते और रोकते रहे, यहां तक कि दुश्मन की चोट से दाहिना हाथ कट गया, इसके बाद उन्होंने झंडा बाएं हाथ में ले लिया और उसको बराबर उठाए रखा, यहां तक कि बायां हाथ भी काट दिया गया, फिर दोनों बाक़ी बाज़ुओं से झंडा गोद में ले लिया और उस वक़्त तक ऊंचा उठाए रखा, जब तक कि शहीद नहीं हो गए। कहा जाता है कि एक रूमी ने उनको ऐसी तलवार मारी कि उनके दो टुकड़े हो गए। अल्लाह ने उन्हें उनके दोनों बाज़ुओं के बदले जन्नत में दो बाज़ू अता किए, जिनके ज़रिए वह जहां चाहते हैं, उड़ते हैं, इसीलिए उनकी उपाधि जाफ़र तैयार और जाफ़र ज़ुल जनाहैन पड़ गया। (तैयार का अर्थ है उड़ने वाला और ज़ुल जनाहैन यानी दो बाज़ुओं वाला)

इमाम बुख़ारी ने नाफ़ेअ के वास्ते से इब्ने उमर रज़ि० का यह बयान रिवायत किया है कि मैंने मूता की लड़ाई के दिन हज़रत जाफ़र के पास जबकि वह शहीद हो चुके थे, खड़े होकर उनके जिस्म पर नेज़े और तलवार के पचास घाव गिने, उनमें से कोई भी घाव पीछे नहीं लगा था।[1]

एक दूसरी रिवायत में इब्ने उमर रज़ि० का यह बयान इस तरह रिवायत किया गया है कि मैं भी इस ग़ज़वे में मुसलमानों के साथ था। हमने जाफ़र बिन अबी तालिब को खोजा तो उन्हें क़त्ल किए गए लोगों में पाया और उनके जिस्म में नेज़े और तीर के नव्वे से ज़्यादा घाव पाए।[2] नाफ़ेअ ने उमरी की रिवायत में इतनी और वृद्धि है कि हमने ये सब घाव उनके जिस्म के अगले हिस्से में पाए।[3]

इस तरह की वीरता से भरपूर लड़ाई के बाद जब हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु भी शहीद कर दिए गए तो अब हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ि० ने झंडा उठाया और अपने घोड़े पर सवार आगे बढ़े और अपने आपको मुक़ाबले के लिए तैयार करने लगे, लेकिन उन्हें कुछ संकोच हुआ, कुछ झिझके भी, लेकिन इसके बाद कहने लगे—

'ऐ नफ़्स! क़सम है कि तू ज़रूर मुकाबले में उतर, चाहे नागवारी के साथ, चाहे ख़ुशी-ख़ुशी। अगर लोगों ने लड़ाई छेड़ रखी है और नेज़े तान रखे हैं, तो मैं तुझे क्यों जन्नत से हटा हुआ देख रहा हूं।'

इसके बाद वे मुक़ाबले में उतर आए। इतने में उनका चचेरा भाई एक गोश्त लगी हुई हड्डी ले आया और बोला, इसके ज़रिए अपनी पीठ मज़बूत कर लो, क्योंकि इन दिनों तुम्हें कड़े हालात से दो चार होना पड़ा है। उन्होंने हड्डी लेकर एक बार नोची, फिर फेंककर तलवार थाम ली और आगे बढ़कर लड़ते- लड़ते शहीद हो गए।

झंडा, अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार के हाथ में

इस मौक़े पर क़बीला बनू अजलान के साबित बिन अरक़म नामी एक सहाबी ने लपककर झंडा उठा लिया और फ़रमाया, मुसलमानो! अपने किसी आदमी को सेनापति बना लो।

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वा मूता मिन अर्ज़ि शाम 2/611
2. वही, 2/611
3. फ़त्हुल बारी 7/512, ज़ाहिर में तो दोनों हदीस में तायदाद का मतभेद है। दोनों में मेल यह किया गया है कि तीरों के घाव शामिल करके तायदाद बढ़ जाती है। (देखिए फ़त्हुल बारी)

सहाबा ने कहा, आप ही यह काम अंजाम दें।

उन्होंने कहा, मैं यह काम नहीं कर सकूंगा।

इसके बाद सहाबा ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को चुना और उन्होंने झंडा लेते ही बड़ी ज़ोरदार लड़ाई शुरू कर दी। चुनांचे सहीह बुख़ारी में ख़ुद हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० से रिवायत है कि मूता की लड़ाई के दिन मेरे हाथ में नौ तलवारें टूट गईं। फिर मेरे हाथ में सिर्फ़ एक यमनी बाना (छोटी-सी तलवार) बाक़ी बचा।[1]

और एक दूसरी रिवायत में उनका बयान इस तरह आता है कि मेरे हाथ में मूता की लड़ाई के दिन नौ तलवारें टूट गईं और एक यमनी बाना मेरे हाथ में चिपककर रह गया।[2]

इधर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मूता की लड़ाई ही के दिन, जबकि अभी लड़ाई के मैदान से किसी क़िस्म की ख़बर नहीं आई थी, वह्य की बुनियाद पर फ़रमाया कि झंडा ज़ैद ने लिया और वह शहीद कर दिए गए। फिर जाफ़र ने लिया, वह भी शहीद कर दिए गए, फिर इब्ने रुवाहा ने लिया और वह भी शहीद कर दिए गए। इस बीच आंखों में आंसू भर आए थे, यहां तक कि झंडा अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार ने लिया (और ऐसी लड़ाई लड़ी कि) अल्लाह ने उन पर विजय दिला दी।[3]

लड़ाई का अन्त

बड़ी बहादुरी, वीरता और ज़बरदस्त जांबाज़ी के बावजूद यह बात बड़ी आश्चर्य में डालने वाली थी कि मुसलमानों की यह छोटी-सी फ़ौज रूमियों की उस भारी सेना की तूफ़ानी लहरों के सामने डटी रह जाए, इसलिए इस नाज़ुक मरहले में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने मुसलमानों को इस भंवर से निकालने के लिए, जिसमें वे ख़ुद कूद पड़े थे, अपनी निपुणता दिखाई।

रिवायतों में बड़ा मतभेद है कि इस लड़ाई का आख़िरी अंजाम क्या हुआ। तमाम रिवायतों पर नज़र डालने से स्थिति यह मालूम होती है कि लड़ाई के पहले दिन हज़रत ख़ालिद बिन वलीद दिन भर रूमियों के मुक़ाबले में डटे रहे, लेकिन

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वा मूता मिन अर्ज़ि शाम 2/611
2. सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वा मूता मिन अर्ज़ि शाम 2/611
3. वही, 2/611

वह एक ऐसी जंगी चाल की ज़रूरत महसूस कर रहे थे जिसके ज़रिए रूमियों पर रौब डालकर इतनी कामियाबी के साथ मुसलमानों को पीछे हटा लें कि रूमियों को पीछा करने की हिम्मत न हो, क्योंकि वह जानते थे कि अगर मुसलमान भाग खड़े हुए और रूमियों ने पीछा शुरू किया, तो मुसलमानों को उनके पंजे से बचाना बहुत कठिन होगा।

चुनांचे जब दूसरे दिन सुबह हुई तो उन्होंने फ़ौज की शक्ल और ढांचा बदल दिया और उसकी एक नई तर्तीब क़ायम की। अगली लाइन को पिछली लाइन और पिछली लाइन को अगली लाइन की जगह रख दिया और दाहिनी लाइन को बाईं से और बाईं को दाहिनी से बदल दिया। यह स्थिति देखकर दुश्मन चौंक गया और कहने लगा कि इन्हें कुमक पहुंच गई है, ग़रज़ रूमी शुरू ही में रौब खा गए।

उधर जब फ़ौजों का आमना-सामना हुआ और कुछ देर तक झड़प हो चुकी, तो हज़रत ख़ालिद ने अपनी फ़ौज की व्यवस्था सुरक्षित रखते हुए मुसलमानों को थोड़ा-थोड़ा पीछे हटाना शुरू किया, लेकिन रूमियों ने इस डर से उनका पीछा न किया कि मुसलमान धोखा दे रहे हैं और कोई चाल चलकर उन्हें जंगल की समाइयों में फेंक देना चाहते हैं। इसका नतीजा यह हुआ कि दुश्मन अपने इलाक़े में वापस चला गया और मुसलमानों का पीछा करने की बात न सोची। इधर मुसलमान कामियाबी और सलामती के साथ पीछे हटे और फिर मदीना वापस आ गए।[1]

दोनों फ़रीक़ के मारे गए लोग

इस लड़ाई में 12 मुसलमान शहीद हुए। रूमियों के मारे गए लोगों का पता न चल सका, अलबत्ता लड़ाई का विवरण बताता है कि वे बड़ी तादाद में मारे गए। अन्दाज़ा किया जा सकता है कि जब तंहा हज़रत ख़ालिद के हाथ में नौ तलवारें टूट गईं तो मारे जाने वालों और घायलों की तायदाद कितनी रही होगी?

इस लड़ाई का प्रभाव

इस लड़ाई की तेज़ी, जो बदले के लिए झेली गई थीं, मुसलमान अगरचे वह

---

1. देखिए फ़त्हुल बारी 7/513, 514, ज़ादुल मआद 2/156, लड़ाई का विस्तृत विवेचन पिछले स्रोतों के साथ इन दोनों स्रोतों से भी लिया गया है।

बदला न ले सके, लेकिन इस लड़ाई ने मुसलमानों की साख और शोहरत में बड़ी वृद्धि की। इसकी वजह से सारे अरब ने दांतों तले उंगली दबा ली, क्योंकि रूमी उस वक़्त धरती की सबसे बड़ी ताक़त थे। अरब समझते थे कि उनसे टकराना आत्महत्या से कम नहीं है, इसलिए तीन हज़ार की तायदाद का दो लाख की भारी भरकम फ़ौज से टकराकर कोई उल्लेखनीय हानि उठाए बिना वापस आ जाना कुछ कम आश्चर्य की बात न थी।

इससे यह सच्चाई भी बड़े पक्के सबूत के साथ सामने आ गई कि अरब अब तक जिस क़िस्म के लोगों को जानते थे, मुसलमान उनसे अलग-थलग एक दूसरी ही क़िस्म के लोग हैं। उनको अल्लाह की ताईद और मदद हासिल है और उनके रहनुमा वाक़ई अल्लाह के रसूल हैं। इसीलिए हम देखते हैं कि वे ज़िद्दी क़बीले जो मुसलमानों से बराबर लड़ते रहते थे, इस लड़ाई के बाद वे इस्लाम की ओर झुक गए, चुनांचे बनू सुलैम, अशजअ, ग़तफ़ान, ज़िबयान और फ़ज़ारा वग़ैरह क़बीलों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

यही लड़ाई है, जिसमें रूमियों के साथ ख़ूनी टक्कर हुई थी, जो आगे चलकर रूमी देशों की जीतों और दूर-दूर के इलाक़ों पर मुसलमानों की सत्ता का आरंभ-बिन्दु साबित हुई।

सरीया ज़ातुस्सलासिल

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० को मूता की लड़ाई के सिलसिले में मशारिफ़े शाम के अन्दर रहने वाले अरब क़बीलों के दृष्टिकोणों का ज्ञान हुआ कि वे मुसलमानों से लड़ने के लिए रूमियों के झंडे तले जमा हो गए थे, तो आपने एक ऐसी रणनीति की ज़रूरत महसूस की, जिसके ज़रिए एक ओर तो इन अरब क़बीलों और रूमियों के बीच फूट पड़ जाए और दूसरी ओर ख़ुद मुसलमानों से उनकी दोस्ती हो जाए, ताकि उस इलाक़े में दोबारा आपके ख़िलाफ़ इतना बड़ा जत्था जमा न हो सके।

इस मक़सद के लिए आपने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को चुना, क्योंकि उनकी दादी क़बीला बलि से ताल्लुक़ रखती थीं। चुनांचे आपने मूता की लड़ाई के बाद ही यानी जुमादल आख़िर सन् 08 हि० में उनका दिल रखने के लिए हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० को उनकी ओर रवाना फ़रमाया।

कहा जाता है कि जासूसों ने यह सूचना भी दी थी कि बनू क़ुज़ाआ ने मदीना के चारों तरफ़ हल्ला बोलने के इरादे से एक टुकड़ी बनाई थी, इसलिए आपने हज़रत अम्र बिन आस को उनकी ओर रवाना किया। संभव है दोनों

वजहें जमा हो गई हों।

बहरहाल अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत अम्र बिन आस के लिए सफ़ेद झंडा बांधा और उसके साथ काली झंडियां भी दीं और उनकी कमान में बड़े-बड़े मुहाजिरों और अंसार की तीन सौ नफ़री देकर उन्हें विदा किया। उनके साथ तीस घोड़े भी थे। आपने हुक्म दिया कि बली और अज़्रा और बिलक़ीन के जिन लोगों के पास से गुज़रें, उनसे मदद चाहें। वे रात को सफ़र करते और दिन को छिपते रहते थे। जब दुश्मन के क़रीब पहुंचे तो मालूम हुआ, उनका जत्था बहुत बड़ा है इसलिए हज़रत राफ़ेअ बिन मुकैस जुहनी को कुमक तलब करने के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में भेज दिया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह को झंडा देकर उनकी सरदारी में दो सौ फ़ौजियों की कुमक रवाना फ़रमाई, जिसमें मुहाजिरों के बड़े, जैसे अबूबक्र और उमर, और अंसार के सरदार भी थे। हज़रत अबू उबैदा रज़ि० को हुक्म दिया गया कि अम्र बिन आस से जा मिलें और दोनों मिलकर काम करें, मतभेद न करें। वहां पहुंचकर अबू उबैदा रज़ि० ने इमामत करनी चाही, लेकिन हज़रत अम्र ने कहा, आप मेरे पास कुमक के तौर पर आए हैं। सरदार मैं हूं, अबू उबैदा ने उनकी बात मान ली और नमाज़ हज़रत अम्र ही पढ़ाते रहे।

कुमक आ जाने के बाद यह फ़ौज और आगे बढ़कर क़ुज़ाआ के इलाक़े में दाख़िल हुई और उस इलाक़े को रौंदती हुई उसकी दूर-दूर की हदों में जा पहुंची। अन्त में एक फ़ौज से लड़ाई हुई, लेकिन जब मुसलमानों ने उस पर हमला किया तो वह इधर-उधर भाग कर बिखर गई।

इसके बाद औफ़ बिन मालिक अशजई रज़ि० को दूत बनाकर अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में भेजा गया। उन्होंने मुसलमानों की सलामती के साथ वापसी की ख़बर दी और ग़ज़वे का विवरण दिया।

ज़ातुस्सलासिल वादिल क़ुरा से आगे एक भू-भाग का नाम है। यहां से मदीना का फ़ासला दस दिन है। इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि मुसलमान क़बीला जज़ाम की धरती पर स्थित सलसल नामी एक सोते पर उतरे थे। इसलिए इस मुहिम का नाम ज़ातुस्सलासिल पड़ गया।[1]

---

1. देखिए इब्ने हिशाम, 2/623-626, ज़ादुल मआद 2/157

सरीया ख़ज़रा (शाबान 08 हि०)

इस सरीया की वजह यह थी कि नज्द के अन्दर क़बीला मुहारिब के इलाक़े में ख़ज़रा नामी एक जगह पर बनू ग़तफ़ान फ़ौज जमा कर रहे थे, इसलिए उनका सर कुचलने के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू क़तादा को पन्द्रह आदमियों का जत्था देकर रवाना किया। उन्होंने दुश्मन के कई आदमियों को क़त्ल और क़ैद किया और ग़नीमत का माल भी हासिल किया। इस मुहिम में वह पन्द्रह दिन मदीना से बाहर रहे।[1]

---

1. तलक़ीहुल फ़्हूम, पृ० 33

मक्का की विजय

इमाम इब्ने क़य्यिम लिखते हैं कि यह वह महान विजय है जिसके ज़रिए अल्लाह ने अपने दीन को, अपने रसूल को अपनी सेना को और अपने अमानतदार गिरोह को सम्मान दिया और अपने शहर को, अपने घर को, जिसे दुनिया वालों के लिए हिदायत का ज़रिया बनाया, कुफ़्फ़ार और मुश्रिक के हाथों से छुटकारा दिलाया। इस विजय से आसमान वालों में ख़ुशी की लहर दौड़ गई, इसकी वजह से लोग अल्लाह के दीन में जत्थ के जत्थ दाख़िल हुए और धरती का चेहरा रोशनी और चमक-दमक से जगमगा उठा।[1]

इस लड़ाई की वजह

हुदैबिया समझौते के सिलसिले में हम यह बात बता चुके हैं कि इस समझौते की एक धारा यह थी कि जो कोई मुहम्मद सल्ल० के अह्द व पैमान में दाख़िल होना चाहे, दाख़िल हो सकता है और जो कोई क़ुरैश के अह्द व पैमान में दाख़िल होना चाहे, दाख़िल हो सकता है और जो क़बीला जिस फ़रीक़ के साथ शामिल होगा, उस फ़रीक़ का एक हिस्सा समझा जाएगा, इसलिए ऐसा कोई क़बीला अगर किसी हमले या ज़्यादती का शिकार होगा, तो यह ख़ुद उस फ़रीक़ पर हमला और ज़्यादती समझी जाएगी।

इस धारा के अन्तर्गत बनू ख़ुज़ाआ अल्लाह के रसूल सल्ल० के अह्द व पैमान में दाख़िल हो गए और बनू बक्र क़ुरैश के अह्द व पैमान में। इस तरह दोनों क़बीले एक दूसरे से अम्न में और बे-ख़तर हो गए, लेकिन चूंकि इन दोनों क़बीलों में अज्ञानता-युग से दुश्मनी और खिंचाव चला आ रहा था, इसलिए जब इस्लाम का आना हुआ और हुदैबिया समझौता हो गया और दोनों फ़रीक़ एक दूसरे से सन्तुष्ट हो गए तो बनू बक्र ने इस मौक़े को ग़नीमत समझकर चाहा कि बनू ख़ुज़ाआ से पुराना बदला चुका लें।

चुनांचे नौफ़ुल बिन मुआविया वेली ने बनू बक्र की एक जमाअत साथ लेकर शाबान सन् 08 हि० में बनू ख़ुज़ाआ पर रात के अंधेरे में हमला कर दिया। उस वक़्त बनू ख़ुज़ाआ वतीर नामी एक सोते पर पड़ाव डाले हुए थे। उनके बहुत से लोग मारे गए, कुछ झड़प और लड़ाई भी हुई।

उधर क़ुरैश ने इस हमले में हथियारों से बनू बक्र की मदद की, बल्कि उनके

1. ज़ादुल मआद 2/160

कुछ आदमी भी रात के अंधेरे का फ़ायदा उठाकर लड़ाई में शरीक हुए। बहरहाल हमलावरों ने बनू ख़ुज़ाआ को खदेड़कर हरम तक पहुंचा दिया।

हरम में पहुंचकर बनू बक्र ने कहा, ऐ नौफ़ुल! अब तो हम हरम में दाख़िल हो गए। तुम्हारा इलाह !... तुम्हारा इलाह !...

इसके जवाब में नौफ़ुल ने एक बड़ी बात कही, बोला, बनू बक्र! आज कोई इलाह नहीं, अपना बदला चुका लो। मेरी उम्र की क़सम! तुम लोग हरम में चोरी करते हो, तो क्या हरम में अपना बदला नहीं ले सकते?

इधर बनू ख़ुज़ाआ ने मक्का पहुंचकर बुदैल बिन वरक़ा ख़ुज़ाई और अपने एक आज़ाद किए हुए ग़ुलाम राफ़ेअ के घरों में पनाह ली और अम्र बिन सालिम ख़ुज़ाई ने वहां से निकलकर तुरन्त मदीना का रुख किया और अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचकर खड़ा हो गया। उस वक़्त आप मस्जिदे नबवी में सहाबा किराम के दर्मियान तशरीफ़ रखते थे। अम्र बिन सालिम ने कहा—

'ऐ परवरदिगार! मैं मुहम्मद को उनके शहर और उनके वालिद के पुराने अह्द[1] की दुहाई दे रहा हूं। आप लोग औलाद थे और हम जनने वाले।[2] फिर हमने ताबेदारी अख़्तियार की और कभी उससे हाथ न खींचा। अल्लाह आपको हिदायत दे। आप ज़ोरदार मदद कीजिए, और अल्लाह के बन्दों को पुकारिए, वे मदद को आएंगे, जिनमें अल्लाह के रसूल होंगे हथियार बांधे हुए और चढ़े हुए चौदहवीं रात की तरह गोरे और ख़ूबसूरत। अगर उन पर ज़ुल्म और उनकी तौहीन की जाए, तो चेहरा तमतमा उठता है। आप एक ऐसे भारी भरकम फ़ौज के भीतर तशरीफ़ लाएंगे जो झाग भरे समुद्र की तरह मौजें ले रहा होगा। यक़ीनन क़ुरैश ने आपके अह्द को भंग किया है और आपका पक्का पैमान तोड़ दिया है। उन्होंने मेरे लिए कदा में घात लगाई और यह समझा कि मैं किसी को (मदद के लिए) न पुकारूंगा, हालांकि वे बड़े ज़लील और तायदाद में थोड़े हैं। उन्होंने वतीर पर रात में हमला किया और हमें रुकूअ और सज्दे की हालत में क़त्ल किया। (यानी हम मुसलमान थे और हमें क़त्ल किया गया।)'.

---

1. इशारा उस अह्द की ओर है, जो बनू ख़ुज़ाआ और बनू हाशिम के बीच अब्दुल मुत्तलिब के ज़माने से चला आ रहा था। इसका उल्लेख किताब के शुरू में किया जा चुका है।
2. इशारा इस बात की ओर है कि अब्दे मुनाफ़ की मां यानी क़ुसई की बीवी हब्बी बनू ख़ुज़ाआ से थीं। इसलिए नबी सल्ल० का पूरा ख़ानदान बनू ख़ुज़ाआ की औलाद ठहरा।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अम्र बिन सालिम ! तेरी मदद की गई। इसके बाद आसमान में बादल का एक टुकड़ा दिखाई पड़ा। आपने फ़रमाया, यह बादल बनू काब की मदद की ख़ुशख़बरी से दमक रहा है।

इसके बाद बुदैल बिन वरक़ा ख़ुज़ाई की सरदारी में बनू ख़ुज़ाआ की एक जमाअत मदीना आई और अल्लाह के रसूल सल्ल० को बताया कि कौन से लोग मारे गए और किस तरह क़ुरैश ने बनू बक्र को शह दिया। इसके बाद ये लोग मक्का वापस चले गए।

समझौते के नवीनीकरण के लिए अबू सुफ़ियान मदीना में

इसमें सन्देह नहीं कि क़ुरैश और उनके मित्रों ने जो कुछ किया था, वह खुली हुई बद-अह्दी और खुली पैमान शिकनी थी, जिसे सही साबित ही नहीं किया जा सकता। इसलिए ख़ुद क़ुरैश को भी अपनी बद-अह्दी का बहुत जल्द एहसास हो गया और उन्होंने उसके अंजाम की संगीनी को नज़र में रखते हुए एक मश्विरे के लिए मज्लिस बुलाई, जिसमें तै किया कि वह अपने सेनापति अबू सुफ़ियान को अपना नुमाइन्दा बनाकर समझौते के नवीनीकरण के लिए मदीना रवाना करें।

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम को बताया कि क़ुरैश अपनी इस अह्द शिकनी के बाद अब क्या करने वाले हैं। चुनांचे आपने फ़रमाया कि 'गोया मैं अबू सुफ़ियान को देख रहा हूं कि वह अह्द को फिर से पक्का करने और समझौते की मुद्दत को बढ़ाने के लिए आ गया है।'

उधर अबू सुफ़ियान तैशुदा तज्वीज़ के मुताबिक़ रवाना होकर उस्फ़ान पहुंचा तो बुदैल बिन वरक़ा से मुलाक़ात हुई। बुदैल मदीना से मक्का वापस आ रहा था। अबू सुफ़ियान समझ गया कि यह नबी सल्ल० के पास से होकर आ रहा है, पूछा, बुदैल ! कहां से आ रहे हो?

बुदैल ने कहा, मैं ख़ुज़ाआ के साथ उस साहिल और वादी में गया था।

पूछा, क्या तुम मुहम्मद सल्ल० के पास नहीं गए थे?

बुदैल ने कहा, नहीं।

मगर जब बुदैल मक्का की ओर रवाना हुआ, तो अबू सुफ़ियान ने कहा, अगर वह मदीना गया था तो वहां (अपने ऊंट को) गुठली का चारा खिलाया होगा। इसलिए अबू सुफ़ियान उस जगह गया, जहां बुदैल ने अपा ऊंट बिठाया था और उसकी मेंगनी तोड़ी, तो उसमें खजूर की गुठली नज़र आई। अबू सुफ़ियान ने कहा, मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं कि बुदैल मुहम्मद के पास गया था।

बहरहाल अबू सुफ़ियान मदीना पहुंचा और अपनी सुपुत्री उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० के घर गया। जब अल्लाह के रसूल सल्ल० के बिस्तर पर बैठना चाहा, तो उन्होंने बिस्तर लपेट दिया। अबू सुफ़ियान ने कहा, बेटी! क्या तुमने इस बिस्तर को मेरे लायक़ नहीं समझा?

उन्होंने कहा, यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बिस्तर है और आप नापाक मुश्रिक आदमी हैं।

अबू सुफ़ियान कहने लगा, ख़ुदा की क़सम! मेरे बाद तुम्हें शर (दुष्टताई) पहुंच गया है। फिर अबू सुफ़ियान वहां से निकलकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गया और आपसे बात की। आपने उसे कोई जवाब न दिया। इसके बाद अबूबक्र रज़ि० के पास गया और उनसे कहा कि वह अल्लाह के रसूल सल्ल० से बात करें।

उन्होंने कहा, मैं ऐसा नहीं कर सकता।

इसके बाद वह उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के पास गया और उनसे बात की। उन्होंने कहा, भला, मैं तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल सल्ल० से सिफ़ारिश करूंगा। इसके बाद वह हज़रत अली बिन अबी तालिब के पास पहुंचा। वहां हज़रत फ़ातमा रज़ि० भी थीं और हज़रत हसन भी थे, जो अभी छोटे से बच्चे थे और सामने फुदक-फुदक कर चल रहे थे।

अबू सुफ़ियान ने कहा, ऐ अली! मेरे साथ तुम्हारा सबसे गहरा नसबी ताल्लुक़ है। मैं एक ज़रूरत से आया हूं। ऐसा न हो कि जिस तरह मैं नामुराद आया उसी तरह नामुराद वापस जाऊं। तुम मेरे लिए मुहम्मद से सिफ़ारिश कर दो।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, अबू सुफ़ियान! तुझ पर अफ़सोस! अल्लाह के रसूल सल्ल० ने एक बात का इरादा कर लिया है। हम इस बारे में आपसे कोई बात नहीं कर सकते।

इसके बाद वह हज़रत फ़ातमा रज़ि० की ओर मुतवज्जह हुआ और बोला, क्या आप ऐसा कर सकती हैं कि अपने इस बेटे को हुक्म दें कि वह लोगों के दर्मियान पनाह देने का एलान करके हमेशा के लिए अरब का सरदार हो जाए?

हज़रत फ़ातमा ने कहा, अल्लाह की क़सम! मेरा बेटा इस दर्जे को नहीं पहुंचा है कि लोगों के बीच पनाह देने का एलान कर सके और अल्लाह के रसूल सल्ल० के होते हुए कोई पनाह दे भी नहीं सकता।

इन कोशिशों और नाकामियों के बाद अबू सुफ़ियान की आंखों के सामने

दुनिया अंधेरी हो गई। उसने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० से बड़ी घबराहट, संघर्ष और निराशा की हालत में कहा कि अबुल हसन! मैं देखता हूं मामला संगीन हो गया है, इसलिए मुझे कोई रास्ता बताओ।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, ख़ुदा की क़सम! मैं तुम्हारे लिए कोई काम की चीज़ नहीं जानता, अलबत्ता तुम बनी कनाना के सरदार हो, इसलिए खड़े होकर लोगों के बीच अमान का एलान कर दो। इसके बाद अपनी धरती पर वापस चले जाओ।

अबू सुफ़ियान ने कहा, क्या तुम्हारा ख़्याल है कि यह मेरे लिए कुछ कारगर होगा?

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, नहीं, ख़ुदा की क़सम! मैं इसे कारगर तो नहीं समझता, लेकिन इसके अलावा कोई शक्ल भी तो समझ में नहीं आती।

इसके बाद अबू सुफ़ियान ने मस्जिद में खड़े होकर एलान किया कि लोगो! मैं लोगों के बीच अमान का एलान कर रहा हूं। फिर अपने ऊंट पर सवार होकर मक्का चला गया।

क़ुरैश के पास पहुंचा तो वे पूछने लगे, पीछे का क्या हाल है?

अबू सुफ़ियान ने कहा, मैं मुहम्मद के पास गया, बात की तो अल्लाह की क़सम! उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। फिर अबू क़हाफ़ा के बेटे के पास गया, तो उसके अन्दर कोई भलाई नहीं पाई। इसके बाद उमर बिन ख़त्ताब के पास गया तो उसे सबसे कट्टर दुश्मन पाया। फिर अली के पास गया, तो उसे सबसे नर्म पाया। उसने मुझे एक राय दी और मैंने उस पर अमल भी किया, लेकिन पता नहीं वह कारामद भी है या नहीं?

लोगों ने पूछा, वह क्या राय थी?

अबू सुफ़ियान ने कहा, वह राय यह थी कि मैं लोगों के बीच अमान का एलान कर दूं और मैंने ऐसा ही किया।

क़ुरैश ने कहा, तो क्या मुहम्मद ने उसे लागू क़रार दिया?

अबू सुफ़ियान ने कहा, नहीं।

लोगों ने कहा, तेरी तबाही हो। इस व्यक्ति (अली) ने तेरे साथ मात्र खिलवाड़ किया।

अबू सुफ़ियान ने कहा, ख़ुदा की क़सम! इसके अलावा कोई शक्ल न बन सकी।

लड़ाई की तैयारी और छिपाने की कोशिश

तबरानी की रिवायत से मालूम होता है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने अह्द शिकनी की ख़बर आने से तीन दिन पहले ही हज़रत आइशा रज़ि० को हुक्म दे दिया था कि आपका साज़ व सामान तैयार कर दें, लेकिन किसी को पता न चले। इसके बाद हज़रत आइशा रज़ि० के पास हज़रत अबूबक्र रज़ि० तशरीफ़ लाए, तो पूछा, बेटी! यह कैसी तैयारी है?

उन्होंने कहा, ख़ुदा की क़सम! मुझे नहीं मालूम।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, यह बनू असफ़र यानी रूमियों से लड़ने का वक़्त नहीं। फिर रसूलुल्लाह सल्ल० का इरादा किधर का है?

हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! मुझे नहीं मालूम।

तीसरे दिन बहुत सवेरे अम्र बिन सालिम ख़ुजाई चालीस सवारों को लेकर पहुंच गया और ऊपर वाले पद 'या रब इन्नी नाशिदुन मुहम्मदन. . . (आख़िर तक) कहा, तो लोगों को मालूम हुआ कि अह्द शिकनी की गई है।

इसके बाद बुदैल आया, फिर अबू सुफ़ियसान आया और लोगों को हालात का ठीक-ठीक पता लग गया। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्ल० ने तैयारी का हुक्म देते हुए बताया कि मक्का चलना है और साथ ही यह दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! जासूसों और ख़बरों को क़ुरैश तक पहुंचने से रोक और पकड़ ले, ताकि हम उनके इलाक़े में उनके सर पर एकदम जा पहुंचें।

फिर पूरे ख़ुफ़िया अन्दाज़ में और राज़दारी की ग़रज़ से रसूलुल्लाह सल्ल० ने शुरू माह रमज़ान में सन् 08 हि० में हज़रत अबू क़तादा बिन रुबई के नेतृत्व में आठ आदमियों का एक सरीया बत्न अज़म की ओर रवाना फ़रमाया। यह जगह ज़ीख़शब और ज़िल मर्वा के बीच मदीना से 36 अरबी मील की दूरी पर वाक़े है। मक़्सद यह था कि समझने वाला समझे कि आप उसी इलाक़े का रुख़ करेंगे और यही ख़बरें इधर-उधर फैलें, लेकिन जब यह सरीया अपनी तैशुदा जगह पहुंच गया, तो उसे मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्ल० मक्का के लिए रवाना हो चुके हैं। चुनांचे यह भी आपसे जा मिला।[1]

---

1. यही सरीया है कि जिसकी मुलाक़ात आमिर बिन अज़बत से हुई, तो आमिर ने इस्लामी तरीक़े से सलाम किया लेकिन मह्लम बिन जसामा ने किसी पिछली रंजिश की वजह से उसे क़त्ल कर दिया, और उसके ऊंट और सामान पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस पर यह आयत उतरी, 'जो तुमसे सलाम करे उसे यह न कहो कि तू ईमान वाला

इधर हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ ने क़ुरैश को एक चिट्ठी लिखकर यह ख़बर भेजी कि अल्लाह के रसूल सल्ल० हमला करने वाले हैं। उन्होंने यह चिट्ठी एक औरत को दी थी और उससे क़ुरैश तक पहुंचाने का मुआवज़ा तै कर रखा था। औरत सर की चोटी में चिट्ठी छिपाकर रवाना हुई। लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० को आसमान से हातिब की इस हरकत की ख़बर दे दी गई। चुनांचे आपने हज़रत अली, हज़रत मिक़्दाद, हज़रत ज़ुबैर और हज़रत अबू मरसद ग़नवी को यह कहकर भेजा कि जाओ रौज़ा ख़ाख़ पहुंचो, वहां एक हौदज पर बैठी औरत मिलेगी, जिसके पास क़ुरैश के नाम एक चिट्ठी होगी, ये लोग घोड़ों पर सवार तेज़ी से रवाना हुए। वहां पहुंचे तो औरत मौजूद थी। उससे कहा कि वह नीचे उतरे और पूछा कि क्या तुम्हारे पास कोई पत्र है?

उसने कहा, मेरे पास कोई पत्र नहीं। उन्होंने उसके कजावे की तलाशी ली, लेकिन कुछ न मिला। इस पर हज़रत अली रज़ि० ने उससे कहा, मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं कि न रसूलुल्लाह सल्ल० ने झूठ कहा है, न हम झूठ कह रहे हैं। तुम या तो पत्र निकालो या हम तुम्हें नंगा कर देंगे। जब उसने यह इरादा देखा तो बोली अच्छा मुंह फेरो। उन्होंने मुंह फेरा तो उसने चोटी खोलकर पत्र निकाला और उनके हवाले कर दिया।

ये लोग चिट्ठी लेकर अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास पहुंचे, देखा तो उसमें लिखा हुआ था, (हातिब बिन अबी बलतआ की ओर से क़ुरैश की तरफ़) फिर क़ुरैश को रसूलुल्लाह सल्ल० के रवाना होने की ख़बर दी थी।[1]

नहीं।' इसके बाद सहाबा किराम मह्लम को रसूलुल्लाह सल्ल० के पास ले आए कि आप इसके लिए मग़फ़िरत की दुआ करें, लेकिन जब मह्लम आपके सामने हाज़िर हुआ, तो आपने तीन बार फ़रमाया, ऐ अल्लाह! मह्लम को न बख़्श! इसके बाद मह्लम अपने कपड़े के दामन से अपने आंसू पोंछता हुआ उठा। इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि उसकी क़ौम के लोग कहते हैं कि बाद में उसके लिए रसूलुल्लाह सल्ल० ने मग़फ़िरत की दुआ कर दी थी।

देखिए ज़ादुल मआद 2/150, इब्ने हिशाम 2/625, 627, 628

1. सुहैली ने कुछ लेखकों के हवाले से चिट्ठी में यह लिखा बयान किया है, ऐ क़ुरैश की जमाअत! अल्लाह के रसूल सल्ल० तुम्हारे पास रात जैसी बढ़ती बाढ़ की शक्ल में भारी फ़ौज लेकर आ रहे हैं और ख़ुदा की क़सम, अगर वह अकेले भी तुम्हारे पास आ जाएं, तो अल्लाह उनकी मदद करेगा और उनसे अपना वायदा पूरा करेगा, इसलिए तुम लोग अपने बारे में सोच लो। वस्सलाम

वाक़दी ने अपनी एक मुर्सल सनद से रिवायत किया है कि हज़रत हातिब ने सुहैल

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत हातिब को बुलाकर पूछा कि हातिब ! यह क्या है ?

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे ख़िलाफ़ जल्दी न फ़रमाएं। ख़ुदा की क़सम ! अल्लाह और उसके रसूल पर मेरा ईमान है। मैं न तो इस्लाम से विमुख हुआ हूं और न मुझमें तब्दीली आई है। बात सिर्फ़ इतनी है कि मैं ख़ुद क़ुरैश का आदमी नहीं, अलबत्ता उनमें चिपका हुआ था और मेरे बाल-बच्चे वहीं हैं, लेकिन क़ुरैश से मेरी कोई रिश्तेदारी नहीं कि वे मेरे बाल-बच्चों की हिफ़ाज़त करें। इसके ख़िलाफ़ दूसरे लोग जो आपके साथ हैं, वहां उनके रिश्तेदार हैं जो उनकी हिफ़ाज़त करेंगे, इसलिए जब मुझे यह चीज़ हासिल न थी, तो मैंने चाहा कि उन पर एक एहसान कर दूं जिसके बदले में वे मेरे रिश्तेदारों की हिफ़ाज़त करें। इस पर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ने कहा,

'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे छोड़िए, मैं इसकी गरदन मार दूं, क्योंकि इसने अल्लाह और उसके रसूल के साथ ख़ियानत की है और यह मुनाफ़िक़ हो गया है।'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, देखो, यह बद्र की लड़ाई में शरीक हो चुका है और उमर ! तुम्हें क्या पता ? हो सकता है अल्लाह ने बद्र वालों पर नमूदार होकर कहा है कि तुम लोग जो चाहो, करो, मैं तुम्हें बख़्श दिया। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० की आंखें भीग गईं और उन्होंने कहा, अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं।[1]

इस तरह अल्लह ने जासूसों को पकड़ लिया और मुसलमानों की जंगी तैयारियों की कोई ख़बर क़ुरैश तक न पहुंच सकी।

इस्लामी फ़ौज मक्का के रास्ते में

10 रमज़ान 08 हि० को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना छोड़कर मक्का का रुख़ किया। आपके साथ दस हज़ार सहाबा किराम थे। मदीना पर अबूज़र गिफ़ारी रज़ि० की नियुक्ति हुई।

बिन अम्र, सफ़वान बिन उमैया और इक्रिमा के पास यह लिखा था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों में ग़ज़वे का एलान कर दिया है और मैं नहीं समझता कि आपका इरादा तुम लोगों के सिवा किसी और का है और मैं चाहता हूं कि तुम लोगों पर मेरा एक एहसान रहे। (फ़त्हुल बारी 7/521)

1. सहीह बुख़ारी 1/422, 2/612, हज़रत ज़ुबैर और हज़रत अबू मरसद के नामों में वृद्धि सहीह बुख़ारी की कुछ दूसरी रिवायतों में है।

जोहफ़ा में या इससे कुछ ऊपर आपके चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब मिले। वह मुसलमान होकर अपने बाल-बच्चों समेत हिजरत करते हुए तशरीफ़ ला रहे थे, फिर अबवा में आपके चचेरे भाई अबू सुफ़ियान बिन हारिस और फुफेरे भाई अब्दुल्लाह बिन उमैया मिले। आपने इन दोनों को देखकर मुंह फेर लिया, क्योंकि ये दोनों आपको बहुत कष्ट पहुंचाया करते और आपकी बुराई किया करते थे। ऐसी स्थिति देखकर हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि ऐसा नहीं होना चाहिए कि आपके चचेरे और फुफेरे भाई ही आपके यहां सबसे ज़्यादा भाग्यहीन हों।

इधर हज़रत अली रज़ि० ने अबू सुफ़ियान बिन हारिस को सिखाया कि तुम अल्लाह के रसूल सल्ल० के सामने जाओ और वही कहो जो हज़रत यूसुफ़ अलै० के भाइयों ने उनसे कहा था, कि 'ख़ुदा की क़सम! अल्लाह ने आपको हम पर बरतरी दी और यक़ीनन हम ही ख़ताकार थे। (12 : 91) क्योंकि आप यह पसन्द नहीं करेंगे कि किसी और का जवाब आपसे अच्छा रहा हो।

चुनांचे अबू सुफ़ियान ने यही कहा और जवाब में तुरन्त अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, 'आज तुम्हें कोई फटकार नहीं। अल्लाह तुम्हें बख़्श दे और वह तमाम रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है।' इस पर अबू सुफ़ियान ने कुछ पद सुनाए, जिनमें से कुछ ये थे—

'तेरी उम्र की क़सम! जिस वक़्त मैंने इसलिए झंडा उठाया था कि लात के योद्धा मुहम्मद के योद्धाओं पर ग़ालिब आ जाएं, तो मेरी स्थित रात के उस मुसाफ़िर जैसी थी जो अंधेरी घुप रात में हैरान हो, लेकिन अब वक़्त आ गया है कि मुझे हिदायत दी जाए और मैं हिदायत पाऊं। मुझे मेरे नफ़्स की बजाए एक हादी ने हिदायत दी, और अल्लाह का रास्ता उसी व्यक्ति ने बताया जिसे मैंने हर मौक़े पर धुत्कार दिया था।'

यह सुनकर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनके सीने पर मारकर फ़रमाया, तुमने मुझे हर मौक़े पर धुत्कारा था।[1]

---

1. बाद में अबू सुफ़ियान के इस्लाम में बड़ी ख़ूबी आ गई। कहा जाता है, जबसे उन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया, शर्म की वजह से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर सर उठाकर न देखा, अल्लाह के रसूल सल्ल० भी उनसे मुहब्बत करते थे और उनके लिए जन्नत की ख़ुशख़बरी देते थे, और फ़रमाते थे, मुझे उम्मीद है कि यह हमज़ा का बदल साबित होंगे। जब उनकी मौत का वक़्त आया तो कहने लगे, मुझ पर न रोना, क्योंकि इस्लाम लाने के बाद मैंने कभी कोई गुनाह की बात नहीं कही। ज़ादुल मआद 2/162, 163

मर्रज़्ज़हरान में इस्लामी फ़ौज का पड़ाव

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना सफ़र जारी रखा। आप और सहाबा रोज़े से थे लेकिन अस्फ़ान और क़ुदैद के बीच कदीद नामी चश्मे पर पहुंचकर आपने रोज़ा तोड़ दिया।[1] और आपके साथ सहाबा किराम रज़ि० ने भी रोज़ा तोड़ दिया। इसके बाद फिर आपने सफ़र जारी रखा, यहां तक कि रात के शुरू के वक़्तों में मर्रज़्ज़हरान की वादी फ़ातमा में पहुंचकर पड़ाव डाला। वहां आपके हुक्म से लोगों ने अलग-अलग आग जलाई। इस तरह दस हज़ार (चूल्हों में) आग जलाई गई। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को पहरे पर मुक़र्रर फ़रमाया।

अबू सुफ़ियान नबी सल्ल० के दरबार में

मर्रज़्ज़हरान में पड़ाव डालने के बाद हज़रत अब्बास रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्ल० के सफ़ेद ख़च्चर पर सवार होकर निकले। उनका मक़्सद यह था कि कोई लकड़हारा या कोई भी आदमी मिल जाए तो उससे क़ुरैश के पास ख़बर भेज दें ताकि वे मक्के में रसूलुल्लाह सल्ल० के दाख़िल होने से पहले आपके पास हाज़िर होकर अमान तलब करें।

इधर अल्लाह ने क़ुरैश पर सारी ख़बरों का पहुंचना रोक दिया था, इसलिए उन्हें हालात का कुछ पता न था, अलबत्ता वे भय और आशंका के शिकार थे और अबू सुफ़ियान बाहर जा-जाकर ख़बरों का पता लगाता रहता था। चुनांचे उस वक़्त भी वह और हकीम बिन हिज़ाम और बुदैल बिन वरक़ा ख़बरों का पता लगाने की ग़रज़ से निकले हुए थे।

हज़रत अब्बास रज़ि० का बयान है कि ख़ुदा की क़सम! मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़च्चर पर सवार जा रहा था कि मुझे अबू सुफ़ियान और बुदैल बिन वरक़ा की आपसी बातें सुनाई दीं। वे आपस ही में कह-सुन रहे थे। अबू सुफ़ियान कह रहा था कि ख़ुदा की क़सम! मैंने आज रात जैसी आग और ऐसी फ़ौज तो कभी देखी ही नहीं और जवाब में बुदैल कह रहा था, ये ख़ुदा की क़सम! बनू ख़ुज़ाआ हैं। लड़ाई ने इन्हें नोच कर रख दिया है और इस पर अबू सुफ़ियान कह रहा था, ख़ुज़ाआ इससे कहीं कमतर और ज़लील हैं कि यह उनकी आग और उनकी फ़ौज हो।

---

1. सहीह बुख़ारी 2/613

हज़रत अब्बास कहते हैं कि मैंने उसकी आवाज़ पहचान ली और कहा, 'अबू हंज़ला?'

उसने भी मेरी आवाज़ पहचान ली और बोला, 'अबुल फ़ज़्ल?'

मैंने कहा, हां।

उसने कहा, क्या बात है? मेरे मां-बाप तुझ पर क़ुर्बान?

मैंने कहा, यह रसूलुल्लाह (सल्ल०) हैं लोगों सहित, हाय क़ुरैश की तबाही! अल्लाह की क़सम!

उसने कहा, अब क्या हीला है? मेरे मां-बाप तुम पर क़ुर्बान!

मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! अगर वे तुम्हें पा गए, तो तुम्हारी गरदन मार देंगे, इसलिए इस ख़च्चर पर पीछे बैठ जाओ। मैं तुम्हें रसूलुल्लाह सल्ल० के पसा ले चलता हूं और तुम्हारे लिए अमान तलब किए देता हूं।

इसके बाद अबू सुफ़ियान मेरे पीछे बैठ गया और उसके दोनों साथी वापस चले गए।

हज़रत अब्बास रज़ि० कहते हैं कि मैं अबू सुफ़ियान को लेकर चला। जब किसी अलाव के पास से गुज़रता, तो लोग कहते कौन हैं? मगर जब देखते रसूलुल्लाह सल्ल० का ख़च्चर है और मैं उस पर सवार हूं तो कहते कि रसूलुल्लाह सल्ल० के चचा हैं और आपके ख़च्चर पर हैं, यहां तक कि मैं उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के अलाव के पास से गुज़रा। उन्होंने कहा कौन है? और उठकर मेरी ओर आए। जब नीचे अबू सुफ़ियान को देखा, तो कहने लगे, अबू सुफ़ियान! अल्लाह का दुश्मन? अल्लाह का शुक्र है कि उसने बिना अह्द व पैमान के तुझे (हमारे) क़ाबू में कर दिया।

इसके बाद वह निकलकर अल्लाह के रसूल सल्ल० की ओर दौड़े और मैंने भी ख़च्चर को एड़ लगाई। मैं आगे बढ़ गया और ख़च्चर से कूदकर अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास जा घुसा। इतने में उमर बिन ख़त्ताब भी घुस आए और बोले कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! यह अबू सुफ़ियान है। मुझे इजाज़त दीजिए, मैं इसकी गरदन मार दूं।

मैंने कहा, अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैंने इसे पनाह दे दी है। फिर मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास बैठकर आपका सर पकड़ लिया और कहा, ख़ुदा की क़सम! आज रात मेरे सिवा कोई और आपसे सरगोशी (कानाफूसी) न करेगा।

जब अबू सुफ़ियान के बारे में हज़रत उमर रज़ि० ने बार-बार कहा, तो मैंने

कहा, उमर ! ठहर जाओ ख़ुदा की क़सम ! अगर यह बनी अदी बिन काब का नाम होता तो तुम ऐसी बात न कहते।

उमर रज़ि० ने कहा, अब्बास ! ठहर जाओ, ख़ुदा की क़सम ! तुम्हारा इस्लाम लाना मेरे नज़दीक ख़त्ताब के ईमान लाने से—अगर वह इस्लाम लाते—ज़्यादा पसन्दीदा है और इसकी वजह मेरे लिए सिर्फ़ यह है कि रसूलुल्लाह सल्ल० के नज़दीक तुम्हारा इस्लाम लाना ख़त्ताब के इस्लाम से ज़्यादा पसन्दीदा है।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, अब्बास ! इसे (यानी अबू सुफ़ियान को) अपने डेरे में ले जाओ, सुबह मेरे पास ले आना। इस हुक्म के मुताबिक़ मैं उसे डेरे में ले गया और सुबह नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर किया। आपने उसे देखकर फ़रमाया, अबू सुफ़ियान ! तुम पर अफ़सोस ! क्या अब भी तुम्हारे लिए वक़्त नहीं आया कि तुम यह जान सको कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं ?

अबू सुफ़ियान ने कहा, मेरे मां-बाप आप पर फ़िदा, आप कितने बुर्दबार, कितने करीम और कितने रिश्तेदारों का ख़्याल रखने वाले हैं ? मैं अच्छी तरह समझ चुका हूं कि अगर अल्लाह के साथ कोई और भी माबूद होता, तो अब तक मेरे कुछ काम आया होता।

आपने फ़रमाया अबू सुफ़ियान ! तुम पर अफ़सोस ! क्या तुम्हारे लिए अब भी वक़्त नहीं आया कि तुम यह जान सको कि मैं अल्लाह का रसूल हूं ?

अबू सुफ़ियान ने कहा, मेरे मां-बाप आप पर फ़िदा, आप कितने जानकार, कितने मेहरबान, कितने जोड़ने वाले हैं, इस बात के बारे में तो अब भी दिल में कुछ न कुछ खटक है।

इस पर हज़रत अब्बास ने कहा, अरे, गरदन मारे जाने से पहले की नौबत आने से पहले इस्लाम क़ुबूल कर लो और यह गवाही और इक़रार कर लो कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। इस पर अबू सुफ़ियान ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और हक़ की गवाही दी।

हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अबू सुफ़ियान एज़ाज़ पसन्द (पद लोलुप) है, इसलिए इसे कोई एज़ाज़ दीजिए।

आपने फ़रमाया, जो अबू सुफ़ियान के घर में घुस जाए उसे अमान है और जो अपना दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर ले उसे अमान है और जो मस्जिदे हराम में दाख़िल हो जाए, उसे अमान है।

इस्लामी फ़ौज मर्रज़्ज़हरान से मक्के की ओर

उसी सुबह, मंगल 17 रमज़ान सन् 08 हि० की सुबह, अल्लाह के रसूल सल्ल० मर्रज़्ज़हरान से मक्का रवाना हुए और हज़रत अब्बास रज़ि० को हुक्म दिया कि अबू सुफ़ियान को जहां घाटी तंग होती है, वहां पहाड़ के नाके के पास रोके रखें, ताकि यहां से गुज़रने वाली ख़ुदाई फ़ौजों को अबू सुफ़ियान देख सके। हज़रत अब्बास ने ऐसा ही किया।

इधर क़बीले अपने-अपने फरेरे लिए गुज़र रहे थे। जब वहां से कोई क़बीला गुज़रता तो अबू सुफ़ियान पूछता, अब्बास! ये कौन लोग हैं? जवाब में हज़रत अब्बास, मिसाल के तौर पर कहते कि बनू सुलैम हैं, तो अबू सुफ़ियान कहता कि मुझे सुलैम से क्या लेना-देना। फिर कोई क़बीला गुज़रता तो अबू सुफ़ियान पूछता कि ऐ अब्बास! ये कौन लोग हैं? वह कहते मुज़ैना हैं। अबू सुफ़ियान कहता, मुझे मुज़ैना से क्या लेना-देना? यहां तक कि सारे क़बीले एक-एक करके गुज़र गए।

जब भी कोई क़बीला गुज़रता तो अबू सुफ़ियान हज़रत अब्बास रज़ि० से उसके बारे में ज़रूर पूछता और जब वह उसे बताते तो वह ज़रूर कहता कि मुझे बनी फ़्लां से क्या वास्ता? यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्ल० अपने हरे दस्ते के साथ तशरीफ़ लाए। आप मुहाजिरों और अंसार के बीच में चल रहे थे, यहां इंसानों के बजाए सिर्फ़ लोहे की बाड़ दिखाई पड़ रही थी।

अबू सुफ़ियान ने कहा, सुबहानल्लाह! ऐ अब्बास! ये कौन लोग हैं?

उन्होंने कहा, ये अंसार और मुहाजिरीन की देख-भाल में अल्लाह के रसूल सल्ल० तशरीफ़ ला रहे हैं।

अबू सुफ़ियान ने कहा, भला इनसे मोर्चा लेने की ताक़त किसे है? इसके बाद उसने आगे कहा, अबुल फ़ज़्ल! तुम्हारे भतीजे की बादशाही तो, अल्लाह की क़सम! बड़ी ज़बरदस्त हो गई।

हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, अबू सुफ़ियान! यह नुबूवत है।

अबू सुफ़ियान ने कहा, हां, अब तो यही कहा जाएगा।

इस मौक़े पर एक घटना और घटी। अंसार का फरेरा हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० के पास था। वह अबू सुफ़ियान के पास से गुज़रे तो बोले—

'आज ख़ूंरेंज़ी और मार-धाड़ का दिन है। आज हुर्मत हलाल कर ली जाएगी। आज अल्लाह ने क़ुरैश की ज़िल्लत मुक़द्दर कर दी है। इसके बाद जब

वहां रसूलुल्लाह सल्ल० गुज़रे तो अबू सुफ़ियान ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने यह बात नहीं सुनी जो साद ने कही है ?

आपने फ़रमाया साद ने क्या कहा है ?

अबू सुफ़ियान ने कहा, यह और यह बात कही है।

यह सुनकर हज़रत उस्मान और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमें ख़तरा है कि कहीं साद क़ुरैश के अन्दर मार-धाड़ न करा दें ?

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, नहीं, बल्कि आज का दिन वह दिन है जिसमें काबे का सम्मान किया जाएगा। आज का दिन वह दिन है जिसमें अल्लाह क़ुरैश को इज़्ज़त बख़्शेगा। इसके बाद आपने हज़रत साद के पास आदमी भेजकर झंडा उनसे ले लिया और उनके सुपुत्र क़ैस के हवाले कर दिया, गोया झंडा हज़रत साद के हाथ से नहीं निकला और कहा जाता है कि झंडा आपने हज़रत ज़ुबैर के हवाले कर दिया था।

इस्लामी फ़ौज अचानक क़ुरैश के सर पर

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० अबू सुफ़ियान के पास से गुज़र चुके, तो हज़रत अब्बास रज़ि० ने उससे कहा, अब दौड़कर अपनी क़ौम के पास जाओ। अबू सुफ़ियान तेज़ी से मक्का पहुंचा और बड़ी ऊंची आवाज़ से पुकारा, क़ुरैश के लोगो ! यह मुहम्मद हैं। तुम्हारे पास इतनी फ़ौज लेकर आए हैं कि मुक़ाबले की ताब नहीं। इसलिए जो अबू सुफ़ियान के घर में घुस जाए उसे अमान है।

लोगों ने कहा, अल्लाह तुझे मारे, तेरा घर हमारे कितने आदमियों के काम आ सकता है ?

अबू सुफ़ियान ने कहा; और जो अपना दरवाज़ा अन्दर से बन्दर कर ले, उसे भी अमान है और जो मस्जिदे हराम में दाख़िल हो जाए, उसे भी अमान है। यह सुनकर लोग अपने घरों और मस्जिदे हराम की ओर भागे, अलबत्ता अपने कुछ गुंडों को लगा दिया और कहा कि इन्हें हम आगे किए देते हैं। अगर क़ुरैश को कुछ कामियाबी हुई, तो हम इनके साथ हो रहेंगे और अगर इन पर चोट पड़ी, तो हमसे जो कुछ मांग की जाएगी, मंज़ूर कर लेंगे।

क़ुरैश के ये मूर्ख गुंडे मुसलमानों से लड़ने के लिए इक्रिमा बिन अबू जहल, सफ़वान बिन उमैया और सुहैल बिन अम्र की कमान में ख़ंदमा के अन्दर जमा हुए। उनमें बनू बक्र का एक आदमी हमास बिन क़ैस भी था जो इससे पहले

हथियार ठीक-ठाक करता रहता था, जिस पर उसकी बीवी ने (एक दिन) कहा, यह काहे की तैयारी है जो मैं देख रही हूं?

उसने कहा, मुहम्मद और उसके साथियों से मुक़ाबले की तैयारी है।

इस पर बीवी ने कहा, ख़ुदा की क़सम! मुहम्मद और उनके साथियों के मुक़ाबले में कोई चीज़ नहीं ठहर सकती।

उसने कहा, ख़ुदा की क़सम! मुझे उम्मीद है कि मैं उनके कुछ साथियों को तुम्हारा दास बनाऊंगा। इसके बाद कहने लगा—

'अगर आज वह हमारे मुक़ाबले में आ गए, तो मेरे लिए कोई उज़्र न होगा, यह पूरा हथियार, लम्बी लम्बी अन्नी वाला नेज़ा, झट सौंती जानेवाली दोधारी तलवार।'

खंदमा की लड़ाई में यह व्यक्ति भी आया हुआ था।

इस्लामी फ़ौज ज़ीतुवा में

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मर्रज़्ज़हरान से रवाना होकर ज़ीतुवा पहुंचे, इस बीच अल्लाह को बख़्शे हुए विजय-यश पर विनम्रता दिखाते हुई आपने अपना सर झुका रखा था, यहां तक कि दाढ़ी के बाल कजावे की लकड़ी से जा लग रहे थे।

ज़ीतुवा में आपने फ़ौज की तर्तीब और तक़्सीम फ़रमाई। खालिद बिन वलीद को अपने पहलू पर रखा। इसमें अस्लम, सुलैम, ग़िफ़ार, मुज़ैना, जुहैना और अरब के कुछ दूसरे क़बीले थे और खालिद बिन वलीद को हुक्म दिया कि वह मक्का के निचले भाग से दाख़िल हों और अगर क़ुरैश में से कोई आड़े आए तो उसे काटकर रख दें, यहां तक कि सफ़ा पर आपसे आ मिलें।

हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम बाएं पहलू पर थे। उनके साथ अल्लाह के रसूल सल्ल० का फरेरा था। आपने उन्हें हुक्म दिया कि मक्का में ऊपरी हिस्से यानी कदा से दाख़िल हों और हजून में आपका झंगडा गाड़ कर आपके सामने आने तक वहीं ठहरे रहें।

हज़रत अबू उबैदा रज़ि० प्यादे पर नियुक्त थे। आपने उन्हें हुक्म दिया कि घाटी के बीच का रास्ता पकड़ें, यहां तक कि मक्का में अल्लाह के रसूल सल्ल० के आगे उतरें।

मक्का में इस्लामी फ़ौज का दाख़िला

इन हिदायतों के बाद तमाम दस्ते अपने अपने मुक़र्रर रास्तों पर चल पड़े।

हज़रत ख़ालिद और उनके साथियों के रास्ते में जो मुश्रिक भी आया, उसे सुला दिया गया, अलबत्ता उनके साथियों में से भी कर्ज़ बिन जाबिर फ़हरी और खुनैस बिन ख़ालिद बिन रबीआ भी शहीद हो गए। वजह यह हुई कि ये दोनों फ़ौज से बिछड़कर एक दूसरे रास्ते पर चल पड़े और इसी बीच उन्हें क़त्ल कर दिया गया।

ख़ंदमा पहुंचकर हज़रत ख़ालिद रज़ि० और उनके साथियों की मुठभेड़ क़ुरैश के गुंडों से हुई। मामूली सी झड़प में बारह मुश्रिक मारे गए और उसके बाद मुश्रिकों में भगदड़ मच गई। हमास बिन क़ैस जो मुसलमानों से लड़ाई के लिए हथियार ठीक-ठाक करता रहता था, भागकर अपने घर में जा घुसा और अपनी बीवी से बोला, दरवाज़ा बन्द कर लो।

उसने कहा, वह कहां गया जो तुम कहा करते थे?

कहने लगा, 'अगर तुमने ख़ंदमा की लड़ाई का हाल देखा होता, जबकि सफ़वान और इक्रिमा भाग खड़े हुए और सौंती हुई तलवारों से हमारा स्वागत किया गया, जो कलाइयां और खोपड़ियां इस तरह काटती जा रही थीं कि पीछे सिवाए उनके शोर और गोग़ा और हमहमा के कुछ सुनाई नहीं पड़ता था, तो तुम मलामत की छोटी सी बात न कहती।'

इसके बाद हज़रत ख़ालिद रज़ि० मक्का के गली-कूचों को रौंदते हुए सफ़ा पर्वत पर अल्लाह के रसूल सल्ल० से जा मिले।

इधर हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने आगे बढ़कर जहून में मस्जिद फ़त्ह के पास अल्लाह के रसूल सल्ल० का झंडा गाड़ा और आपके लिए एक क़ुब्बा नसब किया, फिर लगातार वहीं ठहरे रहे, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्ल० तशरीफ़ ले आए।

मस्जिदे हराम में अल्लाह के रसूल सल्ल० का दाख़िला और बुतों से उसका पाक किया जाना

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० उठे और आगे-पीछे और आस-पास मौजूद अंसार और मुहाजिरों के साथ मस्जिदे हराम के अन्दर तशरीफ़ लाए, आगे बढ़कर हजरे अस्वद को चूमा और उसके बाद बैतुल्लाह का तवाफ़ किया। उस वक़्त आपके हाथ में एक कमान थी और बैतुल्लाह के गिर्द और उसकी छत पर तीन सौ बुत थे। आप उसी कमान से उन बुतों को ठोकर मारते जा रहे थे, और कहते जाते थे।—

'हक़ आ गया और बातिल चला गया। बातिल जानेवाली चीज़ है।' (17 : 18)

'हक़ आ गया और बातिल की चलत-फिरत ख़त्म हुई।' (34 : 49)

और आपकी ठोकर से बुत चेहरों के बल गिरते जाते थे।

आपने तवाफ़ अपनी ऊंटनी पर बैठकर फ़रमाया था और हालते एहराम में न होने की वजह से सिर्फ़ तवाफ़ ही पर बस किया। तवाफ़ पूरा करने के बाद हज़रत उस्मान बिन तलहा को बुलाकर काबे की कुंजी ली। फिर आपके हुक्म से ख़ाना काबा खोला गया। अन्दर दाख़िल हुए तो तस्वीरें नज़र आईं, जिनमें हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलै० की तस्वीरें थीं और उनके हाथ में फ़ाल निकालने के तीर थे।

आपने यह मंज़र देखकर फ़रमाया, 'अल्लाह इन मुश्रिकों को हलाक करे। ख़ुदा की क़सम! इन दोनों पैग़म्बरों ने कभी भी फ़ाल के तीर इस्तेमाल नहीं किए। आपने ख़ाना काबा के अन्दर लकड़ी की बनी हुई एक कबूतरी भी देखी। उसे अपने मुबारक हाथ से तोड़ दिया और तस्वीरें आपके हुक्म से मिटा दी गईं।

ख़ाना काबा में अल्लाह के रसूल सल्ल० की नमाज़ और क़ुरैश से ख़िताब

इसके बाद आपने अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया। हज़रत उसामा रज़ि० और हज़रत बिलाल रज़ि० भी अन्दर ही थे। फिर दरवाज़े के सामने की दीवार का रुख़ किया। दीवार जब तीन हाथ की दूरी पर रह गयी, तो वहीं ठहर गए। दो खम्भे आपके बाईं ओर थे। एक खम्भा दाहिनी ओर और तीन खम्भे पीछे। उन दिनों ख़ाना काबा में छः खम्भे थे। फिर वहीं आपने नमाज़ पढ़ी। इसके बाद बैतुल्लाह के अन्दरूनी हिस्से का चक्कर लगाया। तमाम गोशों में तक्बीर व तौहीद के कलिमे कहे, फिर दरवाज़ा खोल दिया।

क़ुरैश (सामने) मस्जिदे हराम में सफ़ें लगाए खचाखच भरे थे। उन्हें इन्तिज़ार था कि आप क्या करते हैं। आपने दरवाज़ों के दोनों बाज़ू पकड़ लिए। क़ुरैश नीचे थे, उन्हें यों ख़िताब किया—

'अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। उसने अपना वायदा सच कर दिखाया। अपने बन्दे की मदद की और सारे जत्थों को हराया। सुनो, बैतुल्लाह की कुंजी और हाजियों को पानी पिलाने के अलावा सारा रुत्बा, कमाल या ख़ून मेरे इन दोनों क़दमों के नीचे हैं। याद रखो, ग़लती से किया गया क़त्ल और उस सज़ा में जो कोड़े और दंडे से हो, भारी दियत है, यानी

सौ ऊंट जिनमें से चालीस ऊंटनियों के पेट में उनके बच्चे हों।

ऐ क़ुरैश के लोगो! अल्लाह ने तुमसे अज्ञानता के गर्व और बाप-दादा पर घमंड का अन्त कर दिया। सारे लोग आदम से हैं और आदम मिट्टी से थे। इसके बाद यह आयत तिलावत फ़रमाई—

'ऐ लोगो! हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हें क़ौमों और क़बीलों में बांट दिया, ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको। तुममें अल्लाह के नज़दीक सबसे इज़्ज़तदार वही है, जो सबसे ज़्यादा ख़ुदा से डरने वाला हो। बेशक अल्लाह जानने वाला और ख़बर रखने वाला है।'

आज कोई डांट नहीं

इसके बाद आपने फ़रमाया, क़ुरैश के लोगो! तुम्हारा क्या विचार है? मैं तुम्हारे साथ क्या व्यवहार करने वाला हूं?

उन्होंने कहा, अच्छा, आप करीम (दयालु) भाई हैं और करीम भाई के बेटे हैं।

आपने फ़रमाया, तो मैं तुमसे वही बात कह रहा हूं जो हज़रत यूसुफ़ अलै० ने अपने भाइयों से कही थी कि 'आज तुम पर कोई डांट नहीं, जाओ तुम सब आज़ाद हो।'

काबे की कुंजी

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिदे हराम में बैठ गए। हज़रत अली रज़ि० ने, जिनके हाथ में काबे की कुंजी थी, ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, हुज़ूर सल्ल०! हमें हाजियों को पानी पिलाने के पद के साथ ख़ाना काबा की कुंजी रखने का पद भी दे दीजिए। अल्लाह आप पर रहमत नाज़िल करे।

एक और रिवायत के मुताबिक़ यह गुज़ारिश हज़रत अब्बास रज़ि० ने की थी।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, उस्मान बिन तलहा कहां हैं? उन्हें बुलाया गया। आपने फ़रमाया, उस्मान! यह लो अपनी कुंजी। आज का दिन नेकी और वफ़ादारी का दिन है।

तबक़ाते इब्ने साद की रिवायत है कि आपने कुंजी देते हुए फ़रमाया, इसे हमेशा के लिए लो। तुम लोगों से इसे वही छीनेगा जो ज़ालिम होगा। ऐ उस्मान! अल्लाह ने तुम लोगों को अपने घर का अमीन (अमानत की रखवाली करने वाला) बनाया है, इसलिए इस बैतुल्लाह से तुम्हें जो कुछ मिले उसे भले तरीक़े के साथ खाना।

काबा की छत पर बिलाल रज़ि० की अज़ान

अब नमाज़ का वक़्त हो चुका था। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत बिलाल रज़ि० को हुक्म दिया कि काबे पर चढ़कर अज़ान कहें। उस वक़्त अबू सुफ़ियान बिन हर्ब, अत्ताब बिन असीद और हारिस बिन हिशाम काबा के सेहन में बैठे थे। अत्ताब ने कहा, अल्लाह ने असीद को यह शरफ़ दिया कि उन्होंने यह (अज़ान) न सुनी, वरना उन्हें एक नागवार चीज़ सुननी पड़ती।

इस पर हारिस ने कहा, सुनो, अल्लाह की क़सम! अगर मुझे मालूम हो जाए कि वह हक़ पर हैं, तो मैं उनका पैरोकार बन जाऊंगा।

इस पर अबू सुफ़ियान ने कहा, देखो, अल्लाह की क़सम! मैं कुछ नहीं कहूंगा, क्योंकि अगर मैं बोलूंगा तो ये कंकरियां भी मेरे बारे में ख़बर दे देंगी।

इसके बाद नबी सल्ल० भी उनके पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया, अभी तुम लोगों ने जो बातें की हैं, वे मुझे मालूम हो चुकी हैं। फिर आपने उनकी बातें दोहरा दीं। इस पर हारिस और अत्ताब बोल उठे, हम गवाही देते हैं कि आप अल्लाह के रसूल हैं। ख़ुदा की क़सम! कोई व्यक्ति हमारे साथ था ही नहीं कि हमारी इस बातचीत को वह जानता और हम कहते कि उसने आपको ख़बर दी होगी।

विजय या शुक्राने की नमाज़

उसी दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० उम्मे हानी बिन्त अबी तालिब के घर तशरीफ़ ले गए। वहां स्नान किया और उनके घर ही में आठ रक्अत नमाज़ पढ़ी। यह चाश्त का वक़्त था, इसलिए किसी ने इसे चाश्त की नमाज़ समझा और किसी ने विजय की नमाज़।

उम्मे हानी ने अपने दो देवरों को पनाह दे रखी थी। आपने फ़रमाया, ऐ उम्मे हानी! जिसे तुमने पनाह दी, उसे हमने भी पनाह दी। इस इर्शाद की वजह यह थी कि उम्मे हानी के भाई हज़रत अली बिन अबी तालिब उन दोनों को क़त्ल करना चाहते थे। इसलिए उम्मे हानी ने उन दोनों को छिपाकर घर का दरवाज़ा बन्द कर रखा था। जब नबी सल्ल० तशरीफ़ ले गए तो उनके बारे में पूछा और ऊपर के जवाब से ख़ुश हुईं।

महान अपराधियों को माफ़ी नहीं

मक्का-विजय के दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने महान अपराधियों में से नौ आदमियों को माफ़ न क़रते हुए हुक्म दिया कि अगर

वे काबे के परदे के नीचे भी पाए जाएं, तो उन्हें क़त्ल कर दिया जाए। उनके नाम ये हैं—

1. अब्दुल उज़्ज़ा बिन ख़तल, 2. अब्दुल्लाह बिन साद बिन अबी सर्ह, 3. इक्रिमा बिन अबी जह्ल 4. हारिस बिन नुफ़ैल बिन वह्ब, 5. मुक़ीस बिन सबाबा, 6. हब्बार बिन अस्वद, 7-8. इब्ने ख़तल की दो लौंडियां, जो नबी सल्ल० की बुराई के गीत गातीं और गालियां देती थीं, 9. सारा, जो अब्दुल मुत्तलिब की औलाद में से किसी की लौंडी थी। उसी के पास हातिब का ख़त पाया गया था।

इब्ने अबी सर्ह का मामला यह हुआ कि उसे हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० ने नबी सल्ल० की खिदमत में ले जाकर जान बख़्शी की सिफ़ारिश कर दी और आपने उसकी जान बख़्शी फ़रमाते हुए उसका इस्लाम क़ुबूल कर लिया, लेकिन इससे पहले आप कुछ देर तक इस उम्मीद में ख़ामोश रहे कि कोई सहाबी उसे उठाकर क़त्ल कर देंगे, क्योंकि यह व्यक्ति इससे पहले भी एक बार इस्लाम क़ुबूल कर चुका था और हिजरत करके मदीना आया था, लेकिन इस्लाम से विमुख होकर भाग गया था, (फिर भी उसके बाद का चरित्र उनके बेहतर इस्लाम को पेश करता है। रज़ियल्लाहु अन्हु)

इक्रिमा बिन अबी जह्ल ने भागकर यमन की राह ली, लेकिन उनकी बीवी ने नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर उसके लिए अमान तलब कर ली और आपने अमान दे दी। इसके बाद वह इक्रिमा के पीछे गईं और उसे साथ ले आईं। उसने वापस आकर इस्लाम क़ुबूल किया और उनके इस्लाम की स्थिति बहुत अच्छी रही।

इब्ने ख़तल ख़ाना काबा को पकड़कर लटका हुआ था। एक सहाबी ने नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर इसकी ख़बर दी। आपने फ़रमाया, उसे क़त्ल कर दो। उन्होंने उसे क़त्ल कर दिया।

मुक़ीस बिन सबाबा को हज़रत नुमैला बिन अब्दुल्लाह ने क़त्ल किया। मुक़ीस भी पहले मुसलमान हो चुका था, लेकिन फिर एक अंसारी को क़त्ल करके इस्लाम से फिर गया और भागकर मुश्रिकों के पास चला गया था।

हारिस, मक्का में रसूलुल्लाह सल्ल० को बड़ा कष्ट दिया करता था। उसे हज़रत अली रज़ि० ने क़त्ल किया।

हब्बार बिन अस्वद वही व्यक्ति है जिसने अल्लाह के रसूल सल्ल० की सुपुत्री हज़रत ज़ैनब को उनकी हिजरत के मौक़े पर ऐसा कचूका मारा था कि वह हौदज से एक चट्टान पर जा गिरी थीं और इसकी वजह से उनका हमल (गर्भ)

गिर गया था। यह व्यक्ति मक्का-विजय के दिन निकल भागा, फिर मुसलमान हो गया और उसके इस्लाम की हालत अच्छी रही।

इब्ने ख़तल की दोनों लौंडियों में से एक क़त्ल की गई। दूसरी के लिए अमान तलब की गई और वह भी मुसलमान हो गई। (सार यह कि नौ में से चार क़त्ल किए गए, पांच की जान बख़्शी हुई और उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया।)

हाफ़िज़ इब्ने हजर लिखते हैं, जिन लोगों को माफ़ नहीं किया गया, उनमें से अबू माशर ने हारिस बिन तलाल ख़ुज़ाई का भी ज़िक्र किया है। उसे हज़रत अली रज़ि० ने क़त्ल किया।

इमाम हाकिम ने इसी सूची में काब बिन ज़ुहैर का उल्लेख किया है। काब की घटना मशहूर है। उसने बाद में आकर इस्लाम अपनाया और नबी सल्ल० की प्रशंसा की। (इसी सूची में) वहशी बिन हर्ब और अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्द बिन्त उत्बा हैं, जिन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया और इब्ने ख़तब की लौंडी अरनब है, जो क़त्ल की गई और उम्मे साद है, यह भी क़त्ल की गई, जैसा कि इब्ने इस्हाक़ ने उल्लेख किया है। इस तरह मर्दों की तादाद आठ और औरतों की तायदाद छः हो जाती है। हो सकता है कि दोनों लौंडियां अरनब और उम्मे साद एक ही हों और मतभेद केवल नाम का हो या उपाधि और उपनाम की दृष्टि से मतभेद हो गया हो।[1]

सफ़वान बिन उमैया और फ़ुज़ाला बिन उमैर का इस्लाम क़ुबूल करना

सफ़वान के बारे में यद्यपि कोई बात नहीं की गई थी, लेकिन क़ुरैश का एक बड़ा लीडर होने की हैसियत से उसे अपनी जान का ख़तरा था, इसीलिए वह भी भाग गया। उमैर बिन अम्र जुमही ने रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर उसके लिए अमान तलब की। आपने अमान दे दी और निशानी के तौर पर उमैर को अपनी वह पगड़ी दे दी जो मक्का में दाख़िले के वक़्त आपने सर पर बांध रखी थी।

उमैर सफ़वान के पास पहुंचे तो वह जद्दा से यमन जाने के लिए समुद्र पर सवार होने की तैयारी कर रहा था। उमैर उसे वापस ले आए। उसने रसूलुल्लाह सल्ल० से कहा, मुझे दो महीने की मोहलत दीजिए।

---

1. फ़त्हुल बारी 8/11, 12

आपने फ़रमाया, तुम्हें चार महीने का अधिकार है। इसके बाद सफ़वान ने इस्लाम अपना लिया। उसकी बीवी पहले ही मुसलमान हो चुकी थी। आपने दोनों को पहले ही निकाह पर बाक़ी रखा।

फ़ुज़ाला एक बहादुर आदमी था। जिस वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल० तवाफ़ कर रहे थे, वह क़त्ल की नीयत से आपके पास आया, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० ने बता दिया कि उसके दिल में क्या है। इस पर वह मुसलमान हो गया।

विजय के दूसरे दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० का ख़ुत्बा

विजय के दूसरे दिन ख़ुत्बा देने के लिए रसूलुल्लाह सल्ल० लोगों के बीच फिर खड़े हुए। आपने अल्लाह का गुणगान किया, फिर फ़रमाया, लोगो! अल्लाह ने जिस दिन आसमान व ज़मीन को पैदा किया, उसी दिन मक्का को हराम (हुर्मत वाला) शहर ठहराया। इसलिए वह अल्लाह की हुर्मत की वजह से क़ियामत तक के लिए हराम है। कोई आदमी जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखता हो, उसके लिए हलाल नहीं कि उसमें ख़ून बहाए या यहां का कोई पेड़ काटे। अगर कोई व्यक्ति इस बुनियाद पर छूट ले कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने यहां क़िताल किया, तो उससे कह दो कि अल्लाह ने अपने रसूल को इजाज़त दी थी, लेकिन तुम्हें इजाज़त नहीं दी है और मेरे लिए भी उसे सिर्फ़ दिन की एक घड़ी में हलाल किया गया। फिर आज उसकी हुरमत उसी तरह पलट आई, जिस तरह कल उसकी हुर्मत थी। अब चाहिए कि जो हाज़िर है वह ग़ायब को यह बात पहुंचा दे।

एक रिवायत में इतना और है कि यहां का कांटा न काटा जाए, शिकार न भगाया जाए और गिरी-पड़ी चीज़ न उठाई जाए, अलबत्ता वह आदमी उठा सकता है जो उसका परिचय कराए और यहां की घास न उखाड़ी जाए।

हज़रत अब्बास रज़ि०ने कहा, ऐ अल्लाह के सूल सल्ल० ! मगर इज़ख़र, (अरब की मशहूर घास, जो मूज जैसी होती है और चाय और दवा के तौर पर इस्तेमाल होती है) क्योंकि यह लोहार और घर की (ज़रूरतों की) चीज़ है।

आपने फ़रमाया, मगर इज़ख़र।

बनू ख़ुज़ाआ ने उस दिन बनू लैस के एक आदमी को क़त्ल कर दिया, क्योंकि बनू लैस के हाथों उनका एक आदमी जाहिलियत में मारा गया था। रसूलुल्लाह सल्ल० ने इस बारे में फ़रमाया, ख़ुज़ाआ के लोगो! अपना हाथ क़त्ल से रोक लो, क्योंकि क़त्ल अगर फ़ायदेमंद होता, तो बहुत क़त्ल हो चुका। तुमने एक ऐसा आदमी क़त्ल किया है कि मैं उसकी दियत ज़रूर ही अदा करूंगा।

फिर मेरे इस स्थान के बाद अगर किसी ने किसी को क़त्ल किया तो क़त्ल किए गए व्यक्ति के वलियों (अभिभावकों) को दो बातों का अख़्तियार होगा, चाहें तो क़ातिल का ख़ून बहाएं और चाहें तो उससे दियत लें।

एक रिवायत में है कि इसके बाद यमन के एक आदमी ने, जिसका नाम अबू शाह था, उठकर अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! (इसे) मेरे लिए लिखवा दीजिए।

आपने फ़रमाया, अबू शाह के लिए लिख दो।[1]

अंसार के अंदेशे

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्का विजय पूरी कर चुके—और मालूम है कि यही आपका शहर, आपका जन्म स्थान और वतन था—तो अंसार ने आपस में कहा, क्या ख़्याल है अब अल्लाह ने रसूल सल्ल० को आपकी अपनी धरती और आपका अपना शहर जिता दिया है, तो आप यहीं ठहरेंगे? उस वक़्त आप सफ़ा पर हाथ उठाए दुआ फ़रमा रहे थे।

दुआ से फ़ारिग़ हुए तो मालूम किया, तुम लोगों ने क्या बात की है?

उन्होंने कहा, कुछ नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मगर आपने आग्रह किया तो अन्त में उन लोगों ने बतला दिया।

आपने फ़रमाया, ख़ुदा की पनाह, अब ज़िंदगी और मौत तुम्हारे साथ है।

बैअत

जब अल्लाह ने रसूलुल्लाह सल्ल० और मुसलमानों को मक्का की जीत दे दी, तो मक्का वालों पर हक़ स्पष्ट हो गया और वह जान गए कि इस्लाम के सिवा कामियाबी का कोई रास्ता नहीं, इसलिए वे इस्लाम के ताबेदार बनते हुए बैअत के लिए जमा हो गए। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सफ़ा पर बैठकर लोगों से बैअत लेनी शुरू की। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० आपसे नीचे थे। और लोगों से अह्द व पैमान ले रहे थे। लोगों ने हुज़ूर सल्ल० से बैअत की कि जहां तक हो सकेगा, आपकी बात सुनेंगे और मानेंगे।

इस मौक़े पर तफ़्सीरे मदारिक में यह रिवायत आई है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मर्दों की बैअत से फ़ारिग़ हो चुके, तो वहीं सफ़ा

---

1. इन रिवायतों के लिए देखिए सहीह बुख़ारी, 1/22, 216, 247, 328, 329, 2/615, 617, सहीह मुस्लिम 1/437, 438, 439, इब्ने हिशाम, 2/415, 416, सुनन अबी दाऊद 2/276

ही पर औरतों से बैअत लेनी शुरू की। हज़रत उमर रज़ि० आपसे नीचे बैठे थे और आपके हुक्म पर औरतों से बैअत ले रहे थे और उन्हें आपकी बातें पहुंचा रहे थे।

इसी बीच अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्द बिन्त उत्बा भेस बदलकर आई। असल में हज़रत हमज़ा की लाश के साथ उसने जो हरकत की थी, उसकी वजह से वह डरी हुई थी कि कहीं अल्लाह के रसूल सल्ल० उसे पहचान न लें।

इधर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने (बैअत शुरू की, तो) फ़रमाया, मैं तुमसे इस बात पर बैअत लेता हूं कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करोगी। हज़रत उमर रज़ि० ने (यही बात दोहराते हुए) औरतों से इस बात पर बैअत ली कि वह अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करेंगी।

फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया और न चोरी करोगी।

इस पर हिन्दा बोल उठी, अबू सुफ़ियान कंजूस आदमी है। अगर मैं उसके माल में से कुछ ले लूं तो?

अबू सुफ़ियान ने (जो वहीं मौजूद थे) कहा, तुम जो कुछ ले लो, वह तुम्हारे लिए हलाल हैं।

रसूलुल्लाह सल्ल० मुस्कराने लगे। आपने हिन्दा को पहचान लिया, फ़रमाया, अच्छा.. तो तुम हो हिन्दा?

वह बोली, हां, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल०! जो कुछ गुज़र चुका है, उसे माफ़ फ़रमा दीजिए। अल्लाह आपको माफ़ फ़रमाए।

इसके बाद आपने फ़रमाया, 'और ज़िना न करोगी।'

इस पर हिन्दा ने कहा, भला कहीं हुर्रा (आज़ाद औरत) भी ज़िना करती है।

फिर आपने फ़रमाया, और अपनी औलाद को क़त्ल न करोगी।

हिन्दा ने कहा, हमने तो बचपन में उन्हें पाला-पोसा, लेकिन बड़े होने पर आप लोगों ने उन्हें क़त्ल कर दिया। इसलिए आप और वे ही बेहतर जानें। याद रहे कि हिन्दा का बेटा हंज़ला बिन अबी सुफ़ियान बद्र के दिन क़त्ल किया गया था।

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० हंसते-हंसते चित लेट गए और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी मुस्कराए। इसके बाद आपने फ़रमाया, और कोई बोहतान न गढ़ोगी।

हिन्दा ने कहा, अल्लाह की क़सम! बोहतान बड़ी बुरी बात है और आप हमें वाक़ई हिदायत और अच्छे अख़्लाक़ का हुक्म देते हैं।

फिर आपने फ़रमाया, और किसी भली बात में रसूल की नाफ़रमानी न करोगी।

हिन्दा ने कहा, अल्लाह की क़सम ! हम अपनी इस मज्लिस में अपने दिलों के अन्दर यह बात लेकर नहीं बैठी हैं कि आपकी नाफ़रमानी भी करेंगी।

फिर वापस होकर हिन्दा ने अपना बुत तोड़ दिया। वह उसे तोड़ती जा रही थी और कहती जा रही थी, हम तेरे ताल्लुक़ से धोखे में थे।[1]

सहीह बुख़ारी में है कि हिन्द बिन्त उत्बा आई और बोली, ऐ अल्लाह के रसूल ! इस धरती पर कोई भी ख़ेमे वाले नहीं थे कि जिनका ज़लील होना आपके ख़ेमे वालों के ज़लील होने से बढ़कर मुझे पसन्द रहा हो, लेकिन आज यह हाल है कि धरती पर कोई ख़ेमे वाले नहीं हैं, जिनका प्रिय होना आपके ख़ेमे वालों के प्रिय होने से बढ़कर मुझे पसन्द हो। आपने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, अभी और अभी।

हिन्दा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! अबू सुफ़ियान कंजूस आदमी है, तो क्या मुझ पर कोई हरज है कि उसके माल से अपने घर वालों को खिलाऊं। आपने फ़रमाया, चलन के मुताबिक़ ले लेने में कोई हरज नहीं है।[2]

मक्का में नबी सल्ल० का निवास और काम

मक्का में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 19 दिन निवास किया। उस बीच आप इस्लामी चिह्नों को नवीन करते रहे और लोगों को हिदायत व तक़्वा की रहनुमाई करते रहे। उन्हीं दिनों आपके हुक्म से हज़रत अबू उसैद ख़ुज़ाई ने नए सिरे से हरम-सीमाओं के खम्बे गाड़े। आपने इस्लाम की दावत और मक्का के आस-पास बुतों को तोड़ने के लिए बहुत से सराया भी रवाना किए और इस तरह सारे बुत तोड़ डाले गए। आपके मुनादी ने मक्का में एलान किया कि जो व्यक्ति अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, वह अपने घर में कोई बुत न छोड़े, बल्कि उसे तोड़ डाले।

सराया और मुहिमें

1. मक्का विजय से यकसू होने जाने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 25 रमज़ान सन् 08 हि० को हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की

---

1. देखिए मदारिकुत्तंज़ील, लेख नसफ़ी, तफ़्सीर आयत बैअत
2. सहीह बुख़ारी मय फ़त्हुल बारी 7/175, 13/148, हदीस न० 3825

रहनुमाई में उज़्ज़ा को ढा देने के लिए एक सरीया रवाना फ़रमाया। उज़्ज़ा नख़ला में था। क़ुरैश और सारे बनू कनाना उसकी पूजा करते थे और यह उनका सबसे बड़ा बुत था। बनू शैबान उनके मुजाविर थे। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीस सवारों के साथ नख़ला जाकर उसे ढा दिया। वापसी पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मालूम किया कि तुमने कुछ देखा भी था? हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, नहीं। आपने फ़रमाया, तब तो तुमने हक़ीक़त में उसे ढाया ही नहीं, फिर से जाओ और उसे ढा दो। हज़रत ख़ालिद रज़ि० बिफरे और तलवार सौंते हुए दोबारा तशरीफ़ ले गए। अब की बार उनकी ओर एक नंगी, काली, बिखरे बालों वाली औरत निकली। मुजाविर उसे चीख़-चीख़ कर पुकारने लगा, लेकिन इतने में हज़रत ख़ालिद ने इतने ज़ोर की तलवार मारी कि उस औरत के दो टुकड़े हो गए। इसके बाद वापस आकर अल्लाह के रसूल सल्ल० को ख़बर दी।

आपने फ़रमाया, हां, वही उज़्ज़ा थी। अब वह मायूस हो चुकी है कि तुम्हारे देश में कभी भी उसकी पूजा की जाएगी।

2. इसके बाद आपने अम्र बिन आस रज़ि० को इसी महीने सुवाअ नामी बुत ढाने के लिए रवाना किया। यह मक्का से तीन मील की दूरी पर रबात में बनू हुज़ैल का एक बुत था। जब हज़रत अम्र रज़ि० वहां पहुंचे तो पुजारी ने पूछा, तुम क्या चाहते हो?

उन्होंने कहा, मुझे अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इसे ढाने का हुक्म दिया है।

उसने कहा, तुम उस पर क़ादिर नहीं हो सकते।

हज़रत अम्र ने कहा, क्यों?

उसने कहा, (स्वाभाविक रूप से) रोक दिए जाओगे।

हज़रत अम्र रज़ि० ने कहा, तुम अब तक असत्य पर हो? तुम पर अफ़सोस, क्या यह सुनता या देखता है? इसके बाद बुत के पास जाकर उसे तोड़ डाला और अपने साथियों को हुक्म दिया कि वे उसके ख़ज़ाने वाला मकान ढा दें, लेकिन उसमें कुछ न मिला। फिर पुजारी से फ़रमाया, कहो, कैसा रहा?

उसने कहा, मैं अल्लाह के लिए इस्लाम ले आया।

3. इसी माह हज़रत साद बिन ज़ैद अशहली को बीस सवार देकर मनात की ओर रवाना किया गया। यह क़ुदैद के पास मुसल्लल में औस व ख़ज़रज और ग़स्सान वग़ैरह का बुत था। जब हज़रत साद वहां पहुंचे तो उसके पुजारी ने उनसे कहा, तुम क्या चाहते हो?

उन्होंने कहा, मनात को ढाना चाहता हूं।

उसने कहा, तुम जानो और तुम्हारा काम जाने।

हज़रत साद रज़ि० मनात की ओर बढ़े तो एक काली, नंगी, बिखरे सर वाली औरत निकली (वह अपना सीना पीट-पीटकर हाय-हाय कर रही थी।)

उससे पुजारी ने कहा, मनात! अपने कुछ नाफ़रमानों को पकड़ ले, लेकिन इतने में हज़रत साद ने तलवार मारकर उसका काम तमाम कर दिया। फिर लपककर बुत ढा दिया और उसे तोड़-फोड़ डाला। ख़ज़ाने में कुछ न मिला।

4. उज़्ज़ा को ढाकर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० वापस आए, तो उन्हें अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उसी माह रमज़ान सन् 08 हि० में बनू जज़ीमा के पास रवाना फ़रमाया, लेकिन मक़्सूद हमला नहीं, बल्कि इस्लाम का प्रचार था। हज़रत ख़ालिद रज़ि० मुहाजिरीन व अंसार और बनू सुलैम के साढ़े तीन सौ लोगों को लेकर रवाना हुए और बनू जुज़ैमा के पास पहुंचकर इस्लाम की दावत दी। उन्होंने 'असलमना' (हम इस्लाम लाए) के बजाए 'सबाना, सबाना' (हमने अपना दीन छोड़ा, हमने अपना दीन छोड़ा) कहा।

इस पर हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने उनका क़त्ल और उनकी गिरफ़्तारी शुरू कर दी और एक-एक क़ैदी अपने हर-हर साथी के हवाले किया। फिर एक दिन हुक्म दिया कि हर आदमी अपने क़ैदी को क़त्ल कर दे, लेकिन हज़रत इब्ने उमर रज़ि० और उनके साथियों ने इस हुक्म के पूरा करने से इंकार कर दिया और जब नबी सल्ल० के पास आए, तो आपसे उसका ज़िक्र किया। आपने अपने दोनों हाथ उठाए और दोबार फ़रमाया, ऐ अल्लाह! ख़ालिद ने जो कुछ किया, मैं उससे तेरी तरफ छूट अपनाता हूं।[1]

इस मौक़े पर सिर्फ़ बनू सुलैम के लोगों ने अपने क़ैदियों को क़त्ल किया था, अंसार व मुहाजिरीन ने क़त्ल नहीं किया था। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० को भेजकर उनके क़त्ल किए गए लोगों की दियत और उनके नुक़्सानों का मुआवज़ा अदा फ़रमाया। इस मामले में हज़रत ख़ालिद और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० के बीच कुछ सख़्त कलामी और बुराई भी हो गई थी।

इसकी ख़बर रसूलुल्लाह सल्ल० को हुई तो आपने फ़रमाया, ख़ालिद! ठहर जाओ मेरे साथियों को कुछ कहने से बाज़ रहो। ख़ुदा की क़सम! अगर उहुद

1. सहीह बुख़ारी 1/450, 2/622

पहाड़ सोना हो जाए और वह सारे का सारा तुम अल्लाह की राह में ख़र्च कर दो, तब भी मेरे साथियों में से किसी एक आदमी की एक सुबह की इबादत या एक शाम की इबादत को नहीं पहुंच सकते।[1]

यह है मक्का-विजय की लड़ाई, यही वह निर्णायक लड़ाई और महान विजय है जिसने बुतपरस्ती की ताक़त पूरे तौर पर तोड़कर रख दी और उसका काम इस तरह तमाम कर दिया कि अरब प्रायद्वीप में उसके बाक़ी रहने की कोई गुंजाइश और जायज़ करने की कोई वजह बाक़ी न रह गई, क्योंकि आम क़बीले इस इन्तिज़ार में थे कि मुसलमानों और बुतपरस्तों में जो लड़ाई चल रही है, देखें उसका अंजाम क्या होता है?

इन क़बीलों को यह बात भी अच्छी तरह मालूम थी कि हरम पर वही मुसल्लत हो सकता है, जो हक़ पर हो। उनके इस पक्के एतक़ाद में पक्कापन उस वक़्त और पैदा हो गया, जब आधी सदी पहले हाथी वाले अबरहा और उसके साथियों के वाक़िए से आ गया था, क्योंकि अरब वालों ने देख लिया था कि अबरहा और उसके साथियों ने बैतुल्लाह का रुख़ किया, तो अल्लाह ने उन्हें हलाक करके भुस बना दिया।

याद रहे हुदैबिया इस महान विजय की प्रस्तावना था। इसकी वजह से अम्न व अमान का दौर-दौरा हो गया था। लोग खुलकर एक दूसरे से बातें करते थे। इस्लाम के बारे में विचार-विमर्श और वाद-विवाद किया करते थे।

मक्का के जो लोग परदे के पीछे मुसलमान थे, उन्हें भी इस समझौते के बाद अपने दीन के ज़ाहिर करने, उसका प्रचार करने और उस पर वाद-विवाद करने का मौक़ा मिला। इन हालात के नतीजे में बहुत से लोग मुसलमान हो गए, यहां तक कि इस्लामी फ़ौज की जो तायदाद पिछली किसी लड़ाई में तीन हज़ार से ज़्यादा न हो सकी थी, इस मक्का विजय की लड़ाई में दस हज़ार तक जा पहुंची।

इस निर्णायक लड़ाई ने लोगों की आंखें खोल दीं और उन पर पड़ा हुआ वह आख़िरी परदा हटा दिया जो इस्लाम क़ुबूल करने के रास्ते में रोक बना हुआ था। इस विजय के बाद पूरे अरब प्रायद्वीप के राजनीतिक और धार्मिक क्षितिज पर मुसलमानों का सूरज चमक रहा था और अब धार्मिक नेतृत्व और सांसारिक

---

1. इस ग़ज़वे का विवेचन निम्न स्रोतों से लिया गया है—
इब्ने हिशाम 2/389-437, सहीह बुख़ारी 1/किताबुल जिहाद और किताबुल मनासिक 2/612-615, 622, फ़त्हुल बारी 8/3-27 सहीह मुस्लिम 1/437, 438 439, 2/102, 103, 130, ज़ादुल मआद 2/160-168, मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 322-351

सरदारी की बागडोर उनके हाथ में आ चुकी थी।

मानो हुदैबिया समझौता के बाद मुसलमानों के हक़ में जो फ़ायदेमंद तब्दीली शुरू हुई थी, इस विजय से पूरी हो गई और इसके बाद एक दूसरा दौर शुरू हुआ जो पूरे तौर पर मुसलमानों के हक़ में था और जिसमें पूरी स्थिति मुसलमानों के क़ाबू में थी और अरब क़ौमों के सामने केवल एक ही रास्ता था कि वे प्रतिनिधिमंडलों की शक्ल में रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम अपना लें और आपकी दावत लेकर पूरी दुनिया में फैल जाएं। अगले दो वर्षों में इसी की तैयारी की गई।

तीसरा मरहला

यह अल्लाह के रसूल सल्ल० की पैग़म्बराना ज़िंदगी का आख़िरी मरहला है जो आपकी इस्लामी दावत के उन नतीजों की नुमाइन्दगी करता है जिन्हें आपने लगभग 23 साल की लम्बी जद्दोजेहद, कठिनाइयों, परेशानियों, हंगामों और फ़ित्नों, दंगों और जंगों और ख़ूनी लड़ाइयों के बाद प्राप्त किया था।

इस लम्बी मुद्दत में मक्का विजय सबसे महत्वपूर्ण सफलता थी, जो मुसलमानों ने प्राप्त की। इसकी वजह से हालात का धारा बदल गया और अरब में क्रान्ति आ गई।

यह विजय वास्तव में अपने पहले और बाद के दोनों युगों के बीच एक रेखा खींच देती है। चूंकि क़ुरैश, अरब वालों की नज़र में दीन की हिफ़ाज़त करने वाले और मददगार थे और पूरा अरब इस बारे में उनके आधीन था, इसलिए क़ुरैश के हथियार डालने का मतलब यह था कि पूरे अरब प्रायद्वीप में बुतपरस्ती वाले दीन का काम ख़त्म हो गया।

इस आख़िरी मरहले के दो हिस्से हैं—

1. मुजाहदा और क़िताल (संघर्ष और लड़ाई)
2. इस्लाम क़ुबूल करने के लिए क़ौमों और क़बीलों की दौड़,

ये दोनों शक्लें एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं और इस मरहले में आगे-पीछे भी और एक दूसरे के दौरान भी पेश आती रही हैं। अलबत्ता हमने किताबी तर्तीब यह अपनाई है कि एक का दूसरे से अलग ज़िक्र करें।

चूंकि पिछले पन्नों में लड़ाइयों का वर्णन चल रहा था और अगली लड़ाई उसी की एक शाखा की हैसियत रखती है, इसलिए यहां लड़ाइयों का उल्लेख पहले हो रहा है।

हुनैन की लड़ाई

मक्का की विजय एक अचानक चोट के बाद मिली थी, जिस पर अरब चकित थे और पड़ोसी क़बीलों में इतनी ताक़त न थी कि यकायकी घटना से निमट सकें। इसलिए कुछ अड़ियल, ताक़तवर और घमंडी क़बीलों को छोड़कर बाक़ी सारे क़बीलों ने हथियार डाल दिए। अड़ियल क़बीलों में हवाज़िन और सक़ीफ़ सूची में चोटी पर थे। उनके साथ मुज़र, जुसम और साद बिन बक्र के क़बीले और बनू हलाल के कुछ लोग भी शामिल हो गए थे। इन सब क़बीलों का ताल्लुक़ कैसे ऐलान से था।

उन्हें यह बात स्वाभिमान और प्रतिष्ठा के विरुद्ध लग रही थी कि मुसलमानों के सामने हथियार डाल दें। इसलिए इन क़बीलों ने मालिक बिन औफ़ नसरी के पास जमा होकर तै किया कि मुसलमानों पर धावा बोल दिया जाए।

दुश्मन की रवानगी और अवतास में पड़ाव

इस फ़ैसले के बाद मुसलमानों से लड़ने के लिए उनकी रवानगी अमल में आई तो जनरल कमांडर, मालिक बिन औफ़, उनके साथ माल मवेशी और बाल-बच्चे भी हांक लाया और आगे बढ़कर औतास घाटी में पड़ाव डाल दिया।

यह हुनैन के क़रीब बनू हवाज़िन के इलाक़े में एक घाटी है, लेकिन यह घाटी हुनैन से अलग है। हुनैन एक दूसरी घाटी है जो ज़ुलमजाज़ के बाज़ू में वाक़े है। वहां से अरफ़ात होते हुए मक्के की दूरी दस मील से ज़्यादा है।[1]

जंग के माहिर ने कहा

अवतास में उतरने के बाद लोग कमांडर के पास जमा हुए। उनमें दुरैद बिन सिम्मा भी था। यह बहुत बूढ़ा हो चुका था और अब अपनी जंगी जानकारी और मश्विरे के सिवा कुछ करने के लायक़ न था, लेकिन वह बुनियादी तौर पर बड़ा बहादुर और माहिर जंगजू रह चुका था। उसने मालूम किया, तुम लोग किस घाटी में हो?

जवाब दिया गया, अवतास में।

उसने कहा, यह सवारों की बेहतरीन चरागाह है, न पथरीली है, न खाईदार है, न भुरभुरी ढलान, लेकिन क्या बात है कि मैं ऊंटों की बलबलाहट, गधों की ढींच,

1. फ़त्हुल बारी 8/27, 42

बच्चों का रोना और बकरियों की ममियाहट सुन रहा हूं ?

लोगों ने कहा, मालिक बिन औफ़ फ़ौज के साथ उनकी औरतों, बच्चों और माल-मवेशी भी हांक लाया है।

इस पर दुरैद ने मालिक को बुलाया और पूछा, तुमने ऐसा क्यों किया है ?

उसने कहा, मैंने सोचा कि हर आदमी के पीछे उसके अह्ल और माल को लगा दूं ताकि वह उनकी हिफ़ाज़त के जज़्बे से लड़े।

दुरैद ने कहा, ख़ुदा की क़सम ! भेड़ के चरवाहे हो। भला हार का मुंह देखने वालों को भी कोई चीज़ रोक सकती है ? देखो अगर लड़ाई में तुम ग़ालिब भी रहे, तो भी फ़ायदेमंद, तो सिर्फ़ आदमी ही अपनी तलवार और नेज़े समेत होगा और अगर हार गए तो फिर तुम्हें अपने घरवालों और माल के सिलसिले में रुसवा होना पड़ेगा फिर दुरैद ने कुछ क़बीलों और सरदारों के बारे में सवाल किया और उसके बाद कहा—

ऐ मालिक ! तुमने बनू हवाज़िन की औरतों और बच्चों को सवारों के हलक़ में लाकर कोई सही बात नहीं किया है। उन्हें उनके इलाक़े की सुरक्षित जगहों, और उनकी क़ौम की ऊपरी जगहों में भेज दो। इसके बाद घोड़ों की पीठ पर बैठकर बद-दीनों से टक्कर लो। अगर तुमने विजय पा ली तो पीछे वाले तुमसे आ मिलेंगे और तुम्हें हार का मुंह देखना पड़ा तो तुम्हारे बाल-बच्चे और माल-मवेशी बहरहाल सुरक्षित रहेंगे।

लेकिन जनरल कमांडर मालिक ने यह मश्विरा रद्द कर दिया और कहा, ख़ुदा की क़सम, मैं ऐसा नहीं कर सकता। तुम बूढ़े हो चुके हो और तुम्हारी अक़्ल भी बूढ़ी हो चुकी है। अल्लाह की क़सम ! या तो हवाज़िन मेरी बात मानें या मैं इस तलवार पर टेक लगा दूंगा और यह मेरी पीठ के आर-पार निकल जाएगी।

हक़ीक़त तो यह है कि मालिक को यह गवारा न हुआ कि इस लड़ाई में दुरैद का भी नाम हो या उसका मश्विरा शामिल हो।

हवाज़िन ने कहा, हमने तुम्हारी बात मानी।

इस पर दुरैद ने कहा, यह ऐसी लड़ाई है जिसमें मैं न शरीक हूं और न यह मुझसे फ़ौत हुई है। काश मैं इसमें जवान होता, भाग-दौड़ और कोशिशें कर सकता, टांग के लम्बे, बालों वाले और बीच वाली बकरी जैसे घोड़े का नेतृत्व करता।

दुश्मन के जासूस

इसके बाद मालिक के वे जासूस आए जो मुसलमानों के हालात का पता

लगाने पर नियुक्त किए गए थे। उनकी हालत यह थी कि उनका जोड़-जोड़ टूट-फूट गया था।

मालिक ने कहा, तुम्हारी तबाही हो, तुम्हें यह क्या हो गया है?

उन्होंने कहा, हमने कुछ चितकबरे घोड़ों पर सफ़ेद इंसान देखे और इतने में, अल्लाह की क़सम, हमारी यह हालत हो गई जिसे तुम देख रहे हो।

अल्लाह के रसूल सल्ल० के जासूस

इधर अल्लाह के रसूल सल्ल० को भी दुश्मन के रवाना होने की ख़बरें मिल चुकी थीं। चुनांचे आपने अबू हदरद अस्लमी रज़ि० को यह हुक्म देकर रवाना फ़रमाया कि लोगों के बीच घुसकर ठहरें और उनके हालात का ठीक-ठीक पता लगाकर वापस आएं और आपको सूचना दें। उन्होंने ऐसा ही किया।

अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्का से हुनैन की ओर

सनीचर के दिन 06 शव्वाल सन् 08 हि० को अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मक्का से कूच फ़रमाया। आज आपको मक्का में आए हुए 19वां दिन था। बारह हज़ार की फ़ौज आपके साथ थी। दस हज़ार वह जो मक्का-विजय के लिए आपके साथ आई थी और दो हज़ार मक्का से, जिनमें अधिकांश नव मुस्लिम थे। नबी सल्ल० ने सफ़वान बिन उमैया से सौ ज़िरहें मय दूसरे हथियार उधार लीं और अत्ताब बिन असीद को मक्का का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया।

दोपहर बाद एक सवार ने आकर बताया कि मैंने फ़्लां और फ़्लां पहाड़ पर चढ़कर देखा तो क्या देखता हूं कि बनू हवाज़िन चेंट पेंट समेत आए हैं। उनकी औरतें, मवेशी और बकरियां सब साथ हैं।

अल्लाह के रसूल ने मुस्कराकर फ़रमाया, ये सब इनशाअल्लाह, कल मुसलमानों का माले ग़नीमत होंगी।

रात आई तो हज़रत अनस बिन अबी मरसद ग़नवी रज़ि० ने स्वयं सेवा की शक्ल में संतरी की ज़िम्मेदारियां निभाई।[1]

हुनैन जाते हुए लोगों ने बेर का एक बड़ा सा हरा पेड़ देखा, जिसको ज़ाते अनवात कहा जाता था। अरब (के मुश्रिक) इस पर अपने हथियार लटकाते थे, इसके पास जानवर ज़िब्ह करते थे और वहां दरगाह और मेला लगाते थे। कुछ फ़ौजियों ने अल्लाह के रसूल सल्ल० से कहा, आप हमारे लिए भी ज़ाते अनवात

---

1. देखिए सुनने अबू दाऊद मय औनुल माबूद 2/317 बाब फ़ज़्लुल हर्स फ़ी सबीलिल्लाह

बनवा दीजिए, जैसे इनके लिए ज़ाते अनवात है।

आपने फ़रमाया, अल्लाहु अक्बर! उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मुहम्मद सल्ल० की जान है तुमने वैसी ही बात कही जैसी मूसा अलै० की क़ौम ने कही थी कि 'हमारे लिए भी एक माबूद बना दीजिए, जिस तरह इनके लिए माबूद हैं। ये तौर-तरीक़े हैं, तुम लोग भी यक़ीनन पहलों के तौर-तरीक़ों पर सवार होंगे।[1]

(बीच रास्ते में) कुछ लोगों ने फ़ौज की तायदाद ज़्यादा देखकर कहा था कि आज हम हरगिज़ नहीं हार सकते और यह बात अल्लाह के रसूल सल्ल० पर बोझ बनी थी।

इस्लामी फ़ौज पर तीरंदाज़ों का अचानक हमला

इस्लामी फ़ौज मंगलवार और बुधवार के बीच की रात 10 शव्वाल को हुनैन पहुंची, लेकिन मालिक बिन औफ़ यहां पहले ही पहुंचकर और अपनी फ़ौज रात के अंधेरे में इस घाटी के अन्दर उतारकर उसे रास्तों, गुज़रगाहों, घाटियों, छिपी जगहों और दर्रों में फैला और छिपा चुका था और उसे यह हुक्म दे चुका था कि मुसलमान ज्यों ही ज़ाहिर हों, उन्हें तीरों से छलनी कर देना, फिर उन पर एक आदमी की तरह टूट पड़ना।

इधर भोर में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़ौज की तर्तीब लगाई और झंडा बांध-बांधकर लोगों में बांटे, फिर सुबह के झुटपुटे में मुसलमानों ने आगे बढ़कर हुनैन की घाटी में क़दम रखा। वे दुश्मन के वजूद से बिल्कुल बे-ख़बर थे। उन्हें क़तई नहीं मालूम था कि इस घाटी के तंग दर्रों के अन्दर सक़ीफ़ और हवाज़िन के जियाले उनकी घात में बैठे हैं, इसलिए वे बेख़बरी की हालत में पूरे इत्मीनान के साथ उतर रहे थे कि अचानक उन पर तीरों की वर्षा हुई, फिर तुरन्त ही दुश्मन उन पर परे के परे एक व्यक्ति की तरह टूट पड़े।

(इस अचानक हमले से मुसलमान न संभल सके) और उनमें ऐसी भगदड़ मची कि कोई किसी की तरफ़ न ताक रहा था, बिल्कुल बुरी हार थी, यहां तक कि अबू सुफ़ियान बिन हर्ब ने, जो अभी नए-नए मुसलमान हुए थे, कहा, अब इनकी भगदड़ समुद्र से पहले न रुकेगी और जबला या कलंदा बिन जुनैद ने चीख़कर कहा, देखो आज जादू झूठ हो गया। यह इब्ने इस्हाक़ का बयान है।

---

1. तिर्मिज़ी फ़ितन, बाब लतरक-ब-न-न सुननुन मन का-न क़ब-ल कुम 2/41, मुस्नद अहमद 5/281

बरा बिन आज़िब रज़ि० का बयान, जो सहीह बुख़ारी में रिवायत किया गया है, इससे अलग है। उनका इर्शाद है कि हवाज़िन तीरंदाज़ थे। हमने हमला किया, तो भाग खड़े हुए। इसके बाद हम ग़नीमत पर टूट पड़े और तीरों से हमारा स्वागत किया गया।[1]

और हज़रत अनस का बयान जो सहीह मुस्लिम में रिवायत किया गया है वह ज़ाहिर में तो इससे भी अलग है, पर बड़ी हद तक इसकी ताईद करता है। हज़रत अनस रज़ि० का इर्शाद है कि हमें मक्का पर विजय मिली, फिर हमने हुनैन पर चढ़ाई की। मुश्रिक बहुत अच्छी सफ़ों में आए जो हमने कभी न देखी थीं, सवारों की सफ़, फिर प्यादों की सफ़, फिर उनके पीछे औरतें, फिर भेड़-बकरियां, फिर दूसरे चौपाए। हम लोग बड़ी तायदाद में थे। हमारे सवारों में दाहिने हिस्से में ख़ालिद बिन वलीद थे, पर हमारे सवार हमारी पीठ के पीछे पनाह लेने लगे और ज़रा सी देर में हमारे सवार भाग खड़े हुए। बद्दू भी जागे और वे लोग भी जिन्हें तुम जानते हो।[2]

बहरहाल जब भगदड़ मची तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने दाहिनी तरफ़ होकर पुकारा, लोगो, मेरी ओर आओ। मैं अब्दुल्लाह का बेटा मुहम्मद हूं। उस वक़्त उस जगह आपके साथ कुछ मुहाजिर और परिवार वालों के सिवा कोई न था। इब्ने इस्हाक़ के अनुसार उनकी तायदाद नौ या दस थी। नववी का इर्शाद है कि आपके साथ बारह आदमी क़दम जमाए रहे। इमाम अहमद और हाकिम (मुस्तदरक 2/117 ने इब्ने मसऊद से रिवायत की है कि मैं हुनैन के दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ था। लोग पीठ फेरकर भाग गए, मगर आपके साथ अस्सी मुहाजिर और अंसार जमे रहे। हम अपने क़दमों पर (पैदल) थे और हमने पीठ नहीं फेरी। तिर्मिज़ी ने ब सनद हसन, इब्ने उमर की हदीस रिवायत की है। उनका बयान है कि मैंने अपने लोगों को हुनैन के दिन देखा कि उन्होंने पीठ फेर ली है और अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ एक सौ आदमी भी नहीं। (फ़त्हुल बारी 8/29, 30, साथ ही देखिए मुस्नद अबी याला 3/388, 389)

इन सबसे ज़्यादा नाजुक क्षणों में अल्लाह के रसूल सल्ल० की अपूर्व वीरता सामने आई यानी इस ज़ोरदार भगदड़ के बावजूद आपका रुख़ कुफ़्फ़ार की ओर था, और आप पेशक़दमी के लिए अपने ख़च्चर को एड़ लगा रहे थे और यह फ़रमा रहे थे—

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब यौ-म हुनै-न इज़्ा आ-जबत-कुम
2. फ़त्हुल बारी 8/29

दुश्मन की ज़बरदस्त हार

मिट्टी फेंकने के बाद कुछ ही देर गुज़री थी कि दुश्मन को बुरी हार का सामना करना पड़ा। सक़ीफ़ के लगभग सत्तर आदमी मारे गए और उनके पास जो कुछ माल, हथियार, औरतें और बच्चे थे, मुसलमानों के हाथ आए।

यही वह तब्दीली है जिसकी ओर अल्लाह अपने इस कथन में इशारा फ़रमाया है—

'और (अल्लाह ने) हुनैन के दिन (तुम्हारी मदद की) जब तुम्हें तुम्हारे ज़्यादा होने ने घमंड में डाल दिया था, पस वह तुम्हारे कुछ न काम आई और धरती फैलाव के बजाए तुम पर तंग हो गई, फिर तुम लोग पीठ फेरकर भागे। फिर अल्लाह ने अपने रसूल और ईमान वालों पर अपना सुकून उतारा और ऐसी फ़ौज भेजी जिसे तुमने नहीं देखा और कुफ़्र करने वालों को सज़ा दी और यही कुफ़्र करने वालों का बदला है।' (9 : 25, 26)

पीछा किया गया

हारने के बाद दुश्मन के एक गिरोह ने तायफ़ का रुख़ किया, एक नख़ला की ओर भागा, और एक ने औतास का रास्ता लिया। दोनों फ़रीक़ों में थोड़ी-सी झड़प हुई। इसके बाद मुश्रिक भाग खड़े हुए, अलबत्ता इसी झड़प में एक टुकड़ी के कमांडर अबू आमिर अशअरी शहीद हो गये।

मुसलमान घुड़सवारों की एक दूसरी जमाअत ने नख़ला की ओर पसपा होने वाले मुश्रिकों का पीछा किया और दुरैद बिन सुम्मा को जा पकड़ा, जिसे रबीमा बिन रफ़ीअ ने क़त्ल कर दिया।

हार खाए हुए मुश्रिकों के तीसरे और सबसे बड़े गिरोह का पीछा करने के लिए जिसने तायफ़ की राह ली थी, ख़ुद अल्लाह के रसूल सल्ल० माले ग़नीमत जमा फ़रमाने के बाद रवाना हुए।

ग़नीमत

माले ग़नीमत यह था—क़ैदी छः हज़ार, ऊंट चौबीस हज़ार, बकरी चालीस हज़ार से ज़्यादा, चांदी चार हज़ार औक़िया (यानी एक लाख साठ हज़ार दिरहम जिसकी मात्रा छः हज़ार क्विंटल से कुछ ही किलो कम होती है) अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इन सबको जमा करने का हुक्म दिया, फिर उसे जिअिर्राना में रोककर हज़रत मस्ऊद बिन अम्र ग़िफ़ारी रज़ि० की निगरानी में दे दिया और

जब तक ग़ज़वा तायफ़ से फ़ारिग़ न हो गए, उसे बांटा नहीं।

क़ैदियों में शीमा बिन्त हारिस सादिया भी थीं, जो अल्लाह के रसूल सल्ल० की दूध शरीक बहन थीं, जब उन्हें रसूलुल्लाह सल्ल० के पास लाया गया और उन्होंने अपना परिचय कराया तो उन्हें रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक निशानी के ज़रिए पहचान लिया, फिर उनका मान-सम्मान किया। अपनी चादर बिछाकर बिठाया और उपकार करते हुए उन्हें उनकी क़ौम में वापस कर दिया।

तायफ़ की लड़ाई

यह लड़ाई वास्तव में हुनैन की लड़ाई का फैलाव है, चूंकि हवाज़िन व सक़ीफ़ के बहुत से हारे हुए लोग अपने जनरल कमांडर मालिक बिन औफ़ नसरी के साथ भाग कर तायफ़ ही आए थे और यहीं क़िलाबन्द हो गए थे, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हुनैन से फ़ारिग़ होकर और जाराना में माले ग़नीमत जमा फ़रमा कर इसी माह 2 शव्वाल 08 हि० में तायफ़ का इरादा फ़रमाया।

इस मक़्सद के लिए ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० की सरदारी में एक हज़ार फ़ौज की अग्रिम टुकड़ी रवाना की गई, फिर आपने ख़ुद तायफ़ का रुख़ फ़रमाया।

रास्ते में नख़ला, यमानिया, फिर क़र्ने मनाज़िल, फिर लेह से गुज़र हुआ। लेह में मालिक बिन औफ़ का एक क़िला था। आपने उसे गिरवा दिया। फिर सफ़र जारी रखते हुए तायफ़ पहुंचे और तायफ़ क़िले के क़रीब पड़ाव डालकर के उसका घेराव कर लिया।

घेराव कुछ लम्बा खिंच गया। चुनांचे सहीह मुस्लिम में हज़रत अनस रज़ि० की रिवायत है कि यह घेराव चालीस दिन तक जारी रहा। सीरत लिखने वालों में कुछ ने इसकी मुद्दत बीस दिन बताई है, कुछ ने दस दिन से ज़्यादा, कुछ ने अठारह दिन और कुछ ने पन्द्रह दिन।[1]

घेराव के दिनों में दोनों तरफ़ से तीरंदाज़ी और पत्थरबाज़ी की घटनाएं घटती रहीं, बल्कि पहले पहले जब मुसलमानों ने घेराव किया तो क़िले के अन्दर से उन पर इतनी तेज़ तीरंदाज़ी की गई कि मालूम होता था कि टिड्डी दल छाया हुआ है। इससे कई मुसलमान घायल हुए, बारह शहीद हुए और उन्हें अपना कैम्प उठाकर मौजूदा मस्जिदे तायफ़ के पास ले जाना पड़ा।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस स्थिति से निमटने के लिए, तायफ़ पर मनजनीक़ (तोप) गाड़ दिया और कई गोले फेंके, जिससे क़िले की दीवार में दराड़ पड़ गई और मुसलमानों की एक जमाअत दबाबा के अन्दर घुसकर आग लगाने के लिए दीवार तक पहुंच गई, लेकिन दुश्मन ने उन पर लोहे के जलते टुकड़े फेंके, जिससे मजबूर होकर मुसलमान दबाबा के नीचे से बाहर निकल आए, मगर बाहर निकले तो दुश्मन ने उन पर तीरों की वर्षा कर दी, जिससे कुछ मुसलमान

1. फ़त्हुल बारी 8/45

शहीद हो गए।

अल्लह के रसूल सल्ल० ने दुश्मन को पस्त करने के लिए एक और जंगी पालिसी के तौर पर हुक्म दिया कि अंगूर के पेड़ काटकर जला दिए जाएं। मुसलमानों ने ज़रा बढ़-चढ़कर कटाई कर दी। इस पर सक़ीफ़ ने अल्लाह और रिश्तों का वास्ता देकर कहा कि पेड़ों का काटना बन्द करें। आपने अल्लाह के वास्ते और रिश्तों की ख़ातिर हाथ रोक लिया।

घेराव के समय में अल्लाह के रसूल सल्ल० के ऐलान करने वाले ने ऐलान किया, जो दास क़िले से उतरकर हमारे पास आ जाए, वह आज़ाद है। इस ऐलान पर तेईस आदमी क़िले से आकर मुसलमनों में आ शामिल हुए।[1]

इन्हीं में हज़रत अबूबक्र भी थे। वह क़िले की दीवार पर चढ़कर एक चर्ख़ी या घरारी की मदद से (जिसके ज़रिए रेहट से पानी खींचा जाता है) लटककर नीचे आए थे (चूंकि घरारी को अरबी में बक्र कहते हैं) इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी उपाधि अबूबक्र रख दी।

इन सब गुलामों को अल्लाह के रसूल सल्ल० ने आज़ाद कर दिया और हर एक को एक-एक मुसलमान के हवाले कर दिया कि उसे सामान जुटाए। यह घटना क़िले वालों के लिए बड़ी जानलेवा थी।

जब घेराव लम्बा हो गया और क़िला क़ाबू में आता नज़र न आया और मुसलमानों पर तीरों की वर्षा और गर्म लोहों की चोट पड़ती रही और इधर क़िले वालों ने साल भर के खाने-पीने का सामान भी जमा कर लिया, तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने नौफ़ुल बिन मुआविया वैली से मश्विरा तलब किया।

उसने कहा, लोमड़ी अपने भट्ट में घुस गई है। आप अगर उस पर डटे रहे तो पकड़ लेंगे और अगर छोड़कर चले गए तो तो वह आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। यह सुनकर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने घेराव ख़त्म करने का फ़ैसला फ़रमा लिया और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के ज़रिए लोगों में ऐलान करवा दिया कि हम इनशाअल्लाह कल वापस होंगे।

लेकिन यह एलान सहाबा किराम को अच्छा न लगा, वे कहने लगे, हुंह ! तायफ़ जीते बग़ैर वापस होंगे।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि अच्छा तो कल सुबह लड़ाई पर चलना है। चुनांचे दूसरे दिन लोग लड़ाई पर गए, लेकिन चोट खाने के सिवा

1. सहीह बुख़ारी 2/260

कुछ हासिल न हुआ तो इसके बाद आपने फिर फ़रमाया कि हम इनशाअल्लाह कल वापस होंगे।

इस पर लोगों में ख़ुशी की लहर दौड़ गई और उन्होंने बिना कुछ कहे-सुने सफ़र का सामान बांधना शुरू कर दिया। यह स्थिति देखकर अल्लाह के रसूल सल्ल० मुस्कराते रहे।

इसके बाद जब लोगों ने डेरा-डंडा उठाकर कूच किया तो आपने फ़रमारया कि यों कहो,

'हम पलटने वाले, तौबा करने वाले, इबादतगुज़ार हैं और अपने रब का गुणगान करते हैं।'

कहा गया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप सक़ीफ़ पर बद-दुआ करें।

आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! सक़ीफ़ को हिदायत दे और उन्हें रास्ते पर ले आ।

जेइर्राना में ग़नीमत का माल बांटा गया

अल्लाह के रसूल सल्ल० तायफ़ से घेराव ख़त्म करके वापस आए तो जेइर्राना में कई दिन तक ग़नीमत का माल बांटते रहे बग़ैर ठहरे रहे। इस देर का मक़्सद यह था कि हवाज़िन का प्रतिनिधिमंडल तौबा करके आपकी सेवा में आ जाए, तो उसने जो कुछ खोया है, सब ले जाए।

लेकिन देर होने के बावजूद जब आपके पास कोई न आया तो आपने माल को बांटना शुरू कर दिया, ताकि क़बीलों के सरदार और मक्का के भद्र पुरुष जो उचक-उचककर ताक रहे थे, उनकी ज़ुबान ख़ामोश हो जाए। मुअल्लफ़तुल क़ुलूब[1] का भाग्य आगे-आगे रहा और उन्हें बड़े-बड़े हिस्से दिए गए।

अबू सुफ़ियान बिन हर्ब को चालीस औक़िया (कुछ कम छः किलो चांदी) और एक सौ ऊंट दिए गए। उसने कहा, मेरा बेटा यज़ीद ?

आपने उतना ही यज़ीद को भी दिया।

उसने कहा, और मेरा बेटा मुआविया ? आपने उतना ही मुआविया को भी। (यानी अकेले अबू सुफ़ियान को उसके बेटों समेत लगभग 18 किलो चांदी और तीन सौ ऊंट हासिल हो गए।)

---

1. यानी वे लोग जो नए-नए मुसलमान हुए हों और उनका दिल रखने के लिए उन्हें माली मदद दी जाए ताक वे इस्लाम पर मज़बूती से जम जाएं।

हकीम बिन हिज़ाम को एक सौ ऊंट दिए गए। उसने और सौ ऊंटों का सवाल किया, तो उसे फिर एक सौ ऊंट दिए गए। इसी तरह सफ़वान बिन उमैया को सौ ऊंट, फिर सौ ऊंट और फिर सौ ऊंट (यानी तीन सौ ऊंट दिए गए।)[1]

हारिस बिन कलदा को भी सौ ऊंट दिए गए और कुछ कुरैशी और ग़ैर क़ुरैशी सरदारों को सौ-सौ ऊंट दिए गए, कुछ दूसरों को पचास-पचास और चालीस-चालीस ऊंट दिए गए, यहां तक कि लोगों में मशहूर हो गया कि मुहम्मद सल्ल० इस तरह अनगिनत भेंट देते हैं कि उन्हें फ़क्र (निर्धनता) का डर ही नहीं। चुनांचे माल की तलब में बद्दू आप पर टूट पड़े और आपको एक पेड़ की ओर सिमटने पर मजबूर कर दिया।

संयोग से आपकी चादर पेड़ में फंसकर रह गई। आपने फ़रमाया, लोगो! मेरी चादर दे दो। उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर मेरे पास तहामा के पेड़ों की तायदाद के बराबर भी पशु हों तो उन्हें भी तुममें बांट दूंगा, फिर तुम न मुझे कंजूस पाओगे, न डरपोक, न झूठा।

इसके बाद आपने अपने ऊंट के बाज़ू में खड़े होकर उसकी कोहान से कुछ बाल लिए और चुटकी में रखकर ऊंचा करते हुए फ़रमाया, लोगो! अल्लाह की क़सम! मेरे लिए तुम्हारे फ़ै के माल में से कुछ भी नहीं, यहां तक कि आज भी नहीं, सिर्फ़ ख़ुम्स है और ख़ुम्स भी तुम पर ही पलटा दिया जाता है।

मुअल्ल-फ़-तुलकुलूब के देने के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० को हुक्म दिया कि ग़नीमत का माल और फ़ौज को इकट्ठा करके लोगों पर ग़नीमत के बंटवारे का हिसाब लगाएं। उन्होंने ऐसा किया तो एक एक फ़ौजी के हिस्से में चार-चार ऊंट और चालीस-चालीस बकरियां आईं। जो घुड़सवार था उसे बारह ऊंट और एक सौ बीस बकरियां मिलीं।

अंसार का दुख और बेचैनी

यह बांट एक हिक्मत भरी सियासत पर आधारित थी, लेकिन पहले पहल समझी न जा सकी, इसीलिए कुछ ज़ुबानों पर आपत्ति-शब्द आ गए।

इब्ने इस्हाक़ ने अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत की है कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने क़ुरैश और अरब क़बीलों को वे उपहार दिए और अंसार को न दिया तो अंसार ने जी ही जी में पेच व ताब खाया और उनमें बहुत कुछ कानाफूसी हुई, यहां तक कि एक कहने वाले ने कहा, ख़ुदा की क़सम! अल्लाह

1. क़ाज़ी अयाज़ 1/86

के रसूल सल्ल० अपनी क़ौम से जा मिले हैं।

इसके बाद हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० आपके पास हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने इस फ़ै के हासिल शुदा माल में जो कुछ किया है उस पर अंसार अपने जी ही जी में आप पर पेच व ताब खा रहे हैं, आपने इसे अपनी क़ौम में बांट दिया। अरब क़बीलों को बड़े-बड़े उपहार दिए लेकिन अंसार को कुछ न दिया। आपने फ़रमाया, ऐ साद ! इस बारे में तुम्हारा क्या विचार है ?

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं भी तो अपनी क़ौम ही का एक आदमी हूं।

आपने फ़रमाया, अच्छा तो अपनी क़ौम को उस छौलदारी में जमा करो। साद ने निकलकर अंसार को उस छोलदारी में जमा किया। कुछ मुहाजिर भी आ गए, तो उन्हें दाख़िल होने दिया, फिर कुछ दूसरे लोग भी आ गए, तो उन्हें वापस कर दिया।

जब सब लोग जमा हो गए तो हज़रत साद रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि अंसार क़बीला आपके लिए जमा हो गया है। अल्लाह के रसूल सल्ल० उनके पास तशरीफ़ लाए, अल्लाह का गुणगान किया, फिर फ़रमाया—

अंसार के लोगो ! तुम्हारी यह क्या कानाफूसी है जो मेरी जानकारी में आई है ? और यह कैसी नाराज़ी है जो जी ही जी में तुमने मुझ पर महसूस की है ? क्या ऐसा नहीं कि मैं तुम्हारे पास इस हालत में आया कि तुम गुमराह थे, अल्लाह ने तुम्हें हिदायत दी और मुहताज थे, अल्लाह ने तुम्हें ग़नी बना दिया ? और आपस में दुश्मन थे, अल्लाह ने तुम्हारे दिल जोड़ दिए ?

लोगों ने कहा, क्यों नहीं, अल्लाह और उसके रसूल की बड़ी मेहरबानी है।

इसके बाद आपने फ़रमाया, अंसार के लोगो ! मुझे जवाब क्यों नहीं देते ?

अंसार ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! भला हम आपको क्या जवाब दें ? अल्लाह और उसके रसूल की दया-कृपा है।

आपने फ़रमाया, देखो, ख़ुदा की क़सम ! अगर तुम चाहो तो कह सकते हो—और सच ही कहोगे और तुम्हारी बात सच ही मानी जाएगी—कि आप हमारे पास इस हालत में आए कि आपको झुठलाया गया था, हमने आपकी पुष्टि की, आपको बे-यार व मददगार छोड़ दिया गया था, हमने आपकी मदद की, आपको धुत्कार दिया गया था, हमने आपको ठिकाना दिया। आप मुहताज थे,

हमने आपके ग़म धोए।

ऐ अंसार के लोगो! तुम अपने जी में दुनिया की एक तुच्छ घास के लिए नाराज़ हो गए, जिसके ज़रिए मैंने लोगों का दिल जोड़ा था, ताकि वे मुसलमान हो जाएं और तुमको तुम्हारे इस्लाम के हवाले कर दिया था? ऐ अंसार! क्या तुम इससे राज़ी नहीं कि लोग ऊंट और बकरियां लेकर जाएं और तुम रसूलुल्लाह सल्ल० को लेकर अपने डेरों में पलटो? उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, अगर हिजरत न होती, तो मैं भी अंसार ही का एक आदमी होता। अगर सारे लोग एक राह चलें और अंसार दूसरी राह चलें, तो मैं भी अंसार की ही राह पर चलूंगा। ऐ अल्लाह! अंसार पर रहम फ़रमा, और अंसार के बेटों और बेटों के बेटों (पोतों) पर।

अल्लाह के रसूल सल्ल० का यह ख़िताब सुनकर लोग इतना रोए कि दाढ़ियां भीग गईं और कहने लगे, हम राज़ी हैं कि हमारे हिस्से और नसीब में अल्लाह के रसूल सल्ल० हों। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० वापस हो गए और लोग भी बिखर गए।[1]

हवाज़िन के प्रतिनिधिमंडल का आना

ग़नीमत बंट जाने के बाद हवाज़िन का प्रतिनिधिमंडल मुसलमान होकर आ गया। ये कुल चौदह आदमी थे। इनका सरदार और प्रवक्ता ज़ुहैर बिन सुरद था और उनमें अल्लाह के रसूल सल्ल० का दूध शरीक चचा अबू बरक़ान भी था। इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि उनमें उनके नौ प्रतिष्ठितजन थे। उन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया, बैअत की। इसके बाद आपसे बातें कीं और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! आपने जिन्हें क़ैद फ़रमाया है, उनमें मांएं और बहनें हैं और फूफियां और ख़ालाएं हैं और यही क़ौम के लिए रुसवाई की वजह होती हैं। (फ़त्हुल बारी 8/33) पस ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम पर दया करते हुए उपकार कीजिए। आप ऐसे आदमी हैं कि आपसे उम्मीद भी है और इन्तिज़ार भी है। आप उन औरतों पर उपकार कीजिए जिनका आप दूध पिया करते थे और उनके दूध के मोतियों से आपका मुंह भर जाया करता था। स्पष्ट रहे कि माओं वग़ैरह से मुराद रसूलुल्लाह सल्ल० की दूध शरीक मांएं, ख़ालाएं, फूफियां और बहनें हैं।

आपने फ़रमाया, मेरे साथ जो लोग हैं, उन्हें देख ही रहे हो और मुझे सच

---

1. इब्ने हिशाम 2/499, 500, ऐसी ही रिवायत सहीह बुख़ारी में भी है, 2/620, 621

बात ज़्यादा पसन्द है, इसलिए बताओ कि तुम्हें अपने बाल-बच्चे अधिक प्रिय हैं या माल?

उन्होंने कहा, हमारे नज़दीक ख़ानदानी बरतरी से बढ़कर कोई चीज़ नहीं।

आपने फ़रमाया, अच्छा तो जब मैं ज़ुहर की नमाज़ पढ़ लूं तो तुम लोग उठकर कहना कि हम अल्लाह के रसूल सल्ल० को ईमान वालों की ओर सिफ़ारिशी बनाते हैं और ईमान वालों को अल्लाह के रसूल की ओर सिफ़ारिशी बनाते हैं कि आप हमारे क़ैदी हमें वापस कर दें।

इसके बाद जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो उन लोगों ने यही कहा। जवाब में आपने फ़रमाया, जहां तक इस हिस्से का ताल्लुक़ है जो मेरा है और बनी अब्दुल मुत्तलिब का है, तो वह तुम्हारे लिए है और मैं अभी लोगों से पूछे लेता हूं।

इस पर अंसार और मुहाजिरीन ने उठकर कहा, जो कुछ हमारा है, वह सब भी अल्लह के रसूल सल्ल० के लिए है।

इसके बाद अक़रअ बिन हाबिस ने कहा, लेकिन जो कुछ मेरा और बनू तमीम का है, वह आपके लिए नहीं और उऐना बिन हिस्न ने कहा कि जो कुछ मेरा और बनू फ़ज़ारा का है, वह भी आपके लिए नहीं और अब्बास बिन मरवास ने कहा, जो कुछ मेरा और बनू सुलैम का है, वह भी आपके लिए नहीं।

इस पर बनू सुलैम ने कहा, जी नहीं, जो कुछ हमारा है, वह भी अल्लाह के रसूल सल्ल० के लिए है।

अब्बास बिन मरवास ने कहा, तुम लोगों ने मेरी तौहीन कर दी।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, देखो, ये लोग मुसलमान होकर आए हैं। (और इसी ग़रज़ से) मैंने इनके क़ैदियों के बांटने में विलम्ब किया था। और अब मैंने इन्हें अधिकार दिया तो इन्होंने बाल-बच्चों के बराबर किसी चीज़ को नहीं समझा। इसलिए जिसके पास कोई क़ैदी हो और वह ख़ुशी से वापस कर दे, तो यह बहुत अच्छी राह है और जो कोई अपने हक़ को रोकना ही चाहता हो, तो वह भी इनके क़ैदी तो इन्हें वापस ही कर दे, हां, आगे जो सबसे पहले फ़ै का माल मिलेगा, उससे हम उस व्यक्ति को एक के बदले छः देंगे।

लोगों ने कहा, हम अल्लाह के रसूल सल्ल० के लिए ख़ुशी से देने को तैयार हैं।

आपने फ़रमाया, हम जान न सके कि आपमें से कौन राज़ी है और कौन नहीं? इसलिए आप लोग वापस जाएं और आपके चौधरी लोग आपके मामले

को हमारे सामने पेश करें। इसके बाद सारे लोगों ने उनके बाल-बच्चे वापस कर दिए, सिर्फ़ उऐना बिन हिस्न रह गया, जिसके हिस्से में एक बुढ़िया आई थी, उसने वापस करने से इंकार कर दिया, लेकिन आख़िर में उसने भी वापस कर दिया और अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सारे क़ैदियों को एक-एक क़िब्ती चादर अता फ़रमाकर वापस कर दिया।[1]

उमरा और मदीने को वापसी

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ग़नीमत के माल के बांटने से फ़ारिग़ होकर जिइर्राना ही से उमरे का एहराम बांधा और उमरा अदा किया। इसके बाद अत्ताब बिन असीद को मक्के का ज़िम्मेदार बनाकर मदीना रवाना हो गए। मदीना वापसी 14 ज़ीक़ादा सन् 08 हि० को हुई।[2]

---

1. हवाज़िन के क़ैदियों की घटना के लिए देखिए, बुख़ारी मय फ़त्हुल बारी 5/201
2. तारीख़े इब्ने ख़ल्लदून 2/48, मक्का-विजय, हुनैन और तायफ़ की इन लड़ाइयों और इनके दौरान होने वाली घटनाओं के लिए देखिए ज़ादुल मआद, 2/106-201, इब्ने हिशाम 2/389-501 सहीह बुख़ारी, मग़ाज़ी, ग़ज़वतुल फ़त्ह व औतास वत्ताइफ़ वग़ैरह 2/612-622, फ़त्हुल बारी 8/3-58,

मक्का विजय के बाद

इस लम्बे और कामियाब सफ़र से वापसी के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० मदीना में कुछ ज़्यादा ही ठहरे। इस बीच आप प्रतिनिधिमंडलों का स्वागत करते रहे, सरकारी अधिकारी भेजते रहे, दीन की दावत देनेवालों को रवाना फ़रमाते रहे और जिन्हें अल्लाह के दीन के दाख़िले में और अरब के अन्दर होनेवाली घटनाओं के सामने घुटने टेकने से इन्कार था, उन्हें आधीन बनाते रहे। इन बातों का संक्षेप में विवरण दिया जा रहा है।

ज़कात वसूल करने वाले

अब तक की बातों से मालूम हो चुका है कि मक्का विजय के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० सन् 08 हि० के अन्त में तशरीफ़ लाए थे। सन् 09 हि० के मुहर्रम के चांद के निकलते ही आपने क़बीलों के पास सदक़ों की वसूली के लिए ज़िम्मेदारों को भेजा, जिनकी सूची यह है—

अधिकारियों के नाम	वह क़बीला जिससे ज़कात वूसल करनी थी
1. उऐना बिन हिस्न	बनू तमीम
2. यज़ीद बिन हुसैन	अस्लम और ग़िफ़ार
3. इबाद बिन बशीर अशहली	सुलैम और मुज़ैना
4. राफ़ेअ बिन मुकैस	जुहैना
5. अम्र बिन आस	बनू फ़ज़ारा
6. ज़ह्हाक बिन सुफ़ियान	बनू किलाब
7. बशीर बिन सुफ़ियान	बनू काब
8. इब्नुल्लुब्बीया अज्दी	बनू ज़िबयान
9. मुहाजिर बिन उमैया	शहर सनआ (इनकी मौजूदगी में इनके ख़िलाफ़ अस्वद अनसी ने सनआ में बग़ावत की थी।)
10. ज़ियाद बिन लबीद	इलाक़ा हज़र मौत
11. अदी बिन हातिम	त्वै और बनू असद
12. मालिक बिन नुवैरा	बनू हंज़ला
13. ज़बरक़ान बिन बद्र	बनू साद (की एक शाखा)

14. क़ैस बिन आसिम	बनू साद (की दूसरी शाखा)
15. अला बिन हज़रमी	इलाक़ा बहरैन
16. अली बिन अबी तालिब	इलाक़ा नजरान (ज़कात और जिज़या दोनों वसूल करने के लिए)

स्पष्ट रहे कि ये सारे ज़िम्मेदार मुहर्रम सन् 09 हि० ही में रवाना नहीं कर दिए गए थे, बल्कि कुछ-कुछ की रवानगी ख़ासी देर से उस वक़्त अमल में आई थी जब संबंधित क़बीलों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया था। अलबत्ता इस सोच-विचार के साथ इन ज़िम्मेदारों की रवानगी की शुरुआत सन् 09 हि० में हुई थी और इसी से सुलह हुदैबिया के बाद इस्लामी दावत की सफलता के फैलाव का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

बाक़ी रहा मक्का विजय के बाद का दौर तो इसमें लोग अल्लाह के दीन में गिरोह दर गिरोह दाख़िल हुए।

सराया

जिस तरह क़बीलों की ओर जकात वसूल करने के लिए ज़िम्मेदार भेजे गए, उसी तरह अरब प्रायद्वीप के आम इलाक़ों में अम्न व अमान के दौर-दौरे के बावजूद अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग फ़ौजी मुहिमें भी भेजनी पड़ीं। सूची यह है।

1. सरीया उऐना बिन हिस्न फ़ज़ारी (मुहर्रम 09 हि०)

उऐना को पचास सवारों की कमान देकर बनू तमीम के पास भेजा गया था। वजह यह थी कि बनू तमीम ने क़बीलों को भड़का कर जिज़ए के अदा करने से रोक दिया था। इस मुहिम में कोई मुहाजिर या अंसारी न था।

उऐना बिन हिस्न रात को चलते और दिन को छिपते हुए आगे बढ़े, यहां तक कि जंगल में बनू तमीम पर हल्ला बोल दिया। वे लोग पीठ फेरकर भागे और उनके ग्यारह आदमी, इक्कीस औरतें और तीस बच्चे गिरफ़्तार हुए, जिन्हें मदीना लाकर रमला बिन्त हारिस के मकान में ठहराया गया।

फिर उनके सिलसिले में बनू तमीम के दस सरदार आए और नबी सल्ल० के दरवाज़े पर जाकर यों आवाज़ लगाई, ऐ मुहम्मद ! हमारे पास आओ।

आप बाहर तशरीफ़ लाए तो ये लोग आपसे चिमट कर बातें करते लगे।

फिर आप उनके साथ ठहरे रहे, यहां तक कि ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई। इसके बाद मस्जिदे नबवी के सेहन में बैठ गए।

उन्होंने दंभ और अभिमान में चूर होकर मुक़ाबले की ख़्वाहिश की और अपने ख़तीब (वक्ता) अतारिद बिन हाजिब को पेश किया। उसने भाषण दिया।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस्लाम के वक्ता हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शमास को आदेश दिया और उन्होंने जवाब में भाषण दिया।

इसके बाद उन्होंने अपने कवि ज़बरक़ान बिन बद्र को आगे बढ़ाया और उसने कुछ गर्व भरे पद कहे। इसका जवाब इस्लामी शायर (कवि) हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि० ने दिया।

जब दोनों वक्ता और दोनों कवि कह-सुन चुके तो अक़रअ बिन हाबिस ने कहा, उनका वक्ता हमारे वक्ता से ज़्यादा ज़ोरदार और उनका कवि हमारे कवि से ज़्यादा बेहतर है। उनकी आवाज़ें हमारी आवाज़ों से ज़्यादा ऊंची हैं और उनकी बातें हमारी बातों से अधिक श्रेष्ठ हैं। इसके बाद उन लोगों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। अल्लाह ने रसूल सल्ल० ने उन्हें बेहतरीन तोहफ़े दिए और उनकी औरतें और बच्चे उन्हें वापस कर दिए।[1]

2. सरीया क़ुत्बा बिन आमिर (सफ़र सन् 09 हि०)

यह सरीया तरबा के क़रीब तबाला के इलाक़े में क़बीला ख़सअम की एक शाखा की ओर रवाना किया गया। क़त्बा बीस आदमियों के साथ रवाना हुए। दस ऊंट थे जिन पर ये लोग बारी-बारी सवार होते थे।

मुसलमानों ने शबख़ून मारा जिस पर ज़ोरदार लड़ाई भड़क उठी और दोनों फ़रीक़ों के ख़ासे व्यक्ति घायल हुए। क़त्बा कुछ दूसरे व्यक्तियों सहित मारे गए, फिर भी मुसलमान भेड़-बकरियों और बाल-बच्चों को मदीना हांक लाए।

---

1. ग़ज़वा विशेषज्ञा का बयान यही है कि यह घटना मुहर्रम सन् 09 हि० में घटित हुई, लेकिन यह बात खुले तौर पर देखने की है, क्योंकि घटना का जायज़ा लेने से मालूम होता है कि अक़रअ बिन हाबिस इससे पहले मुसलमान नहीं हुए थे, हालांकि खुद सीरत लिखने वालों ही का बयान है कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने बनू हवाज़िन के क़ैदियों को वापस करने के लिए कहा तो उसी अक़रअ बिन हाबिस ने कहा कि मैं और बनू तमीम वापस न करेंगे। इसका तक़ाज़ा यह है कि अक़रअ बिन हाबिस इस मुहर्रम सन् 09 हि० वाली घटना से पहले मुसलमान हो चुके थे।

3. सरीया ज़हहाक बिन सुफ़ियान किलाबी (रबीउल अव्वल सन् 09 हि०)

यह सरीया बनू किलाब को इस्लाम की दावत देने के लिए रवाना किया गया था, लेकिन उन्होंने इंकार करते हुए लड़ाई छेड़ दी। मुसलमानों ने इन्हें हराया और उनका एक आदमी मार दिया।

4. सरीया अलक़मा बिन मजरज़ मुदलजी (रबीउल आख़र सन् 09 हि०)

इन्हें तीन सौ आदमी की कमान देकर जद्दा के तट की ओर रवाना किया गया। वजह यह थी कि कुछ हब्शी जद्दा के तट के क़रीब जमा हो गए थे और वह मक्का वालों के ख़िलाफ़ डाकाज़नी करना चाहते थे। अलक़मा समुद्र में उतरकर एक द्वीप तक बढ़ा। हब्शियों को मुसलमानों के आने का ज्ञान हुआ तो वह भाग खड़े हुए।[1]

5. सरीया अली बिन अबी तालिब (रबीउल अव्वल सन् 09 हि०)

इन्हें क़बीला तै के एक बुत को, जिसका नाम क़ल्स (कलीसा) था, ढाने के लिए भेजा गया था। आपकी सरदारी में एक सौ ऊंटों और पचास घोड़ों समेत डेढ़ सौ आदमी थे। झंडियां काली और फरेरा सफ़ेद था। मुसलमानों ने फ़ज्र के वक़्त हातिमताई के मुहल्ले पर छापा मारकर क़ल्स को ढा लिया और क़ैदियों, चौपायों और भेड़-बकरियों से हाथ भर लिए। इन्हीं क़ैदियों में हातिमताई की सुपुत्री भी थीं। अलबत्ता हातिम के सुपुत्र अदी मुल्क शाम भाग गए। मुसलमानों ने क़ल्स के ख़ज़ाने में तीन तलवारें और तीन ज़िरहें (कवच) पाईं और रास्ते में ग़नीमत का माल बांट दिया। अलबत्ता चुना माल अल्लाह के रसूल सल्ल० के लिए अलग कर दिया और आले हातिम को नहीं बांटा।

मदीना पहुंचे तो हातिम की सुपुत्री ने अल्लाह के रसूल सल्ल० से दया का आवेदन करते हुए अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यहां जो आ सकता था, लापता है। बाप गुज़र चुके हैं और मैं बुढ़िया हूं। सेवा करने की ताक़त नहीं रखती। आप मुझ पर उपकार कीजिए, अल्लाह आप पर उपकार करेगा। आपने मालूम किया, तुम्हारे लिए कौन आ सकता था?

---

1. फ़त्हुल बारी 8/59

बोली, अदी बिन हातिम।

फ़रमाया, वही जो अल्लाह और रसूल से भागा है। फिर आप आगें बढ़ गए। दूसरे दिन उसने फिर यही बात दोहराई और आपने फिर वही फ़रमाया जो कल फ़रमाया था। तीसरे दिन उसने फिर वही बात कही, तो आपने उपकार करते हुए उसे आज़ाद कर दिया। उस वक़्त आपके बाज़ू में एक सहाबी थे, शायद हज़रत अली रज़ि०—उन्होंने कहा, आप सल्ल० से सवारी का भी सवाल करो। उसने सवारी का सवाल किया। आपने सवारी जुटाने का भी आदेश दे दिया।

हातिम की सुपुत्री लौटकर अपने भाई अदी के पास शाम देश गई। जब उनसे मुलाक़ात हुई तो उन्हें अल्लाह के रसूल सल्ल० के बारे में बतलाया कि आपने ऐसा कारनामा अंजाम दिया है कि तुम्हारे बाप भी वैसा नहीं कर सकते थे। उनके पास चाव या डर के साथ जाओ।

चुनांचे अदी किसी अमान या लेख के बिना आपकी सेवा में हाज़िर हो गए। आप उन्हें अपने घर ले गए और जब वह सामने बैठे तो आपने अल्लाह का गुणगान किया, फिर फ़रमाया, तुम किस चीज़ से भाग रहे हो? क्या ला इला-ह इल्लल्लाहु कहने से भाग रहे हो? अगर ऐसा है तो बताओ क्या तुम्हें अल्लाह के सिवा किसी और माबूद का ज्ञान है?

उन्होंने कहा, नहीं।

फिर आपने कुछ देर बातें कीं, इसके बाद फ़रमाया, अच्छा, तुम इससे भागते हो कि अल्लाहु अक्बर कहा जाए तो क्या तुम अल्लाह से बड़ी कोई चीज़ जानते हो?

उन्होंने कहा, नहीं।

आपने फ़रमाया, यहूदियों पर अल्लाह के ग़ज़ब की मार है और ईसाई गुमराह हैं।

उन्होंने कहा, तो मैं एक पहलू मुसलमान हूं। यह सुनकर अल्लाह के रसूल सल्ल० का चेहरा मारे ख़ुशी से चमक उठा और उसके बाद आपके हुक्म से उन्हें एक अंसारी के यहां ठहरा दिया गया और वह सुबह व शाम आपकी सेवा में हाज़िर होते रहे।[1]

इब्ने इस्हाक़ ने हज़रत अदी से यह भी रिवायत की है कि जब नबी सल्ल०

---

1. ज़ादुल मआद 2/205

ने उन्हें अपने सामने अपने घर में बिठाया, तो फ़रमाया, ओ. . . अदी बिन हातिम ! क्या तुम रकोसी न थे ?

अदी कहते हैं, मैंने कहा, क्यों नहीं।

आपने फ़रमाया, क्या तुम अपनी क़ौम में ग़नीमत के माल का चौथाई लेने पर अमल नहीं करते थे ?

मैंने कहा, क्यों नहीं।

आपने फ़रमाया, हालांकि यह तो तुम्हारे दीन में हलाल नहीं।

मैंने कहा, हां, ख़ुदा की क़सम ! और इसी से मैंने जान लिया कि आप अल्लाह के भेजे हुए रसूल हैं, क्योंकि आप वह बात जानते हैं जो जानी नहीं जाती।[1]

मुस्नद अहमद की रिवायत है कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अदी ! इस्लाम लाओ, सालिम (सुरक्षित) रहोगे।

मैंने कहा, मैं तो ख़ुद एक दीन का मानने वाला हूं।

आपने फ़रमाया, मैं तुम्हारा दीन तुमसे बेहतर तौर पर जानता हूं।

मैंने कहा, आप मेरा दीन मुझसे बेहतर तौर पर जानते हैं ?

आपने फ़रमाया, हां, क्या ऐसा नहीं कि तुम रकोसी हो और फिर भी अपनी क़ौम के ग़नीमत के माल का चौथाई खाते हो ?

मैंने कहा, क्यों नहीं।

आपने फ़रमाया, यह तुम्हारे दीन के हिसाब से हलाल नहीं। आपकी इस बात पर मुझे सर झुकाना पड़ा।[2]

सहीह बुख़ारी में हज़रत अदी की रिवायत है कि मैं नबी सल्ल० की ख़िदमत में बैठा था कि एक आदमी ने आकर उपवास की शिकायत की। फिर दूसरे आदमी ने आकर डकैती की शिकायत की। आपने फ़रमाया, अदी ! तुमने हियरा देखा है ? अगर तुम्हारी ज़िंदगी लम्बी हुई, तो तुम देख लोगे कि एक परदा नशीन औरत हियरा से चलकर आएगी, ख़ाना काबा का तवाफ़ करेगी और उसे अल्लाह के सिवा किसी का डर न होगा और अगर तुम्हारी ज़िंदगी लम्बी हुई तो तुम देखोगे कि आदमी चुल्लू भरकर सोना या चांदी निकालेगा और ऐसे आदमी को खोजेगा, जो उसे क़ुबूल कर ले, तो कोई उसे क़ुबूल करने वाला न मिलेगा।

---

1. इब्ने हिशाम 2/581
2. मुस्नद अहमद 4/257, 378

उसी रिवायत के आख़िर में हज़रत अदी का बयान है कि मैंने देखा कि परदानशीन औरत हियरा से चलकर ख़ाना काबा का तवाफ़ करती है और उसे अल्लाह के सिवा किसी का डर नहीं और मैं ख़ुद उन लोगों में था जिन्होंने किसरा बिन हुरमुज़ के ख़ज़ाने जीते और अगर तुम लोगों की ज़िंदगी लम्बी हुई तो तुम लोग वह चीज़ भी देख लोगे जो नबी अबुल क़ासिम सल्ल० ने फ़रमाई थी कि आदमी चुल्लू भरकर सोना या चांदी निकालेगा। (आख़िर तक)[1]

---

1. सहीह बुख़ारी 1/507, हदीस न० 1413, 1417, 3595, 6023, 6539, 6540, 6573, 7443, 7512,

ग़ज़्वा तबूक

मक्का विजय की लड़ाई सत्य-असत्य की एक निर्णायक लड़ाई थी। इस लड़ाई के बाद अरबों के नज़दीक अल्लाह के रसूल सल्ल० की रिसालत में कोई सन्देह बाक़ी नहीं रह गया था, इसीलिए परिस्थिति यकायक बदल गई और लोग अल्लाह के दीन में गिरोह दर गिरोह दाख़िल हो गए। इसका कुछ अन्दाज़ा उस विवेचन से भी हो सकेगा जिन्हें हम प्रतिनिधिमंडलों के अध्याय में देंगे और कुछ अन्दाज़ा उस तायदाद से भी लगाया जा सकता है जो हज्जतुल विदाअ में ज़ाहिर हुई थी।

बहरहाल अब भीतरी परेशानियों का लगभग अन्त हो चुका था और मुसलमान ख़ुदा की शरीअत आम करने और इस्लाम की दावत फैलाने के लिए यकसू हो गए थे।

ग़ज़्वे (लड़ाई) की वजह

मगर अब एक ऐसी ताक़त का रुख़ मदीना की ओर हो चुका था जो बिना किसी औचित्य के मुसलमानों से छेड़-छाड़ कर रही थी। यह ताक़त रूमियों की थी जो उस वक़्त धरती पर सबसे बड़ी सैनिक शक्ति की हैसियत रखती थी।

पिछले पन्नों में यह बताया जा चुका है कि इस छेड़-छाड़ की शुरूआत शुरहबील बिन अम्र ग़स्सानी के हाथों अल्लाह के रसूल सल्ल० के दूत हज़रत हारिस बिन उमैर अज़्दी रज़ि० के क़त्ल से हुई, जबकि वह अल्लाह के रसूल सल्ल० का सन्देश लेकर बुसरा के शासक के पास तशरीफ़ ले गए थे।

यह भी बताया जा चुका है कि नबी सल्ल० ने इसके बाद हज़रत ज़ैद बिन हारिसा की सरदारी में एक फ़ौज भेजी थी जिसने रूमियों से मूता की धरती पर भयानक टक्कर ली, मगर यह फ़ौज उन दंभी ज़ालिमों से बदला लेने में सफल न हुई, अलबत्ता इसने दूर व नज़दीक के अरब वासियों को बहुत अच्छी तरह प्रभावित किया।

क़ैसर रूम इन प्रभावों को और इनके नतीजे में अरब क़बीलों के अन्दर रूम से मुक्ति और मुसलमानों के प्रति समर्थन और सहानुभूति की भावनाओं को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था। उसके लिए यक़ीनन यह एक 'ख़तरा' था जिसका हर अगला क़दम उसकी सीमा की ओर बढ़ रहा था और अरब से मिली

हुई सीमा शाम के लिए चुनौती बनती जा रही थी। इसलिए क़ैसर ने सोचा कि मुसलमानों की ताक़त को एक महान और अपराजित शक्ति बनने से पहले-पहले कुचल देना ज़रूरी है, ताकि रूम से मिले हुए अरब इलाक़ों में 'फ़ित्ने' और 'हंगामे' सर न उठा सकें।

इन परिस्थितियों को देखते हुए अभी मूता की लड़ाई को एक साल भी न हुआ था कि क़ैसर ने रूमी निवासियों और अपने आधीन अरबों यानी आले ग़स्सान आदि पर आधारित सेना को जुटाना शुरू कर दिया और एक ख़ूनी और निर्णायक लड़ाई की तैयारी में लग गया।

रूम व ग़स्सान की तैयारियों की आम ख़बरें

इधर मदीना में लगातार ये ख़बरें पहुंच रही थीं कि रूमी मुसलमानों के ख़िलाफ़ एक निर्णायक लड़ाई की तैयारी कर रहे हैं। इसकी वजह से मुसलमानों को हर वक़्त खटका लगा रहता था और उनके कान किसी भी आवाज़ को सुनकर खड़े हो जाते थे, वे समझते थे कि रूमियों का रेला आ गया।

इसका अन्दाज़ा इस घटना से होता है कि इसी सन् 09 हि० में नबी सल्ल० ने अपनी बीवियों से नाराज़ होकर एक महीने के लिए ईला[1] कर लिया था और उन्हें छोड़कर ऊपर के एक हिस्से में अलग हो गए थे।

सहाबा किराम रज़ि० को शुरू में वास्तविकता मालूम न हो सकी थी। उन्होंने समझा कि नबी सल्ल० ने तलाक़ दे दी और इसकी वजह से सहाबा किराम में ज़बरदस्त रंज व ग़म फैल गया था। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० इस घटना का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि मेरा एक अंसारी साथी था। जब मैं (नबी सल्ल० की सेवा में) मौजूद न रहता, तो वह मेरे पास ख़बर लाता और जब वह मौजूद न होता तो मैं उसके पास ख़बर ले जाता। हम दोनों ही मदीना में रहते थे, एक दूसरे के पड़ोसी थे और बारी-बारी नबी सल्ल० की सेवा में हाज़िरी दिया करते थे। उस ज़माने में हमें शाह ग़स्सान का ख़तरा लगा हुआ था। हमें बताया गया था कि वह हम पर धावा बोलना चाहता है और उसकी वजह से

---

1. औरत के पास न जाने की क़सम खा लेना। अगर यह क़सम चार माह या इससे कम मुद्दत के लिए है तो उस पर शरई एतबार से कोई हुक्म लागू न होगा और अगर यह ईला चार महीने से ज़्यादा मुद्दत के लिए है तो फिर चार माह पूरे होते ही शरई अदालत हस्तक्षेप करेगी कि शौहर या तो बीवी को बीवी की तरह रखे या उसे तलाक़ दे दे। कुछ सहाबा के अनुसार सिर्फ़ चार माह की मुद्दत गुज़र जाने से तलाक़ पड़ जाएगी।

हमारे सीने भरे हुए थे। एक दिन अचानक मेरा अंसारी साथी दरवाज़ा पीटने लगा और कहने लगा, खोलो-खोलो।

मैंने कहा, क्या ग़स्सानी आ गए?

उसने कहा, नहीं, बल्कि इससे भी बड़ी बात हो गई। अल्लाह के रसूल सल्ल० अपनी बीवियों से अलग हो गए हैं।[1]

एक दूसरी रिवायत में यों है कि हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, हममें चर्चा थी कि आले ग़स्सान हम पर चढ़ाई करने के लिए घोड़ों की नाल लगवा रहे हैं। एक दिन मेरा साथी अपनी बारी पर गया और इशा के वक़्त वापस आकर मेरा दरवाज़ा बड़े ज़ोर से पीटा और कहा, क्या वह सो गए हैं? मैं घबराकर बाहर आया।

उसने कहा, बड़ी घटना हो गई।

मैंने कहा, क्या हुआ? क्या ग़स्सानी आ गए?

उसने कहा, नहीं, बल्कि इससे भी बड़ी और लंबी घटना, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी है।[2]

इससे उस स्थिति की संगीनी का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है जो उस वक़्त रूमियों की ओर से मुसलमानों की नज़रों में थी। इसमें और वृद्धि मुनाफ़िक़ों की उन जोड़-तोड़ वाली नीतियों ने की जो उन्होंने रूमियों की तैयारी की ख़बरें मदीना पहुंचने के बाद शुरू कीं। चुनांचे इसके बावजूद कि ये मुनाफ़िक़ देख चुके थे कि अल्लाह के रसूल सल्ल० हर क्षेत्र में सफल हैं और धरती की किसी ताक़त से नहीं डरते, बल्कि जो रुकावटें आपकी राह में रोक बनती हैं, वे चूर-चूर हो जाती हैं, इसके बावजूद इन मुनाफ़िक़ों ने यह उम्मीद बांध ली कि मुसलमानों के ख़िलाफ़ उन्होंने अपने सीनों में जो बहुत पुरानी आरज़ूएं छिपा रखी है और नतीजे का वे मुद्दत से इंतिज़ार कर रहे हैं, अब उसे सामने आने का समय क़रीब आ गया है।

अपने इसी सपने की बुनियाद पर उन्होंने एक मस्जिद की शक्ल में, जो 'मस्जिदे ज़ुरार' के नाम से मशहूर हुई, फ़ित्नों और षड्यंत्रों का एक केन्द्र स्थापित किया जिसकी बुनियाद ईमान वालों के बीच फूट डालने वालों के लिए घात की जगह जुटाने के नापाक मक़्सद पर रखी और अल्लाह के रसूल सल्ल० से गुज़ारिश की कि आप उसमें नमाज़ पढ़ा दें। इससे मुनाफ़िक़ों का मक़्सद यह था

---

1. सहीह बुख़ारी 2/730
2. वही, सहीह बुख़ारी 1/334

कि वे ईमान वालों को धोखे में रखें और उन्हें पता न लगने दें कि इस मस्जिद में उनके ख़िलाफ़ षड्यंत्र के जाल बुने जा रहे हैं और मुसलमान इस मस्जिद में आने-जाने वालों पर नज़र न रखें।

इस तरह यह मस्जिद मुनाफ़िक़ों और उनके बाहरी मित्रों के लिए एक शांत घोंसले और मठ का काम दे। लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस 'मस्जिद' में नमाज़ के अदा करने को लड़ाई से वापसी तक के लिए स्थगित किया, क्योंकि आप तैयारी में लगे हुए थे। इस तरह मुनाफ़िक़ अपने मक़सद में कामियाब न हो सके और अल्लाह ने उनका परदा वापसी से पहले ही फाड़ दिया। चुनांचे आपने ग़ज़वे से वापस आकर इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के बजाए उसे ढा दिया।

रूम व ग़स्सान की तैयारियों की ख़ास ख़बरें

इन परिस्थितियों और ख़बरों का मुसलमान सामना कर ही रहे थे कि उन्हें अचानक मुल्क शाम से तेल लेकर आनेवाले नब्तियों[1] से मालूम हुआ कि हिरक़्ल ने चालीस हज़ार सिपाहियों की एक भारी फ़ौज तैयार की है और रूम के महान कमांडर को उसकी कमान सौंपी है। अपने झंडे तले ईसाई क़बीलों लख़्म व जज़ाम वग़ैरह को भी जमा कर लिया है और उनका अग्रिम दस्ता बलक़ा पहुंच चुका है। इस तरह एक बड़ा ख़तरा साक्षात मुसलमानों के सामने आ गया।

स्थिति जटिल होती गई

फिर जिस बात से स्थिति की जटिलता और बढ़ रहा थी, वह यह थी कि ज़माना तेज़ गर्मी का था, लोग तंगी और अकाल की अग्नि-परीक्षा से गुज़र रहे थे। सवारियां कम थीं, फल पक चुके थे, इसलिए लोग फल और साए में रहना चाहते थे, वे तुरन्त चलना नहीं चाहते थे, इन सब पर आगे की बात यह कि सफ़र की दूरी और रास्ते की पेचीदगी और कठिनाई अलग थी।

अल्लाह के रसूल सल्ल० की ओर से एक क़तई क़दम उठाने का फ़ैसला

लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० परिस्थितियों और तब्दीलियों का अध्ययन कहीं ज़्यादा बारीकी से कर रहे थे। आप समझ रहे थे कि अगर आपने इन

1. नाबित बिन इस्माईल अलैहिस्सलाम की नस्ल, जिन्हें एक वक़्त ऐसा भी मिला कि उत्तरी हिजाज़ में उन्हें बड़ी तरक़्क़ी हासिल थी, लेकिन पतन के बाद धीरे-धीरे ये लोग मामूली किसानों और व्यापारियों की श्रेणी में आ गए।

निर्णायक क्षणों में रूमियों से लड़ाई लड़ने में काहिली और सुस्ती से काम लिया, रूमियों को मुसलमानों के असर वाले इलाक़ों में घुसने दिया और वे मदीना तक बढ़ और चढ़ आए, तो इस्लामी दावत पर उसके बड़े बुरे प्रभाव पड़ेंगे। मुसलमानों की फ़ौज की साख उखड़ जाएगी और वह अज्ञानता जो हुनैन की लड़ाई में करारी चोट लगने के बाद अन्तिम सांस ले रही है, दोबारा ज़िंदा हो जाएगी और मुनाफ़िक़ जो मुसलमानों की परेशानियों का इंतिज़ार कर रहे हैं और अबू आमिर फ़ासिक़ के ज़रिए शाह रूम से सम्पर्क बनाए हुए हैं, पीछे से ठीक उस वक़्त मुसलमानों की फ़ौज में ख़ंजर घोंप देंगे, जब आगे से रूमियों का रेला उन पर ख़ौफ़नाक हमला कर रहा होगा, इस तरह वे बहुत सारी कोशिशें बेकार चली जाएंगी जो आपने और आपके साथियों ने इस्लाम के प्रचार-प्रसार में की थीं और वे बहुत सारी सफलताएं विफलताओं में बदल जाएंगी जो लम्बी और ख़ूनी लड़ाइयों और लगतार फ़ौजी दौड़-धूप के बाद हासिल की गई थीं।

अल्लाह के रसूल सल्ल० इन नतीजों को अच्छी तरह समझ रहे थे, इसलिए तंगी और परेशानी के बावजूद आपने तै किया कि रूमियों को दारुल इस्लाम (मदीना) की ओर बढ़ने की मोहलत दिए बिना ख़ुद उनके इलाक़े और उनकी सीमाओं में घुसकर उनके ख़िलाफ़ एक निर्णायक लड़ाई लड़ी जाए।

रूमियों से लड़ाई की तैयारी का एलान

यह मामला तै कर लेने के बाद आपने सहाबा किराम रज़ि० में एलान फ़रमा दिया कि लड़ाई की तैयारी करें। अरब के क़बीलों और मक्का वालों को भी सन्देश दिया कि लड़ाई के लिए निकल पड़ें। आपका तरीक़ा था कि जब किसी ग़ज़्वे का इरादा फ़रमाते तो किसी और ही दिशा का दिखावा करते, लेकिन स्थिति की जटिलता और साधनों की कमी की वजह से अब की बार आपने साफ़-साफ़ एलान फ़रमा दिया कि रूमियों से लड़ने का इरादा है, ताकि लोग पूरी तैयार कर लें।

आपने इस मौक़े पर लोगों को जिहाद पर भी उभारा और लड़ाई पर उभारने के लिए सूरः तौबा का एक टुकड़ा उतरा। साथ ही आपने सदक़ा व ख़ैरात की बड़ाई बयान की और अल्लाह की राह में अपना सबसे अच्छा ख़र्च करने पर उभारा।

ग़ज़्वे की तैयारी के लिए मुसलमानों की दौड़-धूप

सहाबा किराम ने ज्यों ही अल्लाह के रसूल सल्ल० का इर्शाद सुना कि आप

रूमियों से लड़ाई की दावत दे रहे हैं, झट उसे पूरा करने के लिए दौड़ पड़े और पूरी तेज़ रफ्तारी से लड़ाई की तैयारी शुरू कर दी। क़बीले और बिरादरियां हर ओर से मदीना में आना शुरू हो गईं और सिवाए उन लोगों के जिनके दिलों में निफ़ाक़ की बीमारी थी, किसी मुसलमान ने इस ग़ज़वे में पीछे रहना गवारा न किया। अलबत्ता तीन मुसलमान इसके अपवाद हैं कि सही ईमान वाले होने के बावजूद उन्होंने ग़ज़वे में शिर्कत न की। हालत यह थी कि ज़रूरतमंद और फ़ाक़ामस्त लोग आते और अल्लाह के रसूल सल्ल० से दरख़्वास्त करते कि उनके लिए सवारी जुटा दें, ताकि वे भी रूमियों से होनेवाली इस लड़ाई में शिर्कत कर सकें और जब आप उसके सामने उज़्र रखते—

'मैं तुम्हें सवार करने के लिए कुछ नहीं पाता तो वे इस हालत में वापस होते कि उनकी आंखों से आंसू जारी होते कि वे ख़र्च करने के लिए कुछ नहीं कर पा रहे हैं।' (9 : 79)

इसी तरह मुसलमानों ने सदक़ा व ख़ैरात करने में भी एक दूसरे से आगे निकल जाने की कोशिश की।

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० ने मुल्क शाम के लिए एक क़ाफ़िला तैयार किया था, जिसमें पालान और कजावे समेत दो सौ ऊंट थे और दो औक़िया (लगभग साढ़े उनतीस किलो) चांदी थी। आपने यह सब सदक़ा कर दिया। इसके बाद फिर एक सौ ऊंट पालान और कजावे समेत सदक़ा किया।

इसके बाद एक हज़ार दीनार (लगभग साढ़े पांच किलो सोने के सिक्के) आए और उन्हें नबी सल्ल० की गोद में बिखेर दिया। अल्लाह के रसूल सल्ल० उन्हें उलटते जाते थे और फ़रमाते जाते थे। आज के दिन उस्मान जो भी करें, उन्हें नुक़्सान न होगा।[1]

इसके बाद हज़रत उस्मान रज़ि० ने फिर सदक़ा किया, यहां तक कि उनके सदक़े की मात्रा नक़दी के अलावा नौ सौ ऊंट और एक सौ घोड़े तक जा पहुंची।

इधर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० दो सौ औक़िया (लगभग साढ़े 29 किलो) चांदी ले आए। हज़रत अबूबक्र ने अपना पूरा माल सेवा में हाज़िर कर दिया और बाल-बच्चों के लिए अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के सिवा कुछ न छोड़ा। उनके सदक़े की मात्रा चार हज़ार दिरहम थी और सबसे पहले यही अपना सदक़ा लेकर तशरीफ़ लाए थे। हज़रत उमर रज़ि० ने अपना आधा

1. जामेअ तिर्मिज़ी, मनाक़िब उस्मन बिन अफ़्फ़ान, 2/111

माल ख़ैरात किया। हज़रत अब्बास रज़ि० बहुत सा माल लाए। हज़रत तलहा रज़ि०, साद बिन उबादा रज़ि० और मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० भी काफ़ी माल लाएं। हज़रत आसिम बिन अदी रज़ि० नव्वे वसक़ (यानी 13½ हज़ार किलो, 13½ टन) खजूर लेकर आए।

बाक़ी सहाबा रज़ि० एक एक करके थोड़े-ज़्यादा सदक़ात ले आए, यहां तक कि किसी किसी ने एक मुद्द या दो मुद्द सदक़ा किया कि वे इससे ज़्यादा की ताक़त नहीं रखते थे। औरतों ने भी हार, बाजूबन्द, पाज़ेब, बाली और अंगूठी वग़ैरह जो कुछ हो सका, आपकी ख़िदमत में भेजा, किसी ने भी अपना हाथ न रोका और कंजूसी से काम न लिया। सिर्फ़ मुनाफ़िक़ थे जो सदक़ों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेनेवालों पर ताने कसते थे। उनका मज़ाक़ उड़ाते थे (कि यह एक खजूर से क़ैसर का राज्य जीतने चले हैं।) (9 : 79)

इस्लामी फ़ौज तबूक के रास्ते में

इस धूमधाम, जोश व ख़रोश और भाग-दौड़ के नतीजे में फ़ौज तैयार हो गई तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत मुहममद बिन मस्लमा रज़ि० से और कहा जाता है कि सबाअ बिन अरफ़ाता को मदीना का गवर्नर बनाया और हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० को अपने बाल-बच्चों की देखभाल के लिए मदीना ही में रहने का हुक्म दिया, लेकिन मुनाफ़िक़ों ने उन पर ताने कसे, इसलिए वह मदीना से निकल पड़े। और अल्लाह के रसूल सल्ल० से जा मिले।

लेकिन आपने उन्हें फिर मदीना वापस कर दिया और फ़रमाया, क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं कि मुझसे तुम्हें वही निस्बत हो जो हज़रत मूसा से हज़रत हारून को थी। अलबत्ता मेरे बाद कोई नबी न होगा।

बहरहाल अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस इन्तिज़ाम के बाद उत्तर की ओर कूच फ़रमाया। (नसई की रिवायत के मुताबिक़ यह जुमेरात का दिन था) मंज़िल तबूक थी। लेकिन फ़ौज बड़ी थी। इससे पहले मुसलमानों की इतनी बड़ी फ़ौज कभी न जुटी थी, इसलिए मुसलमान हर चंद माल ख़र्च करने के बावजूद फ़ौज को पूरी तरह तैयार न कर सके थे, बल्कि सवारी और तोशे की बड़ी कमी थी, चुनांचे अठारह-अठारह आदमियों पर एक-एक ऊंट था, जिस पर ये लोग बारी-बारी सवार होते थे। इसी तरह खाने के लिए कभी-कभी पेड़ों की पत्तियां इस्तेमाल करनी पड़ती थीं, जिससे होंठों में सूजन आ गई थी, मजबूरन ऊंटों को, कम होने के बावजूद, ज़िब्ह करना पड़ा, ताकि उसके मेदे और आंतों के अन्दर जमा शुदा पानी और तरी पी जा सके। इसीलिए इसका नाम 'तंगी की फ़ौज' पड़ गया।

तबूक के रास्ते में फ़ौज का गुज़र हिज्र यानी समूद के एरिया से हुआ। समूद वह क़ौम थी, जिसने वादिल क़ुरा के अन्दर चट्टानें तराश-तराशकर मकान बनाए थे। सहाबा किराम रज़ि० ने वहां के कुंएं से पानी ले लिया था, लेकिन जब चलने लगे तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, तुम यहां का पानी न पीना और इससे नमाज़ के लिए वुज़ू न करना और जो आटा तुम लोगों ने गूंध रखा है, उसे जानवरों को खिला दो, ख़ुद न खाओ। आपने यह भी हुक्म दिया कि लोग उस कुंएं से पानी लें, जिससे सालेह अलै० की ऊंटनी पानी पिया करती थी।

बुख़ारी और मुस्लिम में इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि जब नबी सल्ल० हिज्र (समूद के इलाक़े) से गुज़रे तो फ़रमाया, इन ज़ालिमों के रहने की जगहों में दाख़िल न होना कि कहीं तुम पर भी वही मुसीबत न आ पड़े जो उन पर आई थी, हां, मगर रोते हुए। फिर आपने अपना सर ढका और तेज़ी से चलकर घाटी पार कर गए।[1]

रास्ते में फ़ौज को पानी की सख़्त ज़रूरत पड़ी, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्ल० से शिकवा किया। आपने अल्लाह से दुआ की। अल्लाह ने बादल भेज दिया। वर्षा हुई, लोगों ने सैर होकर पानी पिया और ज़रूरत का पानी लाद भी लिया।

फिर जब तबूक के क़रीब पहुंचे, तो आपने फ़रमाया, कल तुम लोग तबूक के चश्मे पर पहुंच जाओगे, लेकिन चाश्त से पहले नहीं। इसलिए जो व्यक्ति वहां पहुंचे उसके पानी को हाथ न लगाए, यहां तक कि मैं आ जाऊं।

हज़रत मुआज़ रज़ि० का बयान है कि हम लोग पहुंचे तो वहां दो आदमी पहले ही पहुंच चुके थे। चश्मे से थोड़ा-थोड़ा पानी आ रहा था।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मालूम किया कि क्या तुम दोनों ने उसके पानी को हाथ लगाया है?

उन्होंने कहा, हां।

आपने इन दोनों से जो कुछ अल्लाह ने चाहा, फ़रमाया, फिर चश्मे से चुल्लू के ज़रिए थोड़ा-थोड़ा पानी निकाला, यहां तक कि कुछ जमा हो गया। फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उसमें अपना चेहरा और हाथ धुला और उसे चश्मे में उंडेल दिया। इसके बाद चश्मे से ख़ूब पानी आया। सहाबा किराम ने जी भरकर पीया।

---

1. सहीह बुख़ारी, नुज़ूलुन्नबी सल्ल० अल-हिज्र 2/637

फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ मुआज़ ! अगर तुम्हारी ज़िंदगी लम्बी हुई तो तुम इस जगह को बाग़ों से लहलहाता देखोगे।[1]

रास्त ही में, या तबूक पहुंचकर, रिवायतों में मतभेद है, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, आज तुम पर तेज़ आंधी चलेगी, इसलिए कोई न उठे और जिसके पास ऊंट हो, वह उसकी रस्सी को मज़बूती से बांध दे। चुनांचे तेज़ आंधी चली। एक आदमी खड़ा हो गया तो आंधी ने उसे उड़ा कर त्वै की दो पहाड़ियों के पास फेंक दिया।[2]

रास्ते में अल्लाह के रसूल सल्ल० का तरीक़ा था कि आप ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें इकट्ठा और मग़िरब और इशा की नमाज़ें इकट्ठा पढ़ते थे। पहले भी जमा करते थे और बाद में भी। (पहले जमा करने का मतलब यह है कि ज़ुहर और अस्र दोनों ज़ुहर के वक़्त में और मग़िरब और इशा, दोनों मग़िरब के वक़्त में पढ़ी जाएं। और बाद में जमा करने का मतलब यह है कि ज़ुहर और अस्र दोनों अस्र के वक़्त में और मग़िरब और इशा दोनों इशा के वक़्त में पढ़ी जाएं।)

इस्लामी फ़ौज तबूक में

इस्लाम फ़ौज उतरकर तबूक में ठहरी। वह रूमियों से दो-दो हाथ करने को तैयार थी, फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़ौजियों को सम्बोधित करके बड़ा असरदार भाषण दिया, नपे-तुले और सुगढ़ शब्दों में अपनी बात कही, दुनिया और आख़िरत की भलाई पर उभारा, अल्लाह के अज़ाब से डराया और उसके इनामों की ख़ुशख़बरी दी। इस तरह फ़ौज का हौसला बुलन्द हो गया।

उनमें तोशे, ज़रूरतें और सामान की कमी की वजह से जो कमी और ख़राबी थी, वह इस तरह दूर हो गई। दूसरी ओर रूम और उसके मित्रों का यह हाल हुआ कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के आने की ख़बर सुनकर उनके भीतर भय की लहर दौड़ गई, उन्हें आगे बढ़ने और टक्कर लेने की हिम्मत न हुई और वे देश के भीतर अलग-अलग शहरों में बिखर गए। उनके इस तरीक़े का असर अरब प्रायद्वीप के भीतर और बाहर मुसलमानों की फ़ौज की साख पर बहुत अच्छा पड़ा और मुसलमानों ने ऐसे-ऐसे अहम सियासी फ़ायदे हासिल किए कि लड़ाई की शक्ल में उसका हासिल करना आसान न होता। विवरण इस तरह है—

---

1. मुस्लिम, रावी—मुआज़ बिन जबल 2/246
2. वही,

ऐला के हाकिम यहना बिन रूबा ने आपकी सेवा में हाज़िर होकर जिज़या का अदा करना मंज़ूर किया और समझौता कर लिया। जरबा और अज़रूह के निवासियों ने भी नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर जिज़या देना मंज़ूर किया। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनके लिए एक काग़ज़ लिख दिया जो उनके पास सुरक्षित था। मक़्ना वालों ने अपने फलों की चौथाई पैदावार देने की शर्त पर सुलह की। आपने ऐला के शासक को भी एक काग़ज़ लिखकर दिया, जो इस तरह था—

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, यह अम्न का परवाना है अल्लाह की ओर से और नबी मुहम्मद रसूलुल्लाह की ओर से यहना बिन रूबा और ऐलान के निवासियों के लिए, खुश्की और समुद्र में उनकी कश्तियों और क़ाफ़िलों के लिए अल्लाह का ज़िम्मा है और मुहम्मद नबी का ज़िम्मा है और यही ज़िम्मा उन शामी और समुद्री निवासियों के लिए है, जो यहना के साथ हो रहे, अगर उनका कोई आदमी कोई गड़बड़ करेगा, तो उसका माल उसकी जान के आगे रोक न बन सकेगा और जो आदमी उसका माल ले लेगा, उसके लिए वह हलाल होगा। उन्हें किसी चश्मे पर उतरने और ख़ुश्की या समुद्र के किसी रास्ते पर चलने से मना नहीं किया जा सकता।'

इसके अलावा अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को चार सौ बीस सवारों की टुकड़ी देकर दूमतुल जुन्दल के हाकिम उकैदिर के पास भेजा और फ़रमाया, तुम उसे नील गाय का शिकार करते हुए पाओगे।

हज़रत ख़ालिद रज़ि० वहां तशरीफ़ ले गए, जब इतनी दूरी पर रह गए कि क़िला साफ़ नज़र आ रहा था तो अचानक एक नील गाय निकली और क़िले के दरवाज़े पर सींग रगड़ने लगी। उकैदिर उसके शिकार को निकला। चांदनी रात थी। हज़रत ख़ालिद और उनके सवारों ने उसे जा लिया और गिरफ़्तार करके अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में ला हाज़िर किया। आपने उसकी जान बख़्शी की और दो हज़ार ऊंट, आठ सौ ग़ुलाम, चार सौ ज़िरहें और चार सौ नेज़ों की शर्त पर मामला किया, उसने जिज़या भी देने का इक़रार किया। चुनांचे उसने आपसे यहना समेत दूमा, तबूक, ऐला और तीमा की शर्तों पर यह मामला तै किया।

इन परिस्थितियों को देखकर वे क़बीले, जो अब तक रूमियों के क़ब्ज़े में थे, समझ गए कि अब अपने उन पुराने सरपरस्तों पर भरोसा करने का वक़्त ख़त्म हो चुका है, इसलिए मुसलमानों के समर्थक बन गए। इस तरह इस्लामी हुकूमत की

सीमाएं फैलकर सीधे-सीधे रूमी सीमा से जा मिलीं और रूम के समर्थकों का बड़ी हद तक अन्त हो गया।

मदीना को वापसी

इस्लामी फ़ौज तबूक से सफल होकर लौटी। कोई टक्कर न हुई। अल्लाह लड़ाई के मामले में ईमान वालों के लिए काफ़ी हुआ। अलबत्ता रास्ते में एक जगह एक घाटी के पास बारह मुनाफ़िक़ों ने नबी सल्ल० को क़त्ल करने की कोशिश की। उस वक़्त आप उस घाटी से गुज़र रहे थे और आपके साथ सिर्फ़ हज़रत अम्मार थे, जो ऊंटनी की नकेल थामे हुए थे और हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान थे जो ऊंटनी हांक रहे थे। बाक़ी सहाबा किराम रज़ि० दूर घाटी की ढलान से गुज़र रहे थे। इसलिए मुनाफ़िक़ों ने इस मौक़े को अपने नापाक मक़सद के लिए ग़नीमत समझा और आपकी ओर क़दम बढ़ाया।

इधर आप और आपके दोनों साथी रास्ता तै कर रहे थे कि पीछे से इन मुनाफ़िक़ों के क़दमों की चापें सुनाई दीं। ये सभी चेहरों पर ढाठा बांधे हुए थे और अब आप पर लगभग चढ़ ही आए थे कि आपने हज़रत हुज़ैफ़ा को उनकी ओर भेजा। उन्होंने उनकी सवारियों के चेहरों पर अपने एक ढाल से चोट लगानी शुरू की, जिससे अल्लाह ने उन्हें आतंकित कर दिया और वे तेज़ी से भागकर लोगों से जा मिले। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनके नाम बताए और उनके इरादे की ख़बर दी। इसीलिए हज़रत हुज़ैफ़ा को अल्लाह के रसूल सल्ल० का 'राज़दार' कहा जाता है। इस घटना के ताल्लुक़ से अल्लाह का यह इर्शाद आया कि 'उन्होंने उस काम का इरादा किया, जिसे वे पा न सके।'

सफ़र ख़त्म होते वक़्त जब दूर से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मदीना के चिह्न दिखाई पड़े, तो आपने फ़रमाया, यह रहा ताबा और यह रहा उहुद। यह वह पहाड़ है जो हमसे मुहब्बत करता है और जिससे हम मुहब्बत करते हैं।

इधर मदीने में आपके आने क्री ख़बर पहुंची, तो औरतें, बच्चे, बच्चियां बाहर निकल पड़ीं और ज़ोरदार अभिवादन करते हुए, फ़ौज का स्वागत किया और यह गीत पढ़ा[1]—

'हम पर सनीयतुल विदा से चौदहवीं का चांद उदय हुआ, जब तक पुकारने वाला अल्लाह को पुकारे, हम पर शुक्र वाजिब है।'

---

1. यह इब्ने क़य्यिम फ़रमाते हैं और इस पर वार्ता हो चुकी है।

अल्लाह के रसूल सल्ल० तबूक से रजब के महीने में मदीना वापस पहुंचे।[1] इस सफ़र में पूरे पचास दिन लगे, बीस दिन तबूक में और तीस दिन आने-जाने में। यह आपकी मुबारक ज़िंदगी का आख़िरी ग़ज़वा था, जिसमें आप ख़ुद शरीक रहे।

पीछे रह जाने वाले

यह ग़ज़वा अपनी विशेष स्थिति की दृष्टि से अल्लाह की ओर से एक कठिन परीक्षा भी थी, जिससे ईमान वालों और ग़ैर-ईमान वालों में अन्तर मालूम हो गया और इस क़िस्म के मौक़े पर अल्लाह का नियम भी यही है—

'अल्लाह ईमान वालो को इसी हालत पर छोड़ नहीं सकता, जिस पर तुम लोग हो, यहां तक कि नापाक को पाक से अलग कर दे।' (3 : 179)

चुनांचे इस ग़ज़वे में सारे के सारे सच्चे ईमान वालों ने शिर्कत की और इससे ग़ैर हाज़िरी निफ़ाक़ (कपटाचार) की निशानी मानी गई। चुनांचे स्थिति यह थी कि अगर कोई पीछे रह गया और उसका उल्लेख अल्लाह के रसूल सल्ल० से किया गया तो आप फ़रमाते कि इसे छोड़ो। अगर इसमें भलाई है तो अल्लाह उसे जल्द ही तुम्हारे पास पहुंचा देगा और अगर ऐसा नहीं है, तो फिर अल्लाह ने तुम्हें उससे राहत दे दी है। ग़रज़ इस ग़ज़वे से या तो वे लोग पीछे रहे, जो विवश थे या वे लोग जो मुनाफ़िक़ थे, जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० से ईमान का झूठा दावा किया था और अब झूठा उज़्र पेश करके ग़ज़वे में शरीक न होने की इजाज़त ले ली थी और पीछे बैठ रहे थे या सिरे से इजाज़त लिए बग़ैर बैठे रह गए थे। हां, तीन आदमी ऐसे थे जो सच्चे और पक्के मोमिन थे

---

1. यही सही है। पिछले एडीशनों में इब्ने इस्हाक़ पर भरोसा करते हुए जो लिखा गया था कि इस लड़ाई से आपकी वापसी रमज़ान के महीने में हुई, वह सही नहीं, क्योंकि इसका अर्थ यह होगा कि आप मदीना से तबूक के लिए रजब महीने की दूसरी जुमेरात को रवाना हुए थे और यह जुमेरात अक्तूबर की 25 तारीख़ को पड़ती है औ ये दिन अच्छे मौसम वाले बल्कि ठंडक से ज़्यादा क़रीब होते हैं, सुबह व शाम हलकी ठंडक महसूस होती है और खजूर की तोड़ाई पर भी ख़ासा वक़्त गुज़र चुका होता है, हालांकि तमाम रिवायतें इस पर सहमत हैं कि आप तबूक के लिए सख़्त गर्मी के ज़माने में उस वक़्त निकले थे, जबकि फल, पेड़ों पर पक कर तैयार खड़े थे, इसलिए सहीह यही है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रजब के महीने में मदीना वापस तशरीफ़ ला चुके हैं और तबूक के लिए रवानगी इससे पचास दिन पहले यानी माह जुमादल ऊला में हुई थी।

और किसी औचित्य के बिना पीछे रह गए थे। उन्हें अल्लाह ने आज़माइश में डाला और फिर उनकी तौबा क़ुबूल की।

इसका विवरण यह है कि वापसी पर अल्लाह के रसूल सल्ल० मदीना में दाख़िल हुए तो चलन के मुताबिक़ सबसे पहले मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ ले गए। वहां दो रक्अत नमाज़ पढ़ी, फिर लोगों के लिए बैठ गए।

इधर मुनाफ़िक़ों ने जिनकी तायदाद अस्सी से कुछ ज़्यादा थी[1], आ-आकर अपनी विवशताएं रखनी शुरू कीं और क़समें खाने लगे। आपने उनका ज़ाहिर क़ुबूल करते हुए बैअत कर ली और मग़्फ़िरत की दुआ की और उनका बातिन अल्लाह के हवाले कर दिया।

बाक़ी रहे तीनों सच्चे ईमान वाले, यानी हज़रत काब बिन मालिक रज़ि०, मुरारा बिन रुबैअ रज़ि० और हिलाल बिन उमैया रज़ि०, तो उन्होंने सच्चाई अख़्तियार करते हुए इक़रार किया कि हमने किसी मजबूरी के बग़ैर ग़ज़वे में शिर्कत नहीं की थी।

इस पर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सहाबा किराम रज़ि० को हुक्म दिया वि इन तीनों से बातचीत न करें। चुनांचे उनके ख़िलाफ़ ज़बरदस्त बाईकाट शुरू हो गया, लोग बदल गए, ज़मीन भयानक बन गई और फैलाव के बावजूद तंग हो गई और ख़ुद उनकी अपनी जान पर बन आई। सख़्ती यहां तक बढ़ी कि चालीस दिन बीतने के बाद हुक्म दिया गया कि अपनी औरतों से भी अलग रहें। जब बाईकाट पर पचास दिन पूरे हो गए, तो अल्लाह ने उनकी तौबा क़ुबूल किए जाने की ख़ुशख़बरी सुनाई। कहा गया—

'और अल्लाह ने उन तीन व्यक्तियों की भी तौबा क़ुबूल की, जिनका मामला पीछे कर दिया गया था, यहां तक कि जब ज़मीन अपने फैलाव के बावजूद उन पर तंग हो गई और उनकी जान भी उन पर तंग हो गई और उन्होंने यक़ीन कर लिया कि अल्लाह से (भागकर) कोई पनाहगांह नहीं है, पर उसी की ओर, फिर अल्लाह उन पर रुजू हुआ ताकि वे तौबा करें, यक़ीनन अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला, दया करने वाला है।' (9 : 118)

इस फ़ैसले के आने पर आमतौर पर मुसलमान और ये तीनों सहाबा किराम

---

1. वाक़दी ने लिखा है कि यह तायदाद अंसार मुनाफ़िक़ों की थी। इनके अलावा बनी ग़िफ़ार वग़ैरह अरबों में से बहाना बनाने वालों की तायदाद भी 85 थी, फिर अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके अनुपालकों की तायदाद इनके अलावा थी और इनकी भी अच्छी बड़ी तायदाद थी। (देखिए फ़त्हुल बारी 8/119)

ख़ास तौर पर बेइंतिहा ख़ुश हुए। लोगों ने दौड़-दौड़कर मुबारकबाद दी, ख़ुशी से चेहरे खिल उठे और इनाम और सदक़े दिए। वास्तव में यह उनकी ज़िंदगी का सबसे बड़ा शुभ दिन था।

इसी तरह जो लोग विवशता की वजह से ग़ज़वा में शरीक न हो सके, उनके बारे में अल्लाह ने फ़रमाया—

'कमज़ोरों पर और रोगियों पर और जो लोग ख़र्च करने के लिए कुछ न पाएं, उन पर कोई हरज नहीं, जबकि वे अल्लाह और उसके रसूल का भला चाहने वाले हों।' (9 : 91, 92)

इनके बारे में नबी सल्ल० ने भी मदीना के क़रीब पहुंचकर फ़रमाया था, मदीना में कुछ लोग ऐसे हैं कि तुमने जिस जगह भी सफ़र किया और जो घाटी भी तै की, वे तुम्हारे साथ रहे, उन्हें विवशता ने रोक रखा था। लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वे मदीना में रहते हुए भी (हमारे साथ थे) ?

आपने फ़रमाया, (हां) मदीना में रहते हुए भी।

इस ग़ज़वे का प्रभाव

यह ग़ज़वा अरब प्रायद्वीप पर मुसलमानों का असर फैलाने और उसे ताक़त पहुंचाने में बड़ा असरदार साबित हुआ। लोगों पर यह बात अच्छी तरह स्पष्ट हो गई कि अब अरब प्रायद्वीप में इस्लाम की ताक़त के सिवा और कोई ताक़त ज़िंदा नहीं रह सकती, इसलिए जाहिलों और मुनाफ़िक़ों की वे बची-खुची आरज़ूएं और आशाएं भी ख़त्म हो गईं जो मुसलमानों के ख़िलाफ़ उन पर आफ़त आने के इन्तिज़ार में उनके दिल में छिपी हुई थी, क्योंकि उनकी सारी आशाओं और आरज़ूओं का केन्द्र रूमी ताक़त था और इस ग़ज़वे में उसका भी भ्रम खुल गया, इसलिए इन लोगों के हौसले टूट गए और उन्होंने वास्तविकता के सामने हथियार डाल दिए कि अब इससे भागने और छुटकारा पाने का कोई रास्ता ही नहीं रह गया था।

और ऐसी स्थिति होने के कारण ही अब इसकी भी ज़रूरत नहीं रह गई थी कि मुसलमान मुनाफ़िक़ों के साथ नम्रता का व्यवहार करें। इसलिए अल्लाह ने उनके ख़िलाफ़ कड़ाई अपनाने का आदेश दिया, यहां उनके सदक़े क़ुबूल करने, उनकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ने, उनके लिए मग़्फ़िरत की दुआ करने और उनकी क़ब्रों पर खड़े होने से रोक दिया गया, और उन्होंने मस्जिद के नाम पर षड्यंत्रों का जाल बिछाने का जो घोंसला तैयार किया था, उसे ढा देने का हुक्म दिया गया

और उनके बारे में ऐसी-ऐसी आयतें उतरीं कि वे बिल्कुल नंगे हो गए, उन्हें पहचानने में कोई शक न रहा, मानो मदीना वालों के लिए इन आयतों ने उन मुनाफ़िक़ों पर उंगलियां रख दीं।

इस ग़ज़वे के प्रभावों का अन्दाज़ा इससे भी किया जा सकता है कि मक्का-विजय के बाद (बल्कि इससे पहले भी) अरब के प्रतिनिधिमंडल यद्यपि अल्लाह के रसूल सल्ल० की सेवा में आना शुरू हो गए थे, लेकिन उनकी भरमार इस ग़ज़वे के बाद ही हुई।[1]

इस ग़ज़वे से मुताल्लिक़ क़ुरआन की आयतें

इस ग़ज़वे से मुताल्लिक़ सूरः तौबा की बहुत-सी आयतें उतरीं, कुछ रवाना होने से पहले, कुछ रवाना होने के बाद, कुछ रवाना होने के बाद सफ़र के दौरान, और कुछ मदीना वापस आने के बाद। इन आयतों में ग़ज़वे के हालात का उल्लेख किया गया है। मुनाफ़िक़ का परदा खोला गया है, मुख़्लिस मुजाहिदों की बड़ाई बयान की गई है और सच्चे ईमान वाले, जो ग़ज़वे में गए थे और जो नहीं गए थे, उनकी तौबा के क़ुबूल होने का ज़िक्र है वग़ैरह-वग़ैरह।

इस सन् की कुछ महत्वपूर्ण घटनाएं

इस सन् (09 हि०) में ऐतिहासिक महत्व की कई घटनएं हुईं—

1. तबूक से अल्लाह के रसूल सल्ल० की वापसी के बाद उवैमर अजलानी और उनकी बीवी के बीच लिआन हुआ।

2. ग़ामदिया औरत को जिसने आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर बदकारी का इक़रार किया था, रजम (पत्थर से मार-मारकर हलाक) किया गया। इस औरत ने बच्चे की पैदाइश के बाद जब दूध छुड़ा लिया, तब उसे रजम किया गया था।

3. असहमा नजाशी शाह हब्शा ने वफ़ात पाई और अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनकी ग़ाइबाना नमाज़ पढ़ी।

4. नबी सल्ल० की सुपुत्री उम्मे कुलसूम की वफ़ात हुई। उनकी वफ़ात पर आपको बहुत दुख हुआ और आपने हज़रत उस्मान रज़ि० से फ़रमाया कि अगर मेरे पास तीसरी लड़की होती तो उसकी शादी भी तुमसे कर देता।

---

1. इस ग़ज़वे का विवरण नीचे के स्रोतों से लिया गया है, इब्ने हिशाम 2/515-537, ज़ादुल मआद 3/2-13, सहीह बुख़ारी 2/633-637, 1/252-414 वग़ैरह। सहीह मुस्लिम मय शरह नववी 2/246, फ़त्हुल बारी 8/110-126,

5. तबूक से अल्लाह के रसूल सल्ल० की वापसी के बाद मुनाफ़िक़ों का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई ने वफ़ात पाई। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उसके लिए मग़्फ़िरत की दुआ की और हज़रत उमर रज़ि० के रोकने के बावजूद उसकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ी। बाद में क़ुरआन उतरा और उसमें हज़रत उमर रज़ि० का समर्थन करते हुए मुनाफ़िक़ों पर जनाज़े की नमाज़ पढ़ने से मना कर दिया गया।

हज (सन् 09 हि०)

हज़रत अबूबक्र रज़ि० के नेतृत्व में

इसी साल ज़ीक़ादा या ज़िलहिज्जा (सन् 09 हि०) में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज के मनासिक क़ायम करने के उद्देश्य से अबूबक्र रज़ि० को अमीरे हज बनाकर रवाना फ़रमाया।

उसके बाद सूरः तौबः का शुरू का हिस्सा उतरा, जिसमें मुश्रिकों से किए गए अह्द व पैमान को बराबरी की बुनियाद पर ख़त्म करने का हुक्म दिया गया था। इस हुक्म के आने के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० को रवाना फ़रमाया, ताकि वह आपकी ओर से इसका एलान कर दें। ऐसा इसलिए करना पड़ा कि ख़ून और माल के अह्द व पैमान के सिलसिले में अरब का यही चलन था (कि आदमी या तो ख़ुद एलान करे या अपने परिवार के किसी व्यक्ति से एलान कराए, ख़ानदान से बाहर के किसी आदमी का किया हुआ एलान माना नहीं जाता था।)

हज़रत अबूबक्र रज़ि० से हज़रत अली रज़ि० की मुलाक़ात अर्ज या ज़जनान घाटी में हुई। हज़रत अबूबक्र ने मालूम किया कि अमीर (सरदार) हो या मामूर (अनुपालक)?

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, नहीं, बल्कि मामूर हूं।

फिर दोनों आगे बढ़े। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने लोगों को हज कराया। जब (दसवीं तारीख़) यानी क़ुर्बानी का दिन आया, तो हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० ने जमरा के पास खड़े होकर लोगों में वह एलान किया, जिसका हुक्म अल्लाह के रसूल सल्ल० ने दिया था। यानी तमाम अह्द वालों का अह्द ख़त्म कर दिया और उन्हें चार महीने की मोहलत दी।

इसी तरह जिनके साथ अह्द व पैमान न था, उन्हें भी चार महीने की मोहलत दी। अलबत्ता जिन मुश्रिकों ने मुसलमानों से अह्द निभाने में कोई कोताही न की थी और न मुसलमानों के ख़िलाफ़ किसी की मदद की थी, उनका अह्द उनकी तैशुदा मुद्दत तक बाक़ी रहा।

और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने सहाबा किराम की एक जमाअत भेजकर यह

आम एलान कराया कि आगे से कोई मुश्रिक हज नहीं कर सकता और न कोई नंगा आदमी बैतुल्लाह का तवाफ़ कर सकता है।

यह एलान मानो अरब प्रायद्वीप से बुतपरस्ती के अन्त का एलान था यानी इस साल के बाद बुतपरस्ती के लिए आने-जाने की गुंजाइश नहीं।[1]

---

1. इस हज के विवरण के लिए देखिए, सहीह बुख़ारी 1/220, 451, 2/626, 671, ज़ादुल मआद 3/25, 36, इब्ने हिशाम 2/543, 546 और तफ़्सीर की किताबें शुरू की सूरः तौबा

ग़ज़वों पर एक नज़र

नबी सल्ल० के ग़ज़वों, सराया और फ़ौजी मुहिमों पर एक नज़र डालने के बाद कोई भी व्यक्ति जो लड़ाई के माहौल, पृष्ठभूमि, और नतीजों का ज्ञान रखता हो, यह स्वीकार किए बिना नहीं रह सकता कि नबी सल्ल० दुनिया के सबसे बड़े और कमाल वाले फ़ौजी कमांडर थे। आपकी सूझ-बूझ सबसे ज़्यादा दुरुस्त और आपकी समझ सबसे ज़्यादा गहरी थी।

आप जिस तरह नुबूवत व रिसालत के गुणों की दृष्टि से रसूलों के सरदार और नबियों में बड़े थे, उसी तरह फ़ौजी नेतृत्व के गुणों में भी आप अद्वितीय और अपूर्व थे। चुनांचे आपने जो भी लड़ाई लड़ी, उसके लिए ऐसी परिस्थितियों को चुना, जो सूझ-बूझ, विवेक और वीरता के ठीक अनुसार थीं।

किसी लड़ाई में विवेक, फ़ौज की तर्तीब और भावुक केन्द्रों पर उसकी तैनाती, लड़ाई के सबसे ज़्यादा उचित जगह के चुनाव और जंगी प्लानिंग वग़ैरह में आपसे कभी कोई चूक नहीं हुई और इसीलिए इस बुनियाद पर आपको कोई परेशानी नहीं उठानी पड़ी, बल्कि तमाम जंगी मामलों और मसलों के सिलसिले में आपने अपने अमली क़दमों से साबित कर दिया कि दुनिया, अपने बड़े-बड़े कमांडरों के ताल्लुक़ से जिस तरह के नेतृत्व का ज्ञान रखती है, आप इससे बहुत कुछ भिन्न एक निराली ही क़िस्म की कमांडराना क्षमता के मालिक थे, जिसके साथ हार का कोई सवाल ही न था।

इस मौक़े पर यह अर्ज़ कर देना भी ज़रूरी है कि उहुद और हुनैन में जो कुछ पेश आया, उसकी वजह अल्लाह के रसूल सल्ल० की स्ट्रेटजी की कोई ख़राबी न थी, बल्कि उसके पीछे हुनैन में फ़ौज के कुछ व्यक्तियों की कुछ कमज़ोरियां थीं और उहुद में आपकी बड़ी महत्वपूर्ण रणनीति और अनिवार्य हिदायतों को बड़े ही निर्णायक क्षणों में नज़रंदाज़ कर दिया गया था।

फिर इन दोनों लड़ाइयों में जब मुसलमानें के परेशान होने की नौबत आई तो आपने जिस बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन किया, वह भी अपूर्व था। आप दुश्मन के मुक़ाबले में डटे रहे और अपनी अनुपम रणनीति से उसे या तो उसके मक़्सद में नाकाम बना दिया, जैसा कि उहुद में हुआ, या लड़ाई का पांसा इस तरह पलट दिया कि मुसलमानों की हार जीत में बदल गई, जैसा कि हुनैन में हुआ। हालांकि उहुद जैसी ख़तरनाक स्थिति और हुनैन जैसी बेलगाम भगदड़ कमांडरों की निर्णय-शक्ति छीन लेती है और उनकी मांसपेशियों पर इतना बुरा असर डालती

है कि उन्हें अपने बचाव के अलावा और कोई चिन्ता नहीं रहती।

यह बात तो उन लड़ाइयों के ख़ालिस फ़ौजी और जंगी पहलू से थी। बाक़ी रहे दूसरे पहलू, तो वे भी बड़े महत्वपूर्ण हैं।

आपने इन ग़ज़्वों के ज़रिए अम्न व अमान क़ायम किया, फ़ित्ने की आग बुझाई, इस्लाम और बुतपरस्ती के संघर्ष में शत्रु का दबदबा और उसकी शान तोड़कर रख दिया और उन्हें इस्लामी दावत व तब्लीग़ की राह आज़ाद छोड़ने और समझौता करने पर मजबूर किया। इस तरह आपने इन लड़ाइयों की वजह से यह भी मालूम कर लिया कि आपका साथ देनेवालों में कौन से लोग निष्ठावान हैं और कौन से लोग मुनाफ़िक़ (कपटाचारी), जो मन के भीतर धोखादेही, और बेईमानी की भावनाएं छिपाए हुए हैं?

फिर आपने मोर्चाबन्दी के व्यावहारिक आदर्शों के ज़रिए मुसलमान कमांडरों की एक ज़बरदस्त जमाअत भी तैयार कर दी, जिन्होंने आपके बाद इराक़ और शाम के मैदानों में फ़ारस और रूम से टक्कर ली और जंगी प्लानिंग और तकनीक में उनके बड़े-बड़े कमांडरों को मात देकर उन्हें उनके मकान और भूभाग में, मालों और बाग़ों से, चश्मों और खेतों से, आरामदेह और इज़्ज़तदार जगहों से और मज़ेदार नेमतों से निकाल बाहर किया।

इसी तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन ग़ज़्वों की वजह से मुसलमानों के लिए रिहाइश, खेती, पेशे और काम का इन्तिज़ाम फ़रमाया। बेघर और मुहताज पनाह लेनेवालों के मसले हल फ़रमाए। हथियार, घोड़े, साज़ व सामान और लड़ाई के ख़र्च जुटाए और वह सब कुछ अल्लाह के बन्दों पर ज़र्रा बराबर ज़ुल्म व ज़्यादती और जौर व जफ़ा के बिना हासिल किया।

आपने इन कारणों और उद्देश्यों को भी तब्दील कर डाला, जिनके लिए ज़ाहिलियत के दौर में लड़ाई के शोले भड़का करते थे, यानी जाहिलियत के ज़माने में लड़ाई नाम थी लूट-मार, क़त्ल और ग़ारतगरी का, ज़ुल्म व ज़्यादती और बदला लेने और हिंसा करने का, कमज़ोरों को कुचलने, आबादियां वीरान करने और इमारतें ढाने का, औरतों की बेइज़्ज़ती करने और बूढ़ों-बच्चों और बच्चियों के साथ पत्थर दिल से पेश आने का, खेती-बाड़ी और जानवरों को हलाक करने और ज़मीन में तबाही और फ़साद मचाने का, मगर इस्लाम ने इस लड़ाई की रूह को बदलकर उसे एक पवित्र जिहाद में बदल दिया, जिसे बहुत मुनासिब और उचित कारणों के तहत शुरू किया जाता है और उसके ज़रिए ऐसे मानवतापूर्ण उद्देश्य और ऊंचे मक़्सदों को हासिल किया जाता है, जिन्हें हर ज़माने

और हर देश में इंसानी समाज के गौरव का कारण समझा गया है, क्योंकि जब लड़ाई का अर्थ यह हो गया कि इंसान को क़हर व ज़ुल्म के निज़ाम से निकालकर न्याय-व्यवस्था में लाने की सशस्त्र जद्दोजेहद की जाए। यानी एक ऐसी व्यवस्था को जिसमें ताक़तवर कमज़ोर को खा रहा हो, उलट कर एक ऐसी व्यवस्था स्थापित किया जाए जिसमें ताक़तवर कमज़ोर हो जाए, जब तक कि उससे कमज़ोर का हक़ ले न लिया जाए।

इस तरह अब लड़ाई का मतलब यह हो गया कि इन कमज़ोर मर्दों, औरतों और बच्चों को निजात दिलाई जाए जो दुआएं करते रहते हैं कि ऐ हमारे पालनहार! हमें इस बस्ती से निकाल जिसके निवासी ज़ालिम हैं और हमारे लिए अपने पास से वली बना और अपने पास से मददगार बना, साथ ही इस लड़ाई का अर्थ यह हो गया कि अल्लाह की ज़मीन को धोखादेही, ख़ियानत, ज़ुल्म व सितम और बदी और गुनाह से पाक करके उसकी जगह अम्न व अमान, दया, रहमत, एक दूसरे के हक़ों को देना और मुरव्वत और मानवता की व्यवस्था पैदा करना हो जाए।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने लड़ाई के लिए मानवता भरे विधान भी तैयार किए और अपने फ़ौजियों और कमांडरों पर उनकी पाबन्दी ज़रूरी बताते हुए किसी हाल में उनसे बाहर जाने की इजाज़त न दी।

हज़रत सुलैमान बिन बुरैदा रज़ि० का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० जब किसी व्यक्ति को किसी फ़ौज या सरीया का अमीर मुक़र्रर फ़रमाते तो उसे ख़ास उसके अपने नफ़्स के बारे में अल्लाह के तक़्वा की और उसके मुसलमान साथियों के बारे में भलाई की वसीयत फ़रमाते, फिर फ़रमाते, अल्लाह के नाम से अल्लाह की राह में ग़ज़वे करो। जिसने अल्लाह के साथ कुफ़्र किया, उनसे लड़ाई करो, ग़ज़्वा करो, ख़ियानत न करो, बद-अह्दी न करो, नाक-कान वग़ैरह न काटो, किसी बच्चे को क़त्ल न करो।

इसी तरह आप आसानी बरतने का हुक्म देते और फ़रमाते, 'आसानी करो, सख़्ती न करो, लोगों को सुकून दिलाओ, बिदकाओ नहीं।[1]

और जब रात में किसी क़ौम के पास पहुंचते तो सुबह होने से पहले छापा न मारते, साथ ही आपने किसी को आग में जलाने से बड़ी कड़ाई के साथ मना किया। इसी तरह बांधकर क़त्ल करने और औरतों को मारने और उन्हें क़त्ल करने से भी मना किया और लूट-पाट से रोका, यहां तक कि आपने फ़रमाया कि

---

1. सहीह मुस्लिम 2/82, 83, अल मोजम अस्सग़ीर : तबरानी 1/123, 187

लूट का माल मुरदार से ज़्यादा हलाल नहीं।

इसी तरह आपने खेती-बाड़ी तबाह करने, जानवर हलाक करने और पेड़ काटने से मना फ़रमाया, सिवा इस शक्ल के कि उसकी सख़्त ज़रूरत आ पड़े और पेड़ काटे बिना कोई रास्ता न हो।

मक्का विजय के मौक़े पर आपने यह भी फ़रमाया, किसी घायल पर हमला न करो, किसी भागने वाले का पीछा न करो और किसी क़ैदी को क़त्ल न करो। आपने यह चलन भी चलाया कि दूत की हत्या न की जाए। साथ ही आपने ग़ैर-मुस्लिम नागरिकों के क़त्ल से भी बड़ी कड़ाई से रोका, यहां तक कि फ़रमाया कि जो व्यक्ति किसी ग़ैर-मुस्लिम को क़त्ल करेगा, वह जन्नत की ख़ुशबू नहीं पाएगा, हालांकि उसकी ख़ुशबू चालीस साल की दूरी से पाई जाती है।

ये और इस तरह के दूसरे ऊंचे दर्जे के नियम व विधान थे जिनके कारण लड़ाई का काम जाहिलियत की गन्दगियों से पाक व साफ़ होकर पवित्र जिहाद में बदल गया।[1]

---

1. इसके विवरण के लिए देखिए ज़ादुल मआद 2/62, 68

अल्लाह के दीन में जत्थ के जत्थ दाख़िल

जैसा कि हमने अर्ज़ किया कि मक्का विजय की लड़ाई एक निर्णायक लड़ाई थी, जिसने बुतपरस्ती का काम तमाम कर दिया और सारे अरब के लिए सत्य-असत्य की पहचान बन गया। इसकी वजह से उनके सन्देह जाते रहे। इसीलिए इसके बाद उन्होंने बड़ी तेज़ी से इस्लाम क़ुबूल किया।

हज़रत अम्र बिन सलमा का बयान है कि हम लोग एक चश्मे पर (आबाद) थे, जो लोगों की गुज़रगाह था। हमारे यहां से क़ाफ़िले गुज़रते रहते थे और हम उनसे पूछते रहते थे कि लोगों का क्या हाल है? उस आदमी यानी नबी सल्ल० का क्या हाल है? और कैसा है?

लोग कहते, वह समझता है कि अल्लाह ने उसे पैग़म्बर बनाया है, उसके पास वह्य भेजी है। अल्लाह ने यह और यह वह्य की है। मैं यह बात याद कर लेता था, मानो वह मेरे सीने में चिपक जाती थी और अरब इस्लाम अपनाने के लिए मक्का-विजय का इन्तिज़ार कर रहे थे, कहते थे, इसे और इसकी क़ौम को (आपस में लड़ने के लिए) छोड़ दो। अगर वह आदमी क़ौम पर ग़ालिब आ गया तो सच्चा नबी है।

चुनांचे जब मक्का विजय की घटना घटी तो हर क़ौम अपने इस्लाम के साथ (मदीना की ओर) बढ़ी और मेरे बाप भी मेरी क़ौम के इस्लाम के साथ तशरीफ़ ले गए और जब (नबी सल्ल० की ख़िदमत से) वापस आए तो फ़रमाया, मैं तुम्हारे पास ख़ुदा की क़सम! एक सच्चे नबी के पास से आ रहा हूं। आपने फ़रमाया है कि फ़्लां नमाज़ फ़्लां वक़्त पढ़ो और फ़्लां नमाज़ फ़्लां वक़्त पढ़ो और जब नमाज़ का वक़्त आ जाए तो तुममें से एक आदमी अज़ान कहे और जिसे क़ुरआन ज़्यादा याद हो, वह इमामत करे।

इसी हदीस से अन्दाज़ा होता है कि मक्का विजय की घटना हालात को तब्दील करने में, इस्लाम को ताक़त पहुंचाने में, अरब वालों का दृष्टिकोण तै कराने में और इस्लाम के सामने उन्हे घुटने टेकने में कितने गहरे और दूर-दूर तक के प्रभाव रखती थी। यह स्थिति ग़ज़वा तबूक के बाद पक्की से पक्की हो गई।

इसीलिए हम देखते हैं कि इन दो वर्षों (सन् 09 और सन् 10 हि०) में जत्थ के जत्थ दाखिल हो रहे थे, यहां तक कि वह इस्लामी फ़ौज जो मक्का विजय के मौक़े पर दस हज़ार फ़ौजियों पर सम्मिलित थी, उसकी तायदाद ग़ज़वा तबूक में (जबकि अभी मक्का विजय पर पूरा एक साल भी नहीं गुज़रा था) इतनी बढ़ गई

कि वह तीस हज़ार फ़ौजियों के ठाठें मारते समुद्र में बदल गई। फिर हम आख़िरी हज में देखते हैं कि एक लाख चौबीस हज़ार या एक लाख चौवालीस हज़ार मुसलमान की बाढ़ आ गई है, जो अल्लाह के रसूल सल्ल० के आसपास इस तरह लब्बैक पुकारती, तक्बीर कहती और गुणगान करती है कि दुनिया गूंज उठती है और घाटी, पर्वत सभी तौहीद (एकेश्वरवाद) के गीत से गूंज जाते हैं।

प्रतिनिधिमंडल

ग़ज़वे के माहिरों ने जिन प्रतिनिधिमंडलों का उल्लेख किया है, उनकी तायदाद सत्तर से ज़्यादा है, लेकिन यहां न तो उन सबके वर्णन की गुंजाइश है और न ही विस्तार में जाने से कोई बड़ा फ़ायदा होने वाला है, इसलिए हम सिर्फ़ उन्हीं प्रतिनिधिमंडलों का उल्लेख कर रहे हैं जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व रखते हैं।

पाठकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि यद्यपि आम क़बीलों की मंडलियां मक्का विजय के बाद नबी सल्ल० की ख़िदमत में आना शुरू हुई थीं, लेकिन कुछ क़बीले ऐसे भी थे जिनके लोग मक्का विजय से पहले ही मदीना आ चुके थे। यहां हम उनका उल्लेख भी कर रहे हैं—

1. अब्दुल क़ैस प्रतिनिधिमंडल—इस क़बीले का प्रतिनिधिमंडल दोबारा नबी सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुआ था। पहली बार सन् 05 में या इससे भी पहले और दूसरी बार सन् 09 हि० में।

पहली बार इसके आने की वजह यह हुई कि इस क़बीले का एक व्यक्ति मुंक़िज़ बिन हिब्बान कारोबार का सामान लेकर मदीना आया-जाया करता था। वह जब नबी सल्ल० की हिजरत के बाद पहली बार मदीना आया और उसे इस्लाम का पता चला, तो वह मुसलमान हो गया और नबी सल्ल० का एक पत्र लेकर अपनी क़ौम के पास गया। उन लोगों ने भी इस्लाम क़ुबूल कर लिया और उनके 13 या 14 आदमियों की एक मंडली हुर्मत वाले महीनों में नबी सल्ल० की सेवा में आयी। इस बार इस मंडली ने ईमान और पेय के बारे में सवाल किया था, इसका प्रमुख अल-अशज्ज अल असरी था, जिसके बारे में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया था कि तुममें दो ऐसे गुण हैं, जिन्हें अल्लाह पसन्द करता है—

एक दूरदर्शिता, दूसरे सहनशीलता।

दूसरी बार इस क़बीले का प्रतिनिधिमंडल, जैसा कि बताया गया, प्रतिनिधिमंडलों के साल (यानी सन् 09 हि० में) आया। उस वक़्त उनकी

तायदाद चालीस थी और उनमें अला बिन जारूद अब्दी था, जो ईसाई था, लेकिन मुसलमान हो गया और उसका इस्लाम बहुत ख़ूब रहा।[1]

2. दौस प्रतिनिधिमंडल—यह मंडल 07 हि० के शुरू में मदीना आया। उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्ल० ख़ैबर में थे।

आप पीछे पढ़ चुके हैं कि इस क़बीले के प्रमुख हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र दौसी रज़ि० उस वक़्त इस्लाम ले आये थे, जब अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्का में थे। फिर उन्होंने अपनी क़ौम में वापस जाकर इस्लाम की दावत व तब्लीग़ का काम बराबर किया, लेकिन उनकी क़ौम बराबर टालती और विलम्ब करती रही, यहां तक कि हज़रत तुफ़ैल उनकी ओर से निराश हो गए।

फिर उन्होंने नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि आप क़बीला दौस पर बद-दुआ कर दीजिए, लेकिन आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! दौस को हिदायत दे और आपकी इस दुआ के बाद इस क़बीले के लोग मुसलमान हो गए और हज़रत तुफ़ैल ने अपनी क़ौम के सत्तर या अस्सी घरानों का जत्था लेकर सन् 07 हि० के शुरू में उस वक़्त मदीना हिजरत की, जब नबी सल्ल० ख़ैबर में तशरीफ़ रखते थे। इसके बाद हज़रत तुफ़ैल ने आगे बढ़कर ख़ैबर में आपका साथ पकड़ लिया।

3. फर्वा बिन अम्र जज़ामी का दूत—हज़रत फ़र्वा रूमी फ़ौज के अन्दर एक अरब कमांडर थे। उन्हें रूमियों ने अपनी सीमाओं से मिले हुए अरब इलाक़ों का गवर्नर बना दिया था। उनका केन्द्र मआन (दक्षिणी जार्डन) था और अमलदारी आस-पास के इलाक़ों में थी। उन्होंने मूता की लड़ाई में मुसलमानों की बहादुरी और जंगी महारत (निपुणता) देखकर इस्लाम अपना लिया था। एक और दूत भेजकर अल्लाह के रसूल सल्ल० को अपने मुसलमान होने की ख़बर दी। उपहार के तौर पर एक सफ़ेद ख़च्चर भी भिजवाया।

रूमियों को उनके मुसलमान होने का पता चला तो उन्होंने पहले तो उन्हें गिरफ़्तार करके क़ैद में डाल दिया, फिर अधिकार दिया कि या तो इस्लाम धर्म से फिर जाएं या मौत के लिए तैयार रहें। उन्होंने विधर्मी होने पर मौत को तर्जीह दी। चुनांचे उन्हें फ़लस्तीन में अफ़रा नाम के एक चश्मे पर सूली देकर उनको मौत की नींद सुला दिया गया।[2]

4. सदा प्रतिनिधिमंडल—यह सन् 08 हि० में जिइर्राना से अल्लाह के रसूल

1. शरह सहीह मुस्लिम, लेख, इमाम नववी 1/33, फ़त्हुल बारी 8/85, 86
2. ज़ादुल मआद 3/45

तायदाद चालीस थी और उनमें अला बिन जारूद अब्दी था, जो ईसाई था, लेकिन मुसलमान हो गया और उसका इस्लाम बहुत ख़ूब रहा।[1]

2. दौस प्रतिनिधिमंडल—यह मंडल 07 हि० के शुरू में मदीना आया। उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्ल० ख़ैबर में थे।

आप पीछे पढ़ चुके हैं कि इस क़बीले के प्रमुख हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र दौसी रज़ि० उस वक़्त इस्लाम ले आये थे, जब अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्का में थे। फिर उन्होंने अपनी क़ौम में वापस जाकर इस्लाम की दावत व तब्लीग़ का काम बराबर किया, लेकिन उनकी क़ौम बराबर टालती और विलम्ब करती रही, यहां तक कि हज़रत तुफ़ैल उनकी ओर से निराश हो गए।

फिर उन्होंने नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि आप क़बीला दौस पर बद-दुआ कर दीजिए, लेकिन आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! दौस को हिदायत दे और आपकी इस दुआ के बाद इस क़बीले के लोग मुसलमान हो गए और हज़रत तुफ़ैल ने अपनी क़ौम के सत्तर या अस्सी घरानों का जत्था लेकर सन् 07 हि० के शुरू में उस वक़्त मदीना हिजरत की, जब नबी सल्ल० ख़ैबर में तशरीफ़ रखते थे। इसके बाद हज़रत तुफ़ैल ने आगे बढ़कर ख़ैबर में आपका साथ पकड़ लिया।

3. फर्वा बिन अम्र जज़ामी का दूत—हज़रत फ़र्वा रूमी फ़ौज के अन्दर एक अरब कमांडर थे। उन्हें रूमियों ने अपनी सीमाओं से मिले हुए अरब इलाक़ों का गवर्नर बना दिया था। उनका केन्द्र मआन (दक्षिणी जार्डन) था और अमलदारी आस-पास के इलाक़ों में थी। उन्होंने मूता की लड़ाई में मुसलमानों की बहादुरी और जंगी महारत (निपुणता) देखकर इस्लाम अपना लिया था। एक और दूत भेजकर अल्लाह के रसूल सल्ल० को अपने मुसलमान होने की ख़बर दी। उपहार के तौर पर एक सफेद ख़च्चर भी भिजवाया।

रूमियों को उनके मुसलमान होने का पता चला तो उन्होंने पहले तो उन्हें गिरफ़्तार करके क़ैद में डाल दिया, फिर अधिकार दिया कि या तो इस्लाम धर्म से फिर जाएं या मौत के लिए तैयार रहें। उन्होंने विधर्मी होने पर मौत को तर्जीह दी। चुनांचे उन्हें फ़लस्तीन में अफ़रा नाम के एक चश्मे पर सूली देकर उनको मौत की नींद सुला दिया गया।[2]

4. सदा प्रतिनिधिमंडल—यह सन् 08 हि० में जिइर्राना से अल्लाह के रसूल

---

1. शरह सहीह मुस्लिम, लेख, इमाम नववी 1/33, फ़त्हुल बारी 8/85, 86
2. ज़ादुल मआद 3/45

सल्ल० की वापसी के बाद सेवा में हाज़िर हुआ। इसकी वजह यह हुई कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने चार सौ मुसलमानों की एक मुहिम तैयार करके उसे हुक्म दिया कि यमन का वह भाग रौंद आएं जिसमें क़बीला सदा रहता है।

यह मुहिम अभी क़नात घाटी के सिरे पर पड़ाव डाले हुए थी कि हज़रत ज़ियाद बिन हारिस सदाई को इसका ज्ञान हो गया। वह भागम-भाग अल्लाह के रसूल सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मेरे पीछे जो लोग हैं, मैं उनके नुमाइन्दे की हैसियत में हाज़िर हुआ हूं। इसलिए आप फ़ौज वापस बुला लें और मैं आपके लिए अपनी क़ौम की जमानत लेता हूं। आपने क़नात घाटी ही से फ़ौज वापस बुला ली।

इसके बाद हज़रत ज़ियाद ने अपनी क़ौम में वापस आकर उन्हें उभारा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हों। उनके उभारने पर पन्द्रह आदमी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और इस्लाम क़ुबूल करने पर बैअत की। फिर अपनी क़ौम में वापस जाकर इस्लाम का प्रचार किया और उनमें इस्लाम फैल गया। विदाई हज के मौक़े पर उनके एक सौ आदमियों ने अल्लाह के रसूल सल्ल० की सेवा में हाज़िरी दी।

5. काब बिन ज़ुहैर बिन अबी सलमा का आना—यह व्यक्ति एक कवि परिवार का चिराग़ था और ख़ुद भी अरब का बहुत बड़ा कवि था। यह काफ़िर था और नबी सल्ल० की बुराई किया करता था। इमाम हाकिम के कहने के मुताबिक यह भी उन अपराधियों की सूची में शामिल था, जिनके बारे में मक्का विजय के मौक़े पर हुक्म दिया गया था कि अगर वे ख़ाना काबा का परदा पकड़े हुए पाए जाएं, तो भी उनकी गरदन मार दी जाए। लेकिन यह व्यक्ति बच निकला।

इधर अल्लाह के रसूल सल्ल० ग़ज़वा तायफ़ (सन् 08 हि०) से वापस हुए तो काब के पास उसके भाई बुजैर बिन ज़ुहैर ने लिखा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मक्का के उन कई व्यक्तियों को क़त्ल करा दिया है जो आपकी बुराई करते और आपको कष्ट पहुंचाते थे। क़ुरैश के बचे-खुचे कवियों मे से जिसकी जिधर सींग समाई है निकल भागा है, इसलिए अगर तुम्हें अपनी जान की ज़रूरत है तो अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास उड़कर आओ, क्योंकि कोई भी व्यक्ति तौबा करके आपके पास आ जाए तो आप उसे क़त्ल नहीं करते और अगर यह बात मंज़ूर नहीं हो तो फिर जहां निजात मिल सके, निकल भागो।

इसके बाद दोनों भाइयों में और पत्र-व्यवहार हुआ, जिसके नतीजे में काब बिन ज़ुहैर को ज़मीन तंग महसूस होने लगी और उसे अपनी जान के लाले पड़ते

नज़र आए, इसलिए आख़िरकार वह मदीना आ गया और जुहैना के एक आदमी के यहां मेहमान हुआ, फिर उसी के साथ सुबह की नमाज़ पढ़ी। नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ तो जुहैनी ने इशारा किया और वह उठकर अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास जा बैठा और अपना हाथ आपके हाथ में रख दिया। अल्लाह के रसूल सल्ल० उसे पहचानते न थे। उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! काब बिन ज़ुहैर तौबा करके मुसलमान हो गया और आपसे अम्न चाहता है, तो क्या अगर मैं उसे आपकी सेवा में हाज़िर कर दूं? तो आप उसकी इन चीज़ों को क़ुबूल फ़रमा लेंगे?

आपने फ़रमाया, हां।

उसने कहा, मैं ही काब बिन ज़ुहैर हूं। यह सुनकर एक अंसारी सहाबी उस पर झपट पड़े और उसकी गरदन मारने की इजाज़त चाही।

आपने फ़रमाया, छोड़ दो, यह आदमी तौबा करके और पिछली बातों से अलग होकर आया है।

इसके बाद इसी मौक़े पर काब बिन ज़ुहैर ने अपना मशहूर क़सीदा (प्रशस्ति-गीत) आपको पढ़कर सुनाया, जिसकी शुरूआत यों है—

'सुआद दूर हो गई तो मेरा दिल बेक़रार है। इसके पीछे दीवाना और बेड़ियों में जकड़ा हुआ है, उसका फ़िदया (प्रतिदान) नहीं दिया गया।'

इस क़सीदे (प्रशस्ति-पत्र) में काब ने अल्लाह के रसूल सल्ल० से माज़रत करते हुए और आपकी तारीफ़ करते हुए आगे यों कहा है—

'मुझे बताया गया है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मुझे धमकी दी है, हालांकि अल्लाह के रसूल सल्ल० से दरगुज़र की आशा है, आप ठहरें, चुग़लख़ोरों की बात न लें। वह हस्ती आपकी रहनुमाई करे जिसने आपको नसीहतों और अच्छी बातों से भरे क़ुरआन का उपहार दिया है।

यद्यपि मेरे बारे में बातें बहुत कही गई हैं, लेकिन मैंने अपराध नहीं किया है। मैं ऐसी जगह खड़ा हूं और वे बातें देख और सुन रहा हूं कि अगर हाथी भी वहां खड़ा हो और इन बातों को देखे और सुन ले तो थरथरा जाए, सिवाए इस शक्ल के कि उस पर अल्लाह के हुक्म से रसूल की मेहरबानी हो, यहां तक कि मैंने अपना हाथ किसी झगड़े के बिना उस मोहतरम हस्ती के हाथ में रख दिया है, जिसे बदला लेने पर पूरी क़ुदरत हासिल है और उसकी बात बात है, जब मैं उससे बात करता हूं।

जबकि मुझसे कहा गया है कि तुमसे (फ़्लां-फ़्लां बातें) जुड़ी हैं और तुमसे

पूछताछ की जाएगी, तो वह मेरे नज़दीक उस शेर से भी ज़्यादा ख़ौफ़नाक होते हैं जिसका कछार कि घातक घाटी के पेट में स्थित किसी ऐसी कड़ी ज़मीन में हो, जिससे पहले भी विनाश ही हो। यक़ीनन रसूल एक नूर हैं जिनसे रोशनी हासिल की जाती है, अल्लाह की तलवारों में से एक सौंपी हुई हिंदी तलवार हैं।'

इसके बाद काब बिन ज़ुहैर ने क़ुरैश के मुहाजिरों की तारीफ़ की, क्योंकि काब के आने पर उनके किसी आदमी ने भलाई के सिवा कोई बात और हरकत नहीं की थी, लेकिन उनकी तारीफ़ के दौरान अंसार पर तान किया, क्योंकि उनके एक आदमी ने उनकी गरदन मारने की इजाज़त चाही थी, चुनांचे कहा—

'वे (क़ुरैश) ख़ूबसूरत, मटकते ऊंट की चाल चलते हैं और तलवार उनकी हिफ़ाज़त करती है, जबकि नाटे-खोटे, काले-कलूटे लोग रास्ता छोड़कर भागते हैं।'

लेकिन जब वह मुसलमान हो गया और उसका इस्लाम अच्छा हो गया तो उसने एक क़सीदा अंसार की तारीफ़ में कहा और उनकी शान में उससे जो ग़लती हो गई थी, उसे दूर किया, चुनांचे उस क़सीदे में कहा—

'जिसे सज्जनतापूर्ण ज़िंदगी पसन्द हो, वे हमेशा किसी भले अंसार के दस्ते में रहे। उन्होंने ख़ूबियां बाप-दादा से विरासत में पाई हैं। सच तो यह है कि अच्छे लोग वही हैं जे अच्छों की औलाद हों।'

6. उज़रा प्रतिनिधिमंडल—यह नौ सफ़र सन् 09 हि० में मदीना आया, बारह आदमियों पर सम्मिलित था, इसमें हमज़ा बिन नोमान भी थे।

जब प्रतिनिधिमंडल से पूछा गया कि आप कौन लोग हैं?

तो उनके नुमाइन्दे ने कहा, हम बनू उज़रा हैं, क़ुसई के सौतेले भाई। हमने ही क़ुसई की ताईद की थी और ख़ुज़ामा और बनू बक्र को मक्के से निकाला था। (यहां) हमारे रिश्ते और क़राबतदारियां हैं।

इस पर नबी सल्ल० ने अभिवादन किया और शाम देश के जीते जाने की ख़ुशख़बरी दी, साथ ही उन्हें काहिन औरतों से सवाल करने से मना किया और उन जानवरों से रोका, जिन्हें ये लोग (शिर्क की हालत में) ज़िब्ह किया करते थे। इस प्रतिनिधिमंडल ने इस्लाम क़ुबूल किया और कुछ दिन ठहरकर वापस गया।

7. बली प्रतिनिधिमंडल—यह रबीउल अव्वल सन् 09 हि० में मदीना आया और मुसलमान होकर तीन दिन तक ठहरा रहा। ठहरने के समय में प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख अबुन्नसीब ने मालूम किया कि क्या सत्कार में भी सवाब मिलता है?

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, हां, किसी मालदार या फ़क़ीर के साथ

जो भी अच्छा व्यवहार करोगे, वह सदक़ा है।

उसने पूछा, मेहमानी की मुद्दत कितनी है?

आपने फ़रमाया, तीन दिन।

उसने पूछा, किसी लापता व्यक्ति की गुमशुदा भेड़-बकरी मिल जाए तो क्या हुक्म है?

आपने फ़रमाया, वह तुम्हारे लिए है या तुम्हारे भाई के लिए है या फिर भेड़िए के लिए है। उसके बाद उसने गुमशुदा ऊंट के बारे में सवाल किया।

आपने फ़रमाया, तुम्हें इससे क्या वास्ता? इसे छोड़ दो, यहां तक कि उसका मालिक उसे पा जाए।

8. सक़ीफ़ प्रतिनिधिमंडल—यह प्रतिनिधिमंडल रमज़ान सन् 09 हि० में तबूक से अल्लाह के रसूल सल्ल० की वापसी के बाद हाज़िर हुआ। इस क़बीले में इस्लाम फैलने की शक्ल यह हुई कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ज़ीक़ादा सन् 08 हि० में जब ग़ज़्वा तायफ़ से वापस हुए तो आपके मदीना पहुंचने से पहले ही इस क़बीले के सरदार उर्वः मस्ऊद ने आपकी सेवा में हाज़िर होकर इस्लाम क़ुबूल कर लिया, फिर अपने क़बीला में वापस जाकर लोगों को इस्लाम की दावत दी। वह चूंकि अपनी क़ौम का सरदार था और सिर्फ़ यही नहीं कि उसकी बात मानी जाती थी, बल्कि उसे उस क़बीले के लोग अपनी लड़कियों और औरतों से भी ज़्यादा प्रिय रखते थे।

इसलिए उसका विचार था कि लोग उसकी बात मानेंगे, लेकिन जब उसने इस्लाम की दावत दी तो उसकी उम्मीद के बिल्कुल ख़िलाफ़ लोगों ने उस पर हर ओर से तीरों की बौछार कर दी और उसे जान से मार डाला।

फिर उसे क़त्ल करने के बाद कुछ महीने तो यों ही ठरहे रहे, लेकिन इसके बाद उन्हें एहसास हुआ कि आस-पास का इलाक़ा जो मुसलमान हो चुका है, उससे हम मुक़ाबले की ताब नहीं रखते, इसलिए उन्होंने आपस में मश्विरा करके तै किया कि एक आदमी को अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में भेजें और उसके लिए अब्द या लैल बिन अम्र से बातचीत की, पर वह तैयार न हुआ।

उसे डर हुआ कि कहीं उसके साथ भी वही व्यवहार न किया जाए जो उर्वः बिन मस्ऊद के साथ किया जा चुका है, इसलिए उसने कहा, मैं यह काम उस वक़्त तक नहीं कर सकता, जब तक मेरे साथ और कुछ लोगों को न भेजो। लोगों ने उसकी यह मांग मान ली और उसके साथ मित्रों में से दो आदमी और बनी मालिक में से तीन आदमी लगा दिए। इस तरह कुल छः आदमियों का

प्रतिनिधिमंडल तैयार हो गया। इसी प्रतिनिधिमंडल में हज़रत उस्मान बिन अबी आस सक़फ़ी भी थे, जो सबसे ज़यादा कम उम्र थे।

जब ये लोग नबी सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे तो आपने उनके लिए मस्जिद के एक कोने में एक कुब्बा लगवा दिया, ताकि यह क़ुरआन सुन सकें और सहाबा किराम को नमाज़ पढ़ते हुए देख सकें। फिर ये लोग अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास आते-जाते रहे और आप उन्हें इस्लाम की दावत देते रहे।

आख़िर उनके सरदार ने सवाल किया कि आप अपने और सक़ीफ़ के बीच एक समझौता नामा लिख दें, जिसमें ज़िनाकारी, शराबनोशी और सूदख़ोरी की इजाज़त हो। उनके बावजूद 'लात' को बाक़ी रहने दिया जाए, उन्हें नमाज़ से माफ़ रखा जाए, और उनके बुत ख़ुद उनके हाथों से न तुड़वाएं, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनमें से कोई भी बात मंज़ूर न की, इसलिए उन्होंने तंहाई में मश्विरा किया मगर उन्हें अल्लाह के रसूल सल्ल० के सामने हथियार डालने के सिवा कोई उपाय नंजर न आया।

आख़िर उन्होंने यही किया और अपने आपको अल्लाह के रसूल सल्ल० के हवाले करते हुए इस्लाम क़ुबूल कर लिया। अलबत्ता यह शर्त लगाई कि 'लात' को ढाने का इन्तिज़ाम अल्लाह के रसूल सल्ल० ख़ुद फ़रमा दें, सक़ीफ़ इसे अपने हाथों हरगिज़ न ढाएंगे। आपने यह शर्त मंज़ूर कर ली और एक काग़ज़ लिख दिया और उस्मान बिन अबी आस सक़फ़ी को उनका अमीर बना दिया। क्योंकि वही इस्लाम को समझने और दीन और क़ुरआन की शिक्षा प्राप्त करने में सबसे ज़्यादा आगे थे और इसके लोभी भी थे।

इसकी वजह यह थी कि प्रतिनिधिमंडल के सदस्य हर दिन सुबह नबी सल्ल० की सेवा में आते, लेकिन उस्मान बिन अबी आस को अपने डेरे पर छोड़ देते थे। इसलिए जब प्रतिनिधिमंडल वापस आकर दोपहर में आराम करता तो हज़रत उस्मान बिन अबी आस अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर क़ुरआन पढ़ते और दीन की बातें मालूम करते और जब आपको आराम करता हुआ पाते, तो इसी मक़सद के लिए हज़रत अबूबक्र की ख़िदमत में चले जाते।

(हज़रत उस्मान बिन अबी आस की गवर्नरी बड़ी बरकती साबित हुई। अल्लाह के रसूल सल्ल० की वफ़ात के बाद जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िलाफ़त में इर्तिदाद (इस्लाम से विमुखता) की लहर चली और सक़ीफ़ ने भी ऐसा करना चाहा तो उन्हें हज़रत उस्मान बिन अबी आस ने सम्बोधित करके कहा, सक़ीफ़ के लोगो ! तुम सबसे आख़िर में इस्लाम लाए हो, इसलिए सबसे पहले

इस्लाम के विधर्मी न बनो। यह सुनकर लोग ऐसा करने से रुक गए और इस्लाम पर जमे रहे।)

बहरहाल प्रतिनिधिमंडल ने अपनी क़ौम में वापस आकर वास्तविकता छिपाए रखा और क़ौम के सामने लड़ाई और मार-धाड़ का हव्वा खड़ा किया और दुख और ग़म ज़ाहिर करते हुए बताया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनसे मांग की है कि इस्लाम अपना लें और ज़िना, शराब और सूद छोड़ दें, वरना कड़ी लड़ाई की जाएगी।

यह सुनकर पहले तो अज्ञानता-अहंकार छा गया और वे दो-तीन दिन तक लड़ाई ही की बात सोचते रहे, लेकिन फिर अल्लाह ने उनके दिलों में रौब डाल दिया, और उन्होंने प्रतिनिधिमंडल से निवेदन किया कि वह फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास वापस जाए और आपकी मांगें मान ले। इस मरहले पर पहुंचकर प्रतिनिधिमंडल ने असल बात बताई और जिन बातों पर समझौता हो चुका था, उन्हें ज़ाहिर किया। सक़ीफ़ ने उसी वक़्त इस्लाम अपना लिया।

उधर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने लात को ढाने के लिए हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० के नेतृत्व में कुछ सहाबा की एक छोटी सी तायदाद भेजी। हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा ने खड़े होकर गुर्ज़ उठाया और अपने साथियों से कहा, अल्लाह की क़सम ! मैं तनिक आप लोगों को सक़ीफ़ पर हंसाऊंगा। इसके बाद लात पर गुर्ज़ मारकर ख़ुद ही गिर पड़े और एड़ियां पटकने लगे।

यह बनावटी दृश्य देखकर तायफ़ वालों पर हौल छा गया, कहने लगे, अल्लाह मुग़ीरह को हलाक करे, इसे देवी ने मार डाला। इतने में हज़रत मुग़ीरह उछलकर खड़े हो गए और फ़रमाया, अल्लाह तुम्हारा बुरा करे। यह तो पत्थर और मिट्टी का तमाशा है, फिर उन्होंने दरवाज़े पर चोट लगाई और उसे तोड़ दिया। इसके बाद सबसे ऊंची दीवार पर चढ़े और उनके साथ कुछ और साथी भी चढ़े, फिर उसे ढाते-ढाते ज़मीन के बराबर कर दिया, यहां तक कि उसकी ज़मीन भी खोद डाली और उसका गहना और कपड़ा निकाल लिया। यह देखकर सक़ीफ़ चकित रह गए। हज़रत ख़ालिद रज़ि० गहना और कपड़ा लेकर अपनी टीम के साथ वापस हुए। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सब कुछ उसी दिन बांट दिया और नबी की मदद और दीन की बरतरी पर अल्लाह का शुक्र अदा किया।[1]

9. यमन के बादशाहों का पत्र—तबूक से नबी सल्ल० की वापसी के बाद हिमयर के बादशाह यानी हारिस बिन अब्द किलाल, नुऐम बिन अब्द किलाल

1. ज़ादुल मआद 3/26, 27, 28

और रईन हमदान और मुआफ़िर के प्रमुख नोमा. बिन क़ील का पत्र आया। पत्र लाने वाला मालिक बिन मुर्रा रहावी था। इन बादशाहों ने अपने इस्लाम लाने और शिर्क और मुश्रिकों से अलगाव के अपनाने की सूचना देकर उसे भेजा था।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनके पास एक जवाबी पत्र लिखकर स्पष्ट कर दिया कि ईमान वालों के अधिकार और उनकी ज़िम्मेदारियां क्या हैं? आपने उस पत्र में समझौता करने वालों के लिए अल्लाह का ज़िम्मा और उसके रसूल का ज़िम्मा भी दिया था, बशर्तेकि वे तै किया हुआ जिज़्या अदा करें। इसके अलावा आपने कुछ सहाबा को यमन रवाना फ़रमाया और हज़रत मुआज़ बिन जबल को उनका अमीर बना दिया।

10. हमदान प्रतिनिधिमंडल—यह प्रतिनिधिमंडल सन् 09 हि० में तबूक से अल्लाह के रसूल सल्ल० की वापसी के बाद सेवा में हाज़िर हुआ। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनके लिए एक काग़ज़ लिखकर, जो कुछ उन्होंने मांगा था, दे दिया और मालिक बिन नम्त को उनका अमीर मुक़र्रर किया और उनकी क़ौम के जो लोग मुसलमान हो चुके थे, उनका गवर्नर बनाया और बाक़ी लोगों के पास इस्लाम की दावत देने के लिए हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को भेज दिया। वह छः महीने ठहरकर दावत देते रहे, लेकिन लोगों ने इस्लाम क़ुबूल न किया।

फिर आपने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० को भेजा और हुक्म दिया कि वह ख़ालिद को वापस भेज दें। हज़रत अली रज़ि० ने क़बीला हमदान के पास जाकर अल्लाह के रसूल सल्ल० का पत्र सुनाया और इस्लाम की दावत दी, तो सबके सब मुसलमान हो गए। हज़रत अली रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्ल० को उनके मुसलमान होने की ख़ुशख़बरी भेजी। आपने पत्र पढ़ा तो सज्दे में गिर गए, फिर सर उठाकर फ़रमाया, हमदान पर सलाम, हमदान पर सलाम!

11. बनी फ़ज़ारा प्रतिनिधिमंडल—यह प्रतिनिधिमंडल सन् 09 हिजरी में तबूक से नबी सल्ल० की वापसी के बाद आया। इसमें दस से कुछ ज़्यादा लोग थे और सबके सब इस्लाम ला चुके थे। इन लोगों ने अपने इलाक़े में पड़े अकाल की शिकायत की। अल्लाह के रसूल सल्ल० मिंबर पर तशरीफ़ ले गए और दोनों हाथ उठाकर वर्षा की दुआ की। आपने फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह! अपने देश और अपने पशुओं को सेराब कर, अपनी रहमत फैला, अपने मुर्दा शहर को ज़िंदा कर। ऐ अल्लाह! हम पर ऐसी वर्षा बरसा जो हमारी फ़रियाद पूरी करे, राहत पहुंचा दे, खुशगवार हो, फैली हुई सर्वव्यापी हो, जल्द आए, देर न करे, लाभप्रद हो, हानिदायक न हो। ऐ अल्लाह! रहमत की वर्षा, अज़ाब की वर्षा नहीं और न ढाने वाली, न डुबाने वाली और न मिटाने

वाली वर्षा। ऐ अल्लाह ! हमें वर्षा से सेराब कर और दुश्मनों के ख़िलाफ़ हमारी मदद फ़रमा।[1]

12. नजरान मंत्रिमंडल—(नजरान मक्का से यमन की ओर सात मरहले पर एक बड़ा इलाक़ा था, जो 73 आबादियों पर सम्मिलित था। तेज़ रफ़्तार सवार एक दिन में पूरा इलाक़ा तै कर सकता था।[2] इस इलाक़े में लगभग एक लाख लड़ाकू मर्द थे जो सबके सब ईसाई धर्म के मानने वाले थे।)

नजरान का प्रतिनिधिमंडल सन् 09 हि० में आया। यह साठ लोगों पर सम्मिलित था। 24 बड़े लोग थे जिनमें से तीन तो लीडर थे—एक आक़िब, जिसके ज़िम्मे शासन था और उसका नाम अब्दुल मसीह था, दूसरा सैयद जो संस्कृति और राजनीति के मामलों का निगरां था और उसका नाम ऐहम शुरहबील था, तीसरा उस्क़ुफ़ (लाट पादरी) जो धार्मिक नेता था। उसका नाम अबू हारिसा बिन अलक़मा था।

प्रतिनिधिमंडल ने मदीना पहुंचकर नबी सल्ल० से मुलाक़ात की। फिर आपने उनसे कुछ प्रश्न किए और उन्होंने आपसे कुछ सवाल किए। इसके बाद आपने उन्हें इस्लाम की दावत दी और क़ुरआन की आयतें पढ़कर सुनाईं, लेकिन उन्होंने इस्लाम क़ुबूल न किया और मालूम किया कि आप हज़रत ईसा अलै० के बारे में क्या कहते हैं? इसके जवाब में अल्लाह के रसूल सल्ल० उस दिन पूरे दिन रुके रहे, यहां तक कि आप पर ये आयतें उतरीं—

'बेशक ईसा की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम जैसी है, उसे मिट्टी से पैदा किया, फिर उससे कहा हो जा, तो वह हो गया। सत्य तेरे रब की ओर से है, बस सन्देह करने वालों में से न हो। फिर तुम्हारे पास ज्ञान आ जाने के बाद, जो कोई तुमसे इस (ईसा) के बारे में हुज्जत करे तो कह दो कि आओ हम बुलाएं अपने-अपने बेटों को और अपनी-अपनी औरतों को और ख़ुद अपने आपको और फिर मुबाहला करें, (अल्लाह से गिड़गिड़ाकर दुआ करें) पस अल्लाह की लानत ठहराएं झूठों पर।' (3 : 59, 60, 61)

सुबह हुई तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इन्हीं आयतों की रोशनी में उन्हें हज़रत ईसा अलै० के बारे में अपने विचार बताये और इसके बाद दिन भर उन्हें सोच-विचार के लिए छोड़ दिया, लेकिन उन्होंने हज़रत ईसा के बारे में आपकी बात मानने से इंकार कर दिया।

---

1. ज़ादुल मआद 3/48
2. ज़ादुल मआद 8/94

फिर जब अगली सुबह हुई, जबकि प्रतिनिधिमंडल के सदस्य हज़रत ईसा अलै० के बारे में आपकी बात मानने और इस्लाम लाने से इंकार कर चुके थे, तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उन्हें मुबाहले की दावत दी और हज़रत हसन व हुसैन रज़ि० समेत एक चादर में लिपटे हुए तशरीफ़ लाए। पीछे-पीछे हज़रत फ़ातिमा रज़ि० चल रही थीं।

जब प्रतिनिधिमंडल ने देखा कि आप वाक़ई बिल्कुल तैयार हैं तो अकेले में जाकर मश्विरा किया। आक़िब और सैयद दोनों ने एक दूसरे से कहा, देखो मुबाहला न करना। ख़ुदा की क़सम! अगर यह नबी है और हमने इससे एक दूसरे पर लानत कर ली तो हम और हमारे पीछे हमारी औलाद हरगिज़ सफल न होगी। धरती पर हमारा एक बाल और नाख़ून भी तबाही से न बच सकेगा। आख़िर में उनकी राय यह ठहरी कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ही को अपने बारे में मध्यस्थ बनाया जाए।

चुनांचे उन्होंने आपकी सेवा में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि आपकी जो मांग हो, हम उसे मानने को तैयार हैं। इस पेशकश पर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनसे जिज़या लेना मंज़ूर किया और दो हज़ार जोड़े कपड़ों पर समझौता किया, एक हज़ार माह रजब में और एक हज़ार माह सफ़र में और तै किया कि हर जोड़े के साथ एक औक़िया (एक सौ बावन ग्राम चांदी) भी अदा करनी होगी। इसके बदले आपने उन्हें अल्लाह और उसके रसूल का ज़िम्मा अता फ़रमाया और दीन के बारे में पूरी आज़ादी दे दी। इस बारे में आपने उन्हें विधिवत एक लिखा काग़ज़ दे दिया।

उन लोगों ने आपसे गुज़ारिश की कि आप उनके यहां एक अमीन (अमानतदार) आदमी भेज दें। इस पर आपने समझौते का माल वसूल करने के लिए इस उम्मत के अमीन अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० को रवाना फ़रमाया।

इसके बाद उनके अन्दर इस्लाम फैलना शुरू हुआ। सीरत लिखने वालों का बयान है कि सैयद और आक़िब नजरान पलटने के बाद मुसलमान हो गए। फिर नबी सल्ल० ने उनसे सदक़े और जिज़्ए लाने के लिए हज़रत अली रज़ि० को रवाना फ़रमाया और मालूम है कि सदक़ा तो मुसलमानों ही से लिया जाता है।[1]

---

1. फ़त्हुल बारी 8/94, 95, ज़ादुल मआद 3/38-41। नजरान प्रतिनिधिमंडल के विस्तृत विवरण में रिवायतों के अन्दर अच्छा भला बिखराव है और इसी वजह से कुछ शोधकों का रुझान है कि नजरान का प्रतिनिधिमंडल दोबारा मदीना आया, लेकिन हमारे नज़दीक वही बात प्रमुखता देने की है जिसे हमने संक्षेप में ऊपर दे रखा है।

बनी हनीफ़ा प्रतिनिधिमंडल—यह सन् 09 हि० में मदीना आया। इसमें मुसैलमा कज़्ज़ाब (अति झूठा) सहित सत्तरह आदमी थे।[1] मुसैलमा का वंश इस तरह है—मुसैलमा बिन समामा बिन कबीर बिन हबीब बिन हारिस। यह प्रतिनिधिमंडल एक अंसारी सहाबी के मकान पर उतरा। फिर नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर मुसलमान हुआ, अलबत्ता मुसैलमा कज़्ज़ाब के बारे में रिवायतें अलग-अलग हैं।

तमाम रिवायतों पर सामूहिक नज़र डालने से मालूम होता है कि उसने अकड़, दंभ और सरदारी पाने का लोभ बहुत था और प्रतिनिधिमंडल के बाक़ी सदस्यों के सामने नबी सल्ल० की सेवा में हाज़िर न हुआ।

नबी सल्ल० ने पहले तो कथनी और करनी और अच्छे सज्जनतापूर्ण बतार्व के ज़रिए उसका दिल रखना चाहा, लेकिन जब देखा कि उस व्यक्ति पर उस बर्ताव का अच्छा असर न पड़ा, तो आपने अपने विवेक से ताड़ लिया कि उसके अन्दर शरारत (दुष्टता) है।

इससे पहले नबी सल्ल० यह सपना देख चुके थे कि आपके पास धरती के ख़ज़ाने लाकर रख दिए गए हैं और उनमें से सोने के वे कंगन आपके हाथ में आ पड़े हैं। आपको ये दोनों बहुत भारी और दुखद लगे। चुनांचे आपको वह्य की गई कि इन दोनों को फूंक दीजिए। आपने फूंक दिया तो वे दोनों उड़ गए।

इसका मतलब आपने यह बताया कि आपके बाद दो कज़्ज़ाब (परले दर्जे के झूठे) निकलेंगे, चुनांचे जब मुसैलमा कज़्ज़ाब ने अकड़ और इंकार ज़ाहिर किया—वह कहता था कि अगर मुहम्मद ने हुकूमत के कारोबार को अपने बाद मेरे हवाले करना तै किया, तो मैं उनका पालन करूंगा—तो रसूलुल्लाह सल्ल० उसके पास तशरीफ़ ले गए, उस वक़्त आपके हाथ में खजूर की एक शाखा थी और आपके साथ आपके ख़तीब (वक्ता) हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शमास रज़ि० थे।

मुसैलमा अपने साथियों के बीच में मौजूद था। आप उसके सर पर जा खड़े हुए, और बातें कीं। उसने कहा, अगर आप चाहें तो हम हुकूमत के मामले में आपको छोड़ दें, लेकिन अपने बाद उसको हमारे लिए तै फ़रमा दें।

आपने (खजूर की शाखा की ओर इशारा करते हुए) फ़रमाया, अगर मुझसे यह टुकड़ा चाहोगे तो तुम्हें यह भी न दूंगा और तुम अपने बारे में अल्लाह के मुक़र्रर किए हुए फ़ैसले से आगे नहीं जा सकते और अगर तुमने पीठ फेरी तो अल्लाह तुम्हें

1. फ़त्हुल बारी 8/87

तोड़कर रख देगा। ख़ुदा की क़सम! मैं तुझे वही व्यक्ति समझता हूं जिसके बारे में मुझे वह (सपना) दिखलाया गया है और यह साबित बिन क़ैस हैं जो तुम्हें मेरी ओर से जवाब देंगे, इसके बाद आप वापस चले आए।[1]

अन्त में वही हुआ, जिसका अन्दाज़ा अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अपने विवेक से कर लिया था, यानी मुसैलमा कज़्ज़ाब यमामा जाकर पहले तो अपने बारे में विचार करता रहा, फिर दावा किया कि उसे अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ नुबूवत के कामों में शरीक कर लिया गया है, चुनांचे उसने नुबूवत का दावा किया और विधान गढ़-गढ़कर बनाने लगा। अपनी क़ौम के लिए ज़िना और शराब हलाल कर दी और इन सब बातों के साथ-साथ अल्लाह के रसूल सल्ल० के बारे में यह गवाही भी देता रहा कि आप अल्लाह के नबी हैं।

उस व्यक्ति की वजह से उसकी क़ौम फ़िले में पड़कर उसकी अनुपालक बन गई और आवाज़ में आवाज़ मिलाने लगी। नतीजा यह हुआ कि उसका मामला बहुत संगीन हो गया। उसका इतना मान-सम्मान हुआ कि उसे यमामा का रहमान कहा जाने लगा और अब उसने अल्लाह के रसूल सल्ल० को एक ख़त लिखा, मुझे इस काम में आपके साथ शरीक कर लिया गया है, आधी हुकूमत हमारे लिए और आधी कुरैश के लिए।

तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने जवाब में लिखा, ज़मीन अल्लाह की है। वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, उसका वारिस बनाता है और अंजाम तक़्वा वालों के लिए है।[2] इब्ने मस्ऊद से रिवायत है कि इब्ने नवाहा और इब्ने असाल मुसैलमा के दूत बनकर नबी सल्ल० के पास आए थे। आपने मालूम किया, तुम दोनों गवाही देते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूं?

उन्होंने कहा, हम गवाही देते हैं कि मुसैलमा अल्लाह का रसूल है।

नबी सल्ल० ने फ़रमाया, मैं अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आया। अगर मैं किसी दूत को क़त्ल करता तो तुम दोनों को क़त्ल करता।[3]

मुसैलमा कज़्ज़ाब ने सन् 10 हि० में नुबूवत का दावा किया था और रबीउल अव्वल सन् 12 हि० में हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िलाफ़त के ज़माने में यमामा

---

1. देखिए सहीह बुख़ारी, बाब वफ़्द बनी हनीफ़ा और बाब क़िस्सतुल अस्वद अनसी 2/627, 628, और फ़त्हुल बारी 8/87-93
2. ज़ादुल मआद 3/31, 32
3. मुस्नद अहमद, मिश्कात 2/347

के अन्दर क़त्ल किया गया। उसका क़ातिल वहशी था, जिसने हज़रत हमज़ा रज़ि० को क़त्ल किया था।

नुबूवत का एक दावेदार तो यह था, जिसका अंजाम यह हुआ। नुबूवत का एक दूसरा दावेदार अस्वद अनसी था, जिसने यमन में फ़साद मचा रखा था। उसे नबी सल्ल० की वफ़ात से सिर्फ़ एक दिन और एक रात पहले हज़रत फ़ीरोज़ ने क़त्ल किया। फिर आपके पास उसके बारे में वह्य आई और आपने सहाबा किराम को इस घटना की खबर दी। उसके बाद यमन से हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास बाक़ायदा ख़बर आई।[1]

14. बनू आमिर बिन सासआ प्रतिनिधिमंडल—इस प्रतिनिधिमंडल में ख़ुदा के दुश्मन और आमिर बिन तुफ़ैल, हज़रत लबीद के सौतेले भाई अरबद बिन क़ैस, ख़ालिद बिन जाफ़र और जब्बार बिन असलम शामिल थे। ये सब अपनी क़ौम के सरदार और शैतान थे। आमिर बिन तुफ़ैल वही व्यक्ति है जिसने बेरे मऊना पर सत्तर सहाबा किराम के शहीद कराया था।

इन लोगों ने जब मदीना आने का इरादा किया तो आमिर और अरबद ने आपस में साज़िश की कि नबी सल्ल० को धोखा देकर अचानक क़त्ल कर देंगे। चुनांचे जब यह प्रतिनिधिमंडल मदीना पहुंचा तो आमिर ने नबी सल्ल० से बातें शुरू कीं और अरबद घूमकर आपके पीछे पहुंचा और एक बीता तलवार म्यान से बाहर निकाली, लेकिन इसके बाद अल्लाह ने उसका हाथ रोक लिया और वह तलवार नंगी न कर सका। अल्लाह ने अपने नबी को सुरक्षित रखा। नबी सल्ल० ने उन दोनों पर बद-दुआ की, जिसका नतीजा यह हुआ कि वापसी पर अल्लाह ने अरबद और उसके ऊंट पर बिजली गिरा दी, जिससे अरबद जल मरा।

उधर आमिर एक सलूलिया औरत के यहां उतरा और इसी बीच उसकी गरदन में गिलटी निकल आयी। इसके बाद वह यह कहता हुआ मर गया कि आह! ऊंट की गिलटी जैसी गिलटी और एक सलूलिया औरत के घर में मौत?

सहीह बुख़ारी की रिवायत है कि आमिर ने नबी सल्ल० के पास आकर कहा, मैं आपको तीन बातों का अधिकार देता हूं—

1. आपके लिए घाटी के लोग हों और मेरे लिए आबादी के लोग,

---

1. फ़त्हुल बारी 8/93

2. या मैं आपके बाद आपका ख़लीफ़ा हूं।

3. वरना मैं ग़तफ़ान के एक हज़ार घोड़े और एक हज़ार घोड़ियों समेत आप पर चढ़ाई करूंगा। इसके बाद वह एक औरत के घर में प्लेग का शिकार हो गया, (जिस पर उसने दुखी होकर कहा), क्या ऊंट की गिलटी जैसी गिलटी? और वह भी बनी फ़्लां की एक औरत के घर में? मेरे पास मेरा घोड़ा लाओ, फिर वह सवार हुआ और अपने घोड़े ही पर मर गया।

15. तजीब प्रतिनिधिमंडल—यह प्रतिनिधिमंडल अपनी क़ौम के सदक़ों को, जो ग़रीबों से ज़्यादा बच गए थे, लेकर मदीना आया। मंडली में तेरह आदमी थे जो क़ुरआन और सुन्नत पूछते और सीखते थे। उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल० से कुछ बातें मालूम कीं, तो आपने वे बातें उन्हें लिख दीं। वे ज़्यादा दिनों तक नहीं ठहरे।

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उन्हें उपहार दिए, तो उन्होंने अपने एक नवजवान को भेजा जो डेरे पर पीछे रह गया था। नवजवान ने सेवा में आकर अर्ज़ किया, हुज़ूर! ख़ुदा की क़सम! मुझे मेरे इलाक़े से इसके सिवा और कोई चीज़ नहीं लाई है कि आपसे मैं निवेदन करूं कि आप मेरे लिए यह दुआ फ़रमा दें कि वह मुझे अपनी बख़्शिश और रहमत से नवाज़े और मेरी मालदारी मेरे दिल में रख दे।

आपने उसके लिए यह दुअ फ़रमाई। नतीजा यह हुआ कि वह व्यक्ति सबसे ज़्यादा क़नाअत पसन्द हो गया और जब इस्लाम से पलटने की लहर चली तो सिर्फ़ यही नहीं कि वह इस्लाम पर जमा रहा, बल्कि अपनी क़ौम को वाज़ व नसीहत की, तो वह भी इस्लाम पर जमी रही।

फिर प्रतिनिधिमंडल वालों ने विदाई हज सन् 10 हि० में नबी सल्ल० से दोबारा मुलाक़ात की।

16. त्वै प्रतिनिधिमंडल—इस प्रतिनिधिमंडल के पास अरब के मशहूर घुड़सवार ज़ैदुल ख़ैल भी थे। इन लोगों ने जब नबी सल्ल० से बातें कीं और आपने उन पर इस्लाम पेश किया, तो उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और बहुत अच्छे मुसलमान हुए। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत ज़ैद की प्रशंसा करते हुए फ़रमाया कि मुझसे अरब को जिस व्यक्ति का गुण बयान किया गया और फिर वह मेरे पास आया तो मैंने उसे उसकी शोहरत से कुछ कमतर ही पाया, मगर इसके ख़िलाफ़ ज़ैदुल ख़ैल की शोहरत उनकी ख़ूबियों को नहीं पहुंच सकी और आपने उनका नाम ज़ैदुल ख़ैर रख दिया।

इस तरह सन् 09 हि० और सन् 10 हि० में एक के बाद एक प्रतिनिधि-

मंडल आए, सीरत लिखने वालों ने यमन, अज़्द, क़ुज़ाआ के बनी साद, हुज़ैम, बनी आमिर बिन क़ैस, बनी असद, बहरा, ख़ौलान, मुहारिब, बनी हारिस बिन काब, ग़ामिद, बनी मुन्तफ़िक़, सलामान, बनी अबस, मुज़ैना, मुराद, ज़ुबैद, कन्दा, ज़ीमर्रा, ग़स्सान, बनी ऐश, और नख़अ के प्रतिनिधिमंडलों का उल्लेख किया है। नख़अ का प्रतिनिधिमंडल अन्तिम प्रतिनिधिमंडल था, जो मुहर्रम सन् 11 के बीच में आया था और दो सौ आदमियों पर सम्मिलित था। बाक़ी बहुत से प्रतिनिधिमंडलों का आना सन् 09 हि० और सन् 10 हि० में हुआ था। सिर्फ़ कुछ प्रतिनिधिमंडल सन् 11 हि० तक आए थे।

इन प्रतिनिधिमंडलों के बराबर आते रहने से पता लगता है कि उस वक़्त इस्लामी दावत कितनी फैली-बढ़ी और कितनी लोकप्रिय हुई। इससे यह भी अन्दाज़ा होता है कि अरब के लोग मदीना को कितना सम्मान देते थे, यहां तक कि उसके सामने समर्पण कर देने के सिवा कोई रास्ता न देखते थे।

सच तो यह है कि मदीना अरब प्रायद्वीप की राजधानी बन चुका था और किसी के लिए उससे नज़र चुराना मुम्किन न था। अलबत्ता हम यह नहीं कह सकते कि इन सब लोगों के दिलों में इस्लाम घर कर चुका था, क्योंकि इनमें अभी बहुत से ऐसे अक्खड़ बद्दू थे जो सिर्फ़ अपने सरदारों को देखकर मुसलमान हो गए थे, वरना उनमें क़त्ल और लूटमार का जो रुझान जड़ पकड़ चुका था, उससे पाक-साफ़ नहीं हुए थे और अभी इस्लामी शिक्षाओं ने उन्हें पूरे तौर पर सभ्य नहीं बनाया था।

चुनांचे क़ुरआन मजीद सूरः तौबा में उनके कुछ लोगों की विशेषताओं का उल्लेख यों करता है—

'बद्दू कुफ़्र और निफ़ाक़ में ज़्यादा सख़्त हैं और इस बात के ज़्यादा लायक़ हैं कि अल्लाह ने अपने रसूल पर जो कुछ उतारा है, उसकी सीमाओं को न जानें और अल्लाह जानने वाला और हिक्मत वाला है और कुछ बद्दू जो कुछ ख़र्च करते हैं, उसे जुर्माना समझते हैं और तुम पर गर्दिशों का इन्तिज़ार करते हैं। उन्हीं पर बुरी गर्दिश है और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है।'

(9 : 97-98)

जबकि कुछ दूसरे लोगों की प्रशंसा की गई है और उनके बारे में यह फ़रमाया गया है कि—

'और कुछ अरब अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, और जो कुछ ख़र्च करते हैं, उसे अल्लाह की नज़दीकी और रसूल की दुआओं का ज़रिया बताते हैं। याद रहे कि यह उनके लिए नज़दीकी का ज़रिया है। बहुत जल्द

अल्लाह उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा। बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है।'

(9 : 99)

जहां तक मक्का, मदीना, सक़ीफ़, यमन और बहरैन के बहुत से शहर के रहने वालों का ताल्लुक़ है, तो उनके अन्दर इस्लाम दृढ़ था और उन्हीं में से बड़े सहाबा और मुसलमान पेशवा हुए।[1]

---

1. यह बात ख़ज़री ने मुहाज़रात 1/144 में कही है और जिन प्रतिनिधिमंडलों का उल्लेख किया गया या जिनकी ओर इशारा किया गया, उनके विस्तृत विवरण के लिए देखिए—सहीह बुख़ारी 1/13, 2/626-630, इब्ने हिशाम 2/501-503, 510-514, 537-542, 560-601, ज़ादुल मआद 3/26-60, फ़त्हुलबारी 8/83-103, रहमतुल लिल आंलमीन 1/184-217

दावत की सफलता और उसका प्रभाव

अब हम अल्लाह के रसूल सल्ल० की मुबारक ज़िंदगी के अन्तिम दिनों के वर्णन तक पहुंच रहे हैं, लेकिन इस वर्णन के लिए लेखनी को आगे बढ़ाने से पहले उचित दिखाई देता है कि तनिक ठहरकर आपके इस शानदार कारनामे पर एक उचटती नज़र डालें, जो आपके जीवन का सार है और जिसकी बुनियाद पर आपको तमाम नबियों और पैग़म्बरों में यह नुमायां दर्जा मिला कि अल्लाह ने आपके सर पर पहलों और पीछे के लोगों के नेतृत्व का मुकुट रख दिया।

आपसे कहा गया कि—

'ऐ चादर ओढ़ने वाले ! रात में खड़े हो, मगर थोड़ा।' (मुज़्ज़म्मिल)

'ऐ कम्बल ओढ़ने वाले ! उठ और लोगों को संगीन अंजाम से डरा दे।' (मुद्दस्सिर)

फिर क्या था? आप उठ खड़े हुए और अपने कंधे पर इस धरती की सबसे बड़ी अमानत का भारी बोझ उठाए बराबर खड़े रहे, यानी सारी मानवता का बोझ, सारे अक़ीदे का बोझ और अलग-अलग मैदानों में जंग व जिहाद और कोशिशों का बोझ।

आपने इंसानी अन्तरात्मा के मैदान में लडाई और जिहाद और कोशिशों का बोझ उठाया जो अज्ञानता के अंधविश्वासों में डूबा हुआ था, जिसे धरती और उसके अनेकानेक आकर्षण के भार ने बोझल कर रखा था, जो वासनाओं की बेड़ियों और फंदों से जकड़ा हुआ था और जब इस अन्तरात्मा को अपने कुछ साथियों की शक्ल में अज्ञानता और ज़मीनी ज़िंदगी के तह दर तह बोझ से आज़ाद कर लिया, तो एक दूसरे मैदान में एक दूसरी लड़ाई, बल्कि लड़ाई पर लड़ाई शुरू कर दी, यानी दावते इलाही के वे दुश्मन जो दावत और उस पर ईमान वालों के खिलाफ़ टूटे पड़ रहे थे और इस पवित्र पौधे को पनपने, मिट्टी के अन्दर जड़ पकड़ने, फ़िज़ा में शाखाएं लहराने और फलने-फूलने से पहले उसको शुरू ही में मार डालना चाहते थे, दावत के इन दुश्मनों के साथ आपने लगातार लड़ाइयां शुरू कीं और अभी आप अरब प्रायद्वीप की लड़ाइयों से फ़ारिग़ न हुए थे कि रूम ने इस नई उम्मत को दबोचने के लिए उसकी सीमाओं पर तैयारियां शुरू कर दीं।

फिर इन तमाम कार्रवाइयों के बीच अभी पहली लड़ाई—यानी अन्तरात्मा की लड़ाई खत्म नहीं हुई थी, क्योंकि वह यह हमेशा की लड़ाई है, इसमें शैतान से

मुक़ाबला है और वह मानव-अन्तरात्मा में घुसकर अपनी सरगर्मियां जारी रखता है और एक क्षण के लिए ढीला नहीं पड़ता।

मुहम्मद सल्ल० अल्लाह की ओर बुलाने के काम में लगे हुए थे और अलग-अलग मैदान की अलग-अलग लड़ाइयों में व्यस्त थे। दुनिया आपके क़दमों पर ढेर थी, पर आप तंगी और तुर्शी से गुज़र-बसर कर रहे थे। ईमान वाले आपके आस-पास अम्न और राहत का साया फैला रहे थे, पर आप जद्दोजेहद और मशक़्क़त अपनाए हुए थे, लगातार और कड़ी मेहनत से वास्ता था, लेकिन इन सब पर आपने बेहतरीन क़िस्म का सब्र अपना रखा था। रात में खड़े रहते (यानी नमाज़ में) थे, अपने रब की इबादत करते थे, उसके क़ुरआन की ठहर-ठहरकर क़िरात करते थे और सारी दुनिया में कटकर उसकी ओर मुतवज्जह हो जाते थे, जैसा कि आपको हुक्म दिया गया था।[1]

इस तरह आपने बराबर और लगातार लड़ने में बीस वर्ष से ऊपर गुज़ार दिए और इस बीच आपको कोई एक मामला दूसरे मामले से ग़ाफ़िल न कर सका, यहां तक कि इस्लामी दावत इतने बड़े पैमाने पर सफल हुई कि अक़्लें हैरान रह गईं। सारा अरब प्रायद्वीप आप के आधीन हो गया। उसके क्षितिज से अज्ञानता की धूल छट गई, बीमार अक़्लें तन्दुरुस्त हो गईं, यहां तक कि बुतों को छोड़ बल्कि तोड़ दिया गया। तौहीद की आवाज़ से फ़िज़ा गूंजने लगी और नए ईमान से जीवन पाए हुए मैदान अज़ानों से कांपने लगे और उसके फैलाव को अल्लाहु अक्बर की आवाज़ें चीरने लगीं। क़ारी क़ुरआन मजीद की तिलावत करते और अल्लाह के आदेशों का पालन करते हुए उत्तर-दक्षिण में फैल गए।

बिखरी हुई क़ौमें और क़बीले एक हो गए। इंसान बन्दों की बन्दगी से निकलकर अल्लाह की बन्दगी में दाख़िल हो गया। अब न कोई बड़ा है, न छोटा, न स्वामी है और न दास, न शासक है और न शासित, न ग़ालिब है, न मज़्लूम, बल्कि सारे लोग अल्लाह के बन्दे हैं और आपस में भाई-भाई हैं। एक दूसरे से मुहब्बत रखते हैं और अल्लाह के हुक्मों को बजा लाते हैं। अल्लाह ने उनसे अज्ञानता का गर्व, अहंकार और बाप-दादा पर घमंड का अन्त कर दिया है। अब अरबी को ग़ैर-अरबी पर और ग़ैर-अरबी को अरबी पर, गोरे को काले पर, काले को गोरे पर कोई श्रेष्ठता नहीं। श्रेष्ठता की कसौटी सिर्फ़ तक़्वा है, वरना सारे लोग आदमी की औलाद हैं और आदम मिट्टी से थे।

तात्पर्य यह कि इस दावत की वजह से अरबी एकता, मानवीय एकात्मता,

---

1. सैयद कुत्ब फ़ी ज़िलालिल क़ुरआन 29/168, 169

और सामूहिक न्याय वजूद में आ गया। मानवता का दुनिया की समस्याओं और आख़िरत के मामलों में कामियाबी का रास्ता मिला। दूसरे शब्दों में ज़माने की रफ़्तार बदल गई, धरती का चेहरा बदल गया, इतिहास की धारा मुड़ गई और सोचने की शैली बदल गई।

इस दावत से पहले दुनिया पर अज्ञानता छाई हुई थी, उसकी अन्तरात्मा बदबूदार थी और आत्मा दुर्गंध फैला रही थी। मूल्य बदल गए थे, ज़ुल्म और ग़ुलामी का दौर-दौरा था। अशान्ति छाई हुई थी, इस पर कुफ़्र और गुमराही के अंधे और मोटे परदे पड़े हुए थे, हालांकि आसमानी धर्म और दीन मौजूद थे, पर उनमें बिगाड़ ने जगह पा ली थी और कमज़ोरी पैदा हो गई थी उसकी पकड़ ख़त्म हो चुकी थी और वे बेजान रस्म व रिवाज का योग बनकर रह गए थे।

जब इस दावत ने मानव-जीवन पर अपना प्रभाव दिखाया तो मानव-आत्मा को अंधविश्वास, बन्दगी व ग़ुलामी, बिगाड़ और बदबू और गन्दगी और अनारकी से निजात दिलाई और इंसानी समाज को ज़ुल्म, सरकशी, बिखराव, बर्बादी, वर्गीय भेदभाव, शासकों के अत्याचार और काहिनों के रुसवा करने वाले दबावों से छुटकारा दिलाया और दुनिया को पाकी, सफ़ाई, बनाव, आज़ादी, ईमान, मारफ़त, यक़ीन, न्याय, और सत्कर्म की बुनियादों पर ज़िंदगी को आगे बढ़ाने, विकसित करने और हक़दार को हक़ पहुंचाने के लिए खड़ा किया।[1]

इन तब्दीलियों की वजह से अरब प्रायद्वीप ने एक ऐसी बरकत वाली उठान देखी जिसकी मिसाल इंसानी वजूद के किसी दौर में नहीं मिलती और इस प्रायद्वीप का इतिहास अपनी उम्र के उन दिनों में ऐसा जगमगाया कि इससे पहले कभी नहीं जगमगाया था।

---

1. वही, सैयद कुत्ब, मुक़द्दमा माज़ा खसिरत आलम, बिइन्हितातिल मुस्लिमीन पृ० 15

विदाई हज

दावत व तब्लीग़ (प्रचार-प्रसार) का काम पूरा हो गया और तौहीद (अल्लाह ही को माबूद मानना), रिसालत (मुहम्मद सल्ल० को आख़िरी रसूल मानना) और आख़िरत की बुनियाद पर एक नए समाज का निर्माण अमल में आ गया, अब मानो ग़ैबी आवाज़ लगाने वाला आपके दिल और दिमाग़ को यह एहसास दिला रहा था कि दुनिया में आपके ठहरने का ज़माना ख़त्म होने के क़रीब है।

चुनांचे आपने हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० को सन् 10 हि० में यमन का गवर्नर बनाकर रवाना फ़रमाया। विदा करते हुए और बातों के साथ यह भी फ़रमाया, ऐ मुआज़! शायद तुम मुझसे मेरे इस साल के बाद न मिल सकोगे, बल्कि शायद मेरी इस मस्जिद और मेरी क़ब्र के पास से गुज़रोगे और हज़रत मुआज़ रज़ि० यह सुनकर अल्लाह के रसूल सल्ल० की जुदाई के ग़म से रोने लगे।

वास्तव में अल्लाह चाहता था कि अपने पैग़म्बर सल्ल० को इस दावत का अच्छा फल दिखा दे, जिसके रास्ते में आपने बीस बरस से ज़्यादा मुद्दत तक तरह-तरह की कठिनाइयों और मशक़्क़तों को सहन किया था और उसकी शक्ल यह हो कि आप हज के मौक़े पर मक्का के पास अरब क़बीलों से मुताल्लिक़ लोगों और प्रतिनिधियों के साथ जमा हों, फिर वे आपसे दीन के आदेश और शरीअत मालूम करें और उनसे यह गवाही लें कि आपने अमानत अदा कर दी, रब के पैग़ाम को पहुंचा दिया और उम्मत की ख़ैरख़्वाही का हक़ अदा फ़रमा दिया।

ख़ुदा की इस मंशा के मुताबिक़ नबी सल्ल० ने जब तारीख़ी (ऐतिहासिक) हज के लिए अपने इरादे का एलान फ़रमाया, तो अरब जत्थ के जत्थ पहुंचना शुरू हो गए। हर एक की आरज़ू थी कि वह अल्लाह के रसूल सल्ल० के पदचिह्नों को अपने लिए रास्ते का निशान बनाए और आपका अनुपालन करे।[1]

फिर सनीचर के दिन जबकि ज़ीक़ादा में चार दिन बाक़ी थे, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कूच की तैयारी फ़रमाई।[2]

---

1. यह बात सहीह मुस्लिम में हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत की गई है। देखिए बाब हज्जतुन्नबी सल्ल० 1/394
2. हाफ़िज़ इब्ने हजर ने इसकी बहुत अच्छी खोज की है और कुछ रिवायतों में यह आया है कि ज़ीक़ादा के पांच दिन बाक़ी थे, तब आप रवाना हुए। इसे सही भी किया है, देखिए फ़त्हुल बारी 8/104

बालों में कंघी की, तेल लगाया, तहबंद पहना, चादर ओढ़ी, क़ुरबानी के जानवरों को क़लादा पहनाया और ज़ुहर के बाद कूच फ़रमा दिया और अस्र से पहले ज़ुल हुलैफ़ा पहुंच गए। वहां अस्र की नमाज़ दो रक्अत पढ़ी और रात भर ठहरे रहे। सुबह हुई तो सहाबा किराम से फ़रमाया, रात मेरे पालनहार की ओर से एक आने वाले ने आकर कहा, इस मुबारक घाटी में नमाज़ पढ़ो और कहो, हज में उमरा है।[1]

फिर ज़ुहर की नमाज़ से पहले आपने एहराम के लिए स्नान किया। इसके बाद हज़रत आइशा रज़ि० ने आपके पाक जिस्म और मुबारक सर में अपने हाथ से ज़रीरा और मुश्क भरी ख़ुशबू लगाई। ख़ुशबू की चमक आपकी मांग और दाढ़ी में दिखाई पड़ती थी, पर आपने यह ख़ुशबू धोई नहीं, बल्कि बाक़ी रखी।

फिर अपना तहबन्द पहना, चादर ओढ़ी, दो रक्अत ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी, इसके बाद मुसल्ले ही पर हज और उमरा दोनों का एक साथ एहराम बांधते हुए लब्बैक की आवाज़ बुलन्द की, फिर बाहर तशरीफ़ लाए, क़सवा ऊंटनी पर सवार हुए और दोबारा लब्बैक की आवाज़ बुलन्द की। इसके बाद ऊंटनी पर सवार खुले मैदान में तशरीफ़ ले गए, तो वहां भी लब्बैक पुकारा।

इसके बाद आपने अपना सफ़र जारी रखा। हफ़्ते बाद जब आप शाम को मक्का के क़रीब पहुंचे, तो ज़ीतुवा में ठहर गए। वहीं रात गुज़ारी और फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर ग़ुस्ल फ़रमाया, फिर मक्के में सुबह-सुबह दाख़िल हुए। यह इतवार 4 ज़िलहिज्जा का दिन था, रास्ते में आठ रातें गुज़री थीं। (औसत रफ़्तार से इस दूरी का यही हिसाब है) मस्जिदे हराम पहुंचकर आपने पहले ख़ाना काबा का तवाफ़ किया, फिर सफ़ा और मर्वः के बीच सई की, पर एहराम नहीं खोला, क्योंकि आपने हज व उमरा का एहराम एक साथ बांधा था और अपने साथ हदयि (क़ुर्बानी के जानवर) साथ लाए थे।

तवाफ़ व सई से फ़ारिग़ होकर आप ऊपरी मक्का में जहून के पास ठहरे, लेकिन दोबारा हज के तवाफ़ के सिवा कोई और तवाफ़ नहीं किया।

आपके जो सहाबा किराम अपने साथ हदयि (क़ुर्बानी का जानवर) नहीं लाए थे, आपने उन्हें हुक्म दिया कि अपना एहराम उमरे में बदल दें और बैतुल्लाह का तवाफ़ और सफ़ा और मर्वः में सई करके पूरी तरह हलाल हो जाएं। लेकिन चूंकि आप ख़ुद हलाल नहीं हो रहे थे, इसलिए सहाबा किराम को चिन्ता हुई।

आपने फ़रमाया, अगर मैं आपने मामले की वह बात पहले जान गया होता,

---

1. इसे बुख़ारी ने हज़रत उमर रज़ि० से रिवायत किया है 1/207

जो बाद में मालूम हुई तो मैं हदयि न लाता और अगर मेरे साथ हदयि न होती तो मैं भी हलाल हो जाता। आपका यह इर्शाद सुनकर सहाबा किराम ने सर झुका दिया और जिनके पास हदयि न थी, वे हलाल हो गए।

आठ ज़िलहिज्जा, तर्वीया के दिन, आप मिना तशरीफ़ ले गए और वहां 9 ज़िलहिज्जा की सुबह तक ठहरे रहे। ज़ुहर, अस्र, मग़िरब, इशा और फ़ज्र (पांच वक़्त की) नमाज़ें वहीं पढ़ीं। फिर इतनी देर रुके रहे कि सूरज निकला। इसके बाद अरफ़े को चल पड़े। वहां पहुंचे तो निमरा घाटी में क़ुब्बा तैयार था। वहीं उतरे।

जब सूरज ढल गया, तो आपके हुक्म से क़सवा पर कजावा करता गया और घाटी के बीच में तशरीफ़ ले गए। उस वक़्त आपके चारों ओर एक लाख चौबीस हज़ार या एक लाख चवालीस हज़ार इंसानों का समुद्र ठाठें मार रहा था। आपने उनके बीच ख़ुत्बा (वक्तव्य) इर्शाद फ़रमाया। आपने फ़रमाया—

लोगो! मेरी बात सुन लो। क्योंकि मैं नहीं जानता, शायद अपने इस साल के बाद इस जगह पर तुमसे कभी न मिल सकूंगा।[1]

तुम्हारा ख़ून और तुम्हारा माल एक दूसरे पर इसी तरह हराम है, जिस तरह तुम्हारे आज के दिन की, जारी महीने की और मौजूदा शहर की हुर्मत है। सुन लो, अज्ञानता की हर चीज़ मेरे पांव तले रौंद दी गई। अज्ञानता के ख़ून भी ख़त्म कर दिए गए और हमारे ख़ून में से पहला ख़ून जिसे मैं ख़त्म कर रहा हूं, वह रबीआ बिन हारिस के बेटे का ख़ून है—यह बच्चा बनू साद में दूध पी रहा था कि इन्हीं दिनों में क़बीला हुज़ैल ने उसे क़त्ल कर दिया और अज्ञानता का सूद (ब्याज) ख़त्म कर दिया गया और हमारे सूद में से पहला सूद जिसे मैं ख़त्म कर रहा हूं, वह अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का सूद है। अब यह सारे का सारा सूद ख़त्म है।

हां, औरतों के बारे में अल्लाह से डरो, क्योंकि तुमने उन्हें अल्लाह की अमानत के साथ लिया है और अल्लाह के कलिमे के ज़रिए हलाल किया है। उन पर तुम्हारा हक़ यह है कि वे तुम्हारे बिस्तर पर किसी ऐसे आदमी को न आने दें जो तुम्हें गवारा नहीं। अगर वे ऐसा करें तो तुम उन्हें मार सकते हो, लेकिन तेज़ मार न मारना और तुम पर उनका हक़ यह है कि तुम उन्हें भले तरीक़े से खिलाओ और पहनाओ।

---

1. इब्ने हिशाम 2/603

और मैं तुममें से ऐसी चीज़ छोड़े जा रहा हूं कि अगर तुमने उसे मज़बूती से पकड़े रखा तो इसके बाद हरगिज़ गुमराह न होगे और वह है अल्लाह की किताब ।[1]

लोगो, याद रखो, मेरे बाद कोई नबी नहीं और तुम्हारे बाद कोई उम्मत नहीं, इसलिए अपने रब की इबादत करना, पांच वक़्त की नमाज़ पढ़ना, रमज़ान के रोज़े रखना, ख़ुशी-ख़ुशी अपने माल की ज़कात देना, अपने पालनहार के घर का हज करना और अपने शासकों की बात मानना। ऐसा करोगे तो अपने पालनहार की जन्नत में दाखिल होगे ।[2]

और तुमसे मेरे बारे में पूछा जाने वाला है, तो तुम लोग क्या कहोगे?

सहाबा ने कहा, हम गवाही देते हैं कि आपने तब्लीग़ कर दी, पैग़ाम पहुंचा दिया, और ख़ैरख़्वाही क हक़ अदा फ़रमा दिया।

यह सुनकर आपने शहादत की उंगली को आसमान की ओर उठाया और लोगों की ओर झुकाते हुए तीन बार फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! गवाह रह ।[3]

आपके इर्शाद को रबीआ बिन उमैया बिन ख़ल्फ़ अपनी ऊंची आवाज़ से लोगों तक पहुंचा रहे थे ।[4] जब आप ख़ुत्बे से फ़ारिग़ हो चुके तो अल्लाह ने यह आयत उतारी—

'आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन की हैसियत से पसन्द कर लिया।'

(5 : 3)

जब यह आयत उतरी तो हज़रत उमर रज़ि० रोने लगे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा, क्यों रोते हो?

कहा, हम लोग अपने दीन के ताल्लुक़ से ज़्यादती में थे, लेकिन अब जबकि वह मुकम्मल हो गया है तो जो चीज़ मुकम्मल हो जाती है, घटने लगती है। आपने फ़रमाया, तुमने सच कहा ।[5]

---

1. सहीह मुस्लिम, बाब हज्जतुन्नबी 1/397
2. मादनुल आमाल, हदीस न० 1108, 1109, इब्ने जरीर, इब्ने माजा, इब्ने असाकिर, रहमतुल लिल आलमीन 1/263
3. सहीह मुस्लिम 1/397
4. इब्ने हिशाम 2/605
5. इसे इब्ने अबी शैबा और इब्ने जरीर ने रिवायत किया है। देखिए तफ़्सीर इब्ने कसीर 3/215 और अद्दुर्रुल मंसूर 2/456

ख़ुत्बे के बाद हज़रत बिलाल रज़ि० ने अज़ान और फिर इक़ामत कही। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई। इसके बाद हज़रत बिलाल ने फिर इक़ामत कही और आपने अस्त्र की नमाज़ पढ़ाई और इन दोनों नमाज़ों के बीच कोई और नमाज़ नहीं पढ़ी। इसके बाद सवार होकर आप अपने ठहरने की जगह पर तशरीफ़ ले गए। अपनी ऊंटनी क़सवा का पेट चट्टानों की ओर किया और जबले मशात (पैदल चलने वालों की राह में वाक़े रेतीले तोदे) को सामने किया और क़िब्ला रुख़ लगातार (इसी हालत में) ठहरे रहे, यहां तक कि सूरज डूबने लगा।

थोड़ा पीलापन ख़त्म हुआ, फिर सूरज की टिकिया ग़ायब हो गई। इसके बाद आपने हज़रत उसामा रज़ि० को पीछे हटाया और वहां से रवाना होकर मुज़्दलफ़ा तशरीफ़ लाए। मुज़्दलफ़ा में मग़्रिब और इशा की नमाज़ें एक अज़ान और दो इक़ामत से पढ़ीं। बीच में कोई नमाज़ नहीं पढ़ी। इसके बाद आप लेट गए और फ़ज्र होने तक लेटे रहे।

अलबत्ता सुबह होते ही अज़ान व इक़ामत के साथ फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी। इसके बाद क़सवा पर सवार होकर मशअरे हराम तशरीफ़ लाए और क़िब्ला रुख़ होकर अल्लाह से दुआ की और उसकी तक्बीर व तह्लील और तौहीद के कलिमे कहे। यहां इतनी देर तक ठहरे रहे कि ख़ूब उजाला हो गया। इसके बाद सूरज निकलने से पहले पहले मिना के लिए रवाना हो गए और अब की बार हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ि० को अपने पीछे सवार किया।

बत्ने मुहस्सिर में पहुंचे तो सवारी को ज़रा तेज़ी से दौड़ाया। फिर जो बीच का रास्ता जमरा कुबरा पर निकलता था, उससे चलकर जमरा कुबरा पर जा पहुंचे। उस ज़माने में वहां एक पेड़ भी था और उस जमरा कुबरा को जमरा अक़बा और जमरा ऊला भी कहते हैं। फिर आपने जमरा कुबरा को सात कंकरियां मारीं। हर कंकरी के साथ तक्बीर कहते जाते थे। कंकरियां छोटी-छोटी थीं, जिन्हें चुटकी में लेकर चलाया जा सकता था। आपने ये कंकरियां बत्ने वादी में खड़े होकर मारी थीं।

इसके बाद आप क़ुर्बानगाह तशरीफ़ ले गए और अपने मुबारक हाथ से 63 ऊंट ज़िब्ह किए, फिर हज़रत अली रज़ि० को सौंप दिया और उन्होंने बाक़ी 37 ऊंट ज़िब्ह किए, इस तरह सौ ऊंट की तायदाद पूरी हो गई। आपने हज़रत अली को भी अपनी हदयि (क़ुर्बानी) में शरीक फ़रमा लिया था।

इसके बाद आपके हुक्म से हर ऊंट का एक-एक टुकड़ा काटकर हांडी में डाला, और पकाया गया, फिर आपने और हज़रत अली ने इस गोश्त में से कुछ खाया और उसका शोरबा पिया।

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० सवार होकर मक्का तशरीफ़ ले गए, बैतुल्लाह का तवाफ़ किया। (इसे तवाफ़े इफ़ाज़ा कहते हैं) और मक्का ही में ज़ुहर की नमाज़ अदा फ़रमाई, फिर (ज़मज़म) के कुंएं पर) बनू अब्दुल मुत्तलिब के पास तशरीफ़ ले गए, वे हाजियों को ज़मज़म का पानी पिला रहे थे। आपने फ़रमाया, बनू अब्दुल मुत्तलिब ! तुम लोग पानी खींचो। अगर यह डर न होता कि पानी पिलाने के इस काम में लोग तुम्हें क़ाबू में कर लेंगे, तो भी मैं तुम लोगों के साथ खींचता, यानी अगर सहाबा किराम रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्ल० को ख़ुद पानी खींचते हुए देखते तो हर सहाबी ख़ुद पानी खींचने की कोशिश करता और इस तरह हाजियों को ज़मज़म पिलाने का जो शरफ़ बनू अब्दुल मुत्तलिब को हासिल था, उसकी व्यवस्था उनके क़ाबू में न रह जाती। चुनांचे बनू अब्दुल मुत्तलिब ने आपको एक डोल पानी दिया और आपने उसमें से ख़्वाहिश के मुताबिक़ पिया।[1]

आज ज़िलहिज्जा की दस तारीख़ थी। नबी सल्ल० ने आज भी दिन चढ़े (चाश्त के वक़्त) एक ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया था। ख़ुत्बे के वक़्त आप ख़च्चर पर सवार थे और हज़रत अली रज़ि० आपके इर्शाद सहाबा को सुना रहे थे। सहाबा किराम कुछ बैठे और कुछ खड़े थे।[2]

आपने आज के ख़ुत्बे में भी कल की कई बातें दोहराईं। सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम में हज़रत अबूबक्र रज़ि० का यह बयान रिवायत किया गया है कि नबी सल्ल० ने हमें यौमुन्नह्र (दस ज़िलहिज्जा) को ख़ुत्बा दिया, फ़रमाया—

'ज़माना घूम-फिरकर अपनी उसी दिन की शक्ल को पहुंच गया है जिस दिन अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया था। साल बारह महीने का है, जिनमें से चार महीने हराम के हैं—तीन लगातार यानी ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा और मुहर्रम और एक रजब मुज़र जो जुमादल आख़र और शाबान के दर्मियान में है।'

आपने यह भी फ़रमाया कि यह कौन-सा महीना है?

हमने कहा, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० बेहतर मानते हैं। इस पर आप ख़ामोश रहे, यहां तक कि हमने समझा कि आप इसका कोई और नाम रखेंगे। लेकिन फिर आपने फ़रमाया, क्या यह ज़िलहिज्जा नहीं है?

हमने कहा, क्यों नहीं?

आपने फ़रमाया, यह कौन सा शहर है?

हमने कहा, अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं। इस पर आप

---

1. मुस्लिम अन् जाबिर बाब हज्जतुन्नबी सल्ल० 1/397-400
2. अबू दाऊद, बाब अय-य वक़्तिन यख़तबु यौमन्नहरि 1/270

ख़ामोश रहे, यहां तक कि हमने समझा आप इसका कोई और नाम रखेंगे।

मगर आपने फ़रमाया, क्या यह बलदा (मक्का) नहीं है?

हमने कहा, क्यों नहीं?

आपने फ़रमाया, अच्छा तो यह दिन कौन-सा है?

हमने कहा, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० बेहतर जानते हैं। इस पर आप ख़ामोश रहे, यहां तक कि हमने समझा आप इसका कोई और नाम रखेंगे? मगर आपने फ़रमाया, क्या यह यौमुन्नह्र (क़ुरबानी का दिन, यानी दस ज़िलहिज्जा) नहीं है?

हमने कहा, क्यों नहीं?

आपने फ़रमाया, अच्छा तो सुनो कि तुम्हारा ख़ून, तुम्हाला माल और तुम्हारी आबरू एक दूसरे पर ऐसे ही हराम है, जैसे तुम्हारे इस शहर और तुम्हारे इस महीने में तुम्हारे आज के दिन की हुर्मत है।

और तुम लोग बहुत जल्द अपने पालनहार से मिलोगे और वह तुमसे तुम्हारे कामों के बारे में पूछेगा, इसलिए देखो, मेरे बाद पलटकर गुमराह न हो जाना कि आपस में एक दूसरे की गरदनें मारने लगो। बताओ, क्या मैंने तब्लीग़ कर दी?

सहाबा ने कहा, हां।

आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! गवाह रह, जो व्यक्ति मौजूद है, वह उन लोगों तक मेरी बातें पहुंचा दे जो मौजूद नहीं हैं, क्योंकि कुछ वे लोग जिन तक (ये बातें) पहुंचाई जाएंगी, वे कुछ (मौजूदा) सुनने वालों से कहीं ज़्यादा इन बातों की ऊंच-नीच को समझ सकेंगे।[1]

एक रिवायत में है कि आपने उस ख़ुत्बे में यह भी फ़रमाया, याद रखो, कोई भी जुर्म करने वाला अपने सिवा किसी और पर जुर्म नहीं करता (यानी इस जुर्म के बदले में कोई और नहीं, बल्कि ख़ुद मुजरिम ही पकड़ा जाएगा।) याद रखो, कोई जुर्म करने वाला अपने बेटे पर या कोई बेटा अपने बाप पर जुर्म नहीं करता, (यानी बाप के जुर्म में बेटे को या बेटे के जुर्म में बाप को नहीं पकड़ा जाएगा) याद रखो, शैतान निराश हो चुका है कि अब तुम्हारे इस शहर में उसकी पूजा की जाए, लेकिन अपने जिन कर्मों को तुम लोग तुच्छ समझते हो, इसका पालन किया जाएगा और वह इसी से राज़ी होगा।[2]

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब ख़ुत्बा अय्यामि मिना 1/234
2. तिर्मिज़ी 2/38, 135, इब्ने माजा, किताबुल हज, मिश्कात 1/234

इसके बाद आप तशरीक़ के दिनों में (यानी 11, 12, 13 ज़िलहिज्जा की तारीख़ों में) मिना में ठहरे रहे। इस बीच आप हज की रस्में भी अदा कर रहे थे, और लोगों को शरीअत के हुक्म भी सिखा रहे थे, अल्लाह का ज़िक्र भी फ़रमा रहे थे। इब्राहीमी मिल्लत के हदयि की सुन्नतें भी क़ायम कर रहे थे और शिर्क के निशानों का सफ़ाया भी फ़रमा रहे थे।

आपने तशरीक़ के दिनों में भी एक दिन ख़ुत्बा दिया। चुनांचे सुनने अबी दाऊद में रिवायत है कि हज़रत सरा बिन्त बनहान रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हमें रऊस के दिन[1] ख़ुत्बा दिया और फ़रमाया क्या यह तशरीक़ के दिनों के बीच का दिन नहीं है।[2] आपका आज का ख़ुत्बा भी कल (यौमुन्नह्र) के ख़ुत्बे जैसा था और यह ख़ुत्बा सूरः नस्र के उतरने के बाद दिया गया था।

तशरीक़ के दिनों के अन्त में दूसरे यौमुन्नह्र यानी 13 ज़िलहिज्जा को नबी सल्ल० ने मिना से कूच फ़रमाया और अबतह घाटी के ख़ीफ़ बनी कनाना में ठहरे। दिन का बाक़ी हिस्सा और रात वहीं गुज़ारी और ज़ुहर, अस्र, मग़्रिब और इशा की नमाज़ें वहीं पढ़ीं, अलबत्ता इशा के बाद एक नींद सोकर उठे, फिर सवार होकर बैतुल्लाह तशरीफ़ ले गए और विदाई तवाफ़ फ़रमा आए।

और अब हज के तमाम मनासिक से फ़ारिग़ होकर आपने सवारी का रुख़ मदीना मुनव्वरा की राह पर डाल दिया, इसलिए नहीं कि वहां पहुंचकर आराम फ़रमाएं, बल्कि इसलिए कि अब फिर अल्लाह के लिए अल्लाह की राह में एक नई जद्दोजेहद की शुरूआत करें।[3]

---

1. यानी 12 ज़िलहिज्जा (औनुल माबूद 2/143)
2. अबू दाऊद, बाब अय्यु यौमिन यख़तबु बिमिना 1/269
3. विदाई हज के विवरण के लिए देखिए, सहीह बुख़ारी, किताबुल मनासिक भाग 1, भाग 2/631, सहीह मुस्लिम बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०, फ़त्हुल बारी, भाग 3, शरह किताबुल मनासिक और भाग 8/103-110, इब्ने हिशाम 3/601-605, ज़ादुल मआद 1/196, 218-240

आख़िरी फ़ौजी मुहिम

रूमी साम्राज्य की सत्ता को गवारा न था कि वह इस्लाम और मुसलमानों के ज़िंदा रहने का हक़ मान ले, इसीलिए उसके साम्राज्य में रहने वाला कोई व्यक्ति इस्लाम की गोद में आ जाता, तो उसकी जान की ख़ैर न रहती जैसा कि मआन के रूमी गवर्नर हज़रत फ़रवा बिन अम्र जज़ामी के बाद पेश आ चुका था।

इस जुर्रात और घमंड की रोशनी में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सफ़र 11 हि० में एक बड़ी फ़ौज की तैयारी शुरू फ़रमाई और हज़रत उसामा बिन ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को इसका कमांडर मुक़र्रर फ़रमाते हुए हुक्म दिया कि बलक़ा का इलाक़ा और दारुम की फ़लस्तीनी धरती सवारों के ज़रिए रौंद आओ।

इस कार्रवाई का मक़सद यह था कि रूमियों को भयभीत करते हुए उनकी सीमाओं पर स्थित अरब क़बीलों का विश्वास बहाल किया जाए और किसी को यह सोचने की गुंजाइश न दी जाए कि कलीसा की हिंसा पर कोई पूछने वाला नहीं और इस्लाम क़ुबूल करने का मतलब सिर्फ़ यह है कि अपनी मौत को दावत दी जा रही है।

इस मौक़े पर कुछ लोगों ने कमांडर की नवउम्री को आलोचना का निशाना बनाया और इस मुहिम के अन्दर शामिल होने में विलम्ब किया। इस पर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि अगर तुम लोग उनकी कमांडरी पर ताने दे रहे हो, तो इनसे पहले इनके बाप की कमांडरी पर ताने दे चुके हो, हालांकि वह ख़ुदा की क़सम ! कमांडरी की योग्यता रखते थे और मेरे नजदीक सबसे प्रिय लोगों में से थे और यह भी उनके बाद मेरे नज़दीक सबसे प्रिय लोगों में से हैं।[1]

बहरहाल सहाबा किराम हज़रत उसामा के चारों ओर जमा होकर उनकी फ़ौज में शामिल हो गए और फ़ौज रवाना होकर मदीना से तीन मील दूर जर्फ़ नामी जगह पर पड़ाव के लिए ठहर गई, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० की बीमारी की चिन्ताजनक ख़बरों की वजह से आगे न बढ़ सकी, बल्कि अल्लाह के फ़ैसले के इन्तिज़ार में वहीं ठहरने पर मजबूर हो गई और अल्लाह का फ़ैसला यह था कि यह फ़ौज हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की ख़िदमत के दौर की पहली फ़ौजी मुहिम क़रार पाए।[2]

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब बअसन्नबीयु सल्ल० उसामा 2/612
2. वही, सहीह बुख़ारी : इब्ने हिशाम 2/606, 10

पवित्र जीवनी का अन्तिम अध्याय

रफ़ीक़े आला की ओर

विदाई की निशानियां

जब दीन की दावत पूरी हो गई और अरब की नकेल इस्लाम के हाथ में आ गई तो अल्लाह के रसूल सल्ल० की भावनाओं, बातों और परिस्थितियों आदि से ऐसी निशानियां ज़ाहिर होनी शुरू हो गईं जिनसे मालूम होता था कि अब आप इस ज़िंदगी और यहां के लोगों को अलविदा कहने वाले हैं, जैसे—

आपने रमज़ान सन् 10 हि० में बीस दिन एतकाफ़ फ़रमाया, जबकि हमेशा दस दिन ही एतकाफ़ फ़रमाया करते थे, फिर हज़रत जिब्रील ने आपको उस साल दो बार कुरआन का दौर कराया, जबकि हर साल एक ही बार दौर कराया करते थे। आपने विदाई हज में इर्शाद फ़रमाया, मुझे मालूम नहीं, शायद मैं इस साल के बाद अपनी इस जगह पर तुम लोगों से कभी न मिल सकूंगा। जमरा अक़बा के पास फ़रमाया, मुझसे अपने हज के अमल सीख लो, क्योंकि मैं इस साल के बाद शायद हज न कर सकूंगा। आप पर तशरीक़ के दिनों में सूरः अस्र उतरी और इससे आपने समझ लिया कि अब दुनिया से रवानगी का वक़्त आ पहुंचा है और यह मौत की सूचना है।

सफ़र सन् 11 हि० के शुरू में आप उहुद की तलेटी में तशरीफ़ ले गए और शहीदों के लिए इस तरह दुआ फ़रमाई, मानो ज़िंदों और मुर्दों से विदा हो रहे हैं, फिर वापस आकर मिंबर पर बैठे और फ़रमाया, मैं तुम्हारा मीरे कारवां हूं और तुम पर गवाह हूं। ख़ुदा की क़सम ! मैं इस वक़्त अपना हौज़ (हौज़ कौसर) देख रहा हूं। मुझे ज़मीन और ज़मीन की कुंजियां दी गई हैं औ ख़ुदा की क़सम ! मुझे यह डर नहीं है कि तुम मेरे बाद शिर्क करोगे, बल्कि डर इसका है कि दुनिया के बारे में तनाफ़ुस करोगे।[1] (उसमें चाव पैदा करने लगोगे।

एक दिन आधी रात को आप बक़ीअ तशरीफ़ ले गए और बक़ीअ वालों के लिए मग़्फ़िरत की दुआ की, फ़रमाया, ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलाम ! लोग जिस हाल में हैं, उसके मुक़ाबले में तुम्हें वह हाल मुबारक हो जिसमें तुम हो। फ़िले अंधेरी रात के टुकड़ों की तरह एक के पीछे एक चले आ रहे हैं और बाद वाला पहले वाले से ज़्यादा बुरा है। इसके बाद क़ब्र वालों को यह कहकर ख़ुशख़बरी

---

1. बुख़ारी व मुस्लिम, सहीह बुख़ारी 2/585, फ़त्हुल बारी 3/248, हदीस न० 344, 3596, 4042, 4085, 6426, 6590

दी कि हम भी तुमसे आ मिलने वाले हैं।

मरज़ की शुरुआत

29 सफ़र सन् 11 हि० सोमवार को अल्लाह के रसूल सल्ल० एक जनाज़े में वक़ीअ तशरीफ़ ले गए। वापसी पर रास्ते ही में सर दर्द शुरू हो गया और बुख़ार इतना तेज़ हो गया कि सर पर बंधी हुई पट्टी के ऊपर से महसूस होने लगा। यह आपके मृत्युरोग की शुरुआत थी। आपने इस हाल में ग्यारह दिन नमाज़ पढ़ाई। मरज़ की कुल मुद्दत 13 या 14 दिन थी।

अन्तिम सप्ताह

अल्लाह के रसूल सल्ल० की तबियत हर दिन बोझल होती जा रही थी। इस बीच आप अपनी बीवियों से पूछते रहते थे कि मैं कल कहां रहूंगा? मैं कल कहां रहूंगा?

इस सवाल से आप जो फ़रमाना चाहते थे, प्यारी बीवियां उसे समझ गईं। चुनांचे उन्होंने इजाज़त दे दी कि आप जहां चाहें, रहें। इसके बाद आप हज़रत आइशा रज़ि० के मकान में चले गए। जाते वक़्त हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास और अली बिन अबी तालिब रज़ि० के बीच टेक लगाकर चल रहे थे। सर पर पट्टी बंधी थी और पांव ज़मीन पर घसिट रहे थे। इस दशा में आप हज़रत आइशा रज़ि० के मकान में तशरीफ़ लाए और फिर मुबारक ज़िंदगी का आख़िरी सप्ताह वहीं गुज़ारा।

हज़रत आइशा रज़ि० 'मुअव्विज़ात' और अल्लाह के रसूल सल्ल० से याद की हुई दुआएं पढ़कर आप पर दम करती रहती थीं और बरकत की उम्मीद में आपका हाथ आपके मुबारक जिस्म पर फेरती रहती थीं।

मृत्यु से पांच दिन पहले

मृत्यु से पांच दिन पहले बुधवार को बुख़ार में तेज़ी आ गई, जिसकी वजह से तक्लीफ़ भी बढ़ गई और ग़शी छा गई। आपने फ़रमाया, मुझ पर अलग-अलग कुंवों के सात मशक पानी बहाओ, ताकि मैं लोगों के पास जाकर वसीयत कर सकूं। इस पर अमल करने के लिए अपको एक लगन में बिठा दिया और आपके ऊपर इतना पानी डाला गया कि आप 'बस-बस' कहने लगे।

उस वक़्त कुछ आपने हल्कापन महसूस किया और मस्जिद में तशरीफ़ ले गए—सर पर मटियाली पट्टी बंधी हुई थी, मिंबर पर आए और बैठकर ख़ुत्बा दिया। यह आख़िरी बैठक थी, जो आप बैठे थे। आपने अल्लाह की हम्द व सना

(गुण-गान) की, फिर फ़रमाया, लोगो ! मेरे पास आ जाओ। लोग आपके क़रीब आ गए, फिर आपने फ़रमाया, उसमें यह फ़रमाया, यहूदियों और ईसाइयों पर अल्लाह की लानत—कि उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया।[1]

आपने यह भी फ़रमाया, 'तुम लोग मेरी क़ब्र को बुत न बनाना कि उसकी पूजी की जाए।'[2]

फिर आपने अपने आपको क़सास (बदला लेना) के लिए पेश किया और फ़रमाया, 'मैंने किसी की पीठ पर कोड़ा मारा हो, तो यह मेरी पीठ हाज़िर है। वह बदला ले ले और अगर किसी की आबरू पर चोट की हो, तो मैं हाज़िर हूं, बदला ले ले।'

इसके बाद आप मिंबर से नीचे तशरीफ़ लाए। ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई, फिर मिंबर पर तशरीफ़ ले गए और दुश्मनी वग़ैरह से मुताल्लिक़ अपनी पिछली बातें दोहराई। एक व्यक्ति ने कहा, आपके ज़िम्मे मेरे तीन दिरहम बाक़ी हैं। आपने फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ि० से फ़रमाया, इन्हें अदा कर दो। इसके बाद अंसार के बारे में वसीयत फ़रमाई, फ़रमाया—

'मैं तुम्हें अंसार के बारे में वसीयत करता हूं, क्योंकि वे मरे दिल व जिगर हैं। उन्होंने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर दी, पर उनके हक़ बाक़ी रह गए हैं, इसलिए उनके नेकों से क़ुबूल करना और उनके बदकार से दरगुज़र करना।'

एक रिवायत में है कि आपने फ़रमाया, 'लोग बढ़ते जाएंगे और अंसार घटते जाएंगे, यहां तक कि खाने में नमक की तरह हो जाएंगे, इस तरह तुम्हारा जो आदमी किसी नफ़ा और नुक़्सान पहुंचाने वाले काम का ज़िम्मेदार हो तो वह उनके नेकों से क़ुबूल करे और उनके बुरों को माफ़ कराए।[3]

इसके बाद आपने फ़रमाया, एक बन्दे को अल्लाह ने अख़्तियार दिया कि वह या तो दुनिया की चमक-दमक और ज़ेब व ज़ीनत में से जो कुछ चाहे अल्लाह उसे दे दे या अल्लाह के पास जो कुछ है उसे अपना ले तो उससे बन्दे ने अल्लाह के पास वाली चीज़ को अख़्तियार कर लिया।'

अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० का बयान है कि यह बात सुनकर अबूबक्र रज़ि० रोने लगे और फ़रमाया, हम अपने मां-बाप समेत आप पर क़ुर्बान। इस पर हमें ताज्जुब हुआ। लोगों ने कहा, इस बूढ़े को देखो। अल्लाह के रसूल सल्ल० तो

---

1. सहीह बुख़ारी 1/62, मुअत्ता इमाम मालिक, पृ० 160
2. मुअत्ता इमाम मालिक, पृ० 65
3. सहीह बुख़ारी 1/536

एक बन्दे के बारे में यह बता रहे हैं कि अल्लाह ने उसे अख़्तियार दिया कि दुनिया की चमक-दमक और ज़ेब व ज़ीनत में से जो चाहे अल्लाह उसे दे दे या वह अल्लाह के पास जो कुछ है उसे अख़्तियार कर ले और यह बूढ़ा कह रहा है कि हम अपने मां-बाप के साथ आप पर क़ुरबान। (लेकिन कुछ दिनों बाद स्पष्ट हुआ कि) जिस बन्दे को अख़्तियार दिया गया था, वह ख़ुद अल्लाह के रसूल सल्ल० थे और अबूबक्र रज़ि० हममें सबसे ज़्यादा ज्ञान वाले थे।[1]

फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, मुझ पर अपने साथ और माल में सबसे ज़्यादा एहसान वाले अबूबक्र हैं और अगर मैं अपने रब के अलावा किसी और को प्रिय बनाता तो अबूबक्र को प्रिय बनाता। लेकिन (उनके साथ) उनका भाईचारा और मुहब्बत (का ताल्लुक़) है। मस्जिद में कोई दरवाज़ा बाक़ी न छोड़ा जाए, बल्कि उसे ज़रूर ही बन्द कर दिया जाए, सिवाए अबूबक्र के दरवाज़े के।[2]

चार दिन पहले

मृत्यु से चार दिन पहले जुमा रात को जबकि आप सख़्त तक्लीफ़ से दोचार थे, फ़रमाया, लाओ, मैं तुम्हें एक काग़ज़ लिख दूं जिसके बाद तुम लोग कभी गुमराह न होगे। उस वक़्त घर में कई आदमी थे, जिनमें हज़रत उमर रज़ि० भी थे, उन्होंने कहा, 'आप पर तक्लीफ़ का ग़लबा है और तुम्हारे पास क़ुरआन है, बस अल्लाह की यह किताब तुम्हारे लिए काफी है, इस पर घर के अन्दर मौजूद लोगों में मतभेद हो गया और वे झगड़ पड़े। कोई कह रहा था, लाओ, अल्लाह के रसूल सल्ल० लिख दें और कोई वही कह रहा था, जो हज़रत उमर रज़ि० ने कहा था। इस तरह लोगों ने जब ज़्यादा शोर किया और मतभेद बढ़ा तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, मेरे पास से उठ जाओ।[3]

फिर उसी दिन आपने तीन बातों की वसीयत फ़रमाई—

एक इस बात की वसीयत कि यहूदी और ईसाई और मुश्रिकों को अरब प्रायद्वीप से निकाल देना,

दूसरे इस बात की वसीयत कि प्रतिनिधिमंडलों का सत्कार उसी तरह करना जिस तरह आप किया करते।

अलबत्ता तीसरी बात को रिवायत करने वाला भूल गया, शायद यह किताब व सुन्नत को मज़बूती से पकड़े रहने की वसीयत थी या उसामा की फ़ौज को

---

1. बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात 2/546, 554,
2. वही, सहीह बुख़ारी 1/516
3. बुख़ारी व मुस्लिम, 1/22, 429, 449, 2/638

अमलीजामा पहनाने की वसीयत थी, या आपका यह इर्शाद था कि 'नमाज़ और तुम्हारे आधीन' यानी गुलामों और लौंडियों का ख़्याल रखना।

अल्लाह के रसूल सल्ल० मरज़ की तेज़ी के बावजूद उस दिन तक यानी वफ़ात से चार दिन पहले (जुमा रात) तक तमाम नमाज़ें ख़ुद ही पढ़ाया करते थे। उस दिन भी मग़रिब की नमाज़ आप ही ने पढ़ाई और उसमें सूरः मुर्सलात पढ़ी।[1]

लेकिन इशा के वक़्त मरज़ का बोझ इतना बढ़ गया कि मस्जिद में जाने की ताक़त न रही, हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि नबी सल्ल० ने मालूम किया कि क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली?

हमने कहा, नहीं, अल्लाह के रसूल! और वे आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं।

आपने फ़रमाया, मेरे लिए लगन में पानी रखो। हमने ऐसा ही किया। आपने ग़ुस्ल फ़रमाया, और उसके बाद उठना चाहा, लेकिन आप पर ग़शी छा गई। फिर दूर हुई तो आपने मालूम किया, क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली?

हमने कहा, नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! वे आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं। इसके बाद दोबारा, और फिर तीसरी बार वही बात पेश आई जो पहली बार पेश आ चुकी थी। आपने ग़ुस्ल फ़रमाया, फिर उठना चाहा, तो आप पर ग़शी छा गई। आख़िर में आपने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को कहलवा भेजा कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं। चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उन दिनों में नमाज़ पढ़ाई।[2] नबी सल्ल० की मुबारक ज़िंदगी में उनकी पढ़ाई हुई नमाज़ों की तायदाद सत्तरह है। जुमेरात की इशा, सोमवार की फ़ज्र और बीच के तीन दिनों की पन्द्रह नमाज़ें।[3]

हज़रत आइशा रज़ि० ने नबी से तीन बार या चार बार रुजू फ़रमाया कि इमामत का काम हज़रत अबूबक्र रज़ि० के बजाए किसी और को सौंप दे। उनका मंशा यह था कि लोग अबूबक्र रज़ि० के बारे में बदशगून न हों[4], लेकिन नबी सल्ल० ने हर बार इंकार कर दिया और फ़रमाया, तुम सब यूसुफ़ वालियां हो।[5]

---

1. सहीह बुख़ारी अन उम्मुल फ़ज़्ल, बाब मरज़ुन्नबी सल्ल० 2/637
2. बुख़ारी व मुस्लिम, मिश्कात 2/102
3. बुख़ारी मय फ़त्हुल बारी 2/193 हदीस न० 681, मुस्लिम किताबुस्सलात 1/315, हदीस न० 100, मुस्नद अहमद 6/229
4. इसके लिए देखिए बुख़ारी मय फ़त्हुल बारी 7/747, हदीस न० 4445, मुस्लिम किताबुस्सलात 1/31, हदीस न० 93, 94,
5. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के सिलसिले में जो औरतें अज़ीज़ मिस्र की बीवी की

अबूबक्र रज़ि० को हुक्म दो, वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं।[1]

तीन दिन पहले

हज़रत जाबिर का बयान है कि मैंने अल्लाह के रसपूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वफ़ात से तीन दिन पहले सुना, आप फ़रमा रहे थे, याद रखो, तुममें से किसी को मौत नहीं आनी चाहिए, मगर इस हालत में कि वह अल्लाह के साथ अच्छा गुमान रखता हो।[2]

एक दिन या दो दिन पहले

सनीचर या इतवार को नबी सल्ल० ने अपनी तबियत में कुछ सुधार महसूस किया, चुनांचे दो आदमियों के बीच चलकर ज़ुहर की नमाज़ में तशरीफ़ ले आए, उस वक़्त अबूबक्र रज़ि० सहाबा किराम को नमाज़ पढ़ा रहे थे। वह आपको देखकर पीछे हटने लगे। आपने इशारा किया कि पीछे न हटें और लाने वालों से फ़रमाया कि मुझे उनके बाज़ू में बिठा दो।

चुनांचे आपको अबूबक्र रज़ि० के बाईं बिठा दिया गया। इसके बाद अबूबक्र रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्ल० की नमाज़ की पैरवी करते जा रहे थे और सहाबा किराम को तक्बीर सुना रहे थे।[3]

मलामत कर रही थीं, वे देखने में तो उसकी हरकत के घटियापन को ज़ाहिर कर रही थीं, लेकिन यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखकर जब उन्होंने अपनी उंगलियां काट लीं तो मालूम हुआ कि वे ख़ुद भी अप्रत्यक्ष रूप से उन पर पूरी तरह मोहित हैं, यानी वे ज़ुबान से कुछ कह रही थीं, लेकिन उनके दिल में कुछ और ही बात थी। यही मामला यहां भी था। ज़ाहिरी तौर पर रसूलुल्लाह सल्ल० से कहा जा रहा था कि अबूबक्र दिल के नर्म हैं आपकी जगह खड़े होंगे तो रोने की वजह से क़ुरआन पढ़ न सकेंगे या सुना न सकेंगे, लेकिन दिल में यह बात थी कि अगर अल्लाह के रसूल सल्ल० वफ़ात पा गए तो अबूबक्र के बारे में नहूसत और बदशगूनी का ख़्याल लोगों के दिलों में जड़ पकड़ लेगा। चूंकि हज़रत आइशा रज़ि० की इस गुज़ारिश में दूसरी बीवियां भी शरीक थीं इसलिए आपने फ़रमाया, तुम सब यूसुफ़ वालियां हो, यानी तुम्हारे भी दिल में कुछ और है और ज़ुबान से कुछ और कह रही हो।

1. सहीह बुख़ारी, 1/99
2. तबक़ाते इब्ने साद 2/255, मुस्नद अबी दाऊद तयालसी, पृ० 246, पृ० 246, हदीस न० 1779, मुस्नद अबी याला 4/193, हदीस न० 2290
3. सहीह बुख़ारी, 1/98, 99, मय फ़त्हुल बारी 2/195, 238, 239, हदीस न० 683, 712, 713

एक दिन पहले

मृत्यु के एक दिन पहले यानी इतवार को नबी सल्ल० ने अपने तमाम ग़ुलामों को आज़ाद फ़रमा दिया। पास में छः या सात दीनार थे, उन्हें सदक़ा कर दिया[1], अपने हथियार मुसलमानों को भेंट कर दिए। रात में चिराग़ जलाने के लिए हज़रत आइशा रज़ि० ने चिराग़ पड़ोसिन के पास भेजा कि उसमें अपनी कुप्पी से ज़रा सा घी टपका दो।[2] आपकी ज़िरह एक यहूदी के पास तीस साअ (कोई 75 किलो) जौ के बदले रेहन रखी हुई थी।[3]

मुबारक ज़िंदगी का आख़िरी दिन

हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि सोमवार को लोग फ़ज्र की नमाज़ में लगे हुए थे और अबूबक्र रज़ि० नमाज़ पढ़ा रहे थे कि अचानक अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत आइशा रज़ि० के हुजरे का परदा उठाया और सहाबा किराम पर जो सफ़ें बांधे नमाज़ें पढ़ रहे थे, नज़र डाली, फिर मुस्कराए।

इधर अबूबक्र रज़ि० एड़ी के बल पीछे हटे कि सफ़ में जा मिलें। उन्होंने समझा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० नमाज़ के लिए तशरीफ़ लाना चाहते हैं।

हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि अल्लाह के रसूल (के इस अचानक ज़ाहिर होने से) मुसलमान इतने ख़ुश हुए कि चाहते थे कि नमाज़ के अन्दर ही फ़ित्ने में पड़ जाएं (यानी आपकी तबियत जानने के लिए नमाज़ तोड़ दें) लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अपने हाथ से इशारा फ़रमाया कि अपनी नमाज़ पूरी कर लो, फिर हुजरे के अन्दर तशरीफ़ ले गए और परदा गिरा लिया।[4]

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० पर किसी दूसरी नमाज़ का वक़्त नहीं आया।

---

1. तबक़ाते इब्ने साद 2/237, कुछ रिवायतों से मालूम होता है कि यह कदम आपने सोमवार की रात या सोमवार के दिन यानी हयाते तैयिबा के आख़िरी दिन फ़रमाया था।
2. तबक़ाते इब्ने साद 3/239
3. देखिए सहीह बुख़ारी हदीस न० 2068, 2096, 2200, 2251, 2252, 2386, 2509, 2513, 2916, 4167, मुग़ाज़ी के अन्त में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात हुई और आपकी ज़िरह (कवच) रेहन रखी हुई थी। मुस्नद अहमद में है कि आपको इतना न मिल सका कि इस ज़िरह को छुडा सकें।
4. वही, बाब मरज़ुन्नबी सल्ल० 2/240, मय फ़त्हुल बारी 2/193 हदीस न० 680, 681, 754, 1205, 4448

दिन चढ़े चाश्त के वक़्त आपने अपनी साइबज़ादी हज़रत फ़ातमा रज़ि० को बुलाया और उनसे कुछ कान में कहा। वह रोने लगीं। आपने उन्हें फिर बुलाया और कुछ कान में कहा, तो वह हंसने लगीं।

हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि बाद में हमारे मालूम करने पर उन्होंने बताया कि (पहली बार) नबी सल्ल० ने मुझसे कान में बताया कि आप इसी रोग में वफ़ात पा जाएंगे, इसलिए मैं रोई। फिर आपने मुझसे कान में कहा कि आपके घरवालों में सबसे पहले मैं आपके पीछे जाऊंगी, इस पर मैं हंसी।[1]

नबी सल्ल० ने हज़रत फ़ातमा को यह ख़ुशख़बरी भी दी कि आप दुनिया की तमाम औरतों की सरदार हैं।[2]

उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्ल० जिस बेचैनी और दर्द के शिकार थे, उसे देखकर हज़रत फ़ातिमा बेअख़्तियार पुकार उठीं, 'हाय अब्बा जान की तक्लीफ़ !'

आपने फ़रमाया, तुम्हारे अब्बा पर आज के बाद कोई तक्लीफ़ नहीं।[3]

आपने हसन व हुसैन को बुलाकर चूमा और उनके बारे में भलाई की वसीयत की। बीवियों को बुलाया और उन्हें वाज़ व नसीहत की।

इधर हर क्षण तक्लीफ़ बढ़ती जा रही थी और उस ज़हर का असर भी ज़ाहिर होना शुरू हो गया था, जिसे आपको ख़ैबर में खिलाया गया था। चुनांचे आप हज़रत आइशा रज़ि० से फ़रमाते थे, ऐ आइशा ! ख़ैबर में जो खाना मैंने खा लिया था, उसकी तक्लीफ़ बराबर महसूस कर रहा हूं। इस वक़्त मुझे महसूस हो रहा है कि उस ज़हर के असर से मेरी रगे जां (प्राण-नड़ी) कटी जा रही है।[4]

आपने सहाबा किराम को भी वसीयत फ़रमाई, फ़रमाया, 'नमाज़-नमाज़, और तुम्हारे आधीन ! (यानी लौंडी और ग़ुलाम) आपने ये शब्द कई बार दोहराए।[5]

इधर चेहरे पर आपने एक चादर डाल रखी थी। जब सांस फूलने लगी तो उसे चेहरे से हटा देते। उसी हालत में आपने फ़रमाया, (और यह आपका आख़िरी कलाम (बोली) और लोगों के लिए आपकी आख़िरी वसीयत थी) कि

---

1. बुख़ारी 2/638
2. कुछ रिवायतों से मालूम होता है कि बात करने और ख़ुशख़बरी देने की यह घटना मुबारक ज़िंदगी के आख़िरी दिन नहीं, बल्कि आख़िरी सप्ताह में घटी थी, देखिए रहमतुल लिल आलमीन 1/282
3. सहीह बुख़ारी 2/641
4. वही, 2/637
5. वही, 2/637

यहूदियों और ईसाइयों पर अल्लाह की लानत। उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिदें बना लिया—उनके इस काम से आप डरा रहे थे (अरब की धरती पर दो दीन बाक़ी न छोड़े जाएं।)[1]

मरणासन्न की स्थिति

फिर मरणासन्न की स्थिति शुरू हो गई और हज़रत आइशा रज़ि० ने आपको अपने ऊपर सहारा देकर टेक लिया।

उनका बयान है कि अल्लाह की एक नेमत मुझ पर यह है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मेरे घर में मेरी बारी के दिन में लब्बे और सीने के दर्मियान वफ़ात पाई और आपकी मौत के वक़्त अल्लाह ने मेरा लुआब और आपका लुआब इकट्ठा कर दिया।

हुआ यह कि अर्ब्दुहमान बिन अबूबक्र आपके पास तशरीफ़ लाए, उनके हाथ में मिस्वाक थी, और मैं अल्लाह के रसूल सल्ल० को टेके हुए थी। मैंने देखा कि आप मिस्वाक की तरफ़ देख रहे हैं। मैं समझ गई कि आप मिस्वाक चाहते हैं। मैंने कहा, आपके लिए ले लूं?

आपने सर से इशारा फ़रमाया कि हां।

मैंने मिस्वाक लेकर आपको दी, तो आपको कड़ी महसूस हुई। मैंने कहा, इसे आपके लिए नर्म कर दूं?

आपने सर के इशारे से कहा, हां।

मैंने मिस्वाक नर्म कर दी और आपने बहुत अच्छी तरह मिस्वाक की। आपके समने कटोरे में पानी था। आप पानी में हाथ डालकर पोंछते जाते थे और फ़रमाते जाते थे, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। मौत के लिए सख़्तियां हैं।[2]

मिस्वाक से फ़ारिग़ होते ही आपने हाथ या उंगली उठाई। निगाह छत की ओर बुलन्द की और दोनों होंठों पर कुछ हरकत हुई। हज़रत आइशा रज़ि० ने कान लगाया तो आप फ़रमा रहे थे, 'उन नबियों, सिद्दीक़ों और शहीदों के साथ, जिन्हें तूने इनाम से नवाज़ा। ऐ अल्लाह ! मुझे बख़्श दे। मुझ पर रहम कर और मुझे रफ़ीक़े आला में पहुंचा दे, ऐ अल्लाह ! रफ़ीक़े आला।[3]

---

1. सहीह बुख़ारी मय फ़त्हुल बारी 1/634, हदीस न० 435, 1330, 1390, 3453, 3454, 4441, 4443, 4444, 5815, 5816, तबक़ाते इब्ने साद 2/254
2. सहीह बुख़ारी 2/640
3. वही, सहीह बुख़ारी बाब मरजुन्नबी वाब आख़िरु मा तकल्लमन्नबी 2/638-641

आख़िरी वाक्य तीन बार दोहराया और उसी वक़्त हाथ झुक गया और आप रफ़ीक़े आला से जा मिले। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०

यह घटना 12 रबीउल अव्वल सन् 11 हि० दिन सोमवार, चाश्त के वक़्त घटित हुई। उस वक़्त नबी सल्ल० की उम्र तिरसठ साल चार दिन हो चुकी थी।

भारी शोक

यह ख़बर तुरन्त फैल गई। मदीना वासियों पर ग़म का पहाड़ टूट पड़ा। हर ओर अंधेरा छा गया।

हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि जिस दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० हमारे यहां तशरीफ़ लाए, उससे बेहतर और चमकदार दिन हमने कभी नहीं देखा और जिस दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० ने वफ़ात पाई, उससे ज़्यादा अप्रिय और अंधेरा भरा दिन भी हमने कभी नहीं देखा।[1]

आपकी मृत्यु पर हज़रत फ़ातिमा ने शोकाकुल हो फ़रमाया, 'ऐ अब्बा जान! जिन्होंने पालनहार की पुकार पर लब्बैक कहा, हाय अब्बा जान! जिनका ठिकाना जन्नतुल फ़िरदौस है, हाय अब्बा जान! हम जिब्रील को आपकी मौत की ख़बर देते हैं।'[2]

हज़रत उमर रज़ि० का विचार

वफ़ात की ख़बर सुनकर हज़रत उमर रज़ि० के होश जाते रहे। उन्होंने खड़े होकर कहना शुरू किया कुछ मुनाफ़िक़ समझते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० की मृत्यु हो गई, लेकिन सच तो यह है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० की वफ़ात नहीं हुई, बल्कि आप अपने रब के पास तशरीफ़ ले गए हैं, जिस तरह मूसा बिन इम्रान अलै० तशरीफ़ ले गए थे, और अपनी क़ौम चालीस रात ग़ायब रहकर उनके पास फिर वापस आ गए थे, हालांकि वापसी से पहले कहां जा रहा था कि वह इंतिक़ाल कर चुके हैं।

---

1. दारमी, मिश्कात, 2/547, इन्हीं हज़रत अनस रज़ि० से इन शब्दों में भी रिवायत है कि जिस दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए, हर चीज़ रोशन हो गई और जिस दिन आपने वफ़ात पाई, हर चीज़ अंधेरी हो गई और अभी हमने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपने हाथ भी न झाड़े थे, बल्कि आपके दफ़न ही में लगे हुए थे कि अपने दिलों को बदला हुआ महसूस किया। (जामेअ तिर्मिज़ी 5/588, 589)
2. सहीह बुख़ारी, बाब मरज़ुन्नबी सल्ल० 2/641

ख़ुदा की क़सम, अल्लाह के रसूल सल्ल० ज़रूर पलटकर आएंगे और उन लोगों के हाथ-पांव काट डालेंगे जो समझते हैं कि आपकी मौत वाक़े हो चुकी है ।[1]

हज़रत अबूबक्र रज़ि० का विचार

इधर हज़रत अबूबक्र सख़ में वाक़े अपने मकान से घोड़े पर सवार होकर तशरीफ़ लाए और उतरकर मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुए। फिर लोगों से कोई बात किए बग़ैर सीधे हज़रत आइशा रज़ि० के पास गए और अल्लाह के रसूल सल्ल० का क़स्द फ़रमाया।

आपका मुबारक जिस्म धारदार यमनी चादर से ढका हुआ था। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने चेहरे पर से चादर उठाई, उसे चूमा और रोए, फिर फ़रमाया, मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान। अल्लाह आप पर दो मौत जमा नहीं करेगा। जो मौत आप पर लिख दी गई थी, वह आपको आ चुकी।

इसके बाद अबूबक्र रज़ि० बाहर तशरीफ़ लाए। उस वक़्त भी हज़रत उमर रज़ि० लोगों से बात कर रहे थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उनसे कहा, उमर बैठ जाओ। हज़रत उमर रज़ि० ने बैठने से इंकार कर दिया। उधर सहाबा किराम हज़रत उमर रज़ि० को छोड़कर हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ओर मुतवज्जह हो गए। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया—

'तुममें से जो व्यक्ति मुहम्मद सल्ल० की पूजा करता था, तो (वह जान ले) कि मुहम्मद सल्ल० की मौत वाक़े हो चुकी है और तुममें से जो व्यक्ति अल्लाह की इबादत करता था, तो यक़ीनन अल्लाह हमेशा ज़िंदा रहने वाला है। कभी नहीं मरेगा। अल्लाह का इर्शाद है, मुहम्मद तो रसूल हैं, इनसे पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं, तो क्या अगर उनकी मौत वाक़े हो जाए या वे क़त्ल कर दिए जाएं, तो तुम लोग अपनी एड़ के बल पलट जाओगे? और जो आदमी अपनी एड़ के बल पलट जाए तो (याद रखे कि) वह अल्लाह को कुछ नुक़्सान नहीं पहुंच सकता और बहुत जल्द अल्लाह शुक्र करने वालों को बदला देगा।' (3 : 144)

सहाबा किराम जो अब तक बड़े दुखी और शोकाकुल थे, उन्हें हज़रत अबूबक्र रज़ि० का यह वक्तव्य सुनकर विश्वास हो गया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० वाक़ई वफ़ात पा चुके हैं। चुनांचे हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का बयान है कि अल्लाह की क़सम! ऐसा लगता था, मानो लोगों ने जाना ही न था कि

---

1. इब्ने हिशाम, 2/655

अल्लाह ने यह आयत उतारी है, यहां तक कि अबूबक्र रज़ि० ने उसकी तिलावत की तो सारे लोगों ने उनसे यह आयत ली और जब किसी इंसान को मैं सुनता तो वह इसी की तिलावत कर रहा होता।

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रज़ि० कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम, मैंने ज्यों ही अबूबक्र रज़ि० को यह आयत तिलावत करते हुए सुना मेरी पीठ टूटकर रह गई, यहां तक कि मेरे पांव मुझे उठा ही नहीं रहे थे और यहां तक कि अबूबक्र को इस आयत की तिलावत करते सुनकर मैं ज़मीन की ओर लुढ़क गया, क्योंकि मैं जान गया कि वाक़ई नबी सल्ल० की मौत वाक़े हो चुकी है।[1]

तैयारी और कफ़न-दफ़न

उधर नबी सल्ल० की तैयारी और कफ़न-दफ़न से पहले ही आपकी जानशीनी के मामले में मतभेद हो गया। सक़ीफ़ा बिन साइदा में मुहाजिर और अंसार के बीच विवाद छिड़ गया। तेज़-तेज़ बातें हुई, सवाल व जवाब हुआ और आख़िर में हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िलाफ़त पर सब सहमत हो गए।

इस काम में सोमवार का बाक़ी दिन गुज़र गया और रात आ गई। लोग नबी सल्ल० की तैयारी और कफ़न-दफ़न के बजाए इस दूसरे काम में लगे रहे, फिर रात गुज़री और मंगल की सुबह हुई। उस वक़्त तक आपका मुबारक जिस्म एक धारदार यमनी चादर से ढका बिस्तर ही पर रहा। घर के लोगों ने बाहर से दरवाज़ा बन्द कर दिया था।

मंगल के दिन आपके कपड़े उतारे बग़ैर ग़ुस्ल किया गया। ग़ुस्ल देने वाले लोग थे—हज़रत अब्बास, हज़रत अली, हज़रत अब्बास के दो सुपुत्र फ़ज़्ल और क़स्म, अल्लाह के रसूल सल्ल० के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम शक़रान, हज़रत उसामा बिन ज़ैद, और औस बिन ख़ौली रज़ि०। हज़रत अब्बास, फ़ज़्ल और क़स्म आपकी करवट बदल रहे थे, हज़रत उसामा और शक़रान पानी बहा रहे थे, हज़रत अली रज़ि० ग़ुस्ल दे रहे थे, और हज़रत औस ने आपको अपने सीने से टेक रखा था।[2]

आपको पानी और बेर की पत्ती से तीन ग़ुस्ल दिया गया और क़ुबा में स्थित साद बिन ख़ैसमा के ग़र्स नामी कुंएं से ग़ुस्ल दिया गया। आप उसका पानी

---

1. सहीह बुख़ारी 2/640, 641
2. देखिए इब्ने माजा 1/521

पिया करते थे।[1]

इसके बाद आपको तीन यमनी चादरों में कफ़नाया गया, उनमें कुरता और पगड़ी न थी।[2] बस आपको चादरों ही में लपेट दिया गया था।

आपकी आख़िरी आरामगाह के बारे में भी सहाबा किराम की राएं अलग-अलग थीं, लेकिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि कोई नबी भी नहीं उठाया गया, मगर उसे वहीं दफ़्न किया गया जहां उठाया गया।

इस फ़ैसले के बाद हज़रत अबू तलहा ने आपका वह बिस्तर उठाया जिस पर आपकी वफ़ात हुई थी और उसी के नीचे क़ब्र खोदी। क़ब्र लहद वाली (बग़ली) खोदी गई थी।

इसके बाद बारी-बारी दस-दस सहाबा किराम ने हुजरा शरीफ़ में दाख़िल होकर नमाज़ जनाज़ा पढ़ी, कोई इमाम न था। सबसे पहले आपके वंश वालों (बनू हाशिम) ने नमाज़ पढ़ी। फिर मुहाजिरों ने, फिर अंसार ने, फिर मर्दों के बाद औरतों ने और उनके बाद बच्चों ने।[3]

नमाज़ जनाज़ा पढ़ने में मंगल का पूरा दिन गुज़र गया और बुध की रात आ गई। रात में पाक ज़िस्म को दफ़्न कर दिया गया।

चुनांचे हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि हमें अल्लाह के रसूल सल्ल० के दफ़्न किए जाने का पता न चला, यहां तक कि हमने बुध की रात के बीच के वक़्तों में (और एक रिवायत के मुताबिक़, आख़िर रात में) फावड़ों की आवाज़ सुनी।[4]

---

1. तफ़्सील तबक़ाते इब्ने साद 2/277, 281 में देखिए
2. सहीह बुख़ारी 1/169, जनाइज़ बाबुल सियाबिल बीज़ लिल कफ़न, फ़त्हुल बारी 3/162, 167, 168, हदीस न० 1264, 1271, 1272, 1273, 1387, सहीह मुस्लिम जनाइज़, बाब कफ़नुल मैयत 1/306, हदीस न० 45
3. देखिए मुअत्ता इमाम मालिक, किताबुल जनाइज़, बाब मा जा-अ फ़ी दफ़निल मैयत 1/231, तबक़ाते इब्ने साद 2/288, 292
4. मुस्नद अहमद 6/62, 274, मृत्यु-घटना के विवरण के लिए देखिए सहीह बुख़ारी बाब मरज़ुन्नबी सल्ल० और उसके बाद के कुछ बाब मय फ़त्हुल बारी, साथ ही सहीह बुख़ारी, मिश्कातुल मसाबीह, बाब वफ़ातुन्नबी सल्ल०, इब्ने हिशाम 2/649-665, तलक़ीहे फ़हूम अह्लुल असर पृ० 38, 39, रहमतुल लिल आलमीन 1/277-286, समय का निर्धारण आमतौर से रहमतुल लिल आलमीन से लिया गया है।

रसूलुल्लाह सल्ल० का घराना

1. हज़रत ख़दीजा रज़ि०—हिजरत से पहले मक्का में नबी सल्ल० का घराना आपकी बीवी हज़रत ख़दीजा रज़ि० पर सम्मिलित था। शादी के वक़्त आपकी उम्र 25 साल थी और हज़रत ख़दीजा की उम्र 40 साल। हज़रत ख़दीजा रज़ि० आपकी पहली बीवी थीं और उनके जीते जी आपने कोई और शादी नहीं की।

आपकी सन्तान में हज़रत इब्राहीम के अलावा तमाम बेटे-बेटियां इन्हीं हज़रत ख़दीजा के गर्भ से थीं। बेटों में से तो कोई नहीं बच सका, अलबत्ता बेटियां जीवित रहीं। उनके नाम हैं—1. ज़ैनब, 2. रुक़ैया, 3. उम्मे कुलसूम, और 4. फ़ातिमा रज़ि०।

ज़ैनब की शादी हिजरत से पहले उनके फुफेरे भाई हज़रत अबुल आस बिन रबीअ से हुई। रुक़ैया और उम्मे कुलसूम की शादी एक के बाद एक हज़रत उस्मान रज़ि० से हुई। हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की शादी बदर और उहुद की लड़ाइयों के बीच वाली मुद्दत में, हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ि० से हुई और उनके गर्भ से हज़रत हसन, हुसैन, ज़ैनब और उम्मे कुलसूम रज़ि० पैदा हुईं।

मालूम है कि नबी सल्ल० को उम्मत के मुक़ाबले में यह प्रमुख विशेषता प्राप्त थी कि आप अनेकानेक उद्देश्यों को सामने रखकर चार से ज़्यादा शादियां कर सकते थे। चुनांचे जिन औरतों से आपने निकाह किया, उनकी तायदाद ग्यारह थी, जिनमें से नौ बीवियां आपकी वफ़ात के वक़्त मौजूद थीं और दो बीवियां आपकी ज़िंदगी ही में वफ़ात पा चुकी थीं। (यानी हज़रत ख़दीजा रज़ि० और उम्मुल मसाकीन हज़रत ज़ैनब बिन्त ख़ुज़ैमा रज़ि०) इनके अलावा दो औरतें और हैं जिनके बारे में मतभेद है कि आपका उनसे निकाह हुआ था या नहीं, लेकिन इस पर सहमत हैं कि उन्हें आपके पास विदा नहीं किया गया।

नीचे हम इन पाक बीवियों के नाम और थोड़े में उनके हालात क्रमवार लिख रहे हैं।

2. हज़रत सौदा बिन्त ज़मआ रज़ि०—इनसे अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत ख़दीजा से वफ़ात के लगभग एक महीने बाद नुबूवत के दसवें साल शव्वाल के महीने में शादी की। आपसे पहले हज़रत सौदा अपने चचेरे भाई सकरान बिन अम्र के निकाह में थीं और वह उन्हें बेवा छोड़कर इंतिक़ाल कर चुके थे। हज़रत सौदा रज़ि० की वफ़ात शव्वाल सन् 54 हि० मे मदीना में हुई।

3. हज़रत आइशा बिन्त अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि०—इनसे अल्लाह के रसूल सल्ल० ने नुबूवत के ग्यारहवें साल शव्वाल के महीने में शादी की। यानी हज़रत सौदा से शादी के एक साल बाद और हिजरत से दो साल पांच महीने पहले। उस वक़्त उनकी उम्र छः वर्ष थी। फिर हिजरत के सात माह बाद शव्वाल सन् 01 हि० में उन्हें विदा किया गया। उस वक़्त उनकी उम्र 9 साल थी और वह कुंवारी थीं। उनके अलावा किसी और कुंवारी औरत से आपने शादी नहीं की।

हज़रत आइशा रज़ि० आपकी सबसे चहेती बीवी थीं और उम्मत की औरतों में सबसे ज़्यादा समझदार और विदुषी थीं। औरतों पर उनकी प्रमुखता ऐसे ही है जैसे तमाम खानों पर सरीद की प्रमुखता। 117 शाबान सन् 57 हि० या सन् 58 हि० में हज़रत आइशा रज़ि० ने वफ़ात पाई और बक़ीअ में दफ़न की गईं।

4. हज़रत हफ़सा बिन्त उमर बिन ख़त्ताब रज़ि०—इनके पहले शौहर ख़नीस बिन हुज़ाफ़ा सहमी रज़ि० थे जो बद्र और उहद के बीच की मुद्दत में वफ़ात पा गए और वह बेवा हो गईं। फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनसे शादी कर ली। शादी की यह घटना सन् 03 हि० की है। शाबान 45 हि० में साठ साल की उम्र में मदीना में वफ़ात पाई और बक़ीअ में दफ़न हुई

5. हज़रत ज़ैनब बिन्त ख़ुज़ैमा रज़ि०—यह क़बीला बनू हिलाल बिन आमिर बिन सअसआ से ताल्लुक़ रखती थीं। ग़रीबों-मिस्कीनों के लिए दया-भाव रखती थीं, इसीलिए उनकी उपाधि ही उम्मुल मसाकीन हो गई थीं। यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श के निकाह में थीं। वह उहुद की लड़ाई में शहीद हो गए तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सन् 04 हि० में उनसे शादी कर ली, मगर उसके बाद सिर्फ़ तीन माह या आठ महीने ज़िंदा रहीं और रबीउल आख़र या ज़ीक़ादा सन् ०४ हि० में इंतिक़ाल कर गईं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और उन्हें बक़ीअ में दफ़न किया गया।

6. उम्मे सलमा बिन्त अबी उमैया रज़ि०—यह अबू सलमा रज़ि० के निकाह में थीं, जुमादल आख़र सन् 04 हि० में हज़रत अबू सलमा का इंतिक़ाल हो गया तो उनके बाद शव्वाल सन् 04 हि० में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनसे शादी कर ली। बहुत समझदार और बड़ी बुद्धिमान थीं। चौरासी साल की उम्र में सन् 59 हि० में और कहा जाता है कि सन् 62 हि० में वफ़ात पाई और बक़ीअ में दफ़न की गईं।

7. ज़ैनब बिन्त जह्श बिन रिआब रज़ि०—यह क़बीला बनू असद बिन ख़ुज़ैमा से ताल्लुक़ रखती थीं और अल्लाह के रसूल सल्ल० की फूफी की बेटी थीं। इनकी शादी पहले हज़रत ज़ैद बिन हारिसा से हुई थी, जिन्हें अल्लाह के

रसूल सल्ल० का बेटा समझा जाता था, लेकिन हज़रत ज़ैद से निबाह न हो सका और उन्होंने तलाक़ दे दी। इद्दत ख़त्म होने के बाद अल्लाह ने रसूलुल्लाह सल्ल० को ख़िताब करते हुए फ़रमाया—

'जब ज़ैद ने उनसे अपनी ज़रूरत पूरी कर ली, तो हमने उन्हें आपके निकाह में दे दिया।'

उन्हीं के ताल्लुक़ से सूरः अहज़ाब की और कई आयतें उतरीं, जिनमें लय पालक के विवाद का दो टूक फ़ैसला कर दिया गया। विवरण आगे आ रहा है। हज़रत ज़ैनब से रसूलुल्लाह सल्ल० की शादी ज़ीक़ादा सन् 05 हि० में और कहा जाता है कि सन् 04 हि० में हुई। यह तमाम औरतों से बढ़कर इबादतें करने वाली और सदक़ा करने वाली ख़ातून थीं। सन् 20 हि० में वफ़ात पाई। उस वक़्त उनकी उम्र 53 साल थी और यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद उम्महातुल मोमिनीन में पहली बीवी हैं, जिनका इंतिक़ाल हुआ। हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और उन्हें बक़ीअ में दफ़न किया गया।

8. जुवैरिया बिन्त हारिस रज़ि०—इनके वालिद क़बीला ख़ुज़ाआ की शाख़ा बनुल मुस्तलिक़ के सरदार थे। हज़रत जुवैरिया बनुल मुस्तलिक़ के क़ैदियों में लाई गई थीं और हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शमास के हिस्से में पड़ी थीं। उन्होंने हज़रत जुवैरिया से एक तैशुदा रक़म के बदले आज़ाद कर देने का मामला कर लिया। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनकी ओर से तैशुदा रक़म अदा कर दी और उनसे शादी कर ली। यह शाबान सन् 05 या 06 हिजरी की घटना है। इस शादी के नतीजे में मुसलमानों ने बनुल मुस्तलिक़ के सौ घराने आज़ाद कर दिए और कहा कि ये लोग अल्लाह के रसूस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ससुराली हैं। चुनांचे यह अपनी क़ौम के लिए सारी औरतों से बढ़कर बरकत वाली साबित हुईं। रबीउल अव्वल सन् 56 हि० या 55 हिजरी में वफ़ात पाई। उम्र 65 वर्ष थी।

9. उम्मे हबीबा रमला बिन्त अबू सुफ़ियान रज़ि०—यह उबैदुल्लाह बिन जहश के निकाह में थीं और उसके साथ हिजरत करके हब्शा भी गई थीं, लेकिन उबैदुल्लाह ने वहां जाने के बाद इस्लाम से विमुख होकर ईसाई धर्म अपना लिया और फिर वहीं इंतिकाल कर गया, लेकिन उम्मे हबीबा अपने दीन और अपनी हिजरत पर क़ायम रहीं।

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मुहर्रम 07 हि० में अम्र बिन उमैया जमरी को अपना ख़त देकर नजाशी के पास भेजा तो नजाशी को यह पैग़ाम भी दिया

कि उम्मे हबीबा से आपका निकाह कर दे। उसने उम्मे हबीबा की मंज़ूरी के बाद उनसे आपका निकाह कर दिया और शुरहबील बिन हसना के साथ उन्हें आपकी ख़िदमत में भेज दिया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर से वापसी के बाद उनकी रुख़सती कराई। सन् 42 हि० या 44 हि० या 50 हि० में वफ़ात पाई।

10. हज़रत सफ़िया बिन्त हुइ बिन अख़्तब रज़ि०—यह बनी इस्राईल से थीं और ख़ैबर में क़ैद की गईं, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उन्हें अपने लिए चुन लिया और आज़ाद करके शादी कर ली। यह ख़ैबर-विजय के बाद की घटना है। इसके बाद ख़ैबर से 12 मील की दूरी पर मदीना के रास्ते में मद्दे सहबा के पास उन्हें रुख़्सत कराया। सन् 50 हि० में और कहा जाता है कि सन् 52 हि० में और कहा जाता है कि सन् 36 हि० में वफ़ात पाई और बक़ीअ में दफ़न की गईं।

11. हज़रत मैमूना बिन्त हारिस रज़ि०—यह उम्मुल फ़ज़्ल लुबाबा बिन्त हारिस रज़ि० की बहन थीं। उनसे अल्लाह के रसूल सल्ल० ज़ीक़ादा सन् 07 हि० में उमरा क़ज़ा से फ़ारिग़ होने और सहीह कथन के अनुसार एहराम से हलाल होने के बाद शादी की और मक्का से 9 मील दूर सर्फ़ नामी जगह में उन्हें रुख़्सत कराया। सन् 61 हि० और कहा जाता है कि सन् 63 हि० में वहीं उनकी वफ़ात भी हुई और वहीं दफ़न भी की गईं। उनकी क़ब्र की जगह आज भी लोगों में जानी-पहचानी है।

ये ग्यारह बीवियां हुईं जो अल्लाह के रसूल सल्ल० के निकाह में आईं और आपके साथ रहीं। इनमें से दो बीवियां यानी हज़रत ख़दीजा और हज़रत ज़ैनब उम्मुल मसाकीन की वफ़ात आपकी ज़िंदगी ही में हुई और नौ बीवियां आपकी वफ़ात के बाद हयात रहीं।

इनके अलावा दो और औरतें जो आपके पास रुख़्सत नहीं की गईं, उनमें से एक क़बीला बनू किलाब से ताल्लुक़ रखती थीं और एक क़बीला किन्दा से। यही क़बीला किन्दा वाली ख़ातून (महिला) जोनिया के नाम से मशहूर हैं। इनका आपसे विवाह हुआ था या नहीं और इनका नाम और नसब क्या था, इस बारे में सीरत लिखने वालों के बीच बड़े मतभेद हैं जिनका विवरण देने की हम कोई ज़रूरत नहीं महसूस करते।

जहां तक लौंडियों का मामला है, तो मशहूर यह है कि आपने दो लौंडियों को अपने पास रखा—

एक मारिया क़िब्तिया को, जिन्हें मिस्र के बादशाह मक़ूक़िस ने उपहार के

रूप में भेजा था। इनके गर्भ से आपके पुत्र इब्राहिम पैदा हुए जो बचपन ही में 28 या 29 शव्वाल सन् 10 हि० मुताबिक़ 28 जनवरी सन् 632 ई० को मदीना में इंतिक़ाल कर गए।

दूसरी लौंडी रेहाना बिन्त ज़ैद थीं जो यहूदियों के क़बीले बनी नज़ीर या बनी कुरैज़ा से ताल्लुक़ रखती थीं। यह बनू कुरैज़ा के क़ैदियों में थीं। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इन्हें अपने लिए चुना था और वह आपके क़ब्ज़े में थीं।

इनके बारे में कुछ शोध करने वालों का कहना है कि इन्हें नबी सल्ल० ने लौंडी की हैसियत में नहीं रखा था, बल्कि आज़ाद करके शादी कर ली थी, लेकिन इब्ने क़य्यिम की नज़र में पहला कथन प्रमुख है।

अबू उबैदा ने इन दो लौंडियों के अलावा और दो लौंडियों का उल्लेख किया है, जिसमें से एक का नाम जमीला बताया जाता है जो किसी लड़ाई में गिरफ़्तार होकर आई थीं और दूसरी कोई और लौंडी थीं, जिन्हें हज़रत ज़ैनब बिन्त जह्श ने आपको हिबा किया था।[1]

यहां ठहरकर अल्लाह के रसूल सल्ल० की मुबारक ज़िंदगी के एक पहलू पर तनिक ध्यान देने की ज़रूरत है। आपने अपनी जवानी के बड़े ताक़त भरे और अच्छे दिन यानी लगभग 30 वर्ष सिर्फ़ एक बीवी को काफ़ी समझते हुए गुज़ार दिए और वह भी ऐसी बीवी पर पर लगभग बुढ़िया थीं, यानी पहले हज़रत ख़दीजा पर और फिर हज़रत सौदा पर, जो क्या यह विचार किसी दर्जे में भी मुनासिब समझा जा सकता है कि इस तरह इतनी मुद्दत बिता देने के बाद जब आप बुढ़ापे की दहलीज़ पर पहुंच गए तो आपके अन्दर यकायकी वासना इतनी ज़्यादा बढ़ गई कि आपको एक के बाद एक नौ शादियां करनी पड़ीं। जी नहीं! आपकी ज़िंदगी इन दोनों हिस्सों पर नज़र डालने के बाद कोई भी होशमंद आदमी इस विचार को उचित नहीं मान सकता।

सच तो यह है कि आपने इतनी बहुत सारी शादियां कुछ दूसरे ही उद्देश्यों से की थीं, जो आम शादियों के निश्चित उद्देश्य से बहुत ही ज़्यादा उच्च और महान थे।

इसे इस तरह स्पष्ट किया जा सकता है कि आपने हज़रत आइशा रज़ि० और हज़रत हफ़्सा रज़ि० से शादी करके हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० से जो ससुराली रिश्ता क़ायम किया, इसी तरह हज़रत उस्मान रज़ि० से एक के बाद दूसरी दो लड़कियों हज़रत रुक़ैया और हज़रत उम्मे कुलसूम की

---

1. देखिए ज़ादुल मआद 1/29

शादी करके और हज़रत अली रज़ि० से अपनी चहेती बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की शादी करके उनसे जो ससुराली रिश्ते क़ायम किए, उनका उद्देश्य यह था कि आप इन चारों बुज़ुर्गों से ताल्लुक़ात बिल्कुल पक्के कर लें, क्योंकि ये चारों बुज़ुर्ग पेचीदा से पेचीदा और विकट से विकट परिस्थितियों में भी इस्लाम के लिए जिस फ़िदाकारी से और अपना सब कुछ लगा देने की भावना से जो नुमायां काम किया है, उसे सब जानते हैं।

अरब का तरीक़ा था कि वे ससुराली रिश्तों का बड़ा आदर करते थे। उनके नज़दीक दामादी का रिश्ता अलग-अलग क़बीलों के दर्मियान क़रीबी हासिल करने का एक अहम अध्याय था और दामाद से लड़ाई लड़ना और उनके ख़िलाफ़ मोर्चा बनाना बड़े शर्म और लज्जा की बात थी।

इस चलन को सामने रखकर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कुछ शादियां इस मक़्सद से कीं कि बहुत से लोगों और क़बीलों की इस्लाम दुश्मनी का ज़ोर तोड़ दें और उनकी दुश्मनी और नफ़रत की चिंगारी बुझा दें। चुनांचे उम्मे सलमा रज़ि० क़बीला बनू मख़्ज़ूम से ताल्लुक़ रखती थीं जो अबू जहल और ख़ालिद बिन वलीद का क़बीला था। जब नबी सल्ल० ने उनसे शादी कर ली तो ख़ालिद बिन वलीद में वह सख़्ती न रही, जिसका प्रदर्शन वह उहुद में कर चुके थे, बल्कि थोड़े ही अर्से बाद उन्होंने अपनी मर्ज़ी, ख़ुशी और ख़्वाहिश से इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

इसी तरह जब आपने अबू सुफ़ियान की बेटी हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० से शादी कर ली, तो फिर अबू सुफ़ियान आपके मुक़ाबले में न आया और जब हज़रत जुवैरिया और हज़रत सफ़िया से आपने शादी कर ली, तो क़बीला मुस्तलिक़ और क़बीला बनी नज़ीर ने मोर्चाबन्दी छोड़ दी। हुज़ूर सल्ल० के निकाह में इन दोनों बीवियों के आने के बाद इतिहास में इनके क़बीलों का किसी हंगामे और जंगी दौड़-भाग का पता नहीं मिलता, बल्कि हज़रत जुवैरिया तो अपनी क़ौम के लिए सारी औरतों से ज़्यादा बरकत वाली साबित हुई, क्योंकि जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनसे शादी कर ली तो सहाबा किराम ने उनके एक सौ घरानों को जो क़ैद में थे, आज़ाद कर दिया और कहा कि ये लोग अल्लाह के रसूल सल्ल० के ससुराली हैं। इनके दिलों पर इस एहसान का जो ज़ोरदार असर हुआ होगा, वह ज़ाहिर है।

इन सबसे बड़ी और महान बात यह है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० एक अनगढ़ क़ौम के तर्बियत देने, उनको पवित्र बनाने और संस्कृति और सभ्यता सिखाने पर नियुक्त थे, जो संस्कृति, सभ्यता, रहन-सहन की पाबन्दी और समाज

के बनाने-संवारने की ज़िम्मेदारियों को बिल्कुल नहीं जानती थी और इस्लामी समाज का गठन जिन नियमों के आधार पर करना था, उनमें मर्दों और औरतों के मेल की कोई गुंजाइश न थी, इसलिए अमेल के इस नियम की पाबन्दी करते हुए औरतों की प्रत्यक्ष रूप से ट्रेनिंग नहीं की जा सकती थी, हालांकि उनकी शिक्षा-दीक्षा की ज़रूरत मर्दों से कुछ कम अहम और ज़रूरी न थी, बल्कि कुछ ज़्यादा ही ज़रूरी थी।

इसलिए नबी सल्ल० के पास सिर्फ़ यही एक रास्ता रह गया था कि आप अलग-अलग उम्र और योग्यता की इतनी औरतों को चुन लें जो इस उद्देश्य के लिए काफ़ी हों। फिर आप उन्हें शिक्षा-दीक्षा दें, उनको पवित्र करें, उन्हें शरीअत का हुक्म सिखला दें और इस्लामी संस्कृति व सभ्यता से इस तरह सजा दें कि वे देहाती और शहरी, बूढ़ी और जवान हर तरह की औरतों की ट्रेनिंग कर सकें और शरीअत के मसलों को सिखा सकें और इस तरह औरतों में प्रचार की मुहिम के लिए काफ़ी हो सकें।

चुनांचे हम देखते हैं कि नबी सल्ल० के घरेलू हालात को उम्मत तक पहुंचाने का सेहरा ज़्यादातर इन उम्मत की माओं ही के सर है, इनमें भी ख़ासतौर पर वे माएं, जिन्होंने लम्बी उम्र पाई। मिसाल के तौर पर हज़रत आइशा रज़ि० कि उन्होंने नबी सल्ल० के कथन और कर्म ख़ूब-ख़ूब बयान किए हैं।

नबी सल्ल० का एक निकाह एक ऐसी जाहिली रस्म तोड़ने के लिए अमल में आया था, जो अरब समाज में पीढ़ियों से चली आ रही थी और बड़ी पक्की हो चुकी है। यह रस्म थी किसी को लयपालक बनाने की। लयपालक को जाहिली दौर में वही अधिकार और आदर प्राप्त था, जो सगे बेटे को हवा करता हैं।

फिर यह चलन और नियम अरब समाज में इतना जड़ पकड़ चुका था कि उसका मिटाना आसान न था, लेकिन यह नियम इन बुनियादों और नियमों से बड़ी कड़ाई के साथ टकराता था, जिन्हें इस्लाम ने निकाह, तलाक़, मीरास और दूसरे मामलों में मुक़र्रर फ़रमाया था। इसके अलावा जाहिलियत का यह नियम अपने दामन में बहुत से ऐसे बिगाड़ और गन्दगी भी लिए हुए था, जिनसे समाज को पाक करना इस्लाम के बुनियादी मक़सदों में से एक था, इसलिए इस जाहिली नियम को ख़त्म करने के लिए अल्लाह ने रसूल सल्ल० की शादी हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश से फ़रमा दी।

हज़रत जैनब रज़ि० पहले हज़रत ज़ैद के निकाह में थीं जो रसूलुल्लाह के मुंहबोले बेटे थे, और ज़ैद बिन मुहम्मद कहे जाते थे। मगर दोनों में निबाह

मुश्किल हो गया और हज़रत ज़ैद ने तलाक़ देने का इरादा कर लिया। और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस बारे में बातें भी कीं। उधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हालात के इशारे या अल्लाह के ख़बर देने से यह बात जान चुके थे कि अगर ज़ैद ने तलाक़ दी तो आपको हज़रत ज़ैनब की इद्दत गुज़रने के बाद उनसे शादी का हुक्म दिया जाएगा और यह वह वक़्त था जब तमाम कुफ़्फ़ार रसूलुल्लाह सल्ल० के ख़िलाफ़ मोर्चा क़ायम किए हुए थे, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्ल० को सही ही यह डर पैदा हुआ कि अगर इन्हीं हालात में शादी करनी पड़ गई, तो मुनाफ़िक़, मुश्रिक और यहूदी बात का बतंगड़ बनाकर आपके ख़िलाफ़ सख़्त प्रोपगंडा करेंगे और भोले-भाले मुसलमानों को तरह-तरह के वस्वसों में डालकर उन पर बुरे प्रभाव डालेंगे। इसलिए हज़रत ज़ैद रज़ि० ने जब हज़रत ज़ैनब रज़ि० को तलाक़ देने के अपने इरादे के बारे में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बातें कीं तो आपने उन्हें हुक्म दिया कि हज़रत ज़ैनब रज़ि० से निबाह करें और उन्हें तलाक़ न दें ताकि इन मुश्किल हालात में इस शादी का मरहला पेश न आए।

लेकिन अल्लाह को यह बात पसन्द न आई और आपको तंबीह फ़रमाई, इर्शाद हुआ—

'और जब आप उस व्यक्ति से कह रहे थे, जिस पर अल्लाह ने इनाम किया है (यानी हज़रत ज़ैद से) कि तुम अपने ऊपर अपनी बीवी को रोक रखो, और अल्लाह से डरो और आप अपने मन में वह बात छिपाए हुए थे, जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था और आप लोगों से डर रहे थे, हालांकि अल्लाह ज़्यादा हक़दार था कि आप उससे डरते।' (33 : 37)

अन्त में हज़रत ज़ैद ने हज़रत ज़ैनब को तलाक़ दे ही दी। फिर उनकी इद्दत गुज़र गई, तो उनसे अल्लाह के रसूल सल्ल० की शादी का फ़ैसला नाज़िल हुआ। अल्लाह ने यह निकाह आपके लिए ज़रूरी कर दिया था और कोई अधिकार और गुंजाइश नहीं छोड़ी थी। इस सिलसिले में उतरने वाली यह आयत है—

'जब ज़ैद ने उससे अपनी ज़रूरत पूरी कर ली, तो हमने उसकी शादी आपसे कर दी, ताकि ईमान वालों पर अपने मुंहबोले बेटों की बीवियों के बारे में कोई हरज न रह जाए, जबकि वे मुंहबोले बेटे अपनी ज़रूरत पूरी कर लें।' (33 : 37)

'मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, बल्कि अल्लाह के रसूल और आख़िरी नबी हैं।' (33 : 4)

इसका मक़्सद यह था कि मुंहबोले बेटों से मुताल्लिक़ जाहिली उसूल अमली तौर पर भी तोड़ दिया जाए, जिस तरह इससे पहले इस इर्शाद के ज़रिए कह करके तोड़ा जा चुका था।

'अन्हें इनके बाप की निस्बत से पुकारो, यही अल्लाह के नज़दीक इंसाफ़ की बात है।' (33 : 5)

इस मौक़े पर यह बात भी याद रखनी चाहिए कि जब समाज में कोई रिवाज अच्छी तरह जड़ पकड़ लेता है, तो सिर्फ़ बात कहकर उसे मिटाना या उसमें तब्दीली लाना बहुत बार मुम्किन नहीं हुआ करता, बल्कि जो व्यक्ति उसके ख़ात्मे और तब्दीली की बात करता है, उसका अमली नमूना भी मौजूद रहना ज़रूरी हो जाता है। हुदैबिया समझौते के मौक़े पर मुसलमानों की ओर से जो हरकत की गई उससे यह सच्चाई ख़ूब अच्छी तरह स्पष्ट हो जाती है। उस मौक़े पर कहां तो मुसलमानों की फ़िदाकारी का यह हाल था कि जब उर्वः बिन मस्ऊद सक़फ़ी ने उन्हें देखा तो देखा कि रसूलुल्लाह का थूक और खंकार भी उनमें से किसी न किसी सहाबी के हाथ ही में पड़ रहा है और जब आप वुज़ू फ़रमाते हैं तो सहाबा किराम आपके वुज़ू से गिरने वाला पानी लेने के लिए इस तरह टूट पड़ रहे हैं कि मालूम होता है आपस में उलझ पड़ेंगे। जी हां, ये वही सहाबा किराम थे जो पेड़ के नीचे मौत या न भागने पर बैअत करने के लिए एक दूसरे से बाज़ी ले जा रहे थे और ये वही सहाबा किराम थे जिनमें अबूबक्र व उमर रज़ि० जैसे रसूल सल्ल० के जांनिसार भी थे, लेकिन इन्हीं सहाबा किराम को, जो आप पर मर मिटना अपना सौभाग्य और अपनी कामियाबी समझते थे, जब आपने समझौते तै कर लेने के बाद हुक्म दिया कि उठकर अपनी हदयि (क़ुरबानी के जानवर) ज़िब्ह कर दें, तो आपके हुक्म का पालन करने के लिए कोई टस से मस न हुआ, यहां तक कि आप परेशान हो गए, लेकिन जब हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने आपको मश्विरा दिया कि आप उठकर चुपचाप अपना जानवर ज़िब्ह करें और आपने ऐसा ही किया तो हर व्यक्ति आपके तरीक़े की पैरवी के लिए दौड़ पड़ा और तमाम सहाबा ने लपक -लपककर अपने जानवर ज़िब्ह कर दिए।

इस घटना से समझा जा सकता है कि किसी पक्के चलन को मिटाने के लिए कहने और करने में कितना अन्तर है। इसलिए लयपालक के जाहिली चलन को अमली तौर पर तोड़ने के लिए आपका निकाह आपके मुंहबोले बेटे हज़रत ज़ैद रज़ि० की तलाक़शुदा से कराया गया।

इस निकाह का अमल में आना था कि मुनाफ़िक़ों ने आपके ख़िलाफ़ बड़े भारी पैमाने पर झूठे प्रचार कर दिए और तरह-तरह के वस्वसे और अफ़वाहें

फैलाईं, जिसके कुछ न कुछ प्रभाव सीधे-सादे मुसलमानों पर भी पड़े। इस प्रचार को ताक़त पहुंचाने के लिए एक शरई पहलू भी मुनाफ़िक़ों के हाथ आ गया था कि हज़रत ज़ैनब रज़ि० आपकी पांचवीं बीवीं थीं, जबकि मुसलमान चार से ज़्यादा बीवियों का हलाल होना जानते ही न थे।

इन सबके अलावा प्रोपगंडे की असल जान यह थी कि हज़रत ज़ैद, अल्लाह के रसूल सल्ल० के बेटे समझे जाते थे और बेटे की बीवी से शादी करना बड़ी गन्दी बात थी। अन्ततः अल्लाह ने सूरः अहज़ाब में इन दोनों विषयों के बारे में सन्तोषजनक आयतें उतारीं और सहाबा किराम को मालूम हो गया कि इस्लाम में मुंहबोले की कोई हैसियत नहीं और यह कि अल्लाह ने कुछ बहुत ऊंचे और विशेष उद्देश्यों के तहत अपने रसूल सल्ल० को किसी विशेषता के साथ शादी की तायदाद के सिलसिले में इतनी व्यापकता दी है जो किसी और को नहीं दी गई है।

मोमिनों की माओं के साथ अल्लाह के रसूल सल्ल० का रहना-सहना बड़ा सज्जनतापूर्ण, सम्मानंपूर्ण और श्रेष्ठपूर्ण था। बीवियां भी बड़े धैर्य, नम्रता, सेवा और दाम्पत्य अधिकारों की देखभाल का योग थीं, हालांकि रूखी-सूखी और सख़्त ज़िंदगी गुज़ार रही थी, जिसे सहन कर लेना दूसरों के बस की बात नहीं थी।

हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि मुझे नहीं मालूम कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कभी मैदे की नर्म रोटी खाई हो, यहां तक कि अल्लाह से जा मिले और न कभी आपने अपनी आंख से भुनी हुई बकरी देखी।[1]

हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि दो-दो महीने गुज़र जाते, तीसरे महीने का चांद नज़र आ जाता और रसूलुल्लाह सल्ल० के घर में आग न जलती। हज़रत उर्वः ने मालूम किया, तब आप लोग क्या खाती थीं, फ़रमाया कि बस दो काली चीज़ें, यानी खजूर और पानी।[2]

इस विषय की हदीसें बहुत हैं।

इस तंगी और परेशानी के बावजूद पाक बीवियों से ऐसी हरकत न हुई, जिस पर सज़ा दी जा सकती हो, सिर्फ़ एक बार ऐसा हुआ और वह भी इसलिए कि एक तो इंसानी फ़ितरत का तक़ाज़ा ही कुछ ऐसा है, दूसरे इसी बुनियाद पर कुछ आदेश भी देने थे। चुनांचे इसी बुनियाद पर अल्लाह ने जो आयत उतारी, वह यह है—

---

1. सहीह बुखारी 2/956
2. वही, वही

'ऐ नबी ! अपनी बीवियों से कह दो कि अगर तुम दुनिया की ज़िंदगी और ज़ीनत चाहती हो, तो आओ, मैं तुम्हें साज़ व सामान देकर भलाई के साथ विदा कर दूं और अगर तुम अल्लाह, उसके रसूल और आख़िरत को चाहती हो तो बेशक अल्लाह ने तुममें से नेकों के लिए ज़बरदस्त बदला तैयार कर रखा है।'

(33 : 28, 29)

अब इन पाक बीवियों के बड़कपन का अन्दाज़ा कीजिए कि इन सबने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० को प्रमुखता दी और उनमें से कोई एक भी दुनिया की ओर न झुकी।

इसी तरह सौतों के बीच जो घटनाएं आए दिन घटती रहती हैं, पाक बीवियों के बीच तायदाद ज़्यादा होने के बावजूद भी इस तरह की घटनाएं शायद ही कभी घटी हों और वह भी एक इंसान की हैसियत से और इस पर भी जब अल्लाह ने तंबीह फ़रमाई तो दोबारा इस तरह की कोई बात पेश न आई। सूरः तह्रीम की शुरू की पांच आयतों में इसी का उल्लेख है।

अन्त में यह अर्ज़ कर देने में हमें संकोच नहीं है कि हम इस मौक़े पर बहुपत्नि विवाह के विषय पर विवाद की ज़रूरत नहीं समझते, वे ख़ुद जिस तरह की ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं, जिस कडुवाहट और दुर्भाग्य का जीवन जी रहे हैं, जिस तरह की रुसवाइयों और अपराधों के बुरी तरह शिकार हैं और बहुपत्नि विवाह के नियमों से हटकर जिस प्रकार के क्लेश, दुख और परेशानियों का सामना कर रहे हैं, वह इस तरह के विवाह से उदासीन बना देने के लिए काफ़ी है।

यूरोप वालों का दुर्भाग्यपूर्ण जीवन बहुपत्नि विवाह के नियमों पर आधारित सच होने का सबसे बड़ा गवाह है और सोचने-समझने वालों के लिए इसमें बड़ी शिक्षा है।

चरित्र और गुण

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसे चरित्र और ऐसे गुणों के मालिक थे कि जिसका बयान मुश्किल है। इसका प्रभाव यह होता था कि दिल आपके प्रति आदर से भर जाता था। चुनांचे आपकी हिफ़ाज़त और आपके मान-सम्मान में लोगों ने ऐसी-ऐसी फ़िदाकारी का सबूत दिया जिसकी मिसाल दुनिया के किसी और व्यक्ति के सिलसिले में नहीं पेश की जा सकती।

आपके साथी निछावर होने की हद तक आपसे लगाव रखते थे। उन्हें गवारा न था कि आपको खरोंच आ जाए, भले ही इसके लिए उनकी गरदनें क्यों न काट दी जाएं। इस तरह के लगाव और मुहब्बत की वजह यह थी कि आदत के तौर जिन बातों पर जान छिड़की जाती है उनमें से जितना ज़्यादा हिस्सा आपको मिला हुआ था, किसी और को प्राप्त न था।

नीचे हम अपनी कमज़ोरियों और ख़राबियों को स्वीकार करते हुए उन रिवायतों का सार पेश कर रहे हैं जिनका ताल्लुक़ आपके उच्च और श्रेष्ठ चरित्र व आचरण से है—

मुबारक हुलिया

हिजरत के वक़्त अल्लाह के रसूल सल्ल० उम्मे माबद ख़ुज़ाइया के ख़ेमे से गुज़रे तो उसने आपकी रवानगी के बाद अपने शौहर से आपके मुबारक हुलिए का जो नक़्शा खींचा, वह यह था—चमकता रंग, चमचमाता चेहरा, सुन्दर बनावट, न तोंदलेपन का ऐब, न गंजेपन की ख़ामी, सुन्दरता के साथ ढला हुआ साक्षात शरीर, सुरमा लगी आंखें, लम्बी पलकें, भारी आवाज़, लम्बी गरदन, काली-सफ़ेद आंखें, काली पलकें, बारीक और आपस में मिली हुई भवें, चमकदार काले बाल, चुप रहें तो गंभीरता, बोलें तो आकर्षण, दूर से (देखने में) सबसे ज़्यादा चमकदार और जमाल वाले, क़रीब से सबसे ख़ूबसूरत और मीठे, बातों में मिठास, बात स्पष्ट और दो टूक, न बहुत कम, न बहुत ज़्यादा, ऐसा कि मानो लड़ी से मोती झड़ रहे हों, बीच का क़द, न नाटा कि निगाह में न जांचे, न लंबा कि नागवार लगे, दो शाखों के बीच एक शाखा जो तीनों में सबसे ज़्यादा ताज़ा और देखने में भली और रौनक़दार, साथी आपके चारों ओर घेरा बनाए हुए, कुछ फ़रमाएं तो तवज्जोह से सुनते हैं, कोई हुक्म दें तो लपककर पूरा करते हैं, सभी उनका आज्ञापालन करते हैं, सबके आदरणीय, न झुंझलाहट, न बेकार की बातें।[1]

1. ज़ादुल मआद 2/54

हज़रत अली रज़ि० आपके गुणों का बखान करते हुए फ़रमाते हैं, आप न लंबे-तड़ंगे, न नाटे-खोटे, लोगों के हिसाब से बीच के क़द के थे, बाल न ज़्यादा घुंघराले थे, न बिल्कुल खड़े हुए, बल्कि दोनों के बीच की स्थिति थी, गालों में बहुत ज़्यादा मांस न था, न ठुड्डी छोटी और न माथा पतला, चेहरा किसी क़दर गोलाई लिए हुए था, रंग गोरा गुलाबी, आंखें लाली लिए हुए, पलकें लम्बी, जोड़ों और मोढ़ों की हड्डियां बड़ी-बड़ी, सीने पर नाफ़ तक बालों की हल्की-सी लकीर, बाक़ी जिस्म बाल से ख़ाली, हथेली और पांव पर मांस, चलते तो कुछ झटके से पांव उठाते और यों चलते मानो किसी ढलवान पर चल रहे हैं। जब किसी की ओर ध्यान देते तो पूरे वजूद के साथ ध्यान देते। दोनों कंधों के दर्मियान नुबूवत की मुहर थी। आप सारे नबियों में आख़िरी नबी, सबसे ज़्यादा दानी और सबसे बढ़कर जुर्रात वाले, सबसे ज़्यादा सच्चे और सबसे बढ़कर क़ौल व क़रार के पूरा करने वाले, सबसे ज़्यादा नर्म तबियत और सबसे शरीफ साथी, जो आपको देखता, रौब खाता, जो जान-पहचान के साथ मिलता, प्रिय रखता। आपके गुणों का बखान करने वाला यही कह सकता है कि मैंने आपसे पहले और आपके बाद आप जैसा नहीं देखा।[1]

हज़रत अली रज़ि० की एक रिवायत में है कि आपका सर बड़ा था। जोड़ों की हड्डियां भारी-भारी थीं। सीने के बीच बाल की लम्बी लकीर थी। जब आप चलते तो कुछ झुके हुए चलते, गोया किसी ढलवान से उतर रहे हैं।[2]

हज़रत जाबिर समुरा रज़ि० का बयान है कि आपका मुंह बड़ा था, आंखें हल्की लाली लिए हुए और एड़ियां बारीक।[3]

हज़रत अबू तुफ़ैल कहते हैं कि आप गोरे रंग, रौनक से भरा चेहरा और बीच के क़द वाले थे।[4]

हज़रत अनस बिन मालिक का इर्शाद है कि आपकी हथेलियां चौड़ी थीं और रंग चमकदार, न ख़ालिस सफ़ेद, न गेहुंवा, वफ़ात के वक़्त तक सर और चेहरे के बीस बाल भी सफ़ेद न हुए थे।[5] सिर्फ़ कनपटी के बालों में कुछ सफ़ेदी थी और कुछ बाल सर के सफ़ेद थे।[6]

---

1. इब्ने हिशाम 1/401, 402, तिर्मिज़ी मय शरह तोहफ़तुल अह्वज़ी 4/303
2. वही, तिर्मिज़ी मय शरह
3. सहीह मुस्लिम, 2/258
4. वही, वही
5. सहीह बुख़ारी 1/502
6. वही, वही, सही मुस्लिम 2/59

हज़रत अबू जुहैफ़ा कहते हैं कि मैंने आपके निचले होंठ के नीचे दाढ़ी बच्चा में सफ़ेदी देखीं।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र का बयान है कि आपके दाढ़ी बच्चा में कुछ बाल सफ़ेद थे।[2]

हज़रत बरा का बयान है कि आपका क़द दर्मियानी था, दोनों कंधो के दर्मियान दूरी थी। बाल दोनों कानों की लौ तक पहुंचते थे। मैंने आपको लाल जोड़ा पहने हुए देखा कि कोई भी चीज़ आपसे ज़्यादा ख़ूबसूरत न देखी।[3]

पहले आप अह्ले किताब के जैसा रहना पसन्द करते थे, इसलिए बाल में कंघी करते तो मांग न निकालते, लेकिन बाद में निकाला करते थे।[4]

हज़रत बरा कहते हैं, आपका चेहरा सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत था और आपका चरित्र सबसे बेहतर था।[5]

उनसे पूछा गया, क्या नबी सल्ल० का चेहरा तलवार जैसा था, उन्होंने कहा, नहीं, बल्कि चांद जैसा था। एक रिवायत में है कि आपका चेहरा गोल था।[6]

रुबैअ बिन्त मुअव्विज़ कहती हैं कि अगर तुम हुज़ूर सल्ल० को देखते तो लगता कि तुमने उगते सूरज को देखा है।[7]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० का बयान है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० से ज़्यादा ख़ूबसूरत कोई चीज़ नहीं देखी। लगता था सूरज आपके चेहरे में रवां-रवां है और मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० से बढ़कर किसी को तेज़ रफ़्तार नहीं देखा। लगता था ज़मीन आपके लिए लपेटी जा रही है। हम तो अपने आपको थका मारते थे और आप बिल्कुल निश्चिंत।[8]

हज़रत काब बिन मालिक का बयान है कि जब आप ख़ुश होते, तो चेहरा दमक उठता, मानो चांद का एक टुकड़ा है।[9]

---

1. सहीह बुख़ारी 1/501, 502
2. वही, 1/502
3. वही, वही
4. वही, 1/503
5. वही, 1/502, सहीह मुस्लिम, 2/258
6. सही बुख़ारी, 1/502, सहीह मुस्लिम, 2/259
7. मुस्नद दारमी, मिश्कात, 2/577
8. जामेअ तिर्मिज़ी मय शरह तोहफ़तुल अह्वज़ी 4/306, मिश्कात 2/518
9. सहीह बुख़ारी 1/502

एक बार आप हज़रत आइशा रज़ि० के पास तशरीफ़ रखते थे। आप जूता सी रहे थे और वह धागा कात रही थीं। पसीना आया तो चेहरे की धारियां चमक उठीं। यह स्थिति देखकर हज़रत आइशा रज़ि० चकित हो उठीं और कहने लगीं कि अगर अबू कबीर हज़ली आपको देख लेता तो उसे मालूम हो जाता कि उसके इस शेर (पद) के हक़दार किसी और से ज़्यादा आप हैं :—

'जब उनके चेहरे की धारियां देखो तो वे यों चमकती हैं, जैसे रोशन बादल चमक रहा हो।'[1]

अबूबक्र रज़ि० आपको देखकर यह पद पढ़ते—

'आप अमानतदार हैं, चुने हुए बुज़ुर्ग हैं, भलाई की दावत देते हैं, मानो पूरे चांद की रोशनी हैं, जिससे अंधेरा आंख मचोली खेल रहा है।'[2]

हज़रत उमर रज़ि० ज़ुहैर का यह पद पढ़ते जो हरम बिन सनान के बारे में कहा गया था कि—

'अगर आप इंसान के सिवा किसी और चीज़ से होते, तो आप ही चौदहवीं की रात को रोशन करते।' फिर फ़रमाते कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ऐसे ही थे।[3]

जब आप ग़ुस्सा करते तो चेहरा लाल हो जाता, मानो दोनों गालों में अनार का दाना निचोड़ दिया गया है।[4]

हज़रत जाबिर बिन समुरा का बयान है कि आपकी पिंडुलियां कुछ पतली थीं और आप हंसते तो सिर्फ़ मुस्करा देते (आंखें सुर्मा लगी जैसी थीं) तुम देखते तो कहते कि अपनी आंखों में सुर्मा लगा रखा है, हालांकि सुर्मा न लगा होता।[5]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आपके दांत सबसे ख़ूबसूरत थे।[6]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का इर्शाद है कि आपके आगे के दोनों दांत अलग-अलग थे। जब आप बातें करते तो इन दांतों के बीच से नूर जैसा

---

1. तहज़ीब तारीख़ दमिश्क़ : इब्ने असाकिर
2. ख़ुलासतुस्सियर, पृ० 20
3. वही, ख़ुलासतुस्सियर, पृ० 20
4. मिश्कात 1/22, तिर्मिज़ी अबवाबुल क़द्र बाब मा जा-अ फ़िततश्दीद फ़िल ख़ौज़ि फ़िलक़द्रि 2/35
5. जामेअ तिर्मिज़ी मय शरह तोहफ़तुल अह्वज़ी 4/306
6. सहीह मुस्लिम : किताबुत्तलाक़, बाब फ़िल ईला 3/1102 हदीस न० 1489

निकलता दिखाई देता ।[1]

गरदन मानो चांदी की सफ़ाई के लिए गुड़िया की गरदन थी, पलकें लम्बी, दाढ़ी घनी, माथा चौड़ा, भवें मिली हुई और एक दूसरे से अलग, नाक ऊंची, गाल हलके, लुब्बा से नाफ़ तक छड़ी की तरह दौड़ा हुआ बाल और उसके सिवा पेट और सीने पर कहीं बाल नहीं, अलबत्ता बाज़ू और मोंढों पर बाल थे, पेट और सीना बराबर, सीना हमवार और चौड़ा, कलाइयां बड़ी-बड़ी, हथेलियां फैली हुई, क़द खड़ा, तलवे खाली, अंग बड़े-बड़े, जब चलते तो झटके के साथ चलते, कुछ झुकाव के साथ आगे बढ़ते और आसान चाल से चलते ।[2]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने कोई हरीर व दीबा नहीं छूआ जो अल्लह के रसूल सल्ल० की हथेली से ज़्यादा नर्म रहा हो और कभी कोई अंबर या मुश्क या कोई ऐसी खुशबू सूंघी जो अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़ुशबू से बेहतर रही हो ।[3]

हज़रत अबू जुहैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि मैंने आपका हाथ अपने चेहरे पर रखा, तो वह बर्फ से ज़्यादा ठंडा और मुश्क से ज़्यादा ख़ुशबूदार था ।[4]

हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ि०, जो बच्चे थे, कहते हैं, आपने मेरे गाल पर हाथ फेरा, तो मैंने आपके हाथ में ऐसी ठंडक और ऐसी खुशबू महसूस की मानो उसे आपने अत्तार के इत्रदान से निकाला है ।[5]

हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि आपका पसीना मानो मोती होता था और हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० कहती हैं कि यह पसीना ही सबसे अच्छी ख़ुशबू हुआ करती थी ।[6]

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि आप किसी रास्ते से तशरीफ़ ले जाते और आपके बाद कोई और गुज़रता, तो आपके जिस्म या पसीने की ख़ुशबू की वजह से जान जाता कि आप यहां से तशरीफ़ ले गए हैं ।[7]

आपके दोनों कंधों के दर्मियान नुबूवत की मुहर थी, जो कबूतर के अंडे जैसी

---

1. तिर्मिज़ी, मिश्कात 2/518
2. ख़ुलासतुस्सियर पृ० 19, 20
3. सहीह बुख़ारी 1/503, सही मुस्लिम 2/257
4. सहीह बुख़ारी 1/502
5. सहीह मुस्लिम 2/256
6. वही, सही मुस्लिम
7. दारमी, मिश्कात, 2/517

और मुबारक जिस्म से मिलती-जुलती थी। यह बाईं हड्डी की कुटी (नर्म हड्डी) के पास थी। उन पर मस्सों की तरह तिलों का जमघट था।[1]

चरित्र का गुण

नबी सल्ल० बड़ी सुन्दर भाषा बोलते थे। आप तबियत की रवानी, शब्द के निखार, वाक्यों का गठन, अर्थ की सुन्दरता और संकोच से दूरी के साथ-साथ व्यापक बातों से नवाज़े गए थे। आपको अपूर्व विवेक और अरब की तमाम भाषाओं का ज्ञान मिला हुआ था। चुनांचे आप हर क़बीले से उसी की भाषा और मुहावरों में बातें करते थे। आपमें बद्दुओं का ज़ोरे बयान और भाषा में शहरियों की सफ़ाई-सुथराई पाई जाती थी और वह्य पर आधारित रब की ताईद अलग से, सहनशीलता, सहनशक्ति, समर्थ होने पर भी माफ़ी और कठिन घड़ियों में धीरज ऐसे गुण थे, जिनके ज़रिए अल्लाह ने आपको प्रशिक्षित किया था। हर सहनशील व्यक्ति में कोई न कोई कमज़ोरी और कोई न कोई दोष जाना जाता है, पर नबी सल्ल० के आचरण व चरित्र की श्रेष्ठता का हाल यह था कि आपके ख़िलाफ़ दुश्मनों ने कष्ट पहुंचाने और बदमाशों के ज़ुल्म व ज़्यादती में जितनी बढ़ोत्तरी होती गई, आपके धैर्य और सहनशीलता में भी उतनी ही वृद्धि होती गई।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० को जब भी दो कामों के बीच अधिकार दिया जाता, तो वही काम करते जो आसान होता, जब तक कि वह गुनाह का काम न होता। अगर गुनाह का काम होता तो आप सबसे बढ़कर उससे दूर रहते।

आपने कभी अपने निज के लिए बदला न लिया। अलबत्ता अगर अल्लाह की हुर्मत चाक की जाती तो आप अल्लाह के लिए बदला लेते।[2]

आप सबसे बढ़कर क्रोध और ग़ुस्से से दूर थे और सबसे जल्द राज़ी हो जाते थे। दानशीलता और दया-भाव ऐसा था कि उसका अन्दाज़ा ही नहीं किया जा सकता। आप उस व्यक्ति की तरह दान करते थे जिसे फ़क्र (दानशीलता) का डर भी न हो।

इब्ने अब्बास रज़ि० का बयान है कि नबी सल्ल० सबसे बढ़कर दानशील थे और आपकी दानशीलता का बहाव रमज़ान में उस वक़्त ज़्यादा जोश पर होता, जब हज़रत जिब्रील आपसे मुलाक़ात फ़रमाते और हज़रत जिब्रील रमज़ान में

---

1. सहीह मुस्लिम 2/259, 260
2. सहीह बुख़ारी 2/503

आपसे हर रात मुलाक़ात फ़रमाते और क़ुरआन का दौर कराते।

पस अल्लाह के रसूल सल्ल० दानशीलता में ज़्यादा से ज़्यादा बढ़-चढ़कर रहते।[1]

हज़रत जाबिर रज़ि० का इर्शाद है कि ऐसा कभी न हुआ कि आपसे कोई चीज़ मांगी गई हो और आपने नहीं कह दिया हो।[2]

बहादुरी और दलेरी में भी आपका स्थान बहुत ऊंचा था। आप बहुत वीर थे। बड़े ही कठिन और मुश्किल मौक़ों पर, जबकि अच्छे-अच्छे जांबाज़ों और बहादुरों के पांव उखड़ गए, आप अपनी जगह बरक़रार रहे और पीछे हटने के बजाए आगे ही बढ़ते गए, पांव तनिक भर भी न डगमगाए। बड़े-बड़े बहादुर भी कभी न कभी भागे और पसपा हुए हैं, पर आपमें यह बात कभी न पाई गई।

हज़रत अली रज़ि० का बयान है कि जब ज़ोर का रन पड़ता और लड़ाई के शोले ख़ूब भड़क उठते, तो हम अल्लाह के रसूल सल्ल० की आड़ लिया करते थे। आपसे बढ़कर कोई व्यक्ति दुश्मन के क़रीब न होता।[3]

हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि एक दिन मदीना वालों को ख़तरा महसूस हुआ। लोग आवाज़ की तरफ़ दौड़े। रास्ते में अल्लाह के रसूल सल्ल० वापस आते हुए मिले। आप लोगों से पहले ही आवाज़ की ओर पहुंच (कर ख़तरे की जगह का जायज़ा ले) चुके थे। उस वक़्त आप अबू तलहा रज़ि० के एक नंगे घोड़े पर सवार थे। गरदन में तलवार डाल रखी थी और फ़रमा रहे थे, डरो नहीं, डरो नहीं[4], कोई ख़तरा नहीं।

आप सबसे ज़्यादा हयादार और पस्त निगाह थे। अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० फ़रमाते हैं कि आप परदानशीं कुंवारी लड़की से भी ज़्यादा हयादार और शर्मीले थे। जब आपको कोई बात नागवार गुज़रती, तो चेहरे से पता लग जाता।[5]

अपनी नज़रें किसी के चेहरे पर गाड़ते न थे, निगाह पस्त रखते थे और आसमान के मुक़ाबले में ज़मीन की तरफ़ नज़र ज़्यादा देर तक रहती थी। आमतौर से नीची निगाह से ताकते। हया का हाल यह था कि किसी से नागवार

---

1. वही, 1/502
2. वही, वही
3. शिफ़ा, क़ाज़ी अयाज़ 1/89, सिहाह और सुनन में भी इस विषय की रिवायत मौजूद है।
4. सहीह मुस्लिम 2/252, सहीह बुख़ारी 1/407
5. सहीह बुख़ारी 1/504

बात आमने-सामने न कहते और न किसी को कोई नागवार बात आप तक पहुंचती तो नाम लेकर उसका उल्लेख करते, बल्कि यों फ़रमाते कि क्या बात है कि कुछ लोग ऐसा कर रहे हैं। फ़रज़दक़ के इस पद पर सबसे ज़्यादा सही आप ही उतरते थे—

'आप सबसे ज़्यादा न्यायी, पाकदामन, सच्चे और बेहतरीन अमानतदार थे। इसे आपके मित्र और शत्रु सभी मानते हैं। नुबूवत से पहले आपको अमीन कहा जाता था और जाहिलियत के बारे में आपके पास फ़ैसले के लिए मुक़दमे लाए जाते थे।

जामेअ तिर्मिज़ी में हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि एक बार अबू जह्ल ने आपसे कहा, हम आपको झूठा नहीं कहते, अलबत्ता आप जो कुछ लेकर आए हैं उसे झुठलाते हैं। इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

'जो लोग आपको नहीं झुठलाते, बल्कि ये ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इंकार करते हैं।'[1] (6 : 33)

हिरक़्ल ने अबू सुफ़ियान से पूछा कि क्या इस नबी सल्ल० ने जो बात कही है, उसके कहने से पहले तुम लोग उसे झूठ से आरोपित करते थे?

तो अबू सुफ़ियान ने जवाब दिया कि 'नहीं'।

आप सबसे ज़्यादा विनम्र और घमंड से दूर थे। जिस तरह बादशाहों के लिए उनके सेवक और दरबारी खड़े रहते हैं, इस तरह आप अपने लिए सहाबा किराम को खड़े होने से मना फ़रमाते थे, दीन-दुखियों से पूछना करते थे, ग़रीबों के साथ उठते-बैठते थे, ग़ुलाम की दावत मंज़ूर फ़रमाते थे।

सहाबा किराम में किसी भेदभाव के बिना एक आम आदमी की तरह बैठते थे। हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि आप अपने जूते खुद टांकते थे, अपने कपड़े खुद सीते थे और अपने हाथ से इस तरह काम करते थे जैसे तुममें से कोई आदमी अपने घर के काम-काज करता है। आप भी इंसानों में से एक इंसान थे। अपने कपड़ों में जुएं खोजते थे, अपनी बकरी दूहते थे और अपना काम ख़ुद करते थे।

आप सबसे बढ़कर अह्द की पाबन्दी करते और रिश्तों को जोड़ने का काम करते थे। लोगों के साथ सबसे ज़्यादा दया से पेश आते थे, रहन-सहन और शिष्टाचार में सबसे अच्छे थे। आपका चरित्र महान था, दुश्चरित्र से सबसे ज़्यादा

---

1. मिश्कात 2/521

नफ़रत थी, गन्दी बात करने की न आदत थी, न संकोच के साथ भी गन्दी बात कहते थे, न लानत करते थे, न बाज़ार में चीखते-चिल्लाते थे, न बुराई का बदला बुराई से देते थे, बल्कि माफ़ी और दरगुज़र से काम लेते थे। किसी को अपने पीछे चलता हुआ न छोड़ते थे और न खाने-पीने में अपने दासों और दासियों को झिड़कते थे। अपने सेवक का काम ख़ुद ही कर देते थे।[1]

कभी अपने सेवक से उफ़ भी नहीं कहा, न किसी काम के करने या न करने पर ग़ुस्सा फ़रमाया। दीन-दुखियों से मुहब्बत रखते। उनके साथ उठते-बैठते और उनके जनाज़ों में हाज़िर होते थे। किसी फ़क़ीर को उसकी ग़रीबी की वजह से तुच्छ न समझते थे। एक बार आप सफ़र में थे। एक बकरी काटने-पकाने का मश्विरा हुआ। एक ने कहा, ज़िब्ह करना मेरे ज़िम्मे, दूसरे ने कहा, खाल उतारना मेरे ज़िम्मे, तीसरे ने कहा, पकाना मेरे ज़िम्मे। नबी सल्ल० ने कहा, लकड़ी जमा करना मेरे ज़िम्मे। सहाबा रज़ि० ने कहा, हम आपका काम कर देंगे। आपने फ़रमाया, मैं जानता हूं, तुम लोग मेरा काम कर दोगे, लेकिन मैं पसन्द नहीं करता कि तुम पर बरतरी हासिल करूं, क्योंकि अल्लाह अपने बन्दे की यह हरकत नापसन्द करता है कि वह अपने आपको अपने साथियों से बरतर समझें। इसके बाद आपने उठकर लकड़ी जमा फ़रमाई।[2]

आइए, तनिक हिन्द बिन अबी हाला की जुबानी अल्लाह के रसूल सल्ल० के गुण सुनें। हिन्द अपनी एक लम्बी रिवायत में कहते हैं—

अल्लाह के रसूल सल्ल० लगातार ग़मों से दोचार थे। हमेशा सोच-विचार करते रहते थे। आपके लिए आराम न था। बेज़रूरत न बोलते थे, देर तक चुप रहते थे। बात की शुरुआत और अन्त पूरे मुंह से करते थे। यानी सिर्फ़ मुंह के किनारे से न बोलते थे, ठोस और दो टूक बातें करते थे, जिनमें न बेकार की बातें होती थीं, न कोताही। नम्र स्वभाव थे, जफ़ा करने वाले और नाक़दरे न थे। नेमत मामूली भी होती, तो उसका आदर करते। किसी चीज़ की निन्दा नहीं करते थे। खाने की न बुराई करते थे, न तारीफ़, हक़ से कोई छेड़ न होती, तो जब तक बदला न लेते, आपके ग़ुस्से को रोका न जा सकता था, अलबत्ता बड़े दिल के थे। अपने निज के लिए ग़ुस्सा न करते, न बदला लेते। जब इशारा फ़रमाते तो पूरी हथेली से इशारा फ़रमाते और ताज्जुब के वक़्त हथेली पलटते, जब ग़ुस्सा होते तो चेहरा फेर लेते और जब ख़ुश होते तो निगाह पस्त फ़रमा लेते। आपकी ज़्यादातर हंसी मुस्कराहट

---

1. मिश्कात 2/520
2. ख़ुलासतुस्सियर, पृ० 22

के तौर पर थी, मुस्कराते तो दांत ओलों की तरह चमकते।

निरर्थक बातों से ज़ुबान रोके रखते, साथियों को जोड़ते थे, तोड़ते न थे, हर क़ौम के प्रतिष्ठित जनों का आदर करते थे और उसी को उनका वली बनाते थे। लोगों के शर (दुष्टता) से सावधान रहते और उनसे बचाव अख़्तियार करते थे, लेकिन इसके लिए अपनी मुस्कराहट ख़त्म न फ़रमाते थे।

अपने साथियों की ख़बर रखते और लोगों के हालात मालूम करते। अच्छी चीज़ की तारीफ़ करते और बुरी चीज़ की बुराई। बीच का रास्ता अपनाते, अतियों से बचते, ग़ाफ़िल न होते थे कि लोग भी ग़ाफ़िल या दुखी हो जाएं। हर हालत के लिए मुस्तैद रहते थे, हक़ से कोताही न फ़रमाते थे, न नाहक़ की ओर बढ़ते थे। जो लोग आपसे क़रीब रहते, वे सबसे अच्छे लोग थे और उनमें भी आपके नज़दीक श्रेष्ठ वह था जो सबसे बढ़कर हितैषी हो और सबसे ज़्यादा क़द्र आपके नज़दीक उसी की थी जो सबसे अच्छा साथी और सहायक हो।

आप उठते-बैठते अल्लाह का ज़िक्र ज़रूर फ़रमाते थे, जगहें तै न फ़रमाते, यानी अपने लिए कोई अलग से जगह तै न फ़रमाते। जब क़ौम के पास पहुंचते तो मज्लिस में जहां जगह मिल जाती, बैठ जाते और उसी का हुक्म भी फ़रमाते। हर बैठने वाले को उसका हिस्सा देते, यहां तक कि कोई यह न महसूस करता कि कोई व्यक्ति आपके नज़दीक उससे ज़्यादा इज़्ज़तदार है।

कोई किसी ज़रूरत से आपके पास बैठता या खड़ा होता, तो आप इतने सब्र के साथ उसके लिए रुके रहते कि वही पलटकर वापस होता। कोई किसी ज़रूरत का सवाल कर देता तो उसे दिए बिना या अच्छी बात कहे बिना वापस न फ़रमाते। आपने अपनी मुस्कराहट और चरित्र से सबको नवाज़ा, यहां आप सबके लिए बाप का दर्जा रखते थे और सब आपके नज़दीक एक जैसा हक़ रखते थे। किसी को प्रमुखता थी तो तक़्वे की बुनियाद पर। आपकी मज्लिस इल्म व हया और सब्र व अमानत की मज्लिस थी, इसमें आवाज़ें ऊंची न की जाती थीं और न हुर्मतों का मर्सिया होता था, यानी किसी की आबरू पर आंच आने का डर न था। लोग तक़्वा के साथ आपस में मुहब्बत और हमदर्दी रखते थे। बड़ों का आदर करते थे, छोटों पर दया करते थे। ज़रूरतमंद की ज़रूरत पूरी करते थे और अजनबी को मुहब्बत देते थे।

आपके चेहरे पर हमेशा ताज़गी रहती, विनम्र थे, कठोर न थे, न ज़्यादा ज़ोर से बोलते, न गन्दी बात कहते, न ज़्यादा ग़ुस्सा करते, न बहुत तारीफ़ करते थे। जिस चीज़ की ख़्वाहिश होती, उससे ग़फ़लत बरतते थे। आपसे निराशा नहीं होती थी।

आपने तीन बातों से अपने मन को बचाए रखा—

1. दिखावे से,

2. किसी चीज़ के ज़्यादा होने से, और

3. व्यर्थ की बातों से। और तीन बातों से लोगों को बचाए रखा, यानी आप—

1. किसी की निन्दा नहीं करते थे,

2. किसी को शर्म नहीं दिलाते थे और

3. किसी का ऐब नहीं निकालते थे। आप वही बात ज़ुबान पर लाते थे, जिसमें सवाब की उम्मीद होती।

जब आप बोलते तो आपके पास बैठने वाले अपने सर झुका लेते, मानो उनके सरों पर चिड़िया है और जब आप चुप होते तो लोग बातें करते। लोग आपके पास गपबाजी न करते। आपके पास जो कोई बोलता, सब उसके लिए चुप रहते, यहां तक कि वह अपनी बात पूरी कर लेता। उनकी बात उनके पहले आदमी की बात होती। जिस बात से सब लोग हंसते, उससे आप भी हंसते और जिस बात पर सब लोग ताज्जुब करते उस पर आप भी ताज्जुब करते। अनजान आदमी बाद में जफ़ा से काम लेता तो उस पर आप सब्र करते और फ़रमाते, जब तुम लोग ज़रूरतमंद को देखो कि वह अपनी ज़रूरत की तलब में है, तो उसको ज़रूरत का सामान दे दो। आप एहसान का बदला देनेवालों के सिवा किसी से तारीफ़ न चाहते।[1]

सार यह कि नबी सल्ल० अपूर्व चरित्र वाले व्यक्ति थे। आपके रब ने आपको अनुपम शिष्टाचार दे रखा था, यहां तक कि ख़ुद आपकी तारीफ़ में फ़रमाया—

'यक़ीनन आप उच्च चरित्र वाले हैं।' (68 : 4)

और ये ऐसे गुण थे जिनकी वजह से लोग खिंचकर आपकी ओर आए। दिलों में आपकी मुहब्बत बैठ गई और आपको नेतृत्व का वह पद मिला कि लोग आप पर फ़िदा हो गए। इन्हीं गुणों के कारण आपकी क़ौम की अकड़ और सख़्ती नर्मी में बदल गई, यहां तक कि यह अल्लाह के दीन में गिरोह दर गिरोह दाख़िल हो गई।

याद रहे हमने पिछले पन्नों में आपके जिन गुणों का उल्लेख किया है, वह आपके चरित्र और गुणों की श्रेष्ठता की कुछ झलकियां हैं, वरना आपके बड़कपन, बुज़ुर्गी, श्रेष्ठता, महानता का यह हाल था कि उनकी वास्तविकता और तह तक न

---

1. शिफ़ा, क़ाज़ी अयाज़ 1/121-126, साथ ही देखिए शमाइले तिर्मिज़ी

पहुंच संभव है और न उसकी गहराई नापी जा सकती है।

भला इस दुनिया के इस सबसे महान और श्रेष्ठ इंसान की महानता की तह तक किसकी पहुंच हो सकती है, जो बुज़ुर्गी और कमाल की सबसे ऊंची चोटी पर पहुंचा और रब के नूर से इस तरह रोशन हुआ कि अल्लाह की किताब को उसका आदर्श बता दिया गया। यानी—

क़ारी नज़र आता है, हक़ीक़त में है क़ुरआन

अल्लाहु-म सल्लि अला मुहम्मदिंव- व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै-त अला इब-राही-म व अला आलि इब-राही-म इन्न-क हमीदुम मजीद० अल्लाहुम-म बारिक अला मुहम्मदिवं-व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त अला इब-राही-म व अला आलि इब-राही-म इन्न-क हमीदुम मजीद०

— **सफ़ीउर्रहमान मुबारकपुरी**

हुसैनाबाद, मुबारकपुर

ज़िला आज़गढ़ (उ०प्र०) भारत

16 रमज़ानुल मुबारक 1404 हि० तद०

17 जून 1984 ई०

किताबें

(जिनके हवाले दिए गए)

क्र.स.	किताब का नाम	लेखक	मृत्यु	प्रकाशक	सन्
1.	इत्तिहाफ़ुल वह्य बिअख़बारि उम्मिल कुरा	उमर बिन मुहम्मद –इब्ने फ़ह्द मक्की	885 हि०		
2.	सहीह इब्ने हिब्बान	अबू हातिम मुहम्मद बिन हिब्बान	354 हि.	दारुल कुतुबुल इल्मीया, बैरूत	
3.	अख़बारुल किराम बि अख़बारिल मस्जिदिल हराम	अहमद बिन मुहम्मद असदी मक्की	1066 हि.	अल-मतबअतुस्सल-फ़ीया, बनारस	1396 हि.
4.	अल अ-द-बुल मुफ़रद	मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी	256 हि.	स्तम्बोल	1304 हि.
5.	अल-इस्तीआब	अबू उमर यूसुफ़ बिन अबुल बर्र	463 हि.	मत्बअतुनबजा, मिस्र	
6.	उसदुल ग़ाबा	अज़्ज़ुद्दीन बिन असीर जौज़ी	630 हि.	दारुल फ़िक्र	
7.	अल-इसाबा फ़ी तमयी ज़िस्सहाबा	हाफ़िज़ इब्ने हजर	853 हि.	दारुल कुतुबुल इल्मीया, बैरूत	
8.	अल-अस्नाम	हिशाम बिन मुहम्मद अल-कलबी	204 हि०	दारुल कुतुब मिस्रीया, क़ाहिरा	
9.	अनसाबुल अशराफ़	अहमद बिन यह्या बलाज़री	279 हि०	दारुल मआरिफ़	
10.	अल-बिदाया वन्निहाया	इस्माईल बिन उमर बिन कसीर	774 हि०	मक्तबतुल मआरिफ़, बैरूत	
11.	तारीख़ अरज़ुल कुरआन	सैयद सुलैमान नदवी	1373 हि.	मआरिफ़ प्रेस, आज़मगढ़	1955 ई.

क्र.स.	किताब का नाम	लेखक	मृत्यु	प्रकाशक	सन्
12.	तारीख़ुल उमम वल मुलूक	मुहम्मद बिन अबू जाफ़र इब्ने जरीर तबरी	५२१ हि.	दारुल मआरिफ़, क़ाहिरा	
13.	तारीख़ इब्ने ख़ल्लदून	अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद ख़ल्लदून	808 हि.	बोलाक़, मिस्र	
14.	अत्तारीख़ुस्सग़ीर	मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी	356 हि.	दारुत्तुरास, क़ाहिरा	1397 हि.
15.	तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब	अबुल फ़र्ज अब्दुर्रहमान बिन जौज़ी	597 हि.	अत्तौफ़ीकुल अदबीया, मिस्र	
16.	तारीख़ अल याक़ूबी	अहमद बिन अबी याक़ूब बिन जाफ़र	292 हि.	दारे सादिर, बैरूत	1379 हि.
17.	तोहफ़तुल अह्वज़ी, शरहजामे तिर्मिज़ी	अबुल अली अब्दुर्रहमान मुबारकपुरी	1353 हि/ 1935 ई.	जैयद बर्क़ी प्रेस, दिल्ली,	1346 हि/ 1353 हि.
18.	तफ़्सीर तबरी	अबू जाफ़र मुहम्मद बिन जरीर तबरी	310 हि.	दारुल फ़िक्र, बैरूत	
19.	तफ़्सीर क़ुर्तबी	अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद क़ुर्तबी	671 हि.	दारुल कुतुब मिस्रीया	
20.	तफ़्सीर इब्ने कसीर	इस्माईल बिन उमर बिन कसीर	774 हि.	रियाज़	1313 हि/ 1992 ई.
21.	तलक़ीह फ़हूम अह्लुल असर	अबुल फ़र्ज अब्दुर्रहमान इब्नुल जौज़ी	597 हि.	जैयद बर्क़ी प्रेस, दिल्ली	
22.	तह्ज़ीबे तारीख़े दमिश्क़	इब्ने असाकिर	571 हि.	रशीदिया, दिल्ली	
23.	जामे तिर्मिज़ी	अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी	279 हि.	त० अहमद शाकिर, मिस्र	
24.	जमहरतु अन्साबिल अरब	इब्ने हज़्म अली बिन अहमद उन्दुलुसी	456 हि.	ताबेअ दारुल कुतुबिल इल्मीया, बैरूत	

क्र.स.	किताब का नाम	लेखक	मृत्यु	प्रकाशक	सन्
25.	जमहरतुन्नसब	हिशाम बिन मुहम्मद अल-कलबी	204 हि.	आलमुल कुतुब, बैरूत	
26.	ख़ुलासतुस्सियर	मुहिब्बुद्दीन अहमद बिन अब्दुल्लाह तबरी	674 हि.	दिल्ली प्रिंटिंस प्रेस	1343 हि.
27.	दरासातु फ़ी तारीख़िल अरब	सैयद अब्दुल अज़ीज़ सालिम		स्कन्दरिया	
28.	अद-दुर्रुल मंसूर	जलालुद्दीन सुयूती	911 हि.	दारुल कुतुबुल इल्मीया, बैरूत	1411 हि.
29.	दलाइलुन्नुबूवः	अहमद बिन हुसैन बैहक़ी	458 हि.	दारुल कुतुबुल इल्मीया, बैरूत	
30.	दलाइलुन्नुबूवः	अहमद बिन अब्दुल्लाह अस्बहानी	430 हि.	दारुन्नफ़ाइस, बैरूत	
31.	दलाइलुन्नुबूवः	इस्माईल बिन मुहम्मद अस्बहानी	535 हि०	दारुतैयिबा, रियाज़	
32.	रहमतुल्लिल आलमीन	क़ाज़ी सुलैमान, सलमान मंसूरपुरी	1930 ई०	देवबन्द, दिल्ली	
33.	रसूले अक्रम की सियासी ज़िंदगी	डा० मुहम्मद हमीदुल्लाह		सालिम कम्पनी, देवबन्द	1963 ई.
34.	अर-रौज़ुल अन्फ़	अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह सुहैली,	581 हि.	जमालिया, मिस्र,	1332 हि.
35.	ज़ादुल मआद	इब्ने क़य्यिम, मुहम्मद बिन बक्र	751 हि.	मतबआ मिस्रीया	1347 हि.
36.	सबाइकुज़्ज़हब	मुहम्मद अमीन बिल अली सुवैदी	1346 हि.		पहला एडीशन
37.	सफ़रुत्तक्वीन (पैदाइश)	बाइबिल का एक हिस्सा			
38.	सुनन अबी दाऊद	सुलैमान बिन अशअस सजस्तानी	275 हि.	मजीदी, कानपुर	

क्र.स.	किताब का नाम	लेखक	मृत्यु	प्रकाशक	सन्
39.	अस्सुननुल कुबरा	अहमद बिन हुसैन बैहक़ी	458 हि.	दारुल मारफ़ा, बैरूत	
40.	सुनन इब्ने माजा	मुहम्मद बिन यज़ीद इब्ने माजा	273 हि.		
41.	सुनन मुज्तबा	अहमद बिन शुऐब नसई	303 हि.	मक्तबा सलफ़ी, लाहौर	
42.	अस्सीरतुल हलबीया	अली बिन बुरहानुद्दीन हलबी	1044 हि.	तबअ, बैरूत	
43.	अस्सीरतुल नबवीया	अबू हातिम मुहम्मद बिन हिब्बान	354 हि.	तबअ, बैरूत	पहला एडीशन
44.	अस्सीरतुल नबवीया	अब्दुल मलिक बिन हिशाम	213/ 218 हि.	मिस्र	1375 हि.
45.	शरहुलि मवाहिबुल्लदुनिया	मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी ज़रक़ानी	1122 हि.	दारुल मारफ़ा, बैरूत	
46.	शरहुस्सुन्नः	हुसैन बिन मसऊद बग़ली	516 हि.	मक्तब इस्लामी, बैरूत	पहला एडीशन
47.	शरह सहीह मुस्लिम	यह्या बिन शरफ़ नववी	576 हि.		1376 हि.
48.	अश-शिफ़ा	क़ाज़ी अयाज़ बिन मूसा	544 हि.	उस्मानिया, स्तंबोल	1312 हि.
49.	शमाइले तिर्मिज़ी	मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी	279 हि.	दिल्ली एडीशन	
50.	सहीह बुख़ारी	मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी	256 हि.	दिल्ली एडीशन	1387 हि.
51.	सहीह मुस्लिम	मुस्लिम बिन हज्जाज कुसैरी	261 हि.	दिल्ली एडीशन,	1376 हि.
52.	सहीफ़ा हबक़ूक़	बाइबिल का एक हिस्सा			

क्र.स.	किताब का नाम	लेखक	मृत्यु	प्रकाशक	सन्
53.	अत-तबक़ातुल कुबरा	मुहम्मद बिन साद	230 हि.	दारे सादिर, बैरूत	
54.	अल-अक़्दुल फ़रीद	अहमद बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह उन्दुलसी	338 हि.	लजनतुत्तालीफ़	1263 हि.
55.	औनुल माबूद शरह सुनने अबी दाऊद	शम्सुल हक़ अज़ीमाबादी	1329 हि.	हिन्दुस्तानी एडीशन	
56.	फ़त्हुल बारी	हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी	852 हि.	मतबआ सलफ़िया, मिस्र	पहला एडीशन
57.	फ़त्हुल क़दीर	मुहम्मद बिन अली शौकानी	1250 हि.	मुस्तफ़ा अली हलबी	दूसरा एडीशन
58.	क़लाइदुज्जमान	अहमद बिन अली	821 हि.	अस्सआदतु मिस्र	पहला एडीशन
59.	क़ल्ब जज़ीरतुल अरब	फुवाद बिन अमीन हमज़ा	1370 हि/ 1957 ई.	अस्सलफ़ीया, मिस्र	1352 हि.
60.	अल-कामिल फ़ित्तारीख़	अज़्ज़ुद्दीन इब्नुल असीर अल जौज़ी	563 हि.	दारुल कुतुबुल-इल्मीया, बैरूत	
61.	कंज़ुल उम्माल	अलाउद्दीन अली मुत्तक़ी बुरहानपुरी	975 हि.	अर-रिसाला, बैरूत	पांचवां एडीशन
62.	अल-लिसान	इब्ने मंज़ूर, मुहम्मद बिन मुकर्रम	711 हि.	दारुल मुआरिफ़, क़ाहिरा	
63.	मजमउज़ ज़वाइद	नूरुद्दीन अली बिन अबी बक्र हैसमी	807 हि.	दारुल मुआरिफ़, बैरूत	1406 हि.
64.	मुहाज़रात तारीख़ुल आलमिल इस्लामी	ख़ुज़री बक	1345 हि.		
65.	मुख़्तसर सीरतुर्रसूल	अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अब्दुल वह्हाब नजदी	1242 हि.	अस्सलफ़ीया, मिस्र	1379 हि.
66.	मदारकुत्तंज़ील	अब्दुल्लाह बिन अहमद नसफ़ी	701 हि.	मिस्र	

क्र.स.	किताब का नाम	लेखक	मृत्यु	प्रकाशक	सन्
67.	मुरव्वजुज़्ज़हब	अली बिन हुसैन मसअदी	346 हि.	बैरूत	
68.	अल-मुस्तदरक अलस्सहीहैन	हाकिम नीसापुरी, मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह	405 हि.	अस्सलफ़ीया, बैरूत	
69.	मुस्नद इमाम अहमद	अहमद बिन मुहम्मद बिन हंबल शैवानी	291 हि.		
70.	मुस्नद बज़्ज़ार	अहमद बिन अम्र बज़्ज़ार	292 हि.		
71.	मुस्नद ख़लीफ़ा बिन ख़य्यात	ख़लीफ़ा बिन ख़य्यात अस्फ़री	240 हि.		
72.	मुस्नद दारमी	अब्दुर्रहमान बिन फ़ज़्ल दारमी	255 हि.		
73.	मुस्नद अबी दाऊद तयालसी	सुलैमान बिन दाऊद तयालसी	204 हि.	दारुल मारफ़ा, बैरूत	
74.	मुस्नद अबी याला	अबू याला अहमद बिन अली तमीमी	307 हि.	दारुल मामून, दमिश्क़,	पहला एडीशन
75.	मिश्कातुल मसाबीह	मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह तबरेज़ी		हिन्दुस्तानी एडीशन	
76.	मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा	मुहम्मद बिन अबी शैबा ईसा	235 हि.	सलफ़ीया, बम्बई	पहला एडीशन
77.	मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक	अब्दुर्रज़्ज़ाक बिन हमाम सनआनी	211 हि.	कराची एडीशन	
78.	अल-मआरिफ़	इब्ने कुतैबा, अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम	276 हि.	दारुल मआरिफ़, क़ाहिरा	चौथा एडीशन
79.	अल-मोजमुल औसत	सुलैमान बिन अहमद तबरानी	360 हि.	अल-मआरिफ़, रियाज़	
80.	अल-मोजमुल सग़ीर		360 हि.	दारुल कुतुबुल इल्मीया, बैरूत	1403 हि.

क्र.स.	किताब का नाम	लेखक	मृत्यु	प्रकाशक	सन्
81.	मोजमुल बुलदान	याक़ूत बिन अब्दुल्लाह हिमयरी	626 हि.	बैरूत	
82.	मग़ाज़ी अल-वाक़दी	मुहम्मद बिन उमर बिन वाक़िद, वाक़दी	207 हि.	आलमुल कुतुब, बैरूत	1404 हि.
83.	अल-मुनमिक़ फ़ी अख़बारे क़ुरैश	मुहम्मद बिन हबीब बग़दादी	245 हि.	आलमुल कुतुब, बैरूत	पहला एडीशन
84.	अल-मुवाहिबुल लुदनीया	अहमद बिन मुहम्मद क़स्तलानी	923 हि.	बैरूत	
85.	मुअत्ता इमाम मालिक	मालिक बिन अनस अस्बही	169 हि.	हिन्दुस्तानी एडीशन	
86.	नताइज़ुल इफ़हाम	महमूद अहमद हम्दी पाशा फ़लकी	1302 हि./ 1885 ई.	बैरूत	1407 हि./ 1986 ई.
87.	नस्ब क़ुरैश	मुस्अब बिन अब्दुल्लाह ज़ुबैरी	236 हि.	दारुल मआरिफ़, मिस्र	तीसरा एडीशन
88.	नस्ब मुअद्द अल-यमनुल कबीर	हिशाम बिन मुहम्मद कलबी	204 हि.	मक्तबा अल-नह-ज़तुल अरबीया	
89	निहायतुल अदब	अहमद बिन अली	821 हि.	मिस	1959 ई.
90.	वफ़ाउल वफ़ा	अली बिन अहमद	911 हि.	बैरूत	
91.	अल-यमन इबरुत्तारीख़	अहमद हुसैन शरफ़ुद्दीन		रियाज़	1400 हि./ 1980 ई.